Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुंशी देवीप्रसाद
कायस्थ

शाहजहांनामा

1893

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	झुझार सिंह के बाप बर सिंह देव को दे दिया था.	بادشاہ نے جھوجہار سنگھ کے باپ بر سنگھ دیو کو دیا تھا	
१९	अबदुल्ला खां को भी पूर्ब की तरफ़ से उरछे पर जाने का हुक्म होना.	عبداللہ خاں کو بھی پورب کیطرف اورچھہ جانے کا حکم ہونا.	۱۹
,,	बहादर खां रुहेला. रावसूरभुरटिया पहाड़ सिंह बुंदेला. किशनसिंह भदौरिया को उरछे जाने का हुक्म.	بہادر خاں روہیلہ راو سور بہرٹیہ پہاڑ سنگہ بندیلہ اور کشن سنگہ بہدوریہ کو اورچھہ جانیکا حکم	,,
२०	बादशाह का आगरे से गवालियर जाना.	بادشاہ کا آگرہ سے گوالیار جانا	۲۰
,,	झुझार सिंह का क़सूर माफ़ होना.	جوجہار سنگہ کا قصور معاف کرنا	,,
,,	बहादुर खां और पहाड़ सिंह बुंदेले को एरच फ़तह करने में नक़ारा मिलना.	بہادر خاں اور پہاڑ سنگہ بندیلہ کو ایرچ فتح کرنے کے انعام میں نقارہ ملنا	,,
,,	निज़ामुल् मुल्क ने हुक्म पहुंचने पर बाला घाट का मुल्क छोड़ दिया	نظام الملک کا حکم پہونچنے پر بالاگہاٹ کا ملک چہوڑ دینا	,,
२१	दरया खां रुहेले का साहूजी भोंसले को दौलताबाद के ज़िले से भगाना	دریا خاں روہیلہ کا ساہوجی بہوسلہ کو دولت آباد کے ضلع سے بہگانا	۲۱
,,	बादशाह का आगरे से वापस आना.	بادشاہ کا آگرہ سے واپس آنا	,,
,,	झुझारसिंह का दर्बार में हाज़िर होजाना	جوجہار سنگہ کا دربار میں حاضر ہوجانا	,,
२२	१ बर्ष में ४ लाख बीघे ज़मीन और १२० गांव की खैरात.	ایک برس میں چار لاکہ بیگہ زمین اور ۱۲۰ گانو کی خیرات	۲۲
,,	रवीलूजी के भाई परसूजी को मनसब मिलना.	کہیلوجی کے بہائی پرسوجی کو منصب ملنا	,,
२३	२ ब्राह्मणों को इनाम.	دو برہمنوں کو انعام	۲۳
,,	खानजहां लोदी का आगरे से भागना.	خانجہاں لودی کا آگرہ سے بہاگنا	,,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२३	राजा जयसिंह. राव सूर भुररिया. राजा विट्ठल दास. राजा भारत-बुंदेला. माधो सिंह हाड़ा. भीम राठौर. पृथ्वी राज राठौर. राजा वीर नारायण. राय हरचन्द पडिहार. और खिदमत परस्त खाँ. का खानजहाँ के ऊपर भेजना.	راجہ جیسنگہ راو سور بہرٹیہ راجہ بٹھلداس راجہ بہارت بندیلہ ماد ہوسنگہ ہاڈا بہیم راٹہوڑ پرتھی راج راٹہوڑ راجہ بیرنراین ہرچند پڈہار اور خدمت پرست خاں کا خان جہاں کے اوپر بہیجنا	۲۳
२४	विट्ठल दास और पृथ्वी राज राठौर का खानजहां से लड़ना.	بٹھلداس اور پرتھی راج راٹہوڑ کا خان جہاں سے لڑنا	۲۴
,,	राजा जय सिंह का खानजहां के पीछे जाना.	راجہ جیسنگہ کا خان جہاں کے تعاقب میں جانا	//
२५	विट्ठल दास और पृथ्वी राज को खलअत और इज़ाफ़ा.	راجہ بٹھلداس اور پرتھی راج کو خلعت و اضافہ	۲۵
,,	रावत राव को मनसब.	راوت راو کو منصب	//
२६	खानजहा का जुझार सिंह के बेटे विक्रमाजीत की मदद से निकल कर दखन में निज़ामुल्मुलक के पास पहुंचना.	خان جہاں کا جوجہار سنگہ کے بیٹے بکرماجیت کی مدد سے نکلکر دکہن میں نظام الملک کے پاس پہونچنا	۲۶
,,	ज़ेच शाह जहानी के हिन्दी तरजुमे से पंचांग निकालने का हुक्म.	زیج شاہ جہانی کے ہندی ترجمہ سے پنچانگ نکالنے کا حکم	//
,,	बादशाह का कूच दखन को.	بادشاہ کا کوچ دکہن کو	//
,,	अमर सिंह राठौर का इज़ाफ़ा.	امرسنگہ راٹہوڑ کا اضافہ	//
,,	बादशाह खानदेश में- याक़ूत हबशी खीलूजी और ऊदाजी को इनाम.	بادشاہ خاندیس میں یاقوت حبشی کہیلوجی اور اوداجی کو انعام	//

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२६	मालूजी का ५ हज़ारी होना.	...لوجی کا پانچہزاری ہونا	۲۶
,,	आसेर से बादशाह का ३ फ़ौजें निज़ामुलमुल्क और खानजहां पर रवाने करना.	آسیر سے بادشاہ کا تین فوجیں نظام الملک اور خان جہاں پر روانہ کرنا	,,
,,	जुझार सिंह बुंदेला. राव दूदा. चंद्रावत. शत्रुसाल कछवाहा. करम सी राठौर. राजा द्वारका दास कछवाहा. बलभद्र शेखावत. स्याम सिंह सी सोदिया. राजा गिरधर. मलूक चन्द. राय मनोहर का पोता. रामचन्द्र हाडा. जगन्नाथ राठौर. मुकंद दास जादों. उदयसिंह राठौर. खीलूजी. मनाजी. और परसूजी भोसला का दखन के सूबेदार इरादत खां के साथ तइनात होना.	جوجہار سنگہ بندیلہ راو دودا چندراوت ستروسال کچہواہا کرم سی راٹہوڑ راجہ دوارکاداس کچہواہہ بلبہدر سیکہاوت سیام سنگہ سیسودیہ راجہ گردہر ملوک چند رائے منوہر کا پوتہ رام چندر ہاڈا جگناتہ راٹہوڑ مکندداس جادوں اودے سنگہ راٹہوڑ کہیلوجی میناجی اور پرسوجی بہوسلہ کا دکہن کے صوبہ دار ارادت خاں کے ساتہہ تعینات ہونا	,,
२८	राजा गज सिंह की फ़ौज में राजा विठ्ठलदास. अनी राय बड़गूजर. राजा मन रूप कछवाहा. रावल पूंजा. भीम राठौर. राजा बीर नारायण बड़गूजर. गोकुल दास सीसोदिया. जयराम बड़गूजर. नरहर दास झाला. राय हरचन्द पड़िहार. ऊदाजीराम. और खीलूजी की तइनाती.	راجہ گج سنگہ کی فوج میں راجہ بیٹہلداس انی رائے بڈگوجر راجہ منروپ کچہواہا راول پونجا بہیم راٹہوڑ راجہ بیرنارائن بڈگوجر گوکلداس سیسودیہ جیرام بڈگوجر نرہرداس جہالا رائے ہرچند پڑہاڑ اوداجی رام اور کہیلوجی کی تعیناتی	۲۸

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२८	शायस्ता खांकी फ़ौज में राजाजय सिंह. पहाड़ सिंह. राव भुररिया. माधो सिंह हाड़ा. राजा रोज़अफ़ज़ूं. चन्द्र मणि बुंदेला. राजा किशन सिंह भदोरिया. भगवान दास बुंदेला. नरहर दास बुंदेला. रावत राय. राना जगत सिंह के काका अर्जुन का मुक़र्रर होना	شائستہ خاں کی فوج میں راجہ جے سنگہ پہاڑ سنگہ مادہو سنگہ ہاڈا راجہ روز افزوں چندرمن بندیلہ راجہ کشن سنگہ بہادریہ بہگوانداس بندیلہ نرہرداس بندیلہ راوت رائے رانا جگت سنگہ کے کاکا ارجن کا مقرر ہونا	۲۸
२९	जुझार सिंह. ऊदाजीराम. राजा जय सिंह और पृथ्वी राज राठौड़ का इज़ाफ़ा	جوجہار سنگہ اوداجیرام راجہ جے سنگہ اور پرتہی راج راٹہوڑ کا اضافہ	۲۹
३०	राव रतन हाड़ा का तिलंगाना फ़तह करने को जाना.	راؤ رتن ہاڈا کا تلنگانہ فتح کرنیکو جانا	۳۰
”	राजा भारत बुंदेला राजा रामदास नरवरी. जैत सिंह राठौड़. इन्द्र साल हाड़ा. ईसरदास सीसोदिया और उदय सिंह का राव रतन के साथ जाना.	راجہ بہارت بندیلہ راجہ رامداس نروری جیت سنگہ راٹہوڑ اندرسال ہاڈا ایسرداس سیسودیہ اور اودے سنگہ کا راؤ رتن کے ساتھہ جانا	〃
”	राव दूदा और रूपचन्द गुलेरी का इज़ाफ़ा	راؤ دودا اور روپ چند گلیری کا اضافہ	〃
३१	अबुल हसन और पृथ्वी राज राठौर का नासिक त्र्यम्बक फ़तह करने को जाना.	ابوالحسن اور پرتہی راج راٹہوڑ کا ناسک ترمبک فتح کرنیکو جانا	۳۱
”	राजा भारत बुंदेले का इज़ाफ़ा.	راجہ بہارت بندیلہ کا اضافہ	〃
”	अबदुल्ला खां फ़ीरोज़ जंग का शाय	عبداللہ خاں فیروز جنگ	〃

In Public Domain...

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३१	स्ता खां की जगह अफ़सर होना.	شایستہ خاں کی جگہ افسر ہونا	
,,	जुझार सिंह और पहाड़ सिंह बुंदेले को राजा की ख़िताब.	جوجہار سنگہ اور پہاڑ سنگہ بندیلہ کو راجہ کا خطاب	,,
३२	ग़नीम की हार. माधो सिंह के बेटे शत्रुसाल कछवाहे शत्रुसाल के बेटों भीम सिंह और नंद सिंह. करमसी राठौड़. बलभद्र शेखावत और मड़तिये जयमल के पोते जगन्नाथ का काम आना.	غنیم کی شکست مادہو سنگہ کے بیٹے ستر سال کچھواہہ ستر سال کے بیٹوں بہیم سنگہ انند سنگہ کرم سی راٹہور بلبہدر سیکہاوت اور میڑتیہ جیمل کے پوتہ جگناتہ کا کام آنا	۳۲
३३	राजा द्वारिका दास का ज़ख़्मी होना	راجہ دوارکا داس کا زخمی ہونا	۳۳
,,	मुलतफ़त खां और राव दूदा का मैदान छोड़ भागना.	ملتفت اور راو دودا کا میدان چہوڑ بہاگنا	,,
,,	राजा द्वारिका दास और हिरदेराम कछवाहे का इज़ाफ़ा.	راجہ دوارکا داس اور ہردیرام کچھواہا کا اضافہ	,,
,,	मंगूजी दखनी और साबाजी के मनसब.	منگوجی دکہنی اور سابا جی کے منصب	,,
,,	साबा जी को हाथी.	سابا جی کو ہاتہی	,,
३४	नसीरी खां का राव रतन हाड़ा की जगह तिलंगाना की मुहिम में तईनात होना.	نصیری خاں راو رتن ہاڑا کی جگہ تلنگانہ کی مہم میں تعینات ہونا	۳۴
,,	राजा गजसिंह का हाज़िर दर्गाह होना	راجہ گج سنگہ کا حاضر درگاہ ہونا	,,
,,	जादोंराय का निज़ामुल्मुल्क के पास जाकर अपने दो बेटों अचला राघो राय और पोते यसवंत राय समेत मारा जाना.	جادون راے کا نظام الملک کے پاس جاکر اپنے دو بیٹوں اچلا راگہو راے اور پوتہ یسونت راے کے مارا جانا	,,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

३४	बादशाह का याक़ूत खाँ ऊदाजीराम और खीलूजी को भेजकर जादों राय के भाई जगदेव राय यसवन्तराय और बीदूजी को बुलाना.	بادشاہ کا یاقوت خاں اوداجے رام اور کھیلوجی کو بھیجکر جادون رائے کے بھائی جگدیو رائے بسونت اور بیتھوجی کو بلانا	״
३६	खानजहां लोदी के इशारे से अफ़ग़ानों का पिशौर पर आकर वहां के हाकिम से शकिस्त खाना.	خانجہاں لودی کے اشارہ سے افغانوں کا پیشور پر آکر وہاں کے حاکم سے شکست کہانا	۳۶
	बरस चौथा.	**برس چوتھا**	
३७	राव रतन का बासम से हाज़िर होना	راو رتن کا باسم سے حاضر ہونا	۳۷
״	अनी राय सिंह दलरा को राजा का ख़िताब क्योंकि उसका बाप वीर नारायण मर गया था.	انی رائے سنگھ دلن کو راجہ کا خطاب کیونکہ اوس کا باپ بیرناراین مرگیا تھا	״
״	रविराय नारूजी को मनसब	ربی رائے نارو کا منصب	״
३८	राजा गजसिंह को खलअ़त.	راجہ گج سنگہ کو خلعت	۳۸
״	जगजीवन जर्राह का मुज़फ़्फ़र खाँ के इलाज को भेजना.	جگ جیون جراح کا مظفر خاں کے علاج کو بہیجنا	۳۸
״	राजा जयसिंह का आज़म खाँ की फ़ौज में हिरावल होना.	راجہ جے سنگہ کا اعظم خاں کی فوج میں ہراول ہونا	״
״	अंबुल हसन का नासक पर निज़ामुल्मुल्क के महलदार और दादा पंडित को शकस्त देना.	ابوالحسن کا ناسک پر نظام الملک کے محلدار اور دادا پنڈت کو شکست دینا	״
״	बगलाने के राजा भरजी का हाज़िर आना.	بگلانہ کے راجہ بہرجی کا حاضر آنا	״
३९	राव रतन हाड़ा का आसिफ़ खाँ के	راو رتن ہاڈا کا آصف خاں	۳۹

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३९	साथ वाला घाट का जाना.	کے ساتھ بالاگھاٹ جانا	
"	मनरूप का मरना और गोपाल सिंह का इज़ाफ़ा.	منروپ کا مرنا اور گوپال سنگھ کا اضافہ	
"	सूबेदार उड़ीसा का क़िले मनसूरगढ़ को कुतब शाह के आदमियों से फ़तह करना.	صوبہ دار اوڑیسہ کا قلعہ منصور گڈھ کو قطب شاہ کے آدمیوں سے فتح کرنا	"
"	ख़ान जहां का लड़कर भागना. और राजा पहाड़ सिंह के नौकर परस राम का उस के भतीजे बहादुर खां को मार लैना.	خانجہاں کا لڑکر بھاگنا اور راجہ پہاڑ سنگھ کے نوکر پرسرام کا اوسکے بھتیجے بہادر خاں کو مار لینا	"
"	राजा जयसिंह. विट्ठल दास. अनूप सिंह. नाहर झाला पहाड़ सिंह बुंदेला. राव सूर भुरटिया. चन्द्रमणि बुंदेला की उस लड़ाई में बहादुरी.	راجہ جے سنگھ بیٹھلداس انوپ سنگھ ناہر جھالا پہاڑ سنگھ بندیلہ سور بھورٹیہ چندرمن بندیلہ کی اوس لڑائی میں بہادری	"
४१	जादों राय के दामाद साहूजी उस के बेटे साबाजी. और भतीजे मैनाजी का बादशाही नौकर होना.	جادون راے کے داماد ساہوجی اوسکے بیٹے سابا جی اور بھتیجے میناجی کا بادشاہی نوکر ہونا	۴۱
४२	रवि राय मालूजी और हापाजी के मनसब	ربی راے مالوجی اور ہاپاجی کے منصب	۴۲
"	आलम चन्द और गोबिन्द राय पड़िहार का अबदुल्लाह खां के साथ दरया खां के ऊपर जाना.	عالم چند اور گوبند راے پڑہار کا عبداللہ خاں کے ساتھ دریا خاں کے اوپر جانا	"
"	साहूजी भोंसला जुनेर और संगमेर के बंदोबस्त पर.	ساہوجی بہوسلہ جنیر اور سنگمیر کے بندوبست پر	"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४२	खान जहां का जिसका असली नाम पीरा था, मालवे को जाना.	خاں جہاں کا جسکا اصلی نام پیرا تھا مالوہ کو جانا	״
४३	बादशाह का बुरहान पुर से मुज़फ़्फ़र खाँ, राजा द्वारिका दास, माधो सिंह हाड़ा, स्याम सिंह, और उग्रसैन को पीरा के पीछे भेजना.	بادشاہ کا برہان پور سے مظفر خاں راجہ دوارکا داس مادھو سنگھ ہاڑا سیام سنگھ اور اگرسین کو پیرا کے پیچھے بھیجنا	۴۳
४४	जुझार सिंह के बेटे विक्रमाजीत का दरया खां को मार लेना बादशाह का उसके वास्ते जुगराज का खिताब और खलअत सुन्दर कविराय के हाँथ भेजना.	جوجہار سنگھ کے بیٹے بکرماجیت کا دریا خانکو مار لینا بادشاہ کا اوسکے واسطے جگراج کا خطاب اور خلعت سندر کب راے کے ہاتھ بھیجنا	۴۴
४५	आज़म खाँ का क़िले धारूर को निज़ामुल्मुल्क के आदमियों से फ़तह करना.	اعظم خاں کا قلعہ دہارور کو نظام الملک کے آدمیوں سے فتح کرنا	
,,	जुझार सिंह बुंदेले को इस फ़तह में कोशिश करने से खलअत मिलना.	جوجہار سنگھ بندیلہ کو اس فتح میں کوشش کرنے سے خلعت ملنا	״
४६	आदिल खां के सेना पति रणदूल्हा का आज़म खां के पास आना.	عادل خاں کے سپہ سالار رن دولہ کا اعظم خاں کے پاس آنا	۴۶
,,	मौज़ा नीमी इलाक़े रीवां में राजा द्वारिका दास का पीरा से जंग करके काम आना.	موضع نیمی علاقہ ریوان میں راجہ دوارکاداس کا پیرا سے جنگ کرکے کام آنا	۴۶
,,	रीवां के राजा अमर सिंह का पीरा के हाथी छीन कर बादशाह के पास भेजना.	ریوان کے راجہ امر سنگھ کا پیرا کے ہاتھی چھین کر بادشاہ کے حضور میں بھیجنا	״

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४६	पीरा का माधो सिंह हाड़ा के बरछे से मारा जाना.	پیرا کا مادہو سنگہ ہاڈا کی برچھی سے مارا جانا	״
४७	रणदूल्हा का आज़म खाँ के पास से चला जाना.	رن دولہ کا اعظم خاں کے پاس سے چلا جانا۔	۴۷
,,	आज़म खाँ का क़िले परेंडे पर जाना निज़ामुल्मुल्क और आदिल खां का एक होजाना	اعظم خاں کا قلعہ پرینڈہ پر جانا نظام الملک اور عادلخاں کا ایک ہوجانا	״
,,	राजा जय सिंह राजा पहाड़ सिंह और राजा अनूप सिंह का दखनियों को लड़ कर भगाना.	راجہ جے سنگہ راجہ پہاڑ سنگہ اور راجہ انوپ سنگہ کا دکہنیوں کو لڑکر بہگانا	״
४८	ईरान के एलची का बुरहानपुर में बादशाह के पास आना	سفیر ایران کا برہانپور میں بادشاہ کے پاس آنا	۴۸
,,	गुजरात और दखन में काल का बंदोबस्त	گجرات اور دکہن میں کال کا بندوبست	״
४९	नौरोज़. ईरान के बादशाह की सौग़ात और क़ुतुबुल्मुल्क वग़ैरा की पेशकश.	جشن نوروز ایران کے بادشاہ کی سوغات اور قطب الملک وغیرہ کی پیشکش	۴۹
,,	चाँदा के ज़मींदार केबाँ का नज़राना	کیفبان زمیندار چاندا کا نذرانہ.	״
५०	माधो सिंह हाड़ा को इज़ाफ़ा और झंडा.	مادہو سنگہ ہاڈا کو اضافہ اور جہنڈا عنایت	۵۰
,,	मेख संक्रांति के दिन २० लाख रुपये के नज़राने.	شرف آفتاب کے دن ۲۰ لاکہہ روپیہ کے نذرانے	۵۰
,,	दयानतराय नागर ब्राह्मण गुजराती का अफ़सर ख़ालिसे होना.	دیانت رائے ناگر برہمن گجراتی کا افسر خالصہ شریفہ ہونا.	״

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

५०	अहदियों का वख़्शी जसवंतराय.	جسونت رائے بخشی احدیاں	″
″	साहूजी का नासिक में छोड़ा जाना.	ساہوجی کا ناسک میں	″
″	मेदना राय का नोकर होना.	میدنی رائے کا بادشاہی نوکر ہونا	″
५१	बैनी दास बुंदेले को मनसब.	بینی داس بندیلہ ولد راجہ برسنگدیو کو منصب	۵۱
″	राजा विट्ठल दास को रंथंभोर का क़िला इनायत होना.	راجہ بٹھلداس کو رنتھمبور کا قلعہ عنایت ہونا	″
″	राव सुरजन हाड़ा. राणा उदयसिंह का मुलाज़िम था.	راؤ سرجن ہاڈا رانا اودے سنگہ کا ملازم تہا	″
५२	विहारी दास कछवाहा और चंद्र मणि बुंदेला के इज़ाफ़े.	راجہ بہاریداس اور چندرمن بندیلہ کے اضافہ	۵۲
″	तलतम और सतोड़े के किलों में बादशाही क़ब्ज़ा.	تلتم اور ستوڑہ کے قلعوں میں بادشاہی عمل	″
″	रण दूल्हा और निज़ाम शाहियों की हार	رن دولہ اور نظام شاہیوں کی شکست	″
″	क़िले क़ंधार में राजा भारत बुंदेले की मारफ़त नसीरी खां का अमल करना.	قلعہ قندہار میں راجہ بہارت بندیلہ کی وساطت سے نصیری خاں کا عمل کرنا۔	″
५३	निज़ामुलमुल्क का अंबर के बेटे फ़तह खां को अपनी सलतनत का मुखतार करना. और अगले मुखतार मुकर्रब खां का आकर बादशाही नौकर होजाना.	نظام الملک کا عنبر کے بیٹے فتح خاں کو اپنی سلطنت کا مختار کرنا اور اگلے مختار مقرب خاں کا آکر بادشاہی نوکر ہو جانا	۵۳
″	रण दूल्हा और निज़ाम शाहियों का बादशाही लशकर के १ हिस्से को हराना.	رن دولا اور نظام شاہیوں کا بادشاہی لشکر کے ایک حصہ پر غلبہ پانا۔	″

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

५३	बादशाह की बेगम मुमताज़उलज़मानी का मरना उस का हाल और बादशाह को शोक उसके वास्ते.	بادشاہ کی عزیز بیگم ممتاز الزمانی کا مرنا اوسکا حال اور بادشاہ کا رنج وغم اوسکے واسطے	۵۳
५४	बेगम की औलाद का हाल.	بیگم کی اولاد کا حال	۵۴
५९	जहांआरा बेगम का महल के कामों में मुख्तार होना.	جہاں آرا بیگم کا محل کے کاموں میں مختار ہونا	۵۹
६०	निज़ामुल्मुल्क को उस के मुख्तार फ़तह खां का बादशाह के इशारे से मार डालना और हुसैन शाह को दौलताबाद में गद्दी पर बिठाना	نظام الملک کو اوسکے مختار فتح خاں کا بادشاہ کے اشارہ سے مار ڈالنا اور حسین شاہ کو دولت آباد میں گدی پر بیٹھانا۔	۶۰
"	राजा भारत बुंदेले के मनसब में इज़ाफ़ा.	راجہ بھارت بندیلہ کے منصب میں اضافہ	"
"	राव सूर भुरटिया का मरना और उस के बेटे करण का राज पाना और भाई शत्रुसाल को मन्सब मिलना.	راو سور بھرٹیہ کا مرنا اور اوسکے بیٹے کرن کا راج پانا اور بھائی شترو سال کو منصب ملنا	"
"	बहादुरजी और जगदेव दखनी का हाज़िर आना.	بہادر جی اور جگدیو دکھنی کا حاضر آنا	"
६२	जादों रायको खलअ़त और इनाम.	جادون رائے کو خلعت اور انعام	۶۲
६३	बीठू जी का हज़ूर में आना.	بیٹھو جی کا حضور میں آنا	۶۳
"	राव रतन हाड़ा का मरना और उस के पोते शत्रुसाल को राज मि०	راؤ رتن ہاڈا کا مرنا اور اوسکے پوتہ شترو سال کو راج ملنا	"
"	माधोसिंह हाड़ा को कोटे और पलायते का राज मिलना.	مادھو سنگھ ہاڈا کو کوٹہ اور پلائتہ کا راج ملنا۔	"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६३	राव शत्रु साल के बाप गोपी नाथ की ताक़त का बयान।	راؤ شترو سال کے باپ گوپی ناتھ کی طاقت کا بیان	۶۳
६४	ऊदाजी राम दखनी को चालीस हज़ार (४००००) रु० इनायत	اوداجی رام دکھنی کو چالیس ہزار روپیہ عنایت	۶۴
"	बेगम की लाश का आगरे भेजा जाना और जमना के किनारे राजा महा सिंह के हाते में दफ़न होना और राजा जय सिंग को उस के बदले में दूसरी हवेली मिलना।	بیگم کی لاش کا آگرہ بھیجا جانا اور جمنا کے کنارہ راجہ مہا سنگھ کے احاطہ میں دفن ہونا اور راجہ جے سنگھ کو اوس احاطہ کے بدلے دوسری حویلی ملنا	"
६५	ताज बीबी का रोज़ा।	تاج بی بی کا روضہ	۶۵
"	आसिफ़ खाँ वज़ीर, राजा जै सिंह, पहाड़ सिंह, ऊदाजीराम, खीलू जी, मालूजी, और बहादुर जी, का बुरहान पुर से मुहम्मद आदिल शाह बीजा पुर वाले के ऊपर भेजा जाना।	آصف خاں وزیر۔ راجہ جے سنگھ پہاڑ سنگھ اوداجی رام۔ کھیلوجی مالوجی اور بہادر جی کا برہان پور سے محمد عادل شاہ والی بیجاپور کے اوپر بھیجا جانا	"
"	अबदुल्लाह खाँ फ़ीरोज़ जंग, राजा जुझार सिंह बुंदेला, और राजा भारत बुंदेले को तिलंगाने से आसिफ़ खाँ के शामिल होने का हुक्म	عبداللہ خاں فیروز جنگ راجہ جوجھار سنگھ بندیلہ اور راجہ بھارت بندیلہ کو تلنگانہ سے آصف خاں کے شامل ہونے کا حکم	"
६६	आसिफ़ खाँ का बीजा पुर के घेरे से उठ आना और बीजा पुर वालों का शोला पुर तक पीछा करना।	آصف خاں کا بیجاپور کے محاصرہ سے اوٹھہ آنا اور بیجاپور والونکا شولاپور کا تعاقب کرنا	۶۶

In Public Domain

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६६	चन्द्रमणि बुंदेला, राजा अनूप सिंह, और राव दूदा का उस मुहिम में शामिल होना.	چندرمن بندیلہ راجہ انوپ سنگھ اور راو دودا کا اوس مہم میں شامل ہونا	۶۶
,,	राय काशी नाथ का दीवान सहरन्द होना.	رائے کاشی ناتھ کا دیوان سہرند ہونا	۶۶
६७	बीकानेर के राव करण का हाज़िर आना.	بیکانیر کے راو کرن کا حاضر آنا	۶۷
,,	शत्रुसाल हाड़ा का हाज़िर आना	شتروسال ہاڈا کا حاضر آنا	//
,,	बादशाह का वज़ीर ख़ां. राजा बिट्ठल दास. माधो सिंह. राव करन. और पृथ्वी राज को फ़तह ख़ाँ के ऊपर भेजना.	بادشاہ کا وزیر خاں راجہ بیٹھلداس مادہو سنگھ راوکرن اور پرتہی راج کو فتح خاں کے اوپر بھیجنا	۶۷
,,	शत्रुसाल हाड़ा का हाज़िर आना.	ستروسال ہاڈا کا حاضر آنا	//
६८	किशन सिंह राठौर का नूरुद्दीन कुली को अपने बाप जसवन्त सिंह के बैर में मार डालना.	کشن سنگھ راٹھوڑ کا نورالدین قلی کو اپنے باپ جسونت سنگھ کے بیر میں مار ڈالنا	۶۸
,,	बगलाने के भरजी का हाज़िर आना	بگلانہ کے بہرجی کا حاضر آنا	۶۸
,,	राजा राय सिंह का इज़ाफ़ा.	راجہ رائے سنگھ کا اضافہ	//
६९	हरी सिंह राठौड़ का इज़ाफ़ा.	ہری سنگھ راٹھوڑ کا اضافہ	۶۹
,,	बादशाह का बुरहान पुर से आगरे को रवाना होना और महाबत ख़ाँ को दखन की सूबेदारी पर छोड़ना.	بادشاہ کا برہان پور سے آگرہ کو روانہ ہونا اور مہابت خاں کو دکہن کی صوبہداری پر چہوڑنا	//
,,	काली भीत के ज़मींदार भीमसैन का हाज़िर आना.	کالی بہیت کے زمیندار بہیم سین کا حاضر آنا	//

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

७०	राजा जुझार सिंह के बेटे विक्रमाजीत को जुगराज का खिताब	راجه جوجهار سنگه کے بیٹے بکرماجیت کو جگ راج کا خطاب	۷۰
,,	बादशाह आगरे में	بادشاه آگره میں	״
,,	दौलताबाद में बादशाह की आण दुहाई	دولت آباد میں بادشاه کا سکه اور خطبه	״
,,	बलख के वकील का आना.	بلخ کے وکیل کا آنا	״
,,	५ क़िले और पचास लाख का मुल्क निज़ामुल्मुल्क की वलायत से बादशाह को हाथ आना.	پانچ قلعه اور پچاس لاکھ کا ملک نظام الملک کی ولایت سے بادشاه کو ہاتھ آنا	״
	बरस छठा ॥	**برس چھٹا**	
७०	कृपाराम गौड़ को हिसार की क़िलेदारी.	کرپارام گوڑ کو حصار کی قلعداری	۷۰
,,	काशीदास का दीवान लाहौर होना	کاشیداس کا دیوان لاہور ہونا	״
७१	साहूजी भोसला का बादशाही नौकरी छोड़कर नासक त्र्यम्बक में अमल करना.	ساہوجی بہوسله کا بادشاہی نوکری چھوڑ کر ناسک ترمبک میں عمل کرنا	۷۱
,,	राव भानी दास.	رائے بھانی داس	״
७२	फ़रंगियों से हुगली बन्दर फ़तह होना.	فرنگیوں سے بندر ہگلی فتح ہونا	۷۲
,,	ईरान के वकील को रुखसत	ایران کے وکیل کو رخصت	״
,,	क़िले कालने में क़ब्ज़ा होना	قلعه کالنه میں قبضه	״
७३	भागीरथ भील से काना खेड़ी का क़िला लिया जाना और उसका संग्राम ज़मींदार गुनोर के वसीले से सूबेदार मालवे के पास	بہاگیرتھ بہیل سے کانا کہیڑی کا قلعه لیا جانا اور اوسکا سنگرام زمیندار گنور کے وسیله سے صوبه دار	۷۳

In Public Domain. Chamba

	हाज़िर होना.	مالوہ کے پاس حاضر ہونا	
७४	बनारस में नये मंदिरों का गिरा या जाना	بنارس میں نئے مندروں کا گرایا جانا	۷۴
,,	शाहज़ादे दारा शिकोह की शादी	شاہزادہ داراشکوہ کی شادی	,,
८३	शाहज़ादे शुजाश्र की शादी.	شاہزادہ شجاع کی شادی	۸۳
८७	बलख़ को वकील भेजना.	بلخ کو وکیل بھیجنا	۸۷
,,	राजा जय सिंह और गज सिंह का अपने वतन से हाज़िर आना.	راجہ جے سنگھ اور گج سنگھ کا اپنے وطن سے حاضر آنا	
,,	राजा विट्ठल दास को अजमेर की फ़ौज दारी.	راجہ بیٹھل داس کو اجمیر کی فوجداری	,,
८८	पृथ्वी राज राठौड़ का इज़ाफ़ा.	پرتھی راج راٹھوڑ کا اضافہ	۸۸
८९	ईरान को वकील भेजना.	ایران کو وکیل بھیجنا	۸۹
,,	बेगम की क़बर पर सोने का कटेरा	بیگم کی قبر پر سونے کا کٹہرا	,,
,,	आगरे में हैज़ा और ज़हर मुहरे से फ़ायदा.	آگرہ میں ہیضہ اور زہر مہرہ سے فایدہ	,,
,,	औरंगज़ेब का हाथी से लड़ना व राजा जयसिंह का मदद देना.	اورنگ زیب کا ہاتھی سے لڑنا اور راجہ جے سنگھ کا مدد دینا	,,
९१	बादशाह के शेर से लड़ने का हाल जिस में अनूप सिंह बड़गूजर को अनी राय सिंह दलन का ख़िताब मिलना.	بادشاہ کے شیر سے لڑنے کا حال جسمیں انوپ سنگھ بڑگوجر کو انی راے سنگھ دلن کا خطاب ملنا	۹۱
९४	हिरदे राम को हाथी इनायत.	ہردے رام کو ہاتھی عنایت	۹۴
९५	साहू जी भोंसला का आदिलखां से जा मिलना और आदिलखां के	ساہوجی بھوسلہ کا عادل خاں سے جا ملنا اور عادلخاں	۹۵

९५	लशकर का दौलताबाद पर आना.	کے لشکر کا دولت آباد پر آنا	۹۵
,,	महावत खां का खानज़मां जुगराज और खीलू जी को भेजना और फिर खुद भी मये राव शत्रुसाल हाड़ा के जाकर रणदूला और साहूजी को हराना.	مہابت خاں کا خانزماں جگ راج اور کہیلوجی کو بہیجنا اور پہر خود بہی معہ راو ستروسال ہاڈا کے جاکر رنُ دولہ اور ساہوجی کو ہرانا	,,
९६	खानज़मां का खीलूजी और मालूजी और यशवंत राय की मदद से साहूजी को भगाकर दौलताबाद का घेरा देना.	خانزماں کا کہیلوجی اور مالوجی اور یشونت رائے کی مدد سے ساہوجی کو بہگاکر دولت آباد کا محاصرہ کرنا	۹۶
,,	राजा विक्रमाजीत का मोरचा.	راجہ بکرماجیت کا مورچہ	,,
,,	खानखांना पृथ्वीराज राठौड़ और ऊदाजी का दौलताबाद पर आना.	خانخاناں پرتہی راج راٹہوڑ اور اوداجی کا دولت آباد پر آنا	,,
,,	दिलेर हिम्मत. उदाजीराम. बहादुरजी. और जुगराज बुंदेले का रणदूल्हा के मुक़ाबिले पर जाना	دلیر ہمت - اوداجی رام بہادرجی اور جگ راج بندیلہ کا رن دولہ کے مقابلہ پر جانا	,,
९७	शत्रुसाल हाड़ा का खानज़मां के डेरे पर दखनियों को लड़कर भगाना.	ستروسال ہاڈا کا خانزماں کے ڈیرے پر دکہنوں کو لڑکر بہگانا۔	۹۷
,,	पृथ्वीराज राठौड़ का एक दखनी यक्के को मारना और महाबत खां के बेटे लोहरास्प का पृथ्वीराज की मदद करना.	پرتہی راج راٹہوڑ کا ایک دکہنی یکہ کو مارنا اور مہابت خاں کے بیٹے لہراسپ کا پرتہی راج کی مدد کرنا	,,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

९८	ख़ान ज़मां और शत्रु साल का साहू और बहलोल वग़ैरा को शकस्त देना.	خان زماں اور ستروسال کا ساہو اور بہلول وغیرہ کو شکست دینا	۹۸
,,	खीलूजी का दौलताबाद से चले जाना मालूजी और परसूजी को ख़ान ख़ाना का राज़ी कर लेना.	کہیلوجی کا دولت آباد سے چلا جانا مالوجی اور پرسوجی کو خانخاناں کا راضی کر لینا	,,
९९	जुगराज बुंदेला का दखनियों की रसद छीन लेना.	جگراج بندیلہ کا دکھنیونکی رسد چھین لینا	۹۹
१००	राठौड़ महेस वल्द दलपत के जमाई जगन्नाथ का महाबतख़ां के पोते शुकरुल्लाह के बचाने में काम आना.	راٹھوڑ مہیس ولد دلیت کے داماد جگناتھ کا مہابت خاں کے پوتے شکراللہ کے بچانے میں کام آنا	۱۰۰
,,	ऊदा जी राम दखनी का मरना और उस के बेटे जगजीवन को ३ हज़ारी मनसब मिलना.	اوداجی رام دکھنی کا مرنا اور اسکے بیٹے جگجیون کو تین ہزاری منصب ملنا	۱۰۰
१०१	नसीरी ख़ां और महेस राठौड़ का दौलताबाद पर हमला.	نصیری خاں مہیس راٹھوڑ کا دولت آباد پر حملہ	۱۰۱
,,	ख़ान ख़ाना पहाड़ सिंह राजा सारंग देव. रावत सिंह बदन सिंह भदोरिया और सगराम का महा कोट को घेरना.	خانخاناں پہاڑ سنگہ راجہ سارنگدیو راوت سنگہ مدن سنگہ بھدوریہ اور سگرام کا مہاکوٹ کو گھیرنا.	,,
१०२	मालूजी और जगजीवन का बाहर के मोरचों पर रहना.	مالوجی اور جگجیون کا باہر کے مورچہ پر رہنا	۱۰۲
१०३	राव शत्रु साल और राव करण का खीलूजी और बहलोल के	راو ستروسال اور راو کرن کا کہیلوجی اور بہلول	۱۰۳

	पीछे बराड़ और तिलंगाने की तरफ़ जाना.	کے تعاقب میں براڑ اور تلنگانہ کی طرف جانا	
१०३	मालूजी राव दूदा पृथ्वी राज और महेस वग़ैरा का ररा दूल्हा और साहूजी से लड़ कर रसद छीन लेना.	مالوجی راو دودا پرتھی راج اور مہیس وغیرہ کا رن دولہ اور ساہوجی سے لڑکر رسد چھین لینا	۱۰۳
"	ख़ैरयत ख़ां बीजापुरी और दौलू नाग पंडित का महा कोट से ख़ान ख़ाना के पास हाज़िर होना और हमी राव मोहनयां का भी.	خیریت خاں بیجاپوری اور دوناگ پنڈٹ کا مہاکوٹ سے حاضر ہونا اور دولو موہنیہ کا بھی	"
"	मुरारी पंडित का ख़ान ख़ाना के मोरचे पर आना और राव दूदा का मारा जाना.	مراری پنڈٹ کا خانخاناں کے مورچہ پر آنا اور راو دودا کا مارا جانا	"
१०४	ख़ान ख़ाना का दखनियों को हराना. और याक़ूत हबशी का मारा जाना	خانخاناں کا دکہنیوں کو ہرانا اور یاقوت حبشی کا مارا جانا	۱۰۴
१०८	फ़तह ख़ां का ख़ान ख़ाना को दौलताबाद का क़िला सौंप देना	فتح خاں کا خانخاناں کو دولت آباد کا قلعہ سونپ دینا	۱۰۸
"	इस मुहिम में राना का भतीजा भोपत राजा पहाड़ सिंह जुगराज बुंदेला वग़ैरा शामिल थे.	اس مہم میں بہوپت راجہ برادر زادہ رانا اودے پور پہاڑ سنگہ و جگ راج بندیلہ وغیرہ شامل تہے	"
"	नसीरी ख़ां को ख़ान दौरां का ख़िताब	نصیری خاں کو خاندوراں کا خطاب	"
१०९	ख़ान ख़ाना का फ़तह ख़ां और निज़ामुलमुल्क को बुरहानपुर	اودوداکے بیٹے دیبی سنگہ	۱۰۹

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain. Chambal Archives

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	में ले आना।	کو خلعت - خانخاناں کا فتح خاں او نظام الملک کو برہانپور میں لے آنا۔	۱۰۹ ۱۰۹
१०९	बीजापुर वालों का रास्तों में लड़ना और ताना जी डोडिये का मारा जाना।	بیجاپور والوں کا راستوں میں لڑنا او ناناجی ڈوڈیہ کا مارا جانا۔	״
״	दौलताबाद के साथ १००० तोपें और ढाई करोड़ रुपये का मुल्क फ़तह होना।	دولت آباد کے ساتھ ایکہزار توپیں اور ڈہائی کروڑ روپیہ کے ملک کا فتح ہونا۔	״
	बरस सातवां।	**ساتواں برس**	
१०९	राजा भारत बुंदेले का क़िले वीकलोर में क़ब्ज़ा करना	راجہ بہارت بندیلہ کا قلعہ ویکلور میں قبضہ کرنا	۱۰۹
११०	राजा राय सिंह को हाथी इनायत	راجہ رائے سنگہ کو ہاتھی عنایت	۱۱۰
״	रग दूल्हा और साहू जी का दौलताबाद को घेरना और महाबत ख़ां के आने पर नासिक त्रम्बक की तरफ़ चला जाना।	رن دولہ اور ساہوجی کا دولت آباد کو گہیرنا اور مہابت خاں کے آنے پر ناسک ترمبک کیطرف چلا جانا۔	״
״	फ़रंगी क़ैदियों का हुज़ूर में आना	فرنگی قیدیوں کا حضور میں آنا	״
१११	महाबत ख़ां की अरज़ी पर शाहज़ादा शुजाअ को दखन भेजना।	مہابت خاں کی عرضی پر شاہزادہ شجاع کو دکہن میں بہیجنا	۱۱۱
״	राजा जय सिंह. बिट्ठलदास. माधो सिंह हाड़ा. चंद्रमणि बुंदेला. राजा राम दास नरवरी. राजा ऐन अफ़ज़ूं और भीम राठौड़ का शाहज़ादे शुजाअ के साथ जाना।	راجہ جے سنگہ بیٹہلداس مادہو سنگہ ہاڈا چندرمن بندیلہ راجہ رامداس نروری راجہ روزافزوں اور بہیم راٹہور کا شاہزادہ کے ساتھ جانا	״

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१११	जय सिंह और विट्ठल दास को घोड़ा इनायत.	جے سنگہ اور بیٹھلداس کو خلعت اور گھوڑا عنایت	۱۱۱
,,	गुन्नौर के राजा संग्राम का हाज़िर आना.	گنور کے راجہ سنگرام کا حاضر درگاہ ہونا	〃
,,	राजा राज सिंह कछवाहे के बेटे बख़्तावर का मुसलमान होना	راجہ جے سنگہ کچھواہہ کے بیٹے بختاور کا مسلمان ہونا	〃
,,	राजा भारत बुंदेले का इज़ाफ़ा. और उस को शाहज़ादे शुजाअ़ के साथ भेजना.	راجہ بہارت بندیلہ کا اضافہ اور اوسکو شاہزادہ شجاع کے ساتھہ بہیجنا	〃
११२	राजा राजसिंह कछवाहे के पोते पुरुषोत्तम का मुसलमान होकर सआदत मंद नाम पाना	راجہ راج سنگہ کچھواہہ کے پوتے پرشوتم کا مسلمان ہوکر سعادتمند نام پانا	۱۱۲
,,	इसलाम खां का फ़तह खां और निज़ाम शाह समेत हाज़िर होना निज़ाम शाह का गवालियर के क़िले में क़ैद होना और उस का माल असबाब ज़ब्त होना.	اسلام خاں کا مع فتح خاں اور نظام شاہ کے حاضر ہونا نظام شاہ کا گوالیار کے قلعہ میں قید کیا جانا اور اوسکا مال اسباب ضبط ہونا	〃
११३	फ़तह ख़ां के क़सूर माफ़ होकर दो लाख रुपये सालाना मुक़र्रर हो जाना.	فتح خاں کے قصور معاف ہوکر دولاکھہ روپیہ سالیانہ مقرر ہونا	۱۱۳
,,	निज़ाम शाहियों की सलतनत अहमद नगर का ख़ातमा.	نظام شاہیوں کی سلطنت احمدنگر کا خاتمہ ۔	〃
,,	शाहज़ादे दारा शिकोह को मनसब और लाल डेरा इनायत.	شاہزادہ دارا شکوہ کو منصب اور لال ڈیرہ عنایت	〃
११४	कल्यान झाला का राना जी की	کلیان جہالا کا رانا جی	۱۱۴

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	अर्ज़ी ले कर आना और उसका पिछला हाल.	کی عرضی لیکر آنا اور اوسکا پچھلا حال	
११४	राय बन माली दास का बेटा नित्यानन्द	رائے بنمالی داس کا بیٹا نیتانند	۱۱۴
११५	बादशाह का कूंच पंजाब को और रैयत की खेती का नुक़्सान न होने देने और होतो उस का हुक्म.	بادشاہ کا کوچ پنجاب کو اور رعیت کی زراعت کا نقصان نہونے دینے اور جو ہو تو اوسکا معاوضہ دینے کا حکم	۱۱۵
,,	मथुरा से कल्यान झाला को रुखसत और राना जगत सिंह के वास्ते खलअ़त.	متھرا سے کلیان جہالا کو رخصت اور رانا جگت سنگہ کیواسطے خلعت	,,
११६	बादशाह दिल्ली में	بادشاہ دلّی میں	۱۱۶
,,	राजा जगत सिंह का कांगडे से आना	راجہ جگت سنگہ کا کانگڑہ سے آنا	,,
,,	बाद शाह लाहौर में.	بادشاہ لاہور میں	,,
११७	राजा भारत बुंदेले के मरनेपर उस के बेटे देवी सिंह को मन्सब और राजा का खिताब	راجہ بہارت بندیلہ کے مرنے پر اوسکے بیٹے دیبی سنگہ کو منصب اور راجہ کا خطاب	۱۱۷
,,	बादशाह का कशमीर जाना.	بادشاہ کا کشمیر جانا	,,
,,	शाहज़ादे शुजाअ़ का बुरहानपुर से परेंडे के क़िले पर जाना और खान ज़मां को बीजापुर का मुल्क लूट लेने को भेजना.	شاہزادہ شجاع کا برہانپور قلعہ پرینڈہ پر جانا اور خانزماں کو بیجاپور کا ملک لوٹنے کے لئے بہیجنا	,,
,,	राजा जय सिंह. राव शत्रुसाल राजा पहाड़ सिंह जुगराज बुंदेला	راجہ جیسنگہ راو سترو سال راجہ پہاڑسنگہ جگ راج بندیلہ	,,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

	राजा रोज़अफ़ज़ूं और जम्बूके ज़मींदार संग्राम का खानज़मां के साथ जाना	راجہ روزافزوں اور جموں کے زمیندار سنگرام کا خان زماں کے ہمراہ جانا	
११७	साहूजी का एक शख्स को निज़ाम बनाकर अहमदनगर और दौलताबाद के लेने की तजवीज़ करना और आदिल खाँ का किसना. दत्तू. मुरारी पंडित और रण दूल्हा को उस की मदद पर भेजना	ساہوجی کا ایک شخص کو نظام بنا کر احمدنگر اور دولت آباد لینے کا ارادہ کرنا اور عادلخاں کا کشناجی دتو و مراری پنڈت اور رن دولہ کو اوس کی مدد پر بھیجا	۱۱۷
११८	खानज़मां का परेंडे के क़िलेको घेरना और राजा विट्ठल दास का उस के पास आना.	خان زماں کا قلعہ پرینڈہ کو گھیرنا اور راجہ بیٹھلداس کا اوسکے پاس آنا	۱۱۸
"	साहूजी और रण दूल्हा का खान खाना से मुक़ाबिला. महेस राठौड़ और भारी रघनाथ का ज़ख्मी होना. मालवे के सूबेदार खान दौरां का खानखाना की मदद करना.	ساہوجی اور رندولہ کا خانخاناں سے مقابلہ۔ مہیس راٹھوڑ اور بھائی رگھناتھ کا زخمی ہونا مالوہ کے صوبہ دار خاندوراں کا خانخاناں کی مدد کرنا	"
११९	राजा पहाड़ सिंह के ऊपर ग़नीम का हमला	راجہ پہاڑسنگھ کے اوپر غنیم کا حملہ	۱۱۹
१२०	रसद लाने पर दखनियों से कई मुक़ाबिले होना.	رسدلانے پر دکھنیوں سے کئی مقابلے ہونا۔	۱۲۰
१२१	खानखाना की बद सलूकी से बादशाही अमीरों की नाराजी	خانخاناں کی بدسلوکی سے بادشاہی امیروں	۱۲۱

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	और खान खाना के शाहज़ादे को लेकर बुरहान पुरसे वापस आना.	کی ناراضی اور خانخاناں کا شاہزادہ کو لیکر برہان پور سے واپس آنا	
१२४	दखनियों का बादशाही फ़ौज के पीछे आना और खानज़मां राव शत्रुसाल. जुग राज बुंदेले राव करण. और राजा जयसिंह का उनको भगाना.	دکھنیوں کا بادشاہی فوج کے تعاقب میں آنا خانزماں راو ستر وسال جگ راج بندیلہ راو کرن اور راجہ جے سنگہ کا اونکو بھگانا۔	۱۲۴
	आठवां बरस	**آٹھواں برس**	
१२५	बादशाह का महाबत खांऔर खान खाना से नाराज़ होकर शाहज़ादे को अपने पास बुला लेना.	بادشاہ کا مہابت خاں خانخاناں سے ناراض ہوکر شاہزادہ کو اپنے پاس بلا لینا	۱۲۵
१२६	पृथ्वी राज राठौड़ का इज़ाफ़ा	پرتھی راج راٹھور کا اضافہ	۱۲۶
,,	बादशाह का कशमीर से लाहौर को रवाना होना.	بادشاہ کا کشمیر سے لاہور کو روانہ ہونا	//
,,	संबर में जगन्नाथ कवि राय को रुपयों में तोलना.	بھمبر میں جگناتھہ کب رائے کو روپیوں میں تولنا	//
१२७	भंबर के हिन्दू मुसलमानों के आपस में नाता करने को बंद करना और वहां के ज़मींदार जोकू का मुसलमान हो कर राजा दौलत मन्द नाम पाना	بھمبر کے ہندو مسلمانوں کے آپسمیں رشتہ داری کرنے کو موقوف کرنا اور وہاں کے زمیندار جوکو کا مسلمان ہوکر راجہ دولتمند نام پانا	۱۲۷
१२८	गुजरात इलाक़े पंजाब के मुसलमानों की फरयाद पर सत्तर	گجرات علاقہ پنجاب کے نو مسلمانوں کی فریاد پر ستر	۱۲۸

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	के ऊपर बैठकर बड़ी बड़ी बख़शिशें करना.	کے اوپر بیٹھکر بڑی بڑی بخششیں کرنا	
१३६	राजा रामदास नरवरी का इज़ाफ़ा	راجہ رامداس نروری کا اضافہ	۱۳۶
१३७	राजा जय सिंह का इज़ाफ़ा.	راجہ جیسنگہ کا اضافہ	۱۳۷
	श्री नगर की मुहिम	**سری نگر کی مہم**	
१३७	निज़ाबत ख़ां का ज़मींदार सरमौर के साथ शेर गढ़ को फ़तह करना. और कालपी व बिराट के क़िले लेकर सरमोर के ज़मींदार को देना. और सांतूर का क़िला लेकर लखनपुर के ज़मींदार जगत सिंह को वहां रखना. और ज़मींदार श्री नगर का निलाव के घाटे को बन्द कर देना.	نجابت خاں کا بہمراہی زمیندار سرمور شیر گڈہ کو فتح کرنا اور کالپی و بیراٹ کے قلعے لیکر سرمور کے زمیندار کو دینا اور سانتور کا قلعہ لیکر لکھن پور کے زمیندار جگت سنگہ کو وہاں رکھنا اور زمیندار سری نگر کا گہاٹہ نلاو کو بند کر دینا	۱۳۷
१३८	निज़ाबत ख़ां का गूजर गुलेरी और उदय सिंह राठौड़ को लशकर में छोड़ कर घाटा फ़तह करना	نجابت خاں کا گوجر گلیری اور اودے سنگہ راٹھوڑ کو لشکر میں چھوڑ کر گھاٹہ فتح کرنا۔	۱۳۸
१३९	श्री नगर के राजा का वकील भेजकर ११ लाख रुपये देने का क़ौल करना मगर लशकर की तंगी का हाल सुन कर रास्ता और रसद बंद कर देना	سری نگر کے راجہ کا وکیل بہیجکر گیارہ لاکھ روپیہ دینے کا قول کرنا مگر لشکر کی پریشانی کا حال سنکر راستہ اور رسد بند کر دینا	۱۳۹
१४०	गूजर गुलेरी और रूपचन्द-	گوجر گلیری اور روپ چند	۱۴۰

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	गुलेरी का श्री नगर वालों से लड़कर काम आना और बादशाही लश्कर का शकिस्त खाकर वापस होना.	گلیری کا سرینگر والون سے لڑکر کام آنا اور بادشاہی لشکر کا شکست کھاکر واپس ہونا	
१४१	बादशाह की खफ़गी निजाबतखां पर और अबदुलरहीम खान खाना के पोते मिरज़ा खां को कांगड़े की फ़ौज दारी पर भेजना	بادشاہ کی خفگی نجابت خان پر اور عبدالرحیم خانخانان کے پوتے مرزا خان کو کانگڑے کی فوجداری پر بھیجنا	۱۴۱
	जुझार सिंह बुंदेले का बाग़ी होना ॥	**جوجہار سنگہ بندیلہ کا باغی ہونا**	
१४२	जुझार सिंह का गढ़ के ज़मींदार पेम नारायण को मार कर जोरा गढ़ का क़िला लेना और पेम नारायण के बेटे की अर्ज़ पर बादशाह का सुन्दर कबि को जुझार सिंह के पास भेजना और जुझार सिंह का अपने बेटे विक्रमाजीत को दखन से बुला लेना.	جوجہار سنگہ کا گڈھ کے زمیندار پیم نراین کو مار کر جوراگڈہ کا قلعہ لینا اور پیم نراین کے بیٹے کی عرض پر بادشاہ کا سندرکبی کو جوجہار سنگہ کے پاس بھیجنا اور جوجہار سنگہ کو اپنے بیٹے بکرماجیت کو دکھن سے بلا لینا	،،
१४३	ख़ान दौरां. माधो सिंह हाड़ा. राव करन. नेजर बहादुर राजा. पहाड़ सिंह. और चन्द्र मणि बुंदेले का पाछा कर के आसंटे में विक्रमाजीत को ज़ख्मी करना.	خاندوران مادہو سنگہ ہاڈا راو کرن راجہ پہاڑ سنگہ اور چندر سین بندیلہ کا تعاقب کرکے اشٹہ مین بکرماجیت کو زخمی کرنا	۱۴۳
१४४	बादशाह का अबदुल्ला खां. सैयद ख़ान जहां. और ख़ान दौरां को जुझार सिंह के ऊपर भेजना.	بادشاہ کا عبداللہ خان سید خان جہان اور خاندوران کو جوجہار سنگہ کے اوپر جانے کا حکم دینا	۱۴۴

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१५४	ख़ान जहां की फ़ौज में राजा गज सिंह किशन सिंह भदोरिया कृपाराम गौड़ जयराम बड़गूजर. इन्द्र साल हाड़ा और जगन्नाथ कछवाहे के पोते रूप सिंह का तइनात होना	خانجہان کی فوج مین راجہ گجسنگھہ کشن سنگھہ بہدوریہ کرپارام گوڑ جی رام بڑگوجر اندرسال ہاڈا اور جگناتہہ کچھواہہ کے پوتے روپ سنگھ کا تعینات ہونا۔	۱۴۴
१५५	राजा अमर सिंह ज़मींदार बांधोगढ़. चन्द्र मणि बुंदेला. और राजा सारंग देव का अब्दुल्लाह खां के साथ तइनात होना.	راجہ امر سنگھہ زمیندار باندہون گڈہ چندرمن بندیلہ اور راجہ سارنگدیو کا عبداللہ خان کے ساتھہ تعینات ہونا	۱۴۵
,,	माधो सिंह हाड़ा और राजा देवी सिंह को ख़ानदौरां के साथ जाने का हुक्म होना.	مادہو سنگھہ ہاڈا اور راجہ دیوی سنگھہ کو خاندوران کے ساتھہ جانے کا حکم ہونا	,,
१५६	जुझार सिंह की अर्ज़ पर बादशाह का सुन्दर कवि राय को जुझार सिंह के पास भेजना.	جوجہار سنگھ کی عرض پر پہر بادشاہ کا سندر کبی راے کو جوجہار سنگھ کے پاس بہیجنا	۱۴۶
,,	जुझार सिंह से उरछा फ़तह करके राजा देवी सिंह को देने का हुक्म. जिस के बाप दादों से ये रयासत जहांगीर बादशाह ने अबुल फ़ज़ल को क़त्ल करने के इनाम में वर सिंह देव को देदी थी ॥	جوجہار سنگھ سے اورچھہ فتح کرکے راجہ دیوی سنگھ کو دینے کا حکم جسکے باپ دادوان سے یہ ریاست جہانگیر بادشاہ نے ابوالفضل کو قتل کرنے کے انعام مین برسنگدیو کو دیدی تھی	,,
१५७	शाहज़ादे औरंगज़ेब की अफ़सरी कुल फ़ौज पर जो मुहिम-	شاہزادہ اورنگ زیب کی افسری کل فوج پر جو مہم	۱۴۷

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	बुंदेले के वास्ते तैयार हुई थी।	بندیله کیواسطے تیار ہوئی تھی	
१४७	राजा विट्ठलदास, राजा रामसिंह, गोकुलदास सिसोदिया व महेस राठौड़ का शहज़ादे औरंगज़ेब के पास तइनात होना।	راجه بیٹھل داس راجه رام سنگهه گوکلداس سیسودیہ اور مہیس راٹهور کا شاہزادہ اورنگ زیب کے پاس تعینات ہونا	١٤٧
	नवां वर्ष	**نوان برس**	
१४७	जगन्नाथ कावराय को हाथी इनायत.	جگناتھ کوی رای کو ہاتھی عنایت	١٤٧
१४८	राजा देवी सिंह को नक़ारा इनायत.	راجه دیوی سنگه کو نقاره عنایت	١٤٨
"	बलख़ के वकील को रुख़सत.	وکیل بلخ کو رخصت	"
"	राजा जय सिंह का दखन से हाज़िर होना.	راجه جیسنگه کا دکن سے حاضر ہونا	"
"	बादशाह का दौलताबाद के देखने को रवाना होना.	بادشاه کا دولت آباد کے دیکھنے کو روانہ ہونا	"
	उरछे की फ़तह ॥	**اورچھه کی فتح**	
१४९	ख़ान दौरां और राजा देवी सिंह का उरछा फ़तह करना. और ख़ान दौरां का राजा देवी सिंह को उरछे के क़िले में छोड़ना.	خاندوران اور راجه دیوی سنگه کا اورچھه فتح کرنا اور خاندوران کا راجه دیوی سنگه کو اورچھه کے قلعه مین چھوڑنا	١٤٩
"	जुझार सिंह का धोरागढ़ के क़िले में चला जाना.	جوجهار سنگه کا جوراگڈه کے قلعه مین چلا جانا	"
१५०	क़िले धामूनी के फ़तह करने में अमर सिंह राठौड़ के बहुत से राजपूतों का काम आना.	قلعه دهامونی کے فتح کرنے مین امرسنگه راٹهور کے بہت سے راجپوت کام آنا	١٥٠

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१५२	जुझार सिंह का ज़मींदार देवगढ़ के पास आदमी भेजना और जोरा गढ़ की इमारतों को गिरा कर ज़मींदार देवगढ़ के मुल्क में जाना	جوجہار سنگہ کا زمیندار دیوگڈہ کے پاس آدمی بہیجنا اور جوراگڈہ کی عمارتون کو گرا کر زمیندار دیوگڈہ کے ملک مین جانا	۱۵۲
१५३	जोरा गढ़ में बादशाही अमल होना और ख़ानदौरां का संग्राम ज़मींदार, गुन्नोर के बड़े बेटे वग़ैरा को उस क़िले में छोड़ना.	جوراگڈہ مین بادشاہی عمل ہونا اور خاندوران کا سنگرام زمیندار گنور کے بڑے بیٹے وغیرہ کو اوس قلعہ مین چھوڑنا	۱۵۳
१५४	करेली के चौधरी राघो के पता देने से ख़ानदौरां का जुझारसिंह के पीछे जाना	کریلی کے چودہری راگہو کے پتہ دینے سے خاندوران کا جوجہار سنگہ کے تعاقب مین جانا	۱۵۴
१५५	गोविन्द गौड़	گوبند گوڑ	۱۵۵
"	जुझार सिंह और विक्रमाजीत का बादशाही लशकर से लड़कर अबदुल्ला खां के चचा नेक नाम को मारना.	جوجہار سنگہ اور بکراجیت کا بادشاہی لشکر سے لڑکر عبداللہ خان کے چچا نیکنام کو مارنا	"
"	माधो सिंह हाड़ा का बुंदेलों को भगाना	مادہو سنگہ ہاڈا کا بندیلون کو بہگانا	۱۵۶
१५६	ज़ुझार सिंह का गोलकुंडे की तरफ़ जाना	جوجہار سنگہ کا گولکنڈہ کی طرف جانا	"
१५७	माधो सिंह हाड़ा और सय्यद मुहम्मद का राजा बरसिंहदेव की बड़ी रानी पारबती और दूसरी औरतों को जोहर यानी आत्मघात से बचाना.	مادہو سنگہ ہاڈا اور سید محمد کا راجہ برسنگدیو کی بڑی رانی پاربتی اور دوسری عورتون کو جوہر یعنے خودکشی سے بچانا	۱۵۷

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२५९	जुझार सिंह और विक्रमाजीत का जंगल में गोंडों के हाथ से मारा जाना और उन के सर सीहोर में बादशाह के पास पहुंचना।	جوجہار سنگہ اور بکرماجیت کا جنگل مین گونڈون کے ہاتھ سے مارا جانا اور اُنکے سر سیہور مین بادشاہ کے پہونچنا۔	۱۵۹
२६०	राजा बर सिंह देव और जुझार सिंह के खज़ाने	راجہ برسنگدیو اور جوجہار سنگہ کے خزانہ	۱۶۰
,,	उर्छा राजा देवी सिंह को दिया जाना।	اورچھہ راجہ دیبی سنگہہ کو دیا جانا	//
,,	गोंडवाणे के ज़मींदार केबाँ का ज़मीदार चांदा के साथ बुंदेलों का अस्बाब लेकर बादशाही लश्कर में हाज़िर होजाना।	گونڈوانہ کے زمیندار کیبان کا زمیندار چاندا کے ساتھ بندیلون کا مال اسباب لیکر بادشاہی لشکر مین حاضر ہونا	//
२६१	बादशाह का उरछा देखने को जाना और आदिल खां की पेशकश बीजापुर से आना	بادشاہ کا واسطے سیر اورچھہ کو جانا عادلخان کی پیشکش بیجاپور سے آنا	۱۶۱ //
,,	जुझार सिंह के नौकर बसन्त का किला झांसी सौंप देना और बादशाह का गिरधरदास गौड़ का वहां की क़िलेदारी देना।	جوجہار سنگہ کے نوکر بسنت کا قلعہ جہانسی سپرد کرنا اور بادشاہ کا گردہر داس گوڑ کو وہان کی قلعہ داری دینا۔	//
२६३	बादशाह दतया में और वहां की इमारतों की तारीफ़	بادشاہ دتیا مین اور وہان کی عمارتون کی تعریف	۱۶۳
,,	ताना जी दखनी को मनसब।	تاناجی دکھنی کو منصب	//
२६४	बादशाह का उरछे पहुंच कर मंदिर गिराना। और राजा देवी सिंह का हाज़िर होकर नज़र करना।	بادشاہ کا اورچھہ پہنچکر مندر گرانا اور راجہ دیوی سنگہ کا حاضر ہوکر نذر کرنا	۱۶۴

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१६४	वर सिंह देव के बनाये हुये तालाबों की तारीफ़.	برسنگدیو کے بنائے ہوئے تالابون کی تعریف	۱۶۴
"	परगने छत्रे का जब्त होकर इसलामाबाद नाम रक्खा जाना.	پرگنہ چھترہ کا ضبط ہوکر اسلام آباد نام رکھا جانا	"
"	झाँसी और धामूणी के कुओं के खज़ानों का आगरे भेजा जाना.	جہانسی اور دہامونی کے چاہ سے خزانہ برآمد ہوکر آگرہ کو بہیجا جانا	"
१६५	हरी सिंह राठौड़ का इज़ाफ़ा.	ہری سنگہ راٹہور کا اضافہ	۱۶۵
"	औरंगज़ेब का धामूणी से छत्रे में बादशाह के पास हाज़िर होना.	اورنگزیب کا دہامونی سے چہترہ مین بادشاہ کے پاس حاضر ہونا	"
"	बादशाह का दखन को रवाना होना	بادشاہ کا دکن کو روانہ ہونا	"
"	राजा गज सिंह का इज़ाफ़ा.	راجہ گجسنگہ کا اضافہ	"
१६६	बादशाह का साहूजी के निकालने के वास्ते आदिल खां के पास वकील भेजना और शोला पुर का क़िला उसको देना करके ज़ियादा पेशकश मांगना.	بادشاہ کا ساہوجی کے نکالنے کے واسطے عادل خان کے پاس وکیل بہیجنا اور شولاپور کا قلعہ اسکو دینا کرکے زیادہ پیشکش مانگنا	۱۶۶
१६७	कुतबुल्मुल्क के पास शाह ईरान के नाम का ख़ुत्बा बन्द करने के वास्ते वकील भेजा जाना.	قطب الملک کے پاس شاہ ایران کے نام کا خطبہ بند کرنے کے واسطے وکیل بہیجا جانا	۱۶۷
१६७	ख़ान दौरां का झुझार सिंह की रानियों और उसके बेटे दुर्गभान और पोते दुर्जनसाल को लेकर हाज़िर होना.	خاندوران کا جوجہار سنگہ کی رانیون اور اسکے بیٹے درگ بہان اور پوتے درجن سال کو لیکر حاضر ہونا	۱۶۸
१६८	माधो सिंह हाड़ा का इज़ाफ़ा.	مادہوسنگہ ہاڈا کا اضافہ	"
	बादशाह का दौलताबाद पर	بادشاہ کا دولت آباد	"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	पहुंचना और ख़ानज़मां. सब शत्रुसाल पृथ्वी राज राठौड़. राव हटी सिंह. मालूजी भोंसला और परसूजी का पेशवाई में हाज़िर होना	پہونچنا اور خانزمان راو ستر وسال پرتھی راج راٹھوڑ راو ہٹی سنگہ مالوجی بہوسلہ اور پرسوجی کا پیشوائی مین حاضر ہونا۔	
१६९	ख़ान दौरां ख़ानज़मां और शायस्ता ख़ां. का साहोजी भोंसला के ऊपर तइनात होना.	خاندوران خانزمان اور شایستہ خان کا ساہوجی بہوسلہ کے اوپر تعینات ہونا	۱۶۹
"	राजा जय सिंह राजा विट्ठलदास गौड़. माधोसिंह हाड़ा. अमर सिंह राठौड़. गोकुल दास सीसोदिया महेसदास राठौड़ और जगजीवन दखनी ख़ान दौरां की फ़ौज में.	راجہ جیسنگہ راجہ بٹھلداس گوڑ مادہوسنگہ ہاڈا امرسنگہ راٹھوڑ گوکلداس سیسودیہ مہیسداس راٹھوڑ اور جگجیون خاندوران کی فوج مین	"
१७०	राव शत्रुसाल हाड़ा. पहाड़ सिंह बुंदेला. पृथ्वीराज राठौड़. भगवान दास बुंदेला. राव तिलोकचंद. स्याम सिंह राठौड़. जगन्नाथ राठौड़. राव दयाल दास झाला. जादौं राय विट्ठजी. दत्ताजी. रुस्तम राव. हापाजी. परमलराव और एक हज़ार सवार राणा जगत सिंह के ख़ानज़मां की तइनाती में-	راو ستر وسال ہاڈا پہاڑ سنگہ بندیلہ پرتھی راج راٹھوڑ بھگوانداس بندیلہ راو تلوک چند سیام سنگہ راٹھوڑ وجگناتھ راٹھوڑ راو دیالداس جہالا جادون راے بٹھوجی وتاجی رستم راو ہاپاجی پرمل راو اور ایکہزار سوار رانا جگت سنگہ کے خانزمان کی تعیناتی مین۔	۱۷۰
१७१	राजा संग्राम और मेदनी राय शायस्ता ख़ां की फ़ौज में	راجہ سنگرام اور میدنی راے شایستہ خان کی فوج مین	۱۷۱
"	भीम राठौड़ और गुन्नोर के राजा संग्राम का इज़ाफ़ा.	بہیم راٹھوڑ اور گنور کے راجہ سنگرام کا اضافہ	"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१७२	बादशाह दौलताबाद के क़िले में	بادشاہ دولت آباد کے قلعہ مین	۱۷۱
„	कुतबुल्मुल्क का जुझार सिंह के छोटे बेटे उदय भान और शाम दा को पकड़ कर बादशाह के पास भेजना और उन का मुसलमान होना क़बूल न करके मारा जाना	قطب الملک جو جہار سنگھ کے چھوٹے بیٹے اودے بہان او شیام دوا کو پکڑ کر بادشاہ کے پاس بھیجنا اور انکا مسلمان ہونا قبول نہ کرکے مارا جانا	„
„	भुरजी का बगलाने से बादशाह के पास हाज़िर होना।	بہرجی کا بگلانہ سے بادشاہ کے پاس حاضر ہونا	„
१७३	आदिल ख़ां का उदगिर और अड़से के क़िलेदारों को मदद देना और रण दूल्हा को साहू जी की मदद पर भेजना, और बादशाह का ख़ान जहां को भी आदिल ख़ां के ऊपर भेजना।	عادل خان کا ادگر اور اڈسہ کے قلعہ وارون کو مدد دینا اور رن ودلہ کو ساہوجی کی مدد پر بھیجنا اور بادشاہ کا خان جہان کو بھی عادلخان کے اوپر بھیجنا۔	۱۷۳
„	रावकरण, हरिसिंह राठौड़, राजा बहरोज़, जयराम बड़गूजर, इन्द्र साल हाड़ा, मंगूजी, शिरज़ाराव कृष्णा जी, और जसवंत राय का ख़ान जहां के साथ तइनात होना	راوکرن ہری سنگھ راٹھوڑ راجہ بہروز۔ جیرام بڈگوجر۔ اندرسال ہاڈا۔ منگوجی۔ شرزہ راو۔ کرشناجی اور جسونت راے کا خانجہان کے ساتھ تعینات ہونا	„
„	खेतर दुरग के क़िलेदार सालह बेग का वो क़िला साहू जी के आदमियों समेत शायस्ता ख़ां को सौंप देना	کھتر ڈرگ کے قلعدار صالح بیگ کا وہ قلعہ ساہوجی کے آدمیون سمیت شایستہ خان کو سونپ دینا۔	„
१७४	कुतबुल्मुल्क की पेशकश आना।	قطب الملک کی پیشکش	۱۷۴
„	राजा राय सिंह का इज़ाफ़ा।	راجہ راے سنگھ کا اضافہ	„

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२७४	चांदा के ज़मींदार केबां का हाज़िर होना और खलअ़त पाना.	چاندا کے زمیندار کیبان کا حاضر ہونا اور خلعت پانا	۱۷۴
"	आदिल खां की अरज़ी	عادل خان کی عرضی	″
२७५	आदिल खां का मुल्क खराब करने का हुक्म	عادل خان کا ملک خراب کرنے کا حکم	۱۷۵
"	कुतबुल्मुल्क का बादशाह के नाम का सिक्का चलाना.	قطب الملک کا بادشاہ کے نام کا سکہ چلانا	″
"	बुरजीका क़िले धोप के ऊपर भेजाजाना.	برجی کا قلعہ دہوپ کے اوپر بہیجا جانا	″
२७६	राजा देवी सिंह का उरछे से हाज़िर आना.	راجہ دیوی سنگہ کا اورچھے سے حاضر آنا	۱۷۶
"	बिक्रमाजीत बुंदेले के वड़े बेटे नरसिंह देव को मुसलमान करना	بکرماجیت بندیلہ کے بڑے بیٹے نرسنگہ دیو کا مسلمان کیا جانا	″
"	चांदा के ज़मींदार केबां को घर जाने की रुखसत	کیبان زمیندار چاندا کو گھر جانے کی رخصت۔	″
२७७	संग मेरु और जुनेर के क़िलों का मये २७ परगनों के साहूजी से फ़तह होना जिन की जमा दो किरोड़ साठलाख दाम की थी.	سنگمیر اور جنیر کے قلعون کا مع ۲۷ پرگنون کے ساہوجی سے فتح ہونا جن کی جمع دوکروڑ ۶۰ لاکھہ دام کی تہی	۱۷۷
२७८	खानदौरां से बीजापुर के रणदूल्हा और बहलोल का मुक़ाबिला और राजा जय सिंह का उन को भगाना.	خاندوران سے بیجاپور کے رندولہ اور بہلول کا مقابلہ اور راجہ جیسنگہ کا اُن کو بہگانا	۱۷۹
"	खान दौरां का बीजापुर के १२ कोस तक इधर उधर क़ुतबुल-	خاندوران کا بیجاپور کے ۱۲ کوس تک ادھر اُدھر تا	″

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	मुल्क की सरहद तक लूट मार करना	سرحد قطب الملک لوٹ مار کرنا	
१८०	बादशाह का हुक्म ऊदगिर व उड़सा के क़िले फ़तह करने का	بادشاہ کا حکم اودگر اور اڑیسہ کے قلعون کو فتح کرنے کا	۱۸۰
,,	किशनाजी· सामाजी और शिरज़ा राव का ख़ानजहां के हुक्म से सराधन और धारासियों का क़िला फ़तह करना।	کشناجی ساماجی اور شرزہ راو کا خان جہان کے حکم سی سرادہن اور دہاراسیون کے قلعہ فتح کرنا۔	۱۱
१८१	ख़ानजहां का क़िले कान्ती को फ़तह करना और रण दूल्हा का लड़ाई में शकस्त खाना	خانجہان کا قلعہ کانتی کو فتح کرنا اور رن دولہ کا لڑائی مین شکست کھانا	۱۸۱
१८२	बीजापुर वालों और खेलूजी का बादशाही लशकर पर हमला करके सिपहदार ख़ां और राजा देवी सिंह से लड़ना.	بیجاپور والون اور کہیلوجی کا بادشاہی لشکر پر حملہ کرکے سپہدار خان اور راجہ دیوی سنگہ سے لڑنا	۱۸۲
,,	ख़ानज़मां का अहमद नगर से साहूजी के ऊपर कूच करना. और साहूजी का भामड़ा नदी से उतर कर आदिल ख़ां की अमलदारी में चला जाना.	خانزمان کا احمد نگر سے ساہوجی کے اوپر کوچ کرنا اور ساہوجی کا بہٹمراندہی سے اوترکر عادل خان کی عملداری مین چلا جانا	۱۱
१८३	चमारकूंडे के क़िले में बादशाही अमल होना.	جمارکونڈہ کے قلعہ مین بادشاہی عمل	۱۸۳
१८४	ख़ानज़मां का बादशाह के हुक्म से आदिल ख़ां की अमलदारी में दाख़िल होना.	خانزمان کا بادشاہ کے حکم سے عادل خان کی عملداری مین داخل ہونا	۱۸۴

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

१८४	राव शत्रुसाल हाड़ापर ग़नीम का हमला और राव की फ़तह.	راو ستروسال ہاڈا پر غنیم کا حملہ اور راو کی فتح	۱۸۴
,,	ख़ानज़मां का कोलापुर फ़तह करना और साहूजी को ३ रोज़ तक किशन बाग़पर लड़कर मिरच की तरफ़ भगाना. और राय बाग़ को लूटना	خان زمان کا کولاپور فتح کرنا اور ساہوجی کو تین روز تک کشن باغ پر لڑکر مرج کی طرف بہاگنا اور راے باغ کو لوٹنا	//
१८५	आदिल ख़ां का ३ तर्फ़ के हमले से तंग होकर २० लाख रुपये बादशाही वकील मुकर्रमतख़ां के हाथ भेजना और साहूजी की बाबत शरतें ठहरना.	عادل خان کا تین طرف کے حملے سے تنگ ہوکر ۲۰ لاکہہ روپیہ بادشاہی وکیل مکرمت خان کے ہاتہہ بہیجنا اور ساہوجی کی بابت شرطین ٹہرنا	۱۸۵
,,	बादशाह का अहदनामा मये तस्वीर पंजे के आदिल ख़ां के वास्ते.	بادشاہ کا عہدنامہ معہ تصویر پنجہ کے عادل خان کے واسطے	//
	दसवां वर्ष ॥	دسوان برس	
१८६	बीदर का क़िला फ़तह होकर निज़ामुलमुल्क के रिश्तेदारों का क़ैद होना.	بیدر کا قلعہ فتح ہوکر نظام الملک کے رشتہ دارون کا قید ہونا	
,,	धरूप का क़िला भोजबल से लिया जाना. और भोजबल को मनसब	دہروپ کا قلعہ بہوج بل سے لیا جانا اور بہوج بل کو منصب	//
,,	शायस्ता ख़ां. ख़ानजहां और ख़ानज़मां का आदिल ख़ां के मुल्क से वापस आना.	شایستہ خان خانزمان اور خان جہان کا عادلخان کے ملک سے واپس آنا	//

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१८९	बादशाह का खानज़मां को साहू जी के ऊपर भेजना	بادشاہ کا خانزمان کو ساہوجی کے اوپر بھیجنا	۱۸۹
१९०	क़ुतबुल्मुल्क की पेशकश और उसका अहद नामा	قطب الملک کی پیشکش اور اُس کا عہدنامہ	۱۹۰
१९२	बादशाह का दौलताबाद से मंडू की तरफ़ लौटना	بادشاہ کا دولت آباد سے منڈو کیطرف لوٹنا	۱۹۲
	इस सफ़र में दो करोड़ रुपया १ करोड़ का मुल्क चालीस क़िले हाथ आना जिनमें से २० साहू जी के पास थे	اِس سفر مین دو کروڑ روپیہ ایک کروڑ کا ملک اور چالیس قلعہ ہاتھہ آنا جنمین سے بیس ساہوجی کے پاس تھے	۱۹۳
,,	परेंडे का क़िला और कोकन का आधा मुल्क आदिल खां को दिया जाना और सोने की तख़्ती पे अहदनामा खुदाकर उसके पास भेजा जाना	پریڈہ کا قلعہ اور کوکن کا آدھا ملک عادل خان کو دیا جانا اور سونے کی تختی پر عہدنامہ کھُدا کر اُسکے پاس بھیجا جانا	//
१९३	दखन का कुल मुल्क जिसमें ४ सूबे अहमदनगर. तिलंगाना खानदेस और बराड़ के थे शाहज़ादे औरंगज़ेब को इनायत होना और उसको साहू जी के पास से क़िले छुड़ाने का हुक्म दिया जाना	دکھن کا ملک جسمین چار صوبہ احمدنگر۔ تلنگانہ۔ خاندیس اور براڑ کے تھے شاہزادہ اورنگزیب کو عنایت ہونا اور اُسکو ساہوجی کے پاس سے قلعہ چھوڑانیکا حکم دیا جانا	//
१९३	राव शत्रु साल का इज़ाफ़ा	راو ستروسال کا اضافہ	//
१९४	बादशाह का मंडू में पहुंचना और अपनी तस्वीर अहदनामे के साथ क़ुतबुल्मुल्क के पास भेजना.	بادشاہ کا منڈو مین پہونچنا اور اپنی تصویر عہدنامہ کے ساتھہ قطب الملک کے	۱۹۴

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

		پاس بھیجنا	۱۹۴
१९४	दत्ताजी के मनसब का इज़ाफ़ा	دتاجی کے منصب کا اضافہ	//
,,	कल्यान झाला का राना जगतसिंह की अर्ज़ी लेकर हाज़िर आना.	کلیان جہالا کا رانا جگت سنگھ کی عرضی لیکر حاضر آنا	//
,,	जैत पुर के जमींदार का हाज़िर आना	زمیندار جیت پور کا حاضر آنا	//
१९५	ख़ान दौरां का क़िले ऊदगिर को फ़तह करना.	خاندوران کا قلعہ اودگر کو فتح کرنا	۱۹۵
,,	बादशाह का घाटी चांदा और उज्जैन के रास्ते से आगरे को रवाना होना.	بادشاہ کا گھاٹی چاندا اور اوجین کے راستہ سے آگرہ کو روانہ ہونا	//
,,	राणा जगत सिंह के वास्ते जड़ाउ सर पेच और तलवार भेजना.	راجہ جگت سنگھ کیواسطے جڑاو سرپیچ اور تلوار بھیجنا	//
,,	ख़ान दौरां का ऊद गिर के क़िले को फ़तह करना	خاندوران کا اودگر کے قلعہ کو فتح کرنا	//
,,	राव हट्टी सिंह का मौज़े खिजूरी में हाज़िर होकर हाथी नज़र करना	راو ہتی سنگھ کا موضع کھجوری میں حاضر ہوکر ہاتھی نذر کرنا	//
१९६	बादशाही लशकर का पलायते में होकर गुज़रना और माधो सिंह हाड़ा के बेटे मोहन सिंह और जुझार सिंह का हाज़िर होना.	بادشاہی لشکر کا پلاتیہ میں ہوکر گزرنا اور مادھو سنگھ ہاڈا کے بیٹے موہن سنگھ اور جوجہار سنگھ کا حاضر ہونا	۱۹۶
,,	गांव मंडावर में शत्रुसाल हाड़ा के बेटे भावसिंह का हाज़िर होकर हाथी नज़र करना.	موضع منڈاور میں ستروسال ہاڈا کے بیٹے بہاو سنگھ کا حاضر ہوکر ہاتھی نذر کرنا	//

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१९६	धंधेड़े के पुराने ज़मींदार इन्द्र मणि का धंधेड़े से सेवा राम गौड़ को निकाल देना और बादशाह का राजा विठ्ठल दास गौड़, मौतमिद खां. जैराम बड़गूजर हरी सिंह हाड़ा और शिताबखां वग़ैरा को इन्द्र मणि के ऊपर भेजना.	دندھیرے کے پرانے زمیندار اندرمن کا دندھیرے سے سیوارام گوڑ کا نکال دینا اور بادشاہ کا راجہ بیٹھلداس گوڑ معتمد خان جی رام بڈگوجر ہری سنگہ ہاڈا اور ستاب خان وغیرہ کو اندرمن کے اوپر بھیجنا	۱۹۶
१९८	राजा विठ्ठलदास और मौतमिद खां वग़ैरा को खलअ़त	راجہ بیٹھلداس اور معتمد خان وغیرہ کو خلعت	۱۹۸
"	बादशाह का अजमेर पहुंचकर आना सागर के ऊपर दौलत-खाने में ठहरना. जो ३ लाख रुपये में तैय्यार हुवा था.	بادشاہ کا اجمیر پہونچکر آنا ساگر کے اوپر دولت خانہ مین ٹھہرنا جو ۳ لاکھ روپیہ مین تیار ہوا تھا	//
१९९	बादशाह का ख़्वाजा साहिब की दरगाह में जाकर अपनी बनाई हुई मसजिद में नमाज़ पढ़ना	بادشاہ کا خواجہ صاحب کی درگاہ مین جاکر اپنی بنائی ہوئی مسجد مین نماز پڑھنا	۱۹۹
"	राना जगत सिंह के टीकाई बेटे राज कंवर का हाज़िर आना.	رانا جگت سنگہ کے ولیعہد راج کنوَر کا حاضر آنا	//
"	इधर से ख़ानज़मां का और उधर से आदिल ख़ां के सिपहसालार रण दूल्हा का साहूजी के ऊपर हमला करना.	اِدھر سے خان زمان کا اُدھر سے عادلخان کے سپہ سالار رندولہ کا ساہوجی کے اوپر حملہ کرنا	//
"	ख़ान ज़मां का कार तलब ख़ां और राव हरी सिंह को जुनेर का	خانزمان کا کار طلب خان اور راو ہری سنگہ کا قلعہ جنیر کی	//

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	क़िला फ़तह करनेको भेजना।	فتح کرنے کو بھیجنا	۱۹۹
१९९	खानज़मां का पूनेपर जाना राव शत्रुसाल हाड़ा और पृथ्वी राज राठौड़ का अपनी दूसरी और तीसरी फ़ौज का अफ़सर करना।	خانزمان کا پونہ پر جانا راو ستروسال ہاڈا اور پرتھی راج راٹھور کا اپنی دوسری اور تیسری فوج کا افسر کرنا	//
”	साहूजी का पूने से कौंकन जाना और पनाह न मिलने से वापस आना।	ساہوجی کا پونہ سے کوکن جانا اور وہان پناہ نہ ملنے سے واپس آنا	//
२०२	खानज़मां का साहूजी का पीछा करके उसका डेरा डांडा और निज़ाम के निशान लूट लेना।	خانزمان کا ساہوجی کا تعاقب کرکے اس کا ڈیرہ ڈانڈا اور نظام کے نشان لوٹ لینا	۲۰۲
२०३	खान दौरां और रणदूल्हा का साहूजी को माहूली के क़िले में घेरना।	خاندوران اور رندولہ کا ساہوجی کو قلعہ ماہولی مین گھیرنا	۲۰۳
२०४	साहूजी का निज़ाम को रणदूल्हा के हवाले करके आदिल खां की नौकरी क़बूल करना। और जुनेर वग़ैरा के क़िले खानज़मां को सौंप देना।	ساہوجی کا نظام کو رندولہ کے حوالہ کرکے عادل خان کی نوکری قبول کرنا اور جنیر وغیرہ کے قلعہ خانزمان کو سپرد کردینا	۲۰۴
२०५	रणदूल्हा का निज़ाम को जो असल में अगले निज़ाम का दामाद था खानज़मां के हवाले करना। और खानज़मां का दौलताबाद में औरंगज़ेब के पास हाज़िर होना।	رندولہ کا نظام کو جو در اصل نظام سابق کا داماد تھا خانزمان کے حوالہ کرنا اور خان زمان کا دولت آباد مین اورنگ زیب کے پاس حاضر ہونا	۲۰۵

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	गाडवाने की फ़तह.	گونڈوانہ کی فتح	
२०६	खान दौरां का बाद फ़तह ऊद गिर और अड़से के देव गढ़ के इलाक़े में आकर कतल करं और आसटे के क़िले फ़तह करना.	خان دوران کا بعد فتح اودگر اور اڑیسہ کے علاقہ دیوگڈہ ہین آکر کتلجہر اور آشٹہ کے قلعہ فتح کرنا	۲۰۶
"	सकत सिंह वेस का खानदौरां के हुक्म से देव गढ़ के ज़मीं दार कोकियां के पास जाना.	سکت سنگہ بیس کا خاندوران کے حکم سے دیوگڈہ کے زمیندار کوکیان کے پاس جانا	"
"	खान दौरां का नाग पुर के क़िले को घेरना	خان دوران کا قلعہ ناگپور کو گھیرنا	"
"	चांदा के ज़मीं दार केबां और गुन्नौर के राजा संग्राम का खान दौरां के पास हाज़िर होना.	چاندا کے زمیندار کیبان اور گنور کے راجہ سنگرام کا خان دوران کے پاس حاضر ہونا	"
२०७	खान दौरां और राजा जयसिंह का सुरंग उड़ाकर नागपुर का क़िला फ़तह करना.	خان دوران اور راجہ جیسنگہ کا سرنگ اڑاکر قلعہ ناگپور کو فتح کرنا	۲۰۷
२०८	कोकियां का देवगढ़ से खान दौरां के पास हाज़िर होकर ४ लाख रुपये सालाना देना क़बूल करना और खान दौरां का नाग पुर का क़िला उसको	کوکیان کا دیوگڈہ سے خان دوران کے پاس حاضر ہوکر چار لاکھ روپیہ سالانہ دینا قبول کرنا اور خاندوران کا قلعہ ناگپور اُسکو	۲۰۸

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	वापस देकर काली भींत के ज़मींदार भीम सेन से पेश कश लेना	واپس دیکر کالی ہبیت کے زمیندار ہیم سین سے پیشکش لینا	۲۰۸
२०९	राजा गज सिंह को खलअत खासा और घोड़ा इनायत	راجہ گجسنگہ کو خلعت خاصہ اور گھوڑا عنایت	۲۰۹
,,	राज कँवर को खलअत और रुखसत और उसके साथ बल्लू चौहान और रावत मान सिंह वग़ैरा को खलअत इनायत और राना के वास्ते हाथी	راجہ گنور کو خلعت اور رخصت اور اُس کے ہمراہ بلّو چوہان اور راوت مان سنگہ وغیرہ کو خلعت عنایت اور رانا کیواسطے ہاتھی	//
२१०	मोअज़्ज़माबाद में राजा जयसिंह की तरफ़ से बादशाह की नज़र	معظم آباد مین راجہ جیسنگہ کی طرف سے بادشاہ کی نذر	۲۱۰
,,	बाड़ी के तालाब पर डेरे.	باڑہی کے تالاب پر ڈیرہ	۲۱۰
,,	बादशाह का आगरे में पहुंच कर क़िले के लिये महलों में दाखिल होना.	بادشاہ کا آگرہ کے قلعہ مین پہونچکر قلعہ کے نئے محلون مین داخل ہونا	//
२११	राजा विट्ठल दास और मोतमिद खां का धंधेडे के ज़मींदार को ले कर हाज़िर होना बादशाह का उस को क़ैद रखने के लिये जुनेर के क़िले में भेज देना	راجہ بیٹھلداس اور معتمد خان کا دندہیڑہ کے زمیندار کو لیکر حاضر ہونا اور بادشاہ کا اُسکو قلعہ جُنیر مین قید رکہنے کے واسطے بہیجنا	۲۱۱
,,	राजा विट्ठल दास का इज़ाफ़ा और उसको धंधेडा इनायत	راجہ بیٹھلداس کا اضافہ اور اُسکو دنڈہیرہ عنایت	//

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२११	राजा जगत सिंह से बंगश की क़िले दारी उतर जाना.	راجہ جگت سنگہ سے بنگش کی قلعداری اُتر جانا	٢١١
२१२	ख़ान दौरां. राजा जय सिंह. अमर सिंह राठौड़ और माधो सिंह हाडा का हज़ूर में हाज़िर होना.	خان دوران راجہ جیسنگہ امر سنگہ راٹھوڑ اور مادہو سنگہ ہاڈا کا حضور میں حاضر ہونا	٢١٢
,,	ख़ान दौरां को ६ हज़ारी मनसब. राजा जय सिंह को ५ हज़ारी मनसब और चाट सू का परगना इनायत	خان دوران کو چھ ہزاری منصب راجہ جیسنگہ کو پانچ ہزاری منصب اور چاٹسو کا پرگنہ عنایت	,,
,,	अमर सिंह राठौड़ और माधो सिंह के इज़ाफ़े	امر سنگہ راٹھوڑ اور ماہو سنگہ کے اضافے	,,
२१३	राजा देवी सिंह को नक़ारा और झंडा इनायत.	راجہ دیوی سنگہ کو نقارہ اور جھنڈا عنایت	٢١٣
,,	राजा बिट्ठल दास को ख़िलअत और धंधेड़े जाने की रुख़सत	راجہ بیٹھلداس کو خلعت اور دھندہیڑہ جانے کی رخصت	,,
,,	जम्बू के ज़मींदार संग्राम के बेटे भोपत का कांगड़े के फ़ौजदार शाह क़ुली से लड़ कर मारा जाना.	سنگرام زمیندار جموں کے بیٹے بہوپت کا کانگڑہ کے فوجدار شاہ قلیخان سے لڑکر مارا جانا	,,
२१४	औरंग ज़ेब का दखन से आना	اورنگ زیب کا دکن سے آنا	٢١٤
,,	राजा जय सिंह को घर जाने की रुख़सत और उसके इलाक़े के क़ीमती घोड़े.	راجہ جیسنگہ کو گھر جانے کی رخصت اور اُس کے علاقہ کے قیمتی گھوڑے	,,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२१४	संग्राम ज़मींदार गुन्नोर का इज़ाफ़ा	سنگرام زمیندار گنو کا اضافہ	٢١۴
,,	ईरान के बादशाह को ख़त	ایران کے بادشاہ کو خط	//
२१५	बुंदेलों का झुझार सिंह के बेटे पृथ्वी राज को रईस बना कर मुल्क दबाना और बादशाह का मालवे के सूबेदार ख़ानदौरां को ख़िलअत देकर उसके ऊपर भेजना	بندیلون کا جوجہار سنگہ کے بیٹے پرتہی راج کو رئیس بناکر ملک دبانا اور بادشاہ کا مالوہ کے صوبہ دار خاندوران کو خلعت دیکر اسکے اوپر بہیجنا-	٢١٥
	परताप उज्जैनिया का माराजाना।	پرتاپ اوجنیہ کا مارا جانا	
२१५	परताप का बादशाह की बंदगी से अपने मुल्क की हुकूमत पाना और फिर अदूलहुक्मी करना।	پرتاپ کا بادشاہ کی بندگی سے اپنے ملک کی حکومت پانا اور پہر عدولحکمی کرنا	٢١٥
२१६	अबदुल्ला ख़ां फ़ीरोज़जंग का भोजपुर के क़िले को घेरना।	عبداللہ خان فیروزجنگ کا بہوجپور کے قلعہ کو گہیرنا	٢١٦
,,	परताप का लड़ना और भोजपुर फ़तह होने पर अबदुल्ला ख़ां के पास हाज़िर होजाना।	پرتاپ کا لڑنا اور بہوجپور فتح ہو جانے پر عبداللہ کے پاس حاضر ہو جانا	//
	दसवां बरस ॥		
२१८	अबदुल्लाह ख़ां का बादशाह	عبداللہ خان کا بادشاہ	٢١٨

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

	के हुक्म से परताप को मार डालना और उसकी औरत का निकाह अपने पोतेसे करदेना	کے حکم سے پرتاپ کو مار ڈالنا اور اسکی عورت کا نکاح اپنے پوتے سے کردینا	۲۱۸
२१८	पृथ्वी राज राठौड़ का इज़ाफ़ा.	پرتھی راج راٹھوڑ کا اضافہ	″
″	समुद्र के बढ़ने से ठट्ठे के सूबे में नुकसान.	دریا کی طغیانی سے صوبہ ٹھٹھہ مین نقصان	″
२१९	औरंगज़ेब को दखन की रुखसत और बगलाना फ़तह करने की इजाज़त.	اورنگ زیب کو رخصت دکن اور بگلانہ فتح کرنے کی اجازت	۲۱۹
२२०	सूबेदार कशमीर का अबदाल से तिब्बत छीनना.	صوبہ دار کشمیر کا ابدال سے تبت چھین لینا	۱۲۰
″	लोट और खातमा.	نوٹ اور خاتمہ	″

इतिश्री संपूर्णम्

تمام شد

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाहजहां बादशाह

जबमितीकातिकबदी १४ संवत १६८४ इतवारके दिन मुकाम राजौर में जहांगीर बादशाह का इन्तकाल हुआ तो नूरजहां बेगम ने शहरयारको लाहोर से बुलाया मगर उस का भाई यमीनुद्दौला आसिफ़ खां वज़ीर जो खुर्रम का सुसरा था और उस को बादशाह बनाया चाहता था मसलेहत वक़्त से खुसरो के बेटे बुलाकी को जिस का दूसरा नाम दावरबख्श भी था तख़्त पर बैठा कर कई अमीरों और राजा बासू के बेटे राजा जगत सिंह के साथ लाहोर की तरफ़ रवाने हुआ और नूर जहां को नज़र बंद करके बनारसी नाम १ हिन्दू को जो बहुत तेज़ चलता था खुर्रम यानी शाहजहां के पास दकखन की

شاہجہان بادشاہ

روز یکشنبہ تاریخ ۲۸ ماہ صفر ۱۰۳۶ ہجری کو مقام راجور میں جہانگیر شاہ کا انتقال ہوا تو نورجہان بیگم نے شہریار کو لاہور سے بُلایا مگر اُسکا بھائی یمین الدولہ آصف خان وزیر جو خورم کا سُسرا تھا اور اُس کو بادشاہ بنایا چاہتا تھا مصلحت وقت سے خسرو کے بیٹے بلاقی کو جسکا دوسرا نام داوربخش بھی تھا تخت پر بٹھاکر کئی امیروں اور راجہ باسو کے بیٹے راجہ جگت سنگھ کے ساتھ لاہور کی طرف روانہ ہوا اور نورجہاں کو نظربند کرکے بناری نام ایک ہندو کو جو بہت تیز چلتا تھا خرم یعنی شاہجہان کے پاس دکھن کی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की तरफ़ रवाने किया और कहलाया कि जलदी आगरे में पहुंचें ॥

जब बुलाकी लाहोर के पास पहुंचा तो शहरयार मिति कातिक सुदी १३ की इतवार के दिन ३ कोस पर आकर लड़ा और हार खाकर किले को भागा आसिफ़खां ने शहर में कबज़ा करके शहरयार को पकड़ा और अंधा करके कैद कर दिया ॥

मिति मंगसिर बदी ५ इतवार को बनारसीदास जुनेर में पहुंचा और महाबत खां की मारफ़त शाहजहां से मिल कर आसिफ़ खां की अंगूठी दी और सब हाल कहा शाहजहां बृहसपतिवार को जुनेर से रवाने हुआ और दकखन के सूबेदार खांनजहां लोधी को बहुत सी खातिर तसल्ली लिखी तो भी उसने निज़ाम उल्मुल्क से मिला बट करके तमाम मुल्क बाला घाट का उस को दे दिया और उस तरफ़ के कुल बादशाही अमीर और जागीर

کی طرف روانہ کیا اور کہلایا کہ جلد آگرہ میں پہونچیں ❊

جب بلاقی لاہور کے پاس پہنچا تو شہریار روز یکشنبہ ۱ ربیع الاول کو — تین کوس پر آکر لڑا اور شکست پاکر قلع کو بھاگا آصف خاں نے شہر میں قبضہ کرکے شہریار کو پکڑا اور اندھا کرکے قید کر دیا۔

روز یکشنبہ ۱۹ ربیع الاول کو بنارسی داس جونیر میں پہنچا اور مہابت خان کی معرفت شاہجہان سے مل کر آصف خان کی انگوٹھی دی اور سب حال کہا شاہجہان پنجشنبہ - کو جونیر سے روانہ ہوے اور دکھن کے صوبہ دار خانجہان لودھی کو بہت سی خاطر و تسلی لکھی تو بھی اوس نے نظام الملک سے سازش کرکے تمام ملک بالاگھاٹ کا اُس کو دیدیا اور اس طرف کے کل بادشاہی امیر اور جاگیردار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दार भी सिवाय अहमदनगर के कि
लेदार सिपहदार खां के कि जिस ने
ख़ान जहां का कहना नहीं माना उस
के लिखने से अपने परगने थाने और
जागीरें छोड़ २ कर बुरहानपुर मे
आगये और ख़ान जहां अपने बेटों
और साथियों को बुरहानपुर मे छोड़
कर राजा जै सिंह और गजसिंह स
मेत जो लाचारी से उस के साथ
थे मंडू में गया और वहां के सूबे
दार मुज़फ़्फ़र खां को निकाल कर
ख़ुद मालिक बन बैठा ॥

शाह जहां मंगसिर सुदी ६ को नर
बदा से उतर कर गांव सेनूरमे ठैरये
वहां उनको शहर यार की हार की
ख़बर अहमदाबाद के सूबेदार
नाहर खां की अर्ज़ी से मिली. नाहर
खां को उस लड़ाई का हाल गुजरा
त के हिन्दुओं की लिखावट से मा
लूम हुआ जो लार में रहते थे ॥

पोस बदी ३ को शाह जहां अह

بھی سوائے احمد نگر کے قلعہ دار
سپہ دار خان کے کہ جس نے
خان جہان کا حکم نہیں مانا اُس کے
لکھنے سے اپنے پرگنے تھانے اور
جاگیریں چھوڑ چھوڑ کر برہان پور میں
آگئے اور خان جہان اپنے بیٹوں
اور ساتھیوں کو برہان پور میں چھوڑ کر
راجہ جے سنگھ اور گج سنگھ کے جو
لاچاری بضرورت اُس کے ساتھ تھے
منڈو میں گیا اور وہاں کے صوبہ دار
مظفر خان کو نکال کر کے خود مالک
بن بیٹھا۔

شاہجہاں ۶ ربیع الاول کو
نربدا سے اتر کر موضع سیلنور میں ٹھیرے
۔ وہاں اُنکو شہریار کی شکست کی
خبر احمدآباد کے صوبہ دار ناہر خاں کی
عرضی سے ملی ناہر خاں کو اُس
لڑائی کا حال گجرات کے ہندوؤں
کی لکھاوٹ سے معلوم ہوا تھا
جو لار میں رہتے تھے۔

۱۷ ربیع الثانی کو شاہجہان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

हाजिर होवें जब दोनों हाथ ज़मीन से ल
गाकर चूम लें -

जिलूस के दिन बादशाह ने ६० लाख
रूपे तो अपनी बेगमों बेटों बेटियों को
और १२ लाख रूपे सैयदों और शेखों
वगैरा को बख़्शे और अमीरों के मनस
ब में इस मूजब इज़ाफ़ा किया जैसे

१ आसिफ़ खां का मनसब सात ह
ज़ारी से आठ हज़ारी ८ हजार सवार
दो अस्पा ति अस्पा, खिताब सलतन (ऊपर लिखा: चचा को)
का कुल अख़तियार और बंदर ला
हरी जागीर में बख़्शा

२ मंहाबत खां को सात हजारी सात
हजार सवार का मनसब खान खाना
का खिताब और नक़्क़ारा निशान तु
मान और तोग़ और ४ लाख इनाम -

३ वज़ीर खां पांच हज़ारी ३ हज़ार स
वार १ लाख इनाम

४ सैयद मुज़फ़्फ़र खां चार हज़ारी ३ ह
ज़ार सवार

५ दिलावर खां बड़ेच चार हज़ारी
२५०० सवार

جلوس کے دن بادشاہ نے ساٹھ لاکھ
روپیہ تو اپنی بیگموں اور بیٹوں اور بیٹیوں
کو اور بارہ لاکھ سادات اور مشائخ
وغیرہ کو بطور انعام کے بخشے اور امیروں
کے مناصب میں حسب ذیل اضافہ
فرمایا -

(۱) یمین الدولہ آصف خاں کو چھ
ہزاری سے ہشت ہزاری ذات اور ہشت
ہزار سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ کا منصب
خلعت خاصہ عمو کا خطاب اور بندر
لاہری جاگیر میں -

۲ - مہابت خاں کو ہفت ہزاری
ذات ہفت ہزار سوار کا منصب اور
خانخاناں سپہ سالار کا خطاب خلعت
فاخرہ مع اسپ و فیل اور اسلحہ مرصع کے
چار لاکھ روپیہ انعام اور علم نقارہ طوغ
اور طومن طوغ

(۳) وزیر خاں پنجہزاری تین ہزار سوار ذات کا
عہدہ خلعت فاخرہ ایک لاکھ روپیہ انعام علم نقارہ

۴ - سید مظفر خان بارہہ چار ہزاری
تین ہزار سوار خلعت فاخرہ ایک لاکھ
انعام علم اور نقارہ - ۰

۵ دلاور خاں بڑھیچ چار ہزاری ڈہائی ہزار سوار خلعت اور پچاس ہزار کا انعام -

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६ बहादुरखां रुहेला चार हजारी २००० सवार

७ सरदारखां तीन हजारी २००० सवार

८ राजा विट्ठलदास राजा गोपालदास गौड़ का बेटा तीन हजारी १५००० सवार झंडा खासा घोड़ा हाथी और ३०००० रुपै इनाम

९ मुजफ्फर किरमानी ३ हजारी १२०० सवार

१० राजा मनरूप जगनाथ कछवाहे का बेटा ३ हजारी १००० सवार झंडा घोड़ा और २५०००) इनाम

११ कुलीचखां २५०० हजारी २००० सवार

१२ ख्वाजा कासिम २५०० हजारी २००० सवार

१३ रज़ा बहादुर खिदमत परस्तखां २००० हजारी १२०० सवार

१४ यूसुफ मुहम्मदखां २००० हजारी १००० सवार

१५ जांनिसारखां २००० हजारी २००० सवार

१६ लहरास्प महाबतखां का बेटा २००० हजारी १००० सवार

۶ - بہادر خاں رُہیلہ چار ہزاری دو ہزار سوار خلعت اسپ خنجر مرصع پچاس ہزار روپیہ انعام

(۷) سردار خاں تین ہزاری دو ہزار سوار خلعت اسپ اور ۳۰ ہزار روپیہ انعام علم ونقارہ -

۸ - راجہ بیٹھل داس گوڑ ولد راجہ گوپال داس تین ہزاری ڈیڑھ ہزار سوار خلعت مع فیل ۳۰ ہزار روپیہ انعام علم و اسپ

۹ - مرزا مظفر کرمانی تین ہزاری بارہ سو سوار خلعت و خنجر مرصع اور ۳۰ ہزار انعام

۱۰ - راجہ منروپ ولد راجہ جگناتھ کچھواہہ ... ہزاری ہزار سوار خلعت جمدھر مرصع پچیس ہزار انعام علم اور گھوڑا -

۱۱ - قلیچ خاں دو ہزار سوار ہاتھی اور پچیس ہزار روپیہ انعام علم و اسپ -

۱۲ خواجہ قاسم ڈھائی ہزاری بارہ سو سوار فیل و اسپ اور پچیس ہزار روپیہ انعام

۱۳ رضا بہادر خدمت پرست خاں دو ہزاری بارہ سو سوار شمشیر ترکی عصا مرصع اسپ و فیل بیس ہزار انعام

۱۴ یوسف محمد خاں دو ہزاری ہزار سوار -

۱۵ جان نثار خاں دو ہزاری ہزار سوار

۱۶ لہراسپ ولد مہابت خاں دو ہزاری ہزار سوار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१७ दयानतखां २००० हजारी ८०० सवार
२ हजारी से कम के नाम छोड़ दि
ये गये और उनमें हिन्दू इतने थे—
१ जगमाल किशनसिंघ राठोड़ का
बेटा १५०० हजारी ७०० सवार और खि
लअत
२ राजा द्वारिकादास कछवाहा हजा
री ८०० सवार और खिलअत
३ हिरदे राम कछवाहा हजारी ६५०
सवार
४ राजा बीर नारायण हजारी ६०० सवा
र
५ जैत सिंघ राठोड़ हजारी ५०० सवार
और ६००० इनाम
६ सेवाराम गौड़ हजारी ५०० सवार
७ सांमसिंघ सीसोदिया ऐजन
ये लोग खास शाहजहां के साथी थे
और जहांगीर बादशाह के अमीरों में
से जो इस दिन हाजिर थे उनके मनस
ब बहाल रहे और बाजों का इजाफ़ा
हुआ जैसे
१ खान आलम ६०००री ५००० सवार
२ कासम खां ५०००री ५००० सवार
३ लशकर खां ५०००री ५००० सवार

۱۷ - دیانت خاں ہزاری آٹھ سو سوار
اور ۲۷ ہزار روپیہ انعام
دو ہزاری سے کم کے نام بخوف طوالت نہیں
لکھے اور اُن میں ہندو اتنے تھے -
(۱) جگمال ولد کشن سنگہ راٹھوڑ ڈیڑہ ہزاری
سات سو سوار اور خلعت -
(۲) راجہ دوارکاداس کچھواہہ ہزاری آٹھ
سو سوار اور خلعت -
(۳) ہردے رام کچھواہا ہزاری ذات
اور ساڑھے چھ سو سوار -
(۴) راجہ بیر نرائن ہزاری چھ سو سوار
(۵) جیت سنگہ راٹھوڑ ہزاری پانسو سوار
اور چھہ ہزار روپیہ انعام -
(۶) سیوا رام گوڑ ہزاری پانسو سوار -
(۷) شام سنگہ سیسودیہ ایضاً
یہہ لوگ تو خاص شاہجہاں کی ہمراہی و رفیق تھے اور
جہانگیر بادشاہ کے امیروں میں سے جو بروز جلوس حاضر تھے
کچھہ تو اپنے مناصب بحال رہے اور بعض کا اضافہ
بھی ہوا جیسے -
(۱) خانعالم چھہ ہزاری پانچہزار سوار خلعت خاصہ
اسپ فیل علم اور نقارہ ۔۔۔
(۲) قاسم خاں پنجہزاری پنجہزار سوار روپیہ (۳) لشکر خاں ایضاً صوبہ کشمیر خلعت فیل علم و نقارہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४ राजाजयसिंघ राजामानसिंघका पोता ४०००री ३००० सवार

५ सैयददलेरखां ४०००री २५०० सवार

६ रावसूरभुरटियाबीकानेरी ३०००री से ४०००री और २००० से २५०० सवार हाथी घोड़ा नक्कारा निशान

७ राजाभारतबुंदेला ३०००री २००० सवार खिलतजड़ाऊ जमधर घोड़ा और झंडा

८ मिरजाखां शाहनवाजखांकाबेटा और अबदुलरहीमखानखानांका पोता ३०००री २५०० सवार

९ मुस्तफा बेग ३०००री ५०० सवार

१० बाबूखां किर्रानी २०००री २००० सवार

११ सैयदबहवा २०००री १२०० सवार

१२ अलीकुलीखां ऐजन

१३ पहाड़सिंघबुंदेला ऐजन

१४ नूरुद्दीनकुली २०००री ७०० सवार

इलाहीबरस और महीने जो अकबर के वक्त से जारी हुऐथे बादशाह ने उन को मोक़ूफ़ करके हिजरी बरस और महीने फिर जारी किये और अपने

۴ - راجہ جے سنگہ راجہ مان سنگہ کا پوتا چار ہزاری تین ہزار سوار -

۵ - سید دلیر خاں چار ہزاری ۲۵۰۰ سوار

۶ - راو سور بھورٹیہ بیکانیری تین ہزاری سے چار ہزاری اور دو ہزار سے تین ہزار سوار

۷ - راجہ بھارت بندیلہ تین ہزاری دو ہزار سوار خلعت جمدہر مرصع گھوڑا اور نشان -

۸ - مرزا خاں شاہ نواز خاں کا بیٹا اور عبدالرحیم خانخاناں کا پوتا تین ہزاری ڈھائی ہزار سوار

۹ - مصطفی بیگ تین ہزاری پانسو سوار

(۱۰) بابو خاں کررانی دو ہزاری دو ہزار سوار -

۱۱ - سید بہوا دو ہزاری بارہ سو سوار -

۱۲ - علیقلی خاں ایضاً

۱۳ - پہاڑ سنگہ بندیلہ ایضاً

۱۴ - نورالدین قلی دو ہزاری سات سو سوار بادشاہ نے تاریخ الٰہی جو اکبر بادشاہ کے وقت سے جاری ہوئی تھی موقوف کر کے بجائے اُسکے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

जलूसी बरसों का हिसाब ता: १ जमादुस्सानी सन १०३७ हिजरी मुताबिक़ माह सुद ३ संबत १६८४ से रखा

फागण बदि ४ को राजा गजसिंघ अपने वतन जोधपुर से बादशाह के पास हाजिर हुए बादशाह ने खासा खिलत जड़ाऊ खंजर फूल कटारे समेत जड़ाऊ तलवार खासा घोड़ा सुनहरी जीन का खासा हाथी और नक्कारा निशान इनायत करके पांचहजारी पांचहजार सवार का मनसब जो जहांगीर बादशाह के वक़्त से था सो बहारङ रखा -

इन्हीं दिनों में राणा के मरने की खबर पहुंची बादशाह ने उसके बेटे जगतसिंघ को पांचहज़ारी पांचहज़ार सवार का मनसब राणा का ख़िताब ख़ासा ख़िलत जड़ाऊ ख़पवा फूल कटारे समेत जड़ाऊ तलवार ख़ासा घोड़ा ख़ासा हाथी सोने और चांदी के सामान से और फरमान दिलासा का राजा बीरनारायण के हाथ भेजा और जो

تاریخ جلوسی کا آغاز یکم ماہ جمادی الثانی سنہ ۱۰۳۷ ہجری مطابق ماہ سودی ۳ سمت ۱۶۸۴ سے سال و ماہ قمری کے حساب پر رکھا

۱۷ جمادی الثانی کو راجہ گج سنگہ ولد راجہ سورج سنگہ اپنے وطن جودہپور سے بادشاہ کے پاس حاضر ہوئے بادشاہ نے خلعت خاصہ خنجر مرصع معہ پھول کٹارہ و شمشیر مرصع منصب پنجہزاری ذات اور پنجہزار سوار جو جہانگیر بادشاہ کے عہد میں تھا علم اور نقارہ اور طویلہ خاصہ سے سونہری زین کا گہوڑا اور خاصہ ہاتھی عنایت فرمایا

انھیں دنوں میں رانا امر سنگہ والئی اودیپور کے انتقال کی خبر پہنچی بادشاہ نے اسکے بیٹے جگت سنگہ کو پانچہزاری پانچہزار سوار کا منصب رانا کا خطاب خلعت خاصہ کہپوہ مرصع معہ پھول کٹارہ شمشیر مرصع خاصہ گہوڑا اور ہاتہی چاندی اور سونے کے سامانوں سے اور فرمان استمالت راجہ بیر نارائن کے ہاتھ بھیجا۔

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुछ मुल्क कि उसके वतन से उसके
बापकी जागीर पांच हजारी जात और ५ ह
जार सवार की तनख्वाह के माफ़िक दि
या गया था वह उसको इनायत हुआ।

फागुण सुद ३ को आसिफखां शाहजा
दों और बादशाही लशकर के साथ लाहोर से
बादशाह के पास पहुंचा उस दिन बादश
ाह ने बड़ी खुशी की और अमीरों के मन
सब बढाये उनमें राजपूतों के यह म
नसब हुए-

१ बिहारीदास कछवाहा खिलत और डे
ढहजारी ७०० सवार-

२ राजा रोज़अफ़जूं खिलत और डेढ
हजारी ६०० सवार

३ राजा गिरधर खिलत हजारी ५०० सवार

४ जादोंराय कायथ ५ हजारी ५०० सवार

५ जुझारसिंघ राजा बरसिंघदेव बुंदे
लेका बेटा ४ हजारी ४००० सवार

६ ऊदाजीराम दखनी ४ हजारी ४००० सवार

७ राजा जगतसिंह राजा बासू का बेटा
३ हजारी ५०० सवार

८ यसवंतराय दखनी २ हजारी १००० सवार

اور جو کچھ ملک کہ اُسکے وطن سے اُسکے
باپ کی جاگیر میں پانچہزاری ذات
اور پانچہزار سوار کی تنخواہ کے
موافق دیا گیا تھا وہ بھی اسکو عنایت
ہوا غرہ رجب کو آصف خاں مع
شہزادوں اور خدم و حشم کے لاہور
سے بادشاہ کے پاس پہونچا اُس
دن بادشاہ نے بڑی خوشی کی اور
امیروں کے منصب بڑھائے اُنمیں
راجپوتوں کے یہہ منصب ہوئے۔

۱- بہاری داس کچھواہہ خلعت ڈیڑھ
ہزاری اور سات سو سوار۔

۲ راجہ روز افزوں خلعت ڈیڑھ ہزاری اور چھ سو سوار

۳ راجہ گردھر خلعت ہزاری ذات اور پانسو سوار

۴- جادوں رائے کایتھہ پانچہزاری پانسو سوار

۵- جوجہار سنگھ بن راجہ برسنگ دیو بندیلہ
چار ہزاری چار ہزار سوار۔

۶- اوداجی رام دکھنی چار ہزاری چار ہزار سوار

۷- راجہ جگت سنگہ راجہ باسو کا بیٹا۔
تین ہزاری پانسو سوار۔

۸ جسونت رائے دکھنی دو ہزاری ایکہزار سوار

In Public Domain. Chambal Archives

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

९ रावल कल्याण जेसलमेरी २ हजारी १००० सवार

१० रावल पूंजा १ हजारी ५०० सवार

११ सत्रुसाल माधोसिंघ कछवाहे का बेटा हजारी ५०० सवार

१२ बिक्रमाजीत जुझारसिंघ बुंदेले का बेटा हजारी हजार सवार

१३ रावल समरसी हजारी हजार सवार

१४ बलभद्र सेखावत हजारी ६०० सवार

१५ किशनसिंघ हजारी ६०० सवार

१६ माधोसिंघ राव रतन हाडा का बेटा हजारी ६०० सवार

१७ भारमल किशनसिंघ राठोड़ का बेटा हजारी ५०० सवार

१८ गुरसेन किस्तवार का राजा हजारी २०० सवार

१९ करमसी राठोड़ हजारी ५०० सवार

फागुण सुद १० को राव रतन हाडा अपने वतन से हाजिर आया बादशाह ने उसका ५ हजारी ५ हजार सवार का मनसब बहाल रखा और खिलत जड़ाऊ जमधर नक्कारा निशान और सोने के साज का घोड़ा इनायत फरमाया।

۹ راول کلیان جیسلمیری دوہزاری ہزار سوار۔

۱۰- راول پونجا ایکہزاری پانسو سوار

۱۱ ستروسال ولد مادہوسنگہ کچھواہہ ہزاری ذات اور پانسو سوار۔

۱۲- بکرماجیت جوجہار سنگہ بندیلہ کا بیٹا ہزاری سوار

۱۳- راول سمرسی ہزاری ہزار سوار

۱۴ بلبہدر شیخاوت ہزاری چھ سو سوار

۱۵- کشن سنگہ ہزاری چھ سو سوار۔

۱۶- مادہوسنگہ ولد راو رتن ہاڈا ہزاری پانسو سوار۔

۱۷ بہارمل ولد کشن سنگہ راٹہور ہزاری پانسو سوار

۱۸- گورسین راجہ کشتواڑ ہزاری دوسو سوار

۱۹- کرمسی راٹہور ہزاری پانسو سوار

۸- رجب کو راو رتن ہاڈا اپنے وطن سے حاضر آیا بادشاہ نے اسکا پنجہزاری پانچہزار سوار کا منصب بحال رکہا اور خلعت خاصہ جمدہر مرصع علم اور نقارہ اور اسپ مع زین طلا وونزی کے مرحمت فرمایا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

इसी दिन भीमराठोडकामनसबडेढ़हजारी ७०० सवार और पृथ्वीराज राठोड़ काडेढ़ हजारी ६०० सवार का होगया ———

राजाभारत बुंदेलेको परगने इटावाकी फोजदारी का खिलत मिला

पठानोंने काबुल के सूबेदार जफरखां को खैबर के घाटे में लड़कर हरादिया इस लिये बादशाहने लशकरखांको काबुलका सूबेदार करके १५००० फोजसे रवाने किया

फागुण सुद १४ को सूरज मेखमें आया यह पहिला नोरोज़ था इस लिये इसका उच्छब बड़ी धूमधामसे हुआ जिसमें बड़ी २ बखशिशें और नवाजिशें की गईं जिनकी बाबत बादशाहनामेमें लिखा है कि बादशाहने तखतपर बैठनेके दिनसे नोरोजतक १ करोड़ ८० लाख रुपैका रोकड़ गहना और दूसरा सामान बखशाया उनमेसे १ करोड़

اسیدن بھیم راٹھوڑ کا منصب ڈیڑھ ہزاری سات سو سوار اور پرتھی راج راٹھوڑ کا منصب ڈیڑھ ہزاری چھ سو سوار کا ہوگیا

راجہ بھارت بندیلہ کو پرگنہ اٹاوا کی فوجداری کا خلعت ملا۔

پٹھانوں نے کابل کے صوبہ دار ظفر خاں کو خیبر کی گھاٹی میں لڑکر شکست دی اسلئے بادشاہ نے لشکر خاں کو کابل کا صوبہ دار کرکے پندرہ ہزار فوج سے روانہ کیا

۱۴ رجب کو آفتاب برج حمل میں آیا یہ پہلا نوروز تھا اسلئے اسکا جشن بڑی دھوم دھام سے ہوا جسمیں بڑی بڑی بخششیں اور نوازشیں کیگئیں جنکی بابت بادشاہ نامہ میں لکھا ہے کہ بادشاہ نے تخت نشینی کے دن سے جشن نوروز تک ایک کروڑ اسی لاکھ روپے کا نقد و جنس زیور اور اسلحہ وغیرہ بخشا تھا ان میں سے ایک کروڑ ساٹھ لاکھ ———

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६० लाख तो मुमताज़ज़मानी बेगम और शाहज़ादों को पहुंचा और २० लाख तमाम नौकरों को।

नौरोज़ के दिन महाराजा भीमसिंघ सीसोदिये का बेटा और राणा अमर सिंघ का पोता राय सिंघ हाज़िर हुआ बादशाह ने उसके बाप की खिदमतों पर नज़र करके वह छोटा था तो भी उसको बड़ा भारी खिलत जड़ाऊ सरपेच जड़ाऊ जमधर दो हज़ारी हज़ार सवार का मनसब राजा का खिताब हाथी घोड़ा और २०००० रुपया रोकड़ इनायत फरमाया -

चैत बदि ११ संबत १६८५ को बादशाह ने बरसिंघदेव बुंदेले के बेटे नरहरदास को पांच सदी २०० सवार का मनसब दिया -

बैसाख बद ५ को बादशाह ने दिलेरखां और राजा जयसिंघ को खिलत वगैरा देकर महाबन के फसादियों के ऊपर भेजा यह शायद ये जाट थे -

و ممتاز زمانی بیگم اور شاہزادوں کو پہونچا اور بیس لاکہہ تمام نوکروں کو

نوروز کے دن مہاراجہ بہیم سیسودیہ کا بیٹا اور رانا امر سنگہ کا پوتا رائے سنگہ حاضر ہوا بادشاہ نے اُس کے باپ کی حسن خدمات پر نظر کرکے اُسکو باوجود خورد سالی خلعت فاخرہ سرپیچ مرصع جمدہر مرصع دو ہزاری ہزار سوار کا منصب راجہ کا خطاب ہاتہی گہوڑا اور بیس ہزار روپیہ عنایت فرمایا۔

۲۴ رجب کو بادشاہ نے برسنگدیو بندیلے کے بیٹے نرہرداس کو پانچ صدی دو سو سوار کا منصب عطا کیا۔

۱۱ شعبان کو بادشاہ نے دلیر خاں اور راجہ جے سنگہ کچھواہہ کو خلعت وغیرہ دیکر مفسدان مہابن کے اوپر روانہ کیا یہ شاید جاٹ تہے۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जुझारसिंघ बुंदेला राजा बरसिंघदेव के बेटे ने अपने वतन से हाजिर आकर हजार मुहर और १ हाथी नजर किया बादशाह ने उसको जड़ाऊ जमधर फूल कटारे समेत और नक्कारा निशान इनायत फरमाया-	جوجہار سنگہ بندیلہ راجہ برسنگدیو کا بیٹا اپنے وطن سے حاضر آیا ہزار مہریں اور ایک ہاتھی نذر کیا بادشاہ نے اسکو جمدہر مرصع مع پہول کٹارہ اور نقارہ ونشان کے عنایت فرمایا۔
पहाड़ सिंघ राजा बरसिंघदेव के दूसरे बेटे को हाथी इनायत हुआ-	پہاڑ سنگہ راجہ برسنگدیو کے دوسرے بیٹے کو ہاتھی عنایت ہوا۔
जेठ बदि २ को महाबतखां खानखानां दक्खन बराड़ और खानदेश का सूबेदार हुआ और अगले सूबेदार खानजहां को मालवे की सूबेदारी दी गई-	۱۵ رمضان کو مہابت خاں خانخاناں کو دکن برار اور خاندیس کی صوبہ داری مرحمت ہوئی اور صوبہ دار سابق خان جہاں کو مالوہ کا صوبہ دیا گیا۔
बुखारे के खान इमामकुली के भाई नजर मुहम्मदखां ने काबुल के ऊपर चंढाई की रास्ते में जुहाक के किलेदार खंजरखां ने लड़कर उसको शिकस्त दी तो भी उसने जेठ बद २ को काबुल को घेर दिया-	امام قلیخاں خان بخارا کے بہائی نذر محمد خان نے کابل کے اوپر فوجکشی کی راستہ میں خنجر خاں قلعہ دار ضحاک نے مقابلہ کرکے اسکو شکست دی تو بہی اسنے تاریخ ۱۵ شوال کو کابل کا محاصرہ کرلیا۔
दूसरे जेठ की बद ४ की रात को जुझारसिंघ बुंदेला अपने वतन	شب سیزدہم شوال کو جوجہار سنگہ بندیلہ اپنے وطن

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की तरफ भाग गया-

दूसरे जेठ सुदि ९ को कासिम खां और राजा जयसिंघ महाबन के फसादियों को सज़ा देकर हाज़िर हुए

जेठ सुद ६ को चंद्रमन भगवानदास राजा बरसिंघदेव बुंदेले के बेटे को हज़ारी जात और छः छः सौ सवारों के मनसब मिले-

पहाड़ सिंघ का मनसब साढे तीन हज़ारी २५०० सवार का हो गया

बिहारीदास कछवाहा का मनसब असल और इज़ाफ़े से डेढ हज़ारी हज़ार सवार का हो गया-

बादशाह ने महाबत खां खानखानां राव रतन हाडा राजा जयसिंघ राव सूर चुरटिया और मोतमिद खां को २०००० सवार से नजर मुहम्मद खां के मुकाबिले पर रवाने किया-

सावन सुद ६ को प्रताप उज्जैनिया को डेढ हज़ारी हजार सवार का

کی طرف بھاگ گیا۔

۳ ماہ ذیقعد کو قاسم خاں اور راجہ جے سنگھ کچھواہہ مفسدان مہابن کو سزا دیکر حاضر ہو گئے

۳ کو چندر من و بھگوانداس راجہ برسنگدیو کے بیٹوں کو ہزاری ذات اور چھ چھ سو سواروں کے منصب ملے۔

پہاڑ سنگھ کا منصب ساڑھے تین ہزاری ڈہائی سو سوار کا ہو گیا

بہاری داس کچھواہہ کا منصب اصل اور اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ہزار سوار کا ہو گیا

بادشاہ نے مہابت خان خانخاناں راو رتن ہاڈا راجہ جے سنگھ کچھواہہ راو سور بہوریٹہ او معتمد خان کو بیس ہزار سوار سے نذر محمد خان کے مقابلہ پر روانہ کیا۔

۳ ذی الحجہ کو پرتاب اوجینیہ کو ڈیڑہ ہزاری ہزار سوار کا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनम्सब राजा का खिताब और हाथी इनायत हुआ ॥

सावन सुदी १० को करमसी राठोड़ पांच सदी ज़ात और ३०० सवार के इज़ाफ़े डेढ़ हज़ारी ८०० सवार का मनसबदार होगया ॥

खीलूजी भोंसला निज़ामुल्मुल्क का सरदार खान खानां के बेटे खान ज़मां के पास दख्खन में हाज़िर होकर बादशाही नौकर होगया बादशाह ने उसके वास्ते पांच हज़ारी ज़ात और पांच हज़ार सवार के मनसब खातरदारी का खिलत जड़ाऊ जमधर नक्कारा निशान हाथी और घोड़ा सुनहरी सामान का भेजा ॥

राजा गजसिंघ के बेटे अमर सिंघ को हाथी इनायत हुआ ॥

राजा भारत बुंदेले को नक्कारा मिला

बरस २

भादों बदी २ सम्बत् १६८५ से भादों बदी २ सम्बत् १६८६ तक

منصب راجہ کا خطاب اور ہاتھی عنایت ہوا -

۲۰ ذی الحجہ کرم سی راٹھوڑ پانچ صدی ذات اور تین سو سواروں کے اضافہ سے ڈیڑھ ہزاری ذات اور آٹھ سو سوار کا منصب دار ہوگیا -

کھیلوجی بھونسلا جو نظام الملک کا سردار تھا خانخانان کے بیٹے خان زمان خان کے پاس دکہن میں حاضر ہوکر بادشاہی نوکر ہوگیا بادشاہ نے اوس کے واسطے پانچہزاری ذات اور پانچ ہزار سوار کا منصب استمالت کا فرمان اور خلعت فاخرہ معہ جمدہر مرصع نقارہ نشان ہاتھی اور گہوڑے سنہری ساز کے بہیجا -

راجہ گج سنگہ کے بیٹے امر سنگہ کو ہاتھی عنایت ہوا -

راجہ بہارت بندیلہ کو نقارہ ملا -

سال دوم
سنہ ۱۰۳۸

۲۲ - اگست سنہ ۱۶۲۸ سے ۱۲ - اگست سنہ ۱۶۲۹ تک

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भादों सुदी ११ शुक्रवार के दिनका
बुल केसूबेदार लशकर खां ने ह
मला करके नज़र मोहम्मदखां उज़ब
क को भगादिया इस खबर के पहुंच
ने पर बादशाह ने ख़ानख़ानां को लौट
आने का हुकम लिखा सो वह मुकाम
सहरद से लौट कर कातिक सुदी ८ को
बादशाह के पास हाज़िर हुआ

बादशाह ने दोस्ती का खतऔर
डेढ़ लाख रुपैये की सोग़ात तूरान के
मालिक इमामकुलीखांकेपास हकी
म हमाम के बेटे हकीम हाज़िक़ के
साथ भेजी।।

जुझार सिंघ बुंदेले ने उरछामें
पहुंचकर लड़ाई की तैयारी की बा
दशाह ने महाबत खां ख़ान ख़ानां को
१०००० सवार २००० बंदूकची और
५०० बेलदार देकर उसके ऊपर भेजा
सैयद मुज़फ़्फ़रखां दिलावरखां राजा
राम दास नरवरी भगवानदासबुंदे
ला जेतसूर वग़ैरा को उसके साथ किया

جمعہ ۹ محرم کو لشکر خان صوبہ دار
ل نے پشاور سے حملہ کرکے -
ذر محمد خان اُوزبک والی بلخ کو
گا دیا اس خبر کے پہنچنے پر بادشا
نے خانخانان کو لوٹ آنے کا
کم لکھا چنانچہ وہ مقام سرہند
سے مراجعت کرکے تاریخ ۸ ربیع الاو
و بادشاہ کے حضور مین حاضر ہوا۔

بادشاہ نے ڈیڑھ لاکھ روپیہ کی
سوغات معہ خط دوستی کے
امام قلیخان خان توران کے
پاس حکیم ہمام کے بیٹے حکیم
حاذق کے ساتھ روانہ کی۔

جوجھار سنگھ بندیلہ نے اُرچھ
میں پہونچکر لڑائی کی تیاری کی۔
بادشاہ نے مہابت خان خانخانان
کو دس ہزار سوار دوہزار بندوقچی
اور پانسو بیلدار دے کر اُسکے اوپر
روانہ کیا سید مظفر خان دلاور خان
راجہ رام داس نروری بھگوان داس
بندیلہ جیت سور وغیرہ کو اُسکی ساتھ بھیجا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और मालवे के सूबेदार ख़ानजहां लो
धी को लिखा कि उस सूबे के लशक
र और राजा बिट्ठलदास गोड़ अनी
राय सिंघ दलन माधो सिंघ कछवा
हे के बेटे शत्रू साल बलभद्रसैन शेखा
वत राजा गिरधर और राना भारत
बुंदेले के साथ कि जिसके दादा से
जहांगीर बादशाह ने उरछे का राज
ज़ब्त करके बर सिंघ देव को देदिया
था। चंदेरी के रास्ते से उरछे के ऊपर
जावे इस फ़ौज में ८००० सवार २०००
पैदल और ५००० बेलदार थे कन्नौ
ज के जागीरदार अबदुल्ला खां बहादु
र के ऊपर भी पूरब की तरफ़ से ७०००
सवार २००० पैदल और ५०० बेल
दार के साथ उरछे के ऊपर जाने का
हुक्म पहुँचा बहादुर खां रुहेला रा
वसूर भुरटिया पहाड़ सिंघ बुंदेला
और किशन सिंघ भदोरिया और ।
२००० सवार आसिफ़ खां के इस फ़ौ
ज में तईनात हुए इस तरह कुल ।

اور مالوہ کے صوبہ دار جانجہان
لودہی کو حکم لکھا کہ اس صوبہ کے
لشکر اور راجہ بٹھیل داس گوڑ انی رای سنگھ
دلن مادہو سنگھ کچھواہہ کے بیٹے
سترو سال بلبھدرسین شیخاوت راجہ
گردہر اور راجہ بہارت بندیلہ کے
ساتھ کہ جس کے دادا سے جہانگیر
بادشاہ نے اورچھ کا راج ضبط کرکے
برسنگھ دیو کو دیدیا تھا چندیری
کے راستہ سے اورچھ کے اوپر جاوے
اس فوج میں ۸ ہزار سوار دو ہزار
پیدل اور پانسو بیلدار تھے قنوج
کے جاگیردار عبداللہ خان بہادر فیروز
جنگ کے نام بھی پورب کی طرف
سے ۷ ہزار سوار دو ہزار پیدل
اور پانسو بیلداروں کے ساتھ اورچھ
کے اوپر جانے کا حکم پہنچا بہادر خان
روہیلہ راو سور بھرٹیہ پہاڑ سنگھ بندیلہ
کشن سنگھ بھدوریہ اور دو ہزار سوار
آصف خان کے اس فوج مین
متعین ہوئے اس طرح کل

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२०००० सवार ६००० पैदल बंदूकची और ५००० बेलदार ३ तरफ़ से उरछे के ऊपर रवाना हुवे ॥

जब खानखानां ग्वालियर से चलकर उरछे से १६ कोस और खानजहां लोधी नरवर से गांव कंडारतक जो उरछे से ३ कोस है पहुंचा और अबदुल्ला खांने कालपी से जाकर एरज का किला जो के १६ कोस उरछे से है फतेह कर लिया तो जुझार सिंघ ने तंग होकर महाबत खां को लिखा कि मेरे कसूर माफ़ करादो में अवउमर भर दरगाह में हाज़िर रह कर बंदगी करूंगा महाबत खांने बादशाह को अरज़ी लिखी और दूसरे अमीरों और वज़ीरों ने भी सिफ़ारिश की तो बादशाह ने जुझारसिंघ के कसूर माफ़ कर दिये बहादुर खां और पहाड़ सिंघ बुंदेले को एरजफ़तह करने के इनाम में नक्कारे बख़्शे ॥

निज़ामुल्मुल्क ने बादशाह का

۲۰ ہزار سوار چھ ہزار پیدل بندوقچی اور ڈیڑھ ہزار بیلدار تین طرف سے اُرچھہ کے اوپر روانہ ہوے۔

دوشنبہ ۲۳ ربیع الاول کو بادشاہ آگرہ سے گوالیار کیطرف روانہ ہوے

جب خانخانان گوالیار سے روانہ ہوکر اُورچھہ سے ۱۶ کوس اور خانجہان لودہی نرور سے موضع کنڈار تک جو اُرچھہ سے تین کوس ہے پہونچا اور عبداللہ خاں نے کالپی سے جاکر ایرچ کا قلعہ جو اُرچھہ سے ۱۶ کوس ہے فتح کرلیا تو جوجہار سنگہ نے عاجز آکر مہابت خان کو لکھا کہ میرا قصور معاف کرادو تو میں عمر بھر درگاہ میں حاضر رہکر بندگی کرونگا مہابت خان نے بادشاہ کو عرضی لکھی اور دوسرے امیرون و وزیرون نے بھی سفارش لکھی تو بادشاہ نے جوجہار سنگہ کی قصور معاف کردیئے بہادر خان اور پہاڑ سنگہ بندیلہ کو ایرج فتح کرنیکی صلہ میں نقارے عنایت کیے

نظام الملک نے بادشاہ کا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ङ्कम पऊंचने पर बालाघाट का मुल
क छोड़ दिया मगर बियर का किला
उसके किलेदार सैयद कमालने न्हीं
छोड़ा तब खान ज़मां ने बुरहान पुरसे
जाकर उसको निकाल दिया ॥

साहू जी भोंसले ने निज़ामुलमुलक
के कहने से ६००० सवारों के साथ देवगढ़
के इलके में आकर लूट मार की मगर द
रिया खांने शावदे से जाकर उसको भगा
दिया ॥

बादशाह फ़ागुन बदी १० को गुवालि
र से कूच करके फ़ागुन सुदी ३ को
आगरे में पऊंचे इसी दिन महाबत खां
झार सिंघ को गले में रुमाल डालक
हाज़िर लाया उसने १००० मोहरें और
००००० रुपे जुरमाने के दाखिल कि
उसको ये भी हुक्म हुआ था के अपने त
हाथी हाज़िर करे इसलिये उसने
हाथी नज़र से गुज़राने बादशाह ने
ख़ानों को हुक्म दिया कि इस के पा
मुल्क है उस में मनसब ४ हज़ारी

حکم پہونچنے پر بالا گھاٹ کا علاقہ
چھوڑ دیا مگر اوسکے قلعہ دار سید کمال
نے بیر کا قلعہ نہیں چھوڑا تب
خان زمان برہان پور سے گیا اور
سید کو قلعہ سے نکالکر قابض ہوا۔

ساہوجی بہونسلہ نے نظام الملک
کے اشارہ سے چھہزار سواروں کے
ساتھ دولت آباد کے ضلع میں آکر
لوٹ مار کی لیکن دریاخاں روہیلہ
نے شاودہ سے جاکر اسکو بھگا دیا۔

٢٣ جمادی الثانی کو بادشاہ
نے گوالیار سے کوچ کیا اور یکم
رجب کو آگرہ میں پہونچے اُسی
دن مہابت خان جوجہار سنگھ کو گلے
میں رومال ڈالکر حاضر لایا اُس
نے ایکہزار مہریں اور پندرہ لاکھ
روپیہ جرمانہ کے داخل کیے اُسکو
یہ بھی حکم ہوا تھا کہ اپنے تمام ہاتھی
پیش کرے اسلئے چالیس ہاتھی
نذر سے گزرانے بادشاہ نے دیوانونکو
حکم دیا کہ اسکے پاس جو ملک ہے اُسمیں

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४ हज़ार सवार की तनख़्वाह के बराबर तो बहाल रक्खें और बाक़ी ख़ानजहां लोधी अबदुल्ला खां बहादुर सैयद मुज़फ़्फ़र खां और पहाड़ सिंघ बुंदेले की तलब में लिख देवें और जुझार सिंघ को हुकम हुआ कि २००० सवार और २००० पैदल बुंदेले से दखन में ख़िदमत करे और जो मुलक पड़ोसियों का ज़ुलम से दबा लिया है उसको छोड़ दे और फिर कभी उसकी तरफ़ न देखे ॥

फागुन सुदी २ को दूसरा जलूसी सन शुरू हुआ पहिले बरस में बादशाह ने ४ लाख बीगे ज़मीन और १२० गांव खैरात किये थे

चैत बदी ३ को खीलूजी का भाई परसूजी तीन हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ारी सवार के मनसब से सरफ़राज़ हुआ ॥

बरस तीसरा

भादों सुदी ३ सम्बत १६८६ से ॥

भादों सुदी २ सम्बत १६८७ तक

سے چارہزاری چارہزار سوار کی تنخواہ کے منصب کے برابر تو بحال رکھیں اور باقی خانجہان لودی عبداللہ خان بہادر سید مظفر خان اور پہاڑسنگھ بندیلہ کی تنخواہ میں لکھدیں اور جوجہار سنگھ کو حکم ہوا کہ دوہزار سوار اور دوہزار پیدل قوم بندیلہ سے دکھن میں خدمت کرے اور جو ملک پڑوسیون کا ظلم سے دبالیا ہے اسکو چھوڑدے اور پھر کبھی اوسکی طرف نہ دیکھے

یکم رجب کو دوسرا جلوسی سنہ شروع ہوا پہلے سنہ میں بادشاہ نے چارلاکھ بیگھہ زمین اور ایکسو بیس گانو خیرات کئے تھے۔

۱۴ رجب کو کھیلوجی کا بھائی پرسوجی تین ہزاری ذات اور ڈیڑھ ہزار سواروں کے منصب سے سرفراز ہوا۔

سال سویم

۳۹ سنہ ہجری

اگست ۱۶۲۹ء سے ۲- اگست ۱۶۳۰ء تک

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आसोज सुदी ६ को आसिफ़ ख़ां तिरहुत के २ ब्राह्मणों को दरबार में हाज़िर लाया और अरज़ की के दोनों १० श्लोक जो १० कबियों ने नये बनाये हों और किसी को भी सुनाये नहीं एक दफ़े के सुनलेने से याद करलेते हैं और फिर उनको उसी अनुक्रम से जैसे कि उन कबियों ने पढ़े हों सुना कर १० श्लोक और अपनी तरफ़ से उसी जाति और उसी आशय के कहदेते हैं बादशाह ने जो उनका इमतिहान लिया तो जैसा सुनाथा वैसा ही पाया और दोनों को ख़िलत और १०००) इनाम देकर रुख़सत किया

कातिक बदी १२ सनीचर वार की रात को ख़ांजेहां लोधा आगरे से भाग गया बादशाह ने उसके पीछे बहुत सी फ़ौज से ख़्वाजा अबुलहसन को भेजा उसमें राजपूत सरदार इतने थे ॥

राजा जैसिंघ राव सूर भुरटिया राजा

پانچوین صفر کو آصف خان وزیر سنے ترہت کے دو برہمن درگاہ مین حاضر کرکے عرض کیاکہ دونو دس ہندی شعرون کو جو تازہ کہے گئے ہون اور کسی اکے کانون تک نہ پہونچے ہون ایک دفعہ کے سننے سے یاد کر لیتے ہین اور پہر انکو اسی ترتیب سے جیسے کہ اونکے مصنفون سنے پڑہے ہون سناکر اس شعر اور اسی وزن اور مضمون کے فی البدیہ کہدیتے ہین بادشاہ سنے جو اونکے اس کار شگرف کا امتحان لیا تو جیسا سنا تہا ویسا ہی پایا اسلئے دونوکو خلعت اور ایکہزار روپیہ انعام دیکر رخصت کیا

۲۶ صفر کی رات کو خانجہان لودی آگرہ سے بہاگ گیا بادشاہ سنے اسکے تعاقب مین بہت سی فوج خواجہ ابوالحسن کے ساتھ بہیجی اس مین راجپوت سردار حسب ذیل تھے

۱- راجہ جے سنگھ ۲- راو سور بھرٹیہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिट्ठलदास गौड़ राजा भारत बुंदेला माधो सिंघ हाडा भीम राठोड़ पृथ्वीराज राठोड़ राजा वीर नारायण राय हरचंद पड़िहार ॥

सबसे पहिले सैयद मुज़फ़्फ़र खां राजा बिट्ठलदास गौड़ ख़िदमत परस्त खां पृथ्वीराज राठोड़ धावा करके धोलपुर में उसके पास पहुंचे ख़िदमतपरस्त खां तो मारा गया राजा बिट्ठलदास गौड़ पृथ्वीराज राठोड़ राजा बिट्ठलदास गौड़ का भाई गिरधरदास और दूसरे लोग राजपूतों के पयादा होकर लड़ने को खड़े हुए दुशमनों को मारा और खुद भी ज़रख़मी हुए २ भाई राजा बिट्ठलदास के और १०० के करीब मुग़ल और रजपूत काम आये ठीक लड़ाई के वक़्त पृथ्वीराज से जो पयादा था और खानजहां से जो सवार था मुठभेड़ होगई दोनों बरछों से लड़े और ज़रख़मी हुए आख़ीर में ख़ानजहां भाग गया राजा जयसिंघ

मुक़ाबिला सैयद के

۴ راجہ بیٹھلداس گوڑ ۳ راجہ بہارت بندیلہ ۵ مادہو سنگھ ہاڈا ۶ بہیم راٹھوڑ ۷ پرتھی راج راٹھوڑ ۸ راجہ بیرنراین ۹ راے ہرچند پڑہار۔

سب سے پہلے سید مظفر خان راجہ بیٹھلداس گوڑ خدمت پرست خان پرتھی راج راٹھوڑ یلغار کرکے دہولپور میں اُس کے قریب پہونچے خدمت پرست خان تو مارا گیا اور راجہ بیٹھلداس گوڑ پرتھی راج راٹھوڑ گردہرداس اور راجہ بیٹھلداس اور دوسرے سپاہی حسب قاعدہ راجپوتون کے پیادہ ہوکر لڑنے کو کھڑے ہوے دشمن کو مارا اور خود بھی زخمی ہوئے دو بھائی راجہ بیٹھلداس کے اور قریب ایکسو کے مغل اور راجپوت کام آئے عین لڑائی کے وقت پرتھی راج سے جو پیادہ تہا اور خانجہان سے جو سوار تہا مٹھبھیڑ ہوئی دونون برچھون سے لڑے اور زخمی ہوے آخر خان جہان بہاگ گیا راجہ جیسنگھ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और खान ज़मां वग़ैरा उसके पीछे गये ॥

बादशाह का हुकम ज़खमियों के नाम लोट आने का पहुंचा जब वे हाज़िर हुये तो राजा बिट्ठल दास को खिलत जड़ाऊ जमधर और धोप नकारा घोड़ा चांदी के सामान से और हाथी इनायत होकर ५०० सवार का इज़ाफ़ा हुआ जिस से अब कुल मनसब ३ हज़ारी २ हज़ार सवार का होगया ॥

पृथ्वी राज को खिलत हाथी घोड़ा ५०० ज़ात और ८०० सवार का इज़ाफ़ा हुआ ॥

रावत राव दखनी दखन के सूबेदार इरादत खां की अर्ज़ से २ हज़ारी जात और १५०० सवार का मनसबदार हुआ ॥

खान जहां चम्बल नदी से उतर कर जुझार सिंघ बुंदेले के मुलक में गया और उसके बड़े बेटे

اور خان زماں وغیرہ اُس کے تعاقب میں گئے

بادشاہ کا حکم زخمیوں کے نام لوٹ آنے کا پہونچا اور جب وہ حاضر ہوئے تو راجہ بیٹھل داس کو خلعت جمدہر مرصع دہوپ مرصع نقارہ، گھوڑا روپہری زین کا اور ہاتھی عنایت ہوا منصب میں پانسو سوار بڑہے جس سے وہ تین ہزاری دوہزار سوار کا منصب دار ہوگیا

پرتھی راج راٹھوڑ کو خلعت ہاتھی گھوڑا پانصدی ذات اور آٹھسو سواروں کا اضافہ ہوا

راوت دکھنی ارادت خان صوبہ دار دکھن کی عرض سے دو ہزاری ذات اور پندرہ سو سواروں کا منصب دار ہوگیا

خان جہان چنبل ندی سے اُتر کر جوجہار سنگھ بندیلے کے ملک میں گیا اُس کے بیٹے بکرماجیت

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

बिक्रमाजीत ने उस को गैर मशहूर रस्तों से अपने मुल्क से निकाल दिया

मुल्ला फ़रीद दिल्ली वाले ने किताब ज़ेच शाहजहानी तैयार की बादशाह ने उसका हिन्दी में तरजुमा करा कर हुक्म दिया के इस से पंचांग निकाला करें इस से पहिले फ़ारसी पंचांग ज़ेच अलग बेगी से निकाले जाते थे॥

बादशाह ख़ान जहां के बुंदेलखंड गोंड़ वाने और बाला घाट होकर निज़ामुल मुल्क के पास पहुंचने की ख़बर सुनकर पोस सुदी १० सोमवार को आगरे से दखन की तरफ़ रवाने हुये तब अमर सिंघ का मनसब २ हज़ारी ज़ात और १३०० सवारों का होगया॥

फागन बदी ६ को बादशाह ने खानदेस में पहुंच कर याकूत हबशी को १ लाख खीलूजी को ५० हज़ार और ऊदाजीराम को ४० हज़ार रुपै

نے خانجہان کو غیر مشہور استوں میں ہوکر اپنے ملک سے نکال دیا

ملا فرید دہلی نے کتاب زیچ شاہجہانی تیار کی بادشاہ نے اُسکا ترجمہ ہندی میں کراکر اوس کے جاری کرنے کا حکم دیا اس سے پہلے کتاب زیچ الغ بیگی سے تقویم نکالے جاتے تھے ÷

بادشاہ ۸- جمادی الاول دوشنبہ کو آگرہ سے دکھن کی طرف روانہ ہوئے کیونکہ خانجہان بندیل کھنڈ گونڈ وانہ اور بالاگہاٹ میں ہوکر نظام الملک کے پاس جا پہونچا تہا۔

امرسنگھ راٹھوڑ کا منصب دو ہزاری ذات اور تیرہ سو سوارونکا ہوگیا۔

۲۰- جمادی الثانی کو بادشاہ نے خاندیس میں پہونچکر یاقوت حبشی کو ایک لاکھ کھیلوجی کو

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इनायत किये और मालूजी को पंचहज़ारी ५००० सवार का मनसब दिया ॥

चेत बदी ६ को बादशाह ने आसेर से ३ फ़ौजें ३ बड़े ३ सरदारों की सरदारी में निजामुल्मुल्क और ख़ान जहां लोधी के ऊपर रवाने कीं ॥

पहली फ़ौज की अफ़सरी दखन के सूबेदार इरादत ख़ां को दीगई थी और उससें हिन्दू अमीर इतने थे ॥

१ जुझार सिंघ बुंदेला २ राव दूदा चंद्रावत ३ माधो सिंघ कछवाहे का बेटा सत्रूसाल ४ करमसी राठोड़ ५ राजा द्वारका दास कछवाहा ६ बल भद्दर शेख़ावत ७ स्याम सिंघ सीसोदिया ८ राजा गिरधर ९ मल्लूक सिंघ राय मनोहर का पोता १० रामचंदर हाडा ११ जगन नाथ राठोड़ १२ मुकंद दास जादों १३ उदय सिंघ राठोड़ १४ खेलूजी १५ मनहा जी मालूजी भोसले का भाई १६ परसूजी भोंसला कुल फ़ौज २० हज़ार सवार ॥

پنچاس ہزار اور اوداجی کو چالیس ہزار روپیہ عنایت کئے اور مالوجی کو پانچہزاری ذات اور پانچہزار سوار کا منصب دیا

۲۰ رجب کو بادشاہ نے آسیر سے تین فوجین تین بڑے سرداروں کی افسریمین نظام الملک اور خانجہان لودی کے استیصال کو روانہ کین *

اول فوج زیر حکم ارادت خان ناظم صوبہ جات دکھن کے کیگئی اسمین ہندو امیر اتنے تھے - ۱- جوجہار سنگھ بندیلہ ۲- راؤ دودا چندراوت ۳ مادہو سنگھ کچھواہا کا بیٹا سترو سال ۴- کرم سی راٹھوڑ ۵- راجہ دوارکا داس کچھواہہ ۶ بلبہدر سیکہاوت ۷ شام سنگھ - سیسودیہ ۸ راجہ گردہر ۹ ملوک سنگھ راے منوہر کا پوتا ۱۰ رامچندر ہاڈا ۱۱- جگناتھ راٹھوڑ ۱۲ مکندداس جادون ۱۳- اودے سنگھ راٹھوڑ ۱۴ کھیلوجی ۱۵ منہاجی برادر مالوجی بہوسلہ ۱۶- پرسوجی بہوسلہ کل فوج بیس ہزار سوار تھے -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरी फ़ौज महाराज गज्जसिंघ जी की अफ़सरी में थी, इसमें इतने हिन्दू मुसलमान अमीर थे ॥	دوسری فوج کی افسری مہاراج گجسنگھ راٹھوڑ کو ملی اس میں اتنے ہندو مسلمان سردار تھے ✤
१ नुसरतखां रुहेला २ बहादुरखां रुहेला ३ राजा बिठ्ठलदास ४ अनीराय बड़गूजर ५ राजा मनरूप कछवाहा ६ जान निसार खां ७ रावल पूंजा ८ शरीफ़ ९ भीम राठोड़ १० राजा बीरनरायन बड़गूजर ११ अहदाद महमंद १२ ख्वाजा जहां काकड़ १३ खंजरखां १४ उसमान रुहेला बहादुरखां का चचा १५ हबीब सूर १६ मीर फैजुल्ला १७ गोकलदास सीसोदिया १८ नूर मोहम्मद अरब १९ मोहम्मद शरीफ़ हुसैनी २० करीम दाद बेग क़ाक़शाल २१ जैराम अनीराय का बेटा २२ नरहरदास झाला २३ रायहरचंद पड़िहार २४ मोहम्मद शाह २५ ऊदाजीराम २६ बेलाजी उसका भाई कुल करीब १५००० सवार ॥	۱۔ نصرت خان ۲ بہادر خان روہیلہ ۳ راجہ بیٹھل داس ۴ انی رائے بڑگوجر ۵ راجہ منروپ کچھواہہ ۶ جان نثار خان ۷ راول پونجا ۸ شریف ۹ بہیم راٹھوڑ ۱۰ راجہ بیرنراین بڑگوجر ۱۱ احداد مہمند ۱۲ خواجہ جہان کاکڑ ۱۳ خنجر خان ۱۴ عثمان روہیلہ عم بہادر خان - ۱۵ حبیب سور ۱۶ میر فیض اللہ ۱۷ گوکلداس سیسودیہ ۱۸ نور محمد عرب ۱۹ محمد شریف حسینی ۲۰ کریم داد بیگ قاقشال ۲۱ جے رام ولد انی رائے ۲۲ نرہرداس - جہالا ۲۳ رائے ہرچند پڑہار ۲۴ محمد شاہ ۲۵ اوداجی رام ۲۶ بیلاجی برادر اوداجی رام کل سوار پندرہ ہزار کے قریب تھے ✤
तीसरी फ़ौज शायस्ताखां की मा	تیسری فوج شایستہ خان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तहती में की जिसमें हिन्दू इतने थे ॥

१ राजा जैसिंघ २ राव सूर भुरटया ३ पहाड़ सिंघ ४ माधो सिंघ राव रतन का बेटा ५ राजा रोज़ अफ़ज़ूं ६ चंदर मणि बुंदेला ७ राजा किशन सिंघ भदोरिया ८ भगवान दास बुंदेला ९ नर हर दास बुंदेला १० रावत राव ११ राना जगत सिंघ का चचा दुरजन सिंघ ५०० सवारों से कुल १५००० सवार ॥

बिदा होते वक़्त बादशाह ने सब सरदारों को बहुत सी नसीहतें कीं जुझार सिंघ और ऊदा जी राम का हज़ारी ज़ात और हज़ार १ सवार का इज़ाफ़ा करके दोनों का पंच ५ हज़ारी ज़ात और पंच ५ हज़ार सवारों का मनसब कर दिया ॥

राजा जय सिंघ के मनसब में १००० सवारों का इज़ाफ़ा हुआ ॥

पृथ्वी राज राठोड़ असल और इज़ाफ़े से २ हज़ारी २ हज़ार सवार का मनसब दार होगया ॥

کی ماتحتی میں تھی اور اسمیں اسقدر ہندو امیر تھے -

۱ راجہ جے سنگھ ۲ راؤ سور بھرٹیہ ۳ پہاڑ سنگھ ۴ مادھو سنگھ راؤ رتن کا بیٹا ۵ راجہ روز افزون ۶ چندر مین بندیلہ ۷ راجہ کشن سنگھ بھدوریہ ۸ بھگوانداس بندیلہ ۹ نرہرداس بندیلہ ۱۰ راوت راؤ ۱۱ رانا جگت سنگھ کا چچا ارجن سنگھ پانسو سواروں سے تھے یہ بھی کل پندرہ ہزار سوار

رخصت کے وقت بادشاہ نے سب سرداروں کو بہت سی نصیحتیں کی ججہار سنگھ اور اوداجی رام کا ہزاری ذات اور ہزار ہزار سوار کا اضافہ کرکے دونوں کا منصب پانچ پانچ ہزاری ذات اور پانچ پانچ ہزار سواروں کا کردیا-

راجہ جے سنگھ کے منصب میں ایکہزار سواروں کا اضافہ ہوا جواب چار ہزاری تین ہزار سوار کا ہوگیا+

پرتھی راج راٹھوڑ اصل و اضافہ سے دو ہزاری ذات و ایکہزار سوار کا منصب دار ہوگیا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चैत सुदी १४ को राव रतन हाडा को मनसबदारों अहदियों तीर अंदाज़ों और बर्कंदाज़ों के १०००० सवारों के साथ तिलंगाने की तरफ़ इस ग़रज़ से रवाने किया कि पायीन घाट के परगने बासम इलाके बराड़ में रह कर दुशमनों का रस्ता बंद कर देवे और मौक़ा देख कर तिलंगाने को भी फ़तेह करे इस लशकर में इतने अमीर थे ॥	۱۲ شعبان کو بادشاہ نے راؤ رتن ہاڈا کو منصب داروں احدیوں تیراندازوں اور برقندازوں کے دس ہزار سواروں کے ساتھ تلنگانہ کی طرف اس غرض سے روانہ کیا کہ پائیں گھاٹ کے پرگنہ باسم علاقہ برار میں مقیم ہوکر دشمنوں کے راستہ بند کردے اور موقع دیکھکر تلنگانہ کو بھی فتح کرے اس لشکر میں اتنے امیر تھے
वज़ीर ख़ां राना भारत बुंदेला सफ़दर ख़ां शहबाज़ ख़ां अफ़ग़ान फ़रहान ख़ां राजा रामदास नरवरी जेत सिंघ राठोड़ मुबारक ख़ां न्याज़ी अबदुलरहमान रुहेला अमान बेग इन्द्र साल राव रतन का पोता काज़िम बेग शमसुद्दीन ईसरदास सीसोदिया उदय सिंघ ॥	وزیر خان راجہ بھارت بندیلہ صفدرخان شہبازخان افغان فرحان خان راجہ رام داس نروری جیت سنگہ راٹھوڑ مبارک خان نیازی عبدالرحمن روہیلہ امان بیگ - اندرسال نبیرہ راؤ رتن کاظم بیگ شمس الدین ایسرداس سیسودیہ اودے سنگہ -
बैसाख बदी १२ को राव दूदा असल और इज़ाफ़े से २ हज़ारी डेढ़ हज़ार सवार का मनसबदार हो गया और	۲۴ شعبان کو راؤ دودا - پانصدی ذات اور پانسو سوار کے اضافہ سے دو ہزاری ذات اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसको झंडा भी इनायत हुआ॥

रूपचंद गवालियरी का मनसब हजारीजात और ६०० सवारों का होगया

पहिले जेठ बदी ७ को बादशाह ने ख़्वाजा अबुल हसनको ८००० सवारों से नासिक त्रांम्बक और संगनेर फ़तेह करने को भेजा पृथ्वीराज राठौड़ उसके साथ गया॥

पहले जेठ सुदी १३ को राजा भारत बुंदेले के ५०० सवार इजाफ़ह दिये और अब उसका मनसब पूरा ३ हज़ारी ३ हज़ार सवार का होगया॥

जेठ बदी १४ को शाइस्ता खां की जगह अबदुल्ला खां बहादुर बाला घाट का अफ़सर मुकर्रर होकर गया और शायस्तेखां आज़मखां की नाइत्तफ़ाक़ी से पीछा बुलाया गया॥

दूसरे जेठ बदी १० को जुझार सिंघ और पहाड़ सिंघ बुंदेले को राजा का ख़िताब मिला॥

ग़नीम बादशाही फ़ौज से लड़ा

ڈیڑھ ہزار سواروں کے منصب کو پہنچا اور نشان بھی عنایت ہوا۔

روپچند گوالیاری کا منصب ہزاری ذات اور ۶۰۰ سواروں کا ہوا

۲۱ رمضان بادشاہ نے خواجہ ابوالحسن کو آٹھ ہزار سواروں سے ناسک ترنبک فتح کرنیکے واسطے بھیجا اور پرتھی راج راٹھوڑ کو اسکے ساتھ دیا۔

۱۱ شوال کو راجہ بھارت بندیلہ پانسو سواروں کے اضافہ سے تین ہزاری ذات اور تین ہزار سواروں کے منصب کو پہنچا۔

۱۲ شوال کو عبداللہ خان بہادر بجائے شائستہ خاں کے بالاگھاٹ کی فوج کا افسر مقرر ہوکر گیا اور شائستہ خان اعظم خان کی نااتفاقی سے واپس بلایا گیا۔

۲۳ شوال کو جوجہار سنگھ اور پہاڑ سنگھ بندیلہ کو راجگی کا خطاب عنایت ہوا۔

غنیم بادشاہی فوج سے لڑا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और भागा उस दिन मुलतफ़ितखां रावदूदा शत्रू: साल कछवाहा कर मसी बलभद्र शेखावत और राजागि रधर वग़ैरा राजपूत सरदार चंदाव लथे वो क़ौल याने बिचली फ़ौज से २ कोस दूरजा पड़े वहां खानजहां बाग़ी दरया खां बहलोल और मुकर्रब खां १२००० सवारों से घात मेंखड़ेथे इनको ग़ाफ़िल देखकर टूट पड़े मग र कुछ मुगल और राजपूतउनसेखू ब लड़े मुगलों मेंसे जांसुपारखां का बेटा इमामकुली और शुजाअतखांअ रब का बेटा रहमानुल्ला औरराजपूतों में से माधोसिंघ कछवाहे का बेटा और राजा मानसिंघ का भतीजा शत्रू साल दोबेटों भीम सिंघ अनंद सिंघ समेत ओर राव मालदेव के बेटे चंद्र सैन राठोड़ का पोता करमसी बलभ द्र शेखावत और राजा गिरधर और जगननाथ केशोदास का बेटा ओ ज यमल मेड़तिया का पोता याबहादुरी	اور بہاگا اوسدن ملتفت خان راؤ دودا ستروسال کچھواہہ کرم سی بلبہدر شیخاوت اور راجہ گردہر وغیرہ راجپوت سردار چنداول تھے ۔۔ قول یعنی درمیان کی فوج سے دو کوس دور جاپڑے وہاں خانجہان باغی دریاخان بہلول اور مقرب خان بارہ ہزار سواروں سے گہات میں کہڑے تھے اُنکو غافل دیکھکر ایکدم سے ٹوٹ پڑے مگر کچھ مغل اور راجپوت اُنسے خوب لڑے مغلوں میں سے جانسپار خان کا بیٹا امام قلی اور شجاعت خان عرب کا بیٹا رحمان اللہ راجپوتوں میں مادہو سنگھ کچھواہہ کا بیٹا اور راجہ مان سنگھ کا بہتیجا ستروسال دو بیٹوں بھیم سنگھ اور انند سنگھ سے اور راؤ مالدیو کے بیٹے چندرسین کا پوتا کرم سی راٹھوڑ بلبہدر شیخاوت اور راجہ گردہر اور جگناتھ جوکیشوداس کا بیٹا اور جیتوڑ کے شجاع جےمل راٹھوڑ میڑتیہ کا پوتا تہا بہادری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के साथ काम आये राजा गिरधर शे
खावत का पोता राज द्वारकादास
ज़ख़मी हुआ मुलतफ़ित खां राव दू
दाजी जो राव चांदा का पोता था और कु
छ और भी अमीर मैदान छोड़ भागे ॥

जो काम आये थे बादशाह ने उ
नके वारसों को मनसब और उ
नके वतन जागीर में दिये और राजा
द्वारका दास का मनसब बढ़ाकर
डेढ़ हज़ारी हज़ार सवार का कर
दिया ॥

असाढ़ बदी १० को हिरदे राम क
छवाहे का मनसब असल और इ
ज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ५०० सवा
र का हो गया ॥

असाढ बदी १३ को मंगूजी द
खनी ३ हज़ारी डेढ हज़ार सवार बा
बाजी २ हज़ारी ८०० सवार और
सत्रू साल ६ सदी ३०० सवार के
मनसबदार हुये

साबाजी को हाथी इनायत हु
आ यह दखनी सिपाहियों में बड़ा बहादुर था

کے ساتھ کام آئے راجہ گردہر
شیخاوت کا پوتا راجہ دوارکاداس
زخمی ہوا ملتفت خاں راؤ دودا
جو راؤ چاندا کا پوتا تہا اور کچھ
اور بہی امیر میدان چھوڑ بہاگے۔

جو کام آئے تہے بادشاہ
نے اُنکے وارثوں کو منصب
اور اُنکے وطن جاگیر میں دیئے
اور راجہ دوارکا داس کا منصب
بڑھاکر ڈیڑہ ہزاری ہزار سوارکا کردیا۔

۲۴ ذیقعد کو ہردے رام کچھواہہ
کا منصب اصل اور اضافہ سے
ہزاری ذات اور پانسو سوار کا
ہوگیا ✣

۲۶ کو منگوجی دکھنی تین ہزاری
ڈیڑہ ہزار سوار باباجی دوہزاری آٹھ
سو سوار اور ستروسال چھ صدی تین
سو سوار کے منصب دار ہوے
ساباجی کو ہاتھی عنایت ہوا
یہ دکھنی سپاہیوں میں بڑا
بہادر تہا ✣

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सावन बदी १३ को बादशाह ने नसीरीखां को जो पहिले गजसिंघ के साथ तईनात हुआ था ४ हज़ारी ३ हज़ार सवार का मनसब और खिलत देकर राव रतन हाडा की जगह मुलक तिलंगाना लेने और कंधार का किला फतेह करने के लिये भेजा

राजा गज सिंघ बमूजिब हुक्म के दरगाह में हाज़िर हुआ ॥

जादोंराय दखनी अपने भाई बेटों पोतों और रिशतेदारों के साथ बादशाही दरगाह में २४ हज़ारी जात और १५ हज़ार सवारों का मनसबदार था और दखन में उमदा २ जागीरें पाकर बड़े आराम से रहता था मगर इस वक्त अपने कदीमी मालिक निज़ामुलमुलक के ऊपर बादशाही फौजों की चढ़ाइयों से तकलीफ़ देख कर अपने सब भाई बंदों के साथ निज़ाम के पास चला गया निज़ाम ने कुछ आदमियों को छुपा कर उसे

۲۶ ذی الحجہ کو بادشاہ نے نصیری خان کو جو پہلے راجہ گجسنگھ کے ساتھ تعینات ہوا تہا چار ہزاری ذات اور تین ہزار سوار کا منصب اور خلعت دیکہ راؤ رتن ہاڈا کی جگہہ ملک تلنگانہ اور قندہار کا قلعہ فتح کرنے کے واسطے بہیجا ✽

راجہ گجسنگھ حسب الطلب حاضر درگاہ ہوا ✽

جادون رائے دکھنی معہ اپنے بھائی بیٹون پوتون اور رشتہ دارون کے بادشاہی درگاہ میں ۲۴ ہزاری ذات اور پندرہ ہزار سوارون کا منصب دار تہا اور دکہن میں عمدہ عمدہ جاگیرین پاکر بڑے آرام سے رہتا تہا مگر اسوقت اپنے قدیمی آقا نظام الملک ان کے اوپر بادشاہی فوجون کی چڑہائیو سے تکلیف دیکہہ کر اپنے سب بہائی بندون سمیت اس کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बुलाया यह सब खानखान के सा थ गया उन आदमियों से लड़ाई हुई जादों राय अपने २ बेटे अचला राघो राव और पोते यसवंत राव समेत मारा गया उसका भाई जगदेव राय बेटा बहादुर जी और उसकी औरत गिरजा बाई ये सब दौलताबाद से भा ग कर जालने के पास कि जहां उनका वतन था और जादों राय ने किला ब नाया था चले गये और बादशाह को अरज़ी भेजी बादशाह ने आज़म खां को लिखा कि इनको बादशाही बं दों में दाखिल करलो और इन के वा स्ते जो दरख्वास्त करोगे वह मंजूर होगी आज़म खां ने याकूत खां और ऊदाजी राम को उस हुकम की नकल देकर जादों राये के मुखतार कुनबी के साथ भेज कर उन लोगों को बुलाया जब वे हाज़िर आये तो याकूत खां ऊ दाजी राम और खीलूजी भोंसला को पेशवाई के लिये भेजा वह उन कोल	پاس چلاگیا نظام الملک نے کچھ آدمیوں کو گہات میں لگاکر اوسے بلایا وہ معہ تمام خاندان کے گیا اُن آدمیون سے لڑائی ہوئی - جادون رائے معہ اپنے دو بیٹے اچلا راگہو رائے اور پوتے لبسونت را کے مارا گیا اور اُسکا بہائی جگدیو رائے بیٹا بہادر جی اور اُسکی عورت گرجا بائی دولت آباد سے بہاگ کر جالنہ کے پاس کہ جہان اُنکا وطن تہا اور جادو رائے نے قلعہ بنایا تہا چلیگئے وہان سے بادشاہ کو عرضی بہیجی بادشاہ نے اعظم خان کے نام حکم لکہا کہ انکو بادشاہی بندوں مین داخل کرلو اور ان کے واسطے جو درخواست کروگے وہ منظور ہوگی اعظم خان نے یاقوت خان اور اوداجی رام کو اوس حکم کی نقل دیکر جادو رائے کے مختار قطبی کیساتھ بہیجکر اُن لوگوں کو بلایا جب وہ حاضر آئے تو یاقوتخان اوداجی رام اور کہیلوجی بہوسلا کو پیشوائی کیلئے بہیجا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शकर में ले आये बादशाह ने आज़म खां की दरख़्वास्त पर ४ हज़ारी ज़ात और ३ हज़ार सवार का मनसब जगदेवराय को और ३ हज़ारी डेढ़ हज़ार सवार का मनसब जो यसवन्त राव का था वह उसके भाई तिलंगराय को बख्शा और उसका नाम जादों राय दादा के नाम पर रक्खे और अचला जी का मनसब २ हज़ारी हज़ार सवार का उसके बेटे बीठ जी को दिया और १ लाख ३० हज़ार रुपये मदद खर्च के इनायत करके दखन बराड़ और खानदेस में अच्छी २ जागीरें दीं और जादोराय की ज़मींदारी भी बहाल रखी कि जिस में इन की जमैय्यत बिखरने न पावे ॥

जमाल खां रुहेला खानजहां लोधी के लिखने से बहुत से पठाण बंगशनिराह यूसुफज़ई और तारी की वगैरा ज़मा करके असाब सुदी ७ को पिशोर के ऊपर चढ़ आया लेकिन पिशो

جو انکو لشکر میں لے آئے بادشاہ نے اعظم خان کی درخواست پر چارہزاری ذات اور تین ہزار سوار کا منصب جگدیو رائے کو اور تین ہزاری ڈیڑھ ہزار سوار کا منصب جو یسونت راؤ کا تہا اوسکے بہائی تلنگ راؤ کو بخشا اور اُسکا نام جادون رائے دادا کے نام پر رکہا اور اچلاجی کا منصب دوہزاری ہزار سوار کا اُوسکے بیٹے بیٹوجی کو دیا اور ایک لاکہ تیس ہزار روپیہ مدد خرچ کے دے کر دکہن براڑ اور خاندیس میں اچہی اچہی جاگیرین عنایت کین اور جادون رائے کی زمینداری بہی بحال رکہی کہ جس سے اُنکی جمعیت بکہرنے نہ پاوے

جمال خان روہیلہ خانجہان لودی کے لکہنے سے بہت سے پٹہان بنگش تراہ یوسف زئی اور تاریکی وغیرہ سے فراہم کرکے ۱۷ ماہ ذی الحجہ کو پشاور کے اوپر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र और कोहाट के हाकिम सईद खां ने उनको शिकस्त देकर भगा दिया -

बरस चौथा

सावंण सुदी ३ संम्बत १६८७
से
सावंण सुदी २ सम्बत १६८८ तक

सावंण सुदी ६ को राव रतन बासम से लौट कर हाज़िर हुआ - सावन सुदी ९ को राजा का खिताब अनीराय को इनायत हुआ क्योंकि इसका बाप राजा हरनारायण मरगया था अनीराय का असली नाम अनूपसिंघ था इस को अनीराय सिंघदलन की पदवी जहांगीर बादशाह ने दी थी जबके इस ने शेर को बड़ी बहादुरी से मारा था ॥

निज़ाम का नोकर रबीराय नारूजी तिलंगाने के लशकर में आकर शामिल हुआ बादशाह ने नसीरी खां की अरज़ से २ हज़ारी ज़ात हज़ार सवार का मनसब दिया ॥

چڑھ آیا لیکن سعید خان حاکم پشاور و کوہاٹ نے اُنکو شکست دیکر بھگا دیا

سال چہارم

سنہ ۱۰۴۰ ہجری
یکم ماہ اگست سنہ ۱۶۳۰ عیسوی سے
۲۰ - جولائی سنہ ۱۶۳۱ء تک

۴ صفر کو راؤ رتن باسم سے لوٹ کر بادشاہ کے حضور میں حاضر ہوا ۷ ماہ مذکور کو راجہ کا خطاب انی رائے کو عنایت ہوا کیونکہ اسکا باپ راجہ ہرنراین مرگیا تھا انی رائے کا اصلی نام انوپ سنگھ تھا اسکو انی رائے سنگھ دلن کا خطاب جہانگیر بادشاہ نے عنایت فرمایا تھا جب کہ اوس نے ایک شیر کو بڑی بہادری سے مارا تھا جو بادشاہ کے اوپر حملہ آور ہوا تھا۔

ربی رائے نارو جی کہ جو نظام کے معتبر نوکروں میں سے تھا کچھ آدمیوں سے تلنگانہ کے لشکر میں داخل ہوا بادشاہ نے نصیری خان کی سفارش سے اسکو دو ہزاری ذات اور ہزار سوار کا منصب دیا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

आसोज सुदी ६ को बादशाह ने राजा गजसिंघ को ख़ास ख़िलत ख़ास तलवार जड़ाऊ इनायत करके लशकर में भेजा ॥	۶ ربیع الاول کو بادشاہ نے راجہ گج سنگھ کو خلعت فاخرہ شمشیر خاصہ اور یراق مرصع عنایت کرکے لشکر مین بھیجدیا ✣
आज़म खां मुज़फ़्फ़र खां की फ़ोज का हिरावल था मगर वो पेट सूज जाने से घोड़े पर सवार न्ही हो सकता था बादशाह ने उसके इलाज के लिये जगजीवन जर्राह को भेजा और हुकम लिखा के आराम होने पर दरगाह में हाज़िर होवे उसकी जगह राजा जयसिंघ मुज़फ़्फ़र की फ़ोज का हिरावल हुआ ॥	منظفر خان اعظم خان کی فوج کا ہراول تھا مگر بسبب ورم ناف کے سوار نہیں ہوسکتا تھا بادشاہ نے جگ جیون جراح کو اسکے معالجہ کے لئے بھیجا اور حکم دیا کہ بعد تخفیف درد کے درگاہ میں حاضر ہوا اور منظفر خاں کی جگہ راجہ جیسنگھ اعظم خاں کی فوج کا ہراول ہوا ✣
जोकि अब बरसात का मोसिम गुज़र गया था इसलिये ख़्वाजा अबुलहसन ने किले अलंग के पास से नासिक के ऊपर हल्ला करके निज़ामुलमुल्क के महलदार और दादा पंडित को शिकस्त दी बगलाने का राजा भेरजी भी बगलाने से ४०० सवारों से लशकर के साथ हो गया था।	جوکہ اب برسات کا موسم گزرگیا تھا اسلئے خواجہ ابوالحسن نے حوالی قلعہ النگ سے ناسک کے اوپر چڑہائی کرکے نظام الملک کے محلدار اور دادا پنڈت کو شکست دی بگلانہ کا راجہ بھیرجی بھی بگلانہ سے معہ چار سو سواروں کے ہمراہ لشکر گیا تھا ✣

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आसोज सुदी ११ को बादशाह ने यमीनुद्दौला आसिफ़ खां को कुल सुरवतार फ़ौज बालाघाट का करके भेजा उस के साथ राव रतन हाडा की भी तईनाती हुई ॥

संगसर बदि ११ को सनरूप के मरजाने से उस का बेटा गोपालसिंघ ८ सदी जात और ४०० सवारों का मनसबदार हुआ ॥

पोस के महीने में उड़ीसे के सूबेदार बाकर खां नज्म सानी ने मनसूर गढ़ का किला जो तिलंगाने औ र उड़ीसे की सरहद पर था कुतब शाह के आदमीयों से छीन लिया ॥

मुकाम राजौरी के क़रीब खान जहां बाग़ी से जिसका असली नाम पीरा था लड़ाई हुई उस दिन बादशाही फ़ौज का हिरावल राजा जयसिंघ था राजा बिट्ठलदास अनूपसिंघ और दूसरे राजपूत अमीर उसके साथ थे पीरा हारा और भागा दूसरे लोग तो

۹ ربیع الاول کو بادشاہ نے یمین الدولہ آصف خان کو مختار کل لشکر بالاگھاٹ کا مقرر کرکے بہیجا اوس کے ساتھ راؤ رتن ہاڈا کی بہی تعیناتی ہوئی

۲۴ ربیع الثانی کو منروپ کے مرجانے پر اوس کے بیٹے گوپال سنگھ کو آٹھ صدی ذات اور چارسو سواروں کا منصب مرحمت ہوا

ماہ جمادی الاول میں - باقر خان نجم ثانی صوبہ دار اوڑیسہ نے قلعہ منصورگڈھ کو جو تلنگانہ اور اوڑیسہ کی سرحد میں واقع تہا - قطب شاہ کے آدمیوں سے فتح کرلیا +

مقام راجوری کے قریب خانجہان باغی سے کہ جسکا اصلی نام پیرا تہا لڑائی ہوئی اُس دن بادشاہی فوج کا ہراول راجہ جے سنگھ تہا راجہ بیٹھل داس کوڑ انوپ سنگھ اور دوسرے راجپوت سردار اوس کے ساتھ تہے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लूट में पड़गये मगर बहादुरखां रुहेला अहतमास खां और नरहरदास भाला पीरा के पीछे पहाड़ पर चढ़गये वहां पीरा पलटकर लड़ा नरहरदास प्यादा होकर बहादुरी के साथ काम आया राजा पहाड़ सिंघ बुंदेले ने दहने हाथ की फ़ौज से पहुंचकर बहादुर खां की मदद की इस झगड़े में उसके कई आदमी मारेगये राजा जयसिंघ राजा बिट्ठलदास राजा अनूप सिंघ वग़ैरा भी जो पहाड़ के दूसरी तरफ़ थे एक वक़्त में जा पहुंचे रायसूर भुरटिया और चंद्रमणि बुंदेला भी इस लड़ाई में हाज़िर थे पीरा भागा उसका भतीजा बहादुर मारागया पहिले उसके १ गोली लगी फिर राजा पहाड़सिंघ बुंदेले का नोकर परसराम उसके ऊपर गया बहादुर ने उससे लिपटकर जमधर मारा वो रान पर लगा मगर परसराम ने गले पर जमधर बहादुर को मारडाला और उसका सिर घोड़ा ढाल

پیرا نے شکست کھائی اور راہ فرار اختیار کی اوسوقت اور تو سب لوگ لوٹ میں پڑگئے لیکن بہادر خان روہیلہ اہتمام خان اور نرہرداس جہالا انکی تعاقب میں روانہ ہوئے اور پہاڑ کے اوپر جاچڑہے وہاں پیرا پلٹ کر لڑا جب قافیہ تنگ ہوا تو یہ لوگ گھوڑوں سے اُتر کر پیدل ہوگئے نرہرداس معہ کچھ راجپوتوں کے بہادری سے جنگ کرکے کام آیا راجہ پہاڑسنگھ بندیلہ نے دہنے ہاتھ کی فوج سے آکر بہادر خاں کی مدد کی اس چپقلش میں اس کے کئی آدمی مارے گئے راجہ جیسنگھ بیٹھل داس راجہ انوپ سنگھ وغیرہ بھی جو پہاڑ کی دوسری طرف تھے عین وقت پر جا پہنچے راؤ سور بہرٹیا اور چندرمن بندیلہ بھی اس لڑائی میں موجود تھے پیرا بھی بھاگا اور اسکا بھتیجہ بہادر خان مارا گیا پہلے اسکو ایک گولی لگی پھر راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ کا نوکر پرسرام اسکے اوپر گیا تھا بہادر نے لپٹ کر اسکی جمدہر مارا وہ ران پر لگا مگر پرسرام نے گلے پر جمدہر مار کر بہادر کو مار ڈالا اور اس کا سر معہ گھوڑے ڈھال

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंगूठी और २तलवारों के समेत जो १घोड़े पर थी और दूसरी कमर में राजा पहाड़ सिंघ को लाकर दिया पहाड़ सिंघ आज़मखांके पास ले गया उसने वह घोड़ा और हथियार परसराम को बख़्श दिये ॥

जादों राये का दामाद साहूजी भोसला जो निज़ाम के हिन्दू लशकर का सरदार था जादो राये के मारे जाने पर निज़ाम की नोकरी छोड़ कर परगने पूने और जालने में जा बैठा था अब उसने बादशाही लशकर में हाज़िर होने के वास्ते आज़मखांसे अेहद नामा मांगा आज़म खां ने बादशाह से मंज़ूरी मंगवाकर उस को बुलवाया वह २००० सवारों से आकर लशकर के शामिल हुवा बादशाह ने आज़म खां की अर्ज़ से साहूजी को खिलत ५ हज़ारी ज़ात और ५ हज़ारी का मनसब जड़ाऊ जमधर नक्कारा निशान हाथी घोड़ा और २

انگوٹھی اور دو تلواروں کے جو ایک تو گھوڑے پر تھی اور دوسری کمر میں راجہ پہاڑ سنگھ کو لاکر دیا پہاڑ سنگھ اعظم خان کے پاس لے گیا اونسنے وہ گھوڑا اور ہتھیار پرسرام کو بخش دیا*

جادون رائے کا داماد ساہوجی جو نظام کے ہندو لشکر کا سردار تھا جادون رائے کے مارےجانے پہ نظام کی نوکری چھوڑکر پرگنہ پونہ اور جالنہ مین جا بیٹھا تھا اب اوس نے بادشاہی لشکر مین حاضر ہونے کے واسطے اعظم خان سے عہدنامہ طلب کیا اعظم خان نے بادشاہ سے منظوری منگواکر اسکو بلوایا وہ دوہزار سواروں سے آکر لشکر کے شامل ہوا بادشاہ نے اعظم خان کی عرض سے ساہوجی کو خلعت ۵ ہزاری ذات اور ۵ ہزار سوار کا منصب جڑاؤ جمدہر نقارہ نشان ہاتھی گھوڑا اور دو لاکھ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाख रुपया इनाम दिया उसके
भतीजे मैनाजी को ३ हज़ारी ज़ात
डेढ़ हज़ार सवार का मनसब खिल
त जड़ाऊ जमधर घोड़ा और साहू
जी के बेटे साभा जी को खिलत २
हज़ारी ज़ात हज़ार सवार का मनस
ब और घोड़ा बख़्शा इसी तरह र
बीराय मालूजी हापाजी को उन
के लायक मनसब देकर ८०००)
रुपये इनायत किये·

पीरा के इशारे से दरया खां
रुहेला १००० सवारों से बादशाही
मुलक लूटने को रवाना हुआ अ
बदुल्ला खां बहादुर उसके ऊपर
गया आलमचंद और गोबिंद राय
पड़ीहार उसके साथ थे॥

आज़म खां ने दूर के डेरे से
साहू जी भोंसला को जुनेर और संग
मेर के बंदोबसत पर भेजा॥

इस तरह निज़ाम के मुलक में
बादशाही फौज़ों का जमाव हो जाने

روپیہ انعام مین دیا اوس کے
بھتیجے میناجی کو تین ہزاری ذات
اور ڈیڑھ ہزار سوار کا منصب۔
خلعت جڑاؤ جمدہر اور گھوڑا اور
ساہوجی کے بیٹے ساماجی کو خلعت
دوہزاری ذات ہزار سوار کا منصب
اور گھوڑا بخشا اسی طرح ربی رائے
مالوجی اور ہاپاجی کو علی قدر مراتب
عطائے مناصب سے سرفراز کرکے
آٹھ ہزار روپیہ عنایت کیے۔

پیرا کے اشارہ سے دریا خان
روہیلہ ایکہزار سوارون کے ساتھ
بادشاہی ملک لوٹنے کو روانہ ہوا۔
عبداللہ خان بہادر اوسکے اوپر گیا
عالم چند اور گوبندرائے پڑہار اوسکے
ساتھ تعیناتی مین تھے۔

اعظم خان نے منزل دور سے
ساہوجی بہوسلہ کو واسطے بندوبست
ضلع جونیر اور سنگمیر کے بہیجا

اسطرح نظام الملک کے علاقہ
مین بادشاہی فوجون کا تسلط ہوجانے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से पीरा वहां रहने की मजाल न देख
कर मालवे की तरफ़ रवाना हुआ बा
दशाह ने पोस बदी ११ को बुरहानपुर से
सैयद मुज़फ़्फ़र खां को उसके पी
छे भेजा राजा द्वार का दास राव रतन
हाडा का बेटा माधो सिंघ सियाम
सिंघ और ऊग्रसेन उसके साथ गये॥
पीरा उज्जैन और सिरोंज होकर
बुंदेलों के मुलक में कालपी तक
पहुंचा अबदुल्ला खां और मुज़फ़्फ़र
खां उसके पीछे थे पहिले ये पीरा
जब आगरे से भागा था तो जुझारसिं
घ के बेटे बिक्रमाजीत ने उसको अ
पने मुलक में होकर रस्ता दे दिया था
जिससे वह दक्खन पहुंच गया था
और इस सबब से जुझार सिंघ के ऊ
पर बादशाह की बड़ी खफ़गी हुई
थी अब जो पीरा फिर इधर आया तो
बिक्रमाजीत ने वह पिछली शरमिं
दगी मिटाने के लिये मंगसिर बदी
२ को उसका पीछा किया और उस

پیرا وہان رہنے کی مجال نہ دیکھکر مالوہ
کی طرف روانہ ہوا بادشاہ نے
۲۶ جمادی الاول کو برہانپور سے
مظفرخان بارہہ راجہ دوارکاداس
مادہو سنگھ ولد راو رتن سیام سنگھ
اور اوگرسین کو اوس کے
تعاقب مین بہیجا ؛
پیرا اوجین اور سرونج
ہوکر بندیلون کے ملک مین کالپی
تک پہونچا عبداللہ خان بہادر اور
مظفرخان اوس کے تعاقب میں تہے
پہلے جب یہ آگرہ سے بہاگا تہا تو
جوجہارسنگھ کے بیٹے بکرماجیت نے
اوسکو اپنے ملک میں ہوکر رستہ دیدیا
تہا جس سے یہ دکن میں پہونچ گیا
تہا اور اس سبب سے جوجہارسنگھ
کے اوپر بادشاہ کی بڑی خفگی ہوئی
تہی اب جو پیرا پہر ادہر آیا تو بکرماجیت
نے پچہلی شرمندگی مٹانے کے لئے
۱۷ ربیع الثانی کو اوس کا پیچہا
کیا اور اوس کی چنداول یعنے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के चंदावल याने पिछले लशकर
केसरदार दरयारवां को जा मिलाया
दरयारवां को तो बड़ा ग़रूर था के ह
कब बुंदेलों को रव्याल में लाताथा
फ़ौरन बाग मोड़कर बिक्रमा जीत के
ऊपर आया मगर १ गोली ने उसका
कामतमाम कर दिया और उसका
बेटा भी उसी जगह मारा गया बुंदे
ले दरया को पीरा समझ कर सब
उसी के ऊपर टूट पड़े और पीराफ़ु
रसत पाकर निकल गया बिक्र
माजीत ने दरया का सिर बादशा
ह के पास भेजा इस लड़ाई में ४००
पठान और २०० बुंदेले मारे गये बा
दशाह ने बिक्रमाजीत को जुगरा
ज पदवी देकर एक दमसे हज़ारी
ज़ात और १००० सवारों का इज़ाफ़ा
कर दिया जिससे उसका मनस
ब दूना होगा और सुन्दर ब्राह्मण
के विरादे को हाय उसके वास्ते रिव
लत तलवार जड़ाऊ झंडा और न

پچھلی فوج کے افسر دریا خان
کو جا لیا دریا خان کو تو بڑا غرور
تہا وہ کب بندیلوں کو
خیال میں لاتا تہا فوراً عطف
عنان کرکے بکرماجیت کے
اوپر آیا لیکن ایک گولی نے
اوسکا کام تمام کردیا جو بکرماجیت
کی طرف سے چلے تھے اور
اوسکا بیٹا بھی اوسی جگہہ مارا گیا -
بندیلے دریا کو ہیرا سمجھکر سب اوسی
کے اوپر ٹوٹ پڑے اور ہیرا
فرصت پاکر نکل گیا بکرماجیت
نے دریا کا سر بادشاہ کے حضور
میں روانہ کیا اس لڑائی میں -
چارسو پٹھان اور دوسو بندیلے مارے گئے
بادشاہ نے بکرماجیت کو جگ راج
کا خطاب دے کر ایک دم سے
ہزاری ذات اور ہزار سواروں کا
اضافہ اوس کے منصب میں کردیا
جس سے اوسکا منصب دوچند ہوگیا
اور سُندر برہمن کب رائے کے ہاتھ اسکو واسطے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क़ारा भेजा ॥

आज़म खां ने घाटी से उतर कर मुलतफ़ित खां और मानूजी भोसला को धारूर का किला फ़तेह करने को भेजा और फिर खाई के पास पहुंचकर राजा जुझार सिंघ के बुंदेलों को हाथियों के पकड़ने के वास्ते भेजा जो खाई में दिये थे ये वहां पहुंच कर ४ हाथी घोड़े ऊंट- बैल और बहुत सा असबाब लूट लाये इसी तरह दूसरी दफ़ै भी कुछ हाथी और बहुत से घोड़े इनलोगों के हाथ लगे आज़म खां ने हाथी तो बादशाही सरकार के वास्ते रखलिये और घोड़े वग़ैरा उनही के पास रहने दिये ॥

माहबादो १० को आज़म खां ने धारूर का किला निज़ाम के आदमियों से फतह किया इसके इनाम में राजा जुझार सिंघ को भी घोड़ा और खिलअत मिला ॥

आदिल खां ने बादशाह के इशारे

خلعت جڑاؤ تلوار نشان اور نقارہ روانہ فرمایا۔

اعظم خاں نے گھاٹ سے اُتر کر ملتفت خان اور مانوجی بھوسلا کو دہارور کا قلعہ فتح کرنے کے واسطے روانہ کیا اور پھر خود بھی خندق کے قریب پہونچکر راجہ جوجہار سنگھ کے بندیلوں کو ہاتھیوں کے پکڑنے کے واسطے بھیجا جو خندق میں دکھائی دیئے تھے یہ وہاں پہنچکر بہادری سے چار ہاتھی- گھوڑے اونٹ بیل و ربہت سا اسباب لوٹ لائے اسی طرح دوسری دفعہ بھی کچھ ہاتھی و ربہت سے گھوڑی ان لوگوں کے ہاتھ لگے اعظم خان نے ہاتھی تو بادشاہی سرکار کے واسطے رکھ لئے اور گھوڑے وغیرہ اُنہیں کے پاس رہنے دیئے ۔

۲۳ جمادی الثانی کو اعظم خان نے دہاروڑ کا قلعہ نظام الملک کے آدمیوں سے فتح کیا جسکے صلہ میں راجہ جوجہار سنگھ کو بھی گھوڑا اور خلعت ملا ۔

عادل خان نے بادشاہ کی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से अपने सेनापति रणदूला को निज़ाम के मुल्कों में जो उसकी सरहद से मिले हुये थे अमल करने के वास्ते भेजा और वह आकर आज़मखां से मिला ॥

माह बदी ५ को गांव सीसीइला के रीवा में बादशाही फौज का पीरा से मुकाबिला हुआ उसमें राजा द्वारकादास बड़ी मरदुमी से काम आया पीरा के हाथियों में से २० बांधों के राजा अमर सिंघ के हाथ लगे और उसने बादशाह के पास भेज दिये ॥

माह सुदी २ को बादशाह ने द्वारकादास के बेटे नरसिंघदास को पांचसदी ज़ात और ४०० सवार का मनसब दिया ॥

इसी दिन मुज़फ़्फ़र खां ने कालंजर के इलाके में सिंध नदी के किनारे पर पीरा को जालिया माधोसिंघ हिरावल था मुकाबिले के वक़्त पीरा माधोसिंघ के बरछे से मारा गया ॥

شہ سے اپنے سپہ سالار رن دولہ کو نظام الملک کے علاقون مین جو اوسکی سرحد سے ملے ہوئے تھے قبضہ کرنے کے واسطے بہیجا اور وہ آکر اعظم خان سے ملا +

۲۸ جمادی الثانی کو موضع نیمی علاقہ ریواں مین بادشاہی فوج کا پیرا سے مقابلہ ہوا اُسمین راجہ دوارکاداس جنگ مردانہ کرکے کام آیا پیرا کے ہاتھیون مین سے بیس ہاتھی باندہون گڑھ کے راجہ امر سنگھ کے ہاتھ لگے جو اُسنے بادشاہ کے پاس بہیجدیے +

یکم رجب کو بادشاہ نے دوارکاداس کے بیٹے نرسنگھداس کو پانچ صدی ذات اور چار سو سوار کا منصب عنایت کیا +

اسی دن مظفر خاں نے ضلع کالنجر مین سندہ ندی کے کنارہ پر پیرا کو جا دبایا لڑائی ہوئی اُسمین پیرا مادہو سنگھ ہاڈا کے برچھے سے مارا گیا جو مظفر خاں کی فوج کا ہراول تہا +

(نوٹ) سلہ طالبا کلیم این رباعی در افسردن شعلہ حیات دریا و فرونشستن حباب زندگانی پیرا منظوم ساختہ بسامع لشتابیر جامع رسانید (بادشاہ نامہ) این فرد فتح از پے ہم زیبا بود این کیف و بالاجہ نشاط افزا بود از رفتن دریا سر پیرا ہم رفت گویا سر او حباب این دریا بود +

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

निज़ाम ने रणदूला को शोला
पुर का किला देना करके बादशाही
फ़ौज से लड़ने को तैयार किया और
वह आज़म खां का साथ छोड़ कर च
ला गया आज़म खां बादशाह से और फ़ौ
ज मंगा कर परेंडे को रवाना हुआ॥

आज़म खां जब परेंडे के पास पहुं
चा तो १ कोस से राजा जयसिंह को आ
गे भेजा उसने गांव तलीते को जो किले
परेंडे के बाईं तरफ था फतह करके
लूट लिया इस गांव के गिर्द ३ गज़
गहरी खाई ५ गज़ ऊंची और ३ गज़
चौड़ी दीवार थी राजा हाथी से दीवार
तुड़ा कर अंदर दाखिल हुआ और
बंदूकची जो पहरा देते थे भाग कर
खाई में जा छुपे पीछे से आज़म खां भी
आ पहुंचा राजा जयसिंह और एहत
माम खां ने सलामत कूचे बना कर प
रेंडे को घेर लिया नाज चारा न मिलने
और मुकाबिले के वास्ते नि
ज़ाम शाह और आदिल

نظام الملک نے رنڈولہ
کو شولاپور کا قلعہ دینا کرکے بادشاہی
فوج سے لڑنے کے واسطے مستعد
کیا اور وہ اعظم خان کا ساتھ چھوڑ کر
چلا گیا اعظم خان بادشاہ کے پاس
سے اور زیادہ فوج منگوا کر پرینڈہ کی
طرف روانہ ہوا۔

اعظم خان جب پرینڈہ کے پاس
پہونچا تو ایک کوس سے راجہ جیسنگھ
کو آگے بھیجا اوس نے گاؤں تلیتہ کو
جو پرینڈہ کے بائیں طرف ایک کوس
پر تھا فتح کرکے لوٹ لیا اس گاؤں
کے گرد تین گز گہری کھائی پانچ گز اونچی
اور تین گز چوڑی دیوار تھی راجہ ہاتھی
سے دیوار میں رخنہ ڈلوا کر اندر گیا
بندوقچی جو پہرا دیتے تھے بھاگ کر
کھائی مین جا چھپے پیچھے سے اعظم خان
بھی آ پہونچا راجہ جے سنگھ اور اہتمام خان
میر آتش نے سلامت کوچہ بنا کر قلعہ کا
محاصرہ کیا مگر غلّہ اور چارہ کے نہ ملنے
اور نظام شاہ و عادل شاہ کے ایک

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाह के एक होजाने से आज़मखां घेरा छोड़कर धारूर की तरफ़ रवाने हुआ दुश्मन ने घाट पानसी से उतर कर रस्ता रोक लिया आज़मखां ने राजा जयसिंघ राजा पहाड़सिंघ राजा अनूप सिंघ और दूसरे राजपूतों को जो हिरोल थे मुकाबिले के वास्ते भेजा फिर मुलतफ़ितखां को भी चंदोल से २००० सवारों के साथ इनकी मदद पर रवाना किया इन्हों ने लड़कर ग़नीम को भगा दिया ॥

फागण शुदी १४ को ईरान का वकील बुरहानपुर में बादशाह के पास पहुंचा ॥

इस वक्त गुजरात और दकखन में बहुत सख़त काल था जिससे बहुत दिनों तक कुत्तों का मास बकरी के मास के नाम से और हड्डियों का आटा आटे के साथ बिकता रहा बादशाह ने जगह २ लंगर जारी करके हरेक सोमवार को ५००० रुपे खैरात करने

ہو جانے سے اعظم خان محاصرہ چھوڑ کر دہارور کی طرف روانہ ہوا تب تو غنیم نے پانسی گہاٹ سے اُتر کر رستہ روک لیا اعظم خاں نے راجہ جے سنگھ راجہ پہاڑ سنگھ۔ راجہ انوپ سنگھ اور دوسرے راجپوت سرداروں کو جو کہ مقدمۃ الجیش تھے اونکے مقابلہ کے واسطے بہیجا پھر ملتفت خان کو بہی صف چنداول سے دو ہزار سواروں کے ساتھ اُنکی مدد کے لئے روانہ کیا انہوں نے لڑکر غنیم کو بہگا دیا*

۱۲۔ شعبان کو ایران کا ایلچی برہان پور مین بادشاہ کے پاس پہونچا*

اسوقت گجرات اور دکہن مین بہت سخت کال پڑ رہا تہا جس سے بہت دنون تک کتّوں کا گوشت بکرے کے گوشت کے نام سے اور ہڈیوں کا آٹا آٹے کے ساتھ بکتا تہا بادشاہ نے جگہہ جگہہ لنگر خانے جاری کرکے ہر ایک سوموار کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का हुक्म दिया और ५०००० अहम
दाबाद के गरीबों के वास्ते नाज ख़री
दने को दिये और ७० लाख रुपैये ख़ाल
से की आमदनी २ करोड़ में से रैय्यत
को माफ़ किये इस वक़्त कुल बादशा
ही मुल्कों की आमदनी २२ किरोड़
रुपैये की थी और जो कमी हासिल की
अमीरों और सरदारों की जागीरों में
से रैय्यत के वास्ते हुई वह इसके सि
वाय थी ॥ سوائے تھی

चैत बदी ४ को नौरोज़ के दिन ३
लाख की सौग़ात ईरान के बादशाह की
३ लाख की पेशकश आसिफ़ खां व
ज़ीर की १४ लाख की क़ुतुबुल्मुल्क
की १ लाख की शेख़ मुहीउद्दीन की जो
पेशकश लेने के वास्ते क़ुतुबुल्मुल्क
के पास गया था और क़ुतुबुल्मुल्क
ने ४ लाख रुपैये उसको दिये थे। २ ला
ख की पेशकश चांदा के ज़िमींदार रिख
या की बादशाह की नज़र से गुज़री ॥
इसी दिन राव रतन हाडा के

پانچہزار روپیہ خیرات کرنے کا حکم دیا
اور پچاس ہزار روپیہ احمدآباد کے
غریبوں کے واسطے غلہ خریدنے
کو دیئے اور خالصہ کی آمدنی دو کروڑ
روپیہ میں سے ستر لاکھ روپیہ رعایا
کو معاف کیا اسوقت کل بادشاہی
ملک کی آمدنی تئیس کروڑ روپیہ کی
تھی اور جو تخفیف حاصل کی امیرون
اور سردارون کی جاگیرات میں سے
بہ نسبت رعیت کے واسطے کیگئی تھی وہ اسکے
۱۰ ارشعبان کو نوروز کے دن تین
لاکھ کی سوغات شاہ ایران کی اور
تین لاکھ کی پیشکش آصف خاں کی
چودہ لاکھ کی قطب الملک کی
اور ایک لاکھ کی شیخ محی الدین کی
جو پیشکش لینے کے واسطے گولکنڈہ
گیا تھا اور قطب الملک نے چار
لاکھ روپیہ اوسکو دئے تھے بادشاہ
عالیجاہ کی نظر سے گزرے اور دو
لاکھ روپیہ کی پیشکش کیا زمیندار
چاندا کی بھی تھی۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बेटे माधो सिंघ को मनसब पांच सदी ज़ात और २०० सवारों का इज़ाफ़ा होकर २ हज़ारी २००० सवार का होगया और उसको झंडा भी मिला ॥

चेत सुदी ७ को मेरव संक्रांत के दिन २० लाख रुपै की पेशकश लोगों की शाहज़ादों और अमी रोंकी पेश हुई

बादशाह ने दयानंत राये गुजराती को कि जो नागर ब्राह्मण था और हिसाब और पुरानी हिन्दी किताबों से खूब वाकिफ़ था इज़ाफ़े मनसब के साथ ख़ालसे के दफ़तर का अफ़सर मुकर्रर किया और जसवंत राये को अहदियों की बख़शी गरी दी ॥

ख़्वाजा अबुल हसन साहूजी को बादशाह के हुक्म से नासिक में छोड़ कर शाह गढ़ को चलागया ॥

मेदनी राये निज़ाम की नोकरी छोड़ कर बादशाही मनसब दार

اویدن مادہو سنگھ ولد راؤ رتن
ڈاکا منصب پانصدی ذات اور
دوسو سواروں کے اضافہ سے دو
ہزاری ہزار سواروں کا ہوگیا اور
اسکو علم بہی عنایت ہوا
۵۔ رمضان کو شرف آفتاب
کے دن ۲۰ لاکھ روپیہ کی پیشکش
ہون شاہزادون اور امیرونکی پیش ہوئی*
بادشاہ نے دیانت رائے گجراتی کو
جو ناگر برہمن تہا حساب اور ہندی
پرانی کتابوں سے خوب واقف
تہا اضافہ منصب کے ساتھ دفتر
خالصہ شریف کا افسر مقرر کیا اور
جسونت رائے کو احدیون کی
بخشی گری کا کام عنایت
فرمایا*
خواجہ ابوالحسن بادشاہ کے
حکم سے ساہوجی کو ناسک میں
چہوڑکر شاہ گڈہ کی طرف چلاگیا۔
میدنی رائے نظام کی نوکری
چہوڑکر بادشاہی منصبدار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

होगया ॥
राजा बरसिंघदेव बुंदेले के बे
टे बेनीदास को पांच सदी ज़ात और
२५० सवारों का मनसब मिला ॥
राजा बिठ्ठलदास गोड़ के बाप
और भाई लड़ाई में काम आये थे और
खुद उसने भी घोलपुर के पास पीरा
से बड़ी लड़ाई की थी इससे उसको
राजा का खिताब मिलाथा और व
ह हमेशह किलेदार होने की अर्ज़
किया करताथा क्योंके राजपूतों में
बग़ैर किले के राजा के खिताब की
कुछ इज्ज़त नहीं होती इस लिये बा
दशाह ने रणथंभोर का मशहूर किला
कि जिसकी हिफ़ाज़त किलेदारखां
करता था बैशाख बदी ६ को राजा मज़
कूर को इनायत फ़रमाया और खासा
खिलत देकर रुखसत किया राणा
उदयसिंघ ने उस किले की किलेदा
री राव सुरजन हाड़ा के जो उसका भ
रोसा बंद नोकर था सौंपी थी उसके

ہوگیا۔
راجہ برسنگھہ دیو بندیلہ کے بیٹے
بینی داس کو پانچ صدی ذات اور
ڈھائی سو سواروں کا منصب عنایت ہوا۔
راجہ بٹھل داس گوڑ کے باپ
اور بھائی لڑائی میں کام آئے تھے
اور اُسنے بھی دھولپور کے پاس پیرا
سے بڑی لڑائی کی تھی جس سے
اوسکو راجہ کا خطاب ملا تھا اور وہ
ہمیشہ قلعدار ہونے کی آرزو کیا کرتا
تھا کیونکہ راجپوتانہ میں بغیر قلعہ کے
راجہ کے خطاب کی کچھ عزت نہیں
ہوتی ہے اس لئے بادشاہ نے
رنتھنبور کا قلعہ کہ جس کی حفاظت
قلعدار خان کرتا تھا ۲۲۔ رمضان کو
راجہ مذکور کو عنایت فرمایا اور خلعت
خاصہ دے کر رخصت کیا پہلے
اس قلعہ کی قلعداری رانا اودے سنگھہ نے
راؤ سرجن ہاڈا کو جو اوسکا ملازم
معتبر تھا سپرد کی تھی اوسکے اوپر
خود اکبر بادشاہ نے فوج کشی کی اور

ऊपर खुद अकबर बादशाह ने चढ़ा
ई करके तोप और बंदूक की मार से
राव मज़कूर को तंग किया तब उसने
किला सौंप दिया था

बैशाख सुदी ३ को इजाज़त होकर
बिहारी दास कछवाहा २ हज़ारी २०००
सवार का और बरसिंह देव बुंदेले
का बिटा चंद्र मणि डेढ़ हज़ारी ७०० स
वार का मनसबदार होगया ये दोनों
सूबे काबुल में तईनात थे ॥

किले तलतम में बादशाही अम
लहुआ सतोंडे का किला भी निज़ाम
के आदमियों ने सौंप दिया ॥

ख़ानबेग ने रणदूला और निज़ा
म की फ़ौज को शिकस्त दी ॥

नसीर खां कंधार के किले को
१ अरसे से घेरे हुये था अब वहां के
किलेदार सादिक़ खां ने राजा भार
त सिंघ बुंदेले की मारफ़त सुलह क
रके जेठ बदी १ को किला सौंप दिया
और राजा के साथ जाकर नसीरी खां

اور قلعہ کو گھیر کر ضربات توپ و
تفنگ سے راؤ مذکور کو تنگ
کیا تب اوس نے قلعہ
سونپ دیا۔

غرہ شوال کو بہاری داس
کچھواہہ اصل و اضافہ سے دوہزاری
دوہزار سوار اور راجہ برسنگدیو بندیلہ
کا بیٹا چندرمن اصل و اضافہ سے
ڈیڑہ ہزاری ذات اور سات سو سوار کا
منصب دار ہوگیا یہ دونو صوبہ کابل کی کمکیون

قلعہ تلتم میں بادشاہی عمل ہوا
ستونڈہ کا قلعہ بھی نظام کے آدمیون
نے سونپ دیا۔

خان بیگ نے رنڈولہ اور
نظام شاہیوں کو شکست دی۔

نصیری خان قندہار کے قلعہ
کو ایک عرصہ سے گھیرے ہوئے
تھا اب وہاں کے قلعدار نے
راجہ بھارت بندیلہ کی معرفت صلح
کرکے ۱۵ شوال کو قلعہ سونپ دیا
اور راجہ کے ساتھ جاکر نصیری خان

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से मुलाकात की इस किले में १६ तोपें मिलीं ॥

अब निज़ाम ने अंबर के बेटे फ़तह खां को कैद से छोड़ कर फिर मुखतार किया इस पर मुकर्रब खां जो अबतक बादशाही फ़ौज से लड़ता रहा था बुरा मान कर तानाजी डोडिये की मारफ़त आज़म खां से आ मिला और बादशाह ने उस को पांचहज़ारी मनसब दिया मगर रणदूला और निज़ाम के दूसरे सरदार बादशाही फ़ौज के १ हिस्से को हराकर बहादर खां और यूसुफ़ मोहम्मद खां को पकड़ ले गये आज़म खां ने उन को १ लड़ाई में हराया लेकिन बरसात होजाने से कंधार को पीछा लौट आया ॥

आसाढ़ बदी ३ मंगल की रात को बादशाह की प्यारी बेगम मुमताज़ुल ज़मानी का इन्तकाल होगया जिसको ताज बीबी कहते हैं ॥

سے ملاقات کی اس قلعہ میں ۱۶ توپین ملین ٭

اب نظام نے عنبر کے بیٹے فتح خان کو قید سے رہا کر کے پھر اپنے ملک کا مختار کیا اسپر مقرب خان نے جو ابتک بادشاہی لشکر سے لڑتا تھا برا مان کر اعظم خان کو اطاعت کا پیغام بھیجا اور تاناجی ڈوڈیہ کی معرفت شرائط طمانیت ٹھہرا کر اس سے ملاقات کی اور بادشاہ کی پیشگاہ سے پانچ ہزاری منصب پایا - مگر رن دولہ اور نظام کے دوسرے سردار بادشاہی فوج کے ایک حصہ کو شکست دیکر بہادر خان اور یوسف محمد خان کو پکڑ لیگئے اعظم خان نے انکو ایک لڑائی مین شکست دی لیکن بارش ہوجانیسے قلعہ قندہار کو لوٹ آیا ۔

شب چہارشنبہ ۱۷ ذی قعدہ کو ملکہ ممتاز الزمانی بیگم کا انتقال ہوگیا اس کے ساتھ بادشاہ کی شادی شب جمعہ ۹ ربیع الاول سنہ ۱۰۲۱ کو ہوئی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस के साथ बैसाख सुदी १० सं० १६६६ बृहसपत की रात को बादशाह की शादी ऊई थी उमर कुछ कम ४० बरस की थी इस मुद्दत में ८ बेटे और ६ लड़कियां नीचे लिखे माफ़िक ऊईं जिन में से ४ बेटे और ३ बेटियां उस के मरने पर ज़िंदा थीं बेटियों में जहां आरा बेगम जी बेगम साहब कहलाती थीं बऊत मशहूर रहे॥

१ हूरनिसाबेग़म चैत सुदी १० संबत १६७० को सनीचर के दिन आगरे में पैदा ऊई और ३ बरस की होकर जेठ बदी १० संबत १६७३ को बुध के दिन अजमेर में मर गई॥

(२) जहां आरा बेगम चैत बदी ८ सं० १६७० को सनीचर के दिन पैदा ऊई।

(३) शाहज़ादा दारा शिकोह चैत बदी १५ सं० १६७२ इतवार की रात को पैदा ऊवा॥

(४) शाहज़ादा शुजाअ सावन बदी ४ संबत १६७३ सनीचर की रात को

تھی عمر کچھ کم چالیس برس کی تھی اس عرصہ میں بیگم سے آٹھ لڑکے اور چھ لڑکیاں حسب مندرجہ ذیل پیدا ہوئیں اُنہیں سے سات زندہ تھے چار شہزادہ اور تین شہزادیاں جنمیں جہان آرا بیگم عُرف بیگمصاحبہ بہت مشہور ہے ؛

(۱) حورالنسا بیگم روز شنبہ ۱۰ صفر ۱۰۲۲ کو آگرہ مین پیدا ہوئی اور تین برس کی ہو کر روز چہار شنبہ ۲۴ - ربیع الثانی ۱۰۲۵ کو اجمیر میں مرگئی ؛

(۲) جہان آرا بیگم عرف بیگمصاحبہ روز شنبہ ۲۱ صفر ۱۰۲۳ کو پیدا ہوئی

(۳) شاہزادہ محمد دارا شکوہ شب دوشنبہ ۲۹ ماہ صفر ۱۰۲۴ کو پیدا ہوا ؛

(۴) شاہزادہ محمد شجاع شب یکشنبہ ۱۸ جمادی الاخری ۱۰۲۵

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पैदाऊआ ॥
(५) रोशन राये बेगम भादों सुदी ४ संबत १६७४ को बुरहानपुर में पैदाऊई ॥
(६) शाहज़ादा औरंगज़ेब कातक सुदी १५ सं० १६७५ सनीचर की रात को पैदाऊआ ॥
(७) उम्मेद बख़्श मंगसिर सुदी १३ सं० १६७६ को बुध के दिन पैदाऊआ ।
(८) सुरैय्या बानो बेगम असाढ़ बदी ६ सं० १६७८ की रात को पैदाऊई ॥
(९) एक लड़का मंडू में सं० १६७६ में होकर मर गया
(१०) शाहजादा मुराद बख़्श आसोज बदी १० सं० १६८१ मंगल की रात को रुहतास में पैदाऊआ ॥
(११) लुत्फुल्ला कातक सुदी १४ संबत १६८३ को मंगल की रात पैदाऊआ और बैसाख सुदी १० सं० १६८४ को मरगया ॥
(१२) दौलत अफ़ज़ा जेठ सुदी ४ सं० १६८५ को मंगल की रात पैदाऊआ और

کو پیدا ہوا۔
(۵) روشن رائے بیگم ۲ رمضان سنہ ۱۰۲۶ کو برہان پور میں پیدا ہوئی ۔۔
(۶) شاہزادہ اورنگ زیب شب یکشنبہ ۱۵ ذیقعدہ سنہ ۱۰۲۷ کو پیدا ہوا۔
(۷) امید بخش روز چہارشنبہ ۱۱ محرم سنہ ۱۰۲۹ کو سہرند میں پیدا ہوا اور ربیع الثانی سنہ ۱۰۳۱ میں بمقام برہان پور مر گیا۔
(۸) ثریا بانو بیگم ۲۰ رجب سنہ ۱۰۳۰ کی راتکو پیدا ہوئی اور ۲۳ شعبان سنہ ۱۰۳۲ کو سات برس کی ہو کر مر گئی۔
(۹) ایک لڑکا سنہ ۱۰۳۲ میں بمقام سنڈو پیدا ہو کر مر گیا۔
(۱۰) شاہزادہ مراد بخش شب چہارشنبہ ۲۵ ذی الحجہ سنہ ۱۰۳۳ کو قلعہ رہتاس میں پیدا ہوا
(۱۱) لطف اللہ شب چہارشنبہ ۱۴ ماہ صفر سنہ ۱۰۳۶ کو پیدا ہوا اور ۹ رمضان سنہ ۱۰۳۷ کو قضا کر گیا۔
(۱۲) دولت افزا شب چہارشنبہ ۴ رمضان سنہ ۱۰۳۷ کو پیدا ہوا اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

जेठ बदी ७ संबत १६८६ को मरगया"
(१३) एक लड़की बैसाख सुदी ११
संबत १६८७ को पैदा होकर मरगई
(१४) गोहर आरा बेगम आसाढ़
बदी ३ सं० १६८८ मंगल की रात
को बुरहानपुर में पैदा हुई॥

बादशाह की २ बेगमें और भी
थीं १ तो ईरान के शाहज़ादे मुज़फ़्फ़
रहसैन मिरज़ा की बेटी जिसके सा
थ २० महीने पहिले मुमताज़ मह
ल की शादी से शादी हुई थी और दू
सरी अब्दुलरहीम खानखानां की
पोती कि जिससे ५॥ बरस पीछे
१ मसलेहत से शादी हुई थी मगर मु
मताज़ महल से बादशाह को बहुत
मुहब्बत थी और हमेशा उसको अप
ने पास रखते थे और मुमताज़ महल
भी बहुत नेक और बादशाह की मर
ज़ी दान थी उसकी सिफ़ारिश से वह
काम हो जाते थे कि जो किसी की
अरज़ मारूज़ से भी न्हीं हो सकते थे

۲۰ ربضمان ۱۰۳۸ شنہ کو مرگیا۔
(۱۳) ایک لڑکی ۱۰ ربضمان ۱۰۳۹ شنہ
کو پیدا ہو کر مرگئی۔
(۱۴) گوہر آرا بیگم شب چہارشنبہ
۱۷ ذیقعد ۱۰۴۰ شنہ کو برہان پور مین
پیدا ہوئی

بادشاہ کی دو بیگمین اور بہی
تہین ایک تو مظفر حسین مرزا
شاہ ایران کی بیٹی جس سے ۲۰
مہینے قبل از شادی ممتاز محل
کے شادی ہوئی تہی دوسرے
عبدالرحیم خان خانان کی پوتی
اور شاہ نواز خان کی بیٹی کہ جس کے
ساتھ پانچ برس اور پونے چھ
مہینے بعد ایک مصلحت سے
شادی ہوئی تھی لیکن ممتاز محل
سے بادشاہ کو بہت محبت تہی
ہمیشہ اوسکو سفر اور حضر مین
پاس رکہتے تھے اور ممتاز محل
تہی بہی بہت نیکذات اور بادشاہ کی
مرضی شناس و مزاجدان اوسکی خاطر

बहुत से ऐसे आदमी कि जिनको
गरदने का हुक्म होता था वे भी उ
सके कहने से बच जाते थे बेग
म की मौत गोहर आरा बेगम के
पैदा होने की तकलीफ़ से हुई
जो पेट में ही रोने लगी थी मरते
वक़्त उसने शाहज़ादी जहांआरा
बेगम को भेजकर बादशाह को
अपने पास बुलाया और कहा के
कुल बच्चे मां के पेट से निकल
कर रोते हैं और यह लड़की पेट
में से ही रोती हुई पैदा हुई इससे
मेरी जान की खैर नहीं है और य
ह अब आपका आख़िरी दीदार
है आप मेरे बच्चों और मेरी मां
का पूरा ख़याल रखना बेगम का
यह आख़री बोल था बादशाह
को बेगम के मरने का निहायत
रंज हुआ उसके सोग में बादशा
हने सफ़ेद शाहज़ादों और अमीरों
ने काले कपड़े पहिने बेगम की

اور سفارش سے وہ کام ہو جاتی
تھے جو کیکی عرض معروض سے
نہین ہو سکتی تھی بہت سے
خونی اور قابل القصاص گناہگار
اوسکی شفاعت سے جانبر ہو گئی تھی +
بیگم کی موت گوہر آرا بیگم کے پیدا
ہونیکی تکلیف سے واقع ہوئی جو پیٹ
مین ہی رونے لگی تھی مرتے وقت
اُس نے شاہزادی جہاں آرا بیگم کو
بھیجکر بادشاہ کو اپنے پاس بُلایا
اور کہا کُل بچہ ماں کے پیٹ سے
نکلکر روتے ہیں اور یہ لڑکی پیٹ
میں سے ہی روتی ہوئی پیدا ہوئی
اِس سے میری جان کی خیر نہین ہے
اور اب یہ آپ کا آخری دیدار ہے
میرے بچوں اور میری ماں کا پورا خیال
رکھنا بیگم کا یہ آخری کلام تھا بادشاہ
کو بیگم کے مرنیکا نہایت رنج والم ہوا
اوسکے ماتم مین انہوں نے سفید اور
سب شاہزادوں وامیرون نے
سیاہ کپڑے پہنے بیگم کی لاش -

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाश बुरहानपुर के पास बाग़ जैन
आबाद में जो तापती नदी के किना
रे पर था दफ़न की गई बादशाह
मारे ग़म के १ हफ़्ते तक दौलत
ख़ाने ख़ास और आम के झरोके
दरशन में नहीं आये और न कोई
काम राज का किया कि जिस
की कभी नाग़ा न्हीं होती थी और
यह कहते रहे के जो सलतनत
और रैयत की हिफ़ाज़त का बो
झ मेरी गरदन पर न्हो होता तो कुल
मुल्क हिन्दुस्तान का जो मेरा और
मेरे बाप दादों का फ़तह किया हुआ
है अपने बेटों को तकसीम करके बे
गम की कबर पर जा बैठता और
बाकी उमर ख़ुदा की बंदगी में पूरी
करता आखिर नवें दिन जुमेरात
को बाहर निकले और नदी से उत
रकर बेगम की कबर पर गये और
जब तक बुरहानपुर में रहे हर जुमे
रात को जाया करते थे बेगम का सोग

ہان پور کے پاس باغ زین آباد
یں جو تاپتی ندی کے کنارہ پہ تھا
فن کی گئی بادشاہ مارے غم
کے ایک ہفتہ تک دولتخانہ
ام و خاص کے جھروکہ درشن
ں نہیں آئے اور نہ کوئی کام
ک اور ہال کا کیا کہ جسکی کبھی
غہ نہیں ہوتی تھی اور یہ کہتے
ہے کہ اگر سلطنت اور رعیت
کی حفاظت کا بار میری گردن
پر نہوتا تو یہ کل ملک ہندوستانکا
جو میرا اور میرے بزرگون کا
فتح کیا ہوا ہے اپنے بیٹون کو
تقسیم کرکے بیگم کی قبر پہ جا
بیٹھتا اور باقی عمر یاد الہی مین
ختم کرتا آخر نویں دن جمعرات
کو باہر نکلے اور ندی سے اُتر کر
بیگم کے مزار پر گئے اور جب تک
برہان پور میں مقام رہا ہر جمعرات
کو جایا کرتے تھے بیگم کا ماتم
پورے دو برس رکھا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूरे २ बरस तक एक वा न कभी अत
र लगाया न रंगीन कपड़ा और ज
वाहर पहना न गाना सुना ईद औ
र खुशी के दिनों में जब के बेगमें मह
ल में इकट्ठी होती थीं तो बेगम की
याद में बादशाह की आंखों से आं
सू बहने लगते थे ॥ डाढ़ी में पहि
ले २० से ज्यादा सफ़ेद बाल न थे
मगर फ़िर बहुत जलदी फ़िक्र औ
र ग़म के मारे तमाम बाल सफ़ेद
होगये बेगम १ करोड़ से जियादा
का जवाहर सोना चांदी ज़ेवर जड़ा
ऊ और रुपैया अशरफ़ी छोड़ मरी थी
बादशाह ने उसमें से आधा तो जहां
आरा बेगम को बख़्शा और आधा
दूसरे शाहज़ादों और शाहजादियों
को दिया जहां आरा बेगम को बेग
म साहब का ख़िताब और कुल
ख़ानगी कामों का अख़्तियार सौंपा
और उस का सालियाना ६ लाख
से बढ़ाकर १० लाख का कर दिया

نہ کبھی عطر لگایا نہ رنگین کپڑا
اور جواھر پہنا نہ گانا سُنا عید
اور خوشی کے دنوں میں جبکہ
بیگمیں دولتسرا میں جمع ہوتی
تھیں تو بیگم کی یاد میں بادشاہ
کی آنکھوں سے بے اختیار آنسو
نکلنے لگتے تھے ڈاڑھی میں
پہلے ۲۰ سے زیادہ سفید بال
نہیں تھے مگر بہت جلدی
مارے فکر و غم کے تمام بال
سفید ہو گئے۔

بیگم کے متروکات روپیہ اشرفی
جواہرات اور مرصع آلات ایک
کروڑ روپیہ سے زیادہ تھے بادشاہ
نے آدھے تو جہاں آرا بیگم کو بخشے اور
آدھے دوسرے شاہزادوں اور
شاہزادیوں کو دیئے۔

جہاں آرا بیگم کو بیگم صاحب کا
خطاب اور کل خانگی امور کا اختیار
دیا اوسکا سالیانہ بھی چھ لاکھ سے
بڑھا کر دس لاکھ کا کر دیا اور کچھ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

फ़िर कुछ दिनों बाद अपनी बड़ी मोहर भी जो पहले उसकी मां और पीछे उसके मामूं आसिफ़ खां वज़ीरके पास रहा करती थी उसको सोंपदी और जबसे वह पट्टों और फ़रमानों के ऊपर मोहर करने लगी

बरस पांचवां

सावन बदी ३ संबत १६८८ से सावन सुदी २ संबत १६८९ तक

फ़तेहखां ने अपने बाप अंबर चंम्पू के माफ़िक निज़ामुल्मुल्क को क़ैद कर के कुछ दिनों पीछे बादशाह के हुक्मसे मारडाला और उसके बेटे हुसेन निज़ामशाह को जो १० बरस का था दौलताबाद में गद्दी पर बैठाया॥

माह सुदी ६ को ख़्वाजा अब्बुल हस्सन के लशकर से २००० आदमी तोशकखां समेत नद्दी के रेले में बह गये॥

دنوں کے بعد اپنی بڑی مُہر
ہی جو پہلے اُوس کی ماں اور
بعد اوس کے ماموں آصف خان
وزیر کُل کے پاس رہا کرتی
تھی اوس کے حوالہ کی اور وہ
اوس دِن سے فرمانوں کے اوپر
مہر کرنے لگی۔

برس پانچوان

۱۰۴۱ سنہ ہجری

۲۱-جولائی ۱۶۳۱ سنہ سے
۹ جولائی ۱۶۳۲ سنہ تک

فتح خاں نے نظام الملک کو
قتل اپنے باپ عنبر کے کچھ دنوں
بعد بادشاہ کے حکم سے بطور خفیہ
مارڈالا اور اوس کے بیٹے حسین شاہ
کو جو دس برس کا تھا دولت آباد
میں گدّی پر بٹھایا۔

۱۴ صفر کو خواجہ ابو الحسن کے
لشکر سے دو ہزار آدمی مع توشک خانہ
سیلاب دریا میں بہہ گئے۔

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

असोज बदी ११ को नसीरी खां कंधार से हाजिर हुवा बादशाह ने राजा भारत सिंघ बुंदेले को पांच सदी ज़ात का इज़ाफ़ा किया जिससे उसका मनसब ३॥ हज़ारी ज़ात और ३००० सवारों का होगया ॥

असोज सुदी ६ को बादशाह ने राव सूर सुरटिया के मरने की खबर सुनकर उसके बेटे करण को २ हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों का मनसब राव का खिताब और बीकानेर का राज दिया और उसके भाई शत्रूशाल को पांच सदी ज़ात और २०० सवार का मनसब इनायत किया ॥

मंगसिर बदी २ को जादोंराये के बेटे बहादुरजी ने हाज़िर होकर १० घोड़े और १ हाथी नज़र किया और जादोंराये का भाई जगदेव राये भी हाज़िर हुवा बादशाह ने बहादुरजी को खिलअत जड़ाऊ खपवा

۲۴ر صفر کو نصیری خان بعد فتح قلعہ قندہار کے حاضر ہوا راجہ بہارت بندیلا اوسکے ساتھ تھا بادشاہ نے اوسکے منصب مین پانصدی ذات کا اضافہ کیا جس سے اوسکا منصب ساڑہے تین ہزاری ذات اور تین ہزار سوار کا ہوگیا

۵ ربیع الاول کو بادشاہ نے راو سور بہورٹیہ کے مرنیکی خبر سنکر اوسکے بیٹے کرن کو دو ہزاری ذات اور پانسو سوار کا منصب راو کا خطاب اور بیکانیر کا راج دیا اوسکے بہائی ستروسال کو پانصدی ذات اور دوسو سواروں کا منصب عنایت فرمایا۔

۱۵ر ربیع الثانی کو جادون راے کے بیٹے بہادرجی نے حاضر ہوکر دس گہوڑے ایک ہاتہی نظر کیا اور جادوں راے کا بہائی جگدیو بہی حاضر ہوا بادشاہ نے بہادرجی کو خلعت جڑاؤ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांच हजारी ५ हज़ार सवार का म
सब सोने की ज़ीन को घोड़ा
और हाथी बख्शा और जादोंरा
यके पोते जादोंराय को जिस का
असली नाम तो पतंगराय था मग
र बादशाह ने दादे के नाम पर उस
का नाम रक्खा था खिलत और ज
ड़ाऊ खंजर देकर ५०-५० हजार रु
पै रोकड़ भी हरेक को दिये ॥

मंगसिर सुदी ६ को वीठू जी
अपने भाईबंदों समेत खीलूजी
और मालूजी के साथ हाजिर हुआ
बादशाह ने उसको भी खिलत ज
ड़ाऊ खंजर और हाथी घोड़ा इनाय
त किया ॥

पोस बदी ३ को बादशाह ने
लशकर बाला घाट के खबर देने
वालों की रपोट से राव रतन हाडा
का मरना मालूम करके उस के पा
टवी पोते शत्रूशाल्ल को ३ हजारी ज़ा
त २ हज़ार सवार का मनसब और

کھپوا پانچہزاری پانچہزار سوار کا
منصب سونے کی زین کا گہوڑا
اور ہاتھی عنایت کیا اور جادون آئے
کے پوتے پتنگ رائے کو کہ جس کا
نام بادشاہ نے جادوں رائے
رکہا تہا خلعت اور جڑاؤ خنجر دیکر
پچاس پچاس ہزار نقد بہی ہر ایک
کو دئے۔

۸ جمادی الاول کو بٹہوجی
معہ اپنے بہائیوں اور رشتہ دارون
کے کھیلوجی اور مالوجی کے ساتہہ۔
حاضر آیا بادشاہ نے اوسکو بہی
خلعت جڑاؤ خنجر ہاتہی اور گہوڑا
عنایت کیا۔

١٦-جمادی الاول کو بادشاہ
نے لشکر بالا گہاٹ کے مخبرون
کی عرضی سے راؤ رتن ہاڈا کے
مرنے کا حال معلوم کر کے۔
اوسکے جانشین پوتے سترو سال
کو تین ہزاری ذات دو ہزار سوار کا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

राव का ख़िताब बख़्शा बूंदी खटखड़ और दूसरे परगने जो राव रतन के वतन थे वे सब उसकी जागीर में बहाल करके उसके नाम हाज़िर होने के वास्ते फ़रमान भेजा और उसके चचा माधोसिंघ को ५ सदी ज़ात औ ५०० सवारों के इज़ाफ़े से २॥ हज़ारी ज़ात और १५०० सवारों के मनसब से सरफ़राज़ करके कोटे और पलायते का परगना जागीर में दिया॥

राव शत्रूसाल का बाप गोपीनाथ दुबला पतला था तो भी इतनी ताक़त रखता था कि दरख़्त की २ डालियों के बीच में बैठ कर पीठ और पाँव के ज़ोर से दोनों को चीर डालता था और ये डालियें भी इतनी मोटी होती थीं जितनी कि शामियाने की चोब होती है और वह ऐसे ऐसे ही बेजा ज़ोर करने से बीमार होकर बाप की जिंदगी में मर

منصب اور راؤ کا خطاب بوندی کہٹ کڑا اور دوسرے پرگنہ جو راؤ رتن کے وطن تھے وہ سب اوسکی جاگیر مین بحال کرکے اوس کے نام حاضر ہونے کا فرمان بہیجا اور اوسکے چچا مادہو سنگھ کو پانصدی ذات اور پانسو سوارون کے اضافہ سے ڈہائی ہزاری ذات اور ڈیڑہ ہزار سوار کا منصب دار کرکے کوٹہ اور پلایتہ کا جاگیردار بنایا ✦

راؤ سترو سال کا باپ گوپی ناتھ باوجود ضعیف الجثہ ہونے کے اسقدر زور رکھتا تہا کہ درخت کی دو شاخوں کے درمیان بیٹھ کر پشت اور پاؤن کے زور سے دونو کو چیر ڈالتا تہا اور یہ شاخیں اتنی موٹی ہوتی تہیں جتنی کہ شامیانہ کی متوسط چوب ہوتی ہے اور وہ ایسی ایسی ہی بیجا زور آزمایون

गया था ॥

ऊदाजी राम दखनी को ४० हज़ार रुपये बादशाह ने इनायत किये ॥

पोस बदी ४ शुक्रवार को बादशाह ने बेगम की लाश बुरहानपुर से बड़े जलूस के साथ आगरे को रवाना की शाहजादे शुजाअ की साथ मे जा रस्ते में रोज़ बहुत सा खाना और रुपैया अशरफ़ी ग़रीबों और फकीरों को बटता जाता था वहां वह माह बदी १ को पहुंची और शहर से दक्खन को १ बहुत ऊंची जमीन में जहां पहले राजा मान सिंघ रहता था दफ़न हुई उसके बदले बादशाह ने दूसरी उमदा जगह अपने खालिसे में से राजा के पोते जयसिंघ को दे दी ॥

बेगम की कबर पर निहायत उमदा और ऊंचा मकबरा ४० लाख रुपे की लागत से तैयार हुआ जिसको अब ताज बीबी का

بیمار ہوکر کچھ عرصہ بعد اپنے باپ کی زندگی میں مرگیا تھا۔

اوداجی رام دکھنی کو ۴۰ ہزار روپیہ عنایت ہوئے۔

روز جمعہ ۱۷ جمادی الاول کو بادشاہ نے بیگم کی لاش برہانپور سے شاہزادہ محمد شجاع کے ساتھ آگرہ کو بکمال تزک و احتشام روانہ کی راستہ میں ہر روز بہت سا کھانا اور روپیہ اشرفی غریبوں اور فقیروں کو تقسیم ہوتا جاتا تھا۔ آگرہ میں دکھن کی طرف ایک اونچا اور پُرفضا قطعہ زمین قبر کے واسطے تجویز کیا گیا تھا جہاں ۱۵ جمادی الثانی کو لاش پہنچی اور دفن کی گئی اس زمین میں پہلے راجہ مان سنگھ رہا کرتا تھا اور اسکا پوتہ جے سنگھ خوشی سے نذر کرنے کو تیار تھا لیکن بادشاہ نے مذہبی احتیاط سے اوس کے بدلہ دوسری عمدہ حویلی خالصہ کی راجہ کو دیدی۔

रोज़ा कहते हैं

बादशाह ने आदिल खां को सज़ा देने के वास्ते आसिफ़ खां को सिति फोसबदी ६ को बुरहान पुर से बीजा पुर की तरफ़ रवाने किया जिसको साथ राजा गज सिंघ राजा जय सिंघ राजा पहाड़ सिंघ ऊदाजी राम खेलू जी मालू जी भोंसला और बहादुर जी गये और अब दुल्ला खां बहादुर को भी तिलंगाने के लशकर समेत कि जिसमें राजा जुझार सिंघ बुंदेला और राजा भारत सिंघ बुंदेला पीछे आसिफ़ खां के शामिल होने का हुक्म भेजा ॥

आसिफ़ खां गुलबरगे होकर बीजा पुर पहुंचा राजा गज सिंघ राजा पहाड़ सिंघ बुंदेला और चंद्रमणि बुंदेले को हिरोल राजा भारत राजा अनोप सिंघ और राव दूदा को रहनो और राजा जय सिंघ को

بیگم کی قبر پر نہایت اونچا اور عمدہ گنبد اور مقبرہ سنگ مرمر کا چالیس لاکھ روپیہ کی لاگت سے تیار ہوا جسکو اب تاج بی بی کا روضہ کہتے ہیں جو خوبی اور سنگتراشی کی صنعت میں اپنا جواب نہیں رکھتا -

١٩ جمادی الاول کو بادشاہ نے محمد عادلشاہ کو سزا دینے کے واسطے برہانپور سے یمین الدولہ آصف خانکو بیجاپور کیطرف روانہ فرمایا اوسکے ساتھ راجہ گج سنگھ راجہ جے سنگھ راجہ پہاڑ سنگھ اوداجی رام کہیلوجی مالوجی بہونسلہ اور بہادر جی تعینات ہوئے اور عبداللہ خان بہادر فیروز جنگ کو بھی حکم پہونچا کہ مع لشکر تلنگانہ کہ جس میں راجہ جوجہار سنگھ بندیلہ اور راجہ بہارت بندیلہ بھی تھے کوچ کرکے آصف خاں کے شامل ہوجاوے ٭

آصف خان گلبرگہ ہوکر بیجاپور پہونچا اور اسنے بادشاہ کی تجویز کے موافق لشکر کی ترتیب اسطور سے کرکے بیجاپور کا محاصرہ کیا ہراول راجہ گج سنگھ راجہ پہاڑ سنگھ اور چندر من بندیلہ اللہ وردی خان سید عالم وغیرہ متعلق لشکر راجہ بہارت بندیلہ و

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आगरे में दाखिल हुए ॥

फ़तह खां ने दौलताबाद में बादशाह के नाम का सिक्का जारी किया ॥

सांवण वदी २ को नज़र मोहम्मद खां का वकील वक़ास हाजी बलख़ से आया ॥

बादशाह को दक्खन के इस सफ़र में ५ किले और ५० लाख का मुल्क निज़ामुल्मुल्क की अमलदारी में से हाथ आया ॥

बरस छटा

सावंण सुदी ३ संवत १६८९ से सावण सुदी २ संवत १६९० तक

भादों बदी ८ को रूपा राम गौड़ को चकले हिसार की फ़ौजदारी इज़ाफ़े मनसब के साथ इनायत हुई ॥

प्रथम आसोज सुदी ५ को बादशाह ने राय कांसी दास को सहरंद की फौजदारी से बदल कर सूबे

ملک مین پہونچی تو راجہ جوجہار سنگہ
بیٹا بکرماجیت جو جگراج کے خطاب سے
ملقب تہا حاضر ہوا ہزار مہرین نذر کین
اور دو ہاتہی پیشکش کیے
غرہ ذی الحجہ کو بادشاہ آگرہ مین
داخل ہوئے۔

فتح خاں نے دولت آباد مین
بادشاہ کے نام کا سکہ اور خطبہ جاری کیا۔

۳۰ ذی الحجہ کو نذر محمد خاں کا ایلچی
وقاص حاجی بلخ سے آکر حاضر درگاہ ہوا۔

بادشاہ کو اس سفر دکہن مین
پانچ قلعہ اور پچاس لاکہہ کا ملک نظام الملک کے ولایت سے ہاتھ آیا۔

برس چہٹا
سنہ ۱۰۴۲ ہجری
۱۸ جولائی سنہ ۱۶۳۲ع سے ۲۸ جون سنہ ۱۶۳۳ع تک

۲۲ محرم کو کرپا رام گوڑ فوجدار
چکلہ حصار کی خدمت عطا ہونے
اور بہ اضافہ منصب سے مشمول نوازش ہوا

۳ ربیع الاول کو راے کاشی داس
فوجداری سرکار سہرند سے تغیر ہو کر
صوبہ لاہور کا دیوان ہوا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाहोर का दीवान बनाया ॥

साहूजी भोंसला ने बादशाही बंदगी छोड़ कर नासिक त्रम्बक और संगमेर में कोकन की सरहद तक अमल कर लिया और फ़तह खां के बरखिलाफ़ निज़ाम के खानदान में से १ शख़्स को अपने पास रख कर खुद मुख्तारी का झंडा खड़ा किया ॥

राय भानी दास बूढ़ा होगया था इस लिये उसकी जगह मीर अबदुललतीफ़ दफ़तर तन में मुक़र्रर हुआ यह ओहदा दीवान कुल के नीचे था जिसको २ नायब दिये जाते थे १ तो यही दफ़तर तन वाला कि जिसके पास नोकरों की तलब और तनख़ाह का काम था और ख़ालिसे का काम करता था ॥

राय भानी दास का मनसब हजारी ज़ात और १५० सवार का था

सोयम आसौज बदी ११ को

१ दूसरा दफ़तर

ساہوجی بہونسلہ نے بادشاہی بندگی چہوڑ کر ولایت ناسک ترمبک اور سنگمیر مین کوکن کی سرحد تک قبضہ کر لیا اور فتح خان کے خلاف ایک شخص کو خاندان نظام شاہیہ سے اپنے قبضہ مین لاکر خودسری کا علم بلند کیا۔

راے بہانی داس بوڑہا ہوگیا تہا اس لئے بادشاہ نے اوس کی جگہہ میر عبداللطیف کو مقرر کیا یہ عہدہ دیوان کل کے نیچے تہا جسکو دو نائب دئے جاتے تھے ایک تو یہی دفتر تن والا کہ جس کے متعلق طلب اور تنخواہ کا کام تہا اور دوسرا دفتر خالصہ شریفہ کے کاموں کو انجام دیتا تہا۔

راے بہانی داس کا منصب ہزاری ذات اور ڈیڑہ سو سوار کا تہا

۲۴ ربیع الاول کو قاسم خان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

नक्कारा निशान उसको इनायत किया ॥

चेत बदी ११ मंगल की रात और मुसलमानी हिसाब से बुध की रात को जसवंत सिंघ राठोड़ का बेटा किशन सिंघ नूरुद्दीन कुली को जबकि वह दौलत खाने खास से निकल कर अपने डेरे पर जाता था मार कर चला गया क्योंकि इस के बाप को नूरुद्दीन के आदमियों ने जहांगीर बादशाह के ज़माने में मार डाला था ॥

चेत बदी १२ को नौरोज़ के दिन बगलाने के राजा भूरजी ने अपने बेटे और भाइयों के साथ हाज़िर होकर ३ हाथी ८ घोड़े और कुछ जड़ाऊ सामान नज़र किया ॥

बैसाख बदी ३ को मेख संक्रांत के उत्सव में महाराजा भीम के बेटे राय सिंघ का इज़ाफ़ा हज़ारी ज़ात और २०० सवारों का

خلعت گھوڑا مع ساز چاندی کی زین اور نقارہ نشان بھی اسکو عنایت فرمایا

شب چار شنبہ ۲۵ شعبان کو جسونت سنگھ کے بیٹے کشن سنگھ راٹھوڑ نے نورالدین قلی کو جبکہ وہ دولت خانہ خاص سے نکلکر اپنے ڈیرہ کو جاتا تھا اس کینہ سے کہ جہانگیر بادشاہ کے عہد مین اوس کے باپ کو نورالدین کے آدمیوں نے مار ڈالا تھا کئی کاری زخم مار کر مار ڈالا اور خود نکل کر چلا گیا۔

۲۵ شعبان کو روز نوروز تھا۔ بھرجی زمیندار بگلانہ مع اپنے بیٹے اور بھائیوں کے بادشاہ کے حضور مین حاضر ہوا تین ہاتھی ۸ گھوڑے اور کچھ جڑاؤ زیور نذر کئے۔

۱۶ رمضان کو کہ شرف آفتاب کا دن تھا مہاراجہ بھیم کا بیٹا رائے سنگھ ہزاری ذات اور دو سو سوار کے اضافہ سے تین ہزاری

हुआ जिससे उसका मनसब ३ हज़ारी ज़ात और १२०० सवारों का होगया ॥

राजा किशनसिंघ राठोड़ के बेटे हरी सिंघ को हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का मनसब इनायत हुआ ॥

बैसाख बदी ११ बृहसपतवार को बादशाह बुरहान पुर से आगरे की तरफ़ रवाने हुए आज़म खां को बदल कर महाबत खां को सूबेदार दकन और खानदेस का कर गये ॥

बैसाख सुदी ६ को काली भीत में जो दरमियान बुरहान पुर और परेंदे के है डेरे हुए वहां भीमसेन ज़मींदार उस तरफ़ का हाज़िर हुआ और १००० मोहरें हाथी पेश किये खिलत इनायत हुआ

जब बुंदेलों के मुल्क में पहुंचे तो राजा जुझार सिंघ के बेटे जुगराज बिक्रमाजीत ने हाज़िर हो कर १००० मोहरें और हाथी नज़र किये ॥

आसाढ़ सुदी २ को बादशाह

ذات اور بارہ سو سواروں کا منصب دار ہوگیا ✣

راجہ کشن سنگھ راٹھوڑ کا بیٹا ہری سنگھ ہزاری ذات اور چھہ سو سواروں کے منصب سے سرفراز ہوا ✣

روز پنجشنبہ ۲۴ رمضان کو بادشاہ برہانپور سے آگرہ کیطرف روانہ ہوئے اور اعظم خاں کو تغیر کرکے مہابت خانکو دکھن اور خاندیس کا صوبہ دار کر گئے۔

۵ شوال کو کالی بہیت کی حوالی مین جو درمیان برہانپور اور پریندہ کے ہی بادشاہ کے ڈیرے ہوئے وہان بہیم سین زمیندار اوس نواحی نے حاضر ہو کر آستان بوسی کی ہزار مہرین نذر اور دو ہاتھی پیشکش کئے بادشاہ نے خلعت عنایت کیا۔

جب بادشاہ کی سواری بندیلون

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाई अनी और राजा जुझारसिंघ बुंदेले को चंदोल में रख कर बीजा पुर को घेरा और कई दिन तक लड़ाई की मगर बीजा पुर वालों ने अपना इलाका वीरान कर दिया था जिस से सेर भर नाज(१) में आता था इस लिये बरसात शुरू होने पर आसिफ़ खां घेरा छोड़ कर किले शोलापुर के नीचे होता हुआ बादशाही इलाके में लौट आया और बीजापुर वालों के १५००० सवार शोलापुर तक उसके पीछे आये॥

माह सुदी ५ को राय कांसी नाथ कसबे शहरंद की खिदमत दीवानी और अमीनी के ऊपर इज़ाफ़े मनसब के साथ मुकर्रर हुआ॥

माह सुदी १४ को राव सूर के बेटे राव करण ने अपने वतन बीकानेर से हाज़िर आकर १ हाथी नज़र किया॥

نصیری خان خداوند خان وغیرہ سے منصبدارون کے خان جہان اور بارہ و امروہہ کے سید التمش - برانغار - اعظم خان راجہ انوپ سنگھ ور راؤ دودا - جرانغار ابوالحسن خان بانی ظفر خان طرح دست راست - عبد اللہ خان راجہ روز افزون وغیرہ - طرح دست چپ راجہ جے سنگھ چنداول - راجہ جوجہار سنگھ بندیلہ بیجاپور والون نے اپنا علاقہ ایسا ویران کردیا تھا کہ سیر بھر غلہ بمشکل ایک روپیہ مین بادشاہی لشکر کو ملتا تھا اسلیے برسات شروع ہونے پر آصف خان محاصرہ چھوڑ کر قلعہ شولاپور کے نیچے ہوتا ہوا بادشاہی علاقہ مین لوٹ آیا بیجاپور والون کے پندرہ ہزار سوار شولاپور تک اوسکے پیچھے آئے -

۳ رجب کو رائے کاشی ناتھ دیوانی و امینی کی خدمت قصبہ سرہند و اضافہ منصب سے سرفراز ہوا +

۱۲ رجب کو بیکانیر کے راؤ سور کا بیٹا کرن اپنے وطن سے درگاہ مین حاضر ہو کر آداب

१ (महावट)

لہ مہاوٹ ۱۲

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फागण बदी १० को बाद शाह ने वज़ीर खां को फ़तह खां हबशी को सज़ा देने और दौल ताबाद फ़तेह करने के वास्ते भेजा राजा बिठ्ठल दास माधो सिंघ राव करण और पृथीराज को घोड़े और सिरोपाव देकर उसके साथ तईनात किया मगर फ़तह खां ने नज़राना भेजदिया और यह फ़ौज पीछी बुला ली गई ॥

फागुण सुदी १० को राव शत्रु साल हाडा ने बादशाह की खिदमत में हाज़िर होकर ४० हाथी जो उसके दादा के रहे हुए थे नज़र किये बादशाह ने १८ जो ढाई लाख की कीमत के थे और जिन में से ८ ख़ासा हाथियों में दाखिल होने के लायक थे पसंद करके बाकी उसको बख्श दिये और खिलत चांदी की ज़ीन का घोड़ा

بجالایا اور ایک ہاتھی پیشکش کیا ۲۳ رجب کو بادشاہ نے دولت آباد کی فتح اور عنبر کے بیٹے فتح خان کو سزا دینے کے واسطے وزیر خان کو روانہ کیا - راجہ بیٹھلداس مادہو سنگھ - راو کرن اور پرتھی راج کو خلعت اور گھوڑے دیکر اوس کے ساتھ بہیجا لیکن فتح خان نے پیشکش بہیجدی اور بادشاہ کے حکم سے یہ فوج راستہ سے واپس آگئی

۱۰ شعبان کو راو رتن ہاڈا کا پوتہ راو ستر و سال اپنے وطن سے حاضر آیا چالیس ۴۰ ہاتھی جو اوس کے باپ اور دادے سے باقی رہے تھے بطور پیشکش کے حضور مین حاضر لایا اُن مین سے ۱۸ ہاتھی جن کی قیمت ڈہائی لاکھ روپیہ کی ہوئی قبول کئے گئے جن میں آٹھ تو قابل داخل ہونے خاصہ فیلون کے تھے اور باقی اوسی کو بخش دیئے گئے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कासमखां सूबेदार बंगाले के बेटे इनायतुल्लाने ६ महीने घेरा रख कर फ़रंगियों को बंदर हुगली से निकाल दिया बंदर मज़कूर जो १ अरसे से उनके कबज़े में था और उनहीं का बसाया हुआ था फ़तह कर लिया १० हज़ार फ़रंगी मारे गये और ४ हज़ार क़ैद हुए॥

दोयम आसोज सुदी ७ को शाह ईरान के वकील मोहम्मद अली को सीख हुई जिस दिन से आया था अब तक उस को ३ लाख ६ हज़ार रुपया नक़द और १ लाख का सामान इनायत हुआ था शाह को जो ख़लीता लिखा गया उस में दख्खन की फ़तह का हाल था॥

निज़ाम के किलेदार महमूद खां ने फ़तह खां की अदावत से कालने का किला और ८ परगने ६ लाख रुपय की जमा के बादशाही आदमियों को सौंप दिये

صوبہ دار بنگالہ کے بیٹے عنایت اللہ نے بعد محاصرہ ششماہہ کے فرنگیوں کو بندر ہگلی سے نکال دیا بندر مذکور جو ایک عرصہ سے اون کے قبضہ میں تہا اور اُن ہی کا آباد کیا ہوا تہا فتح کرلیا دس ہزار فرنگی اس لڑائی میں مارے گئے اور چار ہزار قید ہوئے -

۷ ربیع الثانی کو شاہ ایران کے سفیر محمد علی کو رخصت ہوئی روز ورود سے ابتک ۳ لاکھ چھہ ہزار روپیہ نقد اور ایک لاکھ روپیہ کی جنس اوسکو عنایت ہوئی تہی - شاہ کو جو خریطہ لکھا گیا اوسمیں دکہن کے فتوحات کا ذکر تہا -

نظام شاہ کے قلعدار - محمود خاں نے بہ سبب مخالفت فتح خاں کے قلعہ کالنہ معہ آٹھ پرگنوں کے کہ جنکی جمع ۶ لاکھ روپیہ کی تہی مردمان بادشاہی کے حوالہ کردیا *

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भागीरथ भील सूबे मालवे
में अपने किले का नारखेड़ी की म
ज़बूती से सूबेदारों का हुक्म न
हीं उठाता उसके पास आदमी भी
बहुत थे जिससे लूटमार किया
करता था अब नसीरी खां की सू
बेदारी में भी उसने फसाद किया
तो नसीरी ख़ां सारंगपुर से उसके
ऊपर चढ़ कर गया उस की धाक
ऐसे लुटेरों के ऊपर बहुत कुछ
बैठी हुई थी जिस से भागीरथ डर
कर गन्नोर के ज़मींदार संग्राम के
साथ ख़ान के पास हाजिर हो गया
और अपना किला छोड़ दिया जि
स से बहुत मुद्दत से उस को और उ
सके बाप दादों को पनाह मिल
ती रही थी ख़ान ने योसबदी दसो
म वार को किले में दाख़िल होक
र मूरतें तोड़ डालीं और मंदिर ख़
राब कर दिये ॥

बादशाह ने पहिले यह सुन

بہاگیرتھ بھیل صوبہ
مالوہ میں اپنے قلعہ کا ناکہیڑی کی
مضبوطی اور کثرت جمعیت کے
غرور سے صوبہ دارون کا حکم نہیں
مانتا تہا اور فساد کیا کرتا تہا اب
نصیری خان کی صوبہ داری میں
بہی اوسنے فساد کیا نصیری خان
کو کہاں تاب تہی فوراً سارنگپور
سے چڑھ کر اوسکے اوپر گیا جو کہ اوسکی
دہاک ملک میں بیٹھی ہوئی تھی۔
اس لیئے بہاگیرتھ ڈر کر گنور کے
زمیندار سنگرام کے ساتھ نصیرخان
کے پاس حاضر ہو گیا اور قلعہ
چھوڑ دیا جو عرصہ دراز سے
جائے پناہ اوسکا اور اُس کے
بزرگون کا رہا تھا خان نے روز
دوشنبہ ۱۲ ماہ جمادی الثانی
کو قلعہ میں داخل ہو کر مورتین
توڑیں اور مندر خراب
کر دیئے۔

بادشاہ نے پہلے یہ سنکر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर कि जहांगीर बादशाह के ज़माने में बनारस में बहुत से मंदर बनते। बनते रहगये थे और अब आसूदा हिन्दू उन को तमाम करना चाहते हैं हुक्म दिया था कि क्या बनारस में और क्या बादशाही दूसरे परगनों में जहां कहीं नये मंदर बने हों गिरा दिये जावें अब सूबे इलाहाबाद के विकाये निगार (खबरनवीस) की अरज़ी से मालूम हुआ के ७६ मंदिर बनारस में गिराये गये॥

शाहज़ादे दारा शिकोह की शादी

मुमताज़ बेगम की ज़िंदगी में शाहज़ादे दारा शिकोह की शादी सुलतान परवेज़ की बेटी से जो अकबर बादशाह के शाहज़ादे मुराद की नवासी थी और शाहज़ादे शुजाअ की शादी ईरान के शाहज़ादे मिरज़ा रुस्तम सफ़वी की लड़की से ठहर चुकी थी और बेगम ने इन

کہ جہانگیر بادشاہ کے عہد مین بنارس میں بہت سے مندر بنتے بنتے ناتمام رہ گئے تھے اور اب آسودہ ہندو انکو تیار کرانا چاہتے ہین حکم دیا تھا کہ کیا بنارس میں اور کیا دوسرے ممالک محروسہ مین جہان کہیں کہ نئے مندر بنے ہوں گرا دئے جاویں چنانچہ اب صوبہ الہ آباد کے وقایع نگار کی عرضی سے معروض ہوا کہ ۷۶ مندر خطۂ بنارس میں گرا دئے گئے ہیں -

بادشاہزادے داراشکوہ کی شادی

ممتاز الزمانی بیگم کی زندگی مین شاہزادہ داراشکوہ کی شادی سلطان پرویز کی بیٹی سے جو شاہزادہ مراد خلف اکبر بادشاہ کی نواسی تھی اور شاہزادہ شجاع کی شادی مرزا رستم صفوی شاہزادہ ایران کی لڑکی سے قرار پا چکی تھی اور بیگم نے ان شادیون

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

शादियों का सामान अहमदाबाद वग़ैरा में तैय्यार कराना शुरू कर दिया था लेकिन उसके मरजाने से ये काम ढीला पड़गया था अब कि उस बात को २० महीने गुज़र चुके थे इसलिये बादशाह ने पहिले दाराशिकोह की शादी करने को हुक्म देकर कातक सुदी ६ ऐतवार को ११ घड़ी दिन चढ़े पीछे १ लाख रुपया रोकड़ औ ५ लाख में आधे का जवाहर और आधे का जेवर और कपड़ा "साचक" (बरी) के दस्तूर में अफ़ज़ल खां दीवान कुल और सादिक खां मीरबख़्शी वग़ैरा अमीरों और मुमताज़ बेगम की मां बहन और चची वग़ैरा बेगमों के साथ बड़ी धूम धाम से शाहज़ादे परवेज़ की बीबी जहां बानू बेगम के मकान पर जो शाहज़ादे मुराद की बेटी और अकबर बादशाह की पोती थी बड़ी धूम धाम से भेजी उसने ज़नाने और

کی زیب و زینت کا سامان احمد آباد وغیرہ میں تیار کرانا شروع کر دیا تھا لیکن اوس کے دفعۃً انتقال کر جانے سے یہ کام ملتوی رہ گئے تھے اب کہ اس واقعہ کو بیس مہینے گذر چکے تھے اس لئے بادشاہ نے پہلے شاہزادہ داراشکوہ کی شادی کا سرانجام واجب سمجھ کر روز یکشنبہ جمادی الاول سنہ ۱۰۴۲ کو گیارہ گھڑی دن چڑھنے کے بعد ایک لاکھ روپیہ نقد اور ایک لاکھ میں آدھی کا جواہر اور آدھی کا زیور و کپڑا برسم ساچق علامی افضل خان دیوان کل و صادق خان میر بخشی وغیرہ امرا اور ممتاز زمانی بیگم کی ماں بہن اور چچی وغیرہ بیگموں کی ساتھ بڑی دہوم دہام سے جہان بانو بیگم زوجہ شاہزادہ پرویز کے مکان پر کہ جو شاہزادے مراد کی بیٹی تھی بھیجا اوسنے زنانہ اور مردانہ محفل ترتیب دے کر

मरदाने में ख़ुशी की मेहफ़िलें करके बाहर और भीतर के आद मियों को जो बरी के साथ गये थे बिना सिये कपडों के "तोरे" जैसे जिस के लायक़ थे दिये ॥

माह बदी १० जुमे को बेगम साहब यानी शाहज़ादी जहां आरा बेगम ने जो अपनी मां की जगह इस शादी की ज़िम्मेवार हुई थी उस बादशाही महल में जो झरोके दरशन के आगे था परदा करा के वह तमाम सामान और असबाब कि जो उसकी मां और ख़ुद उस ने शाहज़ादे के वास्ते तैयार कराया था सुबह से तीसरे पहर तक बाद शाह को दिखाने के वास्ते बहुत अच्छी तरह से सजाया जो कुल १६ लाख रुपै का था ७ लाख के तो जवाहरात और जड़ाऊ रक़में थीं और ५ लाख की सोने चांदी की चीज़ें और ४ लाख के ही हिन्दुस्तान ई

ہزار اور بہتر کے آدمیون کو جو بارتی کے ساتھ گئے تھے بغیر سلے ہوئے کپڑون کے تورے جیسے جس کے لائق تھے دیئے ٭

روز جمعہ ۲۴ رجب کو شاہزادی جہان آرا بیگم عرف بیگم صاحبہ نے جو اس شادی کی ذمہ وار ہوئی تھی ایوان شاہی پیش جھروکہ عام وخاص پردہ کرا کر وہ تمام ساز وسامان جو اس شادی کے واسطے اوس کی مان اور خود اوس نے تیار کیا تھا صبح سے تیسرے پہر تک بادشاہ کے ملاحظہ کے لئے نہایت عمدہ ترتیب اور قرینے سے سجایا یہہ کل سولہ لاکھ روپیہ کی مالیت کا تہا - اس میں سے سات لاکھ روپیہ کا تو جواہرات اور جڑاؤ اشیاء تھے اور چار لاکھ کے ہی ہندوستان

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

<table>
<tr>
<td>
रान रूम और चीन और फरंगिस्
तान के कीमती कपड़े और रंग २ के
मख़मली बिछौने और ज़री के प
र्दे वग़ैरा थे और कई हाथी और
घोड़े मुल्क २ के जिन की चांदी सो
ने के जड़ाऊ और ज़री की झूलें थीं
और १ लाख रुपया नक़द था=
जब बादशाह देखने को आये
तो बेगम साहिब ने डेढ लाख की ज
वाहरात पेशकश और जड़ाऊ चीज़ों
की नज़र की जो बादशाह ने कबूल
करके बेगम साहब को ऐसे उमदा
और कीमती सामानों के तैयार कर
ने की शाबाशी दी और बादशाह ज़ा
दियों और बेगमों और अमीरों की
औरतों व लड़कियों को १०० "तोरे"
जो बहुत तो ९ पारचे और थोड़े ७
पारचे के थे जिन में से अकसर को अ
पर कुछ २ जड़ाऊ चीज़ें रखी हुई थीं इ
नायत किये फिर शाम के वक्त बेग
मों को तो महल से जाने की रुखसत
</td>
<td>
ایران روم چین اور فرنگ کے
قیمتی کپڑے اور رنگ برنگ کے
مخملی فرش فروش اور سائبان -
زر دوزی وغیرہ تھے اور کئی ہاتھی
اور کئی گھوڑے ملک ملک کے جنکے
چاندی سونے کے جڑاؤ زین اور دوسرے
سازوسامان تھے اور ایک لاکھ روپیہ نقد تھا -
جب بادشاہ اوس کے دیکھنے کو
آئے تو بیگم صاحبہ نے ڈیڑھ لاکھ
روپیہ کی پیشکش جواہر اور مرصع آلات
سے گذرانی بادشاہ نے قبول کرکے
بیگم صاحبہ کو ایسے نفیس و نادر سامانوں
کے تیار کرانے پر بہت کچھ تحسین و آفرین
کی اور بادشاہ زادیوں بیگموں اور
امیروں کی عورتوں ولڑکیوں کے
واسطے سو تورے کہ اکثر نو پارچہ کے اور
کم سات پارچہ کے تھے اور بہتوں کے
اوپر کچھ نہ کچھ چیز مرصع آلات سے رکھی
ہوئی تھی عنایت فرمائی پھر شام کے
وقت بیگموں کو محل مقدس میں روانہ
کرکے امیروں کو بار عام دیا - اور
</td>
</tr>
</table>

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दी और अमीरों को हाज़री का आम
हुक्म देकर ख़ास २ अमीरों को भारी
२ ख़िलअत दिये जिनमें से यमीनुद्दौ
ला आसिफ ख़ां का ख़िलअत ९ पा
रचे, ४ कुब्ब, सुनहरी, जड़ाऊ, तलवा
र और ख़ंजर का था बाक़ी कुछ चार
कुब्ब सुनहरी, के कुछ फ़र्जी के और
कुछ जड़ाऊ ख़ंजर के औ बाज़े सादा
ख़िलअत ही थे इसी तरह गवैयों वग़ै
रा को सिर पांव और ईनाम मिले यह
सब ढाई लाख रुपै की क़ीमत के थे॥

दूसरे दिन यह तमाम क़ीमती
सामान शाहज़ादे दाराशिकोह के म
कान पर बड़े जलूस से बेगमों के सा
थ भेजा गया इसके पीछे जहेज़ का
वह सामान भी कि जो जहांबानू बे
गम ने अपनी बेटी के वास्ते तैयार
कराया था उसकी अर्ज़ से दौलत
खाने ख़ास और आम में चुना गया
ये ह उस सामान के मुक़ाबिले में तो
कि जो बेगम साहब ने तैयार कराया

ص خاص امیروں کو خلاع
خرہ عطا فرمائے ازانجملہ یمین الدولہ
صف خاں کا خلعت نو پارچہ کا
مع چارقب طلادوزی اور شمشیر و
نجر مرصع کے تہا باقی کچھ معہ چار
ب طلادوزی و کچھ معہ فرجی کے
اور کچھ معہ خنجر مرصع کے تھے اور
بعضوں کو صرف خلعت ہی ملے
تھے اور ارباب نشاط کو سروپا
والنعام اور یہ سب ڈھائی لاکھ روپیہ
قیمت کے تھے -

دوسرے دن یہ تمام قیمتی
سامان شاہزادہ داراشکوہ کے
مکان پر بڑے جلوس سے بعض
بیگمون کے ساتھ بھیجا گیا اس کے
بعد وہ جہیز کا سامان بھی کہ جو
جہان بانو بیگم نے اپنی بیٹی کے
واسطے تیار کرایا تہا اوسکی عرض
سے دولتخانہ خاص و عام مین چنا
گیا وہ اگرچہ اوس سامان کے
مقابلہ میں جو بیگم صاحبہ نے تیار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

कुछ नथा तोभी बादशाह उसको
देख कर बेगम पर बड़त मेहरबान
ड़ए क्योंकि उसने जोकुछ खुदबर
सों से जोड़ाथा और जो कुछकि शाह
ज़ादे परवेज़ के घर मेंथा वह सबउ
समें लगा दिया था=

माह सुदी २ को दोलत खांने
ख़ासमें मेहदी की मजलिस जुड़ी ज
हां बड़त सी बत्तियां जड़ाऊ लगनों
में रोशन की गई थी बादशाह ने पधा
रकर बख़शियों को ड़क्म दिया कि स
ब अमीरों और वज़ीरों को दरजेबदर
जे बैठावें और गवैयों को भी गाना
गाने का ड़क्म दिया जो बेगम के म
रे पीछे अरसे करीब २ साल से बंद
था फिर औरतों ने कायदे के माफ़ि
क़ सब लोगों की उंगलियों पर मेंह
दी लगाकर ऊपर ज़री के रुमाल
लपेटे और ज़र कशी के पटके बांटे
ख़िदमत गारोंने पान फूल अतर
नुक़ल और मेवे तरह २ के सजा ये

کرایاتہا کچھ نہ تہا تو بہی بادشاہ
اوسکو دیکھ کر بیگم پر بہت مہربان
ہوئے کیونکہ اوس نے جو کچھ
خود برسون سے جمع کیا تہا اور جو
کچھ شاہزادہ پرویز کے گہر میں تہا
وہ سب اسمیں لگا دیا تہا

غرہ شعبان کو دولت خانہ
خاص کے شاہ محل مین مجلس
حنابندان آراستہ ہوئی جہان
بہت سی شمعین جڑاؤ لگنون مین
روشن کی گئین تہین بادشاہ نے
تشریف فرما ہوکر بخشیوں کو حکم
دیاکہ سب امیرون اور وزیرونکو درجہ بدرجہ
بٹہادین اور ارباب نشاط کو گانا گانے
کا حکم ہوا جو عرصہ قریب دو سال
سے بوجہ ماتم مہد علیا ممتاز الزمانی بیگم
کے بند تہا اور کدبانوان قاعدہ
دان ،، نے رسم کے موافق اہل
مجلس کی انگلیوں پر مہدی لگاکر
اوپر زرین رومال لپیٹے اور زرتار کمربند
تقسیم کئے خدمتگاران بارگاہ جلال

फ़िरंग २ की आतिश बाज़ी जो दुल्हन की तरफ़ से जमना के किनारे पर गडा थी छोड़ी गई ॥

दूसरे दिन बादशाह के हुक्म से शाह ज़ादा शुजाअ, औरंग ज़ेब, और मुराद बख़्श, यमीनुद्दौला आसिफ़ ख़ां, और बड़े २ अमीरों के साथ शाह ज़ादे दाराशिकोह के मकान पर गये वहां मजलिस जुड़ी और सब अमीरों ने अपने २ रुतबे के लायक़ शाह ज़ादे को शादी की पेशकशें दीं फ़िर शाह ज़ादे को घोड़े पर सवार करके दौलत ख़ाने ख़ास में बादशाह के पास लाये और सलाम कराया बादशाह ने ख़ासा ख़िलअत जड़ाऊ जमधर जड़ाऊ तलवार, कि जिस का परदला भी जड़ाऊ था और मोतियों की माला जिसमें लाल भी पिरोये थे और २ घोड़े सोने चांदी की ज़ीन के ख़ासे तवेले से और १ ख़ासा हाथी हथनी समेत कि कुलकी की

ن پھول طرح طرح کے میوے
ں اور عطر خوانوں میں سجا کر لائے
قسم کی آتش بازی جو دولہن
نے گاڑی گئی تھی جمنا کے کنارے چھوڑی
دوسرے دن بادشاہ کے حکم سے
ہزادہ شجاع اورنگ زیب اور مراد بخش
یمین الدولہ وغیرہ بڑے بڑے
روں کے شاہزادہ داراشکوہ کے
ن پر جاکر مجلس آراستہ کی جس
ن سب امیروں نے اپنے اپنے
کے موافق بطور مبارکباد شادی
شاہزادہ کو پیشکشیں دیں پھر شاہزادے
گھوڑے پر سوار کرکے دولتخانہ خاص
میں بادشاہ کا سلام کرانے کو لائے
شاہ نے خلعت خاصہ جمدھر مرصع
شمشیر مرصع کہ جسکا پردلا بھی مرصع
اور موتیوں کی مالا جسمیں قیمتی لعل
پروئے ہوئے تھے اور دو گھوڑے
سونے اور چاندی کی زین کے طویلہ
سے اور ایک خاصہ ہاتھی
چاندی کے ہودے اور ہتھنی

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीमत ४ लाख रुपै की थी शाहज़ा
दे को इनायत फ़रमा कर हिन्दु
स्तानी रस्म के माफ़िक वह जड़ाऊ
सेहरा भी उसके सिर पर बांधा कि
जब बादशाह की शादी हुई थी तो
जहांगीर बादशाह ने सिर पर बां
धा था जिस में बढ़िया कीमत के प
न्ने और लाल लटके हुये थे बाद
शाह ज़ादा आदाब बजा लाया इ
सी मजलिस में यमीनुद्दौला और
दूसरे बड़े २ अमीरों को भी दरजे
वार कीमती ख़िलअत और गवै
यों को इनाम और सिरो पाव इ
नायत हुए रात को दौलत ख़ाने
ख़ास के पाईं बाग़ और झरोके द
र्शन के नीचे मैदान में रोशनी हु
ई और रोशनी की बहुत सी नावें
जमना में भी छोड़ी गईं और आति
शबाज़ी भी जो बादशाह की तरफ़
से जमना के किनारे गाड़ी गई थी
छोड़ी गई इस तरह जब २ पहर

کے کہ کل کی قیمت چار لاکھ روپیہ
تھی عنایت فرما کر وہ جڑاؤ سہرا
بھی کہ جو جہانگیر بادشاہ نے بروقت
شادی بادشاہ کے سر پر باندھا تھا
اپنے ہاتھ سے شاہزادہ کے سر
پر بموجب رسم ہندوستان کے
باندھا شاہزادہ آداب بجالایا
اس مجلس میں یمین الدولہ اور دوسرے
روشناس امیروں کو علے قدر مراتب
خلعت فاخرہ اور ارباب نشاط
کو انعام اور سروپا مرحمت ہوئے
رات کو پائین باغ دولت خانہ
خاص اور میدان زیر جھروکہ
درشن میں روشنی ہوئی
جمنا میں بھی بہت سی کشتیاں
روشنی کی چھوڑی گئیں پھر
آتش بازی جو بادشاہ کی طرف
سے دریا کے کنارے پر
گاڑی گئی تھی سر ہوئی اسی
طرح دو پہر اور چھ گھڑی رات
گذرنے پر جب شادی کی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और ६ घड़ी रात के गुज़रने पर ब्याह का महूरत्त आया जो यूनानी और हिन्दी ज्योतिष्यों ने निकाला था तो बादशाह ने क़ाज़ी मुहम्मद असलम को शाह बुर्ज में बुलाया उसने बादशाह के हज़ूर में निकाह पढ़ाया और ५ लाख रुपये का मिहर बांधा जो मुमताज़ बेगम का भी बांधा गया था

माह सुदी ६ को बादशाह ज़ादे दारा शिकोह ने अपने मकान से बादशाही दौलत खाने तक ज़री के और सादे मखमल और दरयाई के थान बिछाकर बादशाह को बुलाया और उन के ऊपर सोना चांदी और जवाहरात निछावर करके १ लाख रुपये की पेश कश नज़र से गुज़रानी जिस में सरफ़राज़ नाम १ इराकी घोड़ा (जड़ाऊ ज़ीन) से काबिल सवारी बादशाह के था और बड़े २

ساعت آئی جو یونانی اور ہندوستانی منجموں نے اختیار کی تھی تو بادشاہ نے قاضی محمد اسلم کو شاہ برج میں بلایا اوس نے حضور میں نکاح کا خطبہ پڑھا پانچ لاکھ روپیہ کا مہر جو نواب ممتاز الزمانی بیگم کا باندھا گیا تھا وہی اب بھی مقرر رہا۔

۶ ماہ شعبان کو شاہزادہ داراشکوہ نے اپنے مکان سے بادشاہی دولت خانہ تک زرین اور سادہ مخمل اور دارائی کے پانداز بچھا کر بادشاہ کو بلایا سونے چاندی اور جواہرات نثار کر کے ایک لاکھ روپیہ کی پیش کش نظر سے گذرانی جس میں سرفراز نام ایک عراقی گھوڑا معہ زین مرصع کے قابل سواری بادشاہ کے تھا پھر بڑے بڑے امیروں

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अमीरों और हज़ूरी नोकरों के
खिलअत बादशाह कमुलाहि
ज़ेमें पेश किये जो बादशाहके
हुक्म से हरेक को दिये गये य
मीनुद्दोला आसिफ़ खां को खि
लअत २ पारचे का मय जड़ाऊ
तलवार के था और बाकी में से
कुछ तो मय ४ सोने के "कुल्बे" के
थे कुछ मय "फ़रज़ी" के थे और बा
की सादे थे अमीर पहले बादशा
हके हज़ूर में आदाब बजा लाये
और फिर शाहज़ादे की खिदम
त में ॥

इस ब्याह में ३२ लाख रुप
ये खर्च हुये ६ लाख बादशाही
सरकार से १६ लाख बेगमसाह
बकी सरकार से और १० लाख
दुलहन की मां की तरफ़ से।

शाहज़ादे मुहम्मद शुजाअकी शादी

फिर बादशाह ने ज्योतिषियों

اور روشناس ملازموں کے
واسطے خلعت بادشاہ کے ملاحظہ
میں پیش کیے جو بادشاہ کے حکم
سے ہر ایک کو دیے گئے یمین الدولہ
کے واسطے دو تقوز پارچہ معہ شمشیر
مرصع کے تھے اور کچھ عمدہ ہای
دولت کے لئے خلعت فاخرہ
معہ چار قب طلا دوزی کے اور
بعضے امرا کے خلعت معہ فرجی
کے اور باقی کے سادے تھے
امرا نے پہلے بادشاہ کے حضور
میں آداب بجا لائے اور
پھر شاہزادہ کی خدمت میں -

اس شادی میں ۳۲
لاکھ روپیہ صرف ہوئے انمیں سے
۶ لاکھ سرکار خالصہ سے ۱۶ لاکھ
بیگم صاحبہ کی سرکار سے اور دس
لاکھ دولہن کی طرف سے -

شادی شاہزادہ محمد شجاع

پھر بادشاہ نے نجومیوں کے افسر
ملر ست خان کو جو خود بھی علم نجوم

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के अफ़सर मुक्रमत खां को जोरवु
द भी जोतिश बिद्या जानता था शा
हज़ादे शुजाअ की शादी का महूर
त निकालने के वास्ते हुक्म दिया
उसने यूनानी और हिन्दुस्तानी
ज्योतिषियों की सम्मति से फागुण
बदी ८ की रात का मुहूर्त पक्का कर
अर्ज़ की बादशाह ने बेगम साहेब
को हुक्म दिया उसने बहुत जल
दी सब सामान तैयार कर लिया
माह सुदी १० को १६०००० रुपये रो
कड़ और १ लाख की जिनस सादि
क खां मीर बख़्शी वग़ैरा अमीरों
और कुछ बेगमों के हाथ मिरज़ा रु
स्तम के मकान पर भेजी गई॥

फागुण बदी ७ की रात को मिर
ज़ा के यहां से म्हेंदी आई और शाह
बुरज में उस की रसम अदा हुई मि
र्ज़ा की तरफ़ से तरह २ की आति
श बाज़ी छोड़ी गई इस मजलिस में
आसिफ़ ख़ां वज़ीर तमाम बड़े २ अमीरों

سے بہرہ رکھتا تھا شاہزادہ شجاع
کی ساعت شادی مقرر کرنے کے
واسطے حکم دیا اوس نے ہندی
اور یونانی نجموں کے اتفاق سے
شب جمعہ ۲۳ - شعبان مقرر
کرکے حضور میں عرض کی
بادشاہ نے بیگم صاحبہ کو حکم دیا
اوسنے بہت جلدی سب سامان
تیار کرلیا ۹ شعبان کو ایک
لاکھ ساٹھ ہزار نقد اور ایک
لاکھ روپیہ کی جنس برسم ساچق
صادق خان میر بخشی وغیرہ امرا
اور کچھ بیگموں کے ساتھ مرزا رستم صفوی
کے مکان پر بھیجی گئی - شب
پنجشنبہ ۲۲ - شعبان کو مرزا
کے یہان سے مہندی آئی
اور شاہ برج مین اوسکی رسم ادا
ہوئی مرزا کی طرف سے طرح طرح
کی آتشبازی چھوڑی گئی اس
مجلس مین یمین الدولہ آصف خان
مع تمام بڑے بڑے امیرون

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के साथ बैठा था सुबह को दौलत	کے بیٹھا تھا صبح کو دولت خانہ
ख़ाने ख़ास से परदाड़ो कर शादी	خاص مین خلوت ہوکر اسباب بیاہ
का सामान जो कुछ तो बेगम तैया	جو کچھ تو ممتاز الزمانی بیگم تیار کر رہی
र कर मरी थी और बाक़ी बेगमसा	تھی اور باقی بیگم صاحبہ نے مہیا
हिबने बनाया था बेगम साहिब	کیا تھا بیگم صاحبہ کے حکم سے چُنا
के हुक्म से सजाया गया यह १० ला	گیا یہ دس لاکھ روپیہ کی قیمت
ख रुपये की कीमत का था हाथी	کا تھا گھوڑے اور ہاتھی دولت خانہ
और घोड़े दौलत ख़ाने ख़ास और	خاص وعام مین حاضر کیے گئے تھے
आम में खड़े किये गये थे बादशाह	بادشاہ نے دو پہر کے بعد دولتخانہ
ने २ पहर के पीछे आम ख़ास के झ	خاص وعام سے اوس سب سامان
रोकों से उस तमाम सामान को दे	کو دیکھا اور بیگم صاحبہ کی عرض سے
खा और बेगम साहिब की अरज़प	ایک لاکھ روپیہ کے جواہرات
र उसमें से १ लाख रुपये के जवाह	اور مرصع آلات اوس میں سے
र और जड़ाऊ एक में क़बूल फ़रमा	قبول فرمائے بیگموں کو تورے
कर बेगमों को तोरे और अमीरों को	اور امیرون کو خلعت بدستور
जोड़े पहिले के माफ़िक़ दिये फि	سابق عنایت کیے پھر وہ سامان
र वह सब सामान शाहज़ादे के म	شاہزادہ کے مکان پر پہنچایا گیا
कान पर पहुंचा दिया गया बादशा	بادشاہ پچھلے دن سے پھر جھروکہ
ह पिछले दिन से फिर झरोके द	درشن مین آئے شام کو روشنی
रशन में आये शाम को रोशनी की	کی گئی شاہزادہ اورنگ زیب
गई शाहज़ादा औरंगज़ेब मुराद	مراد بخش اور یمین الدولہ وغیرہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बरख़्श और आसिफ़ ख़ांवग़ैरा जा
कर शाह ज़ादे शुजाअ को उसके म
हलसे जहां बादशाह कंवर पदे में
रहा करते थे और जो जमना के ऊप
रबना था दरया किनारे के रस्ते से
हज़ूर में लाये बादशाह ने २ लाख
का रिवलअत ख़ासा जड़ाऊ हथिया
र २ ख़ासा घोड़े और १ जोड़ा हाथी
का इनायत करके वुही सहरा जो
दारा शिकोह के बांधा गया था उस
के सिर पर अपने हाथ से बांधा उस
वक्त आतिश बाज़ी छोड़ी गई जब
लगन का समय आया तो क़ाज़ी मु
हम्मद असलम ने शाह बुरज में बा
द शाह के सामने निकाह पढ़ा औ
र ४ लाख रुपये का मिहर बांधा फा
गुण सुदी १ को बादशाह शाहज़ा
दे के मकान पर गये शाह ज़ादे ने
पा अंदाज़ और नज़र निछावर क
रके बहुत जवाहरात और जड़ाऊ
सामान नज़र किये और आसिफ़

جاکر شاہزادہ کو اوسکے مکان
سے کہ جس مین بادشاہ بھی
باایام شہزادگی رہا کرتے تھے
اور جو جمنا کے کنارے پر واقع
تھا۔ براہ ساحل دریا بادشاہ کے
حضور میں لائے بادشاہ نے
دو لاکھ روپیہ کا خلعت خاصہ
مع اسلحہ مرصع دو گھوڑے خاصہ
ور ایک ایک ہاتھی وہتھنی کے
رحمت کرکے وہی سہرا۔ جو
داراشکوہ کے سر پر باندھا گیا
تھا شجاع کے سر پر بھی اپنے ہاتھ
سے باندھا اسوقت آتش بازی
چھوڑی گئی جب وہ ساعت
مختار آئی تو قاضی محمد اسلم نے
شاہ برج مین بادشاہ کے روبرو
نکاح کا خطبہ پڑھا اور چار لاکھ روپیہ
کا مہر باندھا۔
سلخ شعبان کو بادشاہ شاہزادہ
کے مکان پر تشریف لے گئے شاہزادہ
نے پاانداز اور نثار کی رسم ادا کرکے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

खां वगैरा को भी खिलअत बाद
शाह के हुक्म के माफ़िक़ दिये
बादशाह ने खाना वहीं खाया और
पिछले दिन से दौलत खाने को पी
छे पधारे =

बादशाह ने तरबियत खां
को १ लाख रुपय की सोग़ात देक
र नज़र मुहम्मद खां हाकिम बल
ख के पास भेजा ॥

चैत बदी १ को राजा जयसिं
घ अपने वतन से आया =

चैत बदी ८ को राजा गज सिं
घ ने वतन से हाज़िर होकर १ हाथी
और कुछ जड़ाऊ रकमें नज़र कीं =

चैत बदी ३ को राजा बिट्ठल
दास खिलअत खासा पाकर अ
जमेर का फौजदार मिरजा मुज़
फ़्फ़र किरमानी की जगह हुआ

चैत सुदी १८ को पृथ्वीराज
राठौड़ का मनसब जो दक्खन
में तईनात था असल और इजाफ़े

بہت سے جواہرات اور
مرصع آلات نذر کئے اور یمین الدولہ
وغیرہ کو بھی خلعت بموجب حکم
بادشاہ کے دیئے بادشاہ نے طعام
خاصہ بھی وہیں تناول فرمایا اور پچھلے
دن سے اپنے دولتخانہ میں مراجعت فرمائی
بادشاہ نے تربیت خاں کو
ایک لاکھ روپیہ کی سوغات دیکر
حاکم بلخ کے پاس روانہ فرمایا۔

۱۴۔ رمضان کو راجہ جیسنگھ
وطن سے معاودت کرکے حاضر
درگاہ ہوا۔

۲۲۔ رمضان کو راجہ گجسنگھ
نے اپنے وطن سے آکر ایک
ہاتھی اور کچھ جڑاؤ چیزیں پیشکش کیں

غرہ شوال راجہ بٹھل داس
کو خلعت خاصہ عنایت ہوکر خطہ
اجمیر کی فوجداری مرزا مظفر کرمانی
کے تغیر سے ملی۔

۲۔ شوال کو پرتھی راج راٹھوڑ
کا منصب جو صوبہ دکن میں

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से २ हज़ारी ज़ात और ५०० सवार का होगया।	تعینات تہا اصل اور اسافہ سے دوہزاری ذات و رپانسو سوارونکا ہوگیا
बैसाख बदी १२ को बादशाह ने सफ़दर खां को ४ लाख की सोग़ात देकर ईरान के बादशाह शाह सफ़ी के पास भेजा।	۲۵-شوال بادشاہ نے صفدرخان کو چار لاکہہ روپیہ کی سوغات دیکر ایران کے بادشاہ شاہ صفی کے پاس روانہ کیا
जेठ बदी ३ को नवाब मुमताजुल जमानी बेगम के "उर्स के" दिन ३ सोने का कटहरा ४० हज़ार तोले का जो ५ लाख रुपये की मत का था क़बर पर चढ़ाया।	۱۷-ذیقعد کو بروز عُرس نواب ممتاز الزمانی بیگم کے بادشاہ نے ایک سونے کا محجر، وزنی ۴۰ ہزار تولہ قیمتی ۵ لاکہہ روپیہ کا بیگم کے مزار پر چڑہایا
आगरे में हैज़ा शुरू हुआ उसमें बादशाह की तजवीज़ से ज़हर मोहरे खताई के देने से बीमारों को फ़ायदा पहुंचा॥	آگرہ میں ہیضہ شروع ہوا اوسکے معالجہ میں بادشاہ کی تجویز سے زہر مہرہ خطائی کا استعمال بہت مفید پڑا
जेठ बदी १५ मंगल के दिन बादशाह ने झरोके दरशन के नीचे सूरत सुन्दर और सिधकर नाम २ जंगी हाथियों को लड़ाया शाह ज़ादे दारा शिकोह शुजा और औरंगज़ेब तीनों भाई वहां परस	روز سہ شنبہ ۲۹ ذیقعدہ کو بادشاہ نے جہروکہ درشن کے نیچے صورت سندر اور سدہکر نام دو ہاتھیوں کی لڑائی کرائی - شاہزادہ داراشکوہ شجاع اور اورنگ زیب تینوں بھائی -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वार बादशाह की सवारी से कुछ
आगे बढ़कर तमाशा देखरहेथे।
कि हाथी सिद्धकर अपनी जोड़ से
लड़ता २ एका एकी औरंगज़ेबके
ऊपर झपटा औरंगज़ेबकीउमरउ
सवक़्त सिर्फ़ १५ बरस की थी तोभी
उसके मस्तक पर भाला मारा हा
थी ने अब उसके घोड़े के १ टक्क
र मारी घोड़ा लुड़का तो औरंगज़ेब
गिर पड़ा उस वक्त बड़ी गड़बड़ हुई
सुजाअ घोड़ा दौड़ा कर गया लेकि
न घोड़े के गिर पड़ने से वह भी गि
र पड़ा तब राजा जय सिंघ उस हाथी
की तरफ़ दौड़ा मगर उसका घोड़ा
डरता था और हाथी के सामने न्हीं
आता था इस लिये उसने दाहिनी
तरफ़ से आकर उस पर बरछा मारा
इतने में सूरत सुनदर हाथी सिद्ध
करके ऊपर दौड़करके आया सिद्ध
कर लौन कर उससे म्होरा करनेकी
फ़ुरसत न पाकर भागा और शाहज़ादः

گھوڑوں پر سوار بادشاہ کی سواری
سے کچھ آگے بڑھکر تماشا دیکھ رہے
تھے کہ سدھکر ہاتھی اپنے حریف
سے لڑتے لڑتے دفعتہً اورنگ
زیب کے اوپر جھپٹا اورنگ زیب
نے باوجودیکہ ابھی اس کی عمر
صرف پندرہ برس کی تھی اوسکی
پیشانی پر برچھا مارا ہاتھی نے پھربھی
اوسکے گھوڑے کے ٹکر ماری۔
گھوڑا لڑھکا ہوا اورنگ زیب گر پڑا
اوسوقت عجب ہنگامہ برپا ہوا شجاع
گھوڑا دوڑا کر آیا لیکن گھوڑے کے
گر پڑنے سے وہ بھی گرا تب راجہ
جیسنگھ ولد مہا سنگھ بن جگت سنگھ
خلف راجہ مان سنگھ جو معتمد خانہ زاد
بادشاہی سے تھا اور راجہ مان سنگھ کا
جانشین اوس ہاتھی کے اوپر
دوڑا مگر اوسکا گھوڑا ڈرتا تھا اور ہاتھی
کے سامنے نہین جاتا تھا اسلیئے اسنے
داہنی طرف سے آکر برچھا مارا اتنے مین
صورت سندر ہی سدھکر کے اوپر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बच गया बादशाह ने अपनी सवारी बढ़ाई और दोनों शाहज़ादों को पीठ पुचकार कर बहुत शाबाशी दी

जेठ सुदी ४ को जुमे के दिन १५ वीं सालगिरह शाहज़ादे औरंगज़ेब की थी बादशाह ने दौलतख़ाने ख़ास में सोने से तोला ५००० अशरफियां जो उसके बराबर चढ़ीं वे हक़दारों को तकसीम करदेने के वास्ते उसको इनायत फ़रमाईं और ख़ासा खिलअत जड़ाऊ जीगे समेत मोतियों की माला जिसमें लाल और पन्ने लगे थे जड़ाऊ कड़े हीरे के भुजबंद लाल याकूत हीरे और मोती की अंगूठियां जड़ाऊ खंजर फूल कटारे समेत जड़ाऊ तलवार जड़ाऊ ढाल जड़ाऊ बरछी २ तुरकी घोड़े जिनमें १ का तो ज़ीन जड़ाऊ और दूसरे का सुनहरी मीनाकार था सिङ्कर हाथी हथनी समेत दिया कीमत इन सब की २ लाख रुपया थी हिन्दी और फ़ारसी

उसको

دوڑ کر آیا شُدہ کہ لوٹ کر اوس سے ٹہرہ کرنے کی مجال نہ پا کر بہاگا شاہزادہ بچگیا بادشاہ نے اپنی سواری بڑہائی پہلے شاہزادہ اورنگ کو اور پہر شجاع کو چہاتی چوم کر گلے لگایا اور اُنکی جرات و ثابت قدمی کی بہت تحسین او رآفرین کی۔

روز جمعہ ۲ ذی الحجہ کو کہ پندرہوین سالگرہ بادشاہزادہ اورنگ زیب کی تہی بادشاہ نے اوسکو دولتخانہ خاص میں سونے سے تولا پانچہزار اشرفیان جو اوسکے ہموزن ہوئین حقداروںکو تقسیم کرنیکے واسطے اوسکو عنایت فرماکر خلعت خاصہ معہ جیغہ مرصع اور موتیونکی مالا کہ جسمین لال و زمرد لگے تہے جڑاو کڑے ہیرے کے بازوبند لعل یاقوت ہیرے اور موتی کے انگوٹہیان خنجر مرصع معہ پہولکٹارہ کے شمشیر مرصع ڈہال مرصع برچہی مرصع دو قبچاق گہوڑے کہ جسمین ایک کی زین مرصع اور دوسرے کی سنہری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

शायरों ने शाहज़ादे के हाथी से लड़ने की दास्तान को नज़्म और नसर में लिख २ कर इनाम पाये सईदाय गीलानी को किजिसका खिताब बेबदल खां था। इसी मज़मून पर १ उमदा मसनवी (काव्य) तयार करने के इनाममें बादशाह ने चांदी में तोला और ५००० जो उसकी बराबर चढ़े थे उस को बख़्शे॥

बादशाह नामे में लिखा है कि जब बादशाह ने शाहज़ादगी में शेर के तलवार मारी हो तो शाहज़ादों से ऐसे काम होने का क्या अचंभा है॥

यह जहांगीर बादशाह के वक़्त की बात है कि १ दिन परगने बाड़ी में चीते का शिकार होता था और अनूपबड़ गूजर जो अकबर बादशाह के वक़्त से ख़ासे खिदमतगारों का अफ़सर था

مینا کار تھی اور سدہکر ہا تھی معہ ہتھنی کے کہ کل کی قیمت دو لاکھہ روپیہ کی تھی عطا فرمایا ہندی اور فارسی - شاعرون نے شاہزادہ کے ہاتھی سے لڑنے کی داستان کو نظم و نثر میں لکھہ کر انعام و اکرام پاے سعیدائے گیلانی مخاطب بہ بے بدل خان اسی مضمون پر ایک مثنوی لکھنے کے انعام مین بادشاہ کے حکم سے چاندی مین تولا گیا پانچہزار روپیہ جو اوسکے برابر چڑھے تھے اوسکو بخشے گئے -

مصنف بادشاہ نامہ لکھتا ہے کہ جب بادشاہ نے شروع جوانی مین ایک بڑے شیر کو طعمہ شمشیر کیا ہو تو شاہزادون سے ایسے کارنمایان ہونیکا کیا تعجب ہے ع بود زادۂ شیر ہم شیر نر -

یہ جہانگیر بادشاہ کے وقت کی بات ہے کہ ایکدن پرگنہ باڑی مین چیتے کا شکار ہو رہا تہا اور انوپ بڈگوجر جو اکبر بادشاہ کے وقت سے خاص

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

"बाड़ा" यानी उन लोगों को जो शिकार में बादशाह के पास हाज़िर रहते थे लारहा था कि उसने शेर की भाल सुनी और वहां जाकर बाड़े वालों की मदद से उस को घेरा। और जहांगीर बादशाह को ख़बर भेजी उस वक़्त दिन अस्त होचुका था और शिकारी हाथी भी साथ न थे तो भी बादशाह शिकार के शौक़ से घोड़े पर सवार होकर गये और शेर को देखकर घोड़े से उतरे - गोलियां मारीं मगर शेर के पूरा घाव नहीं लगा और वह जाकर १ नीची जगह में बैठ गया उस वक़्त सूरज डूब चुका था और बादशाह के पास सिवाये इन बादशाह (शाहजहां) राजा रामदास कछवाहा, अनूप बड़ गूजर, एतमाद खां, हयात खां दरोगा आबदारखाने, और कमाल किरावल के और कोई न था तो भी कई कदम आगे जाकर

خدمتگاروںکا افسر تہا باڑہ یعنی ان لوگونکو جو شکار میں بادشاہ کے پاس حاضر رہتے تھے لارہا تہا کہ اوسنے شیر کی خبر سُنی اور وہاں جاکر باڑہ والونکی مدد سے اوسکو گہیرا اور جہانگیر بادشاہ کو خبر بہیجی اوسوقت دن آخر ہوچکا تہا اور شکاری ہاتہی ساتھ نہ تھے تو بھی بادشاہ شکار کے شوق سے گھوڑے پر سوار ہوکر گئے اور شیر کو دیکھ کر گھوڑے سے اُترے اور دو گولیاں ماریں مگر شیر کے زیادہ کاری زخم نلگا اور وہ جاکر ایک نیچی جگہہ میں بیٹھ گیا اوسوقت سورج غروب ہوگیا تہا اور بادشاہ کے پاس سوائے ان بادشاہ (شاہجہان) راجہ رام داس کچھواہہ انوپ اعتماد رائے حیات خان داروغہ آبدار خانہ اور کمال قراول کے اور کوئی نہ تہا تو بہی چند قدم آگے جاکر پھر ایک بندوق ماری شیر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फिर १ बंदूक मारी शेर गोली खा
तेही बादशाह के ऊपर दौड़ा बाद
शाह ने फ़ौरन कमान खेंच कर १
तीर मारा मगर वह भी कारी न्हीं ल
गा और शेर गुस्से से अनूप बेड़गूजर से
आ भूमा जो उस वक़्त बादशाह की
बंदूक लिये खड़ा था और उसको
गिरा दिया अनूप ने अपना १ हाथ
तो उसके मुंह में देदिया और दूस
रे से उसका गला पकड़ा बादशाह
शाह जहां ने जो शेर के दाहने त
रफ़ कुछ बढ़े हुये खड़े थे तलवा
र निकाल कर शेर की गरदन पर
मारनी चाही मगर वहां अनूप के
हाथ को देख कर कमर पर मारी
और इस फ़ुरती से मियान में कर
ली कि सिवाये हयात खां के जो ए
तमाद राये के साथ जहांगीर बाद
शाह की दहनी तरफ़ खड़ा था औ
कोई खबरदार न हुआ बांई तर
फ़ राना रामदास खड़ा था उसने भी

گولی کہاتے ہی بادشاہ کے اوپر
دوڑا بادشاہ نے کمان کہنچکر ایک
تیر مارا اگر وہ بہی کاری نہین لگا شیر
غصے سے انوپ سے جو اوسوقت
بادشاہ کی بندوق لئے کہڑا تہا آ
جہوما اور اوسکو گرادیا انوپ نے
اپنا ایک ہاتہہ تو شیر کے منہہ میں
دیدیا اور دوسرا اوسکے شانہ میں
حائل کیا بادشاہ شاہجہان نے
جو شیر کے دہنی طرف بڑہے ہوئے
کہڑے تہے یہ حال دیکھکر تلوار
نکالی اور شانہ پر مارنا چاہی مگر پہر
انوپ کا ہاتہہ دیکہکر شیر کی کمر
میں ماری اور اس پہرتی سے
میان میں کرلی کہ سوائے
حیات خان کے جو اعتماد رائے
کے ساتہہ جہانگیر بادشاہ کے
دہنی طرف کہڑا تہا اور کوئی مطلع
نہوا آپ کے بائیں طرف راجہ
رام داس کہڑا تہا اوس نے
بہی شیر کے ایک تلوار ماری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शेर के ३ तलवार मारी और कई लाठियां हयात खां ने भी जड़ीं तब वह अनूप को छोड़ कर चलनिकला फिर तो लोगों ने घेर कर मार लिया हयात खां ने बादशाह (शाह जहां) की फुरती और बहादुरी की अर्ज़ जहांगीर बादशाह से की उन्हों ने अपने हाथ से वह खून भरी तलवार निकाल कर देखी और बहुत शाबाशी दी अनूप को अनिराय सिंघ दलन का खिताब बख्शा और उसका मनसब भी बढ़ाया ॥

जेठ सुदी १२ को ईद के दिन बादशाह ने हिरदेराम के बेटे जगराम को हाथी इनायत किया

फतह खां के ताबे होजाने से बादशाह ने वह किले और परगने जो साहूजी को दिलाये थे फिर उससे ले कर फतह खां को देदिये इस बात से साहू जी नाराज़

اور کئی لاٹھیاں حیات خان نے بھی جڑیں تب وہ انوپ کو چھوڑ کر چلا پھر تو لوگوں نے ہجوم کرکے مار لیا حیات خان نے بادشاہ (شاہجہان) کی پھرتی اور بہادری کی جہانگیر بادشاہ سے عرض کی انہوں نے اپنے ہاتھ سے وہ خون بھری تلوار غلاف سے نکالکر دیکھی اور بہت تحسین آفرین کی انوپ کو انی رائے سنگھ دلن کا خطاب بخشا اور اوس کے منصب میں بھی اضافہ فرمایا۔

عید کے دن ہردے رام کا بیٹا جگ رام عنایت فیل سے سرفراز ہوا۔

فتح خان کے مطیع ہوجانے سے بادشاہ نے وہ قلعے اور پرگنے اوسکے جو ساہوجی کو دلائے تھے پھر ساہو سے تغیر کرکے اوسکو دیدئے اسپر ساہوجی ناراض

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होकर आदिल ख़ां से जा मिला आदिल खां ने उसके साथ १ लश्कर दौलताबाद फ़तह करने को भेजा फ़तह ख़ां ने उसका आना सुन कर ख़ान ख़ानां (महाबत ख़ां) से कह लाया कि मैं किला तुम को दे दूंगा ख़ान ख़ानां ने अपने बेटे ख़ान ज़मां को जुगराज और खीलू जी के साथ भेजा घाटे में आदिल खां की फौज रस्ता रोके हुये थी मगर मुक़ाबिले के वक़्त रणदूला तो जो आदिल खां की फ़ौज का अफ़सर था टल गया और साहू जी लड़ा तब ख़ान ख़ानां ने ख़ुद राव शत्रू साल के साथ जाकर उसको हराया फ़िर रणदूला और साहू जी ने फ़तह खां से यह कौल किया कि हम किला तेरे ही पास रहने देंगे बल्कि रसद और रुपया भी पहुंचावेंगे इस पर फतह खां उनसे मिल गया ख़ान

ہوکر عادل خاں سے جا ملا - عادل خاں نے اوسکے ساتھ ایک لشکر دولت آباد فتح کرنیکی واسطے بھیجا فتح خان نے اوسکی آمد سُنکر خان خاناں سے کہلایا کہ میں قلعہ تمکو دیدونگا خاں خاناں نے اپنے بیٹے خان زماں کو بھیجا جگراج اور کھیلوجی اوسکے ساتھ گئے گھاٹ میں عادل خاں کی فوج راستہ روکے ہوئے تھی مگر مقابلہ جنگ میں رندولہ تو ٹل گیا اور ساہوجی لڑا خانخاناں خود معہ راو ستروسال کے اوسکے مقابلہ کو آیا اور شکست دی - اب رن دولہ اور ساہوجی نے فتح خاں سے عہد کرلیا کہ قلعہ تیرے پاس ہی رہنے دینگے اور رسد و روپیہ بھی تجھکو پہونچاوینگے - فتح خان ان سے مل گیا خان خانان نے اوس کے نقض

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ख़ानां ने उसके बदल जानेसे रख़फ़ा होकर अपने बेटे ख़ानज़मां को किला फ़तह करने का हुक्म दिया उसने हमला करके पहले तो खीलूजी मालूजी भी क़ाजी और यसवंतराव की मदद से शाहू जी को निज़ामपुर से भगाया फिर दौलताबाद को घेर कर मोरचे लगाये" बना कछरी का मोरचा जो किले के पीछे था राजा बिक्रमाजीत जु प्रसन्न के ज़िम्में हुआ॥

घेरे की ख़बर सुन कर ख़ान ख़ानां भी वहां गया पिरथवी राज राठोड़ और ऊदाजी राम उस के साथ थे

चैत बदी १ को ररा दूला वग़ैरा अपने आदमियों को रसद पहुंचाने के वास्ते जो किले में थे आये ख़ान ख़ानां ने अपने बेटे दिलेर हिम्मत को ऊदाजी राम बहादुरजी और जुगराज बुंदेले के साथ उनके मुक़ाबिले को भेजा यह उनसे लड़े

عہد سے خفا ہو کر خان زمان نے
اپنے بیٹے کو دولت آباد فتح
کرنیکا حکم دیا اوسنے حملہ کرکے
اول تو نظام پور سے بمدد کھیلا
جی مالوجی اور یسونت راو ڈہیکوئیکی
ساہوجی کو بھگایا اور پھر دولت آباد
کو گھیرا ایک مورچہ بنا کچہری
کا جو قلعہ کے پیچھے ہے
راجہ بکراجیت کے حوالہ
ہوا یہ سُن کر خانخانان
بھی آیا پرتھی راج راٹھوڑ اوسکے
ہمراہ اوداجی رام معہ اپنے بھائی
بندونکے چنداول میں تھا۔
۱۴ ۔ رمضا نکو رن دولہ
وغیرہ اپنے آدمیوں کو رسد
پہونچانے کے واسطے جو
قلعے میں تھے لشکر کے
پاس آئے خان خانان نے
اپنے بیٹے دلیر ہمت کو معہ
اوداجی رام بہادر جی اور
جگراج بندیلہ کے اونکے مقابلہ پر بھیجا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

तो भी आधी रात को रण दूला,
फ़रहाद, बहलोल, साहू जी और
अंकस ४००० सवारों से ख़ान ज़
मां के डेरे पर आ पड़े ख़ान ज़मां तो
मोरचों पर गया हुआ था और राव
शत्रूसाल को डेरे की हिफ़ाज़त
पर छोड़ा गया था सो राव शत्रूसा
ल और उसके राज पूतों ने बहादु
री के साथ मुकाबिला करके बह
लोल और बहुत से दखनियों को
मार डाला और बाकी को भगा दिया

तीसरे दिन फिर दखनी
याक़ूत हबशी के साथ २ पहर के
वक़ दिलेर हिम्मत के डेरे पर
चढ़ आये दिलेर हिम्मत भी उ
न के सामने हुआ उस वक़ १ स
वार ने कि जिसको बड़ा घमंड
था दुशमन की फ़ौज से निकल
कर पृथ्वीराज राठौड़ को लड़ने
के वास्ते बुलाया पृथ्वी राज भी
दिलेर हिम्मत की दहनी अनी

یہ اُن سے لٹے آدہی رات کورن دولہ
فرہاد بہلول ساہوجی اور انکس چار
ہزار سواروں سے خان زمان کے
ڈیرے پر آئے خان زمان تو
ستروسال ہاڈہ کو ڈیرہ کی محافظت
پر چھوڑکر مورچوں مین گیا ہوا تھا
اور ستروسال وہاں موجود تہا
اوس نے معہ اپنے راجپوتوں اور
خان زمان کی سپاہوں کے
جنگ کرکے بہلول کے بھتیجے
اور بہت سے دکھنیوں کو مار ڈالا
جو باقی بچے وہ بہاگ کر چھوٹے۔
تیسرے دن پہر دکھنی یاقوت
حبشی کے ساتھ دوپہر کے وقت
خانخانان کے بیٹے دلیر ہمت کے
ڈیرے پر چڑہ آئے دلیر ہمت بہی
اُنکے مقابل ہوا اس اثنا میں ایک
سوار فوج غنیم سے باہر نکلا اور اُسنے
پرتہی راج کو لڑنے کے واسطے
بلایا پرتھی راج کہ جو دلیر ہمت کے
دہنی ہاتھ کی فوج میں تہا نکل کر

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से निकल कर उसके रूबरू गया जब लड़ाई शुरू हुई तो पृथ्वी राज ने तलवार से उसको मार डाला इस पर रणदूला वगैरा पृथ्वी राज के ऊपर चढ़ आये तब खान खानां के तीसरे बेटे लहरास्प ने अपनी फौज के साथ पृथ्वी राज के शामिल होकर दुशमनों को मार भगाया ॥

खान खानां ने ज़फ़र नगर से रसद लाने के वास्ते राव दूदा को मुबारिज़ खां के साथ भेजा और फ़िर दरवनियों का उसतरफ़ जाना सुनकर खान ज़मां को भी राव सत्रुसाल समेत रवाने किया वह खिड़की में पहुंचकर साहू और बहलोल वगैरा से लड़ा और उनको हटा कर रसद लशकर में ले आया =

चैत बदी १० को खीलोजी जो पांच हज़ारी ज़ात और ५ हज़ार

اوس کے مقابل ہوا جب لڑائی شروع ہوئی تو پرتھی راج نے اوسکو تلوار کے ایک ہی ہاتھ مین مار ڈالا اس پر رندولہ وغیرہ نے پرتھی راج کے اوپر حملہ کیا تب خانخانان کا تیسرا بیٹا لہراسپ اپنی فوج کے ساتھ جاکر پرتھی راج کے شامل ہوگیا اور بالاتفاق جنگ کرکے دشمنونکو بھگا دیا۔

خانخانان نے ظفر نگر سے رسد لانے کے واسطے راؤدودا کو مبارز خان کے ساتھ بھیجا۔ اور پھر کھتیوں کا ادھر جانا سنکر خان زماں کو بھی معہ راؤستر سال کے روانہ کیا اوسنے کھڑکی میں پہونچکر ساہو و بہلول وغیرہ کو بعد جنگ شکست دی اور رسد لشکر میں لے آیا۔

۲۳- رمضان کو کھیلوجی جو پانچہزاری پانچہزار سوار کا منصب رکھتا تھا اس خیال سے کہ نظام شاہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

सवार का मनसब रखता था इस
ख्याल से कि निज़ाम शाह के लो
ग दौलताबाद के फतह हो जाने
से तबाह हो जावेंगे याकूत हबशी
के माफ़िक भाग कर उधर चला
गया लेकिन उसका भाई मानूजी
और परसूजी खानखानां के पास
मोजूद रहे और ख़ान खानां ने उ
न को ख़िलअत हाथी और खर
च वगैरा देकर राज़ी रखा ॥

चैत बदी १४ को फिर दरख
नी किले तक आ पहुंचे थे कि प
हाड़ सिंघ वग़ैरा कई मोरचे वा
लों की मदद पर जाकर उन को
भगा दिया वे भागते हुये नाज
की पोटें मुर्तिज़ा ख़ां और जुगराज
के मोरचों में इस नज़र से डाल गये
कि अंदर वाले आसानी से उठाले
जावें ख़ान ख़ानां ने जुगराज से क
हिलाया कि मोरचे को मज़बूत
करके ऐसा बंदोबसत करे कि-

بعد فتح ہو جانے دولت آباد
کے برباد ہو جاوینگے مثل یاقوت
حبشی کے بھاگ کر اودھر چلا گیا
لیکن اوس کے بہائی مالوجی
اور پرسوجی بدستور خان
خانان کے پاس موجود
رہے اور خانخانان نے
انکو خلعت اسپ ہاتھی
اور مدد خرچ دے کر راضی
رکھا +

۱۴- کو پہر دکہنی ظاہر ہوکر
قلعہ دولت آباد تک پہونچ
گئے پہاڑ سنگھ بندیلہ اور کئی
امیرون نے مورچون کی
مدد پر جا کر انکو بہگا دیا مگر وہ
غلہ کی گونئین مرتضی خان
اور جگ راج کے مورچون
میں ڈال گئے کہ اندر والے
آسانی سے اوٹھالیجاوین -
خان خانان نے جگراج
سے کہلایا کہ مورچون کو مضبوط

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रसद भीतर न जासके जुगराज ने ऐसा ही किया कि जब अंदर वाले रसद लेजाने लगे तो उनको किले में भगा कर रसद छीन ली दखनियों ने पीछे जाते हुए खान खानां के पोते खान ज़मां के बेटे शुकुल्ला से फ़िर १ युद्ध भेड़ की उसमें दलपत राये राठोड़ के बेटे महेश का जमाई जगन्नाथ जो खान खानां के इज़्ज़त दार राजपूतों से था बहादुरी के साथ लड़ कर काम आया =

ऊदाजी राम दखनी जो ५ हज़ारी ५ हज़ार सवार का मनसब दार था मरगया उस का बेटा जगजीवन छोटा था तो भी खान खानां ने उस को ३ हज़ारी ज़ात और २ हज़ार सवार का मनसब दिलाया कि जिस में ऊदाजी राम का लशकर बिखरने न पावे =

चैत सुदी ८ को खान खानां ने खान ज़मां को राव शत्रू साल हाडा

قلعہ میں نہ پہونچنے دے راجہ نے مورچوں کا بندوبست کر دشمنوں کو تیر اور تلوار کی ضرب سے قلعہ کے اندر کر دیا اور غلہ پر بھی قبضہ کر لیا ۔

دکھنیوں نے واپس جاتے ہوئے خان خاناں کے پوتے خان زمان کے بیٹے شکر اللہ سے پھر ایک مقابلہ کیا اوس میں دلپت کے بیٹے مہیش کا داماد جگناتھ جو خان خاناں کے معتبر راجپوتوں سے تھا بہادری سے لڑکر کام آیا

اوداجی رام دکنی جو پانچہزاری ذات اور پانچہزار سواروں کا منصب رکھتا تھا مر گیا اوس کا بیٹا جگ جیون بچہ تھا تو بھی خان خانان نے اوس کے واسطے تین ہزاری ذات اور دو ہزار سوار کا منصب تجویز کیا تاکہ اوداجی رام کا لشکر متفرق نہو ۔

۸ شوال کو خانخان نے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और राव करन के साथ दुशमनों के डेरे लूटने को भेजा वह लड़कर बहुत सी लूट ले आया

चैत सुदी ११ को सुरंग से २६ गज़ दीवार किले दोलताबाद की उड़ाई गई नसीरी खां किले में जाने को रुखसत हुआ खान खानां ने महेशराठोड़ को भी अपने नौकरों के साथ भेजा किले वाले उस टूटी हुई दीवार पर आकर खूब लड़े नसीरी खां ज़ख़मी हुआ उस वक्त बादशाही अमीरों ने बांये हाथ की तरफ से हल्ला करके किला लेलिया खैरयत खां बीजापुरी भाग कर महा कोट की खाई में जा छुपा ॥

खान खानां ने अंबर कोट में आकर महा कोट के घेरने को फ़ौज भेजी उस में राजा पहाड़ सिंघ बुंदेला और संग्राम भी था खान खानां ने मालूजी और जगजी व़न

خان زمان کو دشمنوں کی بنگاہ لوٹنے کے واسطے بہیجا اور وہ موضع اہل اوراہل میں سے بہت کچھ لوٹ لے کر آیا وہاں کچھ لڑائی بہی ہوئی تہی۔

۹ ۔شوال کو سرنگ سے ۲۶ گز دیوار قلعہ کی اوڑائی گئی نصیری خان اپنے آدمیوں کے ساتھ قلعہ میں جانے کو رخصت ہوا خان خانان نے مہیش راٹہوڑ کو بہی اپنے نوکروں کے ساتھ بہیجا قلعہ والے اوس ٹوٹی ہوئی دیوار پر آکے خوب لڑے نصیری خان زخمی ہوا اوسوقت بادشاہی امیروں نے راست و چپ سے حملہ کرکے قلعہ لے لیا خیریت خان بیجاپوری معہ دوبہرے قلعہ والوں کے بہاگ کر مہاکوٹ کی خندق میں جا چہپا۔

خانخانان نے عنبرکوٹ میں جاکر مہاکوٹ کو گہیرنے کو فوج بہیجی اوس میں پہاڑ سنگہ راجہ سارنگ دیو کشن سنگہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न को बाहर के मोरचों पर छोड़ा या राव शत्रूसाल और राव करण को अंबर कोट के बाहर उनके मोरचों में रखा था मगर जब सुना कि खीलू जी और बहलोल वग़ैरा बराड और तिलंगाने की तरफ़ फ़साद करने के इरादे से जाया चाहते हैं तो ख़ान ज़मां ने राव शत्रूसाल और राव करण को उन्हें सज़ा देने और लशकर में रसद पहुंचाने के वास्ते भेजा ॥

बैशाख बदी ९ को रणदूला और साहू जी ३००० पोटें नाज की किले वालों के वास्ते लेकर आये मगर मालूजी, राव दूदा, पृथ्वी राज और महेसदास, वग़ैरा बादशाही अमीरों ने लड़ कर उससे वह नाज छीन लिया

बैशाख बदी १४ को ख़ैरयत ख़ां और दोलू नाग पंडित रात के वक़्त मालू जी की मारफ़त

رن سنگھ بہدوریہ اور سنگرام
بائیں ہاتھ کی صف میں تھے
خانخانان نے مالوجی اور جگ
جیون کو باہر کے مورچوں پر
چھوڑا تھا راؤ شترو سال اور راؤ کرن
کو عنبر کوٹ کے باہر انکے مورچوں میں
رکھا تھا مگر جب سنا کہ کھیلوجی اور
بہلول وغیرہ برار اور تلنگانہ کیطرف
فساد کرنیکے ارادہ سے جایا چاہتے
ہیں تو خانزمان نے راؤ شترو سال اور
راؤ کرن کو انکی سزا دہی اور رسد
رسانی کے واسطے بھیجا۔
۱۷ - ارکورن دولہ اور ساہوجی
تین ہزار پوٹھین اناج کی قلعہ
والوں کے واسطے لیکر آئے مگر
امرائے بادشاہی نے کہ جنمیں
مالوجی راؤ دودا پرتھی راج اور مہیش
داس بہی تھے لڑکر اونسے وہ غلہ چھین لیا
۲۷ - کو خیریت خان و دو لو
ناگ پنڈت رات کے وقت
بمعرفت مالوجی کے خانخانان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खान खानां से कौल नामा लेकर महाकोट से उत्तर आये और खान खानां ने खिलअत देकर बादशाह का फ़रमान दिखाया जिसमें लिखाथा कि जल्दी उधर कूंच होगा और उन को आदिल खां की तसल्ली करने के वास्ते भेजा किले मे फ़क़त फ़तह खां और तानाजी रह गये थे हमीरराव मोहनया दुशमन के लशकर से बादशाही लशकर में हाजिर होगया ॥

जेठ बदी १० को आदिल खां के वज़ीर मुरारी पंडित ने रणदूला और साहू जी को तो खान ज़मां के मुकाबिले पर भेजा और आप याकूत के साथ खान खानां के मोरचे पर आया खान खानां ने राव दूदा और पृथ्वी राज से कहा कि अपने मोरचों से बाहर निकलकर सवार खड़े रहें और दिलेर हिम्मत

سے امان نامہ لے کر مہاکوٹ سے اتر آئے اور خانخانان نے خلعت دیکر بادشاہی فرمان دکھلایا جس میں لکھا تھا کہ عنقریب اودہر کوچ ہوگا اور انکو واسطے استمالت عادل خاں کے بھیجا قلعہ میں فقط فتح خان اور تاناجی دوڈیہ رہگئے تھے ہمیرراو موہنیہ غنیم کے لشکر سے بادشاہی لشکر میں حاضر ہوگیا۔

۲۴۔ ذیقعدہ کو مراری پنڈت وزیر عادل خان نے رن دولہ اور ساہوجی کو تو خان زمان کے مقابلہ پر بہیجا اور آپ معہ یاقوت کے خانخانان کے مورچے پر آیا خانخانان نے راؤ دودا اور پرتھی راج کو کہا کہ اپنے مورچوں سے باہر نکل کر سوار کہڑے رہیں اور دلیر ہمت کو معہ چند رہیان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को चंद्र भान के साथ भीतर के मो
रचे में छोड़ा और आप किले से बा
हर आकर जहां राव दूदा खड़ा
ऊआ था अया इतने में उदयपुर
रायां जी के आदमीं भी जिनको
ख़ान जमां ने भोपत के साथ मद
द के वास्ते भेजा था आपऊंचे गनी
मने राव दूदा के पास लड़ाई शुरू
की खान ख़ानां उसके उपर गया
मालूजी, परसूजी, राव दूदा, औ
र रानाजी के आदमीं भी गये औ
र ग़नीम को हटा दिया अब मुबा
ज़र ख़ां पहाड़ सिंघ और जुग राज
भी पऊंच गये थे ख़ान ख़ानां ने मु
बाज़र ख़ां और पहाड़ सिंघ को ग़
नीम के पास भेजा और आप ल
हरास्प के ऊपर मुरारी पंडित के
हल्ला करने का हाल सुन कर
जुगराज और रानाजी के आदमि
यों के साथ लहरास्प की मदद
को गया राव चांदा के पोते राव

کے اندر کے مورچہ میں چھوڑا اور
آپ قلعہ سے مقابلہ کے واسطے
باہر آکر جہاں راؤ دودا کھڑا تھا
آیا اس اثنا میں رانا اودیپور
کے آدمی بھی کہ جنکو خان زمان
نے بھوپت کی سرداری میں
خان خانان کی مدد پر بھیجا تھا
آپہونچے غنیم سے راؤ دودا سے
لڑائی شروع کی خان خانان
مقابلہ کو گیا مالوجی پرسوجی راؤ
دودا اور رانا کے آدمی بھی
گئے اور غنیم کو ہٹا دیا اب مبارز
خان پہاڑ سنگھ و جگ راج
بھی پہونچ گئے خانخانان نے
مبارز خان و پہاڑ سنگھ کو
غنیم کے پیچھے بھیجا اور آپ
مرادی پنڈت کی حملہ آوری
کا حال سنکر لہراسپ کی مدد
کو مع جگراج اور رانا کے
آدمیوں کے گیا راؤ چاندا
کے پوتے راؤ دودا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूदा चंद्रावत के कई भाई बंद ल
ड़ाई में मारे गये उनकी लाशें लाने
के वास्ते उसने खान खानां से इजा
ज़त मांगी खान खानां जानता था कि
अभी दुशमन की फ़ौजें जगह २ खड़ी
हैं और लड़ाई हर तरफ़ होरही है इ
सलिये उसने राव को जाने से मना
किया मगर उसकी मौत आपहुंची
थी इस सबब से उसने सिपेसाल
र का कहना नहीं माना और मालूजी
के साथ अपने आदमियों की लाशें
उठाने को गया ज्यों हीं कि खानखा
नां की फ़ौज नज़र से ओझल हुई
दुशमन ने मौक़े पाकर बहुत सी फ़ौ
ज के साथ राव दूदा को आघेरा राव
और उसके थोड़े से आदमियों ने जो
बचाव का रस्ता बंद देखा तो घोड़ों
से उतर कर लड़ाई की और बहादु
री के साथ जान दी ॥

फ़िर याक़ूत अंबर और खीलूजी
खान ख़ानां से लड़ने को आये

چندراوت کے کئی بھائی بند
لڑائی مین کام آئے راو دودا
نے اُنکی لاشین لانے کے واسطے
خانخانان سے اجازت چاہی
خانخانان جانتا تھا کہ ابھی دشمن
کی فوجین جگہہ جگہہ قایم ہین اور
لڑائی ہو رہی ہے اسلیئے اُس نے
راو کو جانے سے منع کیا مگر اسکی
موت آپہنچی تھی اس سبب سے
اُسنے سپہ سالار کا کہنا نہین مانا اور
مالوجی کے ساتھ اپنے آدمیون کی
لاشین اُٹھانے کو گیا جونہی
کہ خانخانان کی فوج نظر سے
غائب ہوئی غنیم قابو پاکر ہر طرف
سے راو دودا کے اوپر آگرا راو
اور راو کے تھوڑے سے آدمیون
نے جو بچاؤ کا راستہ بند دیکھا
تو گھوڑون سے اُتر کر لڑے اور
بہادری کے ساتھ کام آئے۔

پھر یاقوت عنبر اور کھیلوجی
خانخانان کے مقابلہ کو پہونچے۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

मुरारी पंडित भी उनके पीछे था ।
ख़ान ख़ानां ने राना जी के भतीजे
सोपत को तो याक़ूत के मुक़ाबि
ले पर भेजा और जुगराज से जो पीछे
आता था कहलाया कि जल्दी आ
कर शामिल हो उसने कहा कि नदी
उतरने में देर होगी मगर ख़ान ख़ा
नां ने तो हल्ला करदिया बड़ी स
ख़्त लड़ाई हुई ग़नीम हारा और
याक़ूत हबशी मारा गया ॥

जेठ बदी ११ को ख़ान ख़ानां ने
मुरारी पंडित के ५ कोस हट जाने
की ख़बर सुनकर ख़ान ज़मां को
निज़ामपुर की तरफ़ भेजा तब ।
रण दूला और साहू जी ने मुरारी पं
डित के हुकम से उस पहाड़ी पर के
ख़ान ज़मां का मोरचा क़बज़ा कर
लिया ख़ान ख़ानां ने लहरास्प और
पहाड़ सिंघ को भेजा और जुग राज
बुंदेले को भी कहलाया कि घाटी
के रस्ते से कि जो उसके डेरे के पास

ری پنڈت اُنکے پیچھے تہا
نخانان نے راناجی کے
تیجے بھوپت کو یاقوت کے
قابلہ پربھیجا جگ راج پیچھے
آیا تہا اُس سے کہلایا کہ جلد
ر شامل ہو اوسنے کہا کہ ندی
ل سے اُترنے مین دیر ہوگی
خانخانان نے حملہ کر دیا بعد
سخت لڑائی کے غنیم
شکست ہوئی اور یاقوت حبشی مارا گیا
۲۵-کو خانخانان نے مراری
ڈت کے پانچ کوس ہٹ جانے
خبر سنکر خانزمان کو نظامپور
طرف بھیجا تب رندولہ اور
ساہوجی نے مراری پنڈت
کے حکم سے اُس پہاڑی پر کہ
خانزمان کا مورچہ تھا قبضہ کرلیا
خانخانان نے لہراسپ اور
پہاڑ سنگھ کو روانہ کیا اور جگراج
بندیلہ کو کہلایا کہ گہاٹی کے راستہ
سے کہ اوسکا ڈیرہ پاس ہے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है निकल कर दुशमनों को सज़ा दे फ़िर नसीरी ख़ां पहाड़ सिंघ और लहरास्य ने जा कर ग़नीम को भगा दिया॥

फिर महा कोट की दीवार। बारूद से उड़ाई गई फ़ौज अंदर घुसी उसमें संग्राम भी था॥

निज़ाम शाह के एक अमीर महलदार ख़ां ने जो क़िले बनाती का क़िले दार था क़िले कालने में आ कर ख़ानख़ानां से क़िले बनाती के सौंप देने को कहलाया ख़ान ख़ानां ने जवाब दिया कि साहू और रयादूला की छावनी बेज़ा पुर में है जो तू उस को लूट ले तो हम को तेरी ख़ैरख़्वाही का भरोसा हो सो महलदार ख़ां ने साहू की छावनी लूट कर साहू की औरतों और लड़के बालों को जो उस वक़्त जुनेर से आगये थे पकड़ लिया ४०० घोड़े डेढ़ लाख हूण और बहुत सा माल असबाब तो साहू जी के डेरों से और १२ हज़ार

نکلکر مفسدونکو سزا دی پس نصیری خان پہاڑ سنگھ اور لہراسپ نے جاکر غنیم کو بھگا دیا۔

بعد مہا کوٹ کی دیوار بارود سے اُڑائی گئی فوج اندر گھسی اُسمین سنگرام بھی تھا۔

نظام شاہ کے امیر محلدار خان نے جو قلعہ بناتی کا قلعدار تھا قلعہ کالنہ مین آکر خانخانان [illegible] واسطے سپرد کرنے بناتی کے کہلایا خانخانان نے جواب دیا کہ ساہو اور رندولہ کی نبگاہ بیجاپور مین ہے اگر تو اسکو لوٹ لے تو تیری دولتخواہی کا یقین ہو ساہو کی عورتین اور لڑکے بالے اوسیوقت جنیر سے بیجاپور مین آگئے محلدار خان نے نبگاہ لوٹ کر اُنکو گرفتار کرلیا چارسو گھوڑے اور ڈیڑہ لاکھ ہُون اور سب سامان اسباب تو ساہو کی نبگاہ سے اور بارہ ہزار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

हुए रणदूला के डेरेसे हाथ लगे ख़ानख़ानां ने उस को हुक्मलिखा कि साहूजी के कबीलों को क़िलेदार कालने के हवाले कर के हाज़िर होजावे ॥

बैसाख बदी ६ को फ़तह ख़ांने नाज के न मिलने, काल, और मरी, के सबब से जो उस मुल्क में फैली हुई थी दौलताबाद का क़िला ख़ानख़ानां को सौंप दिया और आप अपने बालबच्चों और हुसैन निज़ाम शाह को लेकर कि जिसकी बारबरदारी वग़ैरा के लिये ख़ानख़ानां ने साढ़े दस लाख रुपे और कई हाथी दिये थे बाहर आगया ॥

बैसाख बदी १३ को बादशाहने यह ख़बर सुनी तो अमीरों को खिलत और इज़ाफ़े मनसब के फ़रमान भेजे नसीरी ख़ां को ख़ानदौरां का ख़िताब दियाराव दूदा के बेटे देबी सिंघ को जो

حسین رندولہ کی ڈیرہ سے ہاتھ لگے خانخانان نے اُسکو حکم بھیجا کہ ساہو کے عیال کو تو قلعہ دار کالنہ کے سپرد کرکے اور آپ حاضر ہووے۔

۱۹ ذی الحجہ کو فتح خان بسبب قحط غلہ اور خشک سالی اور وبا کے جو اوس ملک مین پھیلی ہوئی تھی خانخانان کو دولت آباد کا قلعہ سونپ کر مع اہل و عیال اور نظام شاہ کے کہ جسکی بار برداری کے لئے خانخانان نے ساڑھے دس لاکھ روپیہ اور کئی ہاتھی وغیرہ دئے تھے باہر آگیا۔

۲۶ ذی الحجہ کو بادشاہ نے یہ خوشخبری سُنکر امیرون کو خلاع فاخرہ اور ترقی منصب کے فرمان بھیجے اور نصیری خان کو خطاب خاندوران کا دیا راؤ دودا کے بیٹے دیبی سنگھ کو

वतन में था खिलअत राव कारिव
ताब और डेढ़ हज़ारी मनसब का
फ़रमान भेजा ॥

खान खानां ने खान दौरां को
तो दौलता बाद में छोड़ा और आप
निज़ाम और फ़तह खां को लेकर
बुरहान पुर में आगया रस्ते में बीजा
पुर वालों ने जगह २ लड़ाई की ताना
जी डोडिया मारा गया ॥

दौलता बाद जैसे मज़बूत
क़िले के इतने जल्द फ़तह हो
जाने का सबब बीमारी और काल
था बादशाह ने शाह ईरान को खत
में लिखा कि इस क़िले से १०००
तोपें हाथ आईं और ढाई करोड़ का
मुलक फ़तह हुआ ॥

बरस सातवां

आसाढ़ सुदी २ संबत १६९० से ॥
आसाढ़ सुदी २ संबत १६९१ तक

राजा भारत तिलंगा ने की हिफ़ा

جو وطن میں تھا خلعت راؤ
کا خطاب اور ڈیڑھ ہزاری
منصب ارسال فرمایا +

خانخانان خاندوران کو
دولت آباد میں چھوڑکر بمعہ نظام
اور فتح خان کے برہان پور کو
روانہ ہوا راستہ میں بیجاپور والو
نے جگہہ جگہہ لڑائی کی جسمین
تاناجی ڈوڈیہ مارا گیا۔

دولت آباد جیسے مضبوط
قلعہ کے اتنے جلدی فتح ہوجانے
کا سبب بیماری اور قحط سالی
تھا بادشاہ نے شاہ ایران کے
خط مین لکھا کہ اس قلعہ سے
ایک ہزار توپین ہاتھ آئین
اور ڈھائی کروڑ روپیہ کا ملک فتح ہوا

برس ساتوان

سنہ ۱۰۴۳ ہجری
۲۹ جون سنہ ۱۶۳۳ سے ۱۷ جون سنہ ۱۶۳۴ تک

راجہ بھارت تلنگانہ کی حراست

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज़त पर तईनात था "बोला" और सीदी मुफ़ताह को जो बीकलोर के किले में थे भगा कर कबज़ा कर लिया॥

महाराजा के बेटे राय सिंघ को बादशाह ने हाथी इनायत किया॥

रया दूला और साहूजी वग़ैरा आदिलशाहियों ने ख़ान ख़ानां का पीछा छोड़ कर क़िले दौलताबाद को जा घेरा इस लिये ख़ान ख़ानां फिर उस तरफ़ गया और आदिल शाही घेरा उठा कर नासिक त्रिम्बक की तरफ़ चले गये॥

असाढ़ सुदी १२ को क़ासम ख़ां का बेटा इनायतुल्ला ख़ां फ़रंगियों में से ४०० मर्द औरत को बादशाह के हज़ूर में लाया बादशाह ने हुक्म दिया कि जो मुसलमान हों उनको छोड़दें जो नहीं वह क़ैद रहें सो कुछ तो मुसलमान होगये बाक़ी क़ैद में मरे॥

कैदी

(भादों बदी ६ को इतवार के

پر تعینات تہا او سنے بولا اور سیدی مفتاح کو جو قلعہ ویکلور مین تہے نکالکر قلعہ مین قبضہ کرلیا

مہاراجہ (رہیم سیسوادیہ) کے بیٹے رائے سنگھ کو بادشاہ نے ہاتھی عنایت کیا

رندولہ اور ساہوجی وغیرہ عادلشاہیون سے خانخانان کا تعقب چہوڑکر قلعہ دولت آباد کو جا گھیرا خانخانان پھر اس طرف گیا اور عادلشاہی محاصرہ چہوڑکر ناسک اور ترمبک کی طرف چلے گئے۔

۱۱۔محرم کو قاسم خان کا بیٹا عنایت اللہ قیدی فرنگیون مین سے چارسو مرد اور عورت کو بادشاہ کے حضور مین لایا بادشاہ نے حکم دیا کہ جو مسلمان ہون وہ رہا ہون اور جو نہون وہ قید مین رہین چنانچہ کچھ تو مسلمان ہوگئے اور باقی قید مین مرے۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

दिन बादशाह ने खानखानां के लिखने से शाहज़ादे शुजाअ़ को भारी खिलत और ६ लाख रुपये इनाम के देकर बहुत से खज़ाने तोपखाने और लशकर के साथ दक्खन को रवाने किया राजा जयसिंघ राजा बिठ्ठलदास माधोसिंघ हाडा राव रतन का बेटा चंद्रमन बुंदेला राजा रोज़ अफ़ज़ूं भीमराठौड़ राजा रामदास नरवरी भी शाहज़ादे के साथ गये राजा जयसिंघ और बिठ्ठलदास को बादशाह ने खासे खिलत और सोने की ज़ीन के घोड़े खासा तवेले से दिये ॥

भादों बदी ११ को मालवे के सूबेदार खानदौरां के साथ मुन्नार का राजा संग्राम बादशाह की खिदमत में हाज़िर हुआ ॥

राजा राजसिंघ कछवाहे का बेटा राजा बख्तावर मुसलमान होगया था उसको बदशाह ने खि

روز یکشنبه ۲۲ صفر کو بادشاہ نے خانخانان کے لکھنے سے شاہزادہ شجاع کو خلعت فاخرہ اور ۶ لاکھ روپیہ انعام دیکر بہت سے خزانہ توپخانہ اور لشکر کے ساتھ دکھن کو روانہ کیا راجہ جیسنگھ راجہ بٹھلداس مادہو سنگھ ولد راؤ رتن ہاڈا چندرمن بندیلہ راجہ روز افزون بھیم راٹھور راجہ نرور رام داس اوسکے ساتھ تعینات ہوے راجہ جیسنگھ اور بٹھلداس کو بادشاہ نے خلعت اور گھوڑے مع ساز زرین کے طویلہ خاصہ سے عنایت فرماے

۴ ۲ کو گنور کا راجہ سنگرام خانزمان کے ہمراہ بادشاہ کے حضور میں مالوہ سے حاضر ہوا

راجہ راج سنگھ کچھواہہ کا بیٹا راجہ بختاور مسلمان ہوگیا تھا اوسکو بادشاہ نے خلعت

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लत और २००० दिये ॥

राजा भारत बुंदेला ५०० ज़ात और ५०० सवारों के इज़ाफ़े से चार हज़ारी ज़ात और साढे ३ हज़ार सवारों के मनसब पर सरफ़राज़ होकर शाहज़ादे शुजाअ के साथ तईनात हुवा ॥

राजा राज सिंघ कछवाहे का पोता परशोतम सिंघ जो बादशाह की बंदगी में रहता था मुसल्मान होगया बादशाह ने उसको खिलत घोड़ा और सआदत मंद खिताब दिया ॥

असोज बदी १० को इसलाम खां निज़ाम शाह फ़तह खां और दौलता बाद की लूट को लेकर हाज़िर हुआ बादशाह ने निज़ाम को तो जो कम उमर था सईद खान जहां किलेदार गवालियर के पास भेज दिया कि जैसे बहादुर निज़ाम शाह अहमदनगर

معہ دوہزار روپیہ کے مرحمت کیا

راجہ بھارت بندیلہ پانصدی ذات اور پانسو سواروں کے اضافہ سے چارہزاری ذات اور ساڑھے تین ہزار سواروں کے منصب کو پہنچکر شاہزادہ شجاع کی ہمراہی مین مامور ہوا

راجہ راج سنگھ کچھواہہ کا پوتہ پرشوتم جو بادشاہ کی بندگی مین رہتا تھا مسلمان ہو کر سعادتمند کے خطاب و خلعت واسپ سے مشرف ہوا۔

۲۴ ربیع الاول کو اسلام خان معہ نظام شاہ و فتح خان و اموال غنیمت دولت آباد کے حاضر ہوا بادشاہ نے نظام کو تو جو کم عمر تھا سئید خانجہان قلعدار گوالیار کے پاس بھیجدیا کہ جیسے بہادر نظام شاہ احمدنگر کی فتح کے وقت سے اوس قلعہ مین قید ہے اسیطرح

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की फ़तह के वक़्त से गिरफ़्ता रहोकर अबतक उस किले मेंकैद है उसी तरह इस को भी क़ैद रक्खे और जो उस का असबाब था वह सब ज़ब्त करलिया फ़तह खां के क़सूर माफ़ि करके २ लाख रुपया सालयाना मुक़र्रर किया और उसका माल भी उसको देदिय निज़ाम शाहियों की सल्तनत ख़तम होगई ॥

शाहज़ादों के वास्ते यह ज़ाबता था कि जब तक किसी ख़िदमत पर मुक़र्रर नहीं मनसब न मिले सो शाहज़ादे शुजाअ़ को तो दकन जाते वक़्त १० हज़ारी मनसब मिल गया था और शाहज़ादे दारा शिकोह जो उस से बड़ा था अभी तक १००० रोज़ पाता था और बादशाह उसके ऊपर सब बेटों से ज्यादा मेहरबान थे इस लिये आसोज सुदी १६ को उसे ।

اسکو بھی قید رکھے اور جو اسکا مال اسباب تہا وہ سب ضبط کرلیا۔

فتح خان کے قصور معاف ہوکر دو لاکھ روپیہ سالیانہ مقرر ہوا اور اسکا مال بھی اسکو دیدیا گیا نظام شاہیون کی سلطنت ختم ہوگئی۔

شاہزادونکے واسطے یہ ضابطہ تہا کہ جب تک کسی خدمت پر تعینات نہون منصب نہ ملے چنانچہ شاہزادہ شجاع کو تو دکہن جاتے وقت دسہزاری منصب مل گیا تہا اور شاہزادہ داراشکوہ جو اوس سے بڑا تہا ابی تک ایکہزار روپیہ روزینہ پاتا تہا اور بادشاہ اوسکے اور سب بیٹون سے زیادہ مہربان تھے اسلئے ۱۱- ربیع الثانی کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१२ हज़ारी मनसब बड़ा भारी खिलत छत्र और लाल डेरा इनायत फ़रमाकर हिसार का जिला बख्शा जो बाबर बादशाह के वक़्त से वली अहदों की जागीर में रहा करता था॥

पोष सुदी ३ को कल्याण झाला राना जगत सिंघ की तरफ़ से अरज़ी और हाथी लेकर हाज़िर हुआ बादशाह जबकि शाहज़ादे थे और राना अमरसिंघ को सर करने के वास्ते उदयपुर में रहा करते थे उस वक़्त अबदुल्ला खां बहादुर फ़ीरोज़ जंग इस को पकड़ कर हुज़ूर में लाया था और आपने जान बख़्शी करके छोड़ दिया था और इस वक़्त राना जगत सिंघ के उमदा राजपूतों में से था॥

माह बदी १३ को नित्यानंद ने जो राये बनवाली दास

اور بارہ ہزاری منصب مع خلعت فاخرہ اور چتر و خیمہ سرخ کے عنایت کرکے حصار کا ضلع عطا فرمایا جو بابر بادشاہ کے عہد سے ولیعہدوں کی جاگیر مین رہا کرتا تھا۔

غرہ رجب کو کلیان جہالا رانا جگت سنگھ کی طرف سے عرضی اور ایک ہاتھی لے کر حاضر درگاہ ہوا بادشاہ جبکہ ایام شاہزادگی مین رانا امرسنگھ کو مطیع کرنیکے واسطے اودہپور مین رہا کرتے تھے عبداللہ خان بہادر فیروز جنگ اسکو قید کرکے انکے پاس لایا تھا مگر انہوں نے جان بخشی کرکے چھوڑ دیا اب یہ رانا جگت سنگھ کے عمدہ راجپوتوں مین سے تہا۔

۲۶- رجب کو رائے بنوالیداس کے بیٹے نتیانند نے جو فیلخانہ کا مشرف تہا ایک

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

का बेटा और फ़ील खाने का मुश
रफ़ था २ हाथी नज़र किया ॥

माह सुदी १ को शाहज़ादे दा
राशिकोह के महल में शाह ज़ा
दे परवेज़ की बेटी से लड़की पैदा
हुई ॥

माह सुदी ४ ब्रहस्पत वार
को बादशाह पंजाब की तरफ़
रवाने हुए और हुक्म दियाकि
एक तरफ़ तीर अंदाज़ अहदि
यों का बख़्शी और दूसरी तरफ़
मीर आतिश बरक़नदाज़ों के सा
थ सफ़र करें और खेती को ख़रा
ब न होने दें और फिर भी जो नु
कसान होजावे (क्योंकि लशकर
बहुत था) तो उसके बदले में
नक़द रुपया सरकार से रैयत
और जागीर दारों को उनके हि
स्सों के माफ़िक दे देवें ॥

फागुन बदी ६ को मथुरा में
मुक़ाम हुआ यहां से कल्यान

ہاتھی پیشکش کیا۔

۲۹۔ رجب کو شاہزادہ
دارا شکوہ کے محل مین
شاہزادہ پرویز کی بیٹی
سے لڑکی پیدا ہوئی۔

آخر روز پنجشنبہ ۳ شعبان
کو بادشاہ پنجاب کی طرف
روانہ ہوئے اور حکم دیا
کہ ایک طرف تیر اندازاحدیونکا
بخشی اور دوسرے میر آتش
برقندازون کے ساتھ سفر
کرین اور زراعت کو خراب
نہونے دین پھر بھی جو کسی کا
نقصان ہوجاوے (کیونکہ
لشکر بہت تہا) تو اوس کے
معاوضہ مین نقد روپیہ سرکار
سے رعایا اور جاگیردارون
کو بقدر اونکے حصون کے
دیدین۔

۲۰۔ شعبان کو متھرا
مین مقام ہوا یہان سے

झाला को ख़िलत और घोड़ा दे
कर रुख़सत दीगई और राना ज
गत सिंघ के वास्ते उसके हाथ १
क़ीमती ख़िलत जड़ाउ उरबसी १
हाथी और २ ख़ासा घोड़े सोने चां
दी की ज़ीन के भेजे गये॥

फागण बदी १० को बादशा
ह दिल्ली में पहुंचे॥

चैत बदी ६ को एतमादु
द्दौला की सराय में जो लाहोर
के पास है डेरे हुये राजा बासू का
बेटा जगत सिंघ कांगड़े से आक
र हाज़िर हुआ॥

चैत सुदी ६ को बादशाह
लाहोर में दाख़िल हुए॥

बैसाख बदी ८ को राजा भा
रत बुंदेले के मरने की ख़बर सु
नकर उसके बेटे देबी सिंघ को २
ज़ात हज़ारी २ हज़ार सवार का मनस
ब और राजा का ख़िताब इनाय
त किया

کلیان جہالا کو خلعت اور گھوڑا
دیکر رخصت کیا گیا اور اوسکے
ہاتھ رانا جگت سنگھ کے واسطے
خلعت فاخرہ اور ایک فیل مرصع
مع دو گھوڑوں خاصہ اور
ایک فیل کے بھیجا گیا ایک
گھوڑے کی زین سنہری اور
دوسری روپہری تھی۔
۲۴ کو بادشاہ دہلی مین داخل ہوئے
۲۲ رمضانکو اعتماد الدولہ
کی سراے مین جو لاہور کے پاس ہے
ڈیرے ہوئے راجہ باسو کا بیٹا
راجہ جگت سنگھ کانگڑہ سے آکر حاضر ہوا۔
۱۷ شوال کو بادشاہ لاہور
مین رونق افروز ہوئے۔
۲۱ شوال کو راجہ بھارت
بندیلہ کے مرنے کی خبر پہونچی
بادشاہ نے اوسکے بیٹے دیبی سنگھ
کو دوہزاری ذات دوہزار
سوار کا منصب اور راجہ کا خطاب
عنایت کیا۔
۲۴ ذیقعدہ کو بادشاہ

जेठ बदी ११ को बादशाह ला
होर से कशमीर की तरफ़ रवाने
हुए ॥

कातक बदी १२ को शाहज़ा
दे शुजाअ ने बुरहानपुर से रवा
न ख़ानां के साथ परेंडे के क़िले
को फ़तह करने के वास्ते रवाने हु
आ और ख़ान जमां को बीजापुर
के लूटने और घेरने के वास्ते पहि
ले से भेज दिया था उसके साथ रा
जा जयसिंघ राव शत्रु साल रा
जा पहाड़ सिंघ जुगराज बुंदे
ला राजा रोज़ अफ़ज़ूं और संग्रा
म राजा जम्बूये ॥

साहू जी ने निज़ाम के ख़ान
दान से १ शख़्स को जो क़िलेअज
राटी में कैद था साथ लेकर अहम
दनगर और दौलताबाद फ़तह
करने का इरादा किया उधर से आ
दिल ख़ां ने किशना जी दतूरय
दुला और मुरारी पंडित को ख़ज़ाना

لاہور سے واسطے سیر کشمیر کے
روانہ ہوئے۔

۲۶ ربیع الثانی کو شاہزادہ
شجاع معہ خانخانان کے
برہان پور سے قلعہ پرینڈہ کے فتح
کرنے کو روانہ ہوا اور خانزمان
کو واسطے لوٹنے ملک بیجاپور
کے روانہ کیا اوسکے ساتھ راجپوتون
مین سے راجہ جے سنگھ راؤ شترو سال
راجہ پہاڑسنگھ جگراج بندیلہ راجہ
روز افزون اور سنگرام زمیندار
جمون تھے۔

ساہوجی نے نظام کے
خاندان مین سے ایک شخص کو
جو قلعہ ایجراٹی مین قید تہا ساتھ
لے کر احمدنگر اور دولت آباد کے
فتح کرنیکا ارادہ کیا اودہر سے
عادلخان نے کشناجی دتورندولہ
اور مراری پنڈت کو فوج اور
خزانہ دیکر واسطے مدد اور

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और लशकर देकर उसकी मदद और किले की हिफ़ाज़त पर भेजा ॥

ख़ानज़मां नेरवाने होकरराजाजयसिंघ को रजपूतों समेत अपनी फ़ौज का हिरावल किया और जुगराज को चंदावल करके परेंडे के क़िले को घेर लिया फिर राजा बिठ्ठल दास गोड़ भी तईनात होकर ख़ान जहां के पास आया ॥

साहू जी और रण दूला मिलकर लड़ने को आये १ दिन ख़ान ख़ानां ख़ुद अपनी वारी में घास वग़ैरा की रसद लाने को गयाथा कि दुशमन की १०००० फ़ौजने आकर उस को घेर लिया उसवक़्त महेस राठोड़ जो ख़ान ख़ानां के रजपूतों का सरदार और हिरावल था रुघनाथ भाटी और दूसरे राजपूतों समेत पांव जमा कर उस

حفاظت قلعہ کے بہیجا-

خانزمان نے روانہ ہوکر
راجہ جے سنگھ اور راجپوتون
و اپنے لشکر کا ہراول کیا اور
جگ راج کو چنداول بناکر
پرنیدہ کا قلعہ گہیرا پہیر راجہ
بٹھلداس بہی خانزمان کے
پاس مامور ہوکر آیا-

ساہوجی اور رندولہ وغیرہ
متفق ہوکر مقابلہ کو آئے
ایکدن خانخانا خود اپنی باری
مین گہاس وغیرہ رسدلانے کو
گیاتہاکہ دس ہزار غنیمون نے
اُسکو آگہیرا اوسوقت مہیش داس
راٹہور جو خانخانان کے
راجپوتون کا سردار اور
ہراول تہا اور رگہنا تھ
بہاٹی اور دوسرے راجپوت
قدم جلادت استوار کرکے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फौज से लड़ा और रथ में गिरा ख़ान ख़ानां की जान पर आ बनी ज़ख़मियों के उठाने की फ़ुरसत न मिली मगर मालवे का सूबेदार ख़ान दौरां १२५०० सवारों से दौड़ा पहिले महेस राठौड़ और दूसरे राजपूतों को उठा लाया और फिर ख़ान ख़ानां से जा मिला महेस ज़िंदा था मगर ज़ख़मी बहुत होगया था दुशमन ख़ान दौरां के पहुंचते ही भाग गया और ख़ान ख़ानां उसकी फेंट से बच कर पीछा आया॥

फागरा सुदी ६ को ५०० आदमी क़िले से निकल कर राजा पहाड़ सिंघ के मोरचे पर जा पड़े उस लड़ाई में कई आदमी राजा के कई असालत ख़ां के और कई राजा रोज़ अफ़ज़ूं के काम आये और बहुत से दुशमन मारे भी गये और ज़ख़मी हुए

اوسکے جلو مین لڑے اور میدان جنگ مین گرے خانخانان کی جان پر آبنی زخمیون کے اٹھانے کی بھی فرصت نہ ملی مگر خاندوران صوبہ دار مالوہ نے معہ ساڑہے بارہ ہزار سوارون کے پہونچکر پہلے تو مہیش راٹھوڑ اور دوسرے مقتول و مجروح راجپوتون کو اٹھایا اور پھر خانخانان سے جاملا مہیش داس زندہ تھا مگر زخمی بہت ہوگیا تھا غنیم بروقت پہونچنے خاندوران کے بھاگ گیا اور خانخانان اوسکے پیچھے بچکر واپس آیا۔

۸ رمضان کو پانسو آدمی قلعہ سے نکل کر راجہ پہاڑ سنگھ کے مورچہ پر جا پڑے اور لڑائی شروع ہوئی جس مین کئی آدمی راجہ پہاڑ سنگھ کے کئی اصالت خان کے اور کئی راجہ روزافزون کے کام آئے اور بہت سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

फागुण सुदी ११ को खानखानां रसद लाने के वासते सवार हुआ और उस के साथ सैयद खान जहां खान ज़मां राव शत्रु साल पृथ्वीराज राजा जय सिंघ मुर्तिज़ा खां राजा बिट्ठल दास मालूजी और सैयद शुजाअत खां वग़ैरा भी अपनी २ फ़ौज से बढ़कर ५ ६ कोस चलकर रसद के पास पहुंचे थे कि ग़नीम ने आकर खान जहां पर हल्ला किया खान खानां यह ख़बर सुनकर खान जहां की मदद को पहुंचा और राजा जय सिंघ भी तमाम रस्ते दुशमनों से लड़ता हुआ आ च लागया रसद शाम को लशकर में पहुंच गई ॥

चैत बदी ४ को खान जहां और खान दौरां वग़ैरा घास चारा लेने को गये ग़नीम ने वहां जाकर १ बान मारा उससे घास जलकर जंगल में आग लग उठी जिस में

...من مارے بھی گئے اور
...نی بھی ہوئے۔

۱۰ رمضان کو خانخانان
[ر]سد لانے کے واسطے سوار
[ہو]ا اور اوسکے ساتھ سید خانجہان
...زمان ستروسال پرتھی راج
...سنگھہ مرتضیٰ خان بٹھل داس
...وجی اور سید شجاعت خان
...یرہ بھی اپنی اپنی فوج سے
بڑہ کر پانچ چھ کوس چل کر رسد
کے پاس پہنچے تھے کہ غنیمون
نے آکر خانجہان پر حملہ کیا
...نخانان یہ خبر سنکر خانجہان کی
...د کو پہونچا اور راجہ جے سنگھہ
...ی تمام راستہ دشمنون سے
...ڑتا ہوا چلا گیا رسد شام کو لشکر مین
پہونچگئی۔

...۸ ار کو خان جہان اور خاندوران
...غیرہ گہاس اور چارہ لینے کو
...ئے غنیم نے وہان جاکر ایک
...بان مارا اوس سے گہاس جلکر
...جنگل مین آگ لگ اوٹھی۔

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२ हाथी और बहुत जानवर बार
बरदारी के जल गये फ़ौज का इ
नतज़ाम बिगड़ गया ख़ान ख़ा
नां यह ख़बर पाकर राजा बिठ्ठ
ल दास और पृथ्वी राज के साथ उध
र गया शाहज़ादे ने भी तैयारी की
मगर ग़नीम भाग गया ख़ान ख़ा
नां राजा बिठ्ठल दास और पृथ्वी
राज को उसके पीछे रवाने कर
के लौट आया ये दोनों भी ख़ा
नज़मां के साथ कुछ दूर ग़नीम
का पीछा करके चले आये उस
दिन ख़ान जहां ख़ान ज़मां और
राजा बिठ्ठल दास ने बहुत बहा
दुरी की ।

माह सुदी ६ का जब ख़ान ख़ा
नां और ख़ान ज़मा घास चारा ला
ने को गये थे ग़नीम ने पैदल हो
कर मोरचों पर हमला किया बा
दशाही अमीरों ने बाहर निकल
कर उन को हराया इस लड़ाई में

جسمین دو ہاتھی اور بہت سے
جانور باربرداری کے جل گئے
فوج کا انتظام بگڑ گیا خانخانان
یہ خبر پاکر معہ راجہ بٹھلداس اور
پرتھی راج راٹھوڑ کے اودہر گیا
اور شاہزادہ نے بھی تیاری کی
مگر غنیم بھاگ گیا خانخانان راجہ
بٹھل داس اور پرتھی راج کو
اوسکے تعاقب مین روانہ
کرکے لوٹ آیا یہ دونون بھی
خانزمان کے ساتھ کچھ دور
تک غنیم کا پیچھا کرکے واپس
چلے آئے اس دن خانجہان
خانزمان اور راجہ بٹھل داس نے
بہت بہادری کی۔

۱۹ - کو جب خانجہان اور
خانزمان گہاس چارا لانے کو
گئے تھے غنیم نے مورچون پر
پیدل ہوکر حملہ کیا مگر بادشاہی
امیرون نے باہر نکل کر اس کو
شکست دی اس لڑائی مین

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज़ुगराज के बहुत रजपूत ज़ख़्मी हुये

माह सुदी १० की रात को शाहज़ादे के हुक्म से बादशाही अफ़सर और मनसबदार ग़नीम के डेरों पर गये उनमें राजा जयसिंघ राजा बिट्ठलदास राव शत्रूसाल राव करण और मालूजी दखनी भी थे मगर ग़नीम हुशयार होगयाथा इस लिये बादशाही लोग वे ऊंट और बैल कि जिनको जंगल जलाने के दिन ग़नीम लेगया था पीछे ले आये मगर राजा जयसिंघ ने घोड़ा दौड़ा कर ग़नीम के बहुत से पैदलों को पकड़ा मुरारी पंडित का भाई माधोजी मुबाज़र ख़ां से लड़ा ख़ान ज़मां सैयद ख़ान जहां को राजा जयसिंघ की मदद पर छोड़कर माधोजी के ऊपर गया और उस को मारकर ग़नीम को भगादिया

جگ راج کے بہت راجپوت زخمی ہوئے تھے۔

شب پنجشنبہ تاریخ ۲۳-کو شاہزادہ کے حکم سے بادشاہی منصب دار اور امیر غنیم کے ڈیرہ پر روانہ ہوئے اُنمیں راجہ جے سنگھ راؤ شترو شال راجہ بٹھل داس راؤ کرن اور مالوجی بھی تھے مگر غنیم ہوشیار ہوگیا تھا اسلئے یہ اونٹ اور بیل کہ جسکو بید جلانے کے دن غنیم لے گیا تھا واپس لے آئے مگر راجہ جیسنگھ نے گھوڑا دوڑا کر غنیم کے بہت سے پیدلوں کو گرفتار کیا مراری پنڈت کا بھائی مادھوجی - مبارز خان سے مقابل ہوا خان زمان سید خانجہان کو راجہ جے سنگھ کی مدد پر چھوڑ کر مادھوجی کے اوپر گیا اور اُس کو مار کر غنیموں کو بھگا آیا۔

۱۲-شوال کو خانخانان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चेत सुदी १४ को ख़ान ख़ानां का नोकर कोका पंडित घास चारा लेने को गया ४००० हबशीउसके ऊपर आपडे ख़ान ख़ानां शाहज़ादे को साथ लेकर जुगराज और लहरास्प को लशकर की हिफ़ाज़त पर छोड़ कर दुशमन के डेरे लूटने को गया दुशमन ने ख़बर पाकर बांयें हाथ की तरफ से बांण मारने शुरू किये ख़ान ज़मां और ख़ान जहां ने उसपर हमला किया राजा जय सिंघ और बिट्ठल दास ने उनकी मदद पर जाकर दुशमन को भगादिया मुरारी पंडित भागने में घोड़े से गिर पड़ा मगर उसके १ नौकर ने अपने घोड़े पर चढाकर उस को तो निकाल दिया और आप मारा गया ॥

बादशाही अफसरों ने कई जगह सुरंगे भी लगाई गइथीं

کا نوکر کوکا پنڈت گھاس چارا لینے کو گیا چار ہزار حبشی اوسکے اوپر آپڑے تب خانخانان شاہزادہ کو ہمراہ لے کر جگراج اور لہراسپ کو لشکر کی حفاظت پر چھوڑکر دشمنوں کے ڈیرے لوٹنے کے واسطے گیا دشمنوں نے خبر پاکر بائیں ہاتھ کی طرف سے بان مارنے شروع کئے یہ دیکھکر خانزمان اور خانجہان نے اوسپر حملہ کیا راجہ جے سنگھہ اور بٹھلداس نے اونکی مدد پر جاکر دشمنوں کو بھگایا مراری پنڈت بھاگتے ہیں گھوڑے سے گرپڑا مگر اوسکے ایک نوکر نے اسکو تو گھوڑے پر چڑھا کر نکال دیا اور آپ اوس کے بدلے مارا گیا۔

بادشاہی افسروں نے کئی سرنگیں بھی لگائی گئی تھیں مگر وہ آگے نہیں چلیں اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मगर वे आगे नहीं चलीं कुछ को अंदर वालों ने बंद करदिया और कई में से पानी निकल आया १ सुरंग उड़ाई गई तो जाने के लायक़ रसता न हुआ बादशाही अमीर और मनसबदार ख़ान ख़ानां की बदसलूकी से नाराज़ होगये और ख़ान दौरां के बार २ कहने से कि मैं ने ख़ान ख़ानां की जान बचाई है ख़ानख़ानां उस से अदावत रखने लगा घास चारा लाने पर हररोज़ ग़नीम से लडाई होती थी इसलिये ख़ान ख़ानां ने जेठ सुदी ५ को क़िले का घेरा छोड़ कर शाहज़ादे समेत बुरहानपुर की तरफ कूच करदिया ॥

जेठ सुदी ८ को जब कि बादशाही फौज घाटे से उतर रही थी गनीम ने आकर बांरा मारना शुरू किया ख़ान ख़ानां

بعض کو اندر والوں نے بند کردیا اور کئی میں سے پانی نکل آیا ایک سُرنگ اڑائی گئی تو جانے کے لایق راستہ نہوا بادشاہی امیر اور منصب دار خان خانان کی بدسلوکی سے ناراض ہوگئے اور خان دوران کے باربار کہنے سے کہ میں نے خان خانان کی جان بچائی ہے خانخانان اُس سے عداوت رکھنے لگا گھاس اور چارہ لانے پر ہر روز غنیم سے لڑائی ہوتی تھی اسلئے خان خانان نے تاریخ ۳- ذی الحجہ کو قلعہ کا محاصرہ چھوڑ کر معہ شاہزادہ کے برہان پور کیطرف واپس کوچ کردیا ۷- ذی الحجہ کو جب بادشاہی فوج ہیر سے ۱۸ کوس پر گھاٹہ سے اُتر رہی تھی غنیم نے آکر بان مارنے شروع کئے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

का बेटा ख़ान ज़मां शत्रूसाल जुगराज और राव करया व ग़ैरा को लेकर उसके मुक़ाबिले को गया उधर राजा जयसिंघ दाहने हाथ की फ़ौज से उसकी मदद को पहुंचा ग़नीम भाग गया और बादशाही लशकर आसाढ़ बदी १३ को बुरहानपुर में पहुंच गया

बरस ८

आसाढ सुदी २ संबत १६९१ से
आसाढ सुदी २ संबत १६९२ तक

बादशाह ने क़िला फ़तह किये बग़ैर शाहज़ादे को पीछा ले आने से ख़ानख़ानां पर बहुत गुस्सा किया और शाहज़ादे को उसके तइनाती अमीरों समेत अपने पास हाज़िर होने का हुक्म लिखा॥

भादों बदी ४ को बादशाह

خانخانان کا بیٹا خانزمان معہ شتروسال جگ راج اور راؤ کرن وغیرہ کے اوسکے مقابلہ کو گیا اُدہر سے راجہ جے سنگھ جو داہنے ہاتھ کی فوج مین تہا اوسکی مدد کو پہنچا غنیم بھاگ گیا اور بادشاہی لشکر ۲۶ - ماہ ذی الحجہ کو برہان پور مین داخل ہُوا -

برس آٹھوان

۱۰ / جون ۱۶۳۴ء سے ۱۶ / جون ۱۶۳۵ء تک

سنہ ۱۰۴۴ ہجری

بادشاہ نے شاہزادہ کو بلا فتح قلعہ واپس لے آنے سے خانخانان کے اوپر بہت عتاب کیا اور شاہزادہ کو معہ اوسکی تعیناتی امیرون کے اپنے پاس حاضر ہونے کا حکم لکہا -

۱۷ - صفر کو بادشاہ نے کشمیر مین پرتھی راج راٹہوڑ

ने कशमीर में पृथ्वी राज राठो
ड़ का मनसब असल और इज़ा
फ़े से २ हज़ारी ज़ात और १६००
सवारों का करदिया॥

असोज बदी १० को बादशा
ह कशमीर से लाहौर को रवाने
हुए ॥

कातक बदी ६ को मुका
म संबंर में कि जहां कशमीर
के पहाड़ों का सिलसिला ख़
तम होताहै जगन्नाथ. कला
वंत कि जिसकी इज्जत क बि
राये के ख़िताब से बढाई गई
थी हिन्दुस्तानी शायरी औरगा
न बिद्या में उसदिन कोइ उस
की बराबर हिनदुस्तान में न
हीं था लाहौर से आकर हाज़ि
र हुआ जहां बादशाह के हुक्म
से कुछ नये धुरपदों के बनाने
के वास्ते रहगया था और १२
धुरपद मुख़तलफ़ रागों मेंजो

منصب اصل اور اضافہ
ے دوہزاری ذات اور
ولہ سو سوارون کا کردیا
۲۳- ربیع الاول کو
شاہ کشمیر سے لاہور کی
ف روانہ ہوئے ۔

۲۲- ربیع الثانی کو مقام
ہرین جہان کہ کشمیر کے
اڑونکا سلسلہ ختم ہوتا ہے
ناتھ کلاونت کہ جسکی عزت
ب رائے کے خطاب سے
الی گئی تہی اور جو ہندی
ری اور نغمات ہندوستانی
صنیفات مین اپنا مثل نہین
تا تہا لاہور سے آکر حاضر
اور بارہ دہرپد مختلف راگون
مضامین رنگین کے جو
ئے بادشاہ کے نام پر موزون
تھے پڑہ کر سنائے جو بادشاہ
ت پسند آئے اور انہون نے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो उसने बादशाह के नाम पर नये बनाये थे और जिनके मज़मून भी नये २ थे पेश किये। बादशाह ने पसंद करके उस को रुपों में तोला ४५०० जो उस के बराबर तुले थे उस को इनायत किये॥

भंबर में हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के साथ रिश्ताक रते थे हिन्दू मुसलमानों की लडकियों को जो उनसे ब्याही जाती थीं जलाते थे और मुसलमान गाडते थे बादशाह ने इस बात को ना पसंद करके हुक्म दिया कि जबतक हिन्दू मुसलमान न हों मुसलमान औरतें उन के घर में न रहने पावें इस पर जो कूजो वहांका ज़िमींदार था कुटंब समेत मुसलमान होगया बादशाह ने उसके ऊपर महरबानी करके राजा दोलतमंद नाम

خوش ہوکر اوسکو روپیون مین تولنے کا حکم دیا ساڑھے چار ہزار روپیے جو اوسکے برابر وزن ہوئے تھے اُسکو عنایت فرمائے۔

بھمبر مین ہندو مسلمان باہم رشتہ داری کرتے تھے ہندو مسلمانوں کی لڑکیون کو جو اونکے ساتھ بیاہی جاتی تھین جلاتے تھے اور مسلمان گاڑتے تھے بادشاہ نے اس بات کو ناپسند کرکے حکم دیا کہ جب تک ہندو مسلمان نہوں مسلمان عورتین اُنکے عقد مین نہ رہنے پاوین اسپر وہان کا زمیندار جوکو مع اپنے تمام قبیلہ کے مسلمان ہوگیا بادشاہ نے اوس کا نام راجہ دولتمند رکھا اور اُسکے حال پر بہت عنایت اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रक्खा ॥

जब बादशाह गुजरात इलाक़े पंजाब में पहुंचे तो मुसलमानों ने फ़रयाद की कि हिन्दुओं ने बहुत सी मुसलमान औरतों को घर में डाल लेवा है और मसजिदें अपने घरों में मिला ली हैं बादशाह ने शेख़ महमूद गुजराती को तहक़ीक़ात का हुक्म दिया उसने सबूत होने के पीछे ७० मुसलमान औरतें हिन्दुओं से पीछी लीं और मसजिदों की ज़मीन अलहदा करके उनके बनाने के वास्ते जुरमाने में रुपया लिया बादशाह ने यहां भी भंभर के माफ़िक़ हुक्म जारी किया कि मुसलमान औरतें हिन्दुओं के घर में जब तक कि वे हिन्दू मुसलमान न होजावें नहीं तो उन

مہربانی فرمائی -

جب بادشاہ گجرات علاقہ پنجاب مین پہونچے تو مسلمانون نے فریاد کی کہ ہندوؤن نے بہت سی مسلمان عورتون کو گھرمین ڈال رکھا ہے اور مسجدین بھی اپنے مکانون مین ملالی ہین بادشاہ نے شیخ محمود گجراتی کو تحقیقات کا حکم دیا اوسنے بعد ثبوت ۷۰ مسلمان عورتین ہندون سے واپس لین اور مسجدون کی زمین علیحدہ کرکے اُنکی تعمیر کے واسطے روپیہ بھی بطور جرمانہ کے اُنسے لیا بادشاہ نے یہان بھی مثل بھمبر کے حکم دیا کہ مسلمان عورتیں ہندون کے عقد مین نرہین جبتک کہ وہ مسلمان نہ ہو جاوین ورنہ انکا عقد باطل کردیا جاوے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का नाता मुसलमान औरतों से तुड़ा दिया जावे इस पर बहुत से हिन्दू तो अपनी मुसलमान औरतों के लिये मुसलमान होगये और जो न हुए उनसे वे औरतें छिन गईं और यह हुक्म तमाम बादशाही मुल्कों में जारी होकर बहुत सी मुसलमान औरतें हिन्दुओं से छीनी गईं और उनका निकाह मुसलमानों से हुआ ॥

मंगसिर बदी ११ को कांगडे के पहाड़ का राजा जगत सिंघ राजा बासू का बेटा अपने मुलक से दरबार में हाज़िर आया ॥

मंगसिर सुदी ७ को बादशाह लाहोर पहुंचे महाबत खां ख़ान ख़ानां बुरहानपुर में मरगया था इसलिये बादशाह ने मालवे का वह हिस्सा कि जो नरबदा के पार था ख़ानदेस के शामिल

اسپر بہت سے ہندو تو اپنی مسلمان عورتوں کے لئے مسلمان ہو گئے اور جو نہوئے اُن سے عورتین چھین لی گئین اور یہ حکم تمام ممالک محروسہ مین جاری ہو کر بہت سی مسلمان عورتین ہندوں سے چھینی گئین اور اُن کا نکاح مسلمانوں کے ساتھ کرادیا گیا۔

۲۴ - جمادی الاول کو دامن کوہ کانگڑہ کا راجہ جگت سنگھ ولد راجہ باسو اپنے ملک سے درگاہ مین حاضر آیا۔

۵ جمادی الثانی کو بادشاہ لاہور مین پہنچے چونکہ مہابت خان[1] خانخانان مر چکا تھا اس لئے بادشاہ نے کچھ حصہ مالوہ کا جو نربدا کے پار تھا خاندیس کے شامل کرکے دکن اور

[1] مہابت خان کے مرنے کی تاریخ معتمد خان نے زمانہ آرام یافت سے نکالی اور چونکہ مہابت خان کا اصلی نام زمانہ بیگ تھا اس لئے اسمین اور بھی لطافت پیدا ہوگئی۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करके ख़ान देस और दखन के २ हिस्से किये एक बाला घाट, और दूसरा पाईं घाट, बाला घाट में कुल दक्खन यानेदौलता बाद अहमद नगर पट्टन बीपर जालना पुर जलेर संगमेर फतहाबाद कुछ बराड़ और तमाम तिलंगाना था जिस की जमा १ अरब और २० करोड़ दाम की थी और पाईं घाट में तमाम ख़ान देस और बहुत सा हिस्सा बराड़ का था और जमा ९२ किरोड़ दाम थी

बाला घाट का सूबेदार तो ख़ान ख़ानां के बेटे ख़ान ज़मान को और पाईं घाट का सूबेदार ख़ान दौरां को किया और हुक्म दिया कि राजा जयसिंघ जुगराज और राव शत्रू शाल दौलता बाद में रहैं और पहाड़ सिंघ बुंदेला और माधो सिंघ हाडा

خاندیس کے دو حصہ کیے ایک بالاگہاٹ اور دوسرا پائین گہاٹ بالاگہاٹ مین کل دکن یعنے دولت آباد احمدنگر پٹن بیپر جالناپور جلیر سنگمیر فتح آباد اور کچھ محال برار کے اور تمام تلنگانہ شامل تہا جس کی جمع ایک ارب بیس کروڑ دام کی تہی۔

اور پائین گہاٹ مین تمام خاندیس اور اکثر حصہ برار کے تھے اور اوسکی جمع ۹۲ کروڑ دام کی تہی۔

بالاگہاٹ کا صوبہ دار تو خانخانان کے بیٹے خانزمان کو کیا اور پائین گہاٹ کی صوبہ داری خان دوران کو عنایت فرمائی اور حکم دیا کہ راجہ جے سنگھ کچھواہا جگ راج اور راؤ شتروسال تو دولت آباد مین رہین اور راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ اور مادہو سنگھ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बुरहान पुर में ॥

उदाजी राम का बेटा जगजीवन ३ हज़ारी ज़ात और ३ हज़ार सवारों का मनसबदार हुआ ॥

पोस बदी २ को राजा जगत सिंघ बंगश की थाने दारी पर खटक पठाणों को सज़ा देने के वास्ते जो वहां रहते हैं मुकर्रर हुआ खिल्लत जड़ाऊ खंजर और चांदी के साज़ का घोड़ा उस को दिया गया ॥

पोस सुदी ३ को राजा गजसिंघ का बेटा अमरसिंघ पांच सदी ज़ात और २०० सवारों के इज़ाफ़े से ढ़ाई हज़ारी ज़ात और डेड़ हज़ार सवारों का मनसब दार हुआ और उस को झंडा घोड़ा और हाथी भी मिला ॥

पोस सुदी ४ को शाहज़ादे औरंगज़ेब को १० हज़ारी मन

ہاڈا برہان پور مین -

اوداجی رام کا بیٹا جگجیون تین ہزاری ذات اور تین ہزار کا منصبدار ہوا -

۱۵- جمادی الثانی کو راجہ جگت سنگھ بائین بنگش کی تہانہ داری اور خٹک پٹھانون کی سزادہی پر جو اس سرزمین مین رہتے ہین مامور ہوا چلتے وقت خلعت خنجر مرصع اور چاندی کی زین کا گھوڑا اوسکو دیا گیا -

۲۹ جمادی الثانی راجہ گجسنگھ کے بیٹے امرسنگھ کے منصب مین پانصدی ذات اور دو سو سوارون کا اضافہ ہوا جس سے اوسکا منصب ڈہائی ہزاری ذات اور ڈیرہ ہزار سوارون کا ہوگیا اس عنایت کے ساتھ اوسکو علم اسپ اور فیل بہی مرحمت ہوا

۳ رجب کو شاہزادہ اورنگزیب کو دس ہزاری منصب اور سراپردہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

सब और लाल डेरा इनायत हु
आ अब तक ५०० रोज़ मिलते थे
महेस दास राठोड़ जो पहि
ले महाबत खां का नौकर था
माह सुदी ५ को बादशाही नौ
कर हुआ ५ सदी ज़ात और ४००
सवारों का मनसब मिला॥
साहूजी ने निजाम शाह के
कई नोकरों के साथ महाबत
खां के मरे पीछे दोलताबाद
के क़िले पर चढाई की थी कि
इतने में ख़ान दोरां मालवे से
बुरहान पुर में पहुंचा और वहां मा
धो सिंघ और मीर फैज़ुल्ला ख़ां
को छोड़ कर दोलता बाद को
र वाने हुआ मालूजी पर सूजी
राजा जय सिंघ और जुग राज
बुंदेला उसके साथ थे शिवगां
व में जा कर लाम बांधा आप बी
न की अनी में रहा जय सिंघ को
हिरावल किया साहू जी भाग

صرح عنایت ہوا ابتک پانسو
روپیہ روزینہ ملتا تھا۔
مہیش داس راٹھوڑ جو
پہلے مہابت خان کا نوکر تھا
۴۔ شعبان کو بادشاہی نوکر
ہوکر پانصدی ذات اور چارسو
سوارونکا منصب دار ہوگیا۔
ساہوجی نے بعد انتقال
مہابت خان خانخانان کے
معہ چند ملازمان نظام شاہ
قلعہ دولت آباد کے اوپر
چڑہائی کی مرتضی خان قلعہ مین
متحصن ہوا مگر خان دوران نے
مالوہ سے برہان پور مین پہنچکر
ہو سنگھ اور میر فیض اللہ خان
تو وہاں چھوڑا اور خود دولت آباد
طرف جاکر شیوگاؤن مین
لشکر آراستہ کیا آپ قول
ن رہا اور جے سنگھ کو ہراول
ں رکھا غنیم بھاگ گیا خان
ن تعاقب کرکے اوس کے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गया खान दौरां ने पीछा करके उसका डेरा लूट लिया और फिर वहां से चलकर अहमद नगर में दाखिल हुआ ॥ साह सुदी ९ को बादशाह लाहोर से लौटे चंबे के राजा प्रथी चंद को खिलत और घोड़ा देकर निजाबत खां के साथ कांगडे के पहाड़ की फौजदारी पर भेजा फागण सुदी ३ को शाहाबाद के मुकाम में राजा देवी सिंघ का मन सब इजाफ़ा होकर ढाई हज़ारी ज़ात और २००० सवारों का हो गया ॥ चैत बदी १ को बादशाह दिल्ली में दाखिल हुए चैत बदी ६ को जमना के किनारे घाट स्वामी में अबदुल्ला खान फ़ीरोज़ जंग सूबेदार बिहार जो रतन पुर के ज़िमींदार को सज़ा देने के वास्ते गया था	ڈیرے لوٹ لئے اور پھر احمد نگر مین جاکر داخل ہوا - اُسکے ساتھ جگراج مالوجی اور پرسوجی دکھنی بھی علاوہ راجہ جیسنگھ کے تھے ۷ر- شعبان کو بادشاہ نے لاہور سے مراجعت کی چنبہ کا زمیندار ر پرتھی چند خلعت اور گھوڑے سے سرفراز ہوکر نجابت خان کے ساتھ دامن کوہ کانگڑہ کی فوجداری پر مامور ہُوا - ۲- رمضان کو مقام شاہ آباد مین راجہ دیبی سنگھ پانصدی ذات کے اضافہ سے ڈہائی ہزاری ذات اور دوہزار سوار کے منصب کو پہنچا - ۱۵ر رمضان کو بادشاہ دہلی مین داخل ہُوے - ۲۰ر رمضان کو مقام گہاٹ سوامی کنارہ دریائے جون مین عبداللہ خان بہادر فیروزجنگ

In.Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हाज़िर आया वहां के राजा बाबू लछमन और दूसरे ज़मींदारों को साथ लाया जिन्हों ने बादशाह को नज़रें दीं ॥

रतन पुर की मुहिम का कुछ हाल

जबकि अबदुल्ला खां भागा घाटी से ४ कोस इधर पहुंचा जहां से रतन पुर ६० कोस रहता है तो बांधों गढ़ का राजा अमर सिंघ अपने लशकर के साथ उस से आ मिला जब उस घाटी में पहुंचे तो वहां के जमींदारों ने तीर और बंदूक की लड़ाई शुरू की मगर ख़ान ने उन को हटा दिया तब वह (तीनों यर) के मज़बूत किले में जो जंगलों के अंदर है जा घुसा लेकिन ख़ान ने वह किला भी फतह कर लिया और किले वाले अपनी औरतों और लड़कों को

صوبہ دار بہار حاضر آیا وہ بموجب حکم بادشاہ کے زمیندار رتن پور کی تادیب کے واسطے گیا تھا اور وہان کے راجا بابو لچھمن اور دوسرے زمینداروں کو ساتھ لایا جن کی نذر اور نچھاور بادشاہ کے حضور مین گذرانی ۔

رتن پور کی مہم کا کچھ حال

جب کہ عبید اللہ خان بہادر فیروز جنگ بھاگی گھاٹی سے چار کوس ادہر پہونچا جہان سے رتن پور ۶۰ کوس رہ جاتا ہے تو باندھون گڈھ کا راجا امر سنگھ مع اپنی جمعیت کے اُس سے آملا جب اس گھاٹی مین پہونچے تو وہاں کے زمینداروں نے تیر اور بندوق کی لڑائی شروع کی مگر خان نے اسکو ہٹا دیا تب وہ تینوں شہر کے مضبوط قلعہ مین جو جنگلون کے اندر ہے جا گھسے لیکن خان نے وہ قلعہ بھی فتح کر لیا اور قلعہ والے اپنی عورتون اور لڑکون

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आग में जला कर लड़े और
मारे गये फिर खान ने रस्ता
साफ करके रतन पुर पर धा
वा किया बाबू लछमन ने राजा
अमर सिंघ की मारफत सुलह
चाही खान ने सुंदर कबिराय
को जो बादशाह के पास से उस
के पास तइनात हो कर आया था
राजा के आदमियों के साथ बाबू
के पास भेजा और आप भी उस
के पीछे २ रवाने हुआ सुंदर क
बिराय के पहुंचते ही बाबू खा
न के पास हाज़िर आया ३ हाथी
तो उसी वक्त लाया ६ हाथी
और २ लाख रुपै २५ दिन में पे
श करना क़बूल करके खान
के साथ बादशाह के पास हा
ज़िर होने का इक़रार किया॥
चेत बदी १२ को मुकाम सु
लतान पुर परगने पलवल में
शाह जादे दारा शिकोह का बेटा

کو آگ مین جلا کر خان سے لڑے
اور مارے گئے پہر خان فیروز جنگ
نے راستہ صاف کر کے رتن پور
کے اوپر دہاوہ کیا بابو لچھمن نے
راجہ امر سنگہ کے معرفت صلح
چاہی خان نے سندر کب راے
کو جو بادشاہ کی پیشگاہ سے اوسکے
پاس تعینات ہو کر آیا تہا بابو
کے پاس بہیجا اور آپ بہی اسکے
پیچھے روانہ ہوا سندر کب راے
کے پہنچتے ہی بابو خان فیروز جنگ
کے پاس حاضر آیا تین ہاتھی
تو اوسی وقت لایا ٦ ہاتھی
اور دو لاکھ روپیہ نقد ٢٥ دن
مین پیش کرنا قبول کر کے خان
کے ساتھ بادشاہی درگاہ مین
حاضر ہونے کا بھی وعدہ کر لیا۔
٢٦ رمضان کو بمقام
سلطانپور پرگنہ پلول مین شاہزادہ
داراشکوہ کا بیٹا سلیمان شکوہ
پیدا ہوا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

सुलैमां शिकोह पैदा हुआ॥

चैत्त सुदी ३ संबत १६१९ को सोमवार के दिन बादशाह ने घाट स्वामी में मख़मली डेरा आम ख़ास खड़ा कर के उस के भीतर तख़्त ताऊस पर जलूस किया यह तख़्त १ लाख तोले सोने का ८६ लाख के जवाहिरात से २ किरोड़ रुपै की लागत में ७ बरस के अंदर तैयार हुआ था उस पर पन्नों के २ मोर बनाये गये थे और उनके बीच में १ जड़ाऊ पेड़ था बादशाह ने इस तख़्त पर बैठ कर खूब २ बख़शिशें कीं शाहज़ादों और अमीरों ने भी लाखों ही रुपै की पेशकशें दीं जिनकी मालियत २४ लाख रुपै से कम न थी॥

नरवर के राजा रामदास का मनसब पांच सदी ज़ात

روز دوشنبہ یکم شوال
و بادشاہ نے آگرہ کے پاس
ہاٹ سوامی مین خیمہ مخملی عام
و خاص کہڑا کرا کر اوسکے اندر
تخت طاؤس پر جلوس کیا جو
ک لاکہہ تولہ سونے کا ٨٦ لاکہہ
ے جواہرات سے مرصع دو
وڑ روپیہ کی لاگت مین
ات برسون کے اندر تیار
وا تہا اوسکے اوپر دو مور زمرد
کے بنائے گئے تھے اور اونکے
یچ مین ایک جڑاؤ درخت تہا
دشاہ نے اس تخت پر بیٹھکر
ب خوب بخششین کی شاہزادون
ور امیرون نے بھی بڑی
ی پیشکشین دین جو کل
٢٤ لاکہہ روپیہ کی مالیت
سے کم نہ تہین۔

نرور کے راجہ رام داس
کا منصب پانچ صدی ذات

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और २०० सवारों का होकर ढाई हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ार सवारों का होगया॥

बैसाख बदी ६ को राजा जयसिंघ का मनसब हज़ारी ज़ात इज़ाफ़ा होकर पांचहज़ारी ४००० सवारों का होगया॥

राजा बिट्ठल दास को हाथी इनायत होकर अजमेर की तरफ़ जाने की रुख़सत हुई॥

कांगड़े के फ़ौजदार निजाबत ख़ांने श्रीनगर फ़तह करने का ज़िम्मा किया था और २००० सवार मांगे थे जो बादशाह ने उस को दिये और वह सरमोर के ज़िमींदार को साथ लेकर उस मुहिम पर गया पहिले शेर गढ़ का किला जो श्रीनगर के ज़मींदार ने जमना के किनारे पर अपनी सरहद में बनाया था फ़तह किया और कालपी का किला लेकर

اور تین سو سواروں کا اضافہ ہو کر ڈھائی ہزاری ذات اور ڈیڑھ ہزار سواروں کا ہو گیا۔

۱۵- شوال کو شرف آفتاب کے دن راجہ جے سنگھ ہزاری ذات کے اضافہ سے پنجہزاری ذات اور چار ہزار سوار کا منصبدار ہو گیا

راجہ بٹھل داس کو ہاتھی عنایت ہو کر اجمیر کی طرف جانے کی رخصت ہوئی۔

نجابت خان تھانہ دار دامن کوہ پنجاب نے سری نگر فتح کرنے کا ذمہ کیا تھا اور دو ہزار سوار مانگے تھے جو بادشاہ نے اوسکے پاس تعینات کر دیے تھے وہ سرمور کے زمیندار کو ساتھ لے کر گیا پہلے شیر گڈھ کا قلعہ جو سری نگر کے زمیندار نے جمنا کے کنارے پر اپنی سرحد میں بنایا تھا فتح کیا اور کالپی کا قلعہ لے کر سرمور کے زمیندار کو دیدیا کیونکہ وہ دراصل

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सरमोर वाले को देदिया क्यों।
के वह असल में उसी का था फि
र सरमोर वाले ने कहा कि श्री नग
र के जमींदार ने मेरा किला बैरा
ट का भी दबा रक्खा है जो मेरे साथ
फ़ौज भेजो तो छुड़ालूं निजाबतखां
ने फौज भेजकर वह किला भी उस
को छुड़ा दिया इस के पीछे निज़ा
बतखां ने कालपी से कूच किया
और सातौर का किला फतह क
रके लक्खनपुर के ज़मींदार जग
तू को वहां १०० सवार और १०००
प्यादों से रक्खा फिर आगे जाक
र गंगा के किनारे तक क़ब्ज़ा
कर लिया जब हरिद्वार के पास
गंगा जी से उतरा तो सुना कि दु
शमन ने नलाव के घाटे को रो
क रक्खा है और रस्ता भी पत्थर
और चूने से बंद कर रक्खा है य
ह घाटा श्री नगर के पहाडों में है
ख़ान गूजर गवालियरी (१)

اسی کا تھا پھر زمیندار سرمور نے
کہا کہ زمیندار سری نگر نے میرا قلعہ
بیراٹ بھی دبا رکھا ہے اگر میرے
ساتھ کچھ جمعیت کر دو تو چھوڑا لون
نجابت خان نے کچھ فوج اوسکے
ساتھ تعینات کی اور وہ قلعہ چھوڑا کر
زمیندار سرمور کے حوالہ کیا پھر
نجابت خان نے کالپی سے جاکر
قلعہ سانتور لیا اور جگتو زمیندار
لکھن پور کو سو سوار اور ہزار
پیادون سے وہان رکھا اور
آگے جاکر دریاے گنگ
تک قبضہ کر لیا اور جب گنگا
سے ہردوار کے قریب اُترا
تو سُنا کہ غنیم نے نلاو کے
گھاٹ کو فوج سے روک رکھا
ہے اور راستہ کو چونہ اور
پتھرون سے بند کر دیا ہے
یہ گھاٹ سری نگر کے پہاڑون
میں ہے۔
نجابت خان گوجر گوالیاری [1]

(१) सहानामगुलेरीमालूमहोताहै।

(۱) صحیح گلیری معلوم ہوتا ہے۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और उदयसिंघ राठौड़ को लश
करकी हिफ़ाज़त परछोड़ कर
आगेबढ़ा और बड़ीलड़ाई लड़क
र उसघाटे को फ़तह किया और
गूजर वग़ैरा को बुलाकर श्रीनग
रपर रवानेहुआ जब श्रीनगर ३०
कोसरहगया तोवहांके जमींदार
नेवकीलभेज कर १० लाखरुपे
बादशाह के लिये और १ लाखनि
जावतखां के लिये देना कबूलकि
ये मगर शर्त यह कीकि मेरा मुल्क
खराबनकरें खानने मंज़ूरकि
या कुछदिनो पीछे ज़मींदारका
वकील कुछ चांदी कासामानले
कर आया और बाकी को १५ दिन
में भेजने का क़ौल किया मगर
राजाने उसको ज़बानी लशकरकी
तंगीकाहालसुनकर कुछ नहीं भेजा औ
र इकरारही इकरार में डेढमहीना नि
काल दिय और इस अरसेमें
तमाम रस्ते बंध करादिये जिस

اور اودی سنگھ راٹھوڑ کو
لشکر کی حفاظت پر چھوڑ کر آگے
بڑھا اور بعد جنگ عظیم اوس
گھاٹ کو فتح کیا اور گوجر وغیرہ
کو اپنے پاس بلاکر سری نگر
کے اوپر روانہ ہوا جب وہ
مقام ۳۰ کوس پر رہا تو
وہاں کے زمیندار نے وکیل
بھیجکر دس لاکھ روپیہ سرکار والا
کے لئے اور ایک لاکھ خان
کے لئے دینا قبول کئے مگر
یہ شرط کی کہ میرا ملک پامال نہ
کریں خان نے یہ قبول کیا تو
کچھ روز بعد زمیندار کا وکیل
کسیقدر سامان چاندی کا پیشکش
کے طور پر لایا اور باقی کے واسطے
پندرہ دن میں بھیجنے کا اقرار کیا
مگر راجہ نے اوسکی زبانی لشکر کی تنگی
کا حال سنکر پھر کچھ نہ بھیجا اور اقرار ہی
اقرار میں ڈیڑھ مہینہ نکال دیا اور
تمام راستہ بند کر دیئے جس سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेरसद आना मोकूफ़ होगई और १ का नाज १ सेर मिलने लगा। ख़ान ने गफ़लत से कुछ बंदोबस्त न किया और गूज़र गवालेरी को रसद लाने के वास्ते भेजा वह लशकर से ५ कोस दूर गया था कि दुशमनों ने उस के ऊपर हमला किया और वह बहादुरी से जंग करके अपने बेटों और साथियों समेत मारा गया तब दुशमन ख़ान के लशकर पर धावे कर के गोफन और बंदूक मारने लगे निजाबत ख़ां लाचार होकर लौटा आगे रस्ते बंद थे इससे लशकरी पैदल ही इधर उधर भागे जो फिर जीते नहीं आये निजाबत ख़ां थोड़े से आदमियों से बड़ी मुशकिलों के साथ जान बचाकर निकला लेकिन रूपचंद गवालेरी वग़ैरा जो ग़ैरत और मरदमी से इसतरह निकलना नहीं

رسد کا آنا موقوف ہو گیا اور ایک سیر غلہ ایک روپیہ میں ملنے لگا۔ خان نے غفلت سے خود کچھ بندوبست نہ کیا اور گوجر گوالیاری کو رسد لانے کے واسطے بھیجا وہ لشکر سے پانچ کوس دور پہونچا تھا کہ دشمنوں نے اوسکے اوپر حملہ کیا وہ بہادری سے لڑا اور معہ اپنے بیٹوں اور رشتہ داروں کے مارا گیا بعدہ لوگ خان کے لشکر پر حملہ آور ہوکر بندوق اور گوپھن مارنے لگے نجابت خان مجبور ہوکر لوٹا آگے رستے بند تھے اس سبب سے بہت لوگ لشکر بادشاہی کے پیدل ہی ادہر اودہر بھاگے مگر زندہ بچکر نہیں آئے نجابت خان البتہ بمشکل تمام چند آدمیوں سے جان بچا کر نکل گیا لیکن روپ چند گوالیاری اور کچھ دوسرے لوگ کہ جن کو غیرت اور مردی نے اسطرح نکلنے کی رخصت نہ دی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाहते थे लड़कर वहीं काम आ
ये लशकर की यह ख़राबी उस
नादान सरदार (निजाबत खां)
की बेतदबीरी से हुई जिस से ख़
फ़ा हो कर बादशाह ने उस काम
नसब जागीर समेत उतार लि
या और शह नवाज़ खां के बेटे अ
ब्दुल रहीम खां ख़ान ख़ानां के
पोते मिरज़ा खां को ख़िलत देकर
उसकी जगह कांगड़े की फ़ौज
दारी पर भेजा ॥

जुझार सिंघ बुंदेले का बाग़ी होना

बादशाह ने जुझार सिंघ
के अगले क़सूर सन २ जलूसी
में बख़्श दिये थे तब से वह दकव
न में तईनात था पिछले दिनों में
महाबत खां ख़ान ख़ानां से रुख़
सत लेकर वतन में आगया था
और अपने बेटे बिकमाजीत को
दकवन में छोड़ आया था यहां

وہین لڑکر مارے گئے
سردار ناآزمودہ کار کی
بے تدبیری سے ایسی شکست
بادشاہی لشکر کو پہونچی جس
سے بادشاہ نے خفا ہو کر نجابتخان
کا منصب معہ جاگیر کے
ضبط کرلیا اور مرزاخان
کو جو شاہ نوازخان کا بیٹا
اور عبدالرحیم خان خانان
کا پوتا تھا خلعت دے کر
کانگڑہ کی فوجداری پر بھیجا۔

جوجھار سنگہ بندیلہ کا باغی ہونا

بادشاہ نے جوجہار سنگہ کے
اگلے قصور سنہ ۲ جلوسی مین
بخش دئے تھے اور اسکو دکہن
مین تعینات کیا تہا مگر وہ مہابت خان
خان خانان سے رخصت لیکر
وطن مین آگیا تہا اور اپنے بیٹے
بکرماجیت کو دکن مین چھوڑ آیا
تھا یہان اُس نے گڈہ کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसने गढे के ज़मींदार पेमनरा
यण के ऊपर चढ़ाई की और ध
र्म कर्म देकर पेमनरायण को जो
रागढ के किले से जो उस मुल्क की
पाट जगह है बाहर बुलाया और
फिर सब साथियों समेत जो अक
सर उसके भाई बंध थे मारकर
जोरा गढ के किले और उसमें के
तमाम माल और खज़ानों पर क़
बज़ा कर लिया पेम नरायण का
बेटा जिसको मालवे का सूबेदा
र खान दौरां नज़राने के साथ ला
या था दरगाह में हाज़िर था उसने
यह सारा हाल बादशाह से अर्ज़
किया बादशाह ने जुझार सिंघ
को सुंदर कबि राय के हाथ फर
मान भेज कर लिखवा कि उस ने
जो बग़ैर हुक्म दरगाह के पेमना
रायण और उस के भाई बंदों को
मारा है तो अब कुल मुल्क गढ की
बादशाही नौकरों के हवाले करदेवे

زمیندار بہیم نارائن کے اوپر
چڑہائی کی اور عہد و پیمان کرکے
بہیم نارائن کو قلعہ جوراگڈہ سے
جو حاکم نشین ہے باہر بلایا
اور معہ تمام ہمراہیون کے جو
اکثر اوس کے اہل خاندان تھے
قتل کرکے قلعہ جوراگڈہ اور
وہان کے اموال اور خزاین
پر قبضہ کرلیا بہیم نراین کا بیٹا
جسکو خاندوران صوبہ دار مالوہ
معہ پیشکش کے لایا تہا درگاہ
مین حاضر تہا اوس نے یہ
سب حال بادشاہ سے
عرض کیا بادشاہ نے سُندر
کب رائے کے ہاتھ جوجہار سنگہ
کو فرمان بہیجکر لکہا کہ اُس نے
بلا حکم درگاہ کے بہیم نراین
اور اوسکے متعلقین کو مارا ہے
اب اوس کی خیریت اسی مین
ہے کر ولایت گڈہ کو بادشاہی
بندون کے حوالے کرے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

ओर जो अपनी जागीर में चाहि
ता हो तो उतना मुल्क अपने वत
न के पास का छोड़ दे और १० ला
ख रुपै भेम नारायण के ख़ज़ा
नों में से भेज दे इस हुक्म की ख़
बर पहिले ही उसके वकीलों की
लिखावट से पड़ गई थी इसलि
ये उसने अपने बेटे बिक्रमाजी
त को बुलाया और वह बालाघा
ट से फ़ौरन चल दिया वहां के सू
बेदार ख़ान ज़मां ने तो कुछ नहीं
किया लेकिन पाईं घाट के सूबे
दार ख़ान दोरां ने जुझारसिंघ
के भाई यों राजा पहाड़ सिंघ औ
र चंद्र मणि बुंदेला माधो
सिंघ हाड़ा राव करण नज़र ब
हादुर और मीर फ़ैज़ुल्ला वग़ैरा
तमाम मनसबदारों के साथ पी
छा किया और ५ दिन में मुकाम
आसटा इलाक़े मालवे के पास
बिक्रमाजीत को जा लिया लड़ाई

اور جو اپنی جاگیر مین مقرر کرانا
چاہتا ہو تو اوسی قدر ملک اپنے
وطن کے پاس کا چھوڑ دے
اور دس لاکھ روپیہ بھیم ناراین
کے خزانون سے روانہ درگاہ
کرے مگر یہ حکم شاہی قبل از
جاری ہونے کے اُسکو اسکے
وکیلون کے ذریعہ سے
معلوم ہوگیا اس لئے اُس نے
اپنے بیٹے کو بلایا وہ بالاگھاٹ
مین خان زمان کے پاس تھا
فوراً وہان سے چلدیا خانزمان
نے کچھ تدارک نہین کیا لیکن پائین
گھاٹ کے صوبہ دار خاندوران نے
معہ مادھو سنگھ ہاڈا راو کرن ونظر بہادر
و میر فیض اللہ وغیرہ تمام منصبداران
و راجہ پہاڑ سنگھ و چندر من
بندیلہ کے جو جوجھار سنگھ کے
بھائی تھے تعاقب کرکے بکرماجیت
کو پانچ دنمین بمقام آشٹہ علاقہ مالوہ
جا لیا بکرماجیت لڑا اور زخمی ہو کر

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऊई जिस्में बिक्रमाजीत ज़रव़ मीहोकर भागा और जंगल के रस्ते २ धामूनी में अपने बाप से जा मिला मालवे का सूबेदार अल्लावेरदी ख़ां रस्ते में था तो भी उसका पीछा न कर सका और न ख़ानदौरां के साथ ऊआ ॥

बादशाह ने यह ख़बरें सुनकर ३ सरदारों को २० हज़ार फ़ौज से इस मुहिम पर तईनात किया

१ अबदुल्ला ख़ां फ़ीरोज़ जंग सूबेदार पटना २ सैयद ख़ानजहां ३ ख़ानदौरां जो मालवे में ऊक्म का मुनतज़िर बैठा था ॥

गज़ सिंघ का बेटा अमरसिंघ, किशन सिंघ भदोरिया, रूपाराम गोड़, अनूपसिंघ का बेटा जयराम, राव रतन हाडा का पोता इंद्रसाल, जगन्नाथ कछवाहे का पोता रूपसिंघ यह सब ख़ान जहां

...ل کو بہاگا جہان سے دہاموِنی
...ں اپنے باپ کے پاس جا پہنچا
...وہ کا صوبہ دار الہ ویردی خان
...رچہ وہ کیہ راستہ مین تہا
...و خاندوران کے ساتھ ہوا
...ر نہ اُس کا تعاقب
...کا۔

بادشاہ نے یہ خبرین
...نکر تین سرداروں کو جو جہار سنگہ
...ے اوپر تعینات کیا اور بیس
...ر فوج اُنکے ہمراہ روانہ کی۔
(۱) عبداللہ خان بہادر فیروز جنگ
...بہ دار پٹنہ۔
(۲) سید خانجہان۔
(۳) خاندوران جو مالوہ مین
منتظر حکم تہا۔
خانجہان کے ساتھ راجپوت
...داروں مین سے امر سنگھ
...راجہ گجسنگھ۔ کشن سنگہ بہدوریہ
...رام گوڑ جی رام ولد انوپ سنگھ اندر
...ی نبیرہ راو رتن ہاڈا اور روپ سنگھ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

के साथ दिये गये और अब्दुल्ला
खां के साथ बांधों को राजा अम
र सिंघ चंद मणि बुंदेला और रा
जा सारंगदेव तई नात किये गये
अल्ला वेरदी खां को बुरहानपु
र जाने का हुकम पहुंचा मालवे
की सूबेदारी ख़ान दौरां को इ
नायत हुई और हुकम हुवा कि
राव रतन के बेटे माधोसिंघ हाडा
भारत बुंदेले के बेटे राजा देवीसिं
घ वग़ैरा मनसबदारों के साथ चं
देरी के रास्ते बिभोर को जावें औ
र बरसात के गुज़रने तक वहीं
रहैं ॥

जुभारसिंघ ने इन फ़ौजों
के आने में अपनी ख़राबी देख
कर ख़ान ख़ानां की मारफ़त बा
दशाह से अरज़ कराई कि जो
कोई बादशाही चाकर मेरे पा
स आवे तो मैं उसके वसीले से अप
नी अरज़ मारूज़ करूं बादशाह

نبیرہ جگناتھ کچھواہہ تعینات کئے
گئے اور خان فیروز جنگ کے
ساتھ راجہ امر سنگہ زمیندار
باندہون گڈھ چندر من بندیلہ
اور راجہ سارنگ دیو متعین ہوئے
اللہ ویردی خان کو برہان پور
جانے کا حکم ہوکر خاندوران کو
مالوہ کی صوبہ داری عطا ہوئی اور
یہ حکم پہونچا کہ معہ مادہو سنگہ ولد
راو رتن ہاڈا اور راجہ دیبی سنگہ
ولد راجہ بہارت بندیلہ وغیرہ
کے چندیری کے راستہ سے
بہور کو جاوے اور برسات
کے گذرنے تک وہین رہے -

جوجہار سنگہ نے ان فوجون
کے آنے مین اپنی خرابی دیکھکر
خانخانان کی معرفت بادشاہ
سے عرض کرائی کہ اگر کوئی بادشاہی
ملازم میرے پاس آوے تو مین
اوسکے ذریعہ سے اپنی عرض
معروض کراؤن بادشاہ نے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने सुंदरकबिराय को भेजक
रफ़रमाया कि जो ३०लाख रुपै
नक़द और जो रागढ के बदले बे
तवां का ज़िला नज़र करे तो उस
का कसूर माफ किया जावेगा औ
र फ़ौज के सरदारों को हुक्म दि
या कि जब तक सुन्दर कबिरा
य लौट कर न आवे सब अपनी २
जगह पर थमे रहें और जो जुझार
हुक्म सिंघ की तामील न करे तो ओंड
छा फ़तह करके उस की हकूमत
और कौम बुंदेले की राजगी राजा
देवी सिंघ को देदेवें जिसके बा
पदादे क़दीम से मालिक थे मग
र जहांगीर बादशाह ने अबुल फ़
ज़ल को मार डालने के इनाम में
बरसिंघदेव को इनायत कर
दी थी ॥

सुंदर कबिराय गया और
यह मालूम करके कि जुझार सिं
घ अपने मुल्क माल किलों और

سندرکب راے کو بہیجکر کہلایا
کہ جو ۳۰ لاکہہ نقد اور جوراگڈہ کے
عوض بیتوان کا قلعہ نذر کرے
تو اُسکا قصور معاف کیا جاویگا
اور سرداران فوج کوتا واپسی سُندر
کب راے کے اپنی اپنے مقام
پر ٹھیرے رہنے کا حکم دیا اور یہ بھی
فرمایا کہ اگر جوجہار سنگہ تعمیل
نکرے تو اونڈچہ کو فتح کرکے
اوس ملک کی راجگی اور قوم
بندیلہ کی سرداری راجہ دیبی سنگہ
کو دیدین جسکے باپ دادے
قدیم سے مالک تھے اور جہانگیر
بادشاہ نے بعوض قتل شیخ ابوالفضل
کے اُنسے یہ حکومت اور ریاست
ضبط کرکے جوجہار سنگہ کے باپ
برسنگدیو کو عنایت کردی تہی۔

سندرکب راے گیا
اور یہ معلوم کرکے کہ جوجہار سنگہ
اپنے ملک مال قلعون اور
جنگلون کے بہروسہ بہولا ہوا ہے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंगलों,के भरोसे मूलाऊ आहे पीछा लैट आया तब बादशाह ने तीनों सरदारों को हल्ला करने का हुक्म लिखवा दिया और कुल फ़ौज की अफ़सरी के वास्ते शाहज़ादे औरंगज़ेब को १० हज़ारी ज़ात और १० हज़ार सवारों का मनसब देकर आसोज बदी २ को रवाने किया इसके साथियों में राजा बिट्ठल दास गौड़ राजा रायसिंघ महाराजा भीम का बेटा गोकल दास सीसोदिया और महेस राठोड़ थे ॥

बरस ९

आसाढ सुदी ३ संबत १६९२ से आसाढ़ सुदी २ संबत १६९३ तक

सावण अव्वल बदी २ को बादशाह ने १ नई किताब बनाने के इनाम में जो पसंद हुई थी जगन्नाथ कलावंत को जिसका खिताब कबिराय या हाथी इ

واپس چلا آیا بادشاہ نے تینون سردارون کو حملہ کرنے کا حکم دیا اور افسری کل کے واسطے شاہزادہ اورنگ زیب کو دس ہزاری ذات اور دس ہزار سوارون کا منصب دے کر تاریخ ۱۵ - ربیع الثانی ۱۰۴۵ھ کو روانہ کیا اُسکی رفاقت مین راجپوتون مین سے راجہ بٹھلداس گوڑ راجہ رائے سنگہ ولد مہا راجہ بھیم گوکلداس سیسودیہ اور مہیش داس راٹھوڑ تھے

برس نوان

سنہ ۱۰۴۵ ہجری
۷ جون سنہ ۱۶۳۵ء سے
۲۶ مئی سنہ ۱۶۳۶ء تک

۱۶ محرم کو ایک تازہ تصنیف کے صلہ مین جو پسند ہوئی تھی جگناتھ کلاونت مخاطب کب رائے کو ہاتھی عنایت ہوا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नायत किया ॥

भादों बदी २ को राजा देवीसिंघ को नक़ारा इनायत हुआ ॥

भादों सुदी १० को बादशाह ने बलख़ के एलची को १ भारी खिलत और ५० हज़ार रुपैये दे कर बिदा किया और उसके साथ अपना वकील भी सवा लाख रुपैये की सोग़ातें देकर नज़र मुहम्मद खां के पास रवाने किया ॥

भादों सुदी १५ को राजा जय सिंघ दक्खन से आकर दरबार में हाज़िर हुआ ॥

असोज बदी ५ को बादशाह रथ में बैठ कर दोलताबाद का क़िला देखने को रवाने हुये

॥ उरछे की फ़तह

जब बरसात हो चुकी तो बादशाही अमीर भांडेर में जमा

۱۶- ربیع الاول کو راجہ دیبی سنگھ کو نقارہ مرحمت ہوا-

۱۰ ربیع الثانی کو بادشاہ نے بلخ کے ایلچی کو خلعت فاخرہ اور مبلغ پچاس ہزار روپیہ نقد دے کر رخصت کیا اور اُسکے ساتھ اپنا وکیل بھی معہ تحایف قیمتی ایک لاکھ روپیہ کے نظر محمد خان والی بلخ کے پاس روانہ فرمایا-

۱۴- ربیع الثانی راجہ جے سنگھ کچھواہہ دکہن سے آکر دربار مین حاضر ہوا-

۱۸- ربیع الثانی کو بادشاہ رتھ مین بیٹھ کر قلعہ دولت آباد کے دیکھنے کو دکہن کی طرف روانہ ہوئے-

فتح اونڈچھہ

جب برسات ہو چکی تو بادشاہی امیر بھانڈیر مین جمع

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुए और वहां से उरछे के ऊपर
चलकर उसके पास पहुंचे तो ३
कोस से जंगल काटने पड़े जुझा
रसिंघ ५ हज़ार सवार और १० ह
ज़ार पैदलों से उरछे में था हररोज़
उसके आदमी जंगल में से तीर औ
र बंदूक छोड़ा करते थे बादशा
ही फ़ौज कातिक सुदी १ को गां
व रबसर डानी में पहुंची जहां से
उरछा १ कोस था राजा देवीसिंघ
ने ख़ान दौरां के साथ हमला क
रके वहां की पहाड़ी जुझार सिं
घ के आदमियों से छीन ली तब
तो जुझार सिंघ ने अपने क़बीलों
और ख़ज़ानों को उरछे से धामूनी
के क़िले में भेज दिया यह बहुत
मज़बूत क़िला उसके बाप का
बनाया हुआ था जिस के ३ तरफ़
दलदलें हैं जिनके मारे सुरंग
और सलामत कूंचों की कारर
वाई नहीं हो सकती पच्छम की

ہوئے اور واسطے فتح اونڈچھ
کے روانہ ہوکر جب اوسکے پاس
پہنچے تو ۳ کوس سے جنگل کاٹنے
پڑے جوجہار سنگہ پانچہزار سوار
اور دس ہزار پیدلون سے
اونڈچھ مین تہا ہر روز اوسکے
آدمی جنگل مین سے تیر اور
بندوق مارا کرتے تھے جن سے
بادشاہی لشکر لڑتا بھڑتا ۲۹-
ربیع الثانی کو مقام کھمرڈانی
مین جو اونڈچھہ سے ایک کوس
تہا پہونچا تب راجہ دیبی سنگہ
نے سعد خاندوران کے حملہ کرکے
کھمرڈالی کی پہاڑی کو جوجہار سنگہ کے
آدمیون سے چہین لیا جوجہار سنگہ
نے اپنے عیال اطفال اور زر
سرخ و سفید کو اونڈچھہ سے نکالکر
قلعہ دہامونی مین بہیجدیا یہ قلعہ
اوسکے باپ کا بنایا ہوا تہا اور بہت
مضبوط تہا تین طرف تو دلدلین
تھین جنکے مارے سرنگ اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

तरफ़ मैदान है सो उधर २० ग
ज़ गहरी खाई खोद कर दल
दलों से मिलादी है॥

फिर कुछ लोगों को उ
रछे की हिफ़ाज़त पर छोड़ क
र खुद भी बिक्रमाजीत समेत
भाग गया तब असोज सुदी ३ सो
मवार को बादशाही सिपाहियों
ने कमंद और नसीनयों से ऊपर
चढ कर किला फ़तह कर लि
या और १ रोज़ रहकर इलाके स
मेत राजा देवीसिंघ को बमूजि
बहुक्म बादशाह के दे दिया औ
र असोज सुदी ५ को धारा नदी
से उतर कर जुझार सिंघ का पी
छा किया। आसोज सुदी १५ को धा
मूनी से ३ कोस पर पहुंचे तो मालू
म हुआ कि जुझार सिंघ अपने
बाल बच्चों और ख़ज़ानों को वहां
से भी निकाल कर जोरागढ़ के
किले में लेगया है जिस की मज़

…ت کو چون کی کارروائی
…ین ہوسکتی تہی اور پچہم کی طرف
…یدان میں ۲۰ گز گہری کہائی کہود
…لدلون سے ملا دی تہی۔
پہر کچھ لوگون کو اونڈچھ کی
…فاظت پر چہوڑ کر خود بہی معہ بکرماجیت
…ے بہاگ گیا۔
…شنبہ ۲ جمادی الاول کو بادشاہی
…ون نے کمند اور زینہ کے ذریعہ
…ے چڑھکر قلعہ فتح کر لیا اور ایکروز
…راجہ دیبی سنگہ کو وہان چہوڑا
…لکہ قلعہ اونڈچھ معہ مضافات کے
…کو بادشاہ کے حضور سے عنایت
…واتہا۔
…۴ جمادی الاول کو بادشاہی
…رادریائے دہارا سے جو اونڈچھ
…ے قریب ہے گذر کر جوجہار سنگہ
…ے تعاقب مین روانہ ہوئے ۱۴ کو
…امونی سے ۳ کوس اودہر پہنچے
…معلوم ہوا کہ جوجہار سنگہ اپنی اہل و عیال
…معہ خزانہ کے وہان سے نکالکر جوراگڈہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बूती का उसको ज़ियादा भरोसा
था और घामूनी के कोट को गि
राकर रतनां नाम १ शख़्स कुछ
भरोसे बंद आदमियों के साथ व
हां छोड़ा है बादशाही फ़ौज ने
घामूयी को घेरा और किलेवा
लों ने आधीरात तक बराबर बा
ण और बंदूकों से जंग की मगर
फिर ख़ान दौरां के पास आदमी
भेजे और लड़ाई बंद करदी फ़ौ
ज के अफ़सरों का इरादा सुब
ह के वक्त क़िले में जाने का था
कि लुटेरों ने अंदर घुसकर लू
ट मचादी ख़ान दौरां उनके रोक
ने के वास्ते गया इत्तफाक से लु
टेरों की मशाल का १ फूल बुरज
में गिरा और बारूद जो वहां थी
भबक उठी उससे ८० गज़ दी
वार जो ३० गज़ चौड़ी थी बुरज
समेत उड़ गई उसकी धमक
और पत्थरों की चोट से बहुत

کو کر جسکی مضبوطی پر اُسکو زیادہ
اعتماد تھا لے گیا ہے اور حصار دہامونی
کو گرا کر رتنا نام ایک شخص کو معہ
اپنے بعض معتمدون کے وہان
چھوڑ گیا ہے بادشاہی اُمرا نے
دہامونی کو گھیرا قلعہ والون نے
آدھی رات تک برابر بان اور
تفنگ سے جنگ کی پھر خاندوران
کے پاس آدمی بھیجے اور لڑائی بند
کردی سرداران لشکر نے صبح کے
وقت قلعہ مین جانے کی ٹھہرائی
تھی مگر لوٹیرون نے اُن سے
پہلے قلعہ مین گھسکر لوٹ مار شروع
کردی خاندوران اُنکے روکنے
کے واسطے گیا اتفاق سے لوٹیرون
کی مشعل کا گل ایک برج مین گرا
جس سے وہان کی بارود اُڑ گئی
اور ۸۰ گز دیوار جسکا عرض ۳۰ گز
تھا معہ اُوس برج کے گر پڑی
جس کے صدمہ اور پتھرون کی
ضرب سے بہت سے آدمی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से सिपाही मारेगये जिनमें ज़ियादा आदमी राजा गजसिंघ के बेटे अमरसिंघ के थे ख़ान जहांने किले के माल और ख़ज़ाने का बंदोबस्त किया दूसरे दिन बाज़े लोगोंने जो घास लकड़ी के वास्ते जंगल में गयेथे एक कुंआ रुपयों से भरा पाया और तलाश करने से दोतीन कुएं और भी मिले जिनमें से ढाई लाख रुपया हाथ आया इससे मालूम हुआ कि जुझारसिंघ ने जंगल में कुए खोदकर अपना ख़ज़ाना छुपा दिया था ॥

जुझारसिंघ इस वक्त जोरा गढ से २ कोस शाहपुरे में था उसने अपना आदमी देवगढ में भेजा था कि जो वहां का ज़मींदार उसकी बातों में आजावे तो उसके मुल्क में भागजावे और रहने के वास्ते किले जोरागढ़ को भी सजाता था ॥

ے گئے اُنمین زیادہ تر راجہ
سنگھ کے بیٹے امرسنگھ
راجپوت تھے پھر خاندوران
نقد وجنس قلعہ کو ضبط کیا
رے دن بعضے لوگون
جو جنگل مین واسطے لانے
س لکڑی کے گئے تھے
کنوان روپیون سے بھرا
پایا اور تلاش کرنے پر تین
ن اور نکلے جنمین سے ڈھائی
روپیہ ہاتھ آیا اس سے معلوم
کہ جوجھار سنگھ نے جنگل مین
ن کھودکر اپنا خزانہ پوشیدہ
ررکھا تھا۔

جوجھار سنگھ اسوقت جوراگڈھ
دو کوس قصبہ شاہپور مین تھا
اپنا آدمی زمیندار دیوگڈھ کے
س بھیجکر اس بات کا منتظر تھا
وہ اسکی باتون مین آجاوے
اسکے ملک مین چلا جاوے
اسکے سوائے وہ قلعہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बादशाह का हुक्म आया कि सैयद खान जहां तो मुल्क के बंदोबस्त और खज़ाने की तहक़ीक़ात के लिये वहां रहे अबदुल्ला खां और खानदौरान सब अमीरों को ले कर रवाने जोरागढ़ हों सो ये सब कातक बदी ११ को रवाने होगये॥

इतने में जुझार सिंघ ने देवगढ़ के ज़मींदार के मरने की खबर सुनी तो जोरागढ़ की तोपों को तोड़ कर यहां जो असबाब था उस को जला दिया और पेम नारायण की इमारतों को जो क़िले में थीं बारूद से उड़ा कर अपने बच्चों और माल असबाब समेत लानजी और क़रोले के रस्ते से जो ज़मींदार देवगढ़ की सरहद में था दक्खन का रस्ता लिया॥

बादशाही लशकर जब

کو بھی مضبوط کرنے کی فکر میں تہا۔
بادشاہ کا حکم آیا کہ سید خانجہان
تو ضبط ولایت مفتوحہ اور تحقیقات
خزاین کے لئے وہان رہے اور
عبد اللہ خان وخان دوران معہ
تمام اُمرا کے روانہ جوراگڈہ ہون
چنانچہ ۵ ۲ کو یہ سب روانہ ہوگئے
اودہر جوجہار سنگہ نے سُنا کہ زمیندار
دیوگڈہ مرگیا اس سے وہ جوراگڈہ
کے قلعہ کی توپون کو توڑ کر اور وہان
جو اسباب تہا اوسکو جلا کر اور پیم نراین
کی بنائی ہوئی عمارتون کو جو اندر
قلعہ کے تہین بارود سے اُڑا کر
معہ اہل وعیال ومال ومنال
کے لانجی وکیر ولہ کی راہ سے جو
داخل ملک زمیندار دیوگڈہ
ہے دکہن کی طرف روانہ
ہوا بادشاہی لشکر جب جوراگڈہ
کے سواد مین پہونچا تو خاندوران
نے اندر جاکر ایک مندر کی چہت پر
اذان دی اور کچھ منصبدارون کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जोरागढ़ की तलहटी में पहुंचा तो ख़ान दौरां ने अंदर जाकर १ मंदिर की छत पर बांग दी और कुछ मनसबदारों को जिन्में गन्नोर के ज़िमींदार का टीकाई कंवर भी था वहां छोड़ कर शाह पुरे को अब्दुल्ला ख़ां की तरफ़ कूंच किया ॥

क़रेली के चौधरी राघो ने ख़ानदौरां के पास आकर कहा कि झुझारसिंघ २००० सवारोर ४००० पैदलों से जा रहा है उसके हाथ ६० हाथी और ४० हथनियां हैं जिनमें से बाजों के ऊपर नोरोकड़ रुपया और चांदी सोना लदा हुआ है और कितने कों के ऊपर उसके बालबच्चे हैं और इस बोझभार के सबब से हर रोज़ मुश्किल से वहां ४ कोस चलता है जो मामूली ८ कोस के बराबर होते हैं यह सुनकर बादशा

جن مین پسر ٹیکہ سنگرام گنور تھی تہا وہان چہوڑ کر خان فیروز جنگ کے پاس شاہپور کو مراجعت کی راگھو چودہری چہ کریلی نے خان دوران سے آکر کہا کہ جوجہار سنگہ معہ دو ہزار سوار و چار ہزار پیدل ساٹھ ہاتھی اور چالیس ہتنیون کے کہ جن مین سے کتنے ایک کے اوپر زر نقد اور سونے چاندی کے سامان لدے ہوئے ہین اور کتنے کے اوپر اوس کے اہل و عیال سوار ہین جا رہا ہے اور بوجھ بھار زیادہ ہونے سے ہر روز گونڈوانہ کے چار کوس سے زیادہ کہ جو رسمی آٹھ کوس ہوتے ہین نہین چل سکتا ہے یہ سنکر بادشاہی امرا اوس کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

ही सरदार उसके पीछे रवाने हु
ए उनके पीछे २ शाहज़ादा औ
रंगज़ेब भी कूच करता हुआ
धामूणी में जा पहुंचा अबदुल्ला
खां और खान दौरां गढ़ कुतंगे
की वलायत और लांजी से जो गो
विंद गौड़ के इलाक़े में थी गुज़
र कर चांदा की सरहद में पहुं
चे जुझार सिंघ जो वहां जा रहा
था अब इनके पहुंचने की ख़ब
र सुन कर जल्दी २ चलने लगे
लेकिन अबदुल्ला ख़ां के आगे
चलने वाले सिपाही उस के पा
स जा पहुंचे और अबदुल्ला
ख़ां के हिरावल बहादुर ख़ां
का चचा "नेक नाम" घोड़ा दौड़ा
कर उस्के ऊपर गया तब जु
झार सिंघ और बिक्रमाजीत
कई औरतों को जिनके घोड़े
थक गये थे मारकर नेक नाम
पर टूट पड़े नेक नाम मारा गया

تعاقب میں عجلت سے روانہ ہوئے
پیچھے پیچھے اونکے شاہزادہ اورنگ زیب
بھی کوچ کرتا ہوا دہاموني مين
آپہونچا عبداللہ خان وخان دوران خان
ولایت گڈھ کہتنگہ اور لانجی سے
جو گوبند گونڈ کے متعلق تھی گذر کر
چاندا کی سرحد مین پہونچے تو
جوجہار سنگہ بھی جو وہان جا رہا
تہا انکی خبر سنکر تیز روی کے
ساتھ جانے لگا آخر خان فیروز جنگ
کے قراولون نے اُسکو جا لیا۔
بہادر خان خان فیروز جنگ کا ہراول
تھا اوسکا چچا نیکنام گھوڑا دوڑا کر
بہت ہی قریب پہونچگیا تب جہار سنگہ
اور بکرماجیت کئی عورتون کو
کہ جن کی سواری کے
گھوڑے نہایت کمزور تھے
قتل کر کے نیکنام کے اوپر
آگرے نیکنام مارا گیا اُس
وقت راؤ رتن ہاڈا کے
بیٹے مادہو سنگہ نے گھوڑا

यह देख कर राव रतन के बेटे
माधासिंघ ने जो खान दौरां के
हिरोल में था घोड़ा दौड़ा कर क
ई बुंदेलों को मारा और वे लोग उ
स के सामने से हट कर चले ग
ये अब खान दौरां बहादुर खां से
आ मिला जुझार सिंघ और बिक्र
मा जीत इन फ़ौजों से पलट २ क
र लड़ते थे आखिर जब उन के ब
हुत से साथी मारे गये तो तोग़ न
क़ारा ४ हाथी और ९ ऊंट जिन
के ऊपर रुपया लदा हुआ था।
छोड़ कर झाड़ी में चले गये आस
पास के ज़मींदारों ने बादशाही
अमीरों के कहने से पता लगा क
र ख़बर दी कि जुझार सिंघ अप
ने क़बीलों और ख़ज़ाने के ८ हा
थियों को अपने बेटे उदय भान
और सुसाहिब श्याम ददा के सा
थ गोल कुंडे की तरफ़ र वा
ने कर के खुद भी उनके पीछे

ل کر بندیلون کو مارنا
روع کیا اور نہ وہ لوگ
کے مقابلہ سے ہٹ کر
دیے پھر خاندوران بہی
در خان سے آملا جوجہار سنگہ
ر بکرماجیت ان دونون
یکجائی فوجون سے پلٹ
ٹ کر لڑتے تھے اور اپنا
تہ ہی کاٹتے تھے مگر
ہتن بعد مارے جانے اپنے
ہمراہیون کے طوغ نقارہ
ر ہاتھی نو اونٹ کہ جنکے
پر روپیہ لدا ہوا تھا چھوڑ کر
اڑی مین چلے گئے اسطرف
میندارون نے بادشاہی
مرا کی تحریض سے پتہ لگا کر
بر دی کہ جوجہار سنگہ اپنے
یال کو معہ آٹھ فیل خزانہ کے
نے بیٹے اودے بہان اور
اسکے چھوٹے بھائی اور شام ددا
نے معتمد اور دوسرے آدمیون

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जारहाहै
इसपर अबदुल्लाखां और खान
दौरां ने उसका पीछा किया जुझा
रसिंघ के साथियों ने हाथियों के
खोज बिगाड़ दियेथे तोभी ये अ
टकल से उसके पीछे होलिये च
लते २ मालूम हुआ कि उदय भा
नने धोका देने के वास्ते ६ हाथी
गोलकुंडे के रास्ते से चांदा की त
रफ़ रवाने कर दियेहैं और २ हा
थियों से जिनके ऊपर औरतें औ
र बच्चे हैं जलदी २ चला जारहाहै
ये भी उसके पीछे होलिये आ
खिर १ दिन कुछ बुंदेले नज़र आ
ये खान दौरां ने अपने बेटे और
सुकंद सिंघ हाडा को भेजा वे
लोग जोहर किया चाहतेथे कि
ये जापहुंचे तो भी वे राजा बरसिं
घदेव की बड़ी रानी पारबती औ
र दूसरी औरतों और बच्चों को ए
क एक हाथ तलवार और जमधर

کے گول کنڈہ کی طرف روانہ
کرکے آپ بھی اُنکے پیچھے روانہ
ہوگیا ہے یہ شنکر خان فیروز جنگ
اور خاندوران نے تعاقب کیا
ہر چند کہ جوجھار سنگہ کے آدمیون
نے ہاتھیوں کے کھوج بگاڑدیئے
تھے مگر یہ توقیاس سے چلے گئے
اور معلوم کیا کہ اودے بہان
نے چھ ہاتھی تو بطور مغالطہ وہی
کے گول کنڈہ کے راستہ سے
چاندا کی طرف روانہ کردیئے ہین
اور آپ معہ دو ہاتھیون کے
کہ جنکے اوپر عورتین اور بچے ہین
جلد جلد چلا جاتا ہے یہ بھی اوسکے
پیچھے ہولئے آخر ایکدن کچھ فوج
نظر آئی خاندوران نے اپنے
بیٹے سید محمد اور مادہو سنگہ ہاڈا کو
بھیجا آگے بندیلہ جوہر کیا ہی چاہتے
تھے کہ بادشاہی فوج سے ڈر کر راجہ
برسنگدیو کی بڑی رانی پاربتی
اور دوسری عورتوں اور بچون کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का मार कर भागने लगे मगर बादशाही आदमियों ने पीछा करके उनको जा घेरा और मार डाला जुझार सिंघ का बेटा दुर्ग भान और बिक्रमाजीत का दुरजन साल पकड़ा गया उदयभान और स्याम ददा जो गोलकुंडे की तरफ़ भाग गये थे कुछ दिनों पीछे वे भी गिरफ़तार होगये॥	ایک زخم خنجر اور جمدہر کا مار کر بھاگنے لگے مگر بادشاہی فوج نے پیچھا کر اونکو جا گھیرا اور مار ڈالا جھجھار سنگہ کا بیٹا درگ بہان اور بکرماجیت کا بیٹا درجن سال گرفتار ہوا اودے بھان اور شام ددا جو گولکنڈہ کی طرف بہاگ گئے تھے کچھ دنوں کے بعد وہ بھی گرفتار ہوکر آئے۔
फिर बादशाही आदमी ख़ानदौरां के हुक्म से रानी पारबती और दूसरी ज़ख़मी औरतों को उठा कर ख़ज़ाने के हाथियों समेत अबदुल्लाख़ां फ़ीरोज़ जंग के पास लेगये॥	بادشاہی سپاہی خان دوران کے حکم سے رانی پاربتی اور دوسری زخمی عورتون کو خاک سے اوٹھا کر معہ خزانہ کے ہاتھیون کے خان فیروز جنگ کے پاس لے گئے۔
झुझार सिंघ और बिक्रमाजीत उसी जगह बादशाह के डर से जंगल में छुपे हुये थे उधर के गोंडों ने बादशाही लशकर की फ़तह सुनकर उनको बुरी तरह से मार डाला ख़ानदौरां	جوجھار سنگ اور بکرماجیت اُسی نواح مین بادشاہی فوج کے خوف سے ایک جنگل کے اندر چھپے ہوئے تھے جہان گونڈون نے بادشاہی لشکر کی فتح سنکر اُنکو بعقوبت تمام قتل کر ڈالا خاندوران

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को जब यह खबर पहुंची तो उन की लाश पर गया और दोनों के सिर काट कर उनकी अंगूठियों और हथियारों के साथ जोउन के मारने वालों के पास थे खान फ़ीरोज़ जंग के पास लाये उसने बादशाह की ख़िदमत में भेजे बादशाह के डेरे पास सुदी २ को सीहोर में थे जहां यह सिर पहुंचे और सराय के दरवाज़े से लटकाये गये ॥

राजा बरसिंघदेवने बहुतसे विकट जंगलों और झाड़ियों में कुएं खोद २ कर इस ग़रज़ से गाड़ा था कि उसकी औलाद के काम आवेगा और इस बात से उसके और उसके दोएक ख़िदमतगारों के सिवाय और कोई वाक़िफ़ न था और जब जुझारसिंघ गद्दी पर बैठा

یہ خبر سنکر اونکی لاش پر گیا اور دونون کے سر کاٹ کر معہ اونکے ساز و یراق کے جو اونکے قاتلون کے پاس تھے خان فیروز جنگ کے پاس لے گیا اور اُس نے روانہ درگاہ کئے بادشاہ کے ڈیرے غرہ شعبان کو سہور مین تھے وہان یہ پہنچے اور سرائے کے دروازے سے لٹکائے گئے -

راجہ برسنگدیو نے بہت سے دُشوار گذار جنگل اور جھاڑیون مین کنوئین کھود کھود کر روپیہ گاڑا تہا تاکہ اوسکی اولاد کے کام آوے اور اس بات سے اوسکے اور اوسکے دو خدمتگارون کے سوائے اور کوئی واقف نہ تہا اور جب جوجہار سنگہ مسند نشین ہوا تو اوسنے اُن خزانون اور دفینون کو اور بڑھایا تہا اور آخر یہی مال اوسکے زوال کا باعث ہوا اُنکے مارے جانے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोउसने उनरखज़ानों को औरब
ढ़ाया मगर आखीरमें यही मालं
उसकी जानका ज़िनजाल होग
या और उसके मारेजाने पर१कि
रोड़ रुपया उसके खजानों से क
ई दफ़ै करके बादशाही खज़ानें
में पहुंचा और ५० लाख रुपयेका
मुल्क फ़तहहुआ

बादशाह ने उरछेकारा
ज राजादेवी सिंघ बुंदेले कोदे
दिया जिसके बुज़ुर्गों से जहांगी
रबादशाह ने ज़बर करके राजा ब
रसिंघदेव बुंदेले को अबुल
फ़ज़लवज़ीर को मारनेके इ
नाम में इनायत कियाथा।।

बादशाही सरदार जो व
लायत चांदा तक पहुंचगयेथे
उन्होंने गुनोरके ज़मींदारसं
ग्राम को चांदा के ज़मींदार के
बां के पास भेजा जो तमाम गोंड
वाणों के ज़मींदारों में बड़ाथा।

یک کروڑ روپیہ اوسکے خزاین
ے کئی دفعہ کرکے داخل خزانہ
اہی ہوا اور پچاس لاکھ روپیہ کا
ک ہاتھ آیا۔

بادشاہ نے اونڈچھہ
راج راجہ دیوی سنگھ
و دیدیا جس کے بزرگون
ے جہانگیر بادشاہ نے
ہین کر راجہ برسنگ دیو
والوالفضل کے قتل کے
لہ مین بخش دیا تہا۔

اس عرصہ مین سرداران
وج شاہی نے جو ولایت
اندا تک پہونچ گئے تھے
سنگرام زمیندار گنور کو
اندا کے زمیندار کیبا
کے پاس بہیجا جو تمام گونڈوانہ
کے زمینداروں مین بڑا تہا
اس نے بندیلون کا کچھ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसने बुंदेलों का कुछ माल अस
बाब जो उसकी विलायत में बि
खराहुआ था इकट्ठा करके संग
राम के वसीले से परटेना नदी
के किनारे पर बादशाही सर्दा
रों से मुलाक़ात की ५ लाख रुप
ये बादशाह के और १ लाख लश
कर के सरदारों के वास्ते देना क
रके २ दफ़े में पहुंचा दिये और २
नामी हाथी (एक रूपश्रंगार और
दूसरा भोजराज) नज़र किये और
हरसाल २५ हाथी और १५ हथनि
यां देना क़बूल करके यह इक़
रार किया कि जिस साल न देस
के तो ८०००० नक़द पहुंचा दे
वे और दौलताबाद में हाज़िर हो
कर बादशाह का मुजरा करे।
ख़ान फ़ीरोज़ जंग और ख़ान दौरां
उससे इस बात का अह्दनामा
लेकर रवाने दरगाह हुए॥
बादशाह उसवक्त वाड़ी में

مال اسباب جو اوسکے ولایت
مین بکھرا ہوا تھا جمع کرکے سنگرام
کے ذریعہ سے دریاے پرتینہ
کے کنارے پر سرداران فوج
شاہی سے ملاقات کی اور پانچ
لاکھ روپیہ واسطے سرکار والا
کے اور ایک لاکھ واسطے سرداران
لشکر کے دینا قبول کرکے دو دفعہ
مین پہونچا دیے اور دو نامی ہاتھی
بھی ایک روپ سنگار اور دوسرا
بھوجراج پیشکش کیے اور ہر سال
۲۵ ہاتھی اور ۱۵ ہتھنیوں کے
دینے کا وعدہ کیا اور جس سال
نہ دے سکے تو اسّی ہزار روپیہ
نقد پہونچا دے اور دولت آباد
مین بادشاہ کا مجرا کرے - خان
فیروز جنگ اور خان دوران اس
بات کا اوس سے عہدنامہ لیکر روانہ
درگاہ ہوے
بادشاہ اوسوقت باڑی مین
تھے شاہزادہ اورنگ زیب نے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थे शाहज़ादे औरंगज़ेब ने उसके की उमदा आब हवा और मुल्क की आबादी गुलज़ारी और शिकार की बहुतायत की ऐसी तारीफ़ लिखी कि बादशाह वहांकी सैर को जो दक्खन के सीधे रास्ते में सिर्फ़ २१ कोस के फ़ासले पर था कातिक बदी २ को रवाने हुए और कातिक बदी ८ को झांसी का क़िला फ़तह करने के वास्ते झुझार सिंघ के नोकर बसंत के क़बज़े में था मुख़लिसखां और मक्रमतखां को भेजा ॥

कातिक बदी १३ को आदिलखां का ऐलची शेख़दबीर बादशाह के हज़ूर में हाज़िर हुआ ॥

बसंत ने झुझार सिंघ के नष्ट होजाने से झांसी का क़िला मक्रमत खां को सौंप दिया ।

وہاں کی خوبی آب وہوا فراوانی شکار اور آبادی وگلزاری کی اتنی تعریف لکھی کہ بادشاہ اس ولایت کی سیر کو جو راہ راست دکن سے ۲۱ کوس سے زیادہ فاصلہ پر نہ تھے ۱۵- جمادی الاول کو روانہ ہوئے اور ۲۱- جمادی الاول واسطے تسخیر قلعہ جہانسی کے جو جہار سنگھ کے ملازم بسنت کے پاس تھا مخلص خان اور مکرمت خان کو روانہ کیا

۲۰- جمادی الثانی کو بیجاپور کے شاہ عادل خان کا ایلچی شیخ دبیر بادشاہ کے حضور مین حاضر ہوا-

بسنت نے جوجہار سنگھ کے استاصل ہوجانے سے جہانسی کا قلعہ مکرمت خان کو سونپ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उस में बऊत सी तोपें थीं जिनमें १० बड़ी २ तोपें राजा बरसिंघदेव की ढलवाई थीं और सीसा बारूद भी बऊत था बादशाह ने राजा बिठ्ठलदास के भतीजे गिरधरदास को उस किले की किलेदारी पर भेजा ॥

बादशाह दतया के पहाड़ में राजा बरसिंघ देव की बनाई इमारत के देखने को गये जो बऊत उमदा नहरों और हरयालियों में थीं और जिस के ७ खंड थे ८२ गज़ लंबी और इतनी ही चौड़ी थी ॥

कातिक सुदी १० को नाना जी दखनी का २ हज़ारी ज़ात २ हज़ार सवार का इनायत ऊआ॰

मंगसिर बदी १२ को बादशाह उर्छे में पऊंचे किले और किले की इमारतों को देखकर १ बड़ा मंदिर जो बरसिंघदेव ने

دیا انمین بہت سی توپین تہین ازانجملہ دس توپین کلان راجہ برسنگدیو کی ڈہلوائی ہوئی تہین اور شیشہ بارود بہی بہت تہا بادشاہ نے راجہ بٹہل داس کے بہتیجہ گردہرداس کو وہان کی قلعداری پر بہیجا

بادشاہ دتیا کے پہاڑ مین راجہ برسنگدیو کی بنائی ہوئی عمارت کے دیکہنے کو گئے جو بہت عمدہ نہرون اور سبزہ زارون کے کنارون پر تہی وہ لمبی ۸۲ گز اور چوڑی بہی اسیقدر تہی اور سات طبقہ کی تہی۔

۸- جمادی الثانی کو نانا جی دکہنی کو منصب دو ہزاری ذات اور دو ہزار سوار کا عطا ہوا

۲۵- جمادی الثانی کو بادشاہ نے اونڈچہہ مین پہونچکر قلعہ اور عمارت کی سیر کی اور برسنگدیو کے محلون کے پاس جو ایک بہت اونچا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने महलों के पास बहुत ऊं
चा और मज़बूत बनाया था गि
रादिया राजा देबी सिंघ ने हाज़ि
र होकर मुजरा किया और नज़र
पेश की ॥

उरछे में बेरसागर तलाव
राजा बरसिंघदेव का बनाया हु
आ बहुत अच्छा था जिसका गि
रदाव ५॥ कोस बादशाही कोसों
का था दूसरा तलाव समंदरसाग
र परगने छतरे में है इसका गिर
दाव ८ कोस का है बरसिंघदेव ने
उसके ऊपर १ मज़बूत पुल और उ
मदा पट्टा बनाया है जिसपरसे
पानी की चादर गिरती है यह त
लाव चौड़ाई और गहराई में उस प
रगने के छोटे बड़े ३०० तलावों से
बढ़ चढ़ कर है और पानी भी इस
का बहुत साफ़ और मज़ेदार था
बादशाह कुछ दिन वहां रहे पर
गने छतरे में ९०० गांव थे और हासि

ور سنگین مندر اُسکا بنایا ہوا تہا
اُسکو گروادیا راجہ دیبی سنگہ نے
حاضر ہوکر نذر اور پیشکش کی

اُرچھہ مین برساگر تالاب
برسنگدیو کا بنایا ہوا بہت اچھا
تہا اوسکا دور ساڑھے پانچ کوس
بادشاہی کوسون کے
حساب سے تہا دوسرا تالاب سمندر
ساگر پرگنہ چہترہ مین ہے اُسکا
دور آٹھ کوس کا ہے برسنگدیو
نے اُوسکے اوپر ایک مضبوط
پل بنایا تہا جسپر سے ایک پاکیزہ
آبشار گرتی تہی یہ تالاب لمبائی
چوڑائی اور گہرائی مین اُس پرگنہ
کے چہوٹے بڑے ۳۰۰ تالابون
سے بڑہ چڑہ کر تہا اور پانی بھی
اوسکا بہت صاف اور گوارا
تہا بادشاہ کچھ دن وہان رہے
پرگنہ چہترہ مین نوسو گانو تھے
اور سالانہ حاصل آٹھ لاکھ روپیہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ल सालाना ८ लाख रुपया था बा
दशाह ने ज़ब्त करके इसलामा
बाद नाम रक्खा ४८ लाख रुपया
झांसी के कुओं में से निकला और
३४ लाख रुपया धामूनी के जं
गल से आया बादशाह ने यह
सब रुपया हाथियों पर लदवा
कर आगरे को भेजा ॥

हरी सिंघ राठोड़ का मन
सब असल और इजाफ़े से हज़ा
री जात और ८०० सवार का होग
या ॥

मंगसिर बदी ५ को शाहज़ा
दा ओरंगज़ेब धामूनी से परगने
छतरे में बादशाह के पास हाज़ि
र हुआ ॥

मंगसिर सुदी ७ को बादशा
ह सिरोंज के रास्ते से दक्खन
को रवाने हुए

पोस सुदी १२ को जन्मप
त्री के हिसाब से बादशाह की सा

تہا یہ پرگنہ خالصہ مین ضبط
ہوکر اسلام آباد کے نام سے
موسوم ہوا ۴۸ لاکھ روپیہ علاقہ
جہانسی مین کوون سے نکلا
۳۴ لاکھ دہامونی کے جنگل
سے آیا بادشاہ نے اس سب
روپیہ کو ہاتھیوں پر لدوا کر
آگرہ بہیجدیا۔

ہری سنگھ راٹھوڑ کا
منصب اصل اور اضافہ سے
ہزاری ذات اور آٹھ سو
سواروں کا ہوگیا۔

۳ رجب کو شاہزادہ
اورنگزیب دہاموتی سے
پرگنہ چہترہ مین بادشاہ کے
پاس حاضر ہوا۔

۵ رجب کو بادشاہ
سرونج کے رستہ سے
دکہن کو روانہ ہوئے۔

۱۰ شعبان کو جشن وزن
شمسی مین راجہ گجسنگہ کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

ल ग्रह का तुलादान था जिसके दरबार में राजा गजसिंघ के बेटे अमरसिंघ के मनसब ५०० सवारों का इज़ाफ़ा हुआ जिससे वह अब तीन हज़ारी ज़ात और १५०० सवारों का मनसबदार होगया॥

बीजापुर के आदिल खां ने तो निज़ाम शाह के अमीरों साहूजी वग़ैरा को पनाह दी थी कुतुबुल्मुल्क उससे मिला हुआ था। और उसकी अमलदारी में इसामियां मज़हब की रिआयत से ईरान के बादशाह के नाम का खुतबा पढ़ा जाता था इस लिये बादशाह ने दोनों को समझाने के वास्ते एलची भेजना मुनासिब समझ कर मुकर्रमत खां को तो बीजापुर भेजा और कुछ सौग़ात आदिल खां के वास्ते उसके साथ भेजकर आदिल खां को कहलाया कि साहू वग़ैरा को निकाल कर अप

بیٹے امرسنگھ کا منصب پانسو سواروں کے اضافہ سے تین ہزاری ذات اور پندرہ سو سواروں کا ہو گیا۔

بیجاپور کے عادل خان نے تو ساہوجی وغیرہ امرائے نظام شاہی کو پناہ دی تھی اور قطب الملک اس سے ملا ہوا تھا اور علاوہ اس کے قطب الملک کی عملداری میں بہ سبب رعایت مذہب امامیہ کے شاہ ایران کے نام کا خطبہ پڑھا جاتا تھا۔ اس لئے بادشاہ نے دونوں کی فہمائش کے لئے ایلچی بھیجنا مناسب سمجھکر مکرمت خان کو تو بیجاپور بھیجا اور کچھ سوغات عادلخان کے واسطے بھیجکر اس سے کہلایا کہ ساہو وغیرہ کو نکالکر اپنی صفائی کرے ورنہ بادشاہی فوج اس کے اوپر پہنچ جائیگی۔ اور قلعہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नीसफ़ाई करले नहीं तो उसके
ऊपर फ़ौज भेजी जायेगी शोला
पुर का किला और ढंकू कोंइलाका
जिसकी जमा ९ लाख हून थी आ
दिलखां को देना करके उसके
बदले में मामूल से ज्यादा पेश
कश मांगी और अबदुल लतीफ़
गुजराती को गोलकुंडे में कुतुबु
ल्मुल्क के पास भेजा और लिखा
कि शाह ईरान के नाम का खुतबा
अपने मुल्क में पढ़ावे और पेश
कश जो बाकी है दीवानों के हि
साब के माफ़िक भेजदे ॥

पोस बदी २ को खान दौरां
चांदा के मुलक से आकर हाज़ि
र हुआ और ५ लाख रुपया और
रूप सिंगार हाथी वहां के ज़िमीं
दार का भेजा हुआ पेश किया झु
झारसिंघ की औरतें और उसके
बेटे दुर्गभान और पोते दुर्जन सा
ल को भी हाज़िर किया बादशाह

شولاپور و ملک ڈنکو کہ جسکی جمع
۹ لاکھ ہن تھی عادلخان کو دینا کرکے
اوسکے عوض زیادہ پیشکش مانگی
اور عبداللطیف گجراتی کو گولکنڈہ
مین قطب الملک کے پاس
بھیجا اور لکھا کہ سب اصحاب پیغمبر جو
اُس ملک مین ہوتی ہے اوسکا انسداد
کرے اور خطبہ شاہ ایران کے نام
کا نہ پڑہا وے باقی پیشکش بموجب
حساب دیوانیون کے بہیجے ۔

۱۵ ۔ شعبان کو خاندوران
چاندا کے ملک سے درگاہ مین
حاضر ہوا پانچ لاکھ روپیہ اور
روپ سنگہار ہاتھی زمیندار چاندا
کا بہیجا ہوا پیش کیا جو جہار سنگہ کی
عورتین اور اُسکے بیٹے درگ بہان
اور پوتے درجن سال بھی اوسکے
ساتھ حاضر آئے بادشاہ
نے ہاتھی کا نام تو ہما سندر
رکھا درگ بہان اور درجن سال
کو مسلمان کرکے اسلام قلی اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेहाथी का नाम तो महासुंदर रक्खा
दुर्गभान और दुर्जन साल को मुस
लमान करके एक का नाम इसला
मकुली और दूसरे का नाम अली
कुली रक्खा पारबती रानी तो
ज़्यादा ज़खमी होने के सबब से
मरगई थी और दूसरी औरतें मुस
लमान करके हरम बनाई गईं

माधो सिंघ भी जो खानदौ
रां के साथ हाज़िर हुआ था उसके
मनसब में ५ सदी ज़ात और ५००
सवार का इज़ाफ़ा हुआ जिस
से उसका मनसब ३ हज़ारी ज़ा
त और ६०० सवारों का होगया

जब बादशाह दौलताबा
द के क़रीब पहुंचे तो राव रतन
का पोता शत्रूसाल पृथ्वी राज
राठोड़ राव दूदा का बेटा हरीसिं
घ और माल्दूजी भोंसला और पर
सूजी खान ज़मां के साथ हाज़ि
र खिदमत हुए॥

علی قلی نام رکھا پاربتی رانی
بسبب زخم قوی کے مر گئی
تھی اور دوسری عورتیں
مسلمان کرکے حرم سرا
میں داخل کی گئیں۔

مادھو سنگھ جو خاندوران
کے ساتھ تھا بعد اوراک
ہزت پانصدی ذات اور
سو سوار کے اضافہ سے
تین ہزاری ذات اور
چھ سو سواروں کا منصب
دار ہوگیا۔

جب بادشاہ دولت آباد
کے قریب پہونچے تو راؤ رتن
ڈا کا پوتہ راؤ شترو سال۔
پرتھی راج راٹھوڑ راؤ دودا کا
بیٹا راؤ ہٹی سنگھ مالوجی بھوسلہ
اور پرسوجی یہ سب خانزمان کے
ہمراہ بادشاہ کی خدمت میں
حاضر ہوئے۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बादशाह ने फागण बदी ६ को
साहूजी के निकालने के वास्ते
जो निज़ामुल्मुल्क के खानदा
न से १ लड़के को निज़ामुल्मुल
क बना कर किसी क़दर मुल्क
दबाये हुए था खान दौरां और
ख़ान ज़मां को भेजा और हुक्म
दिया कि जो आदिलखां लशक
र के शामिल होजावे तो ख़ैर न
हीं तो उसका मुल्क भी ख़राब
करें ख़ान दौरां की फ़ौज में राजा
जय सिंघ, राजा बिट्ठलदास,
रावरतन का बेटा माधोसिंघ,
राजा गजसिंघ का बेटा अमर
सिंघ, गोकलदास सीसोदिया,
महेश दास राठोड़, रुदाजीरा
म का बेटा जगजीवन, और २०
हज़ार सवार थे और हुक्म हु
आया कि राजा जयसिंघ, राजा
बिट्ठलदास, अमरसिंघ और

۲۰۔ رمضان کو بادشاہ
نے ساہوجی بہوسلہ کے دبانے
کے واسطے جس نے نظام الملک
کے خاندان سے ایک لڑکے
کو نظام شاہ بنا کر کچھ ملک دبا
رکہا تہا۔ خاندوران۔ خان زمان
اور شایستہ خان کو بہیجا اور حکم
دیا کہ جو عادلخان اس لشکر کے
شامل ہوجاوے تو خیر ورنہ اوسکا
ملک بہی تباہ کریں
خاندوران کی فوج مین راجہ
جے سنگہ۔ راجہ بٹہل داس گوڑ
مادہوسنگہ ولد راؤ رتن ہاڈا امر سنگہ
ولد راجہ گج سنگہ۔ گوکلداس سیسودیہ
مہیش داس راٹہوڑ۔ جگ جیون
خلف اوداجی رام اور بیس ہزار
سوار تھے بادشاہ کا حکم تہا کہ
راجہ جے سنگہ راجہ بٹہل داس
امر سنگہ راٹہوڑ اور تمام راجپوت
ہراول اور مبارزخان او ر۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तमाम राजपूत हिरावल, मुबा
ज़रख़ां और पठाय चंडावल
रहें और ख़ानदौरां को हुक्म था
कि कंधार और नान देर की तर
फ़ जहां सरहद बीजापुर और गोल
कुंडे की है वहां ठहर कर औड़ गढ़
और अडसा को फ़तह करले और
२० हज़ार सवार ख़ानज़मां के सा
थ किये और उसको हुक्म दिया
कि साहू के वतन चमारकूंडे
को जो अहमद नगर के नज़दीक
है फ़तह करके कोकन भी उस
से छीन ले इस फौज में राव शत्रु
साल, राजा पहाड़ सिंघ बुंदेला,
पृथ्वी राज राठोड़, भगवान दास
बुंदेला राव त्रिलोक चंद, शाम
सिंघ राठोड़, रावत दयाल दास
झाला, मालू जी पतंग राय (रजा
बूराय) बीतू जी बहादुर जी का
बेटा, दत्ता जी, रुस्तम राव, छापा

پٹھان لوگ چنداول رہیں۔
خاندوران کو حکم تھا کہ
قندھار اور نامدیر کی طرف کہ
جہاں بیجاپور اور گول کنڈہ کی
سرحد ملتی ہے قیام کرکے
اوگھر اور اڈسہ کے قلعوں
کو فتح کرے۔
خان زمان کی فوج میں
بھی بیس ہزار سوار تھے اور اسکو
حکم تھا کہ احمد نگر پہونچکر ساہو کے
وطن چمار کونڈہ کو مسخر کرے
اور پھر کوکن کی ولایت کو بھی
اسکے قبضہ سے نکالے اس
فوج میں راؤ ششتروسال ہاڈا
راجہ پہاڑ سنگہ بندیلہ۔ پرتھی راج راٹھوڑ
بھگوانداس بندیلہ۔ راؤ تلوک چند
شام سنگہ راٹھوڑ جگتا تھہ راٹھوڑ۔
راوت دیالداس جہالا۔ مالوجی
تینگ رائے مخاطب بہ جادوں رائے
بیٹھوجی دتاجی ولد بہادرجی۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जी परमल राव, और राया जगत सिंघ के सवार जो उसके भतीजे के साथ थे तईनात हुये इसफ़ौज की हिरोली राव शत्रु साल हाड़ा और तमाम राजपूतों को सोंपी गई और चंदोली बहादुर खां वग़ैरे पठानों के ज़िम्मे हुई और यह भी हुक्म हुआ कि जो इलाक़ा आदिल खां का उस तरफ़ है उसको भी ग़ारत करें ८००० सवार आसिफ़ खां के बेटे शायस्ते खां के साथ जुनेर संगमेर नासिक त्रिम्बक के क़िले फ़तह करने के वास्ते भेजे राजा संग्राम रावत राव और मेदनी राव इस फ़ौज में थे ॥	رستم راؤ ہاڈا جی ۔ پرمل راؤ اور رانا جگت سنگ کے سوار جو اسکے بھتیجے کے ساتھ تھے شامل تھے اس فوج کی ہراولی راؤ شترو سال اور تمام راجپوتون کو اور چندا ولی بہادر خان وغیرہ افغانون کو سپرد ہوئی تھی اس فوج کو عادلخان کے علاقہ کی لوٹ کا بھی حکم ہوا تھا جو اسطرف واقع تھا ۔
	شایستہ خان خلف آصف خان خانخانان سپہ سالار کے ساتھ آٹھ ہزار سوار تعینات ہوئے تھے اسکو جنیر سنگمیر ناسک اور ترسبک کے قلعوں کے فتح کرنے کا حکم تھا راجہ سنگرام اور میدنی راؤ اس فوج کے ساتھ تھے
भीमराठोड़ का मनसब डेढ़ हज़ारी ८०० सवार का होगया	بھیم راٹھوڑ کا منصب ڈیڑھ ہزاری ذات اور پانسو سواروں کا ہوگیا ۔
गुन्नौर के ज़मींदार संग्राम का मनसब हज़ारी ज़ात और	گنور کے زمیندار سنگرام کا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६०० सवारोंका होगया ॥

फ़ागुयबदी १० को बादशाह दौलताबाद में दाख़िल हुए ख़्शायस्ते ख़ां ने रामसेज का क़िला साहूजी के आदमियों से ले लिया ॥

फागय सुदी ६ को कुतुबुल्मुल्क ने झुझारसिंघ के बेटे उदयभान उस के छोटे भाई और स्याम ददा को क़ैद करके भेजा बादशाह ने उदय भान के छोटे भाई और बिक्रमाजीत के बेटे को तो मुसलमान करने के लिये फ़ीरोज़ख़ां नाज़िर को सौंपा उदय भान और स्याम ददा को मुसल मान होने के वास्ते कहा और जब उन्होंने इनकार किया तो मरवा डाला ॥

फागय सुदी १० को बगलाने का ज़मींदार सूरजी अपने वतन से आकर बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ

منصب ہزاری ذات اور چھ سو سواروں کا ہوگیا -

۲۴ - رمضان کو بادشاہ دولت آباد میں داخل ہوئے خوشایستہ خان نے رام سیج کا قلعہ ساہوجی کے آدمیوں سے لے لیا -

۷ - شوال کو قطب الملک نے جھار سنگہ کے بیٹے اودے بہان اور اسکے چھوٹے بھائی کو سعہ شام ددا کے قید کرکے بھیجا بادشاہ نے اودے بہان کے چھوٹے بھائی اور بکرماجیت کے بیٹے کو مسلمان کرنے کے لئے فیروز خان ناظر کے حوالہ کیا اور اودے بہان اور شام ددا کو مسلمان ہوجانے کو کہا اور جب انہوں نے انکار کیا تو مروا ڈالا

۸ - شوال بہورجی بگلانہ کا زمیندار اپنے وطن سے آکر بادشاہ کی خدمت میں حاضر ہوا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदिल ख़ांने उदय गढ़ औ
र अडसे के क़िलेदारों को पोशीदा
मदद दी और साहू की सहायता
के लिये रणदूला को भेजा इससे
बादशाह ने फागुन सुदी १० को
ये यद ख़ान जहां को भीर ख़ानेकि
या और हुक्म दिया कि ख़ान ज
हां ख़ान दौरां और ख़ान ज़मां ती
नों ३ तरफ़ से आदिल ख़ांकी विला
यत पर हमला करें राव करन हरी
सिंघ राठोड़ राजा बहरोज़ राजा रोज़
अफ़ज़ूं का बेटा जयराम राजा अनू
पसिंघ का बेटा इन्द्रसाल राव
रतन का पोता मंकूजी शिरज़ा
राये कृष्णाजी जसवंत राव ख़ान
जहां के साथ तईनात हुये ॥

सालहबेग निज़ामुल्मुल्की
क़िलेदार खेत्रदुर्ग ने साहू जी
के आदमियों को क़ैद करके वह
किला परगने समेत शायस्ते ख़ां

عادلخان نے اودگر اور
اوسہ کے قلعداروں کو پوشیدہ
مدد پہونچائی اور ساہوجی کی اعانت
پر رندولہ کو بھیجا بادشاہ نے یہ
سنکر خانجہان کو بھی روانہ کیا
اور حکم دیا کہ خانجہان خاندوران
اور خانزمان تینوں تین طرف
سے عادلخان کی ولایت پر
حملہ کریں راؤ کرن۔ بہری سنگہ
راٹھوڑ۔ راجہ بہروز ولد راجہ
روز افزون۔ جے رام ولد
راجہ انوپ سنگ۔ اندرسال
نبیرہ راؤ رتن ہاڈا۔ منکوجی
شرزہ راؤ۔ کرشناجی اور جسونت راؤ
خانجہان کے ساتھ تعینات
ہوئے +

صالح بیگ نظام الملکی
قلعہ دار کہتر درگ نے ساہوجی
کے آدمیوں کو قید کرکے وہ قلعہ
معہ پرگنہ جات متعلقہ کے شایستہ خان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

कोसोंपरदिया॥

फागणसुदी १४ को नोरो
ज़का दरबार था उसमें कुतुबुल्मु
ल्क की पेशकश १ लाख २० हज़ार
रुपैकी बादशाह के मुलाहिज़े से गु
ज़री॥

इसीदिन राजा गजसिंघको
ख़ासा तवेले से घोड़ा सोने कीज़ी
न का इनायत हुआ॥

चेत सुदी २ को राजा राय
सिंघ का मनसब असल और इ
ज़ाफ़े से ३ हज़ारी ज़ात और डेढ़
हज़ार सवारों का होगया॥

चांदा के ज़मींदार केबां
ने हाज़िर होकर ३ हाथी नज़र
किये बादशाह ने ख़िलत जड़ा
ऊ सरपेंच और घोड़ा इनायत कि
या॥

चेत सुदी ५ को आदिल
ख़ां की अरज़ी और पेशकश मीर

سپرد کر دیا-

۱۲ شوال کو نوروز - کے جشن
قطب الملک کی پیشکش ایک
بیس ہزار کی بادشاہ کی نظر سے گزری

اوسی دن راجہ گج سنگھ کو ایک
سنہری زین کا طویلہ خاصہ
عنایت ہوا-

غرہ ذیقعدہ کو شرف آفتاب
دن راجہ رائے سنگھ کا منصب
اور اضافہ سے تین ہزاری
اور ڈیڑھ ہزار سوار ونکا ہوگیا-

چانداکے زمیندار کیبا نے
حاضر ہوکر تین ہاتھی نذر کئے بادشاہ
خلعت جڑاؤ سرپیچ اور گھوڑا
عنایت کیا-

۱۴- ذیقعدہ کو عادلخان کی
عرضی اور پیشکش مصحوب - میر
ابوالحسن اور قاضی ابوسعید کے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अबुल्हसन और क़ाज़ी अबूसईद ने हाज़िर होकर पेशकी आदिलखां ५ कोस तक पेशवाई करके बादशाह के फरमानको लेगयाथा मगर मक्रमतखांने उसकी चाल ढाल से मालूम करके कि दिल से ताबेदार नहीं है और मोक़ा देख रहा है बादशाह को अरज़ी लिखी और बादशाह ने अपने अमीरों को बीजापुर का मुल्क खराब करने के वास्ते ताकीद की मगर क़ुतुबुल्मुल्क ने खुतबा और सिक्का बादशाह के नाम का जारी करके कई सिक्के नज़र के वास्ते भेजे ॥

चेत सुदी ६ को बादशाह ने बगलाणे के ज़मींदार भूरजी को खिलत देकर अल्लावेरदी खांके पास घोप वगैरा क़िलों के फ़तह करने में मदद देने के वास्ते भेजा ॥

بادشاہ کی نظر سے گزری عادلخان پانچ کوس تک استقبال کرکے بادشاہی فرمان کو لے گیا تھا۔ مگر مکرمت خان نے اوسکے اوضاع اور اطوار سے درپردہ نافرمانی کا منشا اور انتظار موقع وقت کا خیال معلوم کرکے بادشاہ کو عرضی لکھی اور بادشاہ نے اپنے امیرون کو بیجاپور کا ملک خراب کرنے کیواسطے تاکید فرمائی۔ لیکن قطب الملک نے خطبہ اور سکہ بادشاہ کے نام کا جاری کرکے چند روپیہ اور اشرفی اس سکہ کے بطور نذر بھیجے اور خطبہ مین خلفائے راشدین کے نام بھی داخل کیے

۷۔ ذیقعدہ کو بادشاہ نے بگلانہ کے زمیندار بھورجی کو خلعت دیکر الہ ویردی خان کی مدد پر بھیجا جو واسطے فتح کرنے قلعہ دہوپ وغیرہ کے مامور ہوا تھا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजा देवी सिंघ उरछे में अपना अमल जमाकर हाज़िर आया बादशाह ने उसको ख़िल्लत जड़ाऊ खपवा और घोड़ा देकर सेयद खान जहां के पास भेजा

बिक्रमा जीत बुंदेले के बड़े बेटे नर सिंघदेव को बहादुर पठाण जो सोदागरी करता था बहलोल के पास लिये जाता था अल्लावेरदी खां के बेटे जाफ़र ने पकड़ कर बादशाह के हजूर में हाज़िर किया बादशाह ने उस को मुसलमान करके हुसैन कुली नाम रक्वा और बहादुर को मरवा डाला ॥

चैत सुदी १२ को चांदा के ज़मींदार केबा को बादशाह ने ख़िलअत जड़ाऊ खपवा और कुछ दूसरी जड़ाऊ रक़में देकर वतन जाने की रुख़सत दी ॥

راجہ دیبی سنگہ اونڈچھ نظم ونسق سے جو اوسکی جاگیر ن دیا گیا تہا خاطر جمع کرکے درگاہ ن حاضر ہوا بادشاہ نے اسکو ت جڑاو کہپوہ اور گہوڑا دیکر د خانجہان کے پاس روانہ کیا۔

بکرماجیت کے بڑی بیٹے نگدیو کو بہادر نام ایک افغان داگر بہلول کے پاس لئے جاتا الہ ویردی خان کے بیٹے فر نے خبر پاکر اسکو پکڑ اور شاہ کے حضور مین حاضر کیا۔ شاہ نے نرسنگدیو کو تو مسلمان کے حسین قلی نام رکہا اور ی بہاگر کو مرواڈالا۔

۱۲ ذیقعدہ۔ چاندا کے یندار کبیا کو بادشاہ نے خلعت او کہپوہ اور کچھ دوسری جڑاو ن دیکر وطن جانے کی رخصت ا فرمائی۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

अलह वेरदी खां ने चैतबदी ३
को चांदोर के क़िले में लड़ाई से
और चैतबदी ६ को क़िले अंज
रोही में गंभीर राव क़िलेदार के
हाज़िर हो जाने से कबज़ा किया
फ़िर कांज ने और मांजने के कि
ले घेरे क़िले वाले गंभीर राव के
वसीले से हाज़िर होगये और
उन क़िलों में भी कबज़ा होग
या इसी तरह रोला जोला, अहवं
त कोल पूसला, और अचल गढ़
के क़िले भी हाथ आये मगर रा
जा बीर के क़िले में कि जहां कु
छ रिशतेदार निज़ामुल्मुल्क के
थे क़िले वाले २ महीने तक लड़े॥

उधर शायस्ते खां ने संग
मेर के परगने साहू जी के आद
मियों से फ़तह कर लिये तब वे
लोग नासिक को और नासिक
से कोकन की तरफ़ चले गये

اله ویردی خان نے
۱۶ - شوال کو قلعہ چاندور بعد
جنگ کے فتح کیا اور
۱۹ - شوال کو قلعہ انجراہی
گنبھیر راؤ قلعدار کے حاضر
ہوجانے سے لیا بعدہ
کانجنہ اور مانجنہ کے قلعون
کو گھیرا اُن قلعون کے قلعدار
بھی گنبھیر راؤ کے ذریعہ سے
حاضر ہوگئے اور اُنمین بھی
بادشاہی عمل دخل ہوگیا اسیطرح
رولا جولا اہونت کول پوسلہ
اور اچل گڈھ کے قلعہ بھی ہاتھ آئے
مگر راج بیر کے قلعہ مین کہ جہان
کچھ رشتہ دار نظام الملک کے
تھے قلعہ والے [illegible] مہینہ تک
لڑتے رہے

اُدہر شایستہ خان نے سنگمیر کے
ضلعے ساہوجی کے آدمیون سے
۱۰ ماہ شوال کو فتح کئے بعدہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शायस्ताखां बाक़िर को उनके पी
छा रवाने करके आप बादशाह के
हुकम से अहमद नगर को गया
और अली अकबर को जुनेर के
ऊपर भेजा उसने वह किला साह
जी के नोकरों से फतह कर लिया
साहू जी उस वक्त चमार कुंडे में
था उस का बेटा उसके पास जाक
र कुछ फ़ौज अपने क़बीलों को
जुनेर से लाने के वास्ते ले गया उस
से और बादशाही लोगों से लड़ाई
हुई शायस्ताखां ने ७७० सवार म
दद के वास्ते भेजे उन्हों ने जुनेर में
पहुंच कर ग़नीम का मुकाबिला
किया लेकिन ग़नीम ने उन को
शहर में घेर लिया शायस्ताखां य
ह सुन कर खुद आया और ग़नी
म को भगा कर भीमड़ा नदी तक
उस के पीछे गया और जुनेर के
किले को मज़बूत देख कर बाक़र

ر کی ناسک کو اور ناسک
کوکن کو چلے گئے شایستہ خان
کو اُنکے تعاقب مین روانہ
کے خود بادشاہ کے حکم سے
نگر کو روانہ ہوا اور علی اکبر کو
سطے فتح جُنیر کے رخصت
ا اوسنے وہ قلعہ ساہوجی کے
ونسے فتح کرلیا ساہوجی اُسوقت
کنڈہ مین تہا جہان اُسکا بیٹا
اوسکے پاس سے کچھ فوج اپنے
ل و عیال کو جنیر سے لانے کے
لے گیا وہان بادشاہی دستون سے
ڑائی ہوئی شایستہ خان نے
۷۷۰ سوار بادشاہی ملازمون کی
بہیجے اُنہون نے باوجود
ابلہ اور مدافعہ غنیم کے شہر مین
کر جنگ کی لیکن غنیم نے اُنکو
ب شایستہ خان گئے اوسکو
بگا اور بہیمرہ ندی تک پیچھا کیا
ور پہر قلعہ جُنیر کی مضبوطی دیکھ کر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को कोकण से पीछा बुला लिया कुछ दिनों में संगमेर और जुनेर के दोनों किले और १७ परगने जिनकी जमां २ किरोड़ ६० लाख दाम थी बादशाही अमलदारी में शामिल ऊए ॥

ख़ानदोरां ने बीजापुर के इलाक़े में पऊंच कर लूट मार की विंजरा नदी पर बहलोल और रसादूला उससे लड़ने को आये राजा जय सिंघ ने हिरोल की फ़ौज के साथ हम्ला करके उनको भगा दिया दूसरी लड़ाई फिर आगे चल कर हीरा पुर के पास भीमड़ा नदी के किनारे पर ऊई कुछ बादशाही आदमी लड़ने को आगे बढ़ गये थे राजा जय सिंघ ने उनकी मदद की यह लड़ाई भी फ़तह ऊई जिसके पीछे यह बादशाही लशकर फ़ी

باقر کو بھی کوکن سے واپس بلالیا آخر کو دونون قلعہ سنگمیر اور جنیر کے معہ ۱۷ پرگنون جنکی جمع دو کروڑ ساٹھ لاکھ دام کی بادشاہی ممالک مین داخل ہوئے۔

خان دوران نے بیجاپور کے علاقہ مین پہونچکر لوٹ مار شروع کی ونجبرہ ندی پر رندولہ اور بہلول وغیرہ اوس سے لڑنے کو آئے راجہ جے سنگھ نے معہ فوج ہراول کے حملہ کرکے اونکو بھگا دیا دوسری لڑائی پھر آگے چلکر ہیراپور کے پاس بہونرہ ندی کے کنارے پر ہوئی کچھ لوگ جو لڑنے کو آگے بڑہ گئے تھے راجہ جے سنگھ نے اونکی مدد کی یہ لڑائی بھی فتح ہوئی ... بادشاہی لشکر فیروزآباد مین جہان سے بیجاپور صرف ۱۲ کوس رہ جاتا ہے جا پہنچا مگر کمت خان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रोज़ाबाद में जहां से बीजा पुर १२
कोस रह जाता है जा पहुंचा मग
र मक्रमत खां के लिखने से कि
बीजा पुर वालों ने आगे अपना इ
लाक़ह उजाड़ दिया है दूसरी तर
फ़ से क़ुतुबुल्मुल्क की सरहद
तक लूट मार करके हीरा पुर में
लौट आया वहां बादशाह का हु
क्म लूट मार बंद रखने और कि
ले उदय गढ़ और अडसा को फ़
तह करने का पहुंचा और वह
उस तरफ़ को रवाना हुआ ॥

खान जहां ने शाह गढ़
और बीर में लशकर छोड़ कर
मुकाम धारवार से किशनाजी
स्यामाजी और शिरज़ेराव को
सराधनू का किला फ़तह कर
ने के वास्ते चैत बदी १३ को र
वाने किया ये अचानचक व
हां जा पहुंचे अंबर किलेदार

لکھنے سے کہ آگے بیجاپور والون
نے اپنا علاقہ ویران کر دیا ہے
ری طرف کو ہٹرا اور قطب الملک
حد تک تاخت اور تاراج
کے ہیرا پور مین لوٹ آیا وہان
شاہ کا حکم واسطے بند
انے غارت گری اور فتح
نے قلعہ اُودگرہ اور اڈسہ
کے پہونچا وہ اُسطرف کو روانہ
ہوا۔

خان جہان نے اپنی
اہ تو شاہ گڈہ اور بیر مین
ڑی اور کشناجی ساماجی اور
زہ راؤ کو مقام دہارور سے
سرادھنون کے فتح کرنے
اسطے ۲۶ شوال کو روانہ
یہ دفعتہً وہان جا پہونچے
بر قلعدار اوسوقت قلعہ کے
ایک باغ انبہ مین بیٹھا
سر دست کچھ مقابلہ کر کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो क़िले के बाहर आमों के बा
ग़में बैठाहुआ था थोड़ा सा मुक़ा
बिला करके किले में जाघुसा
इन्होंने घेरा देकर तीसरे दिन
उस क़िले को फ़तह कर लिया
और अंबर को ख़ान जहां के पा
स भेज कर शिरज़े राव को सरा
धनूं के किले में थाने पर रक्खा
और चेत बदी १५ को लूट मार
करके धारास्योन के किले में
अमल कर लिया जिसको क़ि
लेदार वग़ैरा रसद समेत छोड़
गयेथे दूसरे दिन ख़ान जहां ने
कानती के क़िले को जो शोला
पुर से ६ कोस है घेरा देकर फ़
तह करके देवगांव को लूटा
यहां रणदूला लड़ने को आया
ख़ान जहां ने चेत सुदी ७ को
जंग करके उस को भगा दिया
रणदूल्हा ज़ख़मी होगया था

قلعہ کے اندر چلا گیا انہوں نے
محاصرہ کرکے تیسرے دن تاریخ ۲۸
کو قلعہ فتح کرلیا اور عنبر کو
خانجہان کے پاس بھیجکر شرزہ راؤ
کو سرادہنوں کے قلعہ مین
تھانہ دار کے طور پر رکھا اور
۲۹ شوال کو بعد کچھ لوٹ مار
کے قلعہ دہاراسیون مین
بھی قبضہ کرلیا جسکو قلعدار
وغیرہ معہ غلہ کے چھوڑ گئے
تھے دوسرے دن خانجہان
نے قلعہ کانتی کو جو شولاپور
سے دس کوس ہے گھیر کر
فتح کیا اور دیوگانو کو لوٹا
یہان رندولہ لڑنے کو آیا
خان جہان نے ۵ ذیقعدہ
کو جنگ کرکے شکست
دی رن دولہ زخمی ہوگیا تھا
توبھی ۱۴ ذی قعدہ کو پھر
ننجاپور مین لڑا اور خوب لڑا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तो भी बैसाख बदी १ को गांव तुलंजापुर में फिर लड़ा और खूब लड़ा खान जहां फिर उस को भगा कर मुलक लूटने के वास्ते गुलबर्गे की तरफ़ रवाने हुआ और फिर १ और लड़ाई दुशमनों से बैसाख सुदी १२ को लड़कर धारूर में लौट आया. क्योंकि आगे का इलाक़ा दुशमनों ने उजाड़ रक्खा था ॥

बैसाख सुदी २ को बीजापुर वाले लशकर के उधर आकर सिपेदार खां और राजा देवी सिंघ से लड़े और भाग गये खीलूजी भोंसला भी उनके साथ था और बादशाही लशकर से लड़ा था ॥

खान ज़मां ने अहमद नगर में अपना सामान छोड़ कर सजी हुई फौज के साथ जुनेर की तरफ़ रवाने हुआ रावशत्रुसाल हाडा

ہان پہر اسکو بہگا کر ملک
ٹنے کے واسطے گلبرگہ کی طرف
انہ ہوا تاریخ ١١- ذی الحجہ
ہر ایک اور لڑائی دشمنون
ے لڑکر دہارور کو لوٹ
کیونکہ آگے ملک
ان کیا ہوا تہا-

یکم ذی الحجہ کو بیجاپور
ے اردو پر حملہ کرکے
دارخان اور راجہ
ی سنگہ سے لڑے
ہاگ گئے کہیلوجی
سلہ بھی بیجاپور والون
ے ساتھ تہا اور بادشاہی
ا سے لڑا تھا-

خان زمان نے احمدنگر
ن احمال و اثقال چھوڑکر
ید آراستگی سپاہ کے
یر کو کوچ کیا ستر و سال
ڈا جنداول تہا مونع-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चंदोल था जब ६ कोस पर गांव अंकू नेर से पहुंचा तो सुना कि साहू जी ने माहोली का क़िला वहां के क़िलेदार मेना जी, को जुनेर में लाकर परेंडे जाने का इरादा कर रखा है खान ज़मां ने उसका पीछा किया तब वह जंगल और पहाड़ों के रस्ते से भीमड़ा नद्दी को उतर कर परगने पूना इलाक़े आदिल खां में चला गया खान ज़मां ने बादशाह के हुक्म से भीमड़ा के किनारे पर डेरा करके बादशाह को अरज़ी लिखी और शाहबेग खां को दमारकुंडा फ़तह करने के वास्ते भेजा उसने ३ पहर तक लड़ाई करके किले वालों को अमन दी और वह किला फ़तह कर लिया ॥

बादशाह ने अरज़ी के ज

انکو نیر مین جو ٦ کوس احمدنگر سے تہا پہونچکر سنا کہ ساہوجی نے ماہولی کا قلعہ وہان کے قلعدار میناجی بہوسلہ سے لے لیا ہے اور میناجی کو جنیر مین لاکر پریندہ جانے کا ارادہ کر رکہا ہے خانزمان نے یہ سُنکر اسکا تعاقب کیا اسیر وہ پہاڑ اور جنگل کے راستہ سے بہونرہ ندی کو عبور کرکے پرگنہ پونہ علاقہ عادلخان مین چلا گیا خان نے بموجب حکم بادشاہ کے دریائے مذکور کے کنارہ پر ڈیرہ کرکے بادشاہ کو عرضی لکہی اور شاہ بیگ خان کو چارکونڈہ کا قلعہ فتح کرنے کے واسطے بہیجا اُسنے بعد جنگ تین پہر کے قلعہ والون کو امن دیکر وہ قلعہ فتح کرلیا۔

بادشاہ کا حکم بہر عادلخان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

वाबसें आदिल खां के मुल्क लूट
ने का हुकम लिखा तब खान ज़
मां चेत बदी ५ को उस मुल्क में
दाखिल हुआ ॥

चेत बदी १३ को जब कि
यह लशकर उदाबाई के घाटे
से उतर चुका था ग़नीम की १ बड़ी
फ़ौज राव शत्रू साल के ऊपर जो
खान ज़मां के पीछे २ आता था आ
पड़ी राव उसके बहुत से आदमि
यों को मार कर बादशाही लश
कर से आ मिला इस झगड़े में कुछ
राज पूत उसके भी काम आये दू
सरे दिन खानज़मां ने कोलापु
र का क़िला फ़तह कर लिया सा
हू जी बीजापुर की फ़ौज के साथ
में किशन गंगा के ऊपर ३ रोज़ त
क खानज़मां से लड़ा आखिर खा
न ज़मां ने उसको भगा कर मिर
च और राय बाग़ को लूटा ॥

ک لوٹنے کے واسطے
یا تب خان زمان ۸ شوال
اس ملک مین داخل ہوا
۲۶ کو جبکہ لشکر گھاٹ
ودابائی سے زیر اہتمام
ن زمان کے گذر چکا تھا
نیم کی ایک بڑی فوج راو
شترو سال کے اوپر جو
ن زمان کے بعد آتا تھا
ی مگر راو اپنی ہمت اور
دری سے بہت سے
میون کو مار کر بادشاہی
کر سے جا ملا اس دار و گیر مین
راجپوت بھی اُسکے مارے
گئے تیسرے دن خانزمان نے قلعہ
پور کو فتح کر لیا ساہو جی نے
ن گنگا کے اوپر تین روز تک
فوج بیجاپور کے خان زمان کا
قابلہ کیا آخر خان زمان نے اُسکو
کر مرچ اور رای باغ کو لوٹا۔

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदिलखां ने ३ तरफ़ के हमलों से तंग होकर बादशाह का हुक्म मान लिया और २० लाख रुपै की पेशकश मकरमत खां के हाथ भेजी और साहू के वास्ते कहा कि जो वह जनेर वग़ैरा निज़ामुल्मुल्क के किले छोड़ दे तो उस्को नोकर रख लूंगा नहीं तो बादशाही लशकर के साथ होकर उन किलों के छुड़ाने की कोशिश करूंगा ॥

बादशाह ने अपनी तसवीर और अहदनामा जिस पर हाथ के पंजे का छापा था आदिलखां के पास भेजा खुलासा उस का यह था कि जो मुल्क तुम्हारे बाप से तुम को पहुंचा है वह बदस्तूर तुम को इनायत करते हैं और निज़ामुल्मुल्क के मुल्क से परगना,, दन को,, किलाशोला

عادلخان نے اس تین طرف
کے حملات سے تنگ آکر بادشاہ
کا حکم مان لیا اور ۲۰ لاکھہ روپیہ کی
پیشکش مکرمت خان کے ہاتھہ
بھیجی ساہوجی کی نسبت یہ ٹھیرایا
کہ جو جنیر کا قلعہ معہ دیگر قلاع
نظام کے چھوڑ دیگا جبتو
اسکو نوکر رکھہ لیا جاویگا ورنہ
بادشاہی لشکر کے اتفاق سے
ان قلعون کے فتح کرنے کی
کوشش کیجاوے گی۔

بادشاہ نے اپنی تصویر
معہ عہدنامہ نشان پنجہ کے
عادلخان کے لئے بھیجی جس کے
مضمون کا خلاصہ یہ ہے کہ جو
ملک عادلخان مرحوم سے تمکو
پہنچا ہے وہ ہم بدستور عنایت
کرتے ہین اور نظام الملک کے
ملک سے محال دنکو قلعہ شولاپور
قلعہ پرینده معہ پرگنات متعلقہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूर किला परेंडा इलाके समेत
और कोकण देस से २० लाख
इन का वह हिस्सा कि जो नि
ज़ामुल्मुल्क के कबज़े में था
तुम को देते हैं तुम जब तक क़
दूल इक्मी न करोगे कुछ नुक़
सान तुम को हम से और हमारी
औलाद से नहीं पहुंचेगा और न
कोई निज़ामुल्मुल्क हमारे औ
र तुम्हारे बीच में होगा क़ुतुबुल्मु
ल्क ने हमारे और खलीफों के
नाम का खुतबा और सिक्का
जारी कर दिया है और ५० लाख
की पेश कश भेजदी है इस लि
ये हम ने भी ४ लाख इन में से
जो वह बरसबरस निज़ामुल्मु
ल्क को दिया करता था २ लाख
इन उस की माफ कर दी हैं तुम
भी किसी तरह का नुकसान
उस के मुल्क में मत करना और

ر ولایت کوکن سے ۲۰ لاکھ
ن کا وہ حصہ جو نظام الملک
ے متعلق تہا تمکو مرحمت ہوتا
ہے تم جب تک عدول حکمی
روگے کچھ ضرر ہم سے اور
ری اولاد سے تمہارے
ب مین نہین پہونچے گا
ی نظام الملک ہمارے اور
ہارے درمیان ہوگا قطب الملک
نے ہمارے اور خلفاے راشدین
کے نام کا سکہ اور خطبہ جاری
ر دیا ہے اور پچاس لاکھ روپیہ
پیشکش بہیجدی ہے اسواسطے
ہم نے بہی چار لاکھ ہون مین
سے جو وہ سال بسال نظام الملک
کو دیا کرتا تہا دو لاکھ اُسکو معاف
کر دی ہے تم بہی کسیطرح کا
ضرر اُسکے مُلک مین نہ پہونچانا
اور سوائے اُس دا دوستد
کے جو قدیم سے تمہارے اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

सिवाये उस लेने और देने के जो कदीम से तुम्हारे और उस्के बुजुर्गों में जारी रहा हो और कुछ ज्यादः उस्से मत मांगना हमारा कोई नौकर भाग कर जावे तो उस को अपने पास मत रखना और ऐसे ही हम भी तुम्हारे नौकरों को कौल बचन देंगे और न बुलायेंगे ॥

साहू को हम तो नौकर नहीं रखेंगे वह अब तुम्हारा ही होगा उससे कह देना कि जुनेर त्रिम्बक, राजदेवर, त्रिनकलवाड़ी, और भीमगढ़ के क़िलों को जल्दी हमारे नौकरों को हवाले करदेवें हमारे आदमी तोपों के सिवाये और सब सामान उसके आदमियों का ले जाने देंगे और जो साहू तुम्हारा नौकर न हो तो उस को अपने

اسکے بزرگون مین جاری رہی ہو اور کچھ زیادہ طلبی نہ کرنا ہمارا کوئی نوکر بہاگ کر جاوے تو اُسکو پناہ نہ دینا اور ایسے ہی ہم بھی تمہارے نوکرون کو نہ بچن دینگے اور نہ بلائینگے ساہو کو ہم تو نوکر نہ رکھینگے وہ اب تمہارا ہی ہوگا اُس سے کہدینا کہ جنیر قلعہ ترمبک قلعہ راجدویر قلعہ ترنکلواڑی اور قلعہ بھیم گڈھ کو جلد ہمارے نوکرون کے حوالہ کردے ہمارے آدمی بھی سوائے توپ کے اور سب سامان اُسکے آدمیون کا لیجانی دینگے اور اگر ساہو تمہارا نوکر نہ ہو تو اُسکو اپنے ملک مین نہ آنے دینا آوے تو پکڑ لینا یا نکال دینا اور ایسا ہی سلوک اڈیسہ اور اودگر نظام الملکی قلعدارون سے بھی کرنا

मुल्क में न आने देना आवे तो पकड़ लेना या निकाल देना और एसा ही सलूक अडसा और उदगिरि के निज़ामुल्मुल्की क़िलेवालों से भी करना अखीर में लिखाया कि हम इस फरमान को अपने पंजे के निशान और अपने ख़ासदस्त ख़तों से सुशोभित करते हैं ख़ुदा और रसूल को बीच में देते हैं और ख़ुलासा इसका सोने के पत्तरों पर खुदवाकर भेजदिया जावेगा

यह फरमान जेठबदी १० को मुहम्मद आदिल ख़ां इबराहीम आदिलशाह के बेटे के पास पहुंचा और उसने भी ऊपर लिखे माफ़िक़ मज़मून का अहदनामा लिखकर २० लाख रुपये की पेशकश के साथ मक्रमत ख़ां के हाथ भेज दिया॥

ین لکھا تہا کہ ہم اِس
ن کو معہ نشان پنجہ کے
ے دستخط خاص سے
ن کرتے ہین اور
اور رسول کو بیچ
ن دیتے ہین اور خلاصہ
کا سونے کی تختی پر
رواکر بہیجدیا جاوے گا
یہ فرمان ۲۴-ذی الحجہ
مد بن ابراہیم عادل شاہ
ے پاس پہونچا اور اُسنے
ی حسب مضمون صدر
دنامہ لکھہ کر معہ پیشکش
ی بیس لاکھہ روپیہ کے
مکرمت خان کے ہمراہ
یجدیا عادلخان جو بادشاہ
رضی لکھتا تھا اُوس کے
ور یہ حافظ کی یہ غزل آب زر
ے لکھا کرتا تہا-

आदिलखां बादशाह को
जो अरज़ी लिखता था तो उसके
किनारों पर सोने के हर्फ़ों से १
ग़ज़ल हाफ़िज़ की लिखा करता
था ॥

बरस दसवां

जेठसुदी ३ शुकरवार संवत १६९३
से जेठसुदी २ मंगलवार संबत
१६९४ तक

अल्लावेरदी ख़ां ने बीयर
का क़िला फतह करके निज़ा
मुल्मुल्क के कुटंबियों को क़ैद
करलिया और बैसाखबदी ११
को धरप का क़िला भेजबलकि
लेदार से १ लाख रुपये नक़द औ
र डेढ़ हज़ारी ८०० सवार का मनस
ब देना करके लेलिया ॥

शायस्ता ख़ां ख़ान जहां औ
र ख़ान ज़मां वग़ैरा आदिलख़ां के मु
ल्क से पीछे आगये अब बादशाह

جوزا سحر نہاد حمایل برابرم ✠
یعنی غلام شاہم و سوگند میخورم ✠
گرو ید نام شاہ جہان حرز جان من
وزاین خجستہ نام براعدا مظفرم ✠
اور خاتمہ عرضی پر یہ مصرعہ
قلمبند کرتا تھا۔

مصرعہ

بادشاہا جہان بکام تو باد

برس دسوان

سنہ ۱۰۴۶ ہجری
۲۷ مئی سنہ ۱۶۳۶ سے ۱۵ مئی سنہ ۱۶۳۷ تک

ماہ محرم مین الہ ویردی خان
نے قلعہ بیر فتح کرکے نظام کے
رشتہ دارون کو قید کرلیا
اور ۲۵ محرم کو قلعہ دہرپ
کھوجل حارس قلعہ مذکور
سے عوض ایک لاکھ روپیہ
نقد اور منصب دوہزاری
آٹھ سو سوارون کے حاصل کیا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेसाहूजी को ज़ेर करने के वास्ते
खानज़मां को बहादुर का खि
ताब देकर भेजा ॥

असाढ सुदी ३ कुतुबुल्मु
ल्क की पेशकश जिस्में ४० ला
ख रुपये नक़द १०० हाथी ५० घो
ड़े बऊत से जवाहरात और दूसरे
उमदा तुहफ़े थे अबदुल लतीफ़
की मारफ़त बादशाह की नज़
र से गुज़रे और कुतुबुल्मुल्क ने
जो अहद नामा लिख कर भेजा
था उसका मज़मून यह था कि
हमेशा खुतबा "चारयार" और बा
दशाह के नाम का और सिक्का
भेजा ऊआ सोने और चांदी पर जा
री रहैगा और खुतबा जो पहिले
पढा जाता था वह अब नहीं पढ़ा
जावेगा निजामुल्मुल्क जो ४ ला
ख ऊन लेता था उनमें २ लाख ऊ
न जिन्के ८ लाख रुपये होते हैं

شائستہ خان خانزمان
ورخانجہان وغیرہ عاولخان
کے ملک سے واپس آگئے اب
دشاہ نے خان زمان کو
ادر کا خطاب دیکر واسطے
ستیصال ساہوجی کے بھیجا
غرّہ صفر کو قطب الملک
کا پیشکش جس میں ۴۰ لاکھ روپیہ
نقد ایک سو ہاتھی پچاس گھوڑے
بہت سے جواہرات اور دوسر
تحفہ نفیس تھے شیخ عبداللطیف
کی معرفت بادشاہ کی نظر سے
گذری اور قطب الملک نے جو
عہدنامہ لکھ کر بھیجا تھا اوسکا یہ
مضمون تھا کہ خطبہ ہمیشہ چار یار
اور بادشاہ کے نام کا اور سکہ
مطابق بادشاہ زر سرخ و سفید پر
جاری رہیگا اور خطبہ مثل
سابق کے نہ پڑھا جاویگا
دو لاکھ ہُن جسکے آٹھ لاکھ روپیہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

बरसाबरस भेजता रहूंगा आपके
सन ८ जलूसी तक ३२ लाख रु
पये में से जो ८ ल॰ बाक़ी हैं वे भी इसी
२ लाख इन के साथ भेजदूंगा औ
र जो तफ़ावत हाथियों और जवा
हरात की क़ीमत का गोलकुंडे
के भाव से होगा वह भी बिना कि
सी उज़र के दिया करूंगा हमेशा
ख़ैर ख़्वाह रहूंगा और जो बादशा
ह के दुशमन होंगे उनसे कुछ वा
स्ता नहीं रखूंगा मैं यह अहद ना
मा मौलाना अबदुल लतीफ़ के
रूबरू क़ुरान के ऊपर हाथ र
खकर करता हूं जो इसके ख़ि
लाफ़ करूं तो हज़ूर को मेरे मु
ल्क छीन लेने का अख़्तियार
है मगर जो कभी आदिल ख़ांया
और कोई ग़नीम मेरे ऊपर च
ढ़ाई करे तो दक्खन के सूबेदा
र को मेरी मदद करनी होगी और

ہوتے ہیں منجملہ چار لاکھ ہون
مقررہ نظام الملک کے
سال بسال ادا کرتا رہونگا
سن ۸ جلوس والاتک
کے بقایا آٹھ لاکھ روپیہ
منجملہ ۳۲ لاکھ مقررہ کے بھی
اس سنہ میں ہمراہ دو لاکھ
ہون کے بھیجدونگا اور جو
تفاوت قیمت ہاتھیوں اور
جواہرات کا گول کنڈہ کے
نرخ سے ہوگا وہ بھی دیا کرونگا
ہمیشہ خیرخواہ رہونگا اور دشمنان
بادشاہی سے کچھ تعلق نرکھونگا
یہ عہد میں مولانا عبداللطیف
کے روبرو قرآن مجید اوپر ہاتھ رکھکر کرتا
ہوں اگر اس کے خلاف کروں تو
حضور کو میرا ملک چھین لینے کا
حق حاصل ہوگا مگر جو کبھی عادلخان
یا اور کوئی غنیم میرے اوپر
چڑھائی کرے تو صوبہ دار دکن کو

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

जोवहमेरीदरख्वास्त करनेपरभी मदद न करेगा और आदिल खां ज़बरदस्ती मुझ से कुछ रुपया ले लेगा तो मैं उतना ही रुपया इस ८ लाख में से काट लिया करूंगा ॥

बादशाह ने इस फ़तह और कामयाबी के पीछे सावन बदी ४ को दौलताबाद से मांडू की तरफ़ कूच किया ॥

इस सफ़र में २ किरोड़ रुपया नक़द १ किरोड़ का मुल्क और बड़े बड़े ४० क़िले हाथ आये॥

मकरमत खां आदिलखां की पेशकश लेकर बीजापुर से हाज़िर आया बादशाह ने परेंडे का किला और आधा मुल्क कोकण का जो निज़ाम का था उस को बख़्श दिया और सोने की तख़्ती जिसके ऊपर अहदनामा खोदा गया था उसके पास भेज

یری مدد کرنا واجب ہوگا اور گر وہ باوجود میری درخواست ے مدد نہ کرے گا تو عادلخان ھ سے جسقدر روپیہ جبر لیگا وسی قدر مین اس آٹھ لاکھ روپیہ ین سے مجرا کر لونگا۔

بادشاہ بعد اس فتح کامیابی کے ۱۷ ماہ صفر کو لت آباد سے منڈو کی طرف نہضت فرما ہوئے۔

اس سفر مین دو کروڑ روپیہ قد اور ایک کروڑ کا ملک معہ الیس بڑے بڑے قلعون کے تھ آیا۔

مکرمت خان بیجاپور سے ادلخان کی پیشکش لیکر پہونچا دشاہ نے قلعہ پرینڈہ اور آدہا لک کوکن کا جو نظام سے تعلق تہا اسکو بخشدیا اور وح زرین جسپے اوپر عہدنامہ کندہ تہا اوسکے پاس روانہ کی اوسکی

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दी इस्के अख़ीर में लिखा था कि "यह कौल क़रार सिकंदर की दिवार" की तरह मज़बूत रहैगा तारीख़ २३ ज़िलहिज सन १०४५ हिजरी ॥

फिर बादशाह ने दक्खन का कुल मुल्क कि जिस्में ४ सूबे अहमद नगर, तिलंगाना, ख़ानदेस, और बराड़, ५ लाख रुपये की जमा के थे और दौलताबाद व आसेर जैसे बड़े बड़े ६४ किले थे शाहज़ादे औरंगज़ेब के हवाले किया और उसको नये फ़तह किये हुये ४० किलों में से उन १० क़िलों के फ़तह करने का हुक्म दिया जो साहू जी वग़ैरे के नीचे दबे हुये थे ॥

असाढ बदी १५ को शत्रुसाल का मनसब एक हज़ारी सवारों के इज़ाफ़े से ३ हज़ारी ज़ात और ३ हज़ार सवार का होगया ॥

آخیر عبارت یہ تھی کہ
این قول وقرار نسلاً بعد نسلاً ہمچو سد سکندر
استوار خواہد بود فی التاریخ بست و سوم
شہر ذی الحجہ سنہ ہزار و چہل و پنج ہجری
مطابق نہم ماہ خرداد سنہ نہم جلوس مقدس

بعدہٗ بادشاہ نے کل ملک دکھن کا جسمین چار صوبہ - احمد نگر تلنگانہ - خاندیس - اور براڑ پانچ کروڑ روپیہ کی جمع کے تھے اور ۶۴ بڑے بڑے سنگین قلعہ مثل دولت آباد اور آسیر کے تھے بادشاہزادہ اورنگ زیب کے حوالہ کیا اور ممالک مفتوحہ جدید کے چالیس قلعون مین سے ان دس قلعون کے فتح کرنیکا حکم دیا کہ جو ساہو جی وغیرہ کے قبضہ مین سے تھے

۲۵ محرم کو راو شترو سال کا منصب ایکہزار سوارون کے اضافہ سے تین ہزاری تین ہزار سوار کا ہو گیا -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भादोंसुदी १ कोबादशाहमं डूमेंपहुंचेऔरकुतुबुल्मुल्क को भीअपनी तसवीरऔर अह्दनामे कीसुनहरीतख़्तीभेजी जिस के अंतभी सिकंदर कीदीवास्वा लीबातऔर तारीख़ ७ रबीउस्सा नी सन१०४६ हिजरीखुदेथे ॥	۲۹۔ربیع الاول کو بادشاہ ڈو میں پہونچے اور قطب الملک بھی اپنی تصویر اور عہد نامہ کی ہری تختی بھیجی اسکے آخیر میں ی وہی سند سکندر والی عبارت ر تاریخ ۷۔ربیع الثانی سنہ ۱۰۴۶ ری مطابق ۱۷ ماہ شہریور سنہ ۹ وس کندہ تھی۔
भादोंसुदी ८ कोमंडूमेंदत्ता जीकामनसब बहज़ारी ज़ातकेइ ज़ाफ़ेसे३हज़ारी ज़ातऔरइज़ार सवार का होगया ॥	۶ ربیع الثانی کو منڈو میں دتاجی نصب ہزاری ذات کے افہ سے تین ہزاری ذات اور یک ہزار سوار کا ہوگیا۔
कंल्यानभालाजिसको राणाजगतसिंघ नेइनफतहोंकी सुबारिक बाद देनेकेवास्तेभेजा याहाज़िरहुआ। औरपेशकशजो लायाथावहनज़रकी॥	کلیان جہالا جسکو رانا جگت سنگھ نے فتوحات تازہ کی تہنیت کے سطے بھیجا تھا بادشاہ کے حضور ں حاضر ہوا اور پیشکش گذرانی
आसोजसुदी ८ कोबादशा हने तरबियतख़ांकोज़मींदार जैतपुरकेऊपरभेजाजोलूटमार कियाकरतायातरबियतख़ांउसे	۶ جمادی الاول کو بادشاہ نے ربیت خان کو زمیندار جیت پور ی سزا دہی کیواسطے بھیجا جو راہزنی کیا کرتا تھا ۱۲ جمادی الاول کو تربیت خان

Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लेकर सातवें दिन हाज़िर होगया

असोज सुदी १० बृहस्पतवार को ख़ानदौरां बहादुर ने उदगिर का क़िला सीदी मुशताई से फ़तह किया जिस को उसने असाढ बदी ३२ इतवार के दिन से घेर रक्खा था ॥

कातिक बदी ३ को बादशाह मंडू से घाटे चांदा और उज्जेन के रस्ते से आगरे को रवानेहुये

कातिक बदी ११ को बादशाह ने राना जगत सिंघ के वास्ते जड़ाऊ सरपेंच और जड़ाऊ तलवार कल्यान झाला के हाथ भेजी

कातक सुदी १ को ख़ानदौरां बहादुर ने अडसे का क़िला भी ३ महीने के घेरसे किल्लेदार भोजराज से लेलिया

कातक सुदी १३ को बादशाह के डेरे गांव खजूरी परगने रामपुर

زمیندار مذکور کو لے کر حاضر ہو گیا۔

۸۔ جمادی الاول روز پنجشنبہ کو خان دوران بہادر نے قلعہ اودگیر کو فتح کیا جسکا محاصرہ یکشنبہ ۲۵۔ محرم سے کر رکھا تھا۔

۱۶۔ جمادی الاول کو بادشاہ منڈو سے آگرہ کی طرف براہ گھاٹی چاندا و اُجین روانہ ہوئے۔

۲۴۔ جمادی الاول کو بادشاہ نے رانا جگت سنگ کے واسطے جڑاؤ سرپیچ اور جڑاؤ تلوار کلیان جھالا کے ہاتھ بھیجی۔

۲۹۔ جمادی الاول کو خاندوران بہادر نے اڈسہ کا قلعہ بعد محاصرہ ۳ ماہ کے بھوج راج قلعدار سے لے لیا

۱۲۔ جمادی الثانی کو بادشاہ کے ڈیرے موضع کھجوری پرگنہ رامپور کے مضافات میں ہوئے یہان راؤ ہتی سنگھ کا وطن

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के पास हुये यहां राव हठ्ठीसिंघ का वतन था इसलिये उसने १ हाथी नज़र किया और बादशाह ने उस को खिल्लत बख्शा ॥

मंगसिर बदी १ खैराबाद में डेरे हुये और लशकर पत्तायत के परगने में होकर गुज़रा जो माधो सिंघ हाडा की जागीर में था उस्के बेटे मोहनसिंघ और जुझारसिंघ ने हाज़िर होकर १ हाथी नज़र किया बादशाह ने उन को खिल्लत और घोड़े दिये ॥

मंगसिर बदी ७ को बड़ोदे के गांव मंडावर में मुकाम हुआ जिस के पास राव शत्रुसाल हाडा का वतन था इसलिये उसके बेटे भाव सिंघ ने हाज़िर होकर १ हाथी नज़र किया बादशाह ने उस को भी घोड़ा और सिरोपाव बख्शा ॥

बादशाह ने धंधेडे का सु

تھا اسلیئے اس نے ایک ہاتھی
نذر کیا اور بادشاہ نے اسکو
خلعت عنایت فرمایا۔

۱۶- جمادی الثانی کو پرگنہ
خیرآباد کی نواحی مین ڈیرے
ہوئے اور لشکر پلاتیہ مین ہوکر
گذرا جو مادہو سنگہ ہاڈا کے
جاگیر مین تہا اس لیئے موہن سنگہ
اور جوجہار سنگہ اوسکے بیٹے حاضر
درگاہ ہوئے اور ایک ہاتھی
نذر کیا بادشاہ نے دونون کو
خلعت اور گہوڑے عنایت فرمائے

۲۱- کو بادشاہ کا مقام
موضع منڈاور پرگنہ بڑودہ مین
ہوا جسکے پاس راو شترو سال کا
وطن تہا اوسکے بیٹے بہاو سنگہ
نے حاضر ہوکر ایک ہاتھی
پیشکش کیا بادشاہ نے اسکو
بھی گہوڑا اور خلعت بخشا

بادشاہ نے دھندہیڑے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ल्क सेवाराम गोड़ को इनायत किया था जो बलराम का बेटा और राजा गोपालदास का पोता था वह वहां गया और इन्द्रमणि को निकालकर राज करने लगा कुछ दिन पीछे इन्द्रमणि कुछ आदमी इकट्ठे करके उससे लड़नेको आया और फिर अपने मुल्क का मालिक होगया बादशाह ने राजा विट्ठलदास गोड़ को उसके ऊपर भेजा और उसके अरज़ करने से उसके भतीजे सेवाराम गोड़, मोतमद खां, सैयद अबदुल माजिद जयराम, अनूपसिंघ, के बेटे राजा बहरोज़, राजा रोज़ अफ़ज़ूं के बेटे, ख्वाजे अब्बुल बक़ा, अबदुल्ला खान बहादुर फ़ीरोज़ जंग के भतीजे, सैयद चादन, हरीसिंघ, रादरतन सिंघ के बेटे, शिताबखां, अमीरबेग, दिलदारबेग, सैयद

ملک سیوارام گوڑ کو عنایت کیا تھا جو بلرام کا بیٹا اور راجہ گوپالداس کا پوتہ تھا وہ وہان گیا اور اندرمن زمیندار سابق کو نکالکر قابض ہوا چند روز بعد اندرمن سے کسیقدر جمعیت کے اُس سے لڑنے کو آیا اور پھر اپنے ملک کا مالک ہوگیا بادشاہ نے راجہ بٹھل داس گوڑ کو اوسکے اوپر بھیجا اور اُسکی عرض کرنے سے اُوسکے بھتیجے سیوارام گوڑ معتمد خان سید عبدالماجد جے رام ولد انوپ سنگھ راجہ بہروز ولد راجہ روز افزون وخواجہ ابوالبقا برادرزادہ عبداللہ خان بہادر فیروزجنگ سید چاون ہری سنگھ ولد راو رتن ہاڈا۔ شتاب خان پسر ملک علی و امیر بیگ ولد شاہ بیگ خان کابلی و دلدار بیگ قدیمی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सआदतुल्लाखांको भी ६०० तीरअंदाज़ और बरक़ंदाज़ अहदीसवारोंके साथ भेजा ॥ मंगसिर बदी ११ को बादशाहने राजा बिट्ठल दास और मोतमद खां वग़ैरा मनसबदारों को घोड़ा और खिलअत इनायत करके रुख़सत किया ॥ मंगसिर सुदी ७ को बादशाह अजमेर में पहुंचे और आनासागर तलाव के ऊपर दौलत खाने में उतरे जहांगीर बादशाह ने इस तलाव के पट्टे पर संगमरमर की १ इमारत बनाई थी उसमें बादशाह के हुक्म से झरोखा आम और खास दौलत खाना तैयार हुआ इस इमारत में ३ लाख रुपये की लागत बैठी जिसमें डेढ़ लाख से कुछ कम जहांगीर बादशाह के राज में लगे थे ॥	سید سعادت اللہ حاجی پوری ہی معہ ۶۰۰ سوار احدی کمانداز برقنداز کے اوسکے ساتھ تعینات کی ۲۵-کو بادشاہ نے راجہ ٹھل داس اور معتمد خان وغیرہ بیرون کو علے قدر مراتب گھوڑے ور خلعت دیکر ونڈ ہیٹر سے بکے دیر مرخص کیا ۷- رجب کو بادشاہ اجمیر ین داخل ہوکر آناساگر تالاب کے اوپر دولت خانہ مین - زوکش ہوئے جہانگیر بادشاہ نے اس تالاب کے بند پر یک عمدہ عمارت سنگ مرمر کی بنائی تھی بادشاہ نے اوسمین ہروکہ دولت خانہ خاص وعام بہت فراخ و دلکشا تیار کروایا جسمین ۳ لاکھہ روپیہ خرچ ہوئے ڈیڑہ لاکھہ سے کم تو جہانگیر بادشاہ کے عہد مین اور ڈیرہ لاکھہ سے

बादशाह दौलतखानेसेदरगाहत
कपैदल ज़ियारत करने को गयेऔ
र१००००) चढावे और खैरात्तमेंदे
कर उस मसजिद में पधारे कि जिस
के बनाने का हुक्म जुनेर से आने के
पीछे हुआ था और जो तख़्त नशी
नी के पीछे है ४०००० रुपये के खर्च
से तैयार होगई थी और वहां शाम
की नमाज़ पढ़कर दौलतखाने में
आगये ॥

मंगसिर सुदी १२ को राणा जग
तसिंघ के टिकाई बेटे राज कंवर
ने हाज़िर होकर ९ घोड़े नज़र किये
बादशाह ने उसको ख़िलअत ज़ड़ा
ऊ सरपेंच और मोतियों की मा
ला इनायत की ॥

ख़ानज़मां बहादुर जब बाद
शाह के पास से रुख़सत होकर अ
पने तईनातियों से मिला तो मालू
म हुआ कि साहूजी आदिल ख़ांकी

زیادہ بادشاہ کے زمانہ میں
لگے تھے۔

بادشاہ دولت خانہ سے
درگاہ خواجہ معین الدین تک پیدل
واسطے زیارت کے گئے
دس ہزار روپیہ چڑھائے پھر اُس
مسجد مین تشریف لیگئے کہ جسکی
تیاری کا حکم جُنیر سے واپس آنے
کے بعد ہوا تھا اور جو بعد از
جلوس چالیس ہزار روپیہ کے
خرچ سے اتمام کو پہونچا تھی نماز
شام کے بعد دولتخانہ مین واپس
آئے بے بدل خان گیلانی نے
اُسکی تاریخ مین لکھا ہے۔
قبلہ اہل زمان شد مسجد شاہجہان
۱۲ کو رانا جگت سنگہ کا ٹیکائی
کا کنور راج سنگہ حاضر آیا اور ۹
گھوڑے نذر کے بادشاہ نے
اُسکو خلعت سرپیچ مرصع اور
موتیون کی مالا عنایت فرمائی

नोकरी क़बूल न करके जुनेर
वग़ैरा किलोंके सोंपने में राज़ी न
हीहै औरआदिलखांनेरणदूला
कोसाहूजी के ज़ेरकरने औरउ
सके पाससे क़िलेलेनेके वास्ते
भेजा किबादशाही अमीरों सेमि
लकर यह मुहिम सरकरे इधर
ख़ान ज़मां ने बहादुरखां,कार
तलब खां,और राव हटी सिंघ
को १००० सवार राणा के और १०००
पैदल बरकंदाज़ के साथ जुनेर
का किला फतह करनेके वास्ते
भेजा और आपसाहूजी के मुक़ा
बिलेके वास्ते पूने को रवानेहु
आ जब किखोरनदी से उतरक
र लोहगांव में पहुंचा तो साहूजी
कहां से १७ कोसपर था भागकर
कोंधाने और नोरंदे के पहाड़ों में
चला गया ख़ान ज़मां रणदूला
से सलाह करने के वास्ते कुछ

خان زمان بہادر جب بادشاہ
کے پاس سے رخصت ہوکر اپنی
نیاتیون سے ملا تو معلوم ہوا کہ
اہوجی عادلخان کی نوکری قبول
رکے جنیر وغیرہ قلعون کی سپردگی
راضی نہین ہے اور عادلخان نے
ندولہ کو واسطے مدافعہ ساہوجی
ور فتح قلاع کے بہیجا کہ امرائے
دشاہی کی موافقت سے اس کام
وانجام دے خانزمان نے
ہادرخان کو مع کارطلب خان
ور راو ہٹی سنگہ و ہزار سوار رانا
بکت سنگہ و ہزار پیادہ برقنداز
کے قلعہ جنیر کے محاصرہ پر مامور
یا اور آپ واسطے مقابلہ ساہو
کے پونہ کی طرف سے روانہ ہوا
جب یہ لشکر کہور ندی سے اتر کر
وہ گانو مین پہونچا تو ساہوجی جو
وہان سے ۱۷ کوس پر تہا بہاگ
کر کوندہا اور نورندہ کے پہارون

रोज़तक ऐंदा नदी के किनारे
पर ठहरा और उससे सलाहके
रके नद्दी के पार उतरा और ती
न फ़ौजें बनाकर घाट के रस्ते से
चला१ फ़ौज का तो खुद अफ़स
र रहा दूसरी का राव शत्रुसाल
को और तीसरी का पृथ्वीराव
राठोड़ को सरदार बनाया साहू
जी कुंभा घाटी से उतर कर को
कण में पहुंचा जहां उसको थाने
दार अनंदा राजपुरी वगैरा से प
नाह मिलने की उम्मेद थी ले
किन उन्होंने उसको वहां से
निकाल दिया तब वह उसी घा
टी से उतर आया बादशाही ल
शकर इस अरसे में उस घाटी
से उतरकर कोकन में दाखि
ल हुआ और रणदूल भी उस
घाटी में आपहुंचा साहू भा
गकर माहोली की तरफ गया

مین چلا گیا خان زمان چند روز
تک واسطے استصواب رندولہ
کے ایندان ندی کے کنارے
پر رہا اور بعد صلاح رندولہ کے
ندی سے اترا اور اپنی فوج کے
تین دستہ کرکے گہاٹ کے راستہ
سے روانہ ہوا پہلے دستہ کا افسر
تو خود رہا دوسرے اور تیسرے
کا سردار راو شترو سال ہاڈا اور
پرتھی راج راٹہوڑ کو بنایا ساہو جی
کونبہا گہاٹی سے اترکر کوکن دیس
مین چلا گیا تاکہ وہان تہانہ داران
اندا راجپوری وغیرہ سے پناہ
حاصل کرے مگر انہون نے اسکو
نکال دیا تب وہ اوسی گہاٹی
سے اترکر واپس چلا آیا بادشاہی
لشکر اس عرصہ مین اس گہاٹی سے
کوکن مین داخل ہوا اور رندولہ
بہی گہاٹی مذکور تک آپہونچا ساہو جی
بچکر بہاگا اور ماہولی کی طرف گیا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ख़ानज़मां लशकर को छोड़ क
र उसके पीछे रवानेहुआ रस्ते में
सुना कि साहू,, मोरंजन के कि
ले में पहुंच गया है ख़ानज़मां धा
वाकर के किले से ३ कोस परजा
पहुंचा सो साहू जल्दी में जित
ना असबाब आगे को रवानाक
रसका करके आप भी पीछे से
चल दिया और बाक़ी असबा
ब क़िले में ही छोड़ गया रस्ते
में कीचर काचा बहुत था और
जाड़ा भी शिद्दतसे पड़ता था तो
भी ख़ानज़मां ने १२ कोस तक
उसका पीछा किया मगर वह तो
हाथ नहीं आया साफ़ निकल ग
या बादशाही अमीर उसके डेरे
रवेमें ऊंट घोड़े और निज़ामु
ल्मुल्क के दामाद के कि जिस
को वह निज़ामुल्मुल्क नाम रख
कर अपने साथ लिये फिरता

ان زمان بہی لشکر کو پیچہے
ور کر اوسکے تعاقب مین
وانہ ہوا راستہ مین سُنا کہ ساہو
رنجن کے قلعہ مین پہونچگیا ہے
زمان یلغار کرکے قلعہ سے
کوس اور پہنچا تہا کہ ساہو
ی مین جسقدر اسباب
نہ کر سکا آئندہ کو روانہ کرکے
سے خود بھی چلدیا اور باقی
ان قلعہ مین ہی چھوڑ گیا خانزمان
با وجود کیچڑ اور سردی کے
کوس تک اُسکا تعاقب کیا
تو ہاتھ نہین آیا صاف
گیا بادشاہی امیر اُسکا
گھوڑا - اونٹ - نقارہ
ری پالکی اور نظام الملک
نشان لے کر لوٹ آئے
نظام الملک جو اصل مین
ام الملک کا داماد تہا اُسکو
اپنی نظام الملک بنا کر

Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहताथा नक़्क़ारे व तरीया। ल
की और निशान लेकर लौट आये =
साहू जी एक रात दिन च
लकर किले माहोली में जा उत्त
रा वहां जो लोग साथ चलने को
राज़ी हुए उनको लेकर और
बाक़ी को सीख देकर अपने बे
टे समेत लड़ने के इरादे से उस
किले में ठहर गया दूसरे दिन
खानज़मां ने पहुंचकर घेरा दि
या और बड़े दरवाजे के आगे
मोरचे राजा पहाड़ सिंघ बुंदे
ले को सौंपे फिर रणदूल्ह भी आया
और उसने दूसरी तरफ़ से कि
ले को घेरा आख़िर साहू ने तंग
होकर बार२ कहलाया कि मु
झ को बादशाही अमीरों में दा
ख़िल करलो लेकिन ख़ानज़
मां ने ऐसो जवाब दिया कि आ
दिल ख़ां की नौकरी कबूल

لیے پھرتا ہے
ساہو جی ایک رات
دن برابر قطع مسافت کرکے
قلعہ ماہولی مین جا اُترا اُوسوقت
جو لوگ اُوسکے ساتھ رہنے کو
راضی ہوئے انکو رکھہ کر اور
باقی کو رخصت کرکے معہ اپنے
بیٹے کے لڑائی کے ارادہ سے
اُس قلعہ مین ٹھہر گیا خان زمان
نے دوسرے دن پہونچکر محاصرہ
کیا بڑے دروازے کے روبرو
مورچہ لگائے وہ راجہ پہاڑسنگہ
کے سپرد کئے پھر رندولہ نے
بھی آکر دوسری طرف سے
گھیرلیا آخر ساہو نے تنگ آکر
بہت سا چاہا کہ مجھکو اُمرائے
شاہی مین داخل کرلو لیکن
خانزمان نے کہا کہ اتبو عادلخان
کی اطاعت قبول کرو ورنہ
تمہاری مخلصی مشکل ہے ساہوجی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करो नहीं तो तुम्हारा बचना
मुशकिल है तब उसने आदिल
खां से अहद नामा मांगा और ज
ब अहद नामा आया तो कई दर
ख्वास्तें और कीं और अपने इक़
रार से फिर गया लेकिन जब
देखा कि अब किले का रहना
मुश किल है तो बाहर निकल
कर रणदूल्ला से मिला और नि
ज़ामुल्मुल्क के दामाद को उस
के हवाले करके आदिल ख़ां की
नोकरी क़बूल करली और जुने
र वग़ैरा किलों को बादशाही
नोकरों के हवाले करदेने का इ
क़रार किया दूसरे दिन १ बड़ा तू
मार अपनी अरज़ों का अपने व
कील और क़ाज़ी अबू सईद के
हाथ जो आदिल ख़ां का अहद
नामा लाया था खान ज़मां के पा
स भेजा ख़ान ज़मां ने उसकी

ے عادلخان کا عہدنامہ مانگا
ب وہ آگیا تو پھر چند خواہشیں
ور کین اور اپنے عہد سے
ہر گیا لیکن جب دیکھا کہ اب
لعہ کا رہنا مشکل ہے تو نکل کر
ندولہ سے ملا اور نظام الملک
کے داماد کو اسکے حوالہ کرکے
عادلخان کی نوکری قبول کرلی
ر شاہی ملازموں کو جنیر وغیرہ
لاع کے سپرد کردینے کا
عدہ کرلیا دوسرے
ن ایک طویل الذیل طومار
ی معروضات کا اپنے وکیل
ور قاضی ابو سعید کے ہاتھ
و عادلخان کا عہدنامہ لایا تھا
انزمان کے پاس بھیجا
انزمان نے اسکی نقل مع
ی عرضی کے بادشاہ کی
خدمت میں روانہ کی جب
ادشاہ نے وہ معروضات

Chambal Archives, Etawah

नक़ल अपनी अर्ज़ी के साथ बादशाह की ख़िदमत में भेजी बादशाह ने वे अर्जें उसकी क़बूल कर लीं तब साहू ने अपने आदमियों को क़ाज़ी अबूसईद के पास क़िले जुनेर त्रिम्बक त्रिंकल वाड़ी, हरीस, जोधन, जूदहरसरा, के सौंपदेने की तहरीरें देके ख़ान ज़मां के पास भेजा ख़ान ज़मां ने उन के साथ अपने आदमी उन क़िलों में अमल करने के वास्ते भेजे और आदिल ख़ां ने रणदूला को लिखा कि निज़ामुल्मुल्क के जंवाई को ख़ान ज़मां के हवाले करदो इस पर रणदूला ने ख़ान ज़मां को सौंप कर साहू के साथ बीजापुर को चला गया और ख़ान ज़मां दौलताबाद में शाहज़ादे औरंगज़ेब के पास हाज़िर हुआ

قبول کرلین تو ساہو جی نے اپنے معتمدون کو قاضی ابو سعید کے ہمراہ معہ تحریرات سپردگی قلاع جنیر۔ ترمبک۔ ترنکلواڑی ہریس۔ جودہن۔ جوند اور ہرسر کے خانزمان کے پاس بھیجا خانزمان نے اپنے آدمی اُنکے ہمراہ ان قلعون مین عمل کرنے کو بھیجے اور عادلخان نے رندولہ کو لکھ بھیجا کہ نظام کے داماد کو خانزمان کے سپرد کردے چنانچہ وہ سپرد کرکے معہ ساہو کے بیجاپور کو چلا گیا اور خانزمان دولت آباد مین شاہزادہ اورنگ زیب کے پاس پہنچا اور دکہن کی مہم ختم ہوگئی

فتوحات گونڈوانہ

दक्खन का मुहिम ख़तम हो
गई ॥

ख़ान दौरां उदगिर और
उड़ीसा फ़तह करने के पीछे
मुकाम कुंभगिर इलाक़े कुतु
बुल्मुल्क में ठहरा हुआ था ज
हां से उसने देवगढ़ के इलाक़े में
आकर ,, कतलम्कर और आष्
टे के क़िले जो बराड़ के ज़िले में
थे और जहां के गोंड सूबेदार के
हुक्मों को नहीं मानते थे फ़तह
किये और कनकसिंघ बेश को
देवगढ़ के ज़मींदार कोकियां
के पेशकश लेने के वास्ते भेजा
और फिर ख़ुद भी रवाने हुआ
जब नागपुर के पास पहुंचा तो
कनक सिंघ कोकियां के वकी
ल को लेकर आया और कहा कि
कोकियां तो पेशकश देना क़
बूल नहीं करता ख़ान ने यह

खاندوران نے جو بعد
[...]اودگراور اڈیسہ کے مقام
[...] متصد قطب الملک
[...]ن ٹھہرا ہوا تہا وہاں سے
[...]گڑہ کے علاقہ مین آکر
[...] اور آشٹہ کے قلعہ
[...] پرگنہ کہرانڈگانون ضلع براڑ
[...]ن تہے اور جہان کے گونڈ
[...]وبہ دار کے حکمون کو نہین
[...]نتے تہے فتح کئے اور
[...]ک سنگہ بیش کو دیوگڑہ
کے مرزبان کوکیان کے
[پ]اس بہیجکر پیشکش طلب کی
[ج]و کوکیان کے وکیل کو لیکر
خاندوران کے پاس آیا
خاندوران اسوقت ناگپور
[...]سے ایک منزل ادہر پہونچگیا
تہا اور کہا کہ کوکیان نے
پیغام قبول نہ کیا خان نے
[...] لشکر ناگپور کو جو مضبوطی

पास

सुनकर नागपुर को घेरा जो मज़
बूती में दूसरे किलों से बढ़कर था
जब मोरचे खाई तक जा पहुंचे
तो चांदे का ज़मींदार "केबां"
ख़ान का बुलाया हुआ १५०० स
वार और ३००० पैदलों से आया
और ७०००० मिजमानी के लाया
इसी तरह गुन्नौर का ज़मींदार
संग्राम भी २००० सवार ५०००
पैदल सिपाही लुटेरे और बहु
तसा माल असबाब कोकियां
के आदमियों का जो भागकर
पहाड़ों और जंगलों में जा छुपे
थे लेकर हाज़िर हुआ उसने अप
ना और केबां का वकील फिर
१ बार कोकिया के समझाने के
वास्ते भेजा उसने १५० हथियों
की फ़र्द भेजकर कहलाया कि
जो घेरा उठालो तो ये हाथी नज़
र कर दूंगा ख़ानने कहा कि किला

ہیں دوسرے قلعوں سے
ممتاز تھا جاگھیرا جب مورچہ
خندق تک پہونچ گئے تو
چاندا کا زمیندار کیبا حسب الطلب
خاندوران کے معہ ڈیڑھ ہزار
سوار اور تین ہزار پیادوں
سے آحاضر ہوا اور ستر ہزار روپیہ
مہمانی کے نام سے لایا اسیطرح
سنگرام زمیندار گنور بھی بادشاہ
کے حکم سے معہ دو ہزار سوار
اور پانچہزار پیادہ سپاہی اور
لوٹیروں کے لشکر میں پہنچا
اور بہت سا مال کوکیان کی
رعایا کا جو بھاگ کر پہاڑوں
اور جنگلوں میں چھپی ہوئی تھی چھین کر
لے آیا سنگرام نے اپنا اور کیبا
کا وکیل پھر ایکبار کوکیان کے
سمجھانے کو بھیجا اُسنے ڈیڑھ سو
ہاتھیوں کی فہرست بھیجکر کہلایا
کہ جو محاصرہ اُٹھا لو تو یہ سب ہاتھی

भी ख़ाली करना होगा कोकि
यों को यह मंज़ूर न हुआ तब ३
तरफ़ से सुरंगों में आग लगाई ग
ई॰ सुरंग राजा जयसिंघ ने भी ब
नाई थी सुरंगों के उड़ने से॰ बड़ा
रस्ता खुल गया और राजा जय
सिंघ ने बहादुरी से क़िले में घुस
कर सब आदमियों को मार डा
ला और देवजी॰ क़िलेदार को प
कड़ लिया आख़िर कोकियों
ने देवगढ़ से १४ कोस चलकर
ख़ान से मुलाक़ात की डेढ़ लाख
रुपया १७० हाथी और हथनियां
हाज़िर करके बरस ब बरस ४ ला
ख रुपया ख़ज़ाने में दाख़िल
करने का इक़रार किया ख़ान
दौरां ने नागपुर का क़िला उस
को पीछा दे दिया और कालीभें
ट में आकर वहां के ज़मींदार
भी मसेन से॰ हाथी हथनी समेत

ر کردو نگا خان سے کہلایا
قلعہ بھی خالی کرو مگر یہ اُس نے
منظور نہ کیا تب تین طرف سے
ں میں آگ لگائی گئی ایک
ب راجہ جے سنگھ نے بھی
ی تھی نقب کے اُڑنے
ے ایک بڑا راستہ کھل گیا
دار خان اور راجہ جے سنگھ
نے بہادری سے قلعہ میں داخل
ر تمام آدمیوں کو مار ڈالا اور
وجی قلعدار کو گرفتار کر لیا
ر کوکیا نے ۲۴ شعبان کو
وگڈھ سے پندرہ کوس پر آکر
ن کے ساتھ ملاقات کی
یک لاکھ پچاس ہزار روپیہ
نقد اور ایک سو ستر ہاتھی نر
ر مادہ پیشکش دیگر سال بسال
یار لاکھ روپیہ خزانہ بادشاہی
یں داخل کرنیکا وعدہ کیا
خاندوران نے ناگپور کا قلعہ

लियाऔरफिरदरगाहकोरवा नेहुआ ॥

पोसबदी ३ कोबादशाहने अजमेरसेकूचकरकेजोगीतला वपरडेराकियाराजागजसिंघ कोखिलत्तखासा, खासाघोड़ा सुनेहरीज़ीनकाऔरहाथीइना यतफ़रमाया ॥

रायांजगतसिंघकेबेटेराजकुं वरकोखिलअतजड़ाऊखपवामी नाकेकामकीतलवारहाथीऔर घोड़ाइनायतहुआऔरउसकेसा थकेसरदारोंमेंसेरावबल्लूचोहा न-रावतमानसिंघचोंडावतवगै राकोखिलअतऔरघोड़ेमिलेऔर सीखदीगई ॥

बादशाहनेरायाजगतसिं घकेवास्तेभी १ हाथीकंवरकोदिया

पोसबदी ७ को "मुअज़ाबाद केपासडेरेहुयेयहकसबाराजाज यसिंघकीजागीरमेंथाइसलियेरा

اوسکو واپس دیدیا - اورکالی بہنیت ہین آکر وہان کے زمیندار بہیم سین سے ایک ہاتھی معہ ہتھنی کے لیا اور درگاہ کو روانہ ہوا

۱۵ - رجب کو بادشاہ اجمیر سے روانہ ہوے اور جوگی تالاب پر ڈیرہ کیا وہان راجہ گجسنگہ کو خلعت خاصہ گھوڑا طویلہ خاصہ سے معہ سنہری زین کے عنایت فرمایا -

رانا جگت سنگہ کے بیٹے راج کنور کو خلعت کہپوہ مرصع شمشیر یا یراق طلائی میناکار ہاتھی اور گھوڑا عنایت ہوا اور اسکے ساتھ کے سردارون مین سے بلو چوہان راوت مان سنگہ چونڈاوت وغیرہ کو بھی خلعت اور گھوڑے ملے اور رخصت دیگئی -

رانا جگت سنگہ کے واسطے بھی ایک ہاتھی کنور کے حوالہ کیا گیا

۱۸ کو معزآباد کے پاس ڈیرے

जा की तरफ़ से कई घोड़े १ हाथी और ६०००० नक़द नज़र हुये बादशाह ने हाथी और घोड़े तो रख लिये और रुपये फेर दिये ॥

पौस सुदी १० को बाड़ी के तलाव पर बादशाह के डेरे हुये वहां जो १ महल्ल २ साल में १४०००० के ख़रच से तैयार हुआ था बादशाह उस्में ठहरे ॥

माह बदी ५ को बादशाह आगरे में दाख़िल हुए और अपनी सालगिरह का दरबार आमख़ास दौलतख़ाने में करके ज़मीं चूमकर आदाब बजा लाने का क़ायदा भी मौक़ूफ़ कर दिया यह आदाब सिजदे (ढोक देने) से मिलता हुआ था और उसकी जगह चौथी सलाम बहाल रक्खी दौलतख़ाना दरशन का झारोका ख़ास दौलतख़ाना और ज़नाने महल, यह सब लाल और सफ़ेद पत्थर के नये बने ये

आम

شاہ کے ہوئے یہ قصبہ راجہ
سنگہ کی جاگیر مین دیا ہوا تھا
لئے راجہ کی طرف سے کئی
ے معہ ایک ہاتھی اور
ٹھہ ہزار روپیہ نقد کے پیش
ے بادشاہ نے ہاتھی گھوڑے
رکھ لئے اور روپیہ واپس کر دئیے
۸ شعبان کو باڑی کے
اب پر ڈیرے ہوئے بادشاہ محلات
ے تالاب پر جو دو سال مین
ب لاکھ چالیس ہزار روپیہ کے
ن سے تیار ہوئی تھی فروکش ہوے

۱۸ شعبان کو بادشاہ نے
ہ مین داخل ہوکر اپنی شمسی سالگرہ
دن عمارت دولتخانہ خاص و
م مین جو معہ جہروکہ درشن دولتخانہ
ص اور مشکوی معلی کے بہت عمدہ
ر تخنہ سنگ مرمر و سنگ سرخ وغیرہ
ے تعمیر ہوئی تھی جلوس کر کے آداب
مین بوسی کو بھی جو سجدے سے مشابہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजा बिठ्ठल दास और मोतमिदखां जो धंधेड़े के ज़मींदार के कपर गये थे उन्होंने उस क़िले को घेरा, क़िले वालों ने कुछ दिनों बाद किला सौंप दिया और ज़िमींदार भी हाज़िर हो गया मोतमिद खां उसको बादशाह के पास लाया उसने मुजरे के वक्त १ हाथी नज़र किया बादशाह ने जां बख़्शी करके जुनेर के किले में कैद कर दिया

पोस बदी ६ को राजा बिठ्ठल दास का मनसब हज़ारी ज़ात और हज़ार सवारों के इज़ाफ़े से ४ हज़ारी ३०० सवारों का होगया और धन्धेड़ा उसको वतन बनाने के वास्ते दिया गया।

नीचे के बंगश की थानेदारी राजा जगत सिंघ से उतर कर पुरदिलखां को मिली ॥

(१) बंगश के २ हिस्से हैं १ ऊपर का बंगश कहलाता है दूसरा नीचे का ॥

تھا موقوف کر دیا اور بجائے اس کے تسلیم چہارم کو بحال رکھا

راجہ بٹھلداس اور معتمد خان جو زمیندار دھندہیڑہ کے اوپر گئے تھے انہوں نے اس مضبوط قلعہ کو گھیرا جو اہل قلعہ کے تنگ ہونے پر زمیندار مذکور نے سونپ دیا معتمد خان اسکو بادشاہ کے حضور مین لایا اس نے بروقت مجرا ایک ہاتھی نذر کیا بادشاہ نے جان بخشی کر کے جنیر کے قلعہ مین قید رکھنے کے واسطے بھیجا۔

۱۹ شعبان کو راجہ بٹھلداس کا منصب ہزاری ذات اور ہزار سوار اضافہ سے چار ہزاری ذات اور تین ہزار سوار کا ہو گیا اور اسکو دھندہیڑہ وطن بنانے کے واسطے ملا۔

بنگش پائین کی تہانہ داری راجہ جگت سنگھ سے تغیر ہو کر پردلخان کو عنایت ہوئی۔

(۱) بنگش کے دو حصہ بالا و پائین ہین ۱۲

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

चेत बदी १४ को खानदौरां बहादुर बादशाह के हज़ूर में हाज़िर आया राजा जयसिंघ, राजा गजसिंघ का बेटा अमर सिंघ, रावरत्तन का बेटा माधोसिंघ जो इस्के साथ थे दरगाह में हाज़िर हुये ॥

खानदौरां को ६ हज़ारी ज़ात और ६००० सवार दु अस्पा और सह अस्पा का मनसब मिला ॥

राजा जयसिंघ को खिलअत ख़ासा जड़ाऊ खपवा फूलकटारा क़बचाक़ घोड़ा ख़ासे तवेले से सोने की ज़ीन समेत इनायत हुआ और परगना चाटसू जो इसके वतन के पास बादशाही खालसे में था उसकी जागीर में दिया गया अमरसिंघ और माधोसिंघ दोनो असल और इज़ाफ़े से तीन तीन हज़ारी ज़ात और दो दो हज़ार सवारों के मनसबदार हुये और दोनों को खिलअत और चांदी की ज़ीन

۲۵ شوال کو خاندوران بہادر
شاہ کے حضور میں حاضر ہوا
جے سنگھ - امر سنگھ خلف راجہ
نگھ - مادہوسنگھ ولد راو رتن ہاڑہ
سکے ہمرکاب تھے باریاب ملازمت ہوئے
خاندوران کو چھ ہزاری ذات
چھ ہزار سوار دو اسپہ سہ اسپہ کا
منصب اصل و اضافہ سے ہوا۔
راجہ جیسنگھ کو خلعت خاصہ
پرہ مرصع معہ پھول کٹارہ کے
یت ہو کر پانچہزاری ذات
ر پانچہزار سوار کا منصب
ل و اضافہ سے ہوا پرگنہ چاٹسو
ع صوبہ اجمیر جو اسکے وطن
ے پاس تھا خالصہ شریفہ سے
ر قبچاق گھوڑا معہ زین مطلا
یلہ خاصہ سے دیا گیا۔
امر سنگھ اور مادہوسنگھ دونوں
ل و اضافہ سے تین ہزاری ذات
ر دو ہزار سوارون کے منصب

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के घोड़े इनायत हुए ॥

चैतबदी १३ को खान दौरां बहादुर की अरज़ी से राजा देवी सिंघ को फ़ंडा और नक्कारा मिला ॥

चैत सुदी १२ को मेरव संक्रांत के उच्छब में राजा बिट्ठलदास को खिलअत और सुनहरी ज़ीन का घोड़ा खासे तवेले से इनायत होकर धंधेड़े जाने की रुखसत हुई ॥

जम्मूं के ज़मींदार संग्राम का बेटा भोपत बादशाही नौकर होकर फौजदार कांगड़े के पास तईनात था और जब उस के पास आता तो बहुत से आदमी लेकर आया करता था शाहकुलीथानेदार ने एक दिन उसके मारने का इरादा करके बहुत से आदमी अपने पास जमां करके उसको बुलाया वह यह भीड़ देखकर लड़ा और अपने राजपूतों समेत मारा गया ॥

बैसाख सुदी ३ को शाहज़ादा औ

کو پہونچے اور دونوں کو گھوڑے معہ زین نقرہ کے مرحمت ہوئے

۲۶ شوال کو خاندوران بہادر کی عرض سے نقارہ اور علم عنایت ہوئے

۱۲ - ذیقعدہ مطابق ۱۹ - فروردین روز شرف آفتاب - بادشاہ نے راجہ بٹھلداس کو خلعت اور گھوڑا خاصہ طویلہ سے معہ زین مطلا کے عنایت کرکے دھنڈھیرہ جانیکی رخصت دی -

جموں کے زمیندار سنگرام کا بیٹا بہوپت بادشاہی ملازمان مین داخل ہوکر فوجدار پرگنات دامن کوہ کانگڑہ کے پاس متعین رہا کرتا تھا اور جب اوسکے پاس آتا تھا تو بہت سے آدمی اوسکے مارنیکے واسطے جمع کرکے اسکو بلایا وہ آیا اور یہ ہجوم دیکھکر لڑا اور معہ اپنے راجپوتون کے مارا گیا -

ساتھ لاتا تھا ایکدن شاہ قلیخان فوجدار نے بہت سے آدمی

یکم ذی الحجہ کو شاہزادہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रंगज़ेब दक्खनसे आया ॥

बैसाखसुदी ६ को बादशाह ने राजा जयसिंह को कि जिसने दक्खन की मुहिम में अच्छे २ काम किये थे ख़ास खिलअत और हाथी देकर इर्शाद फ़रमाया कि अपने वतन आमेर में जाकर सफ़र की मेहनत से कुछ दिन आराम करे और २० घोड़ियां नसल बढ़ाने के वास्ते उसको दी गईं क्योंकि उसके इलाक़े में घरज़ाद घोड़े की क़ीमत १००) तक पहुंच गई थी

गुन्नोर के ज़िमींदार संग्राम का मनसब पांचसदी ज़ात इज़ाफ़ा होकर डेढ़ हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का होगया ॥

जेठबदी १ को बादशाह ने अपना वकील कुछ उमदा सोग़ात और ख़लीता देकर ईरान के बादशाह शाह सफ़ी के पास रवाने किया जिसमें दक्खन की फ़तह

اورنگ زیب دکہن سے آیا

۸ ذی الحجہ کو بادشاہ نے راجہ جیسنگہ کے کارہاے نمایان مہم دکہن کی قدر کرکے خلعت خاصہ اور ہاتھی عنایت فرمایا اور حکم دیا کہ اپنے وطن آنبیر مین جاکر کچھ دنون آرام کرے اور محنت سے آسودہ ہو اور بیس گہوڑیان بھی ترقی نسل اسپان کے واسطے مرحمت کین کیونکہ اوسکے علاقہ مین خانہ زاد گہوڑے کی قیمت ایکہزار روپیہ تک پہونچ گئی تہی

گنور کے زمیندار سنگرام کا منصب پانصدی ذات کے اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ذات اور چھ سو سوارونکا ہوگیا۔

۱۴ ذی الحجہ کو بادشاہ نے اپنا وکیل معہ تحایف وخریطے کے شاہ صفی داراے ایران کے پاس روانہ کیا جسمین فتح دکہن اور قتل

Chambal Archives, Etawah

और राजा जुझार सिंघ के क़तल का हाल लिखा था ॥

जेठ बदी १२ को रात को शाह ज़ादे औरंग ज़ेब की शादी मिरज़ा शाह नवाज़ बेग ख़ां सफ़वी की लड़की से हुई ॥

बुंदेलों ने जुझार सिंघ के ख़ानदान से प्रथ्वीराज नाम १ लड़के को जो जिंदा बच गया था अपना राजा बनाकर कई परगनों में फ़साद खड़ा किया इसलिये बादशाह ने जेठ सुदी १ को मालवे के सूबेदार ख़ानदौरां को ख़ंजर इनायत करके उनके ऊपर भेजा ॥

प्रताप उज्जैनिया का मारा जाना

प्रताप ने बादशाह की बंदगी करने से अपनी मुल्क की हकूमत पाई थी जिसकी आरज़ू बहुत दिनों से रखता था मगर फिर हुक्म अदूली और नाफ़रमानी

راجہ جوجہار سنگہ کا حال درج تہا

شب سہ شنبہ ۲۶ ذی الحجہ کو شاہزادہ اورنگ زیب کی شادی مرزا شاہ نواز خان صفوی کی لڑکی سے ہوئی۔

بندیلون نے جوجہار سنگہ کے خاندان سے پرتہی راج نام ایک لڑکے کو جو زندہ بچ گیا تہا رئیس بنا کر کئی گانؤ اور پرگنون مین فساد کیا اسلیئے بادشاہ نے خاندوران صوبہ دار مالوہ کو خلعت عنایت کرکے ۲۹ ذی الحجہ کو اسطرف مرخص فرمایا

پرتاب اوجینیہ کا مارا جانا

اسنے بوجہ بندگی درگاہ کے حکومت اپنے ملک کی پائی تہی جسکی آرزو بہت مدت سے رکہتا تہا مگر پہر حکم عدولی اور نافرمانی کرنے لگا بادشاہ کے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करने लगा तब बादशाह के हु
क्म से बिहार का सूबेदार अबदु
ल्लाखां फ़ीरोज़ जंग उस्के ऊप
र गया और भोजपुर के किल्ले को
जो नदी के ऊपर तिखूंटी शकल
में बना है घेरा वह क़िला मज़
बूत था उस्के अंदर बंदूकची औ
र तीरअंदाज़ बहुत थे और
जंगल भी क़रीब था इस सबब
से ६ महीने तक लड़ाई होती र
ही अख़ीर में ख़ान ने वह किल्ला
और उस्के सिवाये ११ किल्लेओं
को फ़तह कर लिये प्रताप अपने
बाल बच्चों को लेकर १ बाग़ में
चला गया जो भोजपुर के कि
ल्ले में था वहां ज़बरदस्त ख़ां के
२ बेटे मुजफ्फर बेग और फ़रै
दूं बेग पहिले से दाख़िल होग
ये थे उनको मार डाला बादशा
ही फ़ौज ने उस बाग़ को भी घेर
लिया प्रताप ने बहुत हमले

سے عبداللہ خان بہادر فیروز
ک اوسکے اوپر گیا اور قلعہ
وبہوجپور کو گہیرا چونکہ قلعہ مضبوط
ا اور اوسکے اندر تفنگچی اور
ر بہت تھے اور جنگل قریب
اسلئے محاصرہ چھ مہینے تک
م رہا آخر عبداللہ خان نے قلعہ
وجپور جو بہوجپورہ ندی کے
ر بشکل مثلث بنا ہوا
ا معہ گیارہ قلاع دیگر
ے فتح کرلیا پرتاپ معہ
یال واطفال کے ایک
غ مین چلا گیا جو قلعہ بہوجپور
ن تہا اور وہان جو مظفر بیگ
ر فریدون بیگ دونون فرزند
بردست خان کے پہلے سے
اخل ہوگئے تھے اونکو مارڈالا
رج نے اس باغ کو بھی گھیرلیا
رتاپ نے بہت حملے کئے دوشنبہ
ذی الحجہ کو ایک پہرون سے

Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किये ॥

बैसाख सुदी ३० को पहर भर दिन चढ़े से दूसरी सुबह तक बराबर लड़ाई हुई मगर पानी न मिलने से और प्यास के मारे बुरा हाल होजाने से उसने अबदुल्ला खां को कहला या कि अब मैं तुम्हारे सरने हूं और सर नालेने वालों के मुआफ़िक़ हथियार और पोशाक खोलकर १ धोती बांधे और अपनी औरत का हाथ पकड़े हुये उस्के पास चला आया अबदुल्ला खां ने उस्को कैद करके उस्के साथियों को मार डाला और उस का माल असबाब और हाथी घोड़े सब जबत कर लिये ॥

११वां बरस

जेठ सुदी ३ संबत १६९४ से प्रथम जेठ सुदी २ तक

دوسری صبح تک جنگ قایم رہی مگر پھر بسبب نہ ملنے پانی اور تشنگی کے عبداللہ خان کو کہلا یا کہ اب مین تمہاری پناہ مین ہون اور مثل پناہ مانگنے والون کے ہتہیار اور پوشاک اوتار کر ایک لنگی باندھی اور اپنی عورت کا ہاتھ پکڑکر عبداللہ خان کے پاس چلا آیا عبداللہ خان نے اوسکو قید کرکے اوسکے ہمراہیون کو مروا ڈالا اور اوسکا تمام مال اسباب معہ ہاتھی گھوڑون کے ضبط کرلیا۔

گیارہوان برس

سنہ ۱۰۴۷ ہجری

تاریخ ۱۶ ماہ مئی ۱۶۳۷ع سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जेठ सुदी ३ को प्रताप उज्जेनिये के पकड़े जाने की खबर बादशाह को पहुंची तो उन्हों ने हुक्म लिखा कि अबदुल्लाखां उस को मारकर उस का माल भी ले ले और उस्की औरत पर भी क़बज़ा करे अबदुल्लाखां ने प्रताप को क़तल कराकर कुछ लूटतो अपने साथियों को दी बाक़ी खुद लेली और औरत को मुसल्मान करके अपने पोते से उसका निकाह पढादिया ॥

असाढ सुदी ३ को प्रथ्वीराज राठौड़ का मनसब २ हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का असल और इज़ाफ़े से होगया

भादों बदी ३ को खबर पहुंची कि समंदर के बढ जाने से ठट्ठे की तरफ़ अकसर गावों में जान और माल का नुक़सान हुआ

ہی سنہ ۱۶۳۸ عیسوی تک
غرہ محرم کو پرتاب اُجینیہ کے
تار ہونے کی خبر بادشاہ کو
نچی بادشاہ نے حکم دیا کہ -
اللہ خان اُسکو مارکر اوسکی
ت و مال اسباب پر قبضہ کرے
عبداللہ خان نے پرتاب کو قتل
ے کچھ لُوٹ تو اپنے ہمراہیوں کو
باقی خود لے لی اور اوسکی
رت کو مسلمان کرکے اوسکا
ح اپنے پوتے سے
دیا۔

۱۱ صفر کو پرتھی راج راٹھوڑ
نصب اصل اور اضافہ سے
ہزاری ذات اور سات سو
وارونکا ہوگیا۔

۲۲ - ربیع الاول کو خبر
نچی کہ سمندر کی طغیانی سے
ٹھٹھہ کی طرف بہت سے مواضعات
ان جو ساحل پر واقع تھے

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और ज़मीन पर जहां २ समंदर का पानी फिरा वह भी खारी होगई और खेती बाड़ी के क़ाबिल नहीं रही ॥

आसोज बदी ६ को बादशाहज़ादे औरंगज़ेब को जो शादी के वास्ते आया था दकखन जाने की रुखसत हुई और उसकी अरज़ से बगलाये की विलायत भी जो बहुत आबाद है और जहां की आबहवा अच्छी है उसको इनायत हुई और हुकम हुआ कि दौलताबाद में पहुंच कर उस पर क़बज़ा करने के लिये फ़ौज भेजे यह मुलक बाप दादों से भरजी के क़बज़े में था १ हद्द इसकी खानदेस दकखन से दूसरी सूरत और गुजरात से मिली हुई थी ॥

कशमीर के सूबेदार ज़फ़र खां

جان اور مال کا نقصان ہوا اور زمین پر جہان جہان سمندر کا پانی پہرا وہ بہی کہاری ہوگئی اور قابل زراعت نہین رہی

۲۳ - ربیع الثانی کو بادشاہ نے شاہزادہ اورنگ زیب کو جو شادی کے واسطے آیا تہا دکہن جانے کی رخصت دی اور اسکی عرض سے بگلانہ کی ولایت بہی جو بہت آباد اور اعتدال آب وہوا مین مشہور تہی اُسکو عنایت کی اور حکم دیا کہ دولت آباد مین پہنچکر اوسکے فتح کرنے کو فوج بہیجے —

اس ملک کا موروثی مالک بہرجی نام ایک ”کافر“ تہا ایک حد اوسکی خاندیس دکہن سے دوسری صورت گجرات سے ملی ہوئی تہی اور یہ علاقہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने किस्तवार के राजा कंवर से न की मदद से तिब्बत का मुल्क अलीराये के बेटे अबदाल से फतह किया ॥	بادشاہی ملک کے درمیان میں واقع تھا کشمیر کے صوبہ دار ظفر خان نے بمدد راجہ کنور سین والی کستوار کے تبت کا ملک علی رائے کے بیٹے ابدال سے چھین لیا
नोट	**نوٹ**
यहां तक शाहजहां बादशाह के राज की १० बरस की तवारीख़ ख़तम होती है और यही पहिला हिस्सा बादशाह नामे का है इसलिये हम भी यहां ठहर जाते हैं ॥ ॥	یہاں آکر جلد اوّل بادشاہ نامہ یعنی دہ سالہ احوال شاہجہان بادشاہ کی ختم ہوتی ہے - جو بغایت ماہ جمادی الاول ۱۰۴۷ سنہ ہے اسلئے ہم بھی یہاں ٹھہر جاتے ہیں - فقط

Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नं॰ ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, जिल्द ३
मई सन १८९२ से दिसंबर सन १८९२

نمبر ۵ و ۶ و ۷ و ۸ و ۹ و ۱۰ و ۱۱ و ۱۲ جلد ۳
ابتدا ماہ مئی لغایت ماہ دسمبر ۱۸۹۲ء

مجموعۃ التصاویر
یعنی
مرقع المشاہیر

جسمین مشہور اور معروف شخصوں کی تصویرین مع سوانح عمری کے مشتہر کیجاتی ہین
اور جو ماہوار دارالسرور شہر جودھپور سے شائع ہوتا ہے

प्रसिद्ध चित्रावली
जिसमें
जगद्विख्यात महत्पुरुषों के चित्र और जीवनचरित्र प्रकाशित किये जाते हैं और जो महीने के महीने राजस्थान जोधपुर से प्रगट होता है

شرح قیمت سالانہ مع محصول ڈاک	वार्षिक मोल डांक व्यय सहित
۱ گورنمنٹ انگریزی و والیان ملک سے للعہ	१ अंग्रेज़ी सरकार व राजे महाराजों से ६।)
۲ حکام رئیسوں اور امیروں سے عہ	२ हाकिमों और रईसों और अमीरों से ३)
۳ عام شائقین سے ۲	३ सर्व साधारण रसिकजनों से २)
۴ طالب علموں سے ۱	४ विद्यार्थियों से १)

فہرست اندراج نمبر ہذا
इस नम्बर की सूची

سوانح عمری و تصویر مہارانا پرتاب سنگھ والی میواڑ
بقیہ اکبر بادشاہ مع فہرست مضامین

महाराणा प्रतापसिंह का चित्र और जीवन चरित्र
अकबर बादशाह का बाकी हाल और सूचीपत्र

دیبی پرشاد مقام جودھپور
देवीप्रसाद

Digitized in Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi

شاہجہان نامہ اُردو

معہ تصویر

جس میں ابوالمظفر شہاب الدین محمد شاہجہان صاحبقران ثانی بادشاہ غازی کا

پورا حال ہے

اور جسکو منشی دیبی پرشاد قوم کایستھ مؤرخ راجپوتانہ و منصف راج جودھپور نے بادشاہ نامہ

وغیرہ کتب تواریخ سے نفس مطلب اخذ کرکے اُردو زبان میں بعبارت سلیس عام فہم مرتب کیا

मुग़ल सम्राट शाह जहां बादशाह का जीवन चरित्र

सचित्र जिसको

मुनशी देबी प्रसाद कायस्थ मुनसिफ़ राज जोधपुर ने बादशाहनामें वग़ैरा की फ़ारसी तवारीख की किताबों का सार लेकर हिन्दी में बनाया

جلد دویم

دوسرا

पहिला भाग

संबत १९५३

مطبع رضوی دہلی میں سید میر حسن کے اہتمام سے چھپا

سنہ ۱۸۹۷ء

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

شبیہہ شاہجہان بادشاہ

शाहजहां बादशाह

...Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi

सूचीपत्र

११ वें बरस का बाक़ी हाल

१ राजा अनोप सिंघ बड़ गूजर का मरना और उसके बेटे जय राम का राजा होना॥
१ लाल खां कलावत को गुण समंदर की पदवी॥
२ जगन्नाथ राय महा कवि की तारीफ़
२ हिंदुस्तान का गाना और नामी गवेये मीर ख़ुसरो राजा मान तुंवर नायक बख्शू और तान सेन २-५
५ कालंजर का राजा कीरत-
५ बांधो गढ़ का राजा राम चन्दर
६ राजा विट्ठल दास और गज सिंघ का हाज़िर होना-
६ राणा जगत सिंघ का वकील कल्यारा आना-
७ शाह अली का अली रुद्ध की

فہرست

بقیہ حال سال ۱۱

۱ راجہ انوپ سنگہ بڈگوجر
۰ کا مرنا اور اوسکے بیٹے جی رام
۱ کا جانشین ہونا لال خان
کلاونت کو گن سمندر
کا خطاب
۲ جگناتہہ راے مہاکبی کی تعریف
۲ ہندوستان کا علم۔ موسیقی اور
میر خسرو۔ راجہ مان تنور۔ نایک
بخشو اور تان سین کا ذکر
۵ کالنجر کا راجہ کیرت
۵ باندہون گڈہ کا راجہ رام چندر
۶ راجہ بٹھلداس گوڑ اور راجہ
گج سنگہ راٹہور کا حاضر آنا
۶ رانا جگت سنگہ کے وکیل جہالا
کلیان کا حاضر درگاہ ہونا
۷ شاہ علی کا بیجاپے انروہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

जगह फ़ौज दार अजमेर होना ॥	گوڑ کے فوجدار اجمیر ہونا
७ राजा विठ्ठल दास को खिलअत	راجہ بیٹھلداس کو خلعت
७ नाहर सो लखी को हाथी-	ناہر سو لنکھی کو ہاتھی
७ राजा गज सिंघ को खिलअत	راجہ گج سنگہ کو خلعت
७ कल्यान झाला को रुख़सत	کلیان جہالا کو رخصت
७ जलाला के बेटे करीम दाद को राजा जगत सिंघ और सईद खां का पकड़ना-	جلالہ کے بیٹے کریم داد کو راجہ جگت سنگہ اور سعید خان کا پکڑنا
८ सोरूं और सेस वान में शेरों का शिकार-	سوروں اور سیسوان مین شیرون کا شکار
८ चंदबार के फ़िसादियों को सज़ा	چندوار کے فسادیون کو سزا
८ माधो सिंघ और हरी सिंघ हाड़ो का हाज़िर आना-	مادہو سنگہ اور ہری سنگہ ہاڑون کا حاضر آنا
८ राजा जे सिंघ का वतन से आना	راجہ جیسنگہ کا وطن سے آنا
९ राजा किशन सिंघ के बेटे हरी सिंघ का इज़ाफ़ा	راجہ کشن سنگہ کے بیٹے ہری سنگہ کا اضافہ
क़ंधार की मुहिम	**مہم قندہار**
९ क़ंधार और कलात ग़िलज़ई का मुल्क ईरानी सूबे दार अली मर्दां ख़ां का बाद शाही नौकरों को	قندہار اور قلات غلزئی کا ملک ایرانی صوبہ دار علیمردان خان کا بادشاہی آدمیون کو سپرد کرنا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi

सोंपना -		
१० शाह ईरान के ऊपर शाह ज़ादे शुजाअ को भेजना -	شاہ ایران کے اوپر شاہزادہ شجاع کو بھیجنا	۱۰
१० राजा जय सिंघ कछवाहा अमर सिंघ राठोड़ माधो सिंघ हाड़ा हरी सिंघ राठोड़ और कृपा राम गोड़ ईरान की मोहिम में -	راجہ جیسنگہ کچھواہا امرسنگہ راٹھور مادھوسنگہ ہاڈا ہری سنگہ راٹھور اور کرپارام گوڑ کا مہم ایران میں تعینات ہونا	۱۰
१० खान दौरां सूबे दार मालवे का फ़ौज मुसाहिब होना -	خاندوران صوبہ دار مالوہ کا سرعسکر ہونا	۱۰
११ सईद खां सूबे दार काबुल को मदद का हुक्म पहुंचना -	سعید خان صوبہ دار کابل کو مدد کا حکم پہونچنا	۱۱
११ कुलीच खां का सूबे दार कंधार होना -	قلیچ خان کا صوبہ دار قندہار ہونا	۱۱
११ वज़ीर खां सूबेदार पंजाब को रसद पहुंचाने का हुक्म -	وزیر خان صوبہ دار پنجاب کو رسد پہونچانے کا حکم	۱۱
११ अली मरदान खां को खिलअत -	علیمردان خان کو خلعت	۱۱
११ राजा जगत सिंघ की काबुल और कंधार में तईनाती -	راجہ جگت سنگہ کی کابل اور قندہار میں تعیناتی	
११ सईद खां की किशक नखूद में ईरानियों पर फ़तह -	سعید خان کی کشکنخود میں ایرانیوں پر فتح	

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१२ राय कासी दास दीवान काबुल, मोहकम सिंघ गोपाल सिंघ उगर सेन राम सिंघ गज सिंघ जग राम वल्द बिहारी दास सुत, हिम्मत सिंघ मेदनी मल भदोरिया और इन्द्र भान राजा जगत सिंघ की अफ़सरी में ईरानियों से लड़े-	راے کاسی داس دیوان کابل محکم سنگہ گوپال سنگہ اوگرسین رام سنگہ گج سنگہ جگرام ولد بہاری داس ہمت سنگہ میدنی مل بہدوریہ اور اندر بہان کا راجہ جگت سنگہ کی افسری مین ایرانیون سے لڑنا ۱۲
१३ क़ज़ल बाशों यानी ईरानियों का भाग जाना-	قزلباشون یعنی ایرانیون کا بہاگ جانا ۱۳
१३ सईद खां और राजा जगत सिंघ को खिलअत-	سعید خان اور راجہ جگت سنگہ کو خلعت ۱۳
१४ गोपाल सिंघ राय काशी दास और जग राम का इज़ाफ़ा-	گوپال سنگہ راے کاسی داس اور جگرام کا اضافہ ۱۴
१४ शाह ईरान का बाद शाही वकील सफ़दर खां को जवाब-	شاہ ایران کا بادشاہی وکیل صفدر خان کو جواب ۱۴
दरबार का हाल	**دربار کا حال**
१४ महेस दास राठोड़ का इज़ाफ़ा-	مہیش راٹہور کا اضافہ ۱۴
१५ दयानत राय को इज़ाफ़ा और तन दफ़तर-	دیانت راے کو اضافہ اور تن دفتر ۱۵
१५ गोकुल दास सीसोदिये का इज़ाफ़ा-	گوکل داس سیسودیہ کا اضافہ ۱۵

...hal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi

१५ कुलीच ख़ां क़ंधारमें और अली मरदान ख़ां काबुल में-	قلیج خان قندہار مین و علیمردانخان کابل مین	١٥
कोच हाजूकी मुहिम	**کوچ ہاجو کی مہم**	
१६ कोच हाजू का राजा प्रीछत	کوچ ہاجو کا راجہ پریچہت	١٦
१६ कोच बिहार का राजा लिछमी नरायण	کوچ بہار کا راجہ لچھمی نراین	١٦
१७ प्रीछत का भाई बल देव-	پریچہت کا بہائی بلدیو	١٧
आसाम पर चढ़ाई	**آسام پر فوجکشی**	
१९ आसाम का राजा सरग देव-	آسام کا راجہ سرگ دیو	١٩
२२ शत्रु जीत थाने दार पांडू बिसीने को राजा मुकंद का बेटा-	ستروجیت تہانہ دار پانڈو بسنیہ کے راجہ مکند کا بیٹا	٢٢
२७ प्रीछत का बेटा चंद्र नारायण-	پریچہت کا بیٹا چندر نارائن	٢٧
२७ शत्रु जीत का बेटा गोपी नाथ-	ستروجیت کا بیٹا گوپی ناتہہ	٢٧
२७ सरदा पुर के ज़मीदार का बेटा उत्तम नारायण-	سردارپر کے راجہ کا بیٹا اوتم نراین	٢٧
३३ इसाम ख़ां का इज़ाफ़ा आसामियों पर फ़तह पाने में-	اسلام خان صوبہ دار بنگال کا اضافہ اسامیون پر فتح پانے مین	٣٣
१२ वां बरस	**بارہوان برس**	

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

मुहिम कंधार	**مہم قندہار**	
३८ राजा जगत सिंह का ईरानियों से बस्त और ज़मींदार के क़िले फ़तह करना-	راجہ جگت سنگھ کا ایرانیون سے بست اور زمیندار کے قلعے فتح کرنا۔	۳۸
३९ अली मरदान खां का कंधार से काबुल में शाह ज़ादे शुजअ के पास हाज़िर होना-	علیمردان خان کا قندہار سے کابل مین شاہزادہ شجاع کے پاس حاضر ہونا۔	۳۹
४० राजा गज सिंह राठोड़ के मर ने पर जसवंत सिंह का राजा हो ना और अमर सिंह को राव की पदवी मिलना-	راجہ گج سنگھ راٹھوڑ کا انتقال جسونت سنگھ کا راجہ ہونا اور امر سنگھ کو راو کا خطاب ملنا	۴۰
४१ राठोडों में गद्दी उसरानी के बेटे को मिलती है कि जो राजा की बहुत प्यारी हो और उस की नज़ीरें-	راٹھوڑون مین گدی اوس رانی کے بیٹے کو ملتی ہی کہ جس سے راجہ کو بہت محبت ہو اور اوسکی نظیرین	۴۱
दरबार का हाल	**دربار کا حال**	
४१ गोंडों के राजा चांदा की नज़र-	گونڈوانہ کے راجہ چاندا کی نذر	۴۱
४२ राय सिंह झाला को मनसब मि लना-	راے سنگھ جہالا کو منصب ملنا	۴۲
४३ हरी सिंह राठोड़ के मन सब का	ہری سنگھ راٹھوڑ کے منصب کا	۴۳

इज़ाफ़ा-	اضافہ	
४२ बादशाह का शहज़ादे दारा शिकोह के मकान पर जाना और राजा जसवंत सिंघ को ख़िलअत मिलना-	بادشاہ کا شاہزادہ داراشکوہ کے مکان پر جانا اور راجہ جسونت سنگہ کو خلعت ملنا	۴۲
४३ राजा जसवंत सिंघ का बादशाह को ६ हाथी नज़र करना-	راجہ جسونت سنگہ کا بادشاہ کو چھ ہاتھی نذر کرنا	۴۳
४४ राज सिंघ राठोड़ परधान राजा जसवंत सिंघ-	راج سنگہ راٹھوڑ پردہان راجہ جسونت سنگہ	۴۳
क़ंधार की मुहिम	**مہم قندہار**	
४५ राजा जगत सिंघ का सारबान के क़िले को फ़तह करना-	راجہ جگت سنگہ کا قلعہ ساربان کو فتح کرنا۔	۴۳
४६ हीर मंद गरशक और फ़राह वग़ैरे के क़िलों का फ़तह होना और ईरानियों का क़ंधार के इलाक़े से ख़ुरासान में चला जाना-	ہیرمند گرشک اور فرہ وغیرہ قلعجات علاقہ قندہار کا فتح ہونا اور ایرانیون کا ضلع قندہار خراسانمین چلاجانا	۴۴
४७ ईरान की आमदनी और फ़ौज-	ایران کی آمدنی اور فوج	۴۴
४८ बगलाने का मुल्क मरज़ी से लिया जाना और सुलतानपुर का	بگلانہ کا ملک مرضی سے لیا جانا اور سلطان پور	۴۵

पर गना उस को दिया जाना-	کا پرگنہ اوسکو دیا جاتا
५० पीपोल का क़िला ऊदिया क़ौम भरजी से फ़तह होना-	۵۰ قلعہ پیپول کا اودیا قوم بہرجی سے فتح ہونا
५० रास नगर भरजी के जमाई सोम देव के पास दस हज़ार रुपया माल गुज़ारी पर रहना-	۵۰ رام نگر کا بہرجی کے جمائی سوم دیو کے پاس دس ہزار روپیہ مالگذاری پر رہنا
५१ रेखंग के ज़मी दार का भाई मांगत राय जो हाकिम चाट गाम था हाकिम बंगाले के पास हाज़िर आया जिस्से १२००० मर्द औरत बंगाले के जो ४० बरस से चाट गाम में क़ैद थे छूट कर अपने घरों को आये-	۵۱ رکھنگ کے زمیندار کا بھائی مانگت رائے جو حاکم چاٹگام تہا حاکم بنگالہ کے پاس حاضر آیا جس سے دس ہزار مرد عورت بنگالہ کے جو چالیس برس سے چاٹگام میں قید تہی چھٹ کر اپنے گہرون کو آئے
५१ बादशाह का लाहौर जाना और राजा विट्ठल दास गोड़ को आगरे के क़िले में छोड़ जाना-	۵۱ بادشاہ کا لاہور جانا اور راجہ بیٹھل داس گوڑ کو قلعہ آگرہ میں چھوڑنا
५२ राजा जसवंत सिंघ को घोड़ा इनायत-	۵۲ راجہ جسونت سنگہ کو گہوڑا عنایت
५३ राजा जसवंत सिंघ के परधान राज सिंघ का हाथी नज़र करना-	۵۲ راجہ جسونت سنگہ کے پردہان راج سنگہ کا ہاتہی نذر کرنا
५३ राजा जसवंत सिंघ का पालम	۵۲ راجہ جسونت سنگہ کا پالم

में बाद शाह से मिलना-	مین بادشاہ سے ملنا
५२ राजा जस वंत सिंघ को ख़ासा ख़िलअत और घोड़ा मिलना-	۵۲ راجہ جسونت سنگہ کو خلعت خاصہ اور گہوڑا ملنا
५३ राजा गज सिंघ के बेटे सबल सिंघ के मनसब में इज़ाफ़-	۵۳ راجہ گج سنگہ کے بیٹے سبل سنگہ کے منصب مین اضافہ
५३ महेस राठौड़ का बाद शाही नौकर होना-	۵۳ مہیس راٹہوڑ کا بادشاہی نوکر ہونا
५३ बाद शाह का लाहौर पहुंचना और अली मरदान ख़ां का हाज़िर होना.	۵۳ بادشاہ کا لاہور پہونچا اور علیمردان خان کا حاضر ہونا
५४ ईरान के शाह सफ़ी के वकील को रुख़सत-	۵۴ ایران کے شاہ صفی کے وکیل کو رخصت
५४ राजा जगत सिंघ के बेटे राजरूप का कांगड़े में फ़ौज दार होना	۵۴ راجہ جگت سنگہ کے بیٹے راجروپ کا کانگڑہ مین فوجدار ہونا
५४ शाह ज़ादों राजा जस वंत सिंघ और सईद ख़ां को पोस तीनों इनायत	۵۴ شاہزادون کو راجہ جسونت سنگہ اور سعید خان کو پوستین عنایت
५४ कच्छ के राजा भारा के बेटे भोज का भेजा घोड़ा नज़र होना-	۵۴ کچہ کے راو بہارا کے بیٹے بہوج کا بہیجا ہوا گہوڑا نذر ہونا
५५ राना जगत सिंघ की अरज़ी और उस के वास्ते ख़िलअत-	۵۵ رانا جگت سنگہ کی عرضی اور اوسکے واسطے خلعت

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

५५ अफ़ज़ल ख़ां वज़ीर का मरना और दयानत राय का अख़्तियार बढ़ना	افضل خان وزیر کا مرنا اور دیانت رائے کا اختیار بڑہنا	۵۵
५५ जुल करनेन फ़रंगी को इनाम	ذوالقرن فرنگی کو انعام	۵۵
५६ राजा जसवंत सिंघ को हज़ारी ज़ात और १००० सवारों का इज़ाफ़ा-	راجہ جسونت سنگہ کا ہزاری ذات اور ہزار سواروں کا اضافہ	۵۶
५६ राजा राय सिंघ के मन सब में इज़ाफ़ा-	راجہ رائے سنگہ کے منصب مین اضافہ	۵۶
५७ दया नत राय को राय रायां का ख़िताब-	دیانت رائے کو رائے ریان کا خطاب	۵۷
५७ शाह ज़ादा शुजाअ का काबुल से बंगाले की सूबदारी पर भेजना	شاہزادہ شجاع کا کابل سے بنگالہ کی صوبہ داری پر بہیجا جانا	۵۷
५७ राजा जगत सिंघ का काबुल से हाज़िर आना-	راجہ جگت سنگہ کا کابل سے حاضر آنا	۵۷
५७ अब दुल्ला ख़ां का पटने से- प्रथ्वी राज और चंपत बुंदेले पर जाना-	عبداللہ خان کا پٹنہ سے پرتھی راج اور چنپت بندیلہ پر جانا	۵۷
५७ बाद शाह का काबुल जाना	بادشاہ کا کابل جانا	۵۷
५७ शाह ज़ादे दारा शिकोह को ईरान के शाह सफ़ी के मुक़ाबिले	شاہزادہ داراشکوہ کو ایران کے شاہ صفی کے مقابلہ	۵۷

Chambal Archives, Etawah

पर रवाना करना राजा जगत सिंघ और राय सिंघ का साथ जाना॥	پر روانہ کرنا راجہ جگت سنگہ اور رائسنگہ کا ساتھ جانا	
५७ राजा राय सिंघ को हाथी इना यत-	راجہ راے سنگہ کو ہاتھی عنایت	۵۷
५८ बगलानो के भरजी का मरना और उसके बेटे परम जी का मुसल मान होकर दोलत मंद नाम पाना	بگلانہ کے راجہ بہرجی کا مرنا اور اسکے بیٹے پیرم جی کا مسلمان ہوکر دولت مند نام پانا	۵۸
५८ सभा चंद का दीवान लाहोर और बिहारी मल का दीवान मुल तान होना-	سبھا چند کا دیوان لاہور اور بہاری داس کا دیوان ملتان ہونا	۵۸
५८ राजा जय सिंघ का नोशहरे रा वल पिंडी में बाद शाह के पास हाज़िर होना-	راجہ جیسنگہ کا نوشہرہ سے راول پنڈی مین بادشاہ کے پاس حاضر آنا	۵۸
५९ राजा जगत सिंघ का शाह जा दे दारा शिकोह के साथ बादशा ह के हज़ूरमें हाज़िर हो कर बंग श के बंदो बस्त पर जाना-	راجہ جگت سنگہ کا شاہزادہ دارا شکوہ کے ساتھ بادشاہ کے حضور مین حاضر ہوکر بنگش کے بندوبست پر جانا	۵۹
राजा जय सिंघ को मोतियों की माला और हाथी इनायत-	راجہ جیسنگہ کو موتیون کی مالا اور ہاتھی عنایت	۵۹
५९ राजा जसवंत सिंघ को हाथी इनायत-	راجہ جسونت سنگہ کو ہاتھی عنایت	۵۹

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

५९ नोशहरे में राजा जय सिंघ और राव अमर सिंघ को घोड़ा इनायत	نوشہرہ مین راجہ جیسنگہ رائی سنگہ اور راؤ امر سنگہ کو گھوڑا عنایت	
६० नोशहरे में ५०००० सवारों की हाजरी-	نوشہرہ مین پچاس ہزار سوارون کی حاضری	٦٠
६०. राजा जय सिंघ को मिरज़ा राजा का ख़िताब-	راجہ جیسنگہ کو مرزا راجہ کا خطاب	٦٠
६० अमर सिंघ को हाथी और राय सिंघ को झंडा इनायत-	امر سنگہ کو ہاتھی اور رائے سنگہ کو جھنڈا عنایت	٦٠
६० जय राम और गोकुल दासको सा दिये के मनसब इज़ाफ़े होना-	جی رام اور گوکل داس کو سیسودیہ کا منصب اضافہ ہونا	٦٠
६० राजा जसवंत सिंघ को पिशावर में छोड़ ना-	راجہ جسونت سنگہ کو پیشور مین چھوڑنا	٦٠

१३वां बरस | تیرہوان برس

६१ राजा विट्ठल दासका आगरे से खज़ा ना लेकर अली मसाजिद में बाद शाह के पास हाज़िर होना	راجہ بٹھل داس کا آگرہ سے خزانہ لیکر علی مسجد مین بادشاہ کے پاس حاضر ہونا	٦١
,, राजा जसवंत सिंघ वगैरा अमीरों का बाद शाह के पास पहुंचना	راجہ جسونت سنگہ وغیرہ امیرون کا بادشاہ کے پاس پہونچنا	٦١

Chambal Archives, Etawah

६१ छोटी काबुल में विठ्ठल दास को घोड़ा इनायत होना

६१ बाद शाह काबुल में-

६१ राज सिंघ राठोड़ को घोड़ा इनायत-

६२ बलख का वकील आया-

६२ राज सिंघ राठोड़ और राय सिंघ झाला का इज़ाफ़ा

६२ विठ्ठल दास और अर्जुन गोड़ को घर जाने को रुखसत

६२ बाद शाह का काबुल से कशमीर में जाना-

६३ राजा जय सिंघ काबुल में

६३ अनि रुद्ध गोड़ का इज़ाफ़ा

६३ को हाट में राजा जगत सिंघ का बाद शाह के पास हाज़िर होना-

६३ नीलाव के किनारे पर जसवत सिंघ को घोड़ा इनायत-

६४ बड़ी तिब्बत के ज़मीदार का छोटी तिब्बत में निकाला जाना-

٦١ کابل خورد مین راجہ بٹھیل داس گوڑ کو گھوڑا عنایت ہونا

٦١ بادشاہ کابل مین

٦١ راجسنگہ راٹھوڑ کو گھوڑا عنایت

٦٢ بلخ کے وکیل کا آنا

٦٢ راجسنگہ راٹھوڑ اور رائے سنگہ جہالا کا اضافہ

٦٣ بٹھیل داس اور ارجن گوڑ کو گھر جانے کی رخصت

٦٣ بادشاہ کی روانگی کابل سے کشمیر کو

٦٣ انرودھ کا اضافہ

٦٣ کوہاٹ مین راجہ جگت سنگہ کا بادشاہ کے پاس حاضر ہونا

٦٣ نیلاب کے کنارہ پر جسونت سنگہ کو گھوڑا عنایت

٦۴ تبت کلان کے زمیندار کا چھوٹی تبت مین نکالا جاتا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६४ गोरधन राठोड़ का बादशाही नौकर होना-	گوردہن راٹھوڑ کا بادشاہی نوکر ہونا	٦٤
६४ बादशाह लाहोर में	بادشاہ لاہور مین	٦٤
६४ शाहज़ादा दारा शिकोह और राजा जयसिंघ का काबुल से लाहौर में आना-	شاہزادہ داراشکوہ اور راجہ جیسنگہ کا کابل سے لاہور مین آنا	″
६४ आदिल ख़ां की पेशकश	عادل خان کی پیشکش	″
६४ अली मरदान ख़ां का रावी नदी से लाहोर तक नहर बनाना-	علیمردان خان کا راوی ندی سے لاہور تک نہر لانا	″
६५ कुलीच खां का कंधार से फ़ौज भेज कर सीस्तां के बंद को तोड़ना-	قلیچ خان کا قندہار سے فوج بہیجکر سیستان کے بند کو توڑنا	٦٥
६५ राजा जयसिंघ को वतन जाने की रुखसत-	راجہ جیسنگہ کو وطن جانے کی رخصت	″
६५ खीलू जी का मारा जाना-	کہیلوجی کا مارا جانا	″
६६ इक़बालनामे के बनाने वाले मोतमद ख़ां का मरना-	معتمد خان مولف اقبالنامہ جہانگیری کا انتقال	٦٦
६६ नरवर के राजा रामदास का मरना और उसके पोते अमरसिंघ का राजा होना-	نرور کے راجہ رامداس کا مرنا اور اوسکے پوتے امرسنگہ کا راجہ نرور ہونا	″
६६ हरनाथ महापात्र को इनाम-	ہرناتہہ مہاپاتر کو انعام	″

Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi

६७ औरंग ज़ेब का दखन से आना	اورنگ زیب کا دکن سے آنا	٦٧
६७ बंगाले में शाह ज़ादे शुजाअ के दौलत खाने का जल जाना-	بنگالہ میں شاہزادہ شجاع کے دولت خانہ کا جلجانا	"
६७ बाद शाह का कशमीर जाना-	بادشاہ کا کشمیر جانا	"
६८ माधो सिंघ हरी सिंघ राठोड़ और राजा जय राम का शाह ज़ादे मुराद बख़्श के साथ काबुल जाने को तईनात होना-	مادہو سنگہ ہری سنگہ راٹھور اور راجہ جی رام کا شاہزادہ مراد بخش کے ساتھ کابل جانے کو متعین ہونا	٦٨
६८ औरंग ज़ेब को दखन भेजना	اورنگ زیب کا دکھن کو واپس جانا	"
६८ राजा जसवंत सिंघ और राज सिंघ प्रधान को वतन की रुख़सत	راجہ جسونت سنگہ اور پردہان راج سنگہ کو وطن جانے کی رخصت	"
६८ राजा जगत सिंघ कशमीर का रसता साफ़ कराने में-	راجہ جگت سنگہ کا واسطے صاف کرنے راستہ کشمیر کے مامور ہونا	"
६८ बाद शाह का कशमीर पहुंचना	بادشاہ کا کشمیر پہونچنا	٦٨
६९ पृथ्वी राज बुंदेले का पकड़ा जाना और बहादुर ख़ां का बुंदेलों पर भेजना-	پرتھی راج بندیلہ کا پکڑا جانا اور بہادر خان کا بندیلوں پر بہیجا جانا	٦٩
७० रूस के वकील का आना	روم سے وکیل کا آنا	٧٠
७० भर नदी के चढ जाने से कश	دریائے بہٹ کی طغیانی کر کشمیر	"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

मोर ,मोरे पंजाब में नुकसान होना-	اور پنجاب مین نقصان ہونا
७०. बाप जी ज़मीदार गोंड वाना	باپ جی زمیندار گونڈوانہ
७१ करम सी राठाड़ के बेटे राम सिंघ का बादशाही नौकर होना-	۷۱ رام سنگھ ولد کرم سی راٹھوڑ کا ملازم شاہی ہونا
७१ राय सल दर वारी के बेटे मोज राज को मन सब मिलना	رائے سال درباری کے بیٹے بھوج راج کو منصب ملنا
७१ राय मान की नज़र	رائے مان کی نذر
७१ राजा राय सिंघ को घोड़ा इनायत	راجہ رائے سنگھ کو گھوڑا عنایت
७२ राजा जगत सिंघ का फ़ोजदार कांगड़े होना-	۷۲ راجہ جگت سنگھ کا فوجدار کوہ کانگڑہ ہونا
७२ टोडर मल को राय का खिताब-	تو ڈرمل کو رائے کا خطاب
७२ राजा राय सिंघ वगैरे का कश्मीर से रवाना होना- ..	راجہ رائے سنگھ وغیرہ کا کشمیر سے روانہ ہونا
७३ किस्टू वार के राजा कंवर सेन को घोड़ा इनायत-	۷۳ کشتوار کے راجہ کنور سین کو گھوڑا عنایت
७३ बाद शाह लाहोर में	بادشاہ لاہور مین
७३ शाह ज़ादे मुराद बख्श और माधो सिंघ हाड़ा का हाज़िर	شاہزادہ مراد بخش اور مادہو سنگھ ہاڈا کا حاضر

होना-	ہونا	
७३ मुल्ला सादुल्ला या सादुल्ला खां वज़ीर	ملاسعد اللہ یا سعد اللہ خان وزیر	″
७४ थाने दार नोशहरा का यूसुफ़ ज़ई पठानों के हाथ से मारा जाना.	تہانہ دار نوشہرہ کا یوسف زئی پٹہانوں کے ہاتہہ سے مارا جانا	۷۴
७४ अली मरदान ख़ां को काबुल की सूबे दारी दी गई-	علیمردان خان کو کابل کی صوبہ داری پر مقرر کرنا	″
७४ चन्द्र मनि बुंदेले को घोड़ा इनायत-	چندرمن بندیلہ کو گھوڑا عنایت	″
७४ माधो सिंघ हाड़ा का इज़ाफ़ा	مادہو سنگہ ہاڈا کا اضافہ	″
७४ महेस दास राठोड़ और चंद्र भान को हाथी इनायत और महेस के बेटे रतन को तलवार	مہیس داس راٹہوڑ اور چندربہان کو ہاتہی عنایت اور مہیس داس کے بیٹے رتن کو تلوار	″
७५ जय सिंघ के बड़े बेटे राम सिंघ को हाथी इनायत	راجہ جیسنگ کے بڑے بیٹے رام سنگہ کو ہاتہی عنایت.	۷۵
७५ मुराद बख़्श का फिर काबुल जाना राजा राय सिंघ हरी सिंघ राठोड़ राजा जय राम, राय कासी दास, नाहर, इन्द्र साल हाड़ा और चन्द्र भान कछ वाहे	شاہزادہ مراد بخش کا پہر کابل جانا راجہ رائے سنگہ ہری سنگہ راٹہوڑ راجہ جے رام۔ رائے کاشی داس ناہر اندرسال ہاڈا اور چندربہان کچھواہا	۷۵

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का उसके साथ तईनात होना-	کا اوسکے ساتھہ تعینات ہونا	
७५ राजा जय सिंघ को ख़िलअत-	راجہ جے سنگہ کو خلعت	۷۵
७६ राजा जसवंत सिंघ का वतन से आना-	راجہ جسونت سنگہ کا وطن سے آنا	۷۶
७६ राजा राय सिंघ को हाथी	راجہ جیسنگہ کو ہاتہی	۷۶
७६ जंबु का फ़ौजदार	جمبوکا فوجدار	″
७६ राव अमर सिंघ और चतुर भुज चौहान को ख़िलअत-	راؤ امر سنگہ اور چیتر بہوج چوہان کو خلعت	″
बरस १५वाँ	**برس پندرہوان ١٥**	
७७ महेस दास राठोड़ का राज सिंघ के मरने पर परधान मारवाड़ होना-	مہیس داس راٹہوڑ کا راج سنگہ راٹہوڑ کے مرنے پر پرہان مارواڑ ہونا	۷۷
७७ राजा जसवंत सिंघ का पंच हज़ारी होना-	راجہ جسونت سنگہ کا پنجہزاری ہونا	″
७७ महेस दास महाबत ख़ानी	مہیس داس مہابت خانی	″
७७ राय सिंघ झाला को हज़ारी मनसब	رائے سنگہ جہالا کا ہزاری منصب	″
७७ आज़म ख़ां सूबे गुजरात की जाम नगर पर चढ़ाई-	اعظم خان صوبہ دار گجرات کی جام نگر پر چڑہائی	″

CC-0. In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi

७९ जस वंत सिंघ को ख़ासा हाथी इनायत-	راجہ جسونت سنگہ کو فیل خاص عنایت	٬٬
७९ लाहोर की नहर और उसके ऊपर बाग़ व महल-	لاہور کی نہر اور اوسکے اوپر باغات و محلات	٬٬
७९ राजा विट्ठल दास और राजा अमर सिंघ नर वर वाले का हाज़िर होना-	راجہ بٹھل داس گوڑ و راجہ امر سنگہ والی نرورڈ کا حاضر آنا	٬٬
८० विट्ठल दास को हाथी इनायत	بٹھیل داس گوڑ کو ہاتھی عنایت	۹۰
८० राजा जसवंत सिंघ को ख़ासा घोड़ा इनायत-	راجہ جسونت سنگہ کو اسپ خاصہ عنایت	٬٬
८० राना राय सिंघ को नक्कारा इनाायत-	راجہ رائے سنگہ کو نقارہ عنایت	٬٬
८० राम सिंघ राठोड़ के मन सब का इज़ाफ़ा-	رام سنگہ رام ٹہوڑ کا اضافہ منصب	٬٬
८० राय तोडर मल को लकखी जंगल की फ़ौज दारी-	رائے ٹوڈرمل کو لکھی جنگل کی فوجداری	۸۰
राजा जगत सिंघ पर मुहिम	**راجہ جگت سنگہ پر مہم**	
८१ राजा जगत सिंघ और उसके	راجہ جگت سنگہ اور اوسکے	۸۱

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

बेटे राज रूप का बाग़ी होना-	بیٹے راج روپ کا باغی ہونا	
८३ राजा जगत सिंघ के ऊपर बादशाही फ़ौजों की चढ़ाई-	راجہ جگت سنگھ کے اوپر بادشاہی فوجون کی چڑہائی	۸۳
८३ नरवर के राजा अमर सिंघ रणा सिंघ भदोरिया, राजा राय सिंघ, गोकुल दास सीसो दिया, राय सिंघ झाला, कृपा राम गोड़ और चैन सिंघ का उस चढ़ाई में तइनात होना-	راجہ امر سنگھ نروری - رن سنگھ بہدوریہ - راجہ رائے سنگھ گوکل داس سیسودیہ رائے سنگھ جہالا - کرپارام گوڑ اور چین سنگھ کا اوس چڑہائی مین تعینات ہونا	„
८३ शाहज़ादे मुराद बख़्श का राजा जगत सिंघ के ऊपर जाना-	شاہزادہ شجاع کا سرلشکر ہوکر	„
८३ राजा जय सिंघ, हरी सिंघ राठोड़, चन्द्र मणि बुंदेला राय कासी दास और नाहर सोलंखी, शाहज़ादे मुराद बख़्श की तईनाती में-	راجہ جیسنگھ - ہری سنگھ راٹہوڑ چندرمن بندیلہ - رائے کاسیداس اور ناہر سولنکھی شاہزادہ مرادبخش کی تعیناتی مین	„
८३ राजा राय सिंघ राजा अमर सिंघ गोकुल दास सीसो दिया और राय सिंघ झाला को ख़िलअत	راجہ رائے سنگھ امر سنگھ گوکلداس سیسودیہ اور رائے سنگھ جہالا کو خلعت	„

दरबार का हाल — دربار کا حال

८४ राजा बिट्ठल दास गोड़ को आ	راجہ بٹھیل داس گوڑ

गरे की क़िले दारी और उस सूबे की सूबे दारी मिलना-	کا صوبہ دار آگرہ اور قلعدار آگرہ مقرر ہونا	
८४ राय रायां का दीवान ब्योतात होना	رائے رایان کا دیوان بیوتات ہونا	″
८५ घोड़ों का शौक़ और एक लाख रुपये के घोड़े ख़रीदे जाना	بادشاہ کا شوق اور ایک لاکھہ روپیہ کے گہوڑے خریدنا	″
८५ राजा जसवंत सिंघ को अरबी घोड़ा इनायत होना-	راجہ جسونت سنگہ کو عربی گہوڑا عنایت ہونا-	″
८६ राय तोडर मल को हाथी और घोड़ा इनायत	رائے توڈرمل کو ہاتھی اور گہوڑا عنایت	۸۶
८६ अबदुल्ला खां का बुंदेलों पर भेजा जाना-	عبد اللہ خان کا بندیلون پر بہیجا جانا	″
पालामू की मुहिम	**پلاموں کی مہم**	
८७ बलभ धर के बेटे प्रताप का बागी होना और शायस्ते खां सूबे बिहार का उसके ऊपर जाना-	بلبہدہر کے بیٹے پرتاب کا باغی ہونا اور شایستہ خان صوبہ دار بہار کا اوسکے اوپر جانا	۸۷
पठारा की मुहिम	**پٹہان کی مہم**	
८८ बादशाह का शिकार के वास्ते राजा जगत सिंघ के वतन गांव	بادشاہ کا شکار کے واسطے راجہ جگت سنگہ کے وطن کا تو	۸۸

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाहन की तरफ़ जाना·	دامن کیطرف جانا
८९ सईद खां और राजा जय सिंघ का मऊ फ़तह करने को जाना·	سعید خان اور راجہ جیسنگ کا مئو فتح کرنے کو جانا
८९ राजा जगत सिंघ का वाद शाही फौज से लड़ना·	راجہ جگت سنگہ کا بادشاہی فوج سے لڑنا
९२ गुलेर के राजा मान का वाद शाहीं लश्कर के शामिल हो कर उस लड़ाई में मदद देना·	گلیر کے راجہ مان سنگہ کا بادشاہی لشکر کے شامل ہوکر اوس لڑائی مین مدد دینا
९८ वहादुर खां का बुंदेल खंड से ३००० सवार लेकर शाह ज़ादे मुराद के लश्करमें शामिल होना:	بہادر خان کا بندیل کہنڈ سے معہ تین ہزار سوارون کے شاہزادہ مراد بخش کے لشکر مین شامل ہونا
९९ जगत सिंघ का सुलह चाहना वाद शाह का मनजूर नकरना और फिर लड़ाई शुरू होना·	راجہ جگت سنگہ کا صلح چاہنا بادشاہ کا منظور نہ کرنا اور پہر لڑائی شروع ہونا
१०२ नूर पुर के क़िले की फ़तह होना·	قلعہ نور پور کا فتح ہونا
१०२ ख़ान जहां को ६ हज़ारी और जय सिंघ को पंच हज़ारी मनसब मिलना·	خان جہان کو ششہزاری اور راجہ جیسنگ کو پنجہزاری منصب ملنا
१०२ राजा मान सिंघ गुलेरी को हाथी सिरो पाव मिलना·	راجہ مان سنگہ گلیری کو خلعت مع فیل کے عنایت ہونا

Chambal Archives, Etawah

१०३ चंबे के राजा पृथ्वी चन्द का शाह ज़ादे मुराद के मारफ़त बाद शाह के पास हाज़िर होना-	چنبہ کے راجہ پرتھی چند کا شاہزادہ مراد کے وسیلہ سے بادشاہ کی پاس حاضر ہونا	۱۰۳
१०३ शाह ज़ादे मुराद का बाद शाह के पास गांव वामन में आना-	شاہزادہ مراد کا بادشاہ کے پاس گانو وامن مین آنا	۱۰۳
१०३ चंबे के पृथ्वी चन्द को ख़िल अत और मन सब इनायत होना-	پرتھی چند راجہ چنبہ کو خلعت اور منصب عنایت ہونا	//
१०५ शाह ज़ादे का फिर नूर पुर जाना और राजा पृथ्वी चन्द से मिल कर बाद शाही फ़ौज का तारा गढ़ पर हमला करना-	شاہزادہ مراد کا پھر نورپور کو جانا اور راجہ پرتھی چند سے ملکر بادشاہی فوج کا تاراگڈہ پر حملہ کرنا	۱۰۵
१०६ राजा जगत सिंघ का नूर पुर सोंप देना-	راجہ جگت سنگہ کا نورپور سپرد کر دینا	۱۰۶
दरबार का हाल	**دربار کا حال**	
१०७ आसिफ़ ख़ां वज़ीर का मरना	رحلت اصف خان وزیر	۱۰۷
१०८ राय मुकंद दास, जस वंतराय और विहारी मल-	رائے مکند داس جسونت رائے اور بہاری مل	۱۰۸
१०९ बाद शाह का गांव वामन से लाहौर को लोटना-	بادشاہ کا گانو وامن سے لاہور کو لوٹنا	۱۰۹
१०९ महेस राठोड़ का इज़ाफ़ा	مہیس راٹھوڑ کا اضافہ	//

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

११० औरंग ज़ेब राव शत्रु साल हाड़ा और राजा पहाड़ सिंघ बुंदेले का दखन से लाहोर आना.	اورنگ زیب کا معہ راؤ ستر سال ہاڈہ اور راجہ پہاڑ سنگہ بندیلہ کے دکہن سے آنا
,, करमसी राठोड़ के बेटे स्याम सिंघ को मनसब मिलना.	،، کرم سی راٹہوڑ کے بیٹے سیام سنگہ کو منصب ملنا
११० राय काशी दास का दीवान लाहोर होना.	،، راے کاشیداس کا دیوان لاہور ہونا
११० शाह ज़ादे मुराद का हाज़िर आना.	
११० राजा जगत सिंघ और उसके बेटे के क़सूर माफ़ होना.	،، راجہ جگت سنگہ اور اوسکے بیٹے راجروپ کے قصور معاف کیے جانا
११० राजा जय सिंघ और अमर सिंघ का हाज़िर होना.	،، راجہ جے سنگہ اور امر سنگہ کا حاضر ہونا
११० कश्मीर में काल और उसका इन्तज़ाम.	،، کشمیر مین قحط اور اوسکا انتظام

बरस १६वां — سولوان برس

११२ शाह ज़ादे औरंग ज़ेब का दखन को जाना.	شاہزادہ اورنگ زیب کا دکہن جانا
११२ राजा जगत सिंघ और राज रूप के मनसब बहाल होना.	راجہ جگت سنگہ اور راجروپ کے منصبون کی بحالی

Public Domain. Chambal Archives, Etawah

ईरान के बाद शाह का कंधार पर आना	**شاہ ایران کا عزم قندہار پر**
११२ ईरान के बाद शाह का इरादा कंधार पर और शाह ज़ादे दारा शिकोह का उसके मुक़ाबिले पर भेजा जाना-	۱۱۲ ایران کے بادشاہ کا ارادہ قندہار پر اور شاہزادہ دارا شکوہ کا اوسکے مقابلہ پر بھیجا جانا
११३ राजा जसवंत सिंघ राव अमर सिंघ राव भानु साल राजा जय सिंघ राजा राय सिंघ हरी सिंघ राठोड़ महेस दास राठोड़ राम सिंघ राठोड़ चन्द्र मणि बुंदेला गोकुल दास सीसोदिया राजा अमर सिंघ नर वरी राय सिंघ झाला का शाह ज़ादे के साथ तईनात होना और इन को ख़िलत वग़ैरा मिलना-	۱۱۳ راجہ جسونت سنگہ راٹہوڑ راو امر سنگہ راو ستروسال راجہ جیسنگہ راجہ رائے سنگہ ہری سنگہ راٹہوڑ مہیس داس راٹہوڑ رام سنگہ راٹہوڑ چندر من بندیلہ گوکلداس سیسودیہ راجہ امر سنگہ نروری اور رائے سنگہ جہالا کا شاہزادہ کے ساتہہ تعینات ہونا اور انکو خلعت وغیرہ ملنا
११६ शाह ज़ादे मुराद का भाई की मदद पर मुक़र्रर होना	۱۱۶ شاہزادہ مرادبخش کا بہائی کی مدد پر مقرر ہونا
११६ अली मर दान सूब काबुल	۱۱۷ علیمردان خاں صوبہ دار کابل

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को बलख के हाकिम नज़र मोहम्मद खा के मुक़ाबिले के वास्ते तैयार रहने का हुक्म पहुंचाना.	کو واسطے تیار رہنے مقابلہ نذر محمد خان والے بلخ کے حکم پہنچنا	
११६ शाह ईरान का मरना और शाह ज़ादे दारा शिकोह का पीछा आना.	شاہ ایران کا مرنا اور شاہزادہ داراشکو کا واپس آنا	//
दर बार का हाल	**دربار کا حال**	
११७ चंबे के राजा पृथ्वी चन्द को हाथी ईनायत होना-	چنبہ کے راجہ پرتھی چند کو ہاتھی عنایت ہونا	۱۱۷
११७ गिर धर दास गोड़ का इज़ाफ़ा-	گردہرداس گوڑ کا اضافہ	//
बंदेलों की मोहिम	**بندیل کھنڈ کی مہم**	
११८ राजा पहाड़ सिंघ का चंपत बुंदेले के ऊपर भेजे जाना...	راجہ پہاڑ سنگھ کا چنپت بندیلہ کے اوپر بھیجا جانا	۱۱۸
११८ चंपत का हाज़िर हो जाना.	چنپت کا حاضر ہو جانا	//
दर बार का हाल	**دربار کا حال**	
११९ माधो सिंघ हाड़ा का ३ हज़ारी होना.	مادہو سنگھ ہاڈا کا تین ہزاری ہونا	۱۱۹

Public Domain. Chambal Archives, Etawah

११९ महेस राठोड को जालोर मिलना-	مہیس راٹھوڑ کو جالور ملنا	”
११९ शाहजादे दारा शिकोह का हाज़िर आना-	شاہزادہ داراشکوہ کا حاضر دربار ہونا	”
१२० कश्मीर के ज़मीदारों को ५०००० रुपया इनायत होना-	کشمیر کے زمینداروں کو پچاس ہزار روپیہ عنایت	۱۲۰
१२० राम सिंघ राठोड़ का इज़ाफ़ा	رام سنگھ راٹھوڑ کا اضافہ	”
१२० राय मुकंद दास का दीवान ब्योतात होना-	رائے مکند داس کا دیوان بیوتات ہونا	”
१२० राजा जय सिंघ और राव अमर सिंघ का क़ंधार से आना	راجہ جیسنگھ اور راو امرسنگھ کا قندہار سے آنا	”
१२१ लाहोर का बाग़	لاہور کا باغ	۱۲۱
१२१ राव शत्रु साल हाडा का हाज़िर होना-	راؤ ستروسال ہاڈا کا حاضر ہونا	”
१२१ बादशाह लाहोर से आगरे को-	بادشاہ لاہور سے آگرہ کو	”
१२१ राजा जय सिंघ को घर जाने की रुख़सत-	راجہ جیسنگھ کو گھر جانے کی رخصت	”
१२१ शाहजादे दारा शिकोह का राजा जगत सिंघ के क़िलों को देखने के लिये जाना-	شاہزادہ داراشکوہ کا حسب الحکم واسطے معاینہ قلعجات راجہ جگت سنگھ کے جانا	”

१२२ गिरधर गोड़ का इज़ाफ़ा	گردہر گوڑ کا اضافہ	۱۲۲
१२२ राय तोडर मल का इज़ाफ़ा	راے توڈر مل کا اضافہ	"
१२२ बाद शाह का दिल्ली पहुंचना, लाल क़िले का बनना·	بادشاہ کا دہلی پہونچنا اور قلعہ شاہجہان آباد کا تیار ہونا	"
१२२ बाद शाह का आगरे पहुंचना और बिट्ठल दास का सलाम	بادشاہ کا آگرہ مین پہونچنا اور راجہ بٹیل داس کا پیشوائی مین حاضر ہونا	"
१२३ अली मर दान ख़ां को अमीरुल उमरा का ख़िताब	علیمردان خان کو امیرالامرا کا خطاب	۱۲۳
१२३ राजा बिट्ठल दास का पंच हज़ारी होना·	راجہ بٹہل داس کا پنجہزاری ہونا	۱۲۳
१२३ ताज बीबी का रोज़ा	روضہ تاج گنج	"
१२३ राजा बिट्ठल दास को हाथी इनायत-	راجہ بٹہل داس کو ہاتہی عنایت	"

१७वाँ साल

۱۷اوان برس

१२३ राजा बिट्ठल दास को घोड़ा-	راجہ بٹہل داس کو گہوڑا عنایت	۱۲۳
१२३ राजा जस वंत सिंघ को वतन जाने की रुख़सत·	راجہ جسونت سنگہ کو وطن جانے کی رخصت	"
१२३ बाद शाह का अपने पोते का मुंह देखने को जाना ॥	بادشاہ کا اپنے پوتہ کا مونہہ دیکہنے کے واسطے جانا	"

१२४ राजा विट्ठल दास को ख़िलअ़त	راجہ بیٹھل داس کو خلعت	١٢٤
" राव शत्रुसाल को हाथी-	راؤ ستر سال کو ہاتھی	"
१२५ औरंगज़ेब के बेटे मोअ़ज़्ज़म का पैदा होना	اورنگ زیب کے بیٹے محمد معظم کا پیدا ہونا	١٢٥
१२६ राय राया का कासी सेवन-	رائے رایاں کی گوشہ نشینی کاشی میں	١٢٦
१२६ बाद शाह का अजमेर जाना	بادشاہ کا اجمیر جانا	١٢٧
१२६ राजा जय सिंघ का चादसू में हाज़िर होना-	راجہ جے سنگہ کا چاٹسوں میں حاضر ہونا	"
१२६ राना जगत सिंघ के बड़े बेटे राज कुंवर का आना-	رانا جگت سنگہ کے بڑے بیٹے راج کنوار کا حاضر آنا	"
१२७ राना जगत सिंघ का कुछ हाल	رانا جگت سنگہ کا کچھ حال	"
१२७ बाद शाह का अजमेर पहुंचना	بادشاہ کا اجمیر پہنچنا	"
१२८ राजा जस वंत सिंघ का वतन से आना-	راجہ جسونت سنگہ کا وطن سے آنا	١٢٨
१२८ बाद शाह का देग़ चढ़ाना-	بادشاہ کا اجمیر میں دیگ چڑھانا	"
१२८ बाद शाह का अजमेर से कूंच करना-	بادشاہ کا اجمیر سے کوچ کرنا	"
१२८ राजा जसवंत सिंघ जय सिंघ और जय सिंघ के बेटा राम सिंघ और कीरत सिंघ को ख़िलअ़त और रुख़सत घर जाने की मिलना	راجہ جسونت سنگہ راجہ جے سنگہ اور راجہ جے سنگہ کے بیٹے رام سنگہ وکیرت سنگہ کو خلعت اور رخصت گھر جانے کی۔	"
१२९ राना जगत सिंघ के बेटे राज कुंवर को ख़िलअ़त और रुख़सत	رانا جگت سنگہ کے بیٹے راج کنوار کو خلعت اور رخصت	١٢٩

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

१२९ मालपुरे में विट्ठल दास की नज़र-	مالپورہ میں راجہ بٹھل داس کی نذر	۱۲۹
१२८ राजा किशन सिंघ भदोरिये के मरने पर बदन सिंघ का राजा होना	راجہ کشن سنگہ بھدوریہ کے مرنے پر بدن سنگہ کا راجا ہونا	"
१३१ नाहर सोलंखी की नज़र	ناہر سولنکھی کی نذر	۱۳۱
१३१ बादशाह का आगरे पहुंचना	بادشاہ کا آگرہ پہنچنا	"
१३१ सुजान सिंघ सीसोदिये का इज़ाफ़ा-	سجان سنگ سیسودیہ کا اضافہ	"
१३१ राजा बदन सिंघ भदोरिये को हाथी इनायत-	راجہ بدن سنگہ بھدوریہ کو ہاتھی عنایت	"
१३१ आगरे में मरी और बादशाह का शिकार जाना-	آگرہ میں وبا اور بادشاہ کا شکار جانا	"
१३२ ईरान तूरान अरब और काशग़र वगैरा के बहुत से आदमियों का आकर नौकर होना	ایران توران عرب اور کاشغر وغیرہ کے بہت سے آدمیوں کا آکر نوکر ہونا	۱۳۲
१३२ बीजापुर और गोल कुंडे के बादशाहों के नज़राने-	بیجاپور اور گولکنڈہ کے بادشاہوں کے نذرانہ	۱۳۲
१३२ सईद खां ज़फ़रजंग का कंधार जाना और जगत सिंघ का क़िलात से काबुल में बदला जाना-	سعید خاں ظفر جنگ کا قندہار جانا اور جگت سنگہ کا قلات سے کابل میں بدلا جانا	۱۳۲
१३२ जहांआरा बेगम का आग से	جہاں آرا بیگم کا آگ سے	۱۳۲

जल जाना और बाद शाह का बहुत सा रुपया खैरात करना.	جلجانا اور بادشاہ کا بہت سا روپیہ خیرات کرنا	
पलामूं परचढाई	**پلاسوں پر فوج کشی**	
१३४ पलामूं के राजा प्रताप सिंघ को उसके चचा दरया राय और तेज राय का क़ैद करना.	پلاسوں کے راجہ پرتاب سنگھ کو اسکے چچا دریا رائے اور تیج رائے کا قید کرنا	۱۳۴
१३४ तेज राय का राजा होना.	تیج رائے کا راجہ ہونا	۱۳۴
१३४ सूबे दार बिहार का दरिया राय की मिलावट से क़िले देवकन में अमल कर लेना	صوبہ دار بہار کا دریا رائے کی سازش سے قلعہ دیوکن میں عمل کر لینا -	۱۳۴
१३५ तेज राय के वकील बदन सिंघ का देव कन पर आना और बाद शाही फ़ौज से भाग ना.	تیج رائے کے وکیل بدن سنگھ کا دیوکن پر آنا اور بادشاہی فوج کی مدد پر جانا	۱۳۵
१३६ दरया राय का बाद शाही फ़ौज की मदद पर जाना.	دریا رائے کا بادشاہی فوج کی مدد پر جانا	,,
१३६ बदन सिंघ के बेटे सूरत सेन और सबल सेन का परताप को क़ैद से छोड़ देना तेज सिंघ और बदन सिंघ का भाग जाना.	بدن سنگھ کے بیٹے سورت سین اور سبل سین کا پرتاب کو قید سے چھوڑ دینا تیج سنگھ اور بدن سنگھ کا بھاگ جانا	,,
१३७ धरनी धर उज्जैनिये का किले	دھرنی دھر اوجینیہ کا قلعہ	۱۳۷

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दार देवकन होना·
१३८ परताप का पटने में हाज़िर हो जाना और बादशाह की तरफ़ से उसको मनसब मिलना
१३८ पलामू की जमा १ किरोड़ दाम (२५००००) की थी-

॥ गुन्नोर की फ़तह

१३९ संग्राम का मरना और उस के गुलाम मारू का गुन्नोर में क़बज़ा करलेना·
१४० मालवे के सूबेदार का चढ़ाई करके संग्राम के बेटे भोपत को पकड़ना और गुन्नोर फ़तह करना
१४१ गोबिंद दास राठोड राजा पहाड़ सिंघ बुंदेला और पृथ्वी राज राठोड़ इस मुहिम में शामिल थे

दरबार का हाल

१४२ हरि सिंघ राठोड़ का मरना और उसके भतीजे रूप सिंघ को

دار دیوکن ہونا
١٣٨ پرتاب کا پٹنہ میں حاضر ہو جانا اور بادشاہ کی طرف سے اُسکو منصب ملنا
،، پلاموں کی جمع ایک کروڑ دام کی تھی

گنور کی فتح

١٣٩ سنگرام کا مرنا اور اُس کے غلام مارو کا گنور میں قبضہ کرنا
١٤٠ مالوہ کے صوبہ دار کا چڑھائی کرکے سنگرام کے بیٹے بھوپت کو پکڑنا اور گنور فتح کرنا
١٤١ گوبند داس راٹھور - راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ - اور پرتھی راج راٹھور اس مہم ملایوں میں شامل تھے

دربار کا حال

١٤٢ ہری سنگھ راٹھور کا مرنا اور اُسکے بھتیجے روپ سنگھ کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किशन गढ का राज दिया जाना.	کشن گڈھ کا راج دیا جانا	
१४३ औरंग ज़ेब का दखन से आना	اورنگزیب کا دکھن سے آنا	۱۰۵۳
१४३ राजा सूरज सिंघ के बेटे सबल सिंघ राठोड़ का इज़ाफ़ा.	راجہ سورج سنگہ کے بیٹے سبل سنگہ راٹھور کا اضافہ	"
१४३ राव हटी सिंघ का मरना और रूप सिंघ को राम पुरा दिया जाना.	راؤ ہٹی سنگہ کا مرنا اور روپ سنگہ کو رام پورہ دیا جانا	"
१४४ मुराद बख़्श का मुल तान से आना.	مراد بخش کا ملتان سے آنا	۱۰۵۴
१४४ औरंग ज़ेब का मनसब ज़बत होना और मालवे के सूबे दार ख़ांन दौरां का सूबेदार दकखन होना.	اورنگ زیب کا منصب ضبط ہوکر مالوہ کے صوبیدار خاندوراں کا صوبہ دار دکن ہونا	"
१४५ पृथ्वी राज राठोड़ का दौलता बाद की और सेवा राम गौड़ को आसेर की क़िले दारी मिलना	پرتھی راج راٹھور کو دولت آباد کی اور سیوا رام گوڑ کو اسیر کی قلعداری ملنا	"
१४५ शाह ज़ादे मुराद बख़्श का मुलतान जाना.	شاہزادہ مراد بخش کا ملتان جانا	۱۰۵۵
१४५ राजा विट्ठल दास को घर जाने की रुख़सत-	راجہ بیٹھل داس کو گھر جانے کی رخصت	"

राव अमर सिंघ का काम आना

راؤ امر سنگہ کا کام آنا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१४७ राव अमर सिंघ का बख़शी सलावत ख़ांको मार कर ख़ुद भी अरजुन गोड़ व ख़लील उल्ला ख़ां व ग़ेरे के हाथ से मारा जाना-	راؤ امر سنگہ راٹھور کا بخشی صلابت خاں کو مار کر خود بھی ارجن گوڑ و خلیل اللہ خاں وغیرہ کے ہاتھ سے مارا جانا	۱۴۷
१४८ बीका नेर के राव सूर और अमर सिंघ से सरहद का झगड़ा था	بیکانیر کے راو سور اور امر سنگہ سے سرحد کا جھگڑا تھا -	۱۴۸
१५० अमर सिंघ के आदमियों का मीर ख़ां मीर तुज़क और मलूक चंद मुशरफ़ दोलत ख़ाने ख़ास को मार डाल ना-	امر سنگہ کے آدمیوں کا میر خاں میر توزک و ملوک چند مشرف دولت خانہ خاص کو مار ڈالنا	۱۵۰
१५१ बल्लू राठोड़ और भाव सिंघका अमर सिंघ के आद मियों से मिल कर अरजुन गोड़ से बदला लेनेका इरादा करना बाद शाही फ़ोज का आना और उससे जंग होना -	بلو راٹھور اور بھاؤ سنگہ کا امر سنگہ کے راجپوتوں سے ملکر ارجن گوڑ سے بدلہ لینے کا ارادہ کرنا بادشاہی فوج کا آنا اور اُس سے جنگ ہونا	۱۵۱

दरबार का हाल .. دربار کا حال

१५४ अरजुन गोड़ गोपाल सिंघ और स्याम सिंघ राठोड का इज़ाफ़ा.	ارجن گوڑ گوپال سنگہ اور شیام سنگہ راٹھور کا اضافہ -	۱۵۴
१५५ द्वारका दास के बेटे नर सिंघ दास का क़िले दार का बील होना.	دوارکا داس کے بیٹے نرسنگہ داس کا قلعدار کابل ہونا	۱۵۵

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१२२ राव शत्रु साल को घर जाने की रुख़सत	راؤ سترو سال کو گھر جانے کی رخصت	۱۵۵
१२४ राना जगत सिंघ के वकील क लियान झाला को रुख़सत और राणा के वास्ते ख़िलअत-	رانا جگت سنگھ کے وکیل کلیان جھالا کو رخصت اور رانا کے واسطے خلعت	۱۵۶
१२६ गोरधन राठोड़ का क़िले दार आसेर होना-	گوردہن راٹھور کا قلعدار آسیر ہونا	۱۵۷
१२६ ख़ान दौरां का दखन से बुलाया जाना और उसकी जगह राजा जय सिंघ का भेजा जाना-	خاندوراں کا دکن سے بلایا جانا اور اس کی جگہہ راجہ جیسنگہ کا بھیجا جانا	"
१२७ राजा विट्ठल दास का अपने वतन से आना-	راجہ بیٹھل داس کا اپنے وطن سے آنا	۱۵۸
१२७ बेग़म साहिब को आराम होने की ख़ुशी में २० लाख रुपये ख़रच होना-	بیگم صاحبہ کو آرام ہونے کی خوشی میں ۲۰ لاکھ روپیہ خرچ ہونا	"
१२७ बेग़म साहिब की शिफ़ारिश से औरंगज़ेब के क़ुसूर माफ़ किये जाना-	بیگم صاحبہ کی سفارش سے اورنگ زیب کے قصور معاف ہونا	"
१२७ एक हज़ार आदमियों को ख़िलअत और इज़ाफ़ा	ایک ہزار آدمیوں کو خلعت اور اضافہ	"
१२७ राजा विट्ठल दास का पंच हज़ा	راجہ بیٹھل داس کا پنج ہزاری	۱۵۸

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

री होना-	ہونا	
१५७ राजा रुप सिंघ राठोड़ का इज़ाफ़ा-	راجہ روپ سنگہ راٹھور کا اضافہ	۱۵۸
१५७ सुजान सिंघ सीसोदियो को हज़ारी मनसब मिलना-	سجان سنگہ سیسودیہ کو ہزاری منصب ملنا	"
१५७ अली मरदानखां की बलख़ और बुख़ारा वालों पर फ़तह-	علی مرداں خاں کی بلخ اور بخاراوالوں پر فتح	"
१५८ अबदुल्लाख़ां फ़ीरोज़ जंग का मरना-	عبداللہ خاں فیروز جنگ کا مرنا	۱۵۹
१५८ राव अमर सिंघ के बेटे राय सिंघ का हाज़िर आना और मनसब पाना-	راؤ امر سنگہ کے بیٹے رائے سنگہ کا حاضر آنا اور منصب پانا	"
१५८ बादशाह का शहज़ादे दारा शिकोह के बेटे सिपहरशिकोह के देखने को जाना और शाहज़ादे की तरफ़ से राजा बिट्ठल दास को ख़िलअत मिलना-	بادشاہ کا شاہزادہ دارا شکوہ کے بیٹے سپہر شکوہ کو دیکھنے جانا اور شاہزادہ کی طرف سے راجہ بیٹھل داس کو خلعت ملنا	"
१५८ बेगम साहिब की तरफ़ से राजा बिट्ठल दास को ख़िलअत	بیگم صاحبہ کی طرف سے راجہ بیٹھل داس کو خلعت	۱۵۹
१६० राजा पहाड़ सिंघ का हाथी नज़र करना-	راجہ پہاڑ سنگہ کا ہاتھی نذر کرنا	۱۶۰

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

लाहोर जाना	**لاہور جانا**	
१६० बादशाह का कूंच आगेरे से लाहोर को	بادشاہ کا کوچ آگرہ سے لاہور کو	۱۶۰
१६० रूप बास में राजा जसवंत सिंघ को खिलअत देकर राजधानी की रखवाली पर छोड़ना-	روپ واس میں راجہ جسونت سنگھ کو خلعت دیکر دارالخلافہ کی حفاظت پر چھوڑنا	״
१६० राय कासी दास दीवान आगरा	رائے کاشی داس دیوان آگرہ	״
१६० राय बेनी दास दीवान बिहार	رائے بینی داس دیوان بہار	״
१६० मथरा में झामू फ़क़ीर का दलद्र दूर होना	متھرا میں ہاموں فقیر کا غنی ہونا	״
१६१ बादशाह का दिल्ली पहुंचना	بادشاہ کا دہلی پہنچنا	۱۶۱
१६१ औरंग ज़ेब को गुजरात का सूबा मिलना-	اورنگ زیب کو گجرات کا صوبہ	״
बरस उन्नीसवां	**انیسواں برس**	
१६२ राय टोडर मल को खिलअत	راجہ ٹوڈرمل کو خلعت	۱۶۲
१६२ बादशाह का लाहोर पहुंचना	بادشاہ کا لاہور پہنچنا	״
१६२ महेस दास राठोड को लाहोर की क़िलेदारी-	مہیش داس راٹھور کو قلعداری لاہور ملنا	״
१६२ बादशाह का कशमीर जाना	بادشاہ کا کشمیر جانا	״

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

९६२ बलख़ और बदख़शा की मुहिम का हुक्म-	بلخ اور بدخشاں پر مہم کا حکم	۱۶۲
९६३ पृथ्वी राज राठोड़ का इज़ाफ़ा-	پرتھی راج راٹھور کا اضافہ	۱۶۳
९६३ बाद शाह का कशमीर पहुंचना-	بادشاہ کا کشمیر پہنچنا	"
९६३ बीजा पुर और गोल कुंडे के बाद शाहों का नज़राना-	بیجاپور اور گولکنڈہ کے بادشاہوں کا نذرانہ	"
९६३ राजा जगत सिंघ की मुहिम बलख़ पर तईनात-	راجہ جگت سنگہ کی تعیناتی مہم بلخ پر	"
९६४ राजा राय सिंघ, राजा पहाड़ सिंघ और माधो सिंघ हाड़ा का उस मुहिम में मुकर्रर होना-	راجہ رائے سنگہ راجہ پہاڑ سنگہ اور مادھو سنگہ ہاڈا کا اس مہم میں شامل ہونا	۱۶۴
९६४ इला बाद का सूबा चिनार और रोहतास का किला दारा शिकोह की इनायत होना-	صوبہ الہ آباد کا مع قلاع چنار و رہتاس کے شاہزادہ دارا شکوہ کو عنایت ہونا	"
९६५ सरदारख़ां को धामूनी और जोरा गढ की जागीर दारी-	سردار خاں کو دھامونی اور جوراگڈھ کی جاگیرداری ملنا-	۱۶۵
९६५ ख़ान दोरां का एक कशमीरी	خاندوراں کا ایک کشمیری	"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

ब्राह्मण से मारा जाना और उसके बेटोंके मनसब-	برہمن کے ہاتھ سے مارا جانا اور اُسکے بیٹوں کو منصب	
१६६ राजा जय सिंह को खिलअत भेजा जाना-	راجہ جے سنگھ کو خلعت بھیجا جانا	۱۴۴
१६६ राजा जसवंत सिंह को लाहोर में बुलाना-	راجہ جسونت سنگھ کو لاہور میں بلانا	"
१६६ हमीर सिंह सीसो दिया का नौकर होना-	ہمیر سنگھ سیسودیہ کا نوکر ہونا	"
१६६ इसलाम खां का दखन के चारों सूबों को हकूमत पर भेजा जाना-	اسلام خاں کا دکھن کے چاروں صوبوں کی حکومت پر بھیجا جانا	"
१६६ गोविंद दास राठोड़ को मनसब	گوبند داس راٹھور کو منصب	"
१६६ शाह ज़ादे शुजाअ के बेटेकी शादी-	شاہزادہ شجاع کے بیٹے کی شادی	"
बलख़ की मुहिम	**بلخ کی مہم**	
१६६ नज़र मोहम्मद खांसे लड़ाई शुरू होना-	نذر محمد خاں سے لڑائی شروع ہونا	"
१३८ राजा राय सिंह को अटक जाने का हुक्म-	راجہ رائے سنگھ کو اٹک جانے کا حکم	۱۴۶
१३८ राजा जगत सिंह की बलख़ पर चढ़ाई राजा के बेटे माव सिंह का	راجہ جگت سنگھ کی بلخ پر چڑھائی راجہ کے بیٹے بھاؤ سنگھ کا	"

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहिले जाना-	پیشتر روانہ ہو جانا	
१७१ राजा का अन्दराब और सूराब के बीच में लकड़ी का क़िला बनाना-	راجہ کا اندراب اور سراب کے درمیان لکڑی کا قلعہ بنانا -	١٦١
१७१ नज़र मोहम्मद ख़ां के उज़बकों का राजा से लड़ने आना और लड़ाई हार कर भागना-	نذر محمد خاں اوزبک کے اوزبکوں کا راجہ سے لڑنے آنا اور لڑائی ہار کر بھاگنا	،،
१७४ अली मरदान ख़ां का राजा के बेटे राज रूप को राजा की मदद पर भेजना और उज़बकों का फिर लड़ाई हार ना-	علی مرداں خاں کا راجہ کے بیٹے راجروپ کو راجہ کی مدد پر بھیجنا اور اوزبکوں کا پھر لڑائی ہارجانا	١٦٣
१७२ राजा का उज़बकों का हटा कर पंच शहर में पहुंचना	راجہ کا اوزبکوں کو شکست دیکر پنج شہر میں پہنچنا	١٦٥

दर बार का हाल — دربار کا حال

१७७ बाद शाह का कशमीर से लौट ना-	بادشاہ کا کشمیر سے لوٹنا	١٦٦
१७७ किश्ट वार के राजा कंवर सेन को रुख़ सत-	کشتوار کے راجہ کنور سین کو رخصت	،،
१७७ बाद शाह का लाहौर पहुंच ना-	بادشاہ کا لاہور پہنچنا	،،
१७७ शाह ज़ादे मुराद बख़्श का मुलतान से और राजा जसवंत सिंघ	شاہزادہ مراد بخش کا ملتان سے اور راجہ جسونت سنگھ	،،

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का वतन से हाज़िर होना-	کا وطن سے حاضر آنا	
१७७ लाहौर के क़िलेदार महेस राठोड़ का मुजरा-	لاہور کے قلعہ دار مہیس راٹھور کا مجرا	۱۷۷
१७७ राय सिंघ झाला को मनसब-	رائے سنگہ جھالا کو منصب	"
१७८ राय तोड़र मल का इज़ाफ़ा	رائے توڈر مل کا اضافہ	"
१७८ किशन सिंघ कछ्वाहे का मनसब-	کشن سنگہ کچھواہہ کا منصب	۱۷۸
१७८ राजा जय राम और गोकल दास सीसोदिया का इज़ाफ़ा-	راجہ جے رام اور گوکل داس سیسودیہ کا اضافہ	"
१७९ महेस दास राठोड़ का इज़ाफ़ा	مہیس راٹھور کا وظیفہ	۱۷۹
१७९ नूर जहां बेगम का इन्तक़ाल-	نور جہاں بیگم کا انتقال	"
१७९ नज़र मोहम्मद खां के वकील का आना-	نذر محمد خاں کے وکیل کا آنا	"
१७९ सादुल्ला खां वज़ीर का ६ हज़ारी होना-	سعد اللہ خاں وزیر کا ۶ ہزاری ہونا	"
१८० राजा विट्ठल दास, राजा पहाड़ सिंघ, महेस दास राठोड़ और अनिरुद्ध गौड़ का इज़ाफ़ा-	راجہ بٹھلداس راجہ پہاڑ سنگہ مہیس داس راٹھور اور انرودہ راٹھور کا اضافہ	۱۸۰
१८१ राजा जगत सिंघ का मरना और राज रूप का बल्ख की मुहिम पर तईनात होना-	راجہ جگت سنگہ کا مرنا اور راجروپ کا بلخ کی مہم پر تعینات ہونا۔	۱۸۱

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बलख़ और बदख़शां की मुहिम

१८२ शाह ज़ादे मुराद बख़श का बलख़ और बदख़शां की फ़तह को भेजा जाना-

१८२ राजा बिट्ठल दास, राव शत्रु साल, माधो सिंघ हाड़ा महेस दलप तोत, सेवा राम गोड़, राजा रूप सिंघ राठोड़ राम सिंघ राठोड़ मोहकम सिंघ गोपाल दास गोकल दास सीसो दिया. गिरधर दास गोड़, राजा अमर सिंघ नरवरी राय सिंघ, अर्जुन गोड़, महेस दास राठोड़ सुजान सिंघ सीसो दिया, किशन सिंघ तंवर, रावत रूप सिंघ चद्रावत कृपा राम गोड़ उग्रसेन, इन्द्र साल, तिलोक चन्द चन्द्र मान नरूका संग्राम कछवाहा हमीर सिंघ सीसो दिया पृथ्वी सिंघ कछवाहा पेम चन्द राय मनोहर का पोता डाणी दास

بلخ اور بدخشاں کی مہم

شاہزادہ مراد بخش کو بلخ اور بدخشاں کی فتح کو بھیجنا ۱۸۲

راجہ بٹھیلداس راؤ ستروسال ہاڑہ مہیس دلپوت مادہو سنگہ ہاڑہ سیوارام گوڑ راجہ روپ سنگہ راٹھور رام سنگہ راٹھور محکم سنگہ گوپالداس گوکل داس سیسودیہ گردھرداس گوڑ راجہ امر سنگہ نروری رائے سنگہ جہالا ارجن گوڑ مہیس داس راٹھور سجان سنگہ سیسودیہ کشن سنگہ تنور راوت روپ سنگہ چندراوت کرپارام گوڑ اگرسین اندرسال تلوک چند چندربھان نروکا سنگرام کچھواہہ ہمیر سنگہ سیسودیہ پرتھی سنگہ کچھواہہ پیم چند رائے منوہر کا پوتہ ڈوانی داس ۱۸۲

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेड़ तिया, गोयंद दास खान दौरानी बल्लु चोहान, रावत नारायण दास सीसो दिया का शाहज़ादे के साथ तईनात होना-	میرٹیہ گوبند داس خاندورانی بلو چوہان راوت نراین داس سیسودیہ کا شاہزادہ کے ساتھ تعینات ہونا	
१८४ राजा बिट्ठल दास का राजपूतों पर अफ़सर होना-	راجہ بیٹھل داس کا راجپوتوں پر افسر ہونا	۱۸۴
१८४ राजा देवी सिंघ राजा राय सिंघ राजा जय राम जग राम राजा बहरोज अजब सिंघ और किशन सिंघ दहनी हाथ की फ़ौज में-	راجہ دیبی سنگھ راجہ رائے سنگھ راجہ جی رام جگ رام راجہ بہروز عجب سنگھ اور کشن سنگھ داہنی ہاتھ کی فوج میں	"
१८५ राजा पहाड़ सिंघ चन्द्र मणि बुंदेला और भोज राज बांयें हाथ की फ़ौज में-	راجہ پہاڑ سنگھ چندر من بندیلہ اور بھوج راج بائیں ہاتھ کی فوج میں	۱۸۵
१८५ राबु साल हाड़ा सेवा राम गोड़ राम सिंघ राठोड़ गोकुल दास सीसो दिया गिरधर दास राजा अमर सिंघ नर वरी राय सिंघ झाला और अर्जुन गोड़ को ख़िलअत-	ستروسال ہاڈا سیوا رام گوڑ رام سنگھ راٹھور گوکل داس سیسودیہ راجہ امر سنگھ نروری رائے سنگھ جھالا اور ارجن گوڑ کو خلعت	"
१८६ राव रूप सिंघ और राय सिंघ झाला का इज़ाफ़ा-	راو روپ سنگھ اور رائے سنگھ جھالا کا اضافہ	۱۸۶

बरस बीसवां | ۲۰واں برس

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१८६ लाहोर में काल और बादशा ही ख़ैरात-	لاہور میں قحط سالی اور بادشاہ کی خیرات	١٨٦
१८६ ईरान को वकील भेजना-	ایران کو ایلچی بھیجنا	″
तारा गढ़ के क़िले की फ़तह	**فتح قلعہ تاراگڈھ**	
१८६ राजा जगत सिंघ के मरने पर तारा गढ में बाद शाही क़बज़ा होना-	راجہ جگت سنگھ کے مرنے پر تاراگڈھ میں بادشاہی قبضہ ہونا	″
बाद शाह का काबुल जाना	**بادشاہ کا کابل جانا**	
१८८ बाद शाह का लाहोर से काबुल जाना-	بادشاہ کا لاہور سے کابل جانا	١٨٨
१८८ राजा जय सिंघ के बेटे कंवर राम सिंघ को मन सब-	راجہ جے سنگھ کے بیٹے کنور رام سنگھ کو منصب	″
१८८ राजा जसवंत सिंघ को कटार और घोड़ा-	راجہ جسونت سنگھ کو کٹار اور گھوڑا	″
१८९ कंवर राम सिंघ को घोड़ा-	کنور رام سنگھ کو گھوڑا	١٨٩

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१८९ बादशाह का पिशोर और मुराद बख़्श का काबुल पहुंचना	بادشاہ کا پیشاور اور مراد بخش کا کابل پہنچنا	۱۸۹
१८९ राजा बिट्ठल दास का मुराद बख़्श के पास हाज़िर होना।	راجہ بیٹھل داس کا مراد بخش کے پاس حاضر ہونا	"
१८९ राजा जसवंत सिंघ का इज़ाफ़ा	راجہ جسونت سنگھ کا اضافہ	"
१९१ महेस राठोड़ को नक्क़ारा	مہیش راٹھور کو نقارہ	۱۹۱
१९१ राजा जसवंत सिंघ और कंवर राम सिंघ बादशाही लशकर से १ मंजिल आगे।	راجہ جسونت سنگھ اور کنور رام سنگھ بادشاہی لشکر سے ایک منزل آگے	"
१९१ घोड़ों के दाग़ का कायदा	گھوڑوں کے داغ کا قاعدہ	"
१९३ फौज को पेशगी तनख़्वाह	فوج کو پیشگی تنخواہ	۱۹۳
१९३ बहादुर ख़ां और राजा बिट्ठल दास का बदख़्शां पर जाना।	بہادر خاں اور راجہ بیٹھلداس کا بدخشاں پر جانا	۱۹۴
१९४ बादशाह का काबुल पहुंचना	بادشاہ کا کابل پہنچنا	"
१९४ राजा जसवंत सिंघ और सादुल्लाख़ां का पेशवाई में आना।	راجہ جسونت سنگھ اور سعد اللہ خاں کا پیشوائی کرنا	"
१९४ दौलताबाद की क़िलेदारी पृथ्वी राज राठोड़ से उतर कर सयादत ख़ां को मिलना।	دولت آباد کی قلعداری پرتھی راج راٹھور سے تغیر ہو کر سیادت خاں کو ملنا	"
१९५ कंवर राम सिंघ को मोतियों की माला।	کنور رام سنگھ کو موتیوں کی مالا	"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

१९५ बहादुर ख़ां और राजा विट्ठलदास का तूल की घाटी से गुज़रना-	بہادر خاں اور راجہ بٹھیلداس کا طول کی گھاٹی سے گذرنا	۱۹۵
१९५ क़िले कहमर्द का फ़तह होना·	قلعہ کھمرو کا فتح ہونا	″
१९५ राजा पहाड़ सिंघ और राजा देवी सिंघ क़िले गोरी पर·	راجہ پہاڑ سنگھ اور راجہ دیوی سنگھ قلعہ غوری پر	″
१९६ नज़र मोहम्मद ख़ां के बेटे ख़ुसरो का शाह ज़ादे के पास हाज़िर आना·	نذر محمد خاں کے بیٹے خسرو کا شاہزادہ کے پاس حاضر آنا	۱۹۶
१९६ अलमानों का कुंदुज़ को जला कर वापिस आना·	الامانوں کا قندز کو جلا کر واپس جانا	″
१९६ शाह ज़ादे मुराद बख़्श का राजा राज रूप को क़िले कुंदुज में छोड़ना·	شاہزادہ مراد بخش کا راجہ راج روپ کو قلعہ قندز میں چھوڑنا	″
१९६ ख़ुसरो का काबुल में बादशाह के पास हाज़िर होना·	خسرو کا کابل میں بادشاہ کے پاس حاضر ہونا	″
१९६ बलख़ में बादशाही अमल होना·	بلخ میں بادشاہی عمل ہونا ہونا	″
१९७ नज़र मोहम्मद ख़ां का भाग जाना·	نذر محمد خاں کا بھاگ جانا	۱۹۷
१९७ शाह ज़ादे का राजा विट्ठलदास को अपने पास रख कर बहादुर	شاہزادہ کا راجہ بیٹھل داس کو اپنے پاس رکھ کر بہادر	″

खां का नज़र मोहम्मद खां के पीछे भेजना.	خاں کو نذر محمد خاں کے پیچھے بھیجنا۔	
१९७ महेस दास रूप सिंघ ओर राम सिंघ राठोड़ का भी लड़ाई के शोक से बहादुरखां के साथ होलेना.	مہیش داس روپ سنگھ اور رام سنگھ راٹھور کا لڑائی کے شوق سے بہادر خاں کے ہمراہ ہو لینا	۱۹۷
१९८ नज़र मोहम्मद खांके माल की ज़बती.	نذر محمد خاں کے مال کی ضبطی	۱۹۸
१९८ बलख ओर बदख शांकी आमदनी.	بلخ اور بدخشاں کی آمدنی	۱۹۹
१९९ बलख में बाद शाह के नाम का खुतबा ओर सिक्का.	بلخ میں بادشاہ کے نام کا سکہ اور خطبہ	۱۹۹
२०० शेरग़ान में बाद शाही लशकर की उज़बकों के ऊपर फ़तह.	شیرغاں میں بادشاہی لشکر کی اوزبکوں کے اوپر فتح	۲۰۰
२०० महेस राठोड़ दलप तोल, रूप सिंघ राठोड़ राम सिंघ राठोड़ रूप सिंघ चन्द्रावत. राजा अमर सिंघ राजावत महेस दास राठोड़, राय तिलोक चन्द सेखावत, संग्राम राजावत, गोयंद दास खांन दोरानी, वल्लू चोहान. राजा जय राम, जग राम कछवाहा अजब सिंघ हा	مہیش داس راٹھور دلپتوت روپ سنگھ راٹھور۔ رام سنگھ راٹھور روپ سنگھ چندراوت راجہ امر سنگھ راجاوت۔ مہیش داس راٹھور رائے تلوک چند شیخاوت سنگرام راجاوت۔ گوبند داس خاندورانی بلوچوہان راجہ جیرام جگرام کچھواہہ عجب سنگھ	"

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

डा- चतर भुज चोहान लरव मन सेन का पोता, चन्द्र मान नरूका उस लड़ाई में थे·	ہاڈا-چتر بھوج چوہان نبیرہ لکھمن سین-چندربھان نروکہ اُس لڑائی میں تھے	
२०२ महेस दलप तोत राठोड़, राजा जय राम· रूप सिंघ राठोड़· राम सिंघ राठोड़· राव रूप सिंघ सीसोदिया· महेस दास राठोड़· अजब सिंघ· चोहान चतुर भुज· चन्द्र भान नरूका संग्राम सिंघ कछवाहा· वल्लू चोहान· और गोयंद दास को खिलअत और इज़ाफ़ा·	مہیس دلپتوت راٹھور-راجہ جے رام-روپ سنگہ راٹھور رام سنگہ راٹھور راؤ روپ سنگہ سیسودیہ مہیش داس راٹھور عجب سنگہ-چوہان چتربھوج چندربھان نروکہ-سنگرام سنگہ کچھواہے-بلوچوہان اورگوبندداس کوخلعت واضافہ	۲۰۲
२०३ राजा राज रूप को खिलअत और इज़ाफ़ा·	راجہ راجروپ کو خلعت اور اضافہ	۲۰۳
२०३ शाह ज़ादे मुराद का वलरव में रहने से घबरा जाना और सादुल्ला रवां वज़ीर का उसके समझाने को आना·	شاہزادہ مراد بخش کا قیام بلخ سے گبھرا جانا اور سعداللہ خاں وزیر کا اُس کے سمجھانے کو آنا	״
२०४ असालत और बहादुर रवां का सूबे दार बलरव और कुलीच रवां का सूबे दार बदरवशां होना·	اصالت خاں اور بہادر خاں کا صوبہ دار بلخ اور قلیچ خاں کا صوبہ دار بدخشاں ہونا-	۲۰۴
२०४ राजा देवी सिंघ· पहाड़ सिंघ	راجہ دیوی سنگہ پہاڑ سنگہ	۲۰۴

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ओर चन्द्र मणि बुंदेले का अन्द खुद की तरफ़ जाना ओर उग्रसेन कछवाहे का कत्ल ~~होने~~ ओर गुरगान की हकूमत पाना.	اور چندرمن بندیلہ کا اندخود کی طرف جانا اور اگرسین کچھواہہ کا کلتہ اور گرگاں کی حکومت پانا
बदख़शां का हाल	**بدخشاں کا حال**
२०५ राजा राज रूप का अलमानों को भगाना.	۲۰۵ راجہ راجروپ کا المانوں کو بھگانا
२०५ अलमानों का कुंदुज़ पर आना ओर बुंदेलों को क़िले को बचाना.	المانوں کا قندز پر آنا اور بندیلوں کا قلعہ کو بچانا
२०८ अलमानों का अंद ख़ुद के हाकिम रुस्तम ख़ां पर जाना ओर राजा देवी सिंघ का उनसे बहादुरी के साथ लड़ना.	۲۰۸ المانوں کا اندخود کے حاکم رستم خان پر جانا اور راجہ دیوی سنگہ کا اُن سے بہادری کے ساتھ لڑنا
नज़र मोहम्मद ख़ां का निकल जाना ॥	**نذر محمد خاں کا نکل جانا**
२०९ नज़र मोहम्मद ख़ां का लड़ाई हार कर ख़ुरासान जाना.	۲۰۹ نذر محمد خاں کا لڑائی ہار کر خراسان جانا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

और बाद शाह का मीर अबदुल अज़ीज़ को उसके पास भेजना. नज़र मोहम्मद खां का उस से न मिलना और शाह ईरान का मीर को ठहरा लेना.	اور بادشاہ کا میر عبدالعزیز کو اسکے پاس بھیجنا نذر محمد خاں کا اس سے نہ ملنا اور شاہ ایران کا میر کو ٹھیرا لینا	
दरबार का हाल	**دربار کا حال**	
२१० राजा राज रूप का इज़ाफ़ा.	راجہ راجروپ کا اضافہ	۲۱۰
२१० राजा जसवंत सिंघ को खासा घोड़ा.	راجہ جسونت سنگھ کو خاصہ گھوڑا	"
२११ जगत सिंघ के बेटे बहादुर सिंघ का खज़ाने के साथ बलख जाना.	جگت سنگھ کے بیٹے بہادر سنگھ کا خزانہ کے ساتھ بلخ جانا	۲۱۱
२११ शाह ज़ादे मुराद बख्श का काबुल पहुंचना और बाद शाह की नाराज़ी	شاہزادہ مرادبخش کا کابل پہنچنا اور بادشاہ کی ناراضی	"
२११ राजा विट्ठल दास गोड़ और महेस दास राठोड़ का नज़र मोहम्मद खां के क़बीलों को लेकर बाद शाह के पास हाज़र होना.	راجہ بیٹھل داس اور مہیش داس راٹھور کا نذر محمد خاں کے قبیلوں کو لیکر بادشاہ کے پاس حاضر ہونا	"
२१२ सादुल्ला खां का बलख से-	سعداللہ خاں کا بلخ سے	۲۱۲

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आना-	آنا	
२१२ काबुल का दौलत ख़ाना-	کابل کا دولت خانہ	۲۱۲
२१२ बाद शाह का काबुल से कूंच	بادشاہ کا کوچ کابل سے	"
२१२ शाह ईरान को बलख़ और बदख़ शाह का फ़तह नामा भेजना	شاہ ایران کو بلخ اور بدخشاں کا فتحنامہ بھیجنا	"
२१२ रूप सिंघ और राम सिंघ राठोड़ों का इज़ाफ़ा-	روپ سنگھ اور رام سنگھ راٹھور کا اضافہ	"
२१३ गोकुल दास सीसो दिया भोज राज खंगार, नरायन दास, सीसोदिया, केसरी सिंघ, और पृथ्वी राज, के मनसब बढ़ना-	گوکل داس سیسودیہ بھوجراج کھنگار نراین داس سیسودیہ کیسری سنگھ اور پرتھی راج کے منصب بڑھنا	۲۱۳
२१३ पिशोर में कंवर राम सिंघ को वतन जाने का ख़िलअत-	پشاور میں کنور رام سنگھ کو وطن جانے کا خلعت	"
२१३ राजा जय सिंघ के दखन से बुलाने का हुक्म-	راجہ جے سنگھ کے دکن سے بلانے کا حکم	"
२१४ राय कासी दास का आगरे से बंगाले की दीवानी पर बदला जाना	رائے کاشی داس کا آگرہ سے بنگالہ کی دیوانی پر بدلا جانا	۲۱۴
२१४ राजा जय राम का इज़ाफ़ा	راجہ جے رام کا اضافہ	"
२१४ बाद शाह लाहौर में	بادشاہ لاہور میں	"
२१४ राजा विट्ठल दास का इज़ाफ़ा	راجہ بیٹھل داس کا اضافہ	"
२१४ गिरधर दास गौड़ का क़िलेदा	گردھرداس گوڑ کو قلعہ داری	"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

री आगरे की-	آگرہ کی	
२१५ पृथ्वी राज राठोड़ का १ किरोड़ रुपय लेकर आगरे से लाहोर पहुंचना	پرتھی راج راٹھور کا ایک کروڑ روپیہ لیکر آگرہ سے لاہور پہنچنا	۲۱۵
२१५ शाह ज़ादे मुराद बख़्श का मनसब कम होना-	شاہ زادہ مراد بخش کا منصب کم ہونا	،،

उज़बकों के हमले

اوزبکوں کے حملے

२१६ उज़बकों का बलख़ के सूबे में लूट मार मचाना-	اوزبکوں کا بلخ کے صوبہ میں لوٹ مار مچانا	۲۱۶
२१६ राजा जय राम गोपाल सिंघ राय तिलोक चन्द और जग राम का बहादुर ख़ांके हुक्म से उज़बकों को भगाना-	راجہ جے رام گوپال سنگھ رائے تلوک چند اور جگرام کا بہادر خاں کے حکم سے اونکو بھگانا	،،
२१६ अमलामानों का शेरग़ान को घेरना राजा देवी सिंघ और तुर्क ताज़ ख़ांका उन को भगाना-	المانوں کا شیرغان کو گھیرنا راجہ دیوی سنگھ اور ترک تاز خاں کا انکو بھگانا	،،

दर बार का हाल

دربار کا حال

२१६ राना जगत सिंघ के वकाल बलराम का हाज़िर आना-	رانا جگت سنگھ کے وکیل بلرام کا حاضر آنا	۲۱۷

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२१७ बलराम को रुख़सत और उसके हाथ राना और राज कंवर के वास्ते खिलत·	بلرام کو رخصت اور اُسکے ہاتھ رانا اور راج کنور کے واسطے خلعت	۲۱۷
२१७ औरंग ज़ब का दखन से आना और बलख़ बदख्शां उस को मिलना·	اورنگ زیب کا دکھن سے آنا اور بلخ اور بدخشاں اُسکو ملنا	،،
२१७ पृथ्वी राज को बलख़ में ख़ज़ाना पहुंच ने का हुक्म·	پرتھی راج کو بلخ میں خزانہ پہنچانے کا حکم	،،
२१८ बुख़ारा में काल और लोहोर में मरी·	بخارا میں کال اور لاہور میں مری	،،
बरस इक्कीसवां	**اکیسواں برس**	
२१८ काल के सताये हुवे ग़रीबों को ३०००० रुपये ईनायत·	قحط زدوں کی تیس ہزار روپیہ کی امداد	۲۱۸
२१८ सुजान सिंघ सीसो दिया का इज़ाफ़ा	سجان سنگہ سیسودیہ کا اضافہ	،،
२१८ नज़र मोहम्मद ख़ांके बेठ अबदुल अज़ीज़ ख़ां के बुख़ारा से बलख़ पर आने की ख़बर·	نذر محمد خاں کے بیٹے عبدالعزیز خاں کے بخارا سے بلخ پر آنے کی خبر	،،
२१८ औरंग ज़ेब का लाहोर से कूच	اورنگ زیب کا لاہور سے کوچ	،،
२१८ अली मरदान ख़ां, राजा राय	علی مرداں خاں راجہ	

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

सिंघ, राव रूप सिंघ, चन्द्रा वत, राजा अमर सेंघ, राजा वत को बलख जाने का हुक्म	سنگہ راو روپ سنگہ چندراوت راجہ امر سنگہ راجاوت کو بلخ جانے کا حکم	
२१९ रावत दयाल दास झाला को खिलअत	راوت دیالداس جھالا کو خلعت	۲۱۹
२१९ चंबे के राजा पृथ्वी चंद को घर जाने की रुखसत	چینبہ کے راجہ پرتھی چند کو گھر جانے کی رخصت	"
२१९ दारा शिकोह के दीवान राय विहारी मल को मनसब	دارا شکوہ کے دیوان رائے بہاری مل کو منصب	"
२२० महेस दास दलपत तोत का इन्तकाल और उसका दरजा दरबार में	مہیس دلپتوت کا انتقال اور اُسکا درجہ دربار میں	۲۲۰
२२१ महेस दास के बड़े बेटे रतन को जालोर मिलना	مہیس داس کے بڑے بیٹے رتن کو جالور ملنا	۲۲۱
बाद शाह का काबुल जाना	**بادشاہ کا کابل جانا**	
२२१ अब दुल अज़ीज़ खां के आने की खबर और बाद शाह का काबुल को कूंच	عبدالعزیز خاں کے آنے کی خبر اور بادشاہ کا کابل کو کوچ	"
२२१ सेवा राम गोड़ को काबुल की	سیوا رام گوڑ کو کابل کی	"

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किले दारी॰	قلعداری	
२२२ राजा विट्ठल दास को ख़ासा घोड़ा	راجہ بیٹھل داس کو گھوڑا خاصہ	۲۲۲
२२२ बादशाह काबुल के बाग़ सफ़ा में॰	بادشاہ کابل کے باغ صفا میں	″
२२२ माधो सिंघ हाड़ा, रूप सिंघ राठोड़, और राम सिंघ राठोड़ के वास्ते बलख़ में घोड़े भेजे जाने॰	مادہو سنگہ ہاڈا روپ سنگہ راٹھور اور رام سنگہ راٹھور کے واسطے بلخ میں گھوڑے بہیجنا	″

बलख़ में लड़ाई

بلخ میں لڑائی

२२२ अलमानों का कल्ते पर आना उग्रसेन कछवाहे नरूके का उन को भगाना॰	المانوں کا کلتہ پر آنا - اگرسین کچھواہہ نروکے کا انکو بھگانا	″
२२२ बहादुर ख़ांका राजा जय राम, रूप सिंघ राठोड़, गोकुल दास सीसोदिया, और अपने चचा नेक नाम को उग्रसेन की मदद पर भेजना॰	بہادر خاں کا راجہ جے رام روپ سنگہ راٹھور گوکل داس سیسودیہ اور اپنے چچا نیکنام کو اگرسین کی مدد پر بھیجنا -	″
२२३ अलमानों का सेरम और सरपुल की तरफ़ जाना और बहादुरख़ां का राजा देवी सिंघ राजा जय राम रूप सिंघ राठोड़ मोतमद ख़ां मीर आतिश गोकुल दास सीसोदिया	المانوں کا سیرم اور سرپل کی طرف جانا اور بہادرخاں کا راجہ دیوی سنگہ راجہ جے رام روپ سنگہ راٹھور معتمد خاں میر آتش گوکل داس سیسودیہ	۲۲۳

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अला उद्दीन गोपाल सिंघ महेस दास राठोड़ जगराम कछवाहा और अपने चचा नेक नाम को उनके मुक़ाबले पर भेजना•	علاؤالدین گوپال سنگھ مہیش داس راٹھور جگرام کچھواہہ اور اپنے چچا نیک نام کو ان کے مقابلہ پر بھیجنا	
२२४ अलमानों की हार•	المانوں کی ہزیمت	۲۲۴
बदख़शां में लड़ाई	**بدخشاں میں لڑائی**	
२२५ अलमानों का तालक़ां पर आना• कुलीच ख़ां और राजा राज रूप का उनसे लड़ना	المانوں کا طالقان پر آنا قلیچ خاں اور راجہ راجروپ کا اُنسے لڑنا	۲۲۵
२२६ राजा राज रूप का अह्‌दाद मोहमंद के बचाने में ज़ख़मी होना•	راجہ راجروپ کا احداد مہمند کے بچانے میں زخمی ہونا	۲۲۶
२२७ अलमानों का चश्मे अलीमगूल पर जाना असालत ख़ां राजा पहाड़ सिंघ और राजा जय राम का लड़ कर उनसे लूट का माल छीन लेना•	المانوں کا چشمہ علی منغول پر جانا اصالت خاں راجہ پہاڑ سنگھ اور راجہ جے رام کا لڑکر اُن سے لوٹ کا مال چھین لینا	۲۲۷
२२८ अब दुल अज़ीज़ के सवारों का ख़ाना बाद के थाने पर आना और बहादुर ख़ां को उनके मुक़ाबले को जाना राम सिंघ राठोड़ अजब सिंघ	عبدالعزیز خاں کے سواروں کا خان آباد کے تھانہ پر آنا اور بہادر خاں کا اُنکے مقابلہ کو جانا رام سنگھ راٹھور عجب سنگھ	"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सीसो दिया को मोहकम सिंघ और पहलवान दरवेश के पास क़िले बलख़ की हिफ़ाज़त पर भेजना।	سیسودیہ کو محکم سنگھ اور پہلوان درویش کے پاس قلعہ بلخ کی حفاظت پر بھیجنا	
२२९ अब दुल अज़ीज़ ख़ां का कुरशी से आना।	عبدالعزیز خاں کا قرشی سے آنا	،،
२३० नज़र मोहमद ख़ां का सफ़ाहान में जाकर शाह ईरान से मिलना और कुछ फ़ौज लेकर मशहद में आना।	نذر محمد خاں صفاہان میں جاکر شاہ ایران سے ملنا اور کچھ فوج لیکر مشہد میں آنا	۲۳۰
मेमने के क़िले पर ४ महीने तक बादशाही क़िलेदार अरशाद ख़ां का नज़र मोहम्मद ख़ां से लड़ना।	قلعہ میمنہ پر چار مہینے تک بادشاہی قلعدار شاد خاں کا نذر محمد خاں سے لڑنا	،،
२३१ नज़र मोहम्मद ख़ां का अपने बेटे क़ुतलक़ सुलतान को बलख़ फ़तह करने के वास्ते भेजना और उस का अब दुल अज़ीज़ ख़ां से जा मिलना।	نذر محمد خاں کا اپنے بیٹے قتلق سلطان کو بلخ فتح کرنے کے واسطے بھیجنا اور اسکا عبدالعزیز خاں سے جا ملنا	۲۳۱

औरंगज़ेब का बलख़ जाना | اورنگ زیب کا بلخ جانا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२३२ औरंग ज़ेब का काबुल से बलख़ को रवाने होना।	اورنگ زیب کا کابل سے بلخ کو روانہ ہونا	٢٣٢
२३२ घाटे में उज़बकों का ख़लील बेग गिरदावर से लड़ना	گھاٹے میں اوزبکوں کا خلیل بیگ گرداور سے لڑنا	”
२३२ शाह ज़ादे का राजा राय सिंघ शत्रु साल नज़र बहादुर राव रूप सिंघ चन्द्रा वत राजा अमर सिंघ कछवाहा बलराम हाड़ा और इन्द्र साल को उज़बकों पर भेजना।	شاہزادہ کا راجہ رائے سنگھ ستروسال نذر بہادر راؤ روپ سنگھ چندراوت راجہ امر سنگھ کچھواہہ بلرام ہاڈا اور اندر سال کو اوزبکوں پر بھیجنا	”
२३२ राय राय सिंघ और शत्रु साल हाड़ा का घाटे में से फिर उज़बकों को भगाना।	راے راے سنگھ اور ستروسال ہاڈا کا گھاٹے میں سے پھر اوزبکوں کو بھگانا	”

दर बार का हाल
دربار کا حال

२३३ बाद शाह का काबुल पहुंचना।	بادشاہ کا کابل پہنچنا	٢٣٣
२३३ राजा जग मनि को घोड़ा इनायत	راجہ جگمن کو گھوڑا عنایت	”
२३३ अर्जुन गौड़ का इज़ाफ़ा।	ارجن گوڑ کا اضافہ	”
२३३ राय मुकंद दास दीवान बयू तात का इज़ाफ़ा।	راجہ مکند داس دیوان بیوتات کا اضافہ	”
२३३ पेम चन्द का इज़ाफ़ा	پیم چند کا اضافہ	”
२३३ शाह शुजाअ का बंगाले से आना	شاہ شجاع کا بنگالہ سے آنا	”

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

ओर उसकी अरज़से मुराद बख़्श को दरबार में हाज़िर होने की इजाज़त मिलना·	اور اُسکی عرض سے مراد بخش کو دربار میں حاضر ہونے کی اجازت ملنا	
२३४ राजा जय सिंघ का दखन से हाज़िर आना·	راجہ جے سنگھ کا دکن سے حاضر آنا	۲۳۴
२३४ सादुल्ला ख़ां ओर इसलाम ख़ां को ७ हज़ारी मनसब·	سعد اللہ خاں اور اسلام خاں کو سات ہزاری منصب	"
२३४ राजा जय सिंघ का ५ हज़ारी ५ हज़ार सवार का मनसब ओर बल्ख़ जाने का हुक्म ओर २० लाख रुपये उसके साथ भेजना·	راجہ جے سنگھ کا پانچ ہزاری پانچ ہزار سوار کا منصب اور بلخ جانے کا حکم اور بیس لاکھ روپیہ اُسکے ساتھ بھیجنا	"
२३५ रतन महेस दासोत को ख़िलअत ओर घोड़ा	رتن مہیس داسوت کو خلعت اور گھوڑا	۲۳۵
२३५ हमीर सिंघ सीसो दिया बलूचोहान ओर महेस दास के भाई जसवंत को घोड़े देकर राजा जय सिंघ के साथ भेजना·	ہمیر سنگھ سیسودیہ بلوچوہان اور جسونت کو گھوڑے دے کر راجہ جے سنگھ کے ساتھ بھیجنا	"

बलख़ की मुहिम — بلخ کی مہم

२३५ शाहज़ादे ओरंगज़ेब का बलख़ पहुंचना ओर माधो सिंघ हाड़ा	شاہزادہ اورنگ زیب کا بلخ پہنچنا اور مادھو سنگھ ہاڑا	"

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को क़िले बलख़ की हिफ़ाज़त सोंपना-	کو قلعہ بلخ کی حفاظت سونپنا	
२३६ तेमूरा बाद में बहादुर खां और अली मरदान ख़ां का उजबकों से लड़ना और शाह ज़ादे का राजा राय सिंघ राव शत्रु साल और ग़ज़नफ़र अली वग़ेरा को मदद के वास्ते भेजना	تیمور آباد مین بہادر خاں اور علی مرداں خاں کا اوزبکوں سے لڑنا اور شاہزادہ کا راجہ راے سنگہ راو ستروسال اور غضنفر علی بیگ وغیرہ کو مدد کے واسطے بھیجنا۔	۲۳۶
२३६ बाद शाही लशकर की फ़तह और सइदखा ज़फ़र जंग का मारा जाना.	بادشاہی لشکر کی فتح اور راجہ پہاڑ سنگہ وغیرہ کا اُنکو بھگانا۔	۰۰
२३७ शाह ज़ादे का बलख़ से आगे जाना और फिर उजबकों का बलख़ पर आना सुनकर पीछा लोटना.	شاہزادہ کا بلخ سے آگے جانا اور پھر اوزبکوں کا بلخ پر آنا سُنکر واپس آنا	۲۳۷
२३८ उज़बकों का दुबारा हमला और राजा पहाड़ सिंघ वग़ेरा का उन को भगाना	اوزبکوں کا دوبارہ حملہ اور راجہ پہاڑ سنگہ وغیرہ کا اُنکو بھگانا	۲۳۸
२३९ ओरंग ज़ेव का इरादा उज़बकों के ऊपर धावा करने का और उनका जेहून नदी से उतर जाना.	اورنگ زیب کا ارادہ اوزبکوں کے اوپر دھاوہ کرنے کا اور اُنکا جیہوں ندی سے اُتر جانا	۲۳۹
२४० शाहज़ादे मुराद और ओरंगजेव की ग़लतियां उज़बकों के मुक़ाबिले में.	مراد بخش اور اورنگ زیب کی غلطیاں اوزبکوں کے مقابلہ میں	۲۴۰
२४० बाद शाह नामे की दूसरी जिल्द का	بادشاہ نامہ کی دوسری جلد کا خاتمہ	۲۴۱

ख़ातमा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

११ वें बरस का बाक़ी हाल सं. १६९४ व सं. १६९५

आसोज सुदी ११ को राजा अनूपसिंघ के बेटे अपने बाप के मरे पीछे हाज़िर हुए बड़ा बेटा जैराम था उस्को बादशाह ने ख़िलअत और मनसब हज़ारी ज़ात ८०० सवारों का असल और इज़ाफ़े से, राजा का ख़िताब और हाथी घोड़े इनायत किये और उस्से ४. दूसरे लड़कों को उन की लियाक़त के माफ़िक़ मनसब दिये ॥

मंगसिर सुदी ३ को लाल ख़ां कलांवत जो उस वक़्त के गवैयों का सरताज था ख़िलत और गुण समुद्र के ख़िताब से सरफ़राज़ हुआ यह तानसेन के बेटे बिलास का जमाई था ॥

बादशाह नामें मे लिखा है कि लाल ख़ां तान सेन के गाने का ढंग

بقیہ حال سال ۱۱

سنہ ۱۰۴۷ ہجری

سنہ ۳۸ و ۱۶۳۷ عیسوی

۹ جمادی الثانی کو راجہ انوپ سنگھ کے بیٹے بعد گزر جانے اپنے باپ کے حضور مین حاضر ہوئے جیرام بڑا تہا اوسکو خلعت اور ہزاری ذات و آٹھ سو سوار کا منصب معہ خطاب راجہ کے عنایت ہوا اور ہاتھی گہوڑی بہی ملے اور چار جو اس سے چھوٹے تھے اونکو اُنکے درجہ کے موافق منصب دئیے گئے۔

غرہ رجب کو لعل خان کلانوت کو جو اُس عہد کے ہندوستانی گویون مین سب سے اول درجہ کا گویّا تہا بادشاہ نے خلعت اور گُن سمدر کا خطاب عطا فرمایا وہ تان سین کے بیٹے بلاس کا داماد تہا بادشاہ نامہ مین لکہا ہے کہ لال خان نے تان سین کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

उसके शागिर्दों से अच्छी तरह सीखा है और उस्के ढंग पर धुरपदों के गाने में जवाब नहीं रखता है उसके ४ बेटे हैं जो उस्का साथ देते हैं इन में खुशहाल और बिश्राम बहुत अच्छे हैं और गाने में एक दूसरे के बराबर हैं पहिले की समझ बूझ अच्छी है इस सबब से बादशाह के नाम पर काव्य भी बनाता है लेकिन इस सुख चैन के ज़माने के कबियों का सरदार तो जगंनाथ महाकबि है पहिले ज़माने में तो इस बहिश्त जैसे हिन्दुस्तान के गवैये गीत छंद धुरपद और अस्तुति गाते थे मगर ये सब करनाटक देस की भाषा में होते थे और इस मुल्क के आदमी सिवाये राग और अलाप के और कुछ मतलब और मायने उनके नहीं समझ सकते थे इस लिये निज़ामुद्दीन ८
औलिया के मुरीद मीर ख़ुसरो ने ४

گانیکے طرز اوسکے شاگردون سے سیکھی تہی اور اوسکے انداز پر دہرپد کے گانیمین اپنا جواب نہین رکہتا تہا اوسکے چار بیٹے ہین جو گانے مین اوسکا ساتھ دیتے ہین خوشحال اور بسرام سب مین اچھے ہین اور گانیمین دونو برابر ہین خوشحال کا فہم اور سلیقہ بہت اچھا ہے وہ بادشاہ کے نام پر راگ اور راگنیان بناتا ہے لیکن اس عیش اور خوشی کے زمانہ مین سب مصنفون کا سرِدفتر جگناتھ رائے مہاکبی ہے اگرچہ پرانے گویئے ہندوستان کے گیت چھند دہرپد اور استت گایا کرتے تہے لیکن یہ نغمات کرناٹک کی زبان مین تھے اس سبب سے اس زمین کے آدمی اونکے معنی نہین سمجھ سکتے تھے صرف راگ اور الاپ کو جانتے تھے اسلئے میر خسرو نے جو شیخ نظام الدین بداونی کے مریدون مین قوم ہزارہ سے تہا اور دہلی

तरह का गाना निकाला ॥

१ "कौल" जो अरबी और फ़ारसी में इकताला दो ताला तिताला और चौताला भी होता है ॥

२ ग़ज़ल और तराना फ़ारसी में जो इकताला होता है ॥

३ तराना यह भी इकताला होता है ॥

४ ख़याल हिन्दुस्तानी ज़बान में यह मीर से पहिले भी गाया जाता था ॥

फिर ग्वालियर के राजा मानतंवर ने जो हिंन्दुस्तान की गानविद्या और साहित्य शास्त्र को खूब जानता था सब लोगों को आसानी से समझ में आजाने के वास्ते ग्वालियर की बोली में नई चाल का गाना निकाला जिसके ३ दरजे रक्खे

१ बिशान पद श्री कृष्ण जी की तारीफ़ में ॥

२ अस्तुत, जो देवताओं की और बड़े

مین پیدا ہوا تہا چار طرح کا گانا نکالا

(۱) قول جو گیت کے موافق ہوتا ہے عربی ہو خواہ فارسی نظم ہو یا نثر وہ یکتالہ بہی ہوتا ہے اور دوتالہ تیتالہ وچوتالہ بہی۔

(۲) فارسی - کہ فارسی اشعار ترانہ کے ساتھ گائے جاتے تھے اور وہ یکتالہ ہوتے تھے۔

(۳) ترانہ بغیر شعر کے یہ بہی یکتالہ ہوتا تہا۔

(۴) تصنیف ہندوستانی زبان کی تہی اوسکا نام خیال وغیرہ ہے اور خیال میر سے کچھ پہلے بہی گایا جاتا تہا اوسکے بعد راجہ مانتنور والی قلعہ گوالیار نے جو ہندوستان کے نغمات اور تصنیفات سے آگاہی رکہتا تہا گوالیار کی زبان مین ایک نئی طرح کا گانا نکالا تاکہ اوسکا جاننا سب کو آسان ہو اوسمین جو تصنیف کہ سری کرشن کے ذکر مین تہی اوسکا نام توبشن پد رکہا اور جو دوسری بزرگان دین کی تعریف یا توصیف اہل ثروت مین تہی اوسکو استت کہا اور جو سن

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और

आदमियों की तारीफ़ में हों॥

३ धुर्पद जिस्में नेह प्रीति की बातें हों॥

राजा मान के शागिर्दों में बख़्शू नायक बड़ा गुनी था जिसने गाने में नई २ बारीकयां निकाल कर उस को कमाल के दर्जे पर पहुंचाया था उस की आवाज़ इतनी ऊंची थी कि और गवैये तो जब तक कि प हिले दे जने मिलकर शुरू न करें अच्छी तरह नहीं गा सकते और वह अकेला बड़ी खूबी और पूरे सुरों से गाता था और टीप को भी जो ब ऊत ही ऊंचे सुरों से गाई जाती है इस खूबसूरती से अदा करता था कि बडे २ गवैये तारीफ़ करते थे और गाते वक़्त परवावज भी बजाता जा ता था और अलाप में भी इक्का था जब राजा मान मर गया तो उस के बे टे बिक्रमाजीत के पास रहा और जब गवालियर का राज बिक्रमाजीत के क़बज़े से निकल गया तो नायक

اور عشق کے مضامین مین تھی اوسکا نام دُھرپد ہے ―

نایک بخشو کلاونت جو راجہ مان کے تربیت یافتون مین سے تھا حسن نغمہ اور تصرفات مین کامل تھا اوسکی الاپ کا شہرہ زمانہ مین پھیل گیا تھا اور اُسکی آواز اسقدر بلند تھی کہ برخلاف تمام گوئیون کے کہ جب تک دو آدمی ہم آواز نہون اچھی طرح سے الاپ نہین سکتے وہ اکیلا ہی کمال خوبی اور سیر اہنگی سے گہنے لگتا تھا اور ٹیپ کو بھی جو بہت اونچے سُرون مین ہوتی ہے اسطرح سے ادا کرتا تھا کہ بڑے بڑے دانا اور استاد اس فن کے تحسین اور آفرین کرتے تھے اور متاثر ہوتے تھے اور گاتے ہوئے پکھاوج بھی بجاتا جاتا تھا اور سُر بھرنے مین کہ جس سے گانا شروع کیا جاتا ہے یکتا تھا جب راجہ مان مرگیا تو بخشو کچھ دنون اُسکے بیٹے بکرماجیت کے پاس رہا جب گوالیار کا قلعہ اور ملک راجہ بکرماجیت کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कालंजर के राजा कीरत के पास चला गया और वहां बड़े आराम से रहा आख़िर गुज़रान के बाद शाह सुलतान बहादुर ने नायक की तारीफ़ सुन कर उस को राजा कीरत से मांगा राजा ने उस के पास भेज दिया सुलतान बहादुर नायक का गाना सुन कर बहुत ख़ुश हुआ और नायक आख़ीर उमर तक वहीं रहा उस के पीछे तान सेन के गाने का चरचा लोगों में फैला वह पहिले बांधों गढ़ के राजा राम चंदर बाघेले के पास बड़े आराम से रहता था अकबर बादशाह ने जिनके दरबार में मुल्क २ के गुणी जन हाज़िर रहते थे उस की तारीफ़ सुनकर राजा के पास अपना १ भला आदमी भेजा और तान सेन के भेजने को लिखा राजा का दिल उस के जुदा करने को नहीं चाहता था तो भी हुकम उठा लिया और तानसेन को दरगाह में भेज दिया बादशाह उस को

قبضہ سے نکلگیا تو بخشو کالنجر کے راجہ کیرت کے پاس جارہا وہان بہی وہ بہت آسودگی سے گزر کرتا تہا آخر سلطان بہادر گجراتی نایک کا حال سنکر اسقدر مشتاق ہُوا کہ راجہ کیرت سے اُسکو مانگا راجہ نے کام ونا کام اُوسکو سلطان کے پاس بہیجدیا اوسکے پہونچنے سے سلطان کو نہایت خوشی حاصل ہوئی اور وہ بقیہ عمر تک وہان ہی رہا اُوسکے بعد تان سین کلانوت کے نغمہ دلکش کا شہرہ ہوا یہ شیخ محمد غوث کا منظور نظر تہا پہلے ملک ہٹہ اور قلعہ باندہون کے راجہ رامچندر بگھیلہ کے پاس آرام سے رہتا تہا جب اُوسکی یکتائی فن موسیقی کا ذکر اکبر بادشاہ کے دربار مین ہُوا جو مجمع دانشوران روزگار و مرجع ہُنرمندان ہر دیار تھا تو اُوسکے بلانیکا حکم ایک معتمد کے ہاتھ راجہ کے پاس بھیجا گیا اگرچہ راجہ کو تان سین کی کمال خواہش تہی لیکن نظر فرمان برداری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

गाना सुनकर बहुत खुश हुए और बहुत सा इनाम देकर उसका दरजा सब उस्के बराबर वालों से बढ़ा दिया ॥

आज हिन्दुस्तान के गवैये बख़्शू और तानसेन की किताबों पर चलते हैं ॥

पोस बदी ४ को राजा बिट्ठलदास घंघेड़े से हाजिर आया जो वतन के तौर उसको इनायत किया गया था ॥

पोस बदी ५ को राजा गजसिंघ अपने बेटे जसवंत सिंघ समेत वतन से दरगाह में हाज़िर हुआ ॥

पोस बदी १२ को राणा जगतसिंघ के नौकर कल्याण झाला ने दरगाह में हाज़िर हो कर कुछ चीज़ें जो राणा ने भेजी थी नज़र से गुज़रानीं ॥

पोस सुदी ६ को अजमेर की फ़ौजदारी राजा बिट्ठलदास के बेटे अनिरुद्ध से उतर कर शाह अली को मिली ॥

اسکو درگاہ میں روانہ کردیا جب وہ حاضر ہوا تو بادشاہ اُسکی نغمہ پردازی اور لطف آواز سے اسقدر خوش ہوئے کہ اوسکا درجہ تمام ہمسروں سے بڑھاکر بڑی بڑی نوازشیں اور عنایتیں اوسکے حال پر مبذول فرمائیں۔

آج ہندوستان کے گنیا گروں کا مدار بخشو نایک اور تان سین کی تصنیفات پر ہے

۱۷ رجب کو راجہ بٹھل داس ہنڈیر سے جو بطریق وطن اسکو عنایت ہوا تھا۔ حاضر آیا۔

۱۸ رجب کو راجہ گج سنگھ معہ اپنے بیٹے جسونت سنگھ کے وطن سے دربار میں پہنچا

۲۵ رجب کو کلیان جہالا کہ جو ملازم رانا جگت سنگھ تھا پیشگاہ والا میں حاضر ہوا رانا نے کچھ چیزیں بطور پیشکش کے اوسکے ہاتھ بھیجیں تھیں وہ اوسنے بادشاہ کی نذر کیں۔

۴ شعبان کو شاہ علی خلعت خدمت فوجداری اجمیر سے تغیر انرودہ ولد راجہ بٹھل داس گوڑ کے جو نیابتًا اوس کام کو کرتا تھا سرفراز

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अनिरुद्ध अपने बाप की नायबी में काम करता था ॥

पोस सुदी १० को राजा बिट्ठलदास को बादशाह ने खिलअत देके वतन जाने की रुखसत दी ॥

पोस सुदी १४ नाहर सोलंखी को हाथी इनायत हुआ ॥

माह सुदी ११ को बादशाह की साल ग्रह के तुलादान का दरबार था उस में राजा गज सिंघ को खिलअत इनायत हुआ ॥

फागुण बदी ११ को बादशाह ने राजा जगत सिंघ के नोकर कल्याण झाला को हाथी इनायत करके बिदा किया और राना के वास्ते भी हाथी और खिलअत उसके साथ भेजा

काबुल के सूबेदार सईद खां और राजा जगत सिंघ ने बंगश में हमला करके जलाले के बेटे करीमदाद को पकड़ा और बादशाह के हुक्म से मरवा डाला ॥

ہوا اور بافاضہ منصب و مرحمت اسپ سے معزز و مفتخر ہوکر اُسطرف کو رخصت ہوگیا۔

۸ شعبان کو راجہ بٹہلداس کو بادشاہ نے خلعت عنایت کرکے وطن جانے کی رخصت مرحمت فرمائی۔

۱۲ شعبان کو ناہر سولنکھی کو ہاتھی عنایت ہوا۔

۹۔ رمضان کو جشن وزن شمسی میں راجہ گجسنگہ کو بادشاہ نے خلعت مرحمت فرمایا۔

۲۴۔ رمضان کو کلیان جہالا ملازم راجہ جگت سنگہ نے اسپ اور فیل سے سرفراز ہوکر واپس جانے کی رخصت پائی بادشاہ نے کمال عاطفت سے رانا کے واسطے خلعت اور ہاتھی اوسکے ہاتھ بہیجا۔

کابل کے صوبہ دار سعید خان اور راجہ جگت سنگہ نے بنگش میں حملہ کرکے جلالہ کے بیٹے کریم داد کو پکڑا اور بادشاہ کے حکم سے مروا ڈالا۔

یہ جلالہ وہی تہا کہ جس نے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

यह जलाला वहीं था जिसने अकबर बादशाह के ज़माने में १ नया मत जारी करके बड़ा फिसाद किया था और इस मत के मान्ने वाले पठायों को अकबर नामे में तारी की (अंधेरी) लिखा है॥

फागण बदी १४ को बादशाह आगरे से शिकार के वास्ते सोरों और सहसवान की तरफ रवाने हुए ११ शेर तो सोरों में मारे और १८ सहसवान के परगने में मारे और असालतख़ां वग़ैरा ने परगने चंदवार के फ़सादियों पर हमला करके उनको सज़ा दी॥

फागण सुदी ६ को (सहसान में) रावरतन के बेटे माधो सिंघ और हरी सिंघ ने अपने वतन से आ कर हाथी नज़र किये॥

जमना के किनारे पर जब कि बादशाह पीछे आते थे राजा जयसिंघ ने अपने वतन से वापस आकर मुजरा किया॥

اکبر بادشاہ کے زمانہ مین ایک نیا مذہب جاری کرکے بڑا فساد برپا کیا تھا اور اس مت کے ماننے والے پٹھانونکو اکبرنامہ مین تاریکی (اندھیری) لکہا ہے۔

۲۷- رمضان کو بادشاہ آگرہ سے شکار کے واسطے سورون اور سہسوان کیطرف روانہ ہوئے گیارہ شیر تو سورون مین اور اٹھارہ سہسوان کے پرگنون مین مارے گئے اور اصالت خان وغیرہ نے فسادیان پرگنہ چندوار پر حملہ کرکے انکو سزا دی۔

۴- شوال کو راو رتن کے بیٹے مادہو سنگہ اور ہری سنگہ اپنے وطن سے (سہسوان) مین حاضر آئی اور دونون نے ایک ایک ہاتھی نذر کیا۔

۲۴- شوال کو جب بادشاہ وقت واپسی جمنا کے کنارہ پر آرہے تھے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किशनसिंघ राठोड़ के बेटे हरीसिंघ के मनसब में पांच सदी ज़ात का इज़ाफ़ा हुआ जिस्से उसका मनसब डेढ़ हज़ारी ज़ात और ८०० सवारों का होगया ॥

कंधार में क़बज़ा

चैत सुदी ८ को शाह ईरान के नौकर अलीमरदान ख़ां ने क़ंधार का क़िला ग़ज़नीन के हाकिम एवज़ख़ां को सौंप दिया जो संबत १६७९ में जहांगीर बादशाह के क़बज़े से निकल गया था तीसरे दिन बादशाह के नाम की आयघुआई फिरी और क़िलात ग़िलज़ई वग़ैरा में भी बादशाही अमल करा दिया बादशाह ने यह ख़बर सुनकर काबुल के हाकिम सईद ख़ां को मय फ़ौज और ख़ज़ाने के कंधार जाने का हुक्म लिखा और शाहज़ादे शुजाअ को २०००० सवारों से इस ग़रज़ से भेजा कि ई

راجہ جگت سنگھ نے جو اپنے وطن سے آگیا تھا مجرا کیا۔

ہری سنگھ ولد راجہ کشن سنگھ راٹھور کا منصب پانچصدی ذات کے اضافے سے ڈیڑھ ہزاری ذات اور آٹھ سو سوا روں کا ہوگیا

قندہار میں قبضہ

۳۱ - شوال کو ایران کے بادشاہ شاہ صفی کے ملازم علیمردان خان نے قندھار کا قلعہ اور ملک غزنین کی حاکم بادشاہی عیوض خان کی حوالہ کردیا جو ۱۰۳۱ھ میں جہانگیر بادشاہ کے قبضہ سے نکل گیا تھا۔

تیسرے دن بادشاہ کے نام کا خطبہ قندہار میں پڑھا گیا اور قلات غلزئی وغیرہ میں بھی عمل ہوگیا۔

بادشاہ نے یہ خبر سنکر کابل کے حاکم سعید خان کو معہ فوج و خزانہ و توپخانہ کے قندہار جانے کا حکم لکھا اور شاہزادہ شجاع کو معہ بیس ہزار سواروں کے شروع ماہ ذیقعدہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रान का बादशाह सेफ़ी जो कंधार प
र आवे तो उस को रोकें इस फ़ौज में
इतने राजपूत सरदार थे ॥
१ राजा जय सिंघ
२ राजा गज सिंघ का बेटा अमर सिंघ
३ राव रतन का बेटा माधो सिंघ
४ हरी सिंघ ॥
५ कृपाराम ॥
नंबर १ को ख़ासा ख़िलत ख़ा
सा घोड़ा सोने की ज़ीन का, नंबर
२ और ३ को ख़िलत्त घोड़े चांदी की
ज़ीन के और नक्कारे इनायत हुये
हरी सिंघ और कृपाराम को भी उ
नके रुतबे के माफ़िक़ नवाज़ि
श हुई ॥
इस मोहिम का इख़्तियार
मालवे के सूबेदार "खान दौरां ब
हादुर नुसरत जंग को दिया गया
और काबुल के सूबेदार सईद ख़ां
को अली मरदान ख़ां और बादशा
ही अमीरों की मदद का हुक्म हु

ہیں اس غرض سے روانہ کیا کہ اگر شاہ
صفی قندہار پر آوے تو اسکو روکے
اِس فوج میں راجپوت سردار حسب ذیل تھے
۱- راجہ جے سنگہ کچھواہہ
۲- امر سنگہ ولد راجہ گج سنگہ
۳- مادہو سنگہ ولد راو رتن ہاڈا
۴- ہری سنگہ
۵- کرپا رام
راجہ جے سنگہ کو خلعت خاصہ
اور گھوڑا طویلہ خاصہ سے معہ زین مطلا
کے اور مادہو سنگہ کو خلعت و گھوڑا معہ
زین نقرہ اور نقارہ کے عنایت ہوا۔
ہری سنگہ اور کرپا رام کو بھی اُونکے
رتبہ کے موافق نوازش ہوئی۔
خاندوران بہادر نصرت جنگ
صوبہ دار مالوہ طلب ہو کر اس لشکر کے
حل و عقد کا مختار ہوا اور سعید خان
صوبہ دار کابل کو واسطے مدد-
علی مردان خان و امرائے-
بادشاہی کے جو قلعہ قندہار
مین داخل ہوئے تھے حکم لکھا گیا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आजो कंधार के क़िले में दाख़िल होगये थे मुलतान का सूबेदार कुलीचख़ां कंधार का सूबेदार हुआ और पंजाब के सूबेदार वज़ीरख़ां को रसद पहुंचाने और काबुल में जाकर बंदोबस्त करने का हुक्म पहुंचा ॥

बैसाख बदी ४ को सईदख़ां ने काबुल से कंधार पहुंचकर बादशाह का ख़िलअत मय १ लाख रुपये इनाम के अली मरदान ख़ांको दिया ॥

राजा जगत सिंघ सईद ख़ां के साथ पिशौर से काबुल और काबुल से कंधार को गया ॥

बैसाख बदी १३ को सईदख़ां ने ८००० सवारों के साथ कंधार से निकल कर शाह सफ़ी के सिपेहसालार और मशहद के हाकिम सियावश पर जो मय फ़ौज ख़ुरासान के कंधार से कुछ दूर "किश क

اور قلیچ خان صوبہ دار ملتان قندہار کا صوبہ دار مقرر کیا گیا وزیر خان صوبہ دار پنجاب کو رسد پہنچانے اور کابل مین جاکر بندوبست کرنے کا حکم پہنچا۔

۲۷- ذلقعدہ کو سعید خان نے کابل سے قندھار پہنچکر بادشاہ کا خلعت معہ ایک لاکھ روپیہ انعام کے علیمردان خان کو دیا۔

راجہ جگت سنگ سعید خان کے ساتھ پشاور سے کابل کو اور کابل سے قندھار کو گیا۔

۲۶- ذلقعدہ کو سعید خان نے آٹھ ہزار سوارون کے ساتھ قندہار سے نکل کر شاہ صفی کے سپہ سالار اور مشہد کے حاکم سیاوش کے اوپر جو کشک نخود مین قندہار سے کچھ دور معہ فوج خراسان کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नरबूदके मैदान में पड़ा था हमला किया राय काशीदास दीवान काबुल कौल (बीचकी अणी) में था और राजपूत यहां भी हिरावल थे जैसा कि बादशाह नामे में लिखा है कि हरोल को बहादुर राजपूतों के मजबूत क़दमों से ताक़त दी गई जो घोर संग्रामों में कि जहां मरदों के मुंह का रंग उड़ जाता है लड़ाई का रंग जमा देते हैं ॥

मोहकम सिंघ व गोपाल सिंघ, उग्रसेन, राम सिंघ (दोनों भाई) गज सिंघ बिहारी दास का बेटा जगराम हिम्मत सिंघ मेदनी मल भदोरया इंद्रभान और दूसरे राजपूत जो सूबेदार काबुल के मददगार थे ४०० बरकंदाज़ों से इस फ़ौज में मुक़र्रर किये गये और सरदारी इन की राजा जगत सिंघ को दी गई

सियावश के पास भी ५-६ हज़ार सवार नेशापूर वग़ैरा खुरा

پڑا تھا حملہ کیا رائے کاشی داس دیوان کابل قول میں تھا اور راجپوت یہان بھی ہراول تھے - جیسا کہ بادشاہ نامہ مین لکھا ہے "وقشون ہراول را بہ پاے ثبات راجپوتان برگزین تہور آئین کہ جانبازی را بازی و سر اندازی را کارسازی دانستہ در معرکہ کہ رنگ از رخ مردان بریزد رنگ بر روے روزگار جنگ باز آرند نیرو دادہ محکم سنگہ و گوپالسنگہ و اوگرسین و رام سنگہ برادر او و گج سنگہ و جگرام ولد بہاری داس و ہمت سنگہ و میدنی مل بہدوریہ و اندر بہان و دیگر راجپوتان کمکی صوبہ کابل را با چارصد برق انداز درین فوج مقرر ساختہ راجہ جگت سنگہ را سر کردہ این گروہ گردانید -

سیاوش کے پاس بھی پانچ چھہ ہزار سوار معہ حکام نیشاپور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सान के हाकिमों समेत थे क़ंधार से १
कोस पर दोनों लशकरों की मुठभेड़
हुई क़ज़ल बाशों" ईरान यों का हिरा
वल बादशाही हिरावल पर आया म
गर हार कर पीछा गया यहां हम फिर
बादशाह नामें के लफ़ज़ लिखते हैं
कि बादशाही हिरावल राजा जगत
सिंघ और दूसरे ग़ैरतदार व लड़ाका
राजपूतों की बहादुरी से सिकंदर
की दीवार के माफ़िक़ मज़बूत था
जिस्में दुशमन कोई छिद्र न कर स
का और पछताकर चला गया ॥

आख़िर कज़ल बाश भाग गये
और सईद ख़ां ने अरगंदाब नदी से उ
तर कर उनका डेरा डंडा लूट लिया ॥

१०५ बरस पहिले इसी जगह
बाबर बादशाह के बेटे मिरज़ा काम
रां ने भी शाह तुहमास्प के बेटे साम
मिरज़ा को लड़ कर भगाया था ॥

बादशाह ने फ़तेह की ख़बर
सुन कर जब सईद ख़ां को ख़िलत

وغیرہ علاقہ جات خراسان کے تھے
قندہار سے ایک کوس دونوں لشکر
مقابل ہوئے جب قزلباشوں کا
ہراول ہندوستان کے ہراول پر
آیا تو ناکام گیا کیونکہ "چون ہراول
بدلیری راجہ جگت سنگہ و دیگر راجپوتان
ناموس جو ئے نبرد خوئے لبان
سد سکندر کہ بہ تند باد حوادث
لرزش نہ پذیرد پا بر جا بود یاجوج
ہراول غنیم نا ستقیم رخنہ دران
نیفگندہ بہ ندامت برگردید۔

آخر قزلباش بھاگ گئے
اور سعید خان نے دریا ارغنداب
سے عبور کر کے اونکا خیمہ اور
اسباب لوٹ لیا۔

۱۰۵ برس پہلے اسی میدان
میں بابر بادشاہ کے بیٹے مرزا کامران
نے بھی شاہ طہماسپ کے بیٹے سام
مرزا کو لڑ کر بھگایا تھا۔

جب یہ خبر بادشاہ کو پہونچی تو
راجہ جگت سنگہ کو بھی سعید خان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भेजा तो राजा जगत सिंघ के वास्ते भी ख़िलअत जड़ाऊ जमधर हाथी और घोड़ा इनायत फ़रमाया ॥

गोपाल सिंघ को ख़िलअत और मनसब हज़ारी ज़ात व ७०० सवारों का मिला ॥

राये काशी दास को खिलअत के सिवाय हज़ारी ज़ात और ढाई सो २५० सवारों का मनसब इनायत हुआ

हिरदे राम के बेटे जगराम का भी मनसब बढ़ गया ॥

बादशाह का वकील सफ़दर ख़ां उस वक़्त इरान में था शाह सफ़ी ने उसको हिन्दुस्तान जाने की रुख़सत देकर कहा कि मैं सरवान (१) और बग़दाद से तो दिल उठा लूंगा लेकिन कंधार से दिल नहीं उठाऊंगा ॥

दरबार का हाल

चैत सुदी ६ को नोरोज़ के दरबार में महेस राठोड़ का मनसब असल और इज़ाफे से हज़ारी ज़ा

کے خلعت کے ساتھ خلعت جڑاؤ جمدھر ہاتھی و گھوڑا عنایت ہوا۔

گوپال سنگھ کو خلعت اور منصب ہزاری ذات و سات سو سواروں کا ملا۔

راے کاشی داس دیوان کابل کو خلعت اور منصب ہزاری ذات اور ڈھائی سو سواروں کا مرحمت ہوا۔

ہردے رام کے بیٹے جگرام کے منصب مین بھی اضافہ ہوا

بادشاہ کا وکیل صفدر خان اسوقت ایران مین تھا اُس کو شاہ صفی نے ہندوستان جانیکی رخصت دیکر کہا کہ مین ایروان اور بغداد سے دل اُٹھا لونگا۔ مگر قندھار سے کبھی نہین اُٹھاؤنگا۔

وقایع دربار

۴۔ ذیقعدہ کو جشن نوروز مین مہیش داس راٹھوڑ کا منصب اصل و اضافہ سے ہزاری ذات

(१) सरवान और बग़दाद ईरानी सूबे रूम की सरहद में मिले हुए थे जिनके वा...

(۱) ایروان اور بغداد دو ایرانی صوبہ سلطنت روم کی سرحد سے ملے ہوئے تھے جنکی بابت ایرانیوں اور رومیوں میں جنگ ہوا کرتی تھی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त और ६०० सवारों का होगया ॥

दयानत राये दफ़्तरदार ख़ालिसे को खिल्लत और मनसब हज़ारी ज़ात और १५० सवारों का असल और इज़ाफ़े से इनायत होकर दफ़्तर तन की ख़िदमत भी सौंपी गई ॥

बैसाख सुदी ८ को गोकुलदास सीसोदिया हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों के मनसब से सरफ़राज़ हुआ ॥

जेठ बदी ४ को कुलीच ख़ां कंधार में पहुंचा और अली मरदान ख़ां काबुल की तरफ़ रवाना हुआ।

कोच हाजू की फ़तेह

बादशाह नामे में लिखा है कि बंगाले के उत्तर में २ मुल्क हैं १ तो कोच हाजू जो ब्रह्मपुत्र दरया के ऊपर है और दूसरा कोच बिहार यह दरया से बहुत दूर है पहिला तो जहांगीर नगर (उस वक्त बंगाले

اور چھ سو سواروں کا ہوگیا

دیانت رائے دفتردار خالصہ کو بادشاہ نے خلعت اور منصب ہزاری ذات و ڈیڑھ سو سواروں کا اصل اور اضافہ سے عنایت کرکے دفتر تن کی خدمت بھی اوسکے متعلق کردی۔

٨ ذی الحجہ کو گوکل داس سیسودیہ کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور پانسو سواروں کا ہوگیا۔

١٨ ذی الحجہ کو قلیچ خان قندھار پہونچا اور علیمردان خان کابل کی طرف روانہ ہوا۔

کوچ ہاجو کی فتح

بادشاہنامہ مین لکھا ہے کہ بنگالہ کے اوتر مین دو ملک ہین۔ ایک تو کوچ ہاجو جو برہمپتر دریا کے اوپر ہے اور دوسرا کوچ بہار۔ یہ دریا سے بہت دور ہے پہلا۔ تو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कासदर मुक़ाम था) से १ महीने के और दूसरा २० दिन के रस्ते पर है जहां गीर बादशाह के वक्त में कोच हाजू पर प्रीक्षत का और कोच बिहार पर लिछमी नारायण का क़बज़ा था उनके ८ वें जलूसी बरस में जब कि इसलाम ख़ां बंगाले का सूबेदार था परगने सोसंग ज़मींदार रुघनाथ ने उसके पास आकर यह फ़रयाद की के परीक्षत ने ज़ुलम से मेरे बाल बच्चों को क़ैद कर रक्खा है।

•और सूबेदार ने उसकी फ़रयाद लछमी नारायण के लिखने से ६ हज़ार सवार और १० दस बारां हज़ार पैदल अपने दामाद मुकर्रम ख़ां के साथ भेजे क़िले धूपड़ी पर परीक्षत के ५०० सवार और १००० पैदल महीने भर तक लडे। जब वह टूटा तो परीक्षत ने अपनी राजधानी गांव खेले से वकील भेजकर १०० हाथी १०० टांगन २० मन अगर और रुघनाथ के बालबच्चे भेजने

جہانگیر نگر (اوسوقت بنگالہ کا صدر مقام تھا) سے ایک مہینہ کے اور دوسرا بیس دنکی راہ پر ہے جہانگیر بادشاہ کے عہد مین کوچ ہاجو پر پرچھت کا اور کوچ بہار پر لچھمی نراین کا قبضہ تھا اسکے آٹھوین جلوسی برس مین جبکہ اسلام خان بنگالہ کا صوبہ دار تھا پرگنہ سوسنگ کے زمیندار رگھناتھ نے اوسکے پاس آکر یہ فریاد کی کہ پرچھت نے جبر اور تعدی سے میری بال اور بچون کو قید کر رکھا ہے صوبہ دار نے اوسکی نالش اور لچھمی نراین کی تحریر سے چھ ہزار سوار اور دس بارہ ہزار پیدل اپنے داماد مکرم خان کے ساتھ بھیجے قلعہ دھوبڑی پر پرچھت کے پانسو سوار اور ہزار پیدل مہینے بھر تک لڑے جب وہ قلعہ فتح ہوگیا تو پرچھت نے اپنی ریاستگاہ قصبہ کھیلا سے وکیل بھیجکر ایکسو ہاتھی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का इक़रार किया और बल्कि भेज भी दिये लेकिन सूबेदार ने मंज़ूर न करके प्रीछत के पकड़ने का हुक्म लिखा प्रीछत यह मालूम करके ४०० सवार १०००० पैदलों से घूपड़ी के ऊपर चढ़ आया और वहां से शिकस्त खा कर फिर गजाधर नदी के मुहाने मेंदरिया की लड़ाई लड़ा वह भी हार कर खेले को वापिस गया तो सुना कि लछमी नारायण दूसरी तरफ़ से बादशाही लशकर को लिये हुये आरहा है इससे प्रीछत को अपनी राज धानी छोड़ कर बुध नगर में जाना पड़ा जो बनास नदी पर बस्ता है बादशाही फ़ौज ने खेले में अमल कर लिया तब प्रीछत ने फिर अपने वकील भेजे और शेख़ कमाल जाकर उसको मय उसके हाथियों और लशकर के ले आया मगर उसका भाई बलदेव भाग कर आसाम के राज के पास पहुंचा जिससे उसकी रिशतेदारी थी

ایک سوٹانگن بیس من اگر اور رگھنا تھ
کے بال بچے بھیجنے کا اقرار کیا اور بلکہ
بھیج بھی دئے لیکن صوبہ دار نے اسپر
التفات نہ کرکے پریچہت کے پکڑنے کا حکم لکھا
پریچہت یہ سنکر چار سو سوار اور دسہزار
پیدلوں سے دہوبڑی کے اوپر چڑہ
آیا اور وہان شکست کہا کر دریائے
گجادہر کے دہانہ مین دریا کی لڑائی لڑا
اُسمین بھی ہار کر کہیلہ کو واپس گیا
تو وہان سنا کہ لچھمی نراین دوسری
طرف سے بادشاہی لشکر لئے ہوئے
آرہاہے اس سے پریچہت کو اپنی
راجدہانی چہوڑ کر بُدہ نگر مین جانا
پڑا جو بناس ندی کے کنارہ پر
واقع تہا ادہر بادشاہی فوج نے
کہیلہ مین عمل کرلیا پریچہت نے پھر
اپنے وکیل بھیجے اور شیخ کمال جاکر
اُوسکو معہ اوسکے ہاتھیون اور
لشکر کے لے آیا مگر اُوسکا بھائی
بلدیو بھاگ کر راجہ آسام کے
پاس پہونچا جس سے اُوسکی رشتہ داری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

मुकर्रम ख़ां ने सूबेदार के लिखने से अपने भाई अबदुल सलाम को खेले में छोड़ा और आप परीछत को लेकर जहांगीर नगर में पहुंचा उसी दिन इसलाम ख़ां मर गया जहांगीर बादशाह ने प्रींछत को तो अपने पास बुलाया और बंगाले की सूबे दारी पर इसलाम ख़ां के भाई शेख़ कासम को मुक़र्रर किया उस ने मुकर्रम ख़ां को कोच हाजू की हिफ़ाज़त पर भेजा वह वहां पहुंच कर १ साल तक रहा मगर फिर शेख़ की बदसलूकी से नाराज़ हो कर परभारा घोड़ा घाट के रस्ते से बादशाह के पास चला गया और शेख़ ने सैयद हकीम को १०।१२ हज़ार सवार और पैदल से कोच हाजू के बंदोबस्त पर भेजा और आसाम की फ़तह करने का हुक्म दिया वह कोच हाजू पहुंच कर आसाम को रवाने हुआ अभी ४।५ मं

مکرم خان نے صوبہ دار کے لکھنے سے اپنے بھائی عبد السلام کو کھیلہ مین چھوڑا اور آپ پریچھت کو لے کر جہانگیر نگر مین پہونچا اوسیدن اسلام خان مر گیا جہانگیر بادشاہ نے پریچھت کو تو اپنے پاس بلایا اور بنگالہ کی صوبہ داری پر اسلام خان کے بھائی شیخ قاسم کو مقرر کیا اوس نے مکرم خان کو کوچ ہاجو کی حفاظت پر بھیجا وہ وہان پہونچکر ایک سال تک رہا مگر شیخ کی بدسلوکی سے ناراض ہوکر بالا بالا گھوڑا گھاٹ کے راستہ سے بادشاہ کے پاس چلا گیا۔ شیخ نے سید حکیم کو جو بادشاہی معتمد بندون مین سے تھا معہ اپنے ملازم سید ابابکر کے دس بارہ ہزار سوار و پیدل سے کوچ ہاجو کے بندوبست پر بھیجا اور آسام کے فتح کرنے کا بھی حکم دیا وہ کوچ ہاجو پہونچکر آسام کو روانہ ہوا۔ ابھی چار

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज़ल ही गयाथा कि आसामियों ने हमला करके बादशाही लशकर को काट डाला इस से शेख़ कासम की सूबेदारी उतर गई ॥

आशाम पर चढ़ाई

बादशाह नामें में लिखा है कि आसामी गैर आदमियों को अपने मुल्क में नहीं आनेदेते हैं- जिससे पूरा हाल तो वहां का मालूम नहीं हुआ लेकिन जो आसाम के आदमी कोच हाजू में आते जाते हैं और जो वहां के क़ैदी दरबार में आये उनसे मालूम हुआ कि आसाम १ बड़ी विलायत है जहां हाथी और अगर बहुत होता है नदीयों की रेत धोनेसे कम क़ीमत सोना भी निकलता है एक सरहद उसकी ख़ता से मिली हुई है दूसरी कश्मीर और तिब्बत से- १ तरफ़ उसके, गोड़ायच, तुरहत, मोरंग, कोच बिहार और कोच हाजू है यहां का ज़िमीं

پانچ منزل ہی گیا تھا کہ آسامیون نے حملہ کرکے بادشاہی لشکر کو کاٹ ڈالا اس سے شیخ قاسم کی صوبہ داری اوتر گئی۔

آسام پر چڑہائی

بادشاہ نامہ مین لکھا ہے کہ آسامی غیر آدمیون کو اپنے ملک مین نہین آنے دیتے ہین جس سے پورا حال تو وہان کا معلوم نہوا۔ لیکن جو آدمی آسام کے کوچ ہاجو مین آتے جاتے ہین اور جو وہان کے قیدی دربار مین آئے اون سے معلوم ہوا کہ آسام ایک بڑی ولایت ہے جہان ہاتھی اور عود بہت ہوتا ہے ندیون کے ریت دہونے سے سونا بھی نکلتا ہے ایک سرحد اوسکی ختا سے دوسری کشمیر اور تبت سے ملی ہے تیسری طرف بہڑائچ۔ ترہت مورنگ کوچ بہار اور کوچ ہاجو ہین یہان کا زمیندار سرگ دیو ہے جس کے پاس

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दार स्वर्गदेव है जिस के पास १
१००० हाथी और१०००० से ज़ियादा
पैदल हैं आसामी सिर मुंडाते हैं।
और डाढ़ी मूंछ के बाल नक चोंटी
से लेते हैं सरदार अपनेही मुल्क
के हाथी और टांगन पर सवारहोते
हैं लड़ाई के जहाज़ हरवक्त तैयार
रखते हैं लड़ाई में हर जगह बहुत
जलदी मिट्टी का क़िला बना करऊ
पर लकड़ियां पाट देते हैं जिन में
से तोप बंदूक चलाया करते हैं औ
र किले के चौतरफ़ खाई खोदक
र दुशमन का रस्ता बंद करदेते हैं॥

जब बलदेव आसाम में पहुं
चा तो उसने वहां के राजा स्वर्गदे
व से कहा कि जो मेरे साथ फ़ौज
भेजो तो कोच हाजू का मुल्क मुग़
लों से फ़तह कर दूंगा मगर हकूम
त वहां की मुझ को देनी होगी राजा
ने मंज़ूर करके कुछ फ़ौज तो उसी
वक्त उसके साथ करदी बाक़ी को

ہزار ہاتھی اور دس ہزار سے زیادہ
پیدل ہین آسامی سر منڈاتے ہین
اور ڈاڑہی مونچھ کے بال نکچوٹی سے
نوچ ڈالتے ہین سردار اپنے ہی
ملک کے ہاتھی اور ٹانگن پر سوار ہوتے
ہین لڑائی کے جہاز ہر وقت تیار رکھتے
ہین لڑائی مین ہر جگہہ بہت جلد مٹی
کا قلعہ بنا کر اوپر لکڑیان پاٹ دیتے
ہین جن مین سے توپ بندوق
چلایا کرتے ہین اور قلعہ کے چارون
طرف کھائی کھود کر دشمنون کا رستہ
بند کر دیتے ہین

جب بلدیو آسام مین پہونچا
تو اوسنے وہان کے راجہ سرگدیو
سے کہا کہ اگر میرے ساتھ فوج
بھیجو تو کوچ ہاجو کا ملک مغلون
سے فتح کر دونگا ۔ مگر حکومت
وہان کی مجھکو دینا ہوگی راجہ
نے منظور کرکے کچھ فوج تو اوسی
وقت اوسکے ساتھ روانہ کر دی
باقی کو حکم دیا کہ تیار رہے اور بلدیو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

हुक्म दिया कि तैयार रहे और बलदेव को ज़रूरत पड़े तो जाकर मदद करे ॥

बलदेव ने बादशाही सूबेदारों की बदला बदली के मौक़े पर क़ाबू पाकर पहिले तो दुरंग में क़बज़ा कर लिया जो कोचहाजू से १० कोस ब्रह्मपुत्र के किनारे पर पहाड़ के नीचे है और फिर दूसरे इलाक़ों में दस्तंदाज़ी करके दस बारा हज़ार पैदल कोची और आसामी अपने पास जमां कर लिये और आसाम का थाना जहां पहिले प्रीक्त के ज़माने में रहा करता था वहां से बहुत आगे को बढ़ा कर बैठा दिया ख़ान ज़मां की ग़फ़लत से जो अपने बाप महाबत ख़ां की नायबी में बंगाले का हाकिम था उसका हौसिल्ला। और भी बढ़ गया लोकी और भावमैंती के परगनों में भी उस का अमल होगया यह देखकर उस तरफ़ के

کو ضرورت پڑے تو جاکر مدد کرے -

بلدیو نے بادشاہی صوبہ داروں کے تغیر و تبدل کے موقع پر قابو پاکر پہلے تو درنگ میں قبضہ کر لیا جو کوچ ہاجو سے دس کوس برہمپتر کے کنارے پر پہاڑ کے نیچے ہے اور پھر دوسرے علاقوں میں دست اندازی کرکے دس بارہ ہزار پیدل کوچی اور بنگالی اپنے پاس جمع کر لئے اور آسام کا تھانہ برخلاف زمانہ پیشتر کے بہت آگے کو بڑھا دیا خانزمان خان کی غفلت سے جو اپنے باپ مہابت کی نیابت میں بنگالہ کا حاکم تھا اوسکو اور بھی تقویت پہونچی لوکی اور بھاومنیتی کے پرگنوں میں بھی اوسکا عمل دخل ہو گیا یہ دیکھکر دوسرے زمیندار بھی اُس طرف کی ادائے مالگزاری میں پہلو تہی کرنے لگے -

दूसरे ज़मींदार भी माल गुज़ारी में सुस्ती करने लगे ॥

बंगाले के अगले हाकिमों ने दस बारह हज़ार पायक (पैदल) को इस वास्ते ज़ागीर देरक्खी थी कि जब खेदा यानी हाथियों का शिकार होवे येह लोग आकर काम करें नहीं तो अपनी जागीर में रहें क़ासमख़ांनेअपनी सूबेदारीमें खेदे का काम अच्छा न करने से इन पायकों के कई बड़े २ सरदारों को जहांगीर नगर में बुला कर क़ैद किया और फिर ३००००) जुरमाने के लेकर छोड़ा इससे संतोष लशकर और जय राम लशकर जो नामी सरदार पायकों के थे बहुत से पायकों को लेकर स्वर्गदेव के पास जारहे फिर जब बंगाले का सूबेदार इसलामख़ां हुआ तो पांडू के थानेदार शत्रू जीत ने बलदेव से कहला भेजा कि हाकिम नया आ

بنگالے کے حاکمون نے
...ں بارہ ہزار پایک (پیدل)
...اس کام کے واسطے جاگیر دے
...ی تھی کہ جب کھیدہ یعنے
...ہیون کی شکار کی جاوے
...وہ لوگ آکر کام کرین ورنہ
...ی جاگیر مین رہین قاسم خان
...نے اپنی صوبہ داری مین کھیدہ
...کام اچھی طرح انجام نہ دینے
...ان پایکون کے کئی عمدہ
...داروں کو جہانگیر نگر مین بلا کر
...کیا اور پھر ۳۰ ہزار روپیہ
...جرمانہ لے کر چھوڑا اس سے
...توش لشکر اور جے رام لشکر
...ی سردار پایکون کے تھے
...ت سے پایکون کو لے کر سُرگ
...کے پاس بھاگ گئے اور اُسنے
...سا رے کر اپنے پاس رکھ لیا
اسی اثنا مین بنگالہ کی صوبہ
...ی اسلام خان کو سپرد
...ی اور پانڈو کے تہانہ دار شترو جیت

याहे अगर तुम कोशिश करो तो मतलब हासिल हो सकता है बलदेव ने डुरंग से रवाने होकर उन लोगों पर हमला किया कि जिनको कोच हाजू के हाकिम अबदुलसलाम ने खेदे के वास्ते भेजा था इसपर शेख ने इसलाम खां को लिखकर मदद मांगी उसने २००० सवार और पैदल मय जंगी किश्तियों और सामान जंग के रवाने किये और कुछ आदमी घोड़ा घाट में नावों का बंदोबस्त करने को भेजे जो बरसात और नदियों के चढ़जानेसे अपने घोड़ों और सामानों को घोड़ा घाट में छोड़ कर नावों में बैठ गये और कोच हाजू की तरफ़ रवाने हुए मुहम्मद सालह कंबो सब से पहिले वहां पहुंचा और उसी वक्त शत्रुजीत ने आकर शेख अबदुल सलाम से कहा कि दुशमन आज रात को मेरे थानेपर

نے بلدیو سے کہلا بھیجا کہ نیا حاکم آیا ہے اگر کچھ کوشش کرو تو مطلب حاصل ہو سکتا ہے بلدیو نے ورنگ سے روانہ ہو کر اُن لوگون پر حملہ کیا کہ جنکو کوچ ہاجو کے حاکم شیخ عبدالسلام نے کہیدہ کے واسطے بھیجا تھا شیخ نے اسلام خان کو لکھکر مدد مانگی اُس نے دو ہزار سوار اور پیدل معہ جنگی کشتیون اور سامان جنگ کے روانہ کئے اور کچھ آدمی گھوڑا گھاٹ میں کشتیون کے لانے کو بھیجے جو طوفان بارش اور ندیون کی طغیانی سے اپنے گھوڑے اور سامانون کو گھوڑا گھاٹ مین چھوڑ کر کشتیون مین کوچ ہاجو کی طرف روانہ ہوئے محمد صالح کنبو سب سے پہلے وہان پہونچا اور اوسی وقت ستروجیت نے آکر شیخ عبدالسلام سے کہا کہ دشمن آج رات کو میرے تھانہ پر حملہ کرینگے شیخ نے محمد صالح کو اوسکے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमला करेंगे शेख़ ने मुहम्मदसालेह को उस्के साथ करदिया जब रात पड़ गई तो शत्रू जीत उस्को रस्ते में ठहरा कर यह कहगया कि मैं थाने की ख़बर लेकर आता हूं मगर दिन निकलने तक न आया जब मुहम्मद सालेह आगे बढ़ा तो देखा कि शत्रू जीत अपनानिवाड़ा (नावों का बेड़ा) लिये चला आता है मोहम्मद सालह ने देर का सबब पूंछा तो कहा कि दुशमनों ने मेरा थाना लेलिया मैं निवाड़े को बचा लाया हूं ॥

दूसरे दिन शेख ज़ैनुल आबदीन और बादशाही फ़ौज के बंगाले से हाजू में पहुचने की ख़बर आई तो मोहम्मद सालह भी वहां गया दोनों मिल कर बलदेव़ से लड़ने को गये वह दुरंग से २ कोस आगे आकर लड़ा जहां २ क़िले भी उसने बनालिये थे मगर बादशाही लश

...ساتھ کر دیا جب رات ہو گئی - تو
...تر جیت اوسکو راستہ مین ٹھہرا کر
...کہہ گیا کہ مین تھانہ کی خبر لے کر
...آتا ہون مگر صبح تک نہین آیا جب
...محمد صالح آگے بڑھا تو دیکھا کہ شتر جیت
...اپنا نواڑہ لیئے چلا آتا ہے محمد صالح
...نے دیر کا سبب پوچھا تو کہا
...کہ دشمنون نے میرا تھانہ لے
...لیا مین نواڑہ یعنے جہازون
...کے بیڑہ کو بچا لایا ہون -

دوسرے دن شیخ
...زین العابدین کے بنگالے سے
...ہاجو پہنچنے کی خبر آئی تو یہ بھی وہان
...چلے آئے تب زین العابدین اور
...محمد صالح بادشاہی فوج لے کر
...بلدیو سے لڑنے کو گئے وہ درنگ
...سے دو کوس آگے آکر لڑا جہان
...دو قلعے بھی اس نے بنا لیئے
...تھے مگر بادشاہی لشکر نے غالب
...ہو کر وہ دونون قلعے معہ پانچ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर ने उसको हटा कर बेड़ोंकि
ले ५ तोपो समेत उससे छीनलिये
दूसरी लड़ाई आगे चलकर श्रीघाट
में हुई वहां आसामी फ़ौज का भू
रवन यानी सिपह सालार मारा गया
और बहुत से बादशाही आदमी का
म आये दूसरे दिन फिर लड़ाई हु
ई कई सरदार आसाम के मारे गये
बाक़ी रहे सो अपना निवाड़ा लेक
र भाग गये मगर आसाम से फिर
दूसरी मदद आने और ४०००० दु
शमनों के इकट्ठे होजाने की ख़बर
मशहूर हुई जिस से इसलामखां
ने तमाम सूबे की फ़ौज बुलाकर
खुद मैदान जंग में जाना चाहा म
गर फिर सूबे को खाली छोड़ना
मुनासिब न देख कर अपने भाई
ज़ैनउद्दीन अली और सिलहट के
फ़ौजदार मोहम्मद ज़मान वग़ैरे
को बहुत सा लश्कर दे कर कोच
हाजू की तरफ़ रवाना किया और

توپون کے اُس سے چھین لئے
دوسری لڑائی آگے چل کر
سری گھاٹ مین ہوئی وہان
آسامی فوج کا بھوکھن یعنے
سپہ سالار مارا گیا اور بہت
سے آدمی بادشاہی فوج کے
بھی کام آئے دوسرے دن
پھر لڑائی ہوئی اور کئی سردار
آسام کے مارے گئے اور باقیماندہ
اپنے نواڑہ کو لے کر فرار ہوئے
مگر بعدہٗ آسام سے پھر کمک آنے
اور چالیس ہزار دشمنون کے جمع
ہوجانے کی خبر مشہور ہوئی جس سے
خود اسلام خان نے تمام صوبہ
کی فوج کو جمع کرکے میدان
جنگ کو روانہ ہونا چاہا مگر پھر صوبہ
کو خالی چھوڑنا مصلحت وقت سے
دور دیکھ کر اپنے بھائی زین الدین
اور سلہٹ کے فوجدار محمد زمان طہرانی
وغیرہ کو معہ بہت سے فوج کے کوچ
ہاجو کی طرف روانہ کیا اور بہت

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

उसके वास्ते बहुत सा नाज और ।
ख़ज़ाना नावों में लदवा कर भेजा क्यों
कि उस तरफ़ के पायक और ज़ि
मींदार आसामियों से मिल गये थे
और रसद नहीं पहुंचाते थे॥

अब आसामियों ने ५०० ना
वों में आकर जल और थल (ख़ुशकी)
की राह से बादशाही निवाड़े के ऊप
र हमला किया शत्रु जीत तो अप
ना निवाड़ा लेकर उससे जा मिला
मोहम्मद सालह कम्बो मारा गया ।
और उसका साथी मजलिस बायज़ीद
पकड़ा गया बलदेव श्री घाट और पां
डू की तरफ़ से कोच हाजू के ऊपर
गया रस्ते में अपने क़ायदे के माफ़ि
क मंज़िल २ के ऊपर क़िले बनाता
आता था कोच हाजू को उसने घेर
कर ऐसा तंग किया कि अंदर र
सद बिलकुल न पहुंच सकी ज़ि
रा से अब दल सलाम मोहीउद्दीन
और ज़ैनुल आबदीन माफ़ी मांग

سا غلہ اور خزانہ بھی کشتیون مین
لدوا کر بھیجا کیونکہ اوسطرف کے
پایک اور زمیندار دشمنون سے
ملکر رسد نہین پہونچاتے
تھے۔

دشمنون نے پانسو کشتیون
مین آکر دریا اور خشکی کی راہ
سے بادشاہی نواڑہ کے اوپر
حملہ کیا شتروجیت تو اپنا نواڑہ
لے کر اون سے جا ملا محمد صالح
کنبو مارا گیا اور اوسکا رفیق "مجلس
بایزید" پکڑا گیا پھر بلدیو سری
گھاٹ اور پانڈو کی طرف سے
کوچ ہاجو کے اوپر روانہ ہوا
راستہ مین اپنے قاعدہ کے
بموجب ہر منزل پر قلعہ بناتا
ہوا آتا تھا کوچ ہاجو کا اوس
نے ایسا سخت محاصرہ کیا
کہ رسد اندر نہین پہونچ سکتی
تھی آخر عبد السلام و محی الدین
اور سید زین العابدین بچن لیکر

कर उस्के पास हाज़िर होगये और उसने उन्हें आसाम को चलता किया रस्ते में ज़ैनुल आबदीन लड़ा और मारा गया ॥

उधर ज़ैनुद्दीन अली और मोहम्मद ज़मान वग़ैरा मनसब दार जो बंगाले से चले थे प्रीछत के बेटे चंद्रनारायण के ऊपर गये जो परगने सवलमारी ज़िले दक्खन कोल में रहता था और यह ज़िला ब्रह्म पुत्र नदी के दहने तट पर फैला हुआ था और उस्के अकसर परगने शत्रू जीत को दिये हुये थे और उसने अपने भतीजे गोपी नाथ को परगने करी मारी की थाने दारी पर छोड़ रक्खा था जहां १ मज़बूत क़िला था मगर वहां की प्रजा ने उस्के ज़ुल्म से उकता कर चंद्र नारायण को बुलाया जिसके आते ही गोपी नाथ थाना छोड़ कर भागा और चंद्र नारायण के पास ६।७ हज़ार पैदल कोच और आसाम के इकट्ठे होगये बादशाही आदमी पोस सुदी

اوسکے پاس حاضر ہوگئے اُس نے اُنھیں آسام کو روانہ کیا راستہ مین سید زین العابدین جنگ کرکے کام آگیا۔

زین الدین علی و محمد زمان طہرانی وغیرہ منصب دار جو بنگالہ سے روانہ ہوئے تھے پریچھت کے بیٹے چندرنراین کے اوپر گئے جو پرگنہ سول باری ضلع دکھن کول مین رہتا تھا اور یہ ضلع برہمپتر دریا کے کنارہ پر واقع ہے اور اُسکے اکثر پرگنہ شترو جیت کی جاگیر مین دئے گئے تھے اور اُسنے اپنے بھتیجے گوپی ناتھ کو پرگنہ کری باری کی تھانہ داری پر رکھ چھوڑا تھا جہان ایک مضبوط قلعہ بھی ہے مگر وہان کی رعیت نے گوپی ناتھ کی سخت گیری سے تنگ آکر چندرنراین کو بلایا جس سے گوپی ناتھ تھانہ چھوڑ بھاگا اور چندرنراین کے پاس چھ سات

सं॰ १६९३

को उत्तर कोल की तरफ़ से करीमारी के सामने पहुंचे चंद्र नारायण सोल. मारी की तरफ़ चला गया बादशाही अमीरों ने परगने मरदंगी में पहुंचकर वहां के ज़मींदार प्रीछत को अपने पास बुलाया जो चंद्र नारायण का सुसरा था वह आकर लशकर में हाज़िर होगया ॥

इस अरसे में शत्रू जीत भी पकड़ा हुआ ॥ जहांगीर नगर में आया यह बसीने के राजा मुकंदर का बेटा था इस्का इलाक़ा जहांगीर नगर से ३ मंजिल पर था जब शेख़ अलावुद्दीन कोच हाजू फ़तह करने को फ़ौज भेजी थी तो शत्रू जीत को भी उस के साथ तईनात किया था उसने उस मोहिम में अच्छा काम दिया जिस से पांडू और कोह सती की थाने दारी उस को मिली उस्का बेटा जहांगीर नगर में रहता था जब इसलाम खां सूबेदार हो कर बंगाले में आया तो शत्रू जीत

ہزار پیادے کوچ اور آسام کے جمع ہوگئے بادشاہی آدمی ۱۰ شعبان سنہ ۱۰۴۶ کو اُتر کول کیطرف سے کری ماری کے سامنے پہونچکر چندر نراین سول ماری کی طرف چلا گیا بادشاہی اُمرا نے پرگنہ مردنگی مین پہونچکر وہان کے زمیندار پریچھت کو اپنے پاس بلایا جو چندر نراین کا سسر تھا وہ آکر لشکر مین حاضر ہوگیا۔

اس عرصہ مین شترو جیت بھی گرفتار ہوکر جہانگیر نگر مین پہونچا یہ بسینہ کے راجہ مکندر کا بیٹا تھا اسکا علاقہ جہانگیر نگر سے تین منزل پر واقع تھا جب شیخ علاؤالدین نے کوچ ہاجو فتح کرنے کو فوج بھیجی تھی تو شترو جیت کو بھی اُوسکے ساتھ تعینات کیا تھا اُسنے اس مہم مین اچھا کام کیا تھا جس سے پانڈو کی اور کوہ ستی کی تھانہ داری ملی تھی اور اُوسکا بیٹا جہانگیر نگر مین رہتا تھا جب اسلام خان صوبہ دار ہوکر آیا تو

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोबड़े तक़ाज़े से बुलाया शत्रजीत ने अपने बेटे को जहांगीर नगर से बुला कर अपनी जगह छोड़ा और आप ख़ान के पास गया ख़ान ने उसको फिर मोही उद्दीन के साथ हाजू की तरफ़ भेजा य हां आकर वह आसाम के लशकर और बलदेव से मिल गया जिसपर इसला मखां ने उसके पकड़ने का हुक्म भेजा वह गिरफ़तार हुआ और जहांगीर न गर के क़ैदख़ाने में पड़ा२ मरगया॥

कोच और आसाम के लशकर ने शेख़ अबदुलसलाम वग़ैरा को पकड़ ने के पीछे बादशाही लशकर की रो क के वास्ते जो नज़दीक था आये हीरा पुर में मज़बूत क़िले बनाये और दोनों जगह फ़ौजें रक्खी ये दोनों इलाक़े ब्र ह्म पुत्र के आस पास थे बादशाही फ़ौ ज घोपड़ी से उनके ऊपर गई ख़ान पुर की नदी उतरने में आसामियों से लड़ाई हुई और वे हार कर पीछे को हट गये उधर चंद्र नारायण भीमर

اُسنے شتروجیت کو بڑے تقاضے سے بُلایا شتروجیت نے اپنے بیٹے کو جہانگیر نگر سے بُلا کر اپنی جگہہ چھوڑا اور آپ خان کے پاس گیا خان نے پھر محی الدین کے ساتھ کوچ ہاجو کو بھیجا یہان آکر وہ لشکر آسام اور بلدیو سے ملگیا اسلام خان نے اُسکے پکڑنے کا حکم لکھا جس سے وہ گرفتار ہوا اور جہانگیر نگر کے قید خانہ مین پڑا پڑا مر گیا۔

کوچ اور آسام کے مفسدون نے شیخ عبدالسلام وغیرہ کو گرفتار کرنے اور بادشاہی لشکر کو روکنے کے واسطے جوگی گُپا اور ہیراپور مین مضبوط قلعہ بنائے اور دونو جگہہ فوج تعینات کی یہ مقامات دریائے برہمپتر کے قرب وجوار مین تھے بادشاہی فوج دھوپڑی سے اُونکے اوپر ہوگئی دریائے خانپور کے اُترنے مین آسامیون سے لڑائی ہوئی اور وہ شکست کہا کر پیچھے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

गया जिस से उत्तर कोल और दक्षिण
कोल का मुल्क साफ़ होगया

फिर बादशाही लशकर चंद
न कोटे पर गया वहां बुधनगर के
ज़मींदार सरदापर का बेटा उत्तम
नारायण भी बलदेव से लड़ाई हार
कर आगया लशकर के सरदार उस
को साथ लेकर बुध नगर को पहुंचे
बलदेव वहांसे चौथड़ी की तरफ़ हटग
या यह इलाक़ा भी सरदापर का था
जब बादशाही लशकर बिशनपुर
में दाखिल हुआ तो बलदेव ४००००
आदमियों से काला पानी तक जो
बिशन पुर से १॥ कोस है आपहुंचा
और वहां क़िला बना कर रहा और उ
सके लिखने से आसाम के राजा सुर
गदेव ने पांडू से अपने बेटे के जमाई
के साथ २०००० आदमी और भेजे ॥

बलदेव ने कुछ आदमी भेज
कर बिशन पुर और चंदन कोटे
का रस्ता बंद कर दिया जहां१ बड़ा

گئے اُدہر چندر نراین بہی مرگیا
سے اُترکول اور دکہن کول کا
صاف ہوگیا پہر بادشاہی لشکر
ندن کوٹہ کو روانہ ہوا وہان بُدہ نگر
زمیندار سرداپر کا بیٹا اُوتم نراین
بلدیو سے شکست کہاکر آگیا
دران لشکر اُسکو ساتھ لے کر
نگر پہونچے بلدیو وہان سے
ڑی کی طرف گیا یہ علاقہ بہی
ردا پر کا تہا جب بادشاہی لشکر
ن پور مین پہنچا تو بلدیو چالیس
ار آدمیون سے کالا پانی تک
ن پور سے ڈیڑہ کوس ہے مقابلہ
واسطے آپہونچا اور وہان قلعہ
قیم ہوا اُوسکے لکہنے سے آسام
راجہ سرگ دیو نے پانڈو سے
بیٹے کے داماد کے ساتھ۔
ہزار آدمی اور بہیجے۔
بلدیو نے کچہ آدمی بہیجکر
پور اور چندن کوٹہ کا راستہ
کر دیا جہان ایک بڑا حصہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिस्सा बादशाही लशकर का पड़ा था ॥

जब नदियों का पानी कम हुआ तो चंदन कोटे का लशकर भी बिशनपुर को रवाने हुआ बलदेव ने मंगसिर बदी ६ सं० ९५ की रात को कुछ आदमी बादशाही लशकर पर छापा मारने को भेजे उन्हों ने काले पानी से उतर कर २ क़िले बादशाही आदमियों से ले लिये मगर बादशाही फ़ौज ने दूसरे दिन हल्ला करके २ पहर में १५ किले दुशमनों के छीने और ४००० आसामियों को और कई उन के सरदारों को मार डाला बाक़ी आदमी भाग कर बलदेव के पास पहुंचे ॥

बादशाही फ़ौज ने मंगसिर सुदी १४ को फिर ३ हिस्से होकर खुशकी से दुशमनों के ऊपर हमला किया और निवाड़े को पानी की तरफ़ से रस्ता रोकने के वास्ते भेजा क़िलों

بادشاہی لشکر کا تھا-
جب دریا کا پانی کم ہوا تو چندن کوٹہ کا لشکر بھی بشن پور کو روانہ ہوا بلدیو نے شب یکشنبہ تاریخ ۲۰- جمادی الثانی سنہ ۱۰۴۷ کو کچھ فوج اپنی بادشاہی لشکر پر چھاپہ مارنے کے واسطے بھیجی- اوس نے کالا پانی سے اتر کر دو قلعے بادشاہی آدمیون سے لے لئے مگر بادشاہی فوج نے دوسرے دن حملہ کرکے دوپہر مین ۱۵ قلعہ دشمنون کے چھین لئے اور چار ہزار آسامیون کو مع کئی بڑے بڑے سردارون کے مار ڈالا باقی آدمی بھاگ کر- بلدیو کے پاس پہونچے-
بادشاہی فوج نے ۱۲ رجب کو پھر تین فوج ہوکر خشکی سے- دشمنون پر حملہ کیا اور نواڑہ کو پانی کی طرف سے راستہ روکنے کے واسطے بھیجا قلعون پر خوب لڑائی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

पर ख़ूब लड़ाई हुई बादशाही लश्कर ने क़तल आम शुरू कर दिया। जो लोग लड़ाई में पकड़े गये उनको भी मार डाला उसमें आसाम के राजा का भाई भी था बाक़ी आसामी भाग कर श्री घाट और पांडू में पहुंचे और बलदेव दुरंग को चला गया॥

बादशाही लश्कर कोच हाजू हो कर पोस बदी १० को आखिया पहाड़ी के पास पहुंचा और अब फिर खुश्की और तरी (जलस्थल) में होने लगी जिस्को जीत कर बादशाही लशकर कजली की तरफ़ बढ़ा जो ब्रह्मपुत्र के किनारे पर आसाम देस का द्वारा है और कुछ फ़ौज बलदेव के ऊपर दुरंग की तरफ़ भी गई बलदेव भाग कर गाव संगरी में चला गया जो आसाम की अमलदारी में ब्रह्मपुत्र के तट पर बस्ता था कजली में भी आसामियों की हार हुई और बादशाही ने कजली के पास २ क़िले ब

लड़ाई

लशकर

ہوئی بادشاہی لشکر نے قتل عام شروع کر دیا اور جو لوگ میدان جنگ مین گرفتار ہوئے اونکو بھی مار ڈالا ان مقتولون مین آسام کے راجہ کا داماد بھی تھا جو باقی بچے وہ بھاگ کر سری گھاٹ اور پانڈو مین پہونچے اور بلدیو درنگ کو چلا گیا۔

بادشاہی لشکر کوچ ہاجو ہو کر ۲۲-رجب کو آکھیا پہاڑی کے پاس پہنچا اور اب پھر خشکی اور تری مین لڑائی شروع ہوئی بادشاہی لشکر فتح پا کر کجلی کیطرف روانہ ہوا جو برہمپتر کے کنارہ ملک آسام کے دہانہ پر ہے اور کچھ فوج بلدیو کے اوپر درنگ کی طرف بھی گئی بلدیو بھاگ کر موضع سینگری مین چلا گیا جو آسام کی عملداری مین برہمپتر کے کنارہ پر تھا کجلی مین بھی دشمنون کو شکست ہوئی اور بادشاہی لشکر نے کجلی کے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाकर उनमें १००० सवार और ३००० बंदूकची रकवे और ३ महीने तक वहां रहकर उस तरफ़ के ज़मींदारों को सर किया फिर हद्दे पहाड़ पर जो उत्तर कोल की तरफ़ श्राघाट और कजली के बीच में है जाकर बरसात गुज़ारने के वास्ते छावनी टाली वहां कई सरदार पास पड़ोस के आकर हाज़िर होगये ॥

जब ये समाचार इसलाम खां की अरज़ी और हल्कारों की खबरों से बादशाह को मालूम हुवे तो इसलाम के ५००० सवारों से कि जिनमें ३००० सवार तो पहिले से दुअस्पा और सिह अस्पा थे १००० और दुअस्पा और सिह अस्पा करदिये और जिन २ अमीरों के वास्ते उसने सिफ़ारिश की उनके मनसब भी बढ़ा दिये ॥

پاس ور قلعہ بناکر اُنمین ایکہزار سوار اور تین ہزار بندوقچی رکھے اور تین مہینے تک وہان رہکر اُدسطرف کے زمینداروں کو مطیع کیا پھر کوہ سرحد پر جو اُتر کول کی طرف سری گھاٹ اور کجلی کے بیچمین ہے پہونچکر برسات تیر کرنے کے واسطے چھاونی ڈالی وہان بھی کئی سردار اوس گرد و نواح کے آکر حاضر ہوگئے۔

جب یہ حالات اسلام خان کے عرضی اور ہرکاروں کی خبر سے بادشاہ کو معلوم ہوئے تو بادشاہ نے اسلام خان کے پانچہزار سواروں مین سے کہ جن مین تین ہزار سوار دواسپہ اور سہ اسپہ تھے ایکہزار سوار اور دواسپہ اور سہ اسپہ کر دیئے اور جن جن امیروں کے واسطے اُسنے سفارش کی اُونکے بھی منصب بڑھا دیئے ❖

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बरस १२ वां

जेठ सुदी ३ संबत १६६५ से
बैसाख सुदी २ संबत १६६६ तक

क़ंधार की मुहिम

आसाढ़ बदी १३ को सईद ख़ां ने राजा जगत सिंघ को ज़मीन दावर और क़िले बुस्त के फ़तह करने के लिये भेजा पुरदिल ख़ां और एवज़ ख़ां वग़ैरा बाहरे के सै इदों और सूबे काबुल के कुमकी राजपूतों को साथ दिया राजा ने पुर दिल ख़ां वग़ैरा को तो क़िले बुस्त को भेजा और आप ज़मीनदावर पर कूच करके रस्ते से अपने १००० सवार और २००० पियादे राजपूतों को क़ुलीच ख़ां के कुछ आदमियों के साथ क़िले सारवान के ऊपर धावा करने का हुक्म दिया वे क़िले के नीचे पहुंच कर शाम से आधी रात तक क़िले

برس بارہوان

سنہ ۱۰۴۸ ہجری

۱۶۳۸ مئی سنہ ۱۶۳۸ع سے ۲۴ جولن سنہ ۱۶۳۹ع تک

مہم قندھار

۲۶ محرم کو سعید خان نے راجہ جگت سنگہ کو واسطے فتح حصار بست اور زمین داور کے روانہ کیا۔ پردل خاں و عوض خان وغیرہ سادات بارہہ اور راجپوتان کمکی صوبہ کابل کو اوسکے ساتھ بہیجا راجہ نے پردل خاں اور عزت خان وغیرہ کو تو قلعہ بست کے اوپر رخصت کیا اور آپ زمین داور کو روانہ ہوا راستہ سے اپنے ایکہزار سوار اور دوہزار پیدل راجپوتوں اور قلیچ خاں کے آدمیوں کو قلعہ سارباں کے اوپر دھاوا کرنیکا حکم دیا انہوں نے قلعہ کے نیچے پہنچکر اول شب سے دوپہر رات تک

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi

वालों से लडे॰ आखिर राजपूत जो लड़ाई में नाम को जान के बदले खरीदने और जान को नाम के वास्ते बेचने का ब्योपार खूब जानते हैं आगे दोडे॰ और दोड॰ने में कुछ गिर भी गये तो भी दरवाज़े तक पऊंच कर आग लगा दी और इस तरह रस्ता करके रजपूत और मुग़ल साथ साथ क़िले में दाख़िल ऊये और क़जल बाशों को मार कर १४० इराक़ी घोडे॰ और दूसरा सामान ले आये राजा जगत सिंघ बंदूक़ की आवाज़ क़िले से सुन कर बऊत जलदी आपऊंचा और इन लोगों की बहादुरी और कोशिश की तारीफ़ करने लगा ॥

इस लड़ाई में राजा जगत सिंघ के रजपूतों ने बड़ी बहादुरी की थी ३० के क़रीब उनके आदमी मारे गये थे और कुछ ज़खमी ऊये थे और बऊत से घोडे॰ बंदूक़

قلعہ والوں سے جنگ کی انجام کار راجپوتان تہور شعار کہ در روبازار جان ناموس را بزندگی خریدن وزندگی را بناموس فروختن تجارت رایجہ دانند پیش دویدند و چندے بیکبار دویدہ نقد زندگانی درباختند" جب دروازہ کو آگ سے جلا دیا اور راستہ ہو گیا تو مغل اور راجپوتوں نے ساتھ ساتھ قلعہ میں داخل ہو کر قزلباشوں کو مار ڈالا ایک سو چالیس گھوڑے عراقی اور دوسرا سامان ہاتھ آیا راجہ جگت سنگہ بندوق کی آواز سنکر جلدی سے قلعہ پر پہنچا اور ان لوگوں کی بہادری اور کوشش پر بہت تعریف اور تحسین کی "چون دران ہنگامہ جانبازی راجپوتان راجہ جگت سنگہ کمال دلیری و دلاوری برروئے کار آوردہ بودند و نزدیک سی تن مقتول کہ چندے مجروح شدہ و

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की गोलियों से मारे गये थे इस लिये राजा ने क़िले के घोड़े और सब साज़ सामान इन्हीं के पास रहने दिया ॥

इतने में ख़बर आई कि ज़मीन दावर से बुस्त वालों की मदद पर फ़ौज आती है राजा ने उसके ऊपर धावा देकर बहुतों को तो मार डाला और बाक़ी भाग गये ॥

फिर राजा जगत सिंघ ने ज़मींन दावर के क़िले पर पहुंच कर मोरचे लगाये उनमें से १ अपने आदमियों के ज़िम्मे किया और जब देखा कि इस तरह से काम बढ़ता है तो अपने मोरचे की तरफ़ से खाई का पानी निकालने के वास्ते नाला खोदा मगर पानी इधर न कस आता था इस लिये यह बात ठहराई कि लकड़ी के तख़्तों पर राला

از بیان اسپ بسیار بزخم تفنگ
از کار باز مانده راجہ اسپ اسباب
قلعہ را باین جماعہ باز گذاشت ،،
اس اثنا مین خبر آئی کہ زمین
داور سے ایک جمعیت بُست والون
کی مدد کو آتی ہے راجہ نے اُوسکے
اوپر حملہ کرکے اکثر کو تو مار ڈالا اور
باقی بھاگ گئے ۔

بعدہ راجہ جگت سنگہ
نے قلعہ زمین داور پر پہنچکر
قلعہ کے گرد بارہ مورچے بنائے
ان مین سے ایک اپنے
آدمیوں کے حوالہ کیا اور
جب دیکھا کہ اس طرح معاملہ
طول پکڑتا ہے تو ،، از طرف
ملچار خود براے آوردن آب
جرے کند وازآنرو کہ آب ازین
راہ کم بر می آید قرار داد کہ از
چوب وتختہ استوار ساختہ بر آن
بوجہ سلامت ترتیب دہد وبجر
ثقیل پر روسے خندق کشیدہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust

मत कूंचा बनाकर उस को कल
सेखाई के ऊपर रक्खें और उ
स के ऊपर से लशकर को उतार
कर क़िले की दीवार उड़ावें औ
र उधर से किले में दाखि़ल हो
वें मगर अमीरों की राय न मिल
ने से काम न चला क़ूलीच ख़ां
सूबेदार यह ख़बर सुन कर खु
द आया तब पहिले सावण की
सुदी ७ को क़िलेदार रोशन सु
लतान ने क़िला सौंप दिया फि
र फ़ौज क़िले बुस्त के ऊपर ग
ई और दूसरे सावण की सुदी ९
को जब बारूद से क़िले की दी
वार उड़ाई गई तो दूसरे मोरचे
और ख़ास करके राजा जगतसिं
ध के मोरचे के आदमी तुरई
की आवाज़ सुनकर नसेनियों
से जो तैयार थीं क़िले में जा कूदे
और दुशमनों को मार कर क़ि
लाफ़तह कर लिया महराब

کشیدہ از آب بگذرانند تا
دیوار حصار پرانیدہ بران معقل
حصین درآیند ۰۰ بعدہٗ
قلیج خان صوبہ دار امرائے
ستعینہ زمین داور کی نا اتفاقی کا
حال سُنکر خود آیا اور تاریخ
٦ ماہ ربیع الاول کو روشن
سلطان قلعدار نے قلعہ
سونپ دیا تب قلعہ بُست کے
اوپر فوج گئی اور تاریخ
٧ ماہ ربیع الثانی کو جب
بارود سے دیوار قلعہ کی
اڑائی گئی تو ا بروفق قرار
داد ہر دو ملچار دیگر علی الخصوص
ملچار راجہ جگت سنگہ شنیدن
آواز کرنا ازراہ نردبانہا
کہ ترتیب دادہ بودند بحصار
درآمدند و بسیارے از
جہال کوتاہ بین کہ پاے
حمیت بہ پیکار استوار
بہ نہادہ دست جسارت بکار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो क़िलेदार था बाला क़िले पर चढ गया ३ सुरंगें उसके गिरद भी बनाई गई थीं जिन में १ राजा जगत सिंघ ने बनाई थी उस से १ बुर्ज दरवाज़े समेत उड़ गई और सिपाही ढाल आगे कर के अंदर घुस गये बाला किला भी भादों बदी १० को फ़तह हो गया

بازکشادہ ہنگامہ قتال و معرکہ جدال گرم گردانیدند بہ تیغ خونبار کشتہ شدند" آخر قلعہ فتح ہو گیا محمد امین قلعدار بالا قلعہ مین محصور ہوا تین سرنگین اُسکے گرد بھی بنائی گئین جنمین ایک راجہ جگت سنگہ نے بنائی تھی اُس سے ایک برج معہ دروازہ قلعہ کے اُڑ گئی اور لوگ ڈھال سامنے کرکے اندر گھس گئے ۲۳ ربیع الثانی قلعہ ارک بھی فتح ہو گیا۔

अलीमरदानखां का हाज़िर होना

दूसरे सावन बदी ३ को शाहज़ादे शुजा अ० काबुल पहुंच कर "बुते खाक" में ठहरा वहां अली मरदान खां कंधार से बुते खाक इलाक़े काबुल में हाज़िर होकर आदाब बजा लाया शाहज़ादे ने कई अमीरों को पेशवाई के वास्ते भेजा था दीवान ख़ाने के दरवाज़े तक खान दौरां बहादुर नुसरत जंग भी गया था सलाम करने

علیمردان خان کا حاضر ہونا

شاہزادہ محمد شجاع ۷ ربیع الاول سنہ ۱۰۴۸ روز پنجشنبہ کو کابل پہنچکر بت خاک مین فروکش ہوا وہان علیمردان خان نے جو قندھار سے آکر ٹھہرا ہوا تھا ملازمت کی شاہزادہ نے کئی امیرون کو اُسکی پیشوائی کے لئے بھیجا تھا اور دیوانخانہ کے دروازہ تک خاندوران بہادر نصرت جنگ بھی گیا تھا بعد تسلیم کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi

केपीछे ख़ान दौरां और राजा जयसिंघ तो शाहज़ादे की दहनी तरफ़ बैठे और अली मरदान ख़ां को बाईं तरफ़ बैठाया फिर शाहज़ादे ने उसको १ भारी खिलअत देकर बादशाह की खिदमत में रवाने किया॥	کے خاندوران نصرت جنگ اور راجہ جے سنگہ وہیں طرف بیٹھے اور علیمردان خان کو بائیں طرف بٹھایا شاہزادہ نے اسکو خلعت دیکر بادشاہ کے پاس روانہ کیا
राजा गजसिंघ का इन्तकाल	**ذکر انتقال راجہ گجسنگہ**
जेठ सुदी ३ को राजा गजसिंघ जो कुरब कायदे और फ़ौज की कसरत में हिन्दुस्तान के तमाम राजाओं से बढ़ा हुआ था मर गया बादशाह ने उसके कहने के माफ़िक खिलअत जड़ाऊ जमधर ४ हज़ारी ज़ात और २४००० सवार का मनसब राजा का ख़िताब	دوئم محرم ۱۰۴۸ راجہ گجسنگہ کہ بدولت قرابت و قرب منزلت و فزونی دستگاہ و فراوانی سپاہ از دیگر راجہای ہندوستان امتیاز داشت رخت ہستی بربست بادشاہ بندہ نواز جسونت سنگہ خلف اور العنایت خلعت و جمدہر مرصع و منصب

(१) मारवाड़ की ख़्यात में महाराजा गजसिंघ का देहान्त जेठ सुदी ३ सं. १६९४ को लिखा है सो मिती तो हमारे हिसाब से भी मिलती है रहा संबत सो मारवाड़ में सावन से संबत बदला जाता है चैत से नहीं जिससे संबत ९४ लिखा है सावन से लेकर आधे चैत तक तो मारवाड़ी और हिन्दुस्तानी चाल के संबत बराबर रहते हैं फ़िर आगे पीछे रहजाते हैं॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

झंडा नक़्क़ारा सोने की ज़ीन का घोड़ा और ख़ासा हाथी इनायत किया राजा ने २००० मोहरें १२ हाथी और कुछ जड़ाऊ रक़में नज़र कीं राजा का बड़ा भाई अमर सिंघ जो बादशाह के हुक्म से शाहज़ादे मुहम्मद शुजाअ़ के साथ काबुल में गया हुआ था उस को १००० सवारों के इज़ाफ़े से ३ हज़ारी ज़ात और ३००० सवारों का मनसब और राव का ख़िताब इनायत हुआ पहिले भी राठोड़ों में राव का ख़िताब ही था राजा सूरज सिंघ के बाप राजा उदय सिंघ ने अकबर बादशाह की बंदगी में रहकर इज़्ज़त हासिल की तो उन्हों ने उसको राजा का ख़िताब इनायत करके यह बात ठहरा दी कि अब से जो कोई आदमी इस ख़ानदान का अपने बुज़ुरगों की जगह बैठे

چارہزاری ذات وچارہزار سوار وخطاب راجگی بموجب وصیت پدر ومرحمت علم ونقارہ واسپ بازین مطلا وفیل از حلقہ خاصہ برنواختہ مشمول تربیت گردانیدند وراجہ ہزار مہر بصیغہ نذر ودوازدہ فیل وبرخے مرصع آلات برسم پیشکش از نظر اطہر گذرانید وامر سنگہ برادر کلان راجہ جسونت سنگہ راکہ حسب الحکم در خدمت درۃ التاج سلطنت بادشاہ زادہ محمد شجاع بہادر بہ کابل رفتہ بود باضافہ ہزار سوار بہ منصب سہ ہزاری ذات وسہ ہزار سوار وخطاب راوی سربلند گردانیدند دراول بزرگ خانوادہ راٹھوڑیہ امتیاز راوی داشتہ چون راجہ اودے سنگہ پدر راجہ سورج سنگہ بہ بندگی حضرت عرش آشیانی جبین عزت برافروخت آنحضرت اورا بخطاب راجگی سرفراز گردانیدہ مقرر فرمودند کہ پس ازین ہر کہ ازین قبیلہ بجائے نیاکان نشنید براجگی مخاطب گردد واگر برادر خورد

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

वह राजा का खिताब पावे और जो छोटा भाई इस दरजे को पहुंचे तो उस्का बड़ा भाई राव कहलावे और इस क़ौम का हाल बरखिलाफ़ दूसरी तमाम राजपूत कौमों के है क्योंकि दूसरी क़ौमों में तो बड़ा बेटा अपने बाप की जगह बैठता है और राठोडों में जिसकी मां ज़्यादा प्यारी अपने खाविंद की होती है उसी का बेटा बाप की जगह बैठाया जाता है जैसा कि राजा उदय सिंघ के पीछे राजा सूरज सिंघ जो ३ भाइयों से छोटा था उसी मुहब्बत के सबब से जो राजा उदय सिंघ को उसकी मां के साथ थी राज पर बैठाया गया और सक़त सिंघ जो सबमें बड़ा था राव कहलाया था ॥

दरबार का हाल

गोंड वाये के ज़मींदार राव चांदा की पेशकश के ४ हाथी बादशाह

باین پایہ رسد کلان تر براوی ملقب شود حال این فرقہ بخلاف سایر فرق راجپوتیہ است چہ در دیگر اقوام از اخلاف ہرکہ بزرگ سال بود جانشین بزرگان گردد درین طایفہ ہرکہ مادرش بخواہش و محبت شوہر مختص باشد او را بجانشینی برگزینند چنانچہ بعد از گزشتن راجہ اودے سنگہ راجہ سورج سنگہ را با آنکہ از سہ برادر خورد سال بود بسبب تعلقے کہ راجہ اودے سنگہ بوالدہ او داشت براجگی برگزیدند و سکت سنگہ را کہ کلان تر بود براوی۔

دربار کا حال

چار ہاتھی پیشکش راجہ چاندا کے بادشاہ کی نظر سے گذرے یہ راؤ چاندا گونڈوانہ کا راجہ تھا۔

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को नज़र से गुज़रे ॥	رائے سنگہ جہالا آٹھ
राय सिंघ झाला को आठ सदी ज़ात और ४०० सवारों का मनसब मिला ॥	صدی ذات اور چار سو سواروں کے منصب سے مشرف ہوا
पहिले सावन की सुदी ७ को हरी सिंघ राठोड़ का मनसब डेढ़ हज़ारी ज़ात और ९०० सवारों का हो गया ॥	۶- ربیع الاول کو ہری سنگہ راٹھوڑ ڈیڑہ ہزاری ذات اور نو سو سواروں کا منصب دار ہوگیا-
पहिले सावन की सुदी ११ को बादशाह शाहज़ादे दारा शिकोह के मकान पर गये और वहां कई अमीरों को ख़िलअ़त मिले उनमें से राजा जसवंत सिंघ को ख़िलअ़त "फ़रजी" समेत मिला ॥	۱۰- ربیع الاول کو بادشاہ شاہزادہ محمد داراشکوہ کے مکان پر تشریف لے گئے وہاں کئی امیروں کو خلعت ملے ازانجملہ راجہ جسونت سنگہ کو خلعت مع فرجی کے عنایت ہوا-
दूसरे सावन की सुदी ७ को ६ हाथी राजा जसवंत सिंघ ने बादशाह के नज़र किये ॥	۵- ربیع الثانی کو راجہ جسونت سنگہ کی پیشکش کے ۶ ہاتھی بادشاہ کی نظر سے گذرے-
दूसरे सावन की बदी १ को राज सिंघ राठोड़ को कि जो राजा गज सिंघ का परधान था बादशाह ने अपने नोकरों में दाख़िल करके हज़ारी	۱۵- ربیع الثانی راج سنگہ راٹھوڑ راکہ مدار معاملات راجہ گجسنگہ بود و بزبان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज़ात और ४०० सवारों का मनसब दिया और ख़िलअत भी मय घोड़े के इनायत फ़रमाया जो कि राजा जसवंत सिंघ नौजवानी में बड़े दरजे को पहुंचा था और उसको १ मोतबर कामदार चाहिये था इस लिये बादशाह ने कमाल मेहरबानी से हुक्म दिया कि जिसतरह राज सिंघ उसके बाप के सामने काम किया करता था उसी तरह अबभी राजा के कामों का बंदोबस्त करता रहे ॥

दयानत राय को हथनी इनायत हुई ॥

क़ंधार की मुहिम

सूबे क़ंधार के क़िलों में से सारबान का क़िला तो राजा जगत सिंघ ने और हिरमंद का ज़ाहदबेग ने पहिले ही फ़तह कर लिया था ज़मीन दावर और बुस्त के

ہنود چنین کسے را پردھان گویند در زمرہ بندگان آستان معلی درآوردہ بمرحمت خلعت و منصب ہزاری ذات و چار صد سوار و عنایت اسپ نوازش فرمودند و چون راجہ جسونت سنگہ را کہ در آغاز برنائے بدولت عظیم رسیدہ بود کاردانی معتمد بایستے از وفور عنایت حکم شد کہ راج سنگہ بآئینے کہ پیش پدر او متکفل معاملات بود بہ تنظیم مہمات راجہ پردازد

دیانت رائے کو ہتھنی عنایت ہوئی۔

مہم قندھار

صوبہ قندھار کے قلعون مین سے ساربان کا قلعہ تو راجہ جگت سنگہ نے اور ہیرمند کا زاہدبیگ نے ماہ محرم مین فتح کرلیا تھا زمین داور اور بست

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क़िले पीछे फ़तह हुवे फ़िर बाक़ी के क़िले गरशक और फ़राह वग़ैरा भी ईरानियों से क़ुलीच ख़ां ने लेलिये और वे लोग क़ंधार के इलाक़े से निकल कर ख़ुरासान में चले गये तब क़ुलीच ख़ां भी भादों सुदी ९ को क़ंधार में पीछा आगया॥

ईरान की फ़ौज और उपज

बादशाह नामे में लिखा है कि इस वक़्त ईरान की कुल क़लमी फ़ौज ३० हज़ार सवारों की थी और आमदनी दो करोड़ ४० लाख रुपये की, वज़ीर की तनख़्वाह १ लाख रुपये की और विज़ारत के दस्तूर समेत २ लाख रुपये की सालाना है सिपह सालार की ३ लाख और क़ोरचीबाशी की ५ लाख रुपये की और ख़ुरासान के बगलरबेगी की तनख़्वाह १० लाख सालाना है और यहां कई सूबे आगरा, दिल्ली और लाहौर जैसे

کے قلعے بعد فتح ہوئے پھر باقی قلعے گرشک اور فراہ وغیرہ بھی ایرانیون سے قلیچ خان نے لے لئے اور وہ لوگ قندھار کے علاقہ سے نکلکر خراسان مین چلے گئے تب قلیچ خان بھی ۸ رجمادی الاول کو قندھار مین واپس آگیا۔

ایران کی فوج وآمدنی

بادشاہنامہ مین لکھا ہے کہ اسوقت ایران کی کل قلمی فوج ۳۰ ہزار سواروں کی تھی اور آمدنی ۲ کروڑ چالیس لاکھ روپیہ کی۔ وزیر کی تنخواہ ایک لاکھ روپیہ سالانہ اور معہ رسم وزارت دو لاکھ سالانہ۔ سپہ سالار کی تین لاکھ قورچی باشی کی پانچ لاکھ اور بیگلر باشی خراسان کی قریب دس لاکھ سالانہ کے اور یہان کئی صوبہ مثل آگرہ دہلی و لاہور والی ڈہائی کروڑ روپیہ حاصل کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ढाई २ किरोड़ के हासिल के हैंऔ
रहरेक मनसब दार ७ हज़ारी ज़ात ७
हज़ार सवार या ५ हज़ार सवार दुअ
स्पा और सिह अस्पे की जागीर का
हासिल ३० लाख सालाना है और आ
सिफ़ ख़ां ख़ान ख़ानां सिपह सालार
की सालाना आमदनी ५० लाख की
है॥

विलायत बगलाना की फ़तह॥

बादशाह नामें लिखा है कि
इस विलायत में ९ क़िले ३४ परग
ने और १०१ गांव हैं और ज़मींदारी
यहां की १४०० और कई बरस से
हाल के ज़मींदार भुरजी के ख़ान
दान में चली आती है और यह विला
यत आब हवा की उमदगी, नहरों
की कसरत रूखों और रिसालः मेवा
की बहुतायत में मशहूर है लंबाई
१०० कोस और चौड़ाई ७० कोस है
लंबाई उसकी पूरब की तरफ़ चांदोर

ہین اور حاصل جاگیر ہر ایک
منصب دار ہفت ہزاری ہفت ہزار
سوار کا اور پنجہزار سوار دواسپہ اور
سہ اسپہ کا ۳۰ لاکھ سالیانہ ہے۔
آصف خان خانخانان سپہ سالار
کا حاصل جاگیر پچاس لاکھ سالانہ ہے

فتح ولایت بگلانہ

بادشاہنامہ مین لکھا ہے
کہ یہ ولایت ۹ قلعہ ۳۴ پرگنے
اور ایک ہزار ایک گانوسے
شامل ہے یہان کی زمینداری
چودہ سو اور کئی سال سے زمیندار
حال بہرجی کے سلسلہ مین
چلی آتی ہے یہ سرزمین لطافت
آب ہوا اور کثرت انہار و اشجار
و اثمار مین زبان زد روزگار ہے
لمبائی سو کوس رسمی اور چوڑائی
ستر کوس کی ہے۔ طول شرقی
پرگنہ چاندور علاقہ دولت آباد

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इलाक़े दौलताबाद तक और प
२ च्छम की तरफ़ बंदर सूरत औरखारे
समंदर तक चौड़ाई उत्तर में सुल
तानपुर और नज़रबार इलाक़े (मा
लवा) तक और दखन में नासिक
त्रिम्बक तक है क़िलों के नाम
साल्हेर, मोल्हेर, मोरा, हरगढ, सा
लोदा, बावना, पीपोल, जोरेलहैंइ
नमें साल्हेर और मोलेर बहुत मज़
बूत हैं साल्हेर जो १ लंबे पहाड़ पर
बना है मज़बूती के सिवाये इस
बात के वास्ते भी मशहूर है कि उ
स्का रस्ता बहुत कठिन है इस
पहाड़ पर २ क़िले हैं एक तो ऊ
पर है जिस्को साल्हेर कहते हैं औ
र दूसरा अधबीच में है ये दोनों क़ि
ले क़ुदरती १ पत्थर के बने हुए हैं
मगर कहीं २ सिर्फ़ दराड़ें चूने औ
र पत्थरों के टुकड़ों से बंद की गई हैं
पहाड़ की जड़ से पहिले क़िलेत
क जो १ तंग रस्ता है वह सांप की

سے اور غربی بندر سورت اور
دریاے شور سے ملحق ہے
عرض شمالی سلطانپور نذربار
سے اور جنوبی ناسک و ترنبک
سے ملا ہوا ہے - ساہلیر - موہلیر
مورا - ہرگڈہ - سالودہ - باونہ
ہاٹ گڈہ - پیپول - اور جوریل
اس ولایت کے قلعہ ہین
جن مین سب سے زیادہ مضبوط
ساہلیر اور موہلیر ہین ساہلیر ایک
لمبے پہاڑ پر بنا ہے جو استواری او
صعوبت راہ مین معروف اور
مشہور ہے اس پہاڑ پر دو قلعہ
ہین ایک تو چوٹی پر جسکو ساہلیر
کہتے ہین اور دوسرا درمیان مین
ہے دونو یک لخت سنگ سخت
سے قدرتی بنے ہوئے ہین مگر
دروازون اور بعضی دراڑون
مین چونہ اور پتھر بھرا گیا ہے پہاڑ
کے نیچے سے اول قلعہ تک
ایک راستہ سانپ کی طرح

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तरह बल खाता चला गया है जिस में बहुत सी ऐसी भी पहाड़ियां हैं जिन पर मुशकिल से चढा जाता है और दोनों क़िलों के बीच में तो ऐसी बिकट गली है कि जिस्में पांव ठहराने के लिये सिर्फ़ गड्ढे ही खुदे हुये हैं और जिनमें भी बग़ैर मदद दूसरे आदमी के पांव नहीं धरा जासक्ता है हर क़िले में एक एक तलाव भी है कि जिस्में से पानी उबलता है॥

मोल्हेर भी एक पहाड़ के ऊपर बना है और इस पहाड़ की ऊपर से २ चोटियां फट गई हैं नीचे की चोटी पर तो मोल्हेर है और ऊपर की चोटी पर मोरा है मगर मोल्हेर मोरा से ज़ियादा लम्बा चौड़ा है इस पहाड़ के बीच में ३ कोट हैं जिस को बाड़ी और उसके बीच की बसती को शहर बाड़ी कहते हैं जिस में ।

سے لہرین کھاتا ہوا چلا گیا ہے جسمین بہت سے دشوار گذار زینہ ہین پھر دونون قلعوں کے درمیان راہ اور بھی صعب المرور ہے پانون جمانے کے واسطے پتھرون مین رخنہ کیئے ہوئے ہین اور پھر بھی بغیر مدد اور سہارے ایک آدمی کے دوسرا آدمی پانون نہین اٹھا سکتا دونون قلعون مین ایک ایک تالاب ہے جسمین سے پانی اُبلتا ہے

مولہیر بھی ایک پہاڑ کے اوپر بنا ہے جس کی اوپر جاکر دو چوٹیان ہوگئی ہین نیچی چوٹی پر تو مولہیر ہے اور اونچی پر مورا ہے مگر چوڑائی مین مولہیر مورا سے بڑا ہے اس پہاڑ کے بیچ مین ایک قلعہ ہے اُسکو باڑی کہتے ہین اور جو بستی اوسکے اندر بستی ہے اُسکا نام شہر باڑی ہے کہ جہان بھی اور اُسکے متعلقون کے گھر ہین

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भुरजी और उसके इलाक़े दारों के घर हैं ॥ बादशाह ने २ बरस पहिले बगलाना शाहज़ादे औरंग ज़ेब को इनायत करके यह हुक्म दिया था कि दक्खन में पहुंचकर फ़तह कर लेना इस पर उस ने पोस सुदी १० संबत १६९४ को ३००० सवार और २००० बंदूक़ची बादशाही लश्कर में से मालूजी दखनी की सरदारी में और २००० सवार अपने नोकर मोहम्मद ताहिर के साथ बगलाना फ़तह करने को भेजे माह सुदी १२ को बाड़ी का कोट घेरा गया और कुछ लड़ाई के बाद फ़तेह हुवा भुरजी पांच छः सो आदमियों से किले मुल्हेर में चला गया और उसके अंदर बैठकर लड़ा जब बाहर के मोरचों के ज़बते से नाज की रसद बंद होगई तो उसने अपनी मां को मय अपने	بادشاہ نے دو برس پہلے یہ ولایت بگلانہ کی اپنے بیٹے اورنگ زیب کو عطا کرکے حکم دیا تھا کہ دکہن مین پہنچکر فتح کرلینا اس لئے شاہزادہ نے ۸۔ شعبان ۱۰۴۷ھ کو تین ہزار سوار اور دو ہزار بندوقچی بادشاہی لشکر سے مالوجی دکھنی کی سرداری مین اور دو ہزار سوار اپنے ملازم محمد طاہر کے ہمراہ بگلانہ فتح کرنے کو بہیجے ۱۰۔ رمضان ۱۰۴۷ھ کو حصار باڑی کا محاصرہ ہوا اور بعد جنگ وہ قلعہ فتح ہوگیا بہرجی پانچ چھہ سو آدمیون سے قلعہ مولہیر مین چلاگیا اور اُسکے اندر بیٹھکر لڑا جب بیرونی مورچون کی روک تھام سے غلہ کی آمد موقوف ہوئی تو بہرجی نے اپنی مان کو اپنے وکیل کشناجی کے ساتھ مع آٹھون قلعون

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वकील किशन जी और आठों क़िलों
की कुंजियों के शाहज़ादे के पास भे
जकर अरज़ की कि जो सुलतानपुर
का परगना मुझ को मिलजावे तो अ
पना असबाब लेकर वहां चला जाऊं
बादशाह ज़ादे ने भुरजी की मां को
सिरोपाव वग़ैरा से राज़ी करके बा
दशाह को अरज़ी लिखी बादशाह
ने इस लिहाज़ से कि भुरजी हमेशा
हुक्म में रहा करता था नज़राना भे
जा करता था जब काम पड़ता तो सिप
ह सालार दखन के बुलाने पर हा
ज़िर होजाता था उसको ३ हज़ारी ज़ा
त ५०० सवार का मनसब और सु
लतान पुर का परगना इनायत कि
या तब भुरजी आसाढ़ सुदी २ सं० १६९५
को क़िले से निकल कर शाह ज़ा
दे के पास हाज़िर आया शाह ज़ादे
ने उसको खिलअत जड़ाऊ जमधर
हाथी और घोड़ा दिया और मोहम्म
द ताहिर को अपनी तरफ़ से उस

کی کنجیون کے شاہزادہ کے
پاس بہیجکر عرض کرائی کہ جو
سلطانپور کا پرگنہ مجھکو ملجاوے
تو اپنے سامان وعیال اطفال
کو لیکر وہان چلا جاؤن -
بادشاہزادہ نے بہرجی کی مان
کو عنایات و مہربانی سے راضی
کرکے بادشاہ کو عرضی لکہی -
بہرجی چونکہ بادشاہ کے حکم
مین رہا کرتا تہا اور پیشکش بہیجا
کرتا تہا کام کے وقت جب
سپہ سالار دکہن بلاتا تہا - تو
حاضر ہو جاتا تہا اس لئے
بادشاہ نے اسکو سہ ہزاری ذات
دو ہزار سوار کا منصب اور
سلطانپور کا پرگنہ عنایت کیا
بہرجی غرہ صفر ۱۰۴۸ھ کو قلعہ
سے نکلکر شاہزادہ کے پاس
حاضر ہوا شاہزادہ نے خلعت
جمدہر مرصع . گہوڑا اور ہاتھی
عنایت کیا اور محمد طاہر کو اپنی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुल्क में हाकिम मुकर्रर किया पीपोल का क़िला भुरजी के रिशते दार ऊदिया के पास था वह भी फतह होगया और ऊदिया पहिले सावन की सुदी ५ को शाहज़ादे के पास हाज़िर होगया इन किलों से १२० तोपें हाथ आईं ॥

बगलाने की जमा भुरजी के वक्त में २० लाख टंके की थी जो वहां का सिक्का था और बादशाही बंदो बस्त में ४ लाख रुपये की जमा बंदी हुई ॥

बगलाने के इलाक़े में से राम नगर का परगना भुरजी के जमाई सोमदेव को दिया हुआ था जब भुरजी शाहज़ादे के पास हाज़िर होगया तो सोमदेव भी हाकिम सूरत के वसीले से हाज़िर हुआ मगर राम नगर की आमदनी खर्च से कम थी इसलिये

طرف سے اُس ولایت مین حاکم مقرر کیا۔ پھر پیپول کا قلعہ جو اُودیا زمیندار قوم بھُرجی کے پاس تھا وہ بھی فتح ہوگیا اور اودیا ۴۔ ربیع الاول کو شاہزادہ کے پاس آگیا۔

ان قلعون سے ۱۲۰ توپین ہاتھ آئین

بگلانہ کی جمع وقت آبادی بھُرجی کے بیس لاکھ ٹنکہ کی تھی اگرچہ ٹنکہ وہ ٹنکہ نہ تھا جو رائج ہو بادشاہی بندوبست مین ۴ لاکھ کی جمع ہوئی

بگلانہ کی مضافات مین سے رام نگر بھُرجی کے داماد سوم دیو کے قبضہ مین بصیغہ وراثت تھا بعد حاضر ہوجانے بھرجی کے وہ حاکم سورت کے وسیلہ سے شاہزادہ کے پاس گیا مگر رام نگر کی آمدنی خرچ سے کم تھی اس لیئے شاہزادہ نے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

शाहज़ादे ने रामनगर उसी के पास रखकर ३०००० साल मालगुज़ारी के ठहरा लिये॥

(१) रखंग के ज़मींदार का भाई मांगत राय जो चाटगाम का (२) हाकिम था अपने भाई के १ नोकर से जो उसकी जगह बैठ गया था लड़ाई हार कर पनाह लेने के वास्ते बंगाले में इसलाम ख़ां के पास आ गया और इस सबब से १०। १२ हज़ार औरत मरद बंगाले के जो चाटगांव में क़ैद थे ४० बरस पीछे छूट कर अपने वतन में आये॥

बादशाह का लाहोर जाना

भादों बदी ३ को बादशाह ने लाहोर जाने के इरादे से "सैफ़ ख़ां" को आगरे में छोड़ा और राजा बिट्ठलदास को किलेदारी सोंपी जो धंधेड़े से बुलाया गया था और उसको ख़िलत जड़ाऊ जमधर सोने की ज़ीन का घोड़ा भी दिया॥

رام نگر اُوسی کے پاس رہنے دیا اور دس ہزار روپیہ سالانہ خراج کا اُس سے ٹھہرالیا -

رخنگ[۱] کے زمیندار کا بہائی مانکت رائے جو حاکم چاٹگام[۲] تہا اپنے بہائی کے ایک نوکر سے جو اوسکا جانشین ہوگیا تہا شکست کہا کر واسطے پناہ پذیری کے بنگالے کے حاکم اسلام خان کے پاس آگیا اسوجہ سے دس بارہ ہزار مرد عورت بنگالے کے جو چاٹگام مین قید تھے چالیس برس بعد رہا ہوکر اپنے وطن مین آئے

بادشاہ کا لاہور جانا

۱۶ - ربیع الثانی کو بادشاہ نے لاہور جانے کی ارادہ سے سیف خان کو آگرہ مین چھوڑا اور راجہ بٹھل داس کو قلعہ کی حفاظت تفویض کی یہ راجہ بموجب

(१) रखंग को अब अराकान कहते हैं (२) उस वक़्त पहनी नदी बंगाले और मग (ब्रह्मा) की हद थी और चाटगाम रखंग वालों के क़बज़े में था॥

۱ رخنگ کو اب اراکان کہتے ہین ۲ اُسوقت پہنی ندی بنگالہ اور رکہنگ یعنی برہما کی حد فاصل تھی اور چاٹگام رخنگ والونکی پاس تہا

भादें बदी ५ को बादशाह का आगरे से कूच हुआ घाट सामी के डेरे पर राजा जसवंत सिंघ को खासा तबेले से घोड़ा सुनहरीज़ीन का इनायत हुआ ॥

भादें सुदी ९ को बादशाह दिल्लीमें पहुंचे राजा जसवंत सिंघके परधान राजसिंघने १ हाथी नज़र किया

आसोज बदी १ को बादशाह का दिल्ली से कूच हुआ राजा जसवंत सिंघ वग़ैरा कई अमीर ज़ोहुक्म से दिल्ली में रहगये थे पालम में जा मिले ॥

आसोज सुदी ९ को गांव अख़्तियारपुर परगने अंदरी में बादशाह ने राजा जसवंत सिंघ को ख़िलत ख़ासा और ख़ासा घोड़ा सुनहरी ज़ीन का बख़्शा ॥

कातक बदी ३ को बादशाह ने सतलुज नदी के किनारे पर राजा सूरज सिंघ के बेटे सबलसिंघ का मनसब जो सूबे गुजरात में

حکم کے وہندیرہ سے حاضر درگاہ
ہوا تہا اور اُسکو خلعت جمدہر مرصع
اسپ معہ زین مطلا کے اور خدمت
قلعداری اکبرآباد کی مرحمت ہوئی
۱۷- کو آگرہ سے کوچ ہُوا گھاٹ
سوامی کے مقام پر راجہ جسونت سنگہ
کو خاصہ طویلہ سے
گھوڑا اسونیکی زین کا عنایت ہُوا۔
۸- جمادی الاول کو بادشاہ
دہلی مین پہونچے راجہ جسونت سنگہ کے
پردہان راج سنگہ نے ایک ہاتھی پیشکش کیا
۱۵- کو دہلی سے کوچ ہوا راجہ
جسونت سنگہ معہ دوسرے امیرون کے
بوجب الحکم دہلی مین رہگئے تہے ۲۵- کو
علاقہ پالم مین بادشاہ سے جا ملے۔
۷- جمادی الثانی کو مقام
موضع اختیارپور توابع پرگنہ اندری مین
راجہ جسونت سنگہ کو خلعت خاصہ اور
گھوڑا خاصہ طویلہ سے معہ زین مطلا کی
عنایت ہُوا۔

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तड नात था हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार का असल और इज़ाफ़े से । कर दिया ॥

कातक सुदी १० को ब्यास नदी के किनारे पर महेस दास रागेड़ का मनसब ६ सदी जात और ३०० सवारों का होगया और खिलत भी मिला ये पहिले राजा गज सिंघ का नोकर था फिर राजा जसवंत सिंघ का हुआ और इन दिनों में बादशाही नोकर था ॥

मंगसिर बदी ३ को बादशाह अशरफ़ी और रुपया लुटाते हुये लाहोर के दोलतखाने में दाखिल हुये (१) अली मरदान खां हाज़िर हुआ बादशा ने उस को भारी खिलत १ लाख रुपया और कशमीर का सूबा दिया १ लाख रुपया पहिले भी मिल चुका था और पांच लाख

(१) बादशाह ईद की नमाज़ पढने को जाते थे तब भी अशरफ़ी और रुपये लुटाते जाते थे ॥

۱۷ جمادی الثانی کو ستلج ندی کے کنارہ پر بادشاہ نے راجہ گج سنگہ کے بیٹے سبل سنگہ کو جو احمدآباد مین تعینات تھا ہزاری ذات اور ہزار سوار کا منصب اصل اور اضافہ سے عنایت فرمایا

۸- رجب کو مقام کنارہ بیاس ندی پر مہیش داس راٹھور جو پہلے راجہ گجسنگہ کا نوکر تھا اور پھر راجہ جسونت سنگہ کا رہا زمرۂ بندگان بادشاہی مین داخل ہوا اور بادشاہ کی طرف سے اسکو خلعت اور منصب ششصدی ذات اور تین سو سوار کا عنایت ہوا۔

۱۵- رجب کو بادشاہ روپیہ اور اشرفی لٹاتے ہوئے لاہور کے دولتخانہ مین داخل ہوئے۱۔

علیمردان خان نے حاضر ہوکر ملازمت کی بادشاہ نے اسکو خلعت فاخرہ ایک لاکھ روپیہ اور کشمیر کا صوبہ دیا ایک لاکھ روپیہ

۱ بادشاہ عید کی نماز پڑھنے جاتے تھے جب بھی اشرفی اور روپیہ لٹاتے جاتے تھے ۱۲

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रुपये फिर मिले ॥

शाह सफ़ी के वकील यादगार बेग को भी ईरान जाने की रुख़सत हुई। उसको लाख रुपये रोकड़ और ५० हज़ार की जिन्स इनायत हुई थी और ५० हज़ार की जड़ाऊ सुराही प्याला और रकाबी उसके हाथ शाह के वास्ते भेजी गई ॥

मंगसिर सुदी ३ को राजा जगत सिंघ के बेटे राज रूप को मनसब का इज़ाफ़ा होकर घोड़ा और कांगड़े के पहाड़ों की फ़ौजदारी का काम मिला ॥

पोस बदी १ को बादशाह ने दारा शिकोह और मुराद बख़्श को ख़ासा पोसतीन दिया काबुल के सूबेदार सईद ख़ां और राजा जसवंत सिंघ को भी समूर की पोस्तीनें इनायत फ़रमाईं जिनके अबरे पर ज़री का काम किया

اسکو پہلے بھی مل چکا تھا اور پانچ لاکھ روپیہ پھر ملے۔

شاہ صفی کے وکیل یادگار بیگ کو ایران جانے کی رخصت ہوئی اسکو ابتک دو لاکھ روپیہ نقد اور پچاس ہزار کی جنس عنایت ہوئی تھی اور پچاس ہزار روپیہ کی صراحی معہ پیالہ مرصع ورکابی کے اوسکے ہاتھ شاہ کے واسطے بھیجی گئی۔

غرہ شعبان کو راجہ جگت سنگہ کے بیٹے راجہ راجروپ کا منصب افزاہو کر گھوڑا اور کام فوجداری کوہستان کانگڑہ کا عنایت ہوا

۱۵۔شعبان کو بادشاہ نے دارا شکوہ اور مراد بخش اپنے شہزادوں کو پوستین خاصہ دے اور ایک ایک پوستین سمور کا راجہ جسونت سنگہ اور سعید خان ظفر جنگ صوبہ دار کابل کو بھی عنایت کیا جنکا ابرہ زربفت تھا۔

۲۴۔شعبان کو کچھ کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

हुआ था ॥

पोसबदी १० को कच्छके ज़मींदार भारा के बेटे भोज का भेजा हुआ १ घोड़ा बादशाह की नज़रसे गुज़रा ॥

पोस सुदी ३ को राजा जगतसिंघ की अरज़ी और कुछ जड़ाऊ चीज़ें उसका नोकर ईसरदास लेकर हाज़िर हुआ बादशाह ने उसको खिलअत देकर रानाके वास्ते ख़ासा खिलत्त और २ तपचाक़ (तुरकी) घोड़े सुनहरी जीनके भेजे ॥

पोस सुदी १३ को अल्लामी अफ़ज़ल ख़ां वज़ीर मरगया और दयानत राय को कुछ अख़तियारात वज़ीरायत के मिले ॥

"ज़ुलक़रनैन" फरंगी को १ किताब के इनाम में जो बादशाह के नाम पर बनाई गई थी ५०००) रुपये इनाम के मिले ॥

زمیندار بہارا کے بیٹے بہوج کا بہیجا ہوا گہوڑا بادشاہ کی نذر ہوا۔

۲۔ رمضان کو رانا جگت سنگہ کا نوکر ایسرداس اوسکی عرضی اور کچھ مرصع آلات بطور پیشکش کے لے کر حاضر ہوا بادشاہ نے اُسکو خلعت دیا اور دو اسپ تپچاق معہ زین طلا اور مطلا کے رانا کے واسطے بھی اوسکے ہاتھ بھیجے۔

۱۲۔ رمضان کو علامی افضل خان لاہور مین مرگیا جس سے دیانت رائے کو کچھ اختیارات صیغہ وزارت کے پیشگاہ شاہی سے عطا ہوئے۔

ذوالقرنین فرنگی کو ایک کتاب کے جایزہ یعنی انعام مین جو اوس نے بادشاہ کے نام پر تصنیف کی تہی پانچہزار روپیہ عنایت ہوا۔

माह बदी ४ को बादशाह की साल ग्रह के तुला दान में अमीरों के इज़ाफ़े हुये जिससे राजा जसवंत सिंघ का मनसब हज़ारी ज़ात और १००० सवार के इज़ाफ़े से ५ हज़ारी ज़ात ५ हज़ार सवारों का हो गया और राजा राय सिंघ के मनसब पर ५०० सवारों का इज़ाफ़ा हुआ जिससे उस का मनसब ३ हज़ारी ज़ात और २००० सवारों का हो गया ॥

दयानत राय को रायरायां का ख़िताब मिला ॥

पोह सुदी ५ को बादशाह ने शाहज़ादे शुजाअ को जो काबुल से बुलाया हुआ आया था १५ हजारी ज़ात और ९ हजार सवार का मनसब देकर बंगाले की तरफ़ रवाने किया और

۱۸ - رمضان مطابق چہارم ماہ بہمن کو بادشاہ کے وزن شمسی کا جشن تھا اُسمین راجہ جسونت سنگہ کو ہزاری ذات اور ہزار سوار کے اضافہ سے پانچہزاری ذات اور پانچہزار سوار کا منصب عطا ہُوا -

راجہ رائے سنگہ کے منصب مین بھی پانسو سوارون کا اضافہ ہُوا جس سے اُوسکا منصب تین ہزاری دو ہزار سوار کا ہوگیا -

دیانت رائے کو رائے رایان کا خطاب عنایت ہُوا

۲ - شوال کو بادشاہ نے شاہزادہ محمد شجاع کو جو حسب الطلب کابل سے حاضر آیا تھا پندرہ ہزاری ذات اور نو ہزار سوار کا

افضل خان کی تاریخ رحلت ایک تو علامی از دہر رفت ہے اور دوسری ز خوبی بُرد گوئی نیکنامی ہے افضل خان بہت نیک ذات تہا باوجود اختیار اور اقتدار کے اُس سے کسیکو ضرر نہ پہنچا بادشاہ بہی کہا کرتے تھے کہ از افضل خان در بارہ ہیچکس بدی شنیدہ نشدہ ۱۲

(متعلق صفحہ ۵۵)

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसी क़दर मनसब औरंगज़ेब का भी कर दिया और दाराशिकोह का मनसब पहिले ही २० हज़ारी होगया था ॥

माह सुदी १२ को राजा जगत सिंघ काबुल से आया बादशाह ने ख़िलअत और मोतियों की माला उसको दी ॥

बुंदेलों का फ़िसाद

बुंदेलों ने जो जुझारसिंघ के बेटे प्रथ्वी राज को अपना सिरदार बनाया था चंपत बुंदेले ने उस की मदद करके बादशाह के आगरे से जाने के पीछे बड़ा फ़िसाद किया जब यह ख़बर बादशाह को पहुंची तो अबदुल्लाख़ां फ़ीरोज़ जंग को पटने की सूबेदारी से बदल कर बुंदेलों के ऊपर जाने का हुक्म दिया ॥

बादशाह का काबुल जाना

फागुन बदी ९ को बादशाह ने

منصب دیکر بنگالہ کی صوبہ داری پر رخصت کیا اسی قدر منصب بادشاہزادہ محمد اورنگ زیب کا بہی کر دیا اور دارا شکوہ کا منصب پہلی ہی بیس ہزاری ہو گیا تھا۔

۱۰۔ شوال کو راجہ جگت سنگہ نے کابل سے حاضر آکر دولت ملازمت حاصل کی اور بادشاہ نے اسکو خلعت معہ مالاے مروارید کے عطا فرمایا۔

بندیلوں نے جوجہار سنگہ کے بیٹے پرتھی راج کو اپنا سردار بنایا چنپت نامی بندیلے نے اسکی مدد کی اور جب بادشاہ آگرے سے لاہور کی طرف روانہ ہوگئے تو بڑا فساد کیا بادشاہ نے عبد اللہ خان فیروز جنگ کو پٹنہ کی صوبہ داری سے بدلکر بندیلوں کا فساد رفع کرنے کے واسطے بہیجا۔

بادشاہ کا کابل جانا

۱۴۔ شوال کو بادشاہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाहज़ादे दाराशिकोह को ईरान के शाह सफ़ी के मुकाबिले पर भेजा जो कंधार पर आना चाहिता था उस्के साथ राजा राय सिंघ और जगत सिंघ भी तईनात हो कर गये राजा रायसिंघ को हाथी इनायत ऊआ॥

ने شاہزادہ محمد دارا شکوہ کو واسطے مقابلہ شاہ صفی کے جو قندہار پر آنا چاہتا تھا کابل کی طرف روانہ کیا اوسکے ساتھ راجہ رائے سنگہ اور راجہ جگت سنگہ بھی متعین ہوئے۔

راجہ رائے سنگہ کو ہاتھی عنایت ہوا

फागण सुदी ३ को बादशाह खुद भी काबुल को रवाने ऊवे॥

غرۂ ذیقعدہ کو بادشاہ خود بھی کابل کو روانہ ہوئے

बगलाने का ज़िमींदार भुरजी मर गया बादशाह ने उस्के बेटे बहादुर पर मजी को डेढ हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार का मनसब इनायत किया यह फिर मुसलमान होगया और दौलतमंद नाम पाया॥

بھرجی زمیندار بگلانہ مرگیا بادشاہ نے اوسکے بیٹے بہادر برم جی کو جو بعدہ مسلمان ہو گیا اور دولتمند نام پایا ڈیڑہ ہزاری ذات اور دو ہزار سوار کا منصب عنایت فرمایا۔

चैत सुदी २ को नौरोज़ था उस दिन बिहारीमल की जगह रायसभा चंद लाहोर का दीवान ऊआ और बिहारीमल मुलतान का दीवान ऊवा॥

۱۵ ذیقعدہ کو جشن نوروزی میں سبھا چند دیوان لاہور بجائے بہاری مل کے مقرر ہوا اور بہاری مل دیوان ملتان ہوا۔

चैत सुदी ३ सं॰ १६९६ को बादशाह का मुक़ाम रावलपिंडी में ऊआ राजा जयसिंघ नोशहरे से ऊक्म के माफ़िक़ हाज़िर ऊआ॥

۲ ذالحجہ کو بادشاہ کا مقام راولپنڈی میں ہوا۔

راجہ جے سنگہ نے نوشہرہ سے آکر ملازمت کی

चैत सुदी ५ को राजा जगत सिंघ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाहज़ादे दाराशिकोह के साथ हज़ूर में हाज़िर आया बादशाह ने राजा जयसिंघ को मोतियों की माला बख़शी और दूसरे दिन राजा जगतसिंघ को ख़िलअत देकर दोनों बंगशों के बंदोबस्त पर भेजा और यह हुक्म दिया कि हमारे काबुल पहुंचने तक रसद जमा करले और पहुंचने के पीछे दोनों बंगशों से बराबर नाज पहुंचाता रहै॥

चैत सुदी ११ को बादशाह ने राजा जयसिंघ और जसवंत को एक एक हाथी ख़ासा हाथियों में से इनायत किया॥

बैसाख बदी ४ को बादशाह अटक से उत्तरे॥

बैसाख बदी ७ को बादशाह ने नौशहरे पहुंचकर राजा जयसिंघ और राव अमरसिंघ को घोड़े बख़्शे॥

बैसाख बदी ११ को बादशाह ने नौशहरे में अपने लशकर की हाज़िरी ली तो ५०००० सवार गिने गये॥

इसी दिन राजा जयसिंघ मिरज़ा

۴ کو راجہ جگت سنگھ ہمراہ شاہزادہ دارا شکوہ کے بادشاہ کی خدمت مین حاضر ہوا اُسی دن بادشاہ نے راجہ جے سنگھ کو موتیون کی مالا عنایت کی دوسرے دن راجہ جگت سنگھ کو بادشاہ نے خلعت مرحمت کرکے بنگش بالا اور بنگش پائین کے بندوبست پر بھیجا اور حکم دیا کہ تا جہانتک ہما کے کابل مین پہونچنے تک رسد جمع کر رکھے اور ایسی کوشش کرے کہ بعد پہنچنے کابل کے دونون بنگش سے برابر غلہ پہونچتا رہے۔

۱۰ ذی الحجہ کو راجہ جے سنگھ اور جسونت سنگھ کو ایک ایک ہاتھی حلقہ خاصہ سے عنایت فرمایا۔

۱۸ ذی الحجہ کو بادشاہ دریائے اٹک کے پُل سے اُترے۔

۲۱ ذی الحجہ کو بادشاہ نے نوشہرہ مین پہنچکر راجہ جے سنگھ اور راؤ امر سنگھ کو گھوڑے بخشے۔

۲۵ ذی الحجہ کو بادشاہ نے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजा के ख़िताब से सरफ़राज़ हुआ जो अकबर बादशाह ने उसके दादा राजा मान सिंघ को दिया था॥

राव अमर सिंघ को हाथी और राय सिंघ को झंडा इनायत हुआ॥

राजा जयराम को हज़ारी ज़ात हज़ार सवार और गोकुलदास सीसोदिये को हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का मनसब इनायत हुआ॥

बैसाख बदी १२ को बादशाहज़ादे के वास्ते पीछे से आने का हुक्म हुआ और बादशाह आगे को रवाने होगये॥

बैसाख बदी १ को बादशाह ने आसिफ़ ख़ां वज़ीर और राजा जसवंत सिंघ को भी पेशोर में छोड़ा और आप जमरोद को रवाने होगये और इन को हुक्म हुआ कि पीछे से आवें क्योंकि ख़ैबर के घाटे से एक दम इतने लशकर का गुज़रना मुशकिल था॥

نوشہرہ مین فوج کی حاضری لی تو پچاس ہزار سوار قلمبند ہوئے ۔

اُسیدن راجہ جی سنگہ کو مرزا راجہ کا خطاب عنایت ہوا جو جانشین راجہ مان سنگہ اپنے دادا کا تھا اور یہ خطاب اُسکو اکبر بادشاہ نے ہمین بندگی عنایت فرمایا تھا

راؤ امر سنگہ کو ہاتھی اور راجہ رائے سنگہ کو علم عنایت ہوا

راجہ جے رام کو ہزاری ہزار سوار کا منصب اور گوکل داس سیسودیہ کو ہزاری اور ۶۰۰ سوار کا منصب عنایت ہوا ۔

۲۶ ذی الحجہ کو بادشاہ شاہزادہ کی نسبت پیچھے سے آنیکا حکم دیکر آپ آگے روانہ ہوگئے ۔

سلخ ذی الحجہ کو بادشاہ آصف خان اور راجہ جسونت سنگہ کو پشاور مین چھوڑ کر جمرود کی طرف تشریف فرما ہوئے اور اُنکو حکم دیگئے کہ پیچھے سے آئین کیونکہ خیبر کے گھاٹے سے ایک دم اتنے لشکر کا گذرنا محال تھا ۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बरस १३वां

बैसाख सुदी ३ संबत १६९६ से ॥ ॥
बैसाख सुदी २ संबत १६९७ तक

बैसाख सुदी ३ को बादशाह अली मसजिद में पहुंचे राजा बिठ्ठल दास आगरे से लाहोर में ख़ज़ाना पहुंचा कर हाज़िर आया ॥

बैसाख सुदी ५ को राजा जसवंत सिंघ वग़ैरा भी बादशाह के पास पहुंच गये ॥

जेठ बदी ५ को छोटी काबुल में पहुंच कर बादशाह ने राजा बिठ्ठलदास को १ घोड़ा सोने की ज़ीन का ख़ासा तवेले से इनायत किया ॥

जेठ बदी १२ को बादशाह काबुल में दाख़िल हुवे ॥

असाढ सुदी ३ को राजा जसवंत सिंघ के परधान महेश दास राठोड़ को घोड़ा इनायत हुआ ॥

برس تیرہوان

۱۰۴۹ سنہ ع

۲۵ اپریل ۱۶۳۹ سنہ ع سے ۱۳ اپریل ۱۶۴۰ سنہ ع تک

یکم محرم ۱۰۴۹ سنہ کو بادشاہ علی مسجد مین پہونچے راجہ بٹہل داس بموجب حکم کے دار الخلافہ اکبرآباد سے خزانہ دار السلطنت لاہور مین پہونچا کر حاضر خدمت ہوا۔

۳ محرم کو راجہ جسونت سنگہ وغیرہ اُمرا بہی بادشاہ کے حضور مین پہونچگئے۔

۱۸ محرم کو بادشاہ نے کابل خورد مین نزول اجلال فرما کر راجہ بٹہلداس کو ایک گہوڑا خاصہ طویلہ سے زین مطلا کا عنایت فرمایا

۲۵ کو بادشاہ دولتخانہ کابل مین داخل ہوگئے۔

غرہ ربیع الاول کو کابل مین راجہ جسونت سنگہ راٹہوڑ کے پردہان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

सावन बदी ६ को बलख़ के मालिक नज़र मोहम्मद ख़ां का वकील ४०००० रुपैये की सौग़ात लेकर हाज़िर आया कुछ रोज़ पीछे बादशाह ने उसको रुख़सत किया तो ६०००० और ख़िलअत इनायत फ़रमाया ॥

सावन सुदी १५ को तुला दान के दरबार में रान सिंघ राठोड़ का मनसब हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का और राय सिंघ झाला का हज़ारी ज़ात और ४०० सवारों का असल और इज़ाफ़े से होगया ॥

भादों बदी १ को राजा बिठ्ठलदास और उसके बेटे अरजुन गोड़ को जागीर में जाने की रुख़सत हुई राजा को ख़िलअत ख़ासा इनायत हुआ ॥

भादों बदी ११ को बादशाह काबुल से बंगश के रस्ते से पीछे

مہیش داس راٹھوڑ کا پایہ عطائے
اسپ سے بلند ہوا۔

۱۹۔ ربیع الاول کو نذر محمد خان
اُوزبک والئ بلخ کا سفیر معہ سوغات
قیمتی مبلغ چالیس ہزار روپیہ کے
حاضر درگاہ والا ہوا۔

چند روز بعد بادشاہ نے
اسکو ساٹھ ہزار روپیہ اور خلعت دیکر
رخصت کیا۔

۱۴۔ ربیع الثانی کو جشن وزن
قمری کے دربار میں راج سنگھ راٹھوڑ
منصب ہزاری ذات اور چھ سو
سوار کا ہوگیا۔

رای سنگھ جھالا کا منصب اصل اور
اضافے سے ہزاری ذات اور چار سو سوار
ہوا۔

۱۵۔ ربیع الثانی کو راجہ بٹھلداس
خلعت خاصہ عنایت ہوا وہ معہ
اپنے بیٹے ارجن گوڑ کے رخصت
ہوکر اپنی جاگیر کو گیا

۲۵۔ ربیع الثانی کو بادشاہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रवाने ऊवे और घाटकी तंगी से शाहज़ादे दाराशिकोह को ऊक्म ऊआ कि कुछ दिन काबुल में रहकर मय राजा जयसिंघ वग़ैरा के पीछे से आवे और शाद खां को १ लाख रुपैये की सोग़ात नज़र मोहम्मद खां के वास्ते देकर बलख़ की तरफ़ बिदा किया॥

भादों सुदी १० को राजा बिठ्ठलदास के बडे बेटे अनिरुद्ध का मनसब असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और हज़ार १००० सवार का होगया॥

आसोज बदी ६ को कोहाट में डेरे ऊवे राजा जगतसिंघ जो दोनों बंगशों का थानेदार था और वहां रहता था उसने ८ घोडे नज़र किये

आसोज सुदी ८ को नीलाब के किनारे पर राजा जसवंतसिंघ को सुनहरी ज़ीन का घोड़ा ख़ासे तवेले से इनायत ऊआ॥

बड़ी तिब्बत के ज़मींदार संगीवमरख़ल ने छोटी तिब्बत में कुछ

کابل سے کشمیر کو براہ بنگش روانہ ہوئے اور شاہزادہ محمد داراشکوہ کو بسبب تنگی راستہ گھاٹی بنگش کے حکم ہوا کہ چند روز کابل مین رہکر معہ راجہ جے سنگہ وغیرہ کے پیچھے سے آوے اور شادخانکو بعد عطاے خلعت فاخرہ و یراق طلائی میناکار کے ایک لاکھ روپیہ کی سوغات نذر محمد خان کیلئے دیکر بلخ کو روانہ کیا

۹ جمادی الاول کو راجہ بٹھلداس کا بڑا بیٹا انرودہ اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور ہزار سوارون کا منصب دار ہوگیا۔

۲۰ جمادی الاول کو موضع کوہاٹ مین بادشاہ کی سواری پہونچی راجہ جگت سنگہ نے جو تہانہ دار بنگش بالا اور پائین کا تہا اور وہان رہتا تھا نو گھوڑے پیشکش کیے

۷ جمادی الثانی کو نیلاب کے کنارے پر راجہ جسونت سنگہ کو خاصہ طویلہ سے ایک گھوڑا مع زین مسلا کے عنایت ہوا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

दख़ल दिया था कि अली राय के बेटे आदम के लिखने पर अली मरदान ख़ां ने अपने जमाई ज़सैन बेग को कशमीर से भेजकर सिंगी बमख़ल को निकाल दिया ॥

कातिक बदी २ को बादशाह के डेरे लाहोर के पास जंडो ले के तलाव पर ज़वे वहां गोवर धन राठोड़ को जो पहिले राजा गज सिंघ का नोकर था ७ सदी ज़ात और २०० सवार का मनसब मिला ॥

कातक बदी ७ को बादशाह लाहोर में दाख़िल ज़ए और इसी दिन शाहज़ादा दारा शिकोह भी राजा जय सिंघ समेत पज़ंच कर हज़ूर में हाज़िर ज़वा ॥

आदिल ख़ां की पेशकश २ लाख रुपये की बीजा पुर से पज़ंची ॥

अली मरदान ख़ां ने किजिसको कशमीर की सूबेदारी के सिवाय लाहोर की सूबेदारी भी इना

سنگی بمجل زمیندار تبت کلان نے تبت خورد مین کچھ مداخلت کی تھی سو علیمردان خان صوبہ دار کشمیر نے تبت خورد کے زمیندار علی رائے کے بیٹے آدم کی تحریک سے اپنی داماد حسین بیگ کو بھیجکر سنگی بمجل کو تبت خورد سے نکلوا دیا۔

۱۶- جمادی الثانی کو بادشاہ کے ڈیرے نواحی لاہور مین تالاب جنڈولہ پر ہوئے وہان گوردھن راٹھوڑ کو جو پہلے راجہ گجسنگہ کا نوکر تھا سات صدی ذات اور دو سو سوارون کا منصب عطا ہوا۔

۲۱- جمادی الثانی کو بادشاہ لاہور مین داخل ہوئے اور اسی دن بادشاہزادہ دارا شکوہ بھی معہ راجہ جے سنگہ کے وہان پہنچکر باریاب ملازمت ہوا۔

عادل خان کی پیشکش قیمتی دو لاکھ روپیہ کے بیجاپور سے پہونچی۔

علیمردان خان نے کہ جس کو علاوہ صوبہ داری کشمیر کے لاہور کی صوبہ داری بہی عنایت ہوئی تھی

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यतऊई थी बादशाहकी इजाज़त
लेकर रावी नदी सेलाहोर तक
नहर लाने का काम जारी किया
जिसका नाम शाह नहर ऊआ॥

सीसतान के मालिकहम
ज़ह ने क़ंधार की हद में कुछ द
ख़ल दिया था जिस पर क़ुलीचख़ां
सूबेदार ने सीस्तान पर फ़ौज भेजी
नो लूटमार करने के सिवायसी
स्तान का बंद तोड़ कर पीछीआग
ई जिससे वह तमाम इलाक़ा ख़रा
ब होगया॥

मंगसिर सुदी१ को राजा ज
यसिंघ को ख़ासा ख़िलअत इनाय
त होकर वतन जाने की रुख़सत मि
ली

खीलू जी जोबादशाही नो
करी छोड कर आदिल ख़ां के पास
गयाथामगर आदिल ख़ां ने अपनेपा
स नहीं रखा इससे वह दोलता
बाद के इलाक़े में लूटमार करने
लगा औरंग ज़ेब ने मलिकऊसेन

بادشاہ کی اجازت لیکر دریاے
راوی سے لاہور تک شاہ نہر کے
لانے کا کام جاری کیا۔

حمزہ والی سیستان نے
حدود قندھار مین کچھ مداخلت
کی تھی اس لیے قلیچ خان نے
سیستان کے اوپر فوج بھیجی یہ
فوج ملک لوٹ کر اور سیستان
کا بند توڑ کر کہ جس سے وہ تمام
علاقہ خراب ہو گیا واپس
آئے۔

۲۹ رجب کو راجہ جے سنگھ
عنایت خلعت خاصہ سے سرفراز
ہوکر اپنے وطن کو رخصت ہوا

کھیلوجی جو بادشاہی نوکری
چھوڑ کر عادلخان کے پاس گیا
تھا اور اُسکے نہ رکھنے سے علاقہ
دولت آباد مین لوٹ مار کرتا تھا
اورنگ زیب نے اُوسکے اوپر
ملک حسین کو بھیجا جس نے تلاش
کرکے کھیلو کو مار ڈالا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को उस्के ऊपर भेजा उसने पताल गा कर खीलूजी को मार डाला ॥

पोस बदी १३ को इक़बाल नामें जहांगीरी का बनाने वाला मीर बख़शी मोतमिद ख़ां जो आख़रीवक्त में लाहोर का सूबेदार होगया था मरगया ॥

माह बदी २ को बादशाह ने नरवर के राजा रामदास के मरने की ख़बर सुनकर उसके पोते अमर सिंघ को असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का मनसब और राजा का ख़िताब दिया और क़िले नरवर की क़िले दारी भी उस्के दादा के माफ़िक़ उस्को सोंपी गई और वह इलाक़ा उसकी जागीर में मुक़र्रर हुआ ॥

फागुन बदी २ को बादशाह ने हरनाथ महापत्र को हाथी घोड़ा और लाख दाम नक़द इनायत

۲۶- شعبان کو معتمد خان مصنف اقبالنامہ جہانگیری جو پہلے میر بخشی تھا اور پھر آخری وقت مین لاہور کا صوبہ دار ہو گیا تھا - مرگیا

۱۵- رمضان کو بادشاہ نے نرور کے راجہ رامداس کے مرنے کی خبر سُنکر اون کے پوتے امر سنگہ کو اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور چھ سو سوار کا منصب اور راجہ کا خطاب عنایت کیا اور قلعہ نرور کی قلعداری دستور اوسکے دادا کے اوسی کو سونپی گئی اور وہ علاقہ بھی اسکی جاگیر مین مقرر رہا -

۱۵- شوال کو لاہور مین بادشاہ نے ہرناتھ مہاپاتر کو ہاتھی گھوڑا اور ایک لاکھہ دام نقد عنایت کئے -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फ़रमाये ॥

इसी दिन शाहज़ादा औरंगज़ेब दखन से लाहोर में बादशाह के पास हाज़िर हुआ और बादशाह ने १० लाख रुपये उसको इनाम के दिये ॥

बंगाले से ख़बर आई कि माह सुदी ८ को अकबर नगर के क़िले में आग लग कर शाहज़ादे मोहम्मद शुजाअ के महल और कारख़ाने तमाम मय ७५ सहेलियों और ५ लाख के जवाहरात के जल गये बादशाह ने यह ख़बर सुनकर २ लाख रुपया नक़द २ लाख का जवाहर और २ लाख का ज़ेवर लाहोर से उसके पास भेजा ॥ (१)

फागुन बदी १२ को बादशाह कशमीर को रवाने हुए और शाहज़ादे मुराद को बहीरे में ठहरने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि

اسیدن شاہزادہ اورنگ زیب دکہن سے حاضر آیا اور بادشاہ نے دس لاکہ روپیہ اُس کو بطور انعام کے مرحمت فرمائے

بنگالہ سے خبر آئی کہ تاریخ ۶ - ماہ شوال کو اکبرنگر کے قلعہ مین آگ لگ کر شاہزادہ محمد شجاع کے تمام محل اور کارخانے مع ۷۵ خادمہ عورتون اور پانچ لاکہ کے جواہرات کے جل گئے بادشاہ نے یہ خبر سنکر دولاکہ روپیہ نقد دولاکہ کا جواہر اور ایک لاکہ کا زیور لاہور سے اُوسکے پاس بہیجا - لے

۲۵ - شوال کو بادشاہ لاہور سے واسطے سیر کشمیر کے روانہ ہوئے اور شاہزادہ مراد کو بہیرہ مین ٹہرنے کا حکم ہُوا

(१) यह ख़बर लाहोर में बंगाले से १८ दिन में पहुंची थी ॥

لے بنگالہ سے لاہور مین یہ خبر ۱۸ دنمین پہونچی تہی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

जब काबुल जाने का ऊक्म पऊंचे
तो फ़ौरन रवाने हो जावे उसके त
ईनातयों में माधो सिंघ हरी सिंघ
राठोड़ और राजा जय राम भी थे॥

फागण सुदी १० को शाहज़ा
दा औरंगज़ेब चिनाब नदी के
किनारे से दौलताबाद को रूख़
सत ऊआ॥

फागण सुदी ११ को उसी मु
क़ाम पर राजा जसवंत सिंघ को
ख़िलत और घोड़ा सुनहरी ज़ीन
का ख़ासा तबेले से इनायत ऊआ
और वतन जाने की रुख़सत मि
ली राज सिंघ को भी ख़िलअत
और जड़ाऊ ख़ंजर इनायत हो कर
उसके साथ जाने की इजाज़त ऊई॥

चैत बदी ६ को राजा जगतसिं
घ पुणिच का रस्ता खोलने और
घाटी से बरफ़ हटाने के वास्ते र
वाने किया गया उसने वहां पऊं
चकर कशमीर के ज़मींदारों की

زیب کابل جانے کا فرمان
پہونچے فوراً روانہ ہوجاوے
اُسکی تعیناتیون مین مادہوسنگہ
ہری سنگہ راٹھوڑ اور راجہ
جے رام بھی تھے۔

۸۔ ذیقعدہ کو شاہزادہ
اورنگ زیب کنارے دریائے چناب
سے دولت آباد کو رخصت ہوا

۹۔ ذی قعدہ کو اُوسی مقام
پر راجہ جسونت سنگہ کو خلعت
اور گھوڑا سنہری زین کا طویلہ
خاصہ سے عنایت ہوا اور وطن
جانے کی رخصت ملی راج سنگہ
کو بھی خلعت اور جمدھر مرصع
عنایت ہوکر راجہ کے ساتھ
جانے کی اجازت ہوئی۔

۱۹۔ ذیقعدہ کو راجہ
جگت سنگہ پونچ کا رستہ
کھولنے اور گھاٹی سے برف ہٹانے
کیواسطے مامور ہوا اور اُس نے
وہان پہنچکر کشمیر کے زمینداروں

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की मदद से कि जिन्हें वहां के सूबेदार ने इकट्ठा करके सड़क बनाने के वास्ते भेजा था बरफ़ कटवा कर आदमियों और कारखानों के हाथियों के लिये गली निकाली और उस्में बरफ़ कुटवाकर सड़क बनवादी ॥

जेठ सुदी ५ को बादशाह बरफ़ की घाटी से गुज़रे और राजा जगत सिंघ ने घाटी के सिरे पर हाज़िर होकर मुजरा किया ॥

जेठसुदी १० को बादशाह कशमीर पहुंचे ॥

बरस १४ वां

बैसाख सुदी २ संबत १६९७ से
बैसाखसुदी २ संबत १६९८ तक

अबदुल्ला खां ने जुझारसिंघ के बेटे प्रथ्वी राज को ऊरछे के क़रीब १ जंगल में पकड़ा और चंपत लड़ कर भाग गया बादशाह ने प्रथ्वी राज को गवालियर के क़िले में क़ैद रखने का हुक्म दिया ॥

اور اُسطرف کے مزدورون کی مدد سے کہ جنکو صوبہ دار کشمیر نے جمع کر کے سڑک نبانے کے واسطے بھیجا تھا برف ہٹا کر آدمیون اور کارخانونکے ہاتھیون کے لئے گلی نکالی اور اُسمین برف کوٹ کر سڑک بنادی۔

۴- ذی الحجہ کو بادشاہ برف کی گہاٹی سے گذرے اور راجہ جگت سنگہ نے گہاٹی کے سرے پر حاضر ہو کر زمین بوس حاصل کی۔

۹ ذی الحجہ کو بادشاہ کشمیر مین پہونچے

برس چودہوان

سنہ ۱۰۵۰ھ

۱۴- اپریل سنہ ۱۶۴۰ع سے ۲ اپریل سنہ ۱۶۴۱ع تک

عبداللہ خان نے پرتھی راج بندیلہ ولد راجہ جوجہار سنگہ کو ایک جنگل مین سے قریب اُرچھہ کے گرفتار کر لیا اور چنپت بعد جنگ بھاگ گیا بادشاہ نے پرتھی راج کو قلعہ گوالیار مین

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और अबदुल्ला खां की जगह बहादुर खां को बुंदेलों की मुहिम पर तईनात करके भेजा कियोंकि अबदुल्ला खां से यह काम अच्छी तरह न हो सका था ॥

असाढ़ बदी ६ को रूस के क़ैसर मुराद खां के वकील ने कशमीर में हाज़िर होकर १ घोड़ा और सुलतान का ख़लीता पेश किया बादशाह ने उस्को १ भारी खिलअत मय जड़ाऊ खंजर और १५०००) नक़द के इनायत किया।

भट नदी के चढ़जाने से कशमीर और पंजाब में बज्रत नुक़सान पड़ंचा ॥

असाढ़ बदी ७ को शाहज़ादे औरंगज़ेब की अरज़ी से बादशाह को मालूम ज्रआ कि गोंडवाने के ज़मींदार चांदा के बेटे बापजी ने कि जिस को बाप की जगह बैठने की इजाज़त ज्रई थी बुरहानपुर

قید کردیا اور بہادر خان کو بجائے
عبداللہ خان واسطے استیصال
بندیلون کے مقرر کرکے بہیجا کیونکہ
یکام عبداللہ خان سے اچہی طرح
نہو سکاتھا۔

۲۰ صفر کو کشمیر مین ارسلان
آقا سفیر سلطان مرادخان والی
روم نے حاضر ہوکر قیصر کا نامہ
اور ایک گھوڑا پیش کیا خلعت
فاخرہ کمرخنجر مرصع اور پندرہ ہزار
روپیہ اُسکو عطا ہوئے۔

دریائے بہٹ کی طغیانی
سے کشمیر اور پنجاب مین
بہت نقصان پہونچا۔

۲۱۔صفر کو شاہزادہ
اورنگ زیب کی عرضی برہانپور
سے پہونچی لکہا تھا کہ چاندا
زمیندار گونڈوانہ کا بیٹا باپ جی
جو بعد گذرجانے اپنے باپ
کے حسب الحکم جانشین ہوا تہا
اندنون برہان پور مین حاضر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

में हाज़िर होकर ४ लाख रुपै नज़र किये हैं बादशाह ने वह रुपया शाहज़ादे को ही बख़्श दिया ॥

आसाढ़ सुदी २ को शाहज़ादे मुराद के नाम काबुल जाने का हुक्म लिखा गया ॥

असाढ़ सुदी ११ को करम सी राठौड़ का बेटा राम सिंघ जो राणा जगत सिंघ का भानजा था और राणा की ही नौकरी में था बादशाही बंदगी के वास्ते राणा के पास से हाज़िर आया बादशाह ने उसको ख़िलअत देकर हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का मनसब बख़्शा ॥

सावन सुदी ५ को तुलादान के दरबार में राय साल दरबारी के बेटे भोज राज को हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों का मनसब मिला, राय रायां का १ हाथी नज़र हुआ और राजा राय सिंघ को सुनहरी ज़ीन का घोड़ा इनायत हुआ ॥

آیا اور چار لاکھہ روپیہ اس نوازش کے شکرانہ مین لایا ہے بادشاہ نے وہ روپیہ شاہزادہ کو ہی عطا کر دیا۔

سلخ ماہ صفر کو شاہزادہ مراد کے نام کابل جانے کا حکم لکھا گیا۔

۱۱- ربیع الاول کو کرم سی راہٹوڑ کا بیٹا رام سنگہ جو رانا جگت سنگہ کا بہانجا اور عمدہ نوکر تھا بادشاہی ملازمت کے ارادہ سے حاضر آیا بادشاہ نے اُسکو خلعت اور منصب ہزاری ذات وچہہ سو سوار کا عنایت فرمایا۔

۳ ربیع الثانی روز دوشنبہ کو جشن وزن قمری مین رای سال درباری کے بیٹے بہوجراج کو ہزاری ذات اور پانسو سوار کا منصب عطا ہوا۔

راے مان کا ایک ہاتہی نذر ہوا راجہ رای سنگہ کو گہوڑا معہ زین مطلا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भादों सुदी ७ को राजा जगत सिंघ ने अरज़ किया कि कांगड़े की फ़ौजदारी मुझ को इनायत होवे तो हरसाल ४ लाख रुपये ॥ ॥ वहां के ज़मींदारों से लेकर खज़ाने में भेजता रहूंगा॥

भादों सुदी ६ को बादशाह राजा जगत सिंघ को ख़िलअत और चांदी की ज़ीन का घोड़ा देकर कांगड़े की फ़ौजदारी पर भेजा॥

इसी दिन टोडरमल अफ़ज़ल ख़ानी को राय का ख़िताब ख़िलत और ख़िदमत दीवानी फ़ौजदारी और अमीनी सरकार सहरंद की इनायत हुई॥

असोज बदी १० को बादशाह ने ज़ाफ़र ख़ां और राजा राय सिंघ वग़ैरा को ख़ालिसे के फ़ालतू कारख़ानों के साथ भंबर की तरफ़ रवाने किया॥

आसोज सुदी ६ को बादशाह

کے عنایت ہوا۔

۶ جمادی الاول کو راجہ جگت سنگ نے عرض کرائی کہ جو فوجداری دامن کوہ کانگڑہ کی مجھکو عنایت ہوجاوے تو مین ہر سال چار لاکھ روپیہ وہان کے پہاڑی زمینداروں سے وصول کرکے خزانہ مین پہونچایا کرونگا

۸ جمادی الاولکو بادشاہ نے راجہ جگت سنگ کو خلعت اور گھوڑا روپہلی زین کا عنایت کرکے کوہستان کانگڑہ کی فوجداری پر بھیجا۔

اسی دن ٹوڈرمل افضلخانی کو خلعت رائے کا خطاب اور عہدہ دیوانی امینی اور فوجداری سرکار سہرند کا عنایت ہوا۔

۲۸۔ جمادی اول کو بادشاہ نے جعفر خان راجہ رائے سنگہ اور دوسرے بادشاہی بندون کو معہ فالتو۔ کارخانجات سرکار خالصہ شریفہ کے بھنبر کیطرف روانہ کیا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कशमीर से लाहोर की तरफ़ रवाने ऊवे किशटवार के राजा कंवर सैन को जो सूबे कशमीर को तइनातियों में से था खिल्लअत औ रघोड़ा इनायत हो कर सरख़सत ऊई

कातक सुदी ६ को मुक़ाम बहीरे में राजा रूम सिंघ ने हाज़िर हो कर सलाम किया ॥

मंगसिर सुदी २ को बादशाह लाहोर में पऊंचे ॥

पोस बदी ७ को शाहज़ादे मुराद बख़्श हाज़िर ऊआ उसके साथ राव रतन का बेटा माधो सिंघ भी दरबार में हाज़िर आया ॥

बहादुर ख़ां ने चंपत बुंदेले से लड़कर उसको भगा दिया ॥

माह बदी ३ को मुल्ला सादुल्ला अर्ज़ मुकर्रर (दूसरी दफ़े अर्ज़ करने की) ख़िदमत पर नोकर ऊआ यही बाद को सादुल्ला ख़ां वज़ीर कहलाया ॥

دو شنبہ ہفتم جمادی الثانی کو بادشاہ کشمیر سے لاہور کی طرف روانہ ہوئے راجہ کنور سین کشتواری کو جو صوبہ کشمیر کی تعیناتیوں میں سے تھا خلعت اور اسپ عنایت ہوکر گھر جانے کی رخصت ہوئی۔

۵ رجب کو راجہ رائے سنگھ نے مقام بہیرہ میں حاضر ہوکر دولت آستان بوسی کی حاصل کی۔

غرہ شعبان کو بادشاہ لاہور میں رونق افروز ہوئے۔

۱۹ شعبان کو شاہزادہ مراد بخش حاضر آیا اوسکے ساتھ راو رتن کا بیٹا مادھو سنگھ بھی بادشاہ کے حضور میں باریاب ہوا۔

بہادر خان نے چنپت بندیلہ سے لڑکر اسکو بھگا دیا

۱۷ رمضان کو ملا سعد اللہ خدمت عرض مکرر پر نوکر ہوا جو بعد کو سعد اللہ خان وزیر کہلایا۔

۱۶ شوال کو صوبہ کابل

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पोस बदी २ को सूबे काबुल के अख़बार से मालूम ड़आ कि सैयद दिलेर ख़ां थानेदार नोशहरा यूसूफ़ ज़ई पठानों के मुक़ाबिले में जोउस्के ऊपर चढ़ कर आये थे अपने भाई बंदों समेत मारा गया ॥

फागण बदी ५ ब्रहसपत वार को बादशाह के ५० वें बरस शुरू होने का तुला दान ड़आ जिस्के दरबार में अली मरदान ख़ां को बड़त सी नवाज़िशों के साथ काबुल की सूबेदारी मिली चंद्र मणि बुंदेला उस सूबे के मदद गारों में था इस लिये उस्को घोड़ा इनायत ड़आ ॥

फागण सुदी १० को रावरतन हाडा का बेटा माधो सिंघ ५०० सवारों के इज़ाफ़े से ३ हज़ारी ज़ात और ढाई हज़ार सवारों का मनसबदार ड़आ ॥

महेस दास राठोड़ और चंद्र भान को हाथी इनायत ड़ओ ॥

کے وقایع سے معلوم ہوا کہ سید دلیر خان تہانہ دار نوشہرہ یوسف زئی افغانون کے حملہ مین سعہ اپنے چند بھائیون اور رشتہ دارون کے کام آیا۔

روز پنجشنبہ ۱۹ شوال کو بادشاہ کا پچاسوان شمسی برس شروع ہوا جس کے تُلا دان کی جشن مین علیمردان خان کو بہت سی نوازشوں کے ساتھ کابل کی صوبہ داری عنایت ہوئی اور چندرمن بندیلہ کو بھی جو اوس صوبہ کے کُمکیون مین تہا گہوڑا بخشا گیا۔

۹ ذی قعدہ کو لاہور مین راؤ رتن ہاڈا کے بیٹے مادہو سنگہ نے پانسو سوارون کے اضافہ سے سہ ہزاری ذات و ڈہائی ہزار سوار کے منصب پر سربلندی پائی۔

مہیش داس راٹہوڑ اور چندربہان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फागण सुदी १३ को राजा जयसिंघ अपने वतन से आया ॥

फ़ागण सुदी १४ को महेश दास के बेटे रतन को सुनहरी साज़ की तलवार इनायत हुई ॥

चैत सुदी ६ सं· १६९८ को राजा जय सिंघ के बड़े बेटे रामसिंघ को हाथी इनायत हुआ ॥

चैत सुदी १० को किनोरोज़ (नया दिन) था बादशाह ने शाहज़ादे मुराद को फिर काबुल के इन्तज़ाम पर भेजा राजा जय सिंघ हरी सिंघ राठोड़· राजा जयराम राय काशी दास, नाहर, इन्द्र साल हाडा, और चंद्र भान कछवाहा, उस के साथ गये ॥

राजा जय सिंघ को खिलअत जमधर मीना कार फूल कटारी और घोड़ा सुनहरी ज़ीन का इनायत हुआ ॥

वैसाख बदी २ को राजा ज

کو ہاتھی عنایت ہوئے -
۱۲- ذیقعدہ کو راجہ جیسنگھ
وطن سے حاضر آیا -
۱۴ ذیقعدہ کو مہیش داس کے
بیٹے رتن کو تلوار معہ ساز طلائی
کے عطا ہوئی +
۵ ذی الحجہ کو راجہ جے سنگھ
کے بڑے بیٹے رام سنگھ کو ہاتھی
عنایت ہوا +
۹ ذی الحجہ کو نوروز ہوا
اس دن بادشاہ نے پھر شاہزادہ
مراد بخش کو کابل کی طرف روانہ
کیا راجہ جے سنگھ کچھواہہ ہری سنگھ
راٹھوڑ - راجہ جیرام - رائے کاشی داس
ناہر - اندر سال ہاڈا - اور چندر بھان
کچھواہہ اوسکے ساتھ تعینات ہو کر گئے
راجہ جے سنگھ کو خلعت
جمدھر میناکار پھول کٹارہ سمیت
اور گھوڑا معہ زین طلا کے
عنایت ہوا -
۱۶ - ذی الحجہ کو راجہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जसवंत सिंघ वतन से हाज़िर आया ॥

बैसाख बदी ७ को राजा राय सिंघ को हाथी इनायत हुआ ॥

जंमूं के चकले का फ़ौजदार शकरुल्ला अरब था वह मौक़ूफ़ हो कर सरंदाज़ खां उस्की जगह हुआ ॥

बैसाख बदी ८ को राव अमर सिंघ को ख़िलअत और घोड़ा चांदी की ज़ीन का और हाथी और चतुरभुज चोहान को ख़िलअत और घोड़ा इनायत हो कर दोनों को शाहज़ादे मुराद के पास जाने का हुक्म हुआ ॥

बैसाख बदी १३ को राजा जसवंत सिंघ को ख़िलअत और जड़ाऊ धोप (कत्ती) इनायत हुई ॥

बरस १५ वां

बैसाख बदी ३ सं॰ १६९८ से बैसाख बदी २ सं॰ १६९९ तक

جسونت سنگہ نے وطن سے آکر دولت ملازمت حاصل کی -

۲۱- ذی الحجہ - راجہ راےسنگہ کو ہاتھی عنایت ہوا +

جموں کے چکلہ کا فوجدار شکراللہ عرب تھا اُسکو بدلکر بادشاہ نے سرنداز خاں کو مقرر کیا -

۲۲- ذی الحجہ راؤ امر سنگہ کو خلعت اور گھوڑا چاندی کی زین کا اور ہاتھی و چتربھوج چوہان کو خلعت اور گھوڑا عنایت ہوکر دونوں کو شاہزادہ مراد بخش کی خدمت مین جانیکا حکم ہوا -

۲۷- ذی الحجہ کو راجہ جسونت سنگہ کو خلعت اور جڑاؤ دھوپ (کتی) عنایت ہوئی +

برس پندرھوان

سنہ ۱۰۵۱

۲ اپریل سنہ ۱۶۴۱ع سے ۱۲ مارچ سنہ ۱۶۴۲ع تک

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बैसाख सुदी २ को बादशाह ने महेशदास राठौड़ को राजसिंघ के मर जाने से खिलअत और घोड़ा देकर राजा जसवंत सिंघ के कामों का अख्तियार दिया॥

बैसाख सुदी १२ को १००० सवार राजा जसवंत सिंघ के मनसब से जो पांच हजारी पांच हज़ार सवारों का था दो अस्पा और सिह अस्पा मुकर्रर हुवे॥

महेशदास महाबत ख़ानी को हज़ारी ज़ात और ८०० सवारों का मनसब मिला॥ ८

आज़म खां ने जो ८ बरस से गुजरात का सूबेदार था कोलयों और काठियों का चोरी धाड़ा बंद करके क़िला शाहपुर का काठियावाड़ में और मज़बूत क़िले आज़मपुर और ख़लील आबाद को लीवाड़ में बनाये और जालोर से लेकर काठियावाड़ की सरहद

غرہ محرم کو بادشاہ نے مہیش داس راٹھوڑ کو راج سنگھ کے مرجانے سے خلعت اور گھوڑا عنایت کرکے راجہ جسونت سنگھ کا مختار المہام مقرر فرمایا۔

۱۱ محرم کو ایکہزار سوار راجہ جسونت سنگھ کے منصب میں سے جو پانچہزاری ذات اور پانچہزار سوار کا تھا دو اسپہ اور سہ اسپہ ہوگئے۔

مہیش داس مہابت خانی کو ہزاری ذات اور آٹھ سو سوار کا منصب عنایت ہوا۔

رائے سنگھ جہالا نے ہزاری ذات اور پانسو سواروں کے منصب پر مقرر ہونے کی عزت پائی۔

اعظم خان نے جو آٹھ برس سے گجرات کا صوبہ دار تھا کولیوں اور کاٹھیوں کی چوری اور راہزنی بند کرنے کیواسطے دو قلعہ اعظم پور

का मनसब मिला॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तक जो "जाम" और भाराइला को और
समंदर से मिली ऊई है किसी फ़
सादी को फ़साद करने की ताक़त
न रही मगर जाम ने जैसा कि चा
हिये बंदगी न की इस से आज़म
ख़ां उसके ऊपर चढ़ कर गया जब
जाम नगर ७ कोस रहा तो जाम उ
ससे मिलने को आया मगर ख़ान
ने कहला भेजा कि जब तक महमू
दी सिक्कों की टकसाल नवानग
र से मौकूफ़ न करोगे पीछा न छू
टेगा जाम ने १०० कच्छी घोड़े औ
र ३ लाख महमूदी देना क़बूल क
रके उस टकसाल के बंद करदेने
का इक़रार कर लिया और यह
भी अंगेज़ लिया कि जो अहमदा
बाद की रैय्यत उसके मुल्क में है उ
सको अपनी सरहद से निकाल दे
गा ता कि वह अपने वतन को
चली जावे और जब अहमदाबा
द का सूबेदार गिरासियों और

خلیل آباد کولی واڑہ مین اور ایک
قلعہ شاہ پور کے نام سے کاٹھیاواڑ
مین بنایا اور سرحد جالور سے کاٹھیاواڑ
کی سرحد تک جو علاقجات جام و بہارا
اور دریائے شور سے ملحق ہے ایسا
انتظام کیا کہ کسی مفسد مین فساد
کرنے کی طاقت باقی نہ رہی مگر جام نے
قرار واقعی بندگی نہ کی اس سے اعظم خان
اوسکے اوپر چڑھ کر گیا جب جام نگر کے سات
کوس ادہر پہنچا تو جام اُس سے ملنے
کے لئے آیا مگر خان نے اُس سے
کہلایا کہ جب تک نوانگر سے محمودی سکہ
کا مضروب ہونا موقوف نکرے گا
عقب گذاری نہوگی جام نے ایک سو
کچھی گھوڑے اور تین لاکھ محمودی
دینا قبول کرکے اُس ٹکسال کی
موقوفی کا بھی اقرار کیا اور کہا کہ احمد آباد
کی رعیت کو جو اُسکے ملک مین ہے
اپنی سرحد سے نکال دیگا تاکہ وہ
اپنے وطن کو چلی جاوے اور جب
ناظم احمد آباد کولیون اور گراسیون

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोलियों को सज़ा देने के वास्ते चढ़ेगा तो अपने बेटे को मय फ़ौज के उस्के पास भेजेगा बाद इस ठहराव के जाम आज़म ख़ां के पास आया और आज़म ख़ां उससे मिलकर शाह पुर को लौट गया ॥

पहिले जेठ की सुदी ४ को राजा जसवंत सिंघ को १ हाथी ख़ासा हलक़े मेंसे इनायत हुवा ॥

दूसरे जेठ की सुदी २ को वह नहर जो अली मर्दान ख़ां की तजवीज़ से तैयार होती थी लाहोर में पहुंच गई बादशाह ने उस के नारे पर बाग़ लगाने और महल बनाने का हुक्म दिया ॥

दूसरे जेठ की सुदी ९ को राजा बिट्ठल दास अपनी जागीर से आया

असाढ बदी ३ को नरवरके राजा राम दास का बेटा राजा अमर सिंघ गवालियर के जागीरदार सैयद ख़ान जहां के साथ दरगाह में

کی تنبیہہ وتادیب کو متوجہ ہوگا تو اپنے بیٹے کو معہ فوج کے اوس کے پاس بھیجے گا بعد اس قرار داد کے وہ اعظم خان کے پاس آیا- اور اعظم خان نے اوس سے ملکر شاہ پور کی طرف مراجعت کی-

۲- صفر کو ایک ہاتھی خاصہ حلقہ مین سے راجہ جسونت سنگھ کو عنایت ہوا-

۲۹- صفر کو وہ نہر جو علیمردان خان کی تجویز سے تیار ہو رہی تھی لاہور تک پہونچگئی بادشاہ نے اوسکے کنارہ پر ایک عمدہ باغ اور محل تیار کرنے کا حکم دیا-

۷- ربیع الاول کو راجہ بٹھلداس اپنی جاگیر سے آیا-

۱۷- ربیع الاول کو نرور کے راجہ امر سنگھ ولد راجہ رامداس نے سید خانجہان جاگیردار گوالیار کے ہمراہ درگاہ مین حاضر ہوکر ایک ہاتھی نذر کیا-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

हाज़िर ऊआ और १ हाथी नज़र किया ॥

असाढ़ बदी ५ को राजा बिठ्ठल दास को ख़ासा हलक़े से हाथी इनायत ऊआ ॥

असाढ़ सुदी ६ सोमवार को तुलादान के दरबार में राजा जसवंत सिंघ को ख़ासा तवेले से सोने के साज़ का घोड़ा इनायत ऊआ ॥

राजा अमर सिंघ को नक़्क़ारा मिला ॥

करम सी राठोड़ के बेटे राम सिंघ का मनसब असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का होगया ॥

असाढ़ सुदी १२ को राय टोडर मल को जो फ़ौजदार और अमीन चकले सरहिंद का था लक्खी जंगल की फ़ौजदारी भी इनायत ऊई ॥

۱۹- ربیع الاول کو ایک ہاتھی حلقہ خاصہ سے راجہ بٹھل داس کو عنایت ہُوا +

روز دوشنبہ ۲۴ ربیع الثانی کو جشن وزن قمری مین راجہ جسونت سنگہ کو خاصہ طویلہ سے ایک گہوڑا مع ساز طلا کے عنایت ہُوا -

راجہ امر سنگہ کو نقارا ملا -

رام سنگہ ولد کرم سی راٹھوڑ کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور سات سو سوارون کا ہو گیا

۱۰- ربیع الثانی کو لکھی جنگل کی فوجداری بھی رائے ٹوڈرل کے متعلق ہوئی جو امین و فوجدار چکلہ سرہند کا تھا +

راجہ جگت سنگہ کے اوپر مہم

۱۵- جمادی الاول کو راجہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजाजगत सिंघके ऊपरमोहिम
भादों बदी १ को कांगडे की
थाने दारी राजा जगत सिंघ से उतर
कर काबुल के अगले सूबेदार सई
द ख़ां के बेटे ख़ाना ज़ाद ख़ां को इ
नायत ऊई क्योंके अब सईद ख़ां
पंजाब का सूबे दार होगया था ॥
यह राजा जगत सिंघ राजाबा
सू का बेटा था इस का बड़ा बेटा
राज रूप २ बरस पहिल्ले जब कि
बाद शाह लाहोर मेंथे कांगडे
की फ़ौजदारी और वहां के ज़िमीं
दारों से पेशकश लेने के वास्ते
मुक़र्रर ऊआ था पिछले बरस ज
ब बाद शाह कशमीर मेंथे तो राज
रूपका अपनेबापसेबाग़ी होजाना मा
म शहूर ऊआ और राजा जग
त सिंघ ने बाज़े वज़ीरां की मार
फ़त अर्ज़ कराई कि जो कांगडे
की फ़ौजदारी मेरे हवाले होजा
वे तो मैं राज रूप को भी पकड़लूंगा

جگت سنگہ کی بدلی فوجداری دامن
کوہ کانگڑہ سے ہوئی اور اوسکی
جگہہ سعید خان بہادر ظفر جنگ
صوبہ دار سابق کابل وحال پنجاب
کا لڑکا خانہ زاد خان مقرر ہوا
یہ جگت سنگہ راجہ باسو کا
بیٹا راجروپ دو سال پہلے فوجداری
دامن کوہ کانگڑہ اور وہان کے
زمیندارون سے پیشکش لینے
کے واسطے مامور ہوا تھا دوسرے
برس یعنے پچھلے سال جب
بادشاہ کشمیر مین تھے تو راجروپ کا
اپنے باپ سے باغی ہوجانا
مشہور ہوا اوس وقت
راجہ جگت سنگہ نے بعضے
وزیرون کے ذریعہ سے
عرض کرائی کہ جو فوجداری
دامن کوہ کانگڑہ کی مجھ کو
عنایت ہو تو مین راجروپ
کو بھی گرفتار کرلون گا اور
ہر سال چار لاکھ روپیہ بھی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और हर साल ४ लाख रुपये पे शकश के भी यहां के ज़िमींदा रों से वसूल किया करूंगा जब उस की यह अर्ज़ मंज़ूर हुई तो उ स ने अपने वतन में जाकर तारा गढ़ के क़िले को जो पहाड़ के ऊपर है गोले और बारूद वग़ैरा लड़ाई के सामानों से सजा या औ र अपने भाई सूरजमल की तरह जो सज़ा पा चुका था बाग़ी होने का इरादा किया जब यह हाल बादशाह को मालूम हुआ तो उ स्को हाज़िर होने का हुक्म लि खा जिस्के जवाब में उस ने कई उज़्र लिख भेजे बादशाह ने सुं दर कविराय को उस्का हाल दरयाफ़्त करने के वास्ते भेजा और यह फ़रमाया कि उस्को न मक हरामी के बुरे नतीजे से भी वाक़िफ़ कर देना और १ हुक्म फिर भी उस्के नाम हाज़िर होने का	وہان کے زمینداروں سے بطور پیشکش کے تحصیل کرونگا جب اوسکی یہ عرض منظور ہوئی تو اوسنے اپنے وطن مین جاکر قلعہ تاراگڈہ کو جو پہاڑ کے اوپر ہے آلات قلعداری سے بخوبی استحکام دیا اور اپنے بھائی سورج مل کی طرح ارادہ بغاوت کیا جو اپنے اعمال کی سزا پا چکا تھا۔ جب یہ حال بادشاہ کو معلوم ہوا تو اوسکے بلانے کو حکم بھیجا جسکے جواب مین اسنے ایک عرضی چند در چند عذرات کی لکھ بھیجی بادشاہ نے سندر کب رائے کو اوسکا حال دریافت کرنے کے واسطے جانے کا حکم دیکر فرمایا کہ اسکو نمکحرامی کے نتیجہ بد سے آگاہ کر دینا اور پھر ایک فرمان بھی اوسکی طلبی کا سندر کو لکھدیا۔ سندر نے وہان پہنچکر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लिख दिया सुंदर ने वहां पहुंच कर अरज़ी लिखी कि जगत सिंघ डरगया है और यह अर्ज़ करता है कि मुझ को १ साल और वतन में रहने की मोहलत मिल जावे मैं अपने बेटे राजरूप को भेज दूंगा मगर दिल में उसके पाप है इस पर बादशाह ने ३ फ़ौजें उसको सज़ा देनेके लिये भेजीं १ फ़ौज का अफ़सर सैयद खान जहां को दूसरी का सईद खां को और तीसरी का असालत खां को किया पहिली फ़ौज में राजा अमर सिंघ नरवरी, राव रण सिंघ भदोरिया दूसरी में राजा राय सिंघ गोकुलदास सीसोदिया, राय सिंघ झाला, किरपा राम गोड़ और चैन सिंघ था तीसरी में कोई राजपूत सरदार नहीं था इनतीनों के ऊपर शाहज़ादे मुराद

عرضی لکھی کہ اگرچہ جگت سنگہ ڈر گیا ہے مگر یہ عرض کرتا ہے کہ مجھکو ایک برس تک اور وطن مین رہنے کی مہلت ملجاوے مین اپنے بیٹے راجروپ کو بھیجدونگا مگر باطن مین گمراہ معلوم ہوتا ہے۔

بادشاہ نے یہ حال معلوم کرکے تین فوجین اوس کی گوشمالی کے واسطے روانہ کین ایک کا افسر سید خانجہان کو دوسری کا سعید خان بہادر ظفر جنگ کو اور تیسری کا اصالت خان کو کیا۔

پہلی فوج مین راجہ امرسنگہ نروری رن سنگہ بھدوریہ دوسری مین راجہ رائے سنگہ گوکلداس سیسودیہ رائے سنگہ جھالا کرپارام گوڑ اور چین سنگہ تھے اور تیسری مین کوئی راجپوت سردار نہین تھا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को अफ़सर करके उसके नाम हुक्म लिखा कि जो अमीर सूबे काबुल की मददगारी में तईनात हैं उनके साथ स्याल कोट के रस्ते से पठांयें को जावे उस वक्त राजा जय सिंघ, राव अमर सिंघ, हरी सिंघ राठेड़, चंद्र मण बुंदेला, राय काशी दास और नाहर सोलंखी शाह ज़ादे के पास तईनात थे॥

ये तीनों फ़ौजें सावन सुदी ८ को विदा हुईं और शाह ज़ादे के पहुंचने तक उन को रायपुर और बहराम पुर में ठहरने का हुक्म हुआ॥

राय राय सिंघ राजा अमर सिंघ गोकुल दास सीसोदिया और राय सिंघ झाला को घोड़े और खिलत दियेगये॥

بادشاہ نے ان تینون فوجون کے اوپر شاہزادہ مراد بخش کو افسر کرکے اوسکے نام حکم لکھا کہ معہ امراے کمکی صوبہ کابل کے سیالکوٹ کے راستہ سے پٹھان کوٹ کو روانہ ہوجاوے راجہ جے سنگہ راو امر سنگہ ہری سنگہ راٹھوڑ چندر من بندیلہ راے کاشی داس و ناہر سولنکہی شاہزادہ کے ہمراہ تھے۔

یہ تینون فوجین ۷ جمادی الاول کو رخصت ہوئین انکو شاہزادہ کے آنے تک راے پور اور بہرام پور مین ٹھیرنے کا حکم تھا۔

راجہ راے سنگہ راجہ امر سنگہ گوکلداس سیسودیہ اور راے سنگہ جھالا کو وقت رخصت اسپ و خلعت عنایت ہوے

(९) राजा जगत सिंघ जिस इलाक़े का मालिक था उसका नाम पठान है॥

(۹) راجہ جگت سنگہ جس علاقہ کا مالک تہا اوسکا نام پٹھان ہے جہان اب نور پور ضلع کانگڑہ بنا ہے॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फिर अबदुल्ला ख़ां बहादुर फ़ीरोज़ जंग और क़ुलीच ख़ां वग़ैरा कई और अमीर भी इस मोहिम पर तईनात किये गये ॥

भादों बदी ७ को बादशाह ने आगरे के सूबेदार वज़ीर ख़ां के मरने की ख़बर सुनकर आगरे के क़िले और सूबे की हिफ़ाज़त राजा बिट्ठलदास को सौंपी और उस को ख़ासा ख़िलत भी इनायत किया ॥

कातक बदी १ को बयूतात (कारख़ानों) की दीवानी आक़िल ख़ां से उत्तर कर राय रायां को मय ख़िलत के मिली

कातक बदी ४ को ७१ उमदा घोड़े अरब से १ लाख रुपयों में ख़रीद होकर आये उन में से बादशाह ने १ घोड़े को जो १५००० का था बादशाह पसंद नाम रख कर अपने तमाम

پھر عبداللہ خان بہادر فیروز جنگ اور قلیچ خان وغیرہ کئی اور امیر بھی اس مہم پر تعینات کئے گئے ✤

۲۱- جمادی اول کو بادشاہ نے آگرہ کے صوبہ دار وزیر خان کے مرنے کی خبر سُنکر قلعہ کی حفاظت اور صوبہ دارالخلافت اکبر آباد کی حراست راجہ بیٹھلداس گوڑ کو عنایت کرکے خلعت خاص مرحمت فرمایا ✤

۱۵ رجب کو خلعت و خدمت دیوانی بیوتات کی رائے رایان کو بتغیر عاقل خان کے عنایت ہوئی -

۱۸- رجب کو ۷۱ عمدہ گھوڑے عرب سے ایک لاکھ روپیہ میں خرید ہوکر آئے انمیں ایک گھوڑا جو پندرہ ہزار روپیہ کی قیمت کا تہا بادشاہ نے پسند کرکے اوسکا نام شاہ پسند

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घोड़ों से अव्वल नंबर पर रक्खा और १ घोड़ा सुनहरी ज़ीन का राजा जसवंत सिंघ को भी बख़्शा बादशाह को घोड़ों का बऊत शौक़ था हमेशा उमदा २ घोड़े अरबी इराक़ी और तुरकी नसल के मंगाया करते थे॥

· कातक सुदी ६ को चकले सरहिंद के फ़ौजदार और अमीन, राय टोडर मल को ख़िलअत हाथी और घोड़ा इनायत ऊआ। क्योंकि उसने उस ज़िले के ख़ालसे को जैसा कि चाहिये आबाद किया था॥

कातक सुदी १५ को अबदुल्ला ख़ां फ़ीरोज़ जंग जो शाहज़ादे मुराद के लशकर में राजा जगत सिंघ को सज़ा देने के वास्ते तईनात ऊआ था कुछ अर्ज़ करने के वास्ते हाज़िर आया मगर बादशाह ने उसकी अरज़ में कुछ

رکہا اور اپنے تمام گھوڑون کا سرد فتر کیا ایک گھوڑا معہ زین طلا کے راجہ جسونت سنگہ کو بھی عنایت فرمایا بادشاہ کو گھوڑون کا بہت شوق تہا۔ اور ہمیشہ عمدہ عمدہ گھوڑے عربی عراقی اور ترکی وغیرہ منگوایا کرتے تھے

۸۔ شعبان کو راے ٹوڈرمل فوجدار و امین چکلہ سہرند کو بادشاہ نے ہاتھی اور گھوڑے عنایت کئے کیونکہ اُسنے اس ضلع کے خالصہ کو جیسا کہ چاہئے آباد اور گلزار کیا تہا۔

۱۴۔ شعبان کو عبدالله خان بہادر فیروز جنگ جو واسطے تنبیہ راجہ جگت سنگہ کے شاہزادہ مرادبخش کے لشکر مین تعینات ہوا تھا کچھ عرض معروض کرنے کے لئے حاضر آیا بادشاہ نے اُوسکی عرض مین کچھ غرض دیکھکر اوسکو تو اسلام آباد کی طرف

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग़रज़ मिली हुई देख कर उसको तो इसलामाबाद की तरफ़ बुंदेलों की मोहिम पर भेज दिया और बहादुर ख़ां के वहां से शाहज़ादे के पास पहुंचने का हुक्म लिखा ॥

पलामूं पर मोहिम

पटने से २५ कोस पर पलामूं का इलाक़ा है और वहां से १५ कोस ज़मींदार का क़िला है बलभद्दर चेरू का बेटा प्रताप पीढ़ियों से वहां का राजा था जो विकट पहाड़ों में रहने से बादशाही बंदगी नहीं करता था अबदुल्ला ख़ां के पीछे शायस्ता ख़ां पटने का सूबेदार हुआ तो उसने बादशाह को अरज़ी परताप की शिकायत में लिखी जिस पर बादशाह ने सज़ा देने का हुक्म लिखा भेजा तब शायस्ते ख़ां पटने

واسطے انصرام لبقیہ مہم بندیلہ کے بھیجا اور بہادر خان کو وہان سے شاہزادہ مراد بخش کے پاس پہنچکر راجہ جگت سنگھ کی مہم مین شامل ہونے کا حکم لکھا۔

پلاموں کی مہم

پٹنہ سے ۲۵ کوس پر پلامونکا علاقہ ہے اور وہان سے ۱۵ کوس زمیندار کے رہنے کا قلعہ ہے بلبھدر چیرو کا بیٹا پرتاپ پشتون سے وہان کا راجہ تھا جو کوہستان دشوارگذار مین رہنے سے بادشاہ کی اطاعت نہین کرتا تھا عبداللہ خان کے بعد جب شایستہ خان پٹنہ کا صوبہ دار ہوا تو اُس نے بادشاہ کو عرضی پرتاپ کے اطاعت نکرنے کی شکایت مین لکھی بادشاہ نے اُسکی گوشمالی کا حکم بھیجا شایستہ خان اپنے بیٹے محمد طالب کو پٹنہ مین چھوڑکر تاریخ ۱۷- رجب سنہ ۱۰۵۱ کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

में अपने बेटे मोहम्मद तालि
ब को छोड़ कर मंगसिर बदी १
सं॰१६६७ को ५०० सवारों सेर रवा
नेहुआ गया, तक पटने और प
लासूं की सरहद थी वहां से आ
गे हर मंज़िल पर ख़ान अपने ल
शकर के चौतरफ़ खाई खोद क
र उस्के ऊपर मिट्टी की दीवार
बनाता था और रात को पूरा चौ
की पहरा रखता था कि जिस्में
दुशमन छापा न मार सके कूच
के वक़्त जंगल काटता हुआ औ
र दोनों तरफ़ के गावों को जला
ता हुआ जाता था दुशमन घात
में रह कर जब क़ाबू पाते थे त
ब हमला करके मुक़ाबिला क
रते ये ख़ान इस तरह लड़ता
भिड़ता फागुण सुदी ६ संबत
१६६७ को पलासूं के उत्तर में जा
पहुंचा मगर वहां बहुत ही घना
जंगल था ख़ानने कुछ लोगों को

معہ جمعیت پانچہزار سواروں کے
روانہ ہوا گیا تک پٹنہ اور پلاموں
کی سرحد تھی اسلئے وہان سے
آگے خان مذکور ہر منزل پر
لشکر کے گرد خندق کہود کر
اور اوسکے اوپر مٹی کی دیوار بنا کر
رات کو پہرہ اور چوکی کا ضابطہ
کرتا تھا تاکہ دشمن چہاپہ نہ مار سکے
اور دن کو جنگل کاٹتا اور دونون
طرف کے گانو لوٹتا جاتا تہا دشمن
لوگ گہات مین رہکر جہان قابو
پاتے تھے مقابلہ کرتے تھے خانیہ
خان اسطرح لڑتا بھڑتا تاریخ ۵-
ذیقعدہ کو پلاموں کے شمالی
بازو پر پہنچا وہان جنگل بہت گہنا
تھا خان نے جنگل کٹوانے کے
لئے ایک جماعت مقرر کی جس
نے دشمنوں کو مغلوب کرکے
ایک باغ مین ڈیرا کیا اور
درخت سب کاٹ ڈالے
آخر پرتاپ نے خائف ہوکر

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंगल काटने पर भेजा जिन्हों ने प्रताप के आदमियों को हरा कर बाग़ में डेरा किया और वहां के पेड़ काट डाले आख़िर प्रताप ने डर कर ८०००० नज़राने के देने क़बूल किये और यह इकरार किया कि जब मेरी दिलजमई हो जावे गी तो मैं भी पटने में आजाऊं गा शायस्ता ख़ां गरमी की तकलीफ़ और बरसात के क़रीब आजाने से यह पेशकश ले कर चैत बदी ८ संबत १६९७ को पटने की तरफ़ लौट आया॥

पठान की मोहिम

संगसिर बदी ३ को बादशाह शिकार के वास्ते राजा जगत सिंघ के वतन गांव बाहन की तरफ़ रवाने ह़ुवे और शाह ज़ादे ने पठान में पहुंच कर सईद ख़ां, राजा जय सिंघ, और असालत ख़ां

اسی ہزار روپیہ بطور پیشکش کے دینا قبول کیا اور کہا کہ جب میری دلجمعی ہوجاوے گی تو مین بھی پٹنہ مین آؤنگا شائستہ خان بلحاظ موسم گرما وقرب بارش کے اُس سے زر پیشکش وصول کرکے تاریخ ۲۲-ماہ ذی قعدہ ۱۰۵۰ھ کو پٹنہ کی طرف لوٹ آیا

پٹھان کی مہم

۱۷-شعبان کو بادشاہ واسطے سیر وشکار کے گانو دامن کی طرف تشریف فرما ہوئے جو راجہ جگت سنگہ کا وطن تھا-

شاہزادہ نے پٹھان مین پہونچکر سعید خان راجہ جے سنگہ اور اصالت خان کو واسطے فتح قلعہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को मऊ का क़िला फ़तह करने के वास्ते भेजा और आप रसद व ग़ैरा ज़रूरी सामानोंकेपहुंचाने के वास्ते पठान में रहा जो मऊ से ३ कोस है ॥

सैयद ख़ान जहां बादशाह के हुक्म से भादों सुदी ४ को राय पुर से नूरपुर कोपहल वान की घाटी में होकररवाने हुआ आगे जगत सिंघ का बेटा राज रूप घाटी रोके पड़ा था उस को ख़ान जहां के हिरावल निजाबत ख़ां ने आसोज बदी ८ को भगा दिया कुछ लोग दीवारें बनाकर उनकी ओट में लड़ने को बैठे थे उनको भी दीवारें तोड़ कर लड़ाई में हरा दिया और लशकर घाटी के ऊपर चढ गया वहां से नूरपुर तक रस्ते में जगह २ लोग मुक़ाबिल के वास्ते बैठे थे मगर लशकर वाले १ दूसरे रस्ते से निकल

مئو بھیجا اور آپ واسطے پہونچانے رسد اذوقہ وغیرہ کے پٹھان میں رہا جو مئو سے ۳ کوس ہے +

سید خانجہاں بادشاہ کے حکم سے ۲۔ جمادی ثانی کو رائے پور سے براہ کتل پہوا نورپور کو روانہ ہوا تھا کتل مذکور کے اوپر راجہ جگت سنگھ کا بیٹا راج روپ راستہ روکے ہوئے پڑا تھا اسکو شاہجہان کے ہراول نجابت خان نے تاریخ ۲۱۔ ماہ مذکور کو بھگا دیا کچھ لوگ دیواریں بنا کر اونکی اوٹ میں لڑنے کو مستعد بیٹھے تھے اہل لشکر نے دیواریں توڑ کر انکو بھی بعد جنگ بھگا دیا۔ اور گھاٹی کے اوپر چڑھ گئے وہاں سے نورپور تک جابجا لوگ راستہ میں لڑنے کے لئے بیٹھے تھے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर नूरपूर के किले से आधकोस१ थाने के ऊपर जा पहुंचे खान जहां ने क़िले की तलहटी को लूट कर क़िले को घेरा जगत सिंघ ने तमाम सामान तैयार करके २००० बंदूकचीं किले की हिफ़ाज़त पर तईनात किये थे उधर सईदखां ज़फ़र जंग" हारा" पहाड़ के रस्ते से और राजा जय सिंघ और असालत खां चक्की नदी के किनारे पहुंच कर मऊ के पास शामिल हुवे और राजा बासू के बाग़ में जो पहाड़ के नीचे है ठहरे॥

राजा जगत सिंघ ने पहाड़ों और घाटों में कहीं नाका और रस्ता ख़ाली नहीं छोड़ा था सब जगह ऊंची २ दीवारें उठाकर उसके ऊपर तोपें और बंदूकें धरदी थीं और चौकी पहरे जगह २ बैठा दिये थे और जो क़िला था उस

مگر لشکر شاہی دوسری راہ سے گذر کر قلعہ نورپور سے آدہ کوس ایک تھانہ کے اوپر جا پہونچا خانجہان نے قلعہ کی تلہٹی کو لوٹ کر قلعہ کا محاصرہ کیا راجہ جگت سنگہ نے تمام سازوسامان جنگ کا تیار کرکے دوہزار بندوقچی قلعہ مین حفاظت کے لئے چہوڑے تھے اُدہر سعید خان ظفر جنگ کوہ ہارا کے راستہ سے اور جے سنگہ و اصالت خان کنار آب چکی سے پہونچکر مئو کی پاس شامل ہوئے اور راجہ باسو کے باغ مین جو پہاڑ کے نیچے تھا فروکش ہوئے

راجہ جگت سنگہ نے کسی جگہہ دروں مین کوئی راستہ اور رخنہ باقی نہین چہوڑا تھا سب کے اوپر اونچی اونچی دیوارین اُٹھاکر توپ اور بندوق چڑہادی تھی اور قلعہ کے گرد خود جھاڑی بہت گھنی تھی +

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के चौतरफ़ खुद बड़त घनी झा ड़ी थी ॥

बादशाही लशकर ने इन दीवारों के पास मोरचे बनाने शुरू किये जिन के ऊपर राजा के आदमी अपने मोरचों में से बराबर तीर और बंदूक मारते थे और जो लोग जंगल में घास लकड़ी लेने को जाते थे मोक़ादेख कर उनके ऊपर भी हमला करते थे ॥

कातक बदी ४ को रुसतम खां और कुलीच खां पठान मे शाहज़ादे के पास हाज़िर ऊवे उसने बादशाह के ऊक्म मूजिब कुलीच खां को मऊकी तरफ़ भेजा और रुस्तम खां को वास्ते मदद खानजहां के रवाने किया जो ज़िमींदार बादशाही चाकर थे उन्होंने रूपड़ की तरफ़ से मऊ के ऊपर हमला करने की

لشکر والون نے اُن دیوارون کے پاس مورچے بنانے شروع کئے راجہ کے آدمی اپنے مورچون سے برابر تیر اور تفنگ بہ سانے تھے اور جو لوگ جنگل مین گھاس لکڑی کے واسطے جاتے تھے موقع پاکر اُنکو بھی ایذا پہنچاتے تھے

۱۷- رجب کو قلیچ خان اور رستم خان پٹھان مین بادشاہ زادہ مُرادبخش کے پاس پہنچے بادشاہ زادہ نے بموجب حکم بادشاہ کے قلیچ خان کو تو مئو کی طرف بھیجا اور رستم خانکو واسطے کُمک سید خانجہان کے روانہ کیا۔

جو زمیندار کہ بادشاہی چاکر تھے اُنھوں نے روپڑ کی طرف سے مئو کے اوپر حملہ کرنے کی رائے دی اور بادشاہ کا حکم سعید خان کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

रायदी और बादशाह का ढुक्म सईदरवां ज़फ़र जंग के उनधर भेजने का आया जिस्के साथ जाने को निजाबत रवां नज़र बहादुर अकबर कुली सुलतान गक्कड़ और राजा मान ग्वाले री नूरपुर से तईनात ढुवे॥

रवान जहां ज़फ़र जंग ने कातिक सुदी ७ को नूरपुर के घाटे से रवाने होकर पहाड़ के क़रीब रूपड़ के रस्ते पर डेरा किया और अपने दोनों बेटों को ज़ुलफ़िक़ार रवां वग़ैरा के साथ पहाड़ के ऊपर मुक़ाम करने की जगह देरवने के लिये भेजा उन्हों ने ऊपर जाकर रवान को कहलाया कि यह बात किसी क़दर जंगल काटे बग़ैर मुम्किन नहोगी॥

इतने में ४।५ हज़ार दुशमनों ने एक पहाड़ की चोटी से उतर

اوسطرف بھیجنے کا آیا نجابت خان نظر بہادر خویشگی اکبر قلی سلطان گھکڑ اور راجہ مان گوالیاری (گلیری) اوس کے ساتھ جانے کو متعین ہوئے +

خان جہان بہادر ظفر جنگ نے ۵ شعبان کو نور پور کے گھاٹ سے روانہ ہوکر پہاڑ کے قریب سر راہ روپڑ کے ڈیرہ کیا اور اپنے دو بیٹون کو مع ذوالفقار خان وغیرہ کے پہاڑ کے اوپر ڈیرہ کرنے کی جگہہ دیکھنے کے لئے بھیجا اُنہون نے جاکر خان کو کہلایا کہ یہ بات بغیر قطع کرنے کسی قدر جنگل کے ممکن نہوگی +

اس اثنا مین چار پانچ ہزار دشمنون نے ایک پہاڑ کی چوٹی سے اُتر کر اون کا مقابلہ کیا بادشاہی آدمی جھاڑی کے سبب سے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर उन्का मुक़ाबिला किया वे लोग झाड़ी की रोक से १ जगह इकट्ठे नहो सके ख़ान ने उन की मदद को कुछ फ़ौज अपने बेटे लुतफ़ुल्लाह के साथ भेजी जिस का मुक़ाबिला दुशमनों की १ दूसरी टोली से ऊआ जिस्में वह ज़रूमी ऊआ लेकिन ज़ुलफ़िकार ख़ां व़ग़ैरा अपने दुशमनों को भगाकर ख़ान ज़फ़र जंग के पास चले आये दूसरे दिन ख़ान ने रूपड़ में जाकर जंगल कटवाया और अपने लशकर के आस पास मट्टी और कांटों का कोट बनाया यह एसी जगह थी कि जहां से मऊके किले पर दबाव़ पड़ सकता था इस लिये दुशमनों ने भी हरतरफ़ से वहां आकर मुक़ाबिले के वास्ते दीवारें और बुरजें बनाईं जिनमें बंदूकों के मारने केवास्ते जगह रक्खी इस से ख़ान ने

ایک جگہہ جمع نہوسکے خان نے اپنے بیٹے لطف اللہ کے ساتھ کچھ فوج مدد کو بھیجی لطف اللہ کا مقابلہ ایک دوسری جماعت سے ہوا جسمین وہ زخمی ہوا۔ ذوالفقار خان وغیرہ اپنے دشمنون کو مغلوب کرکے خان کے پاس چلے آئے دوسرے دن خان نے روپڑ مین جاکر جنگل کٹوایا اور اپنے لشکر کے گرد مٹی اور کانٹون کی آڑ بناکر ضابطہ کیا دشمنون نے اس سبب کہ وہ مقام سرکوب قلعہ مئو کا تھا ہرطرف سے آکر مقابلہ کے واسطے دیوارین اور برجین بنائین اور انمین بندوق مارنے کے لیئے جگہہ رکھی خان نے جلدی کرنے مین فائدہ نہ دیکھ کر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जलदी करने में फ़ायदा न देख कर यह बात ठहराई कि हररोज़ कुछ जंगल काटें और आहिस्ता २ आगे बढ़ें ॥

मंगसिर बदी ८ को निजाबत ख़ां १ घाटी के ऊपर चढ़ा उस्के नीचे राजा बासू के बाग़ में दुशमनों का मोरचा था दूसरी तरफ़ से ज़ुलफ़िक़ार ख़ां और तीसरी तरफ़ से नज़र बहादुर और राजा मान वग़ैरा भी पहुंच कर तीर और बंदूक़ की लड़ाई दुशमनों से लड़ने लगे तब तो निजाबत ख़ां और राजा मान के आदमी ढालों के बदले लकडियों के तख़ते सामने करके दोड़े और उसमोरचे के बराबर १ भींत लकड़ी और पत्थर की चुनकर लड़ने लगे जहां दोनों तरफ़ के बहुत से आदमी मारे गये ॥

मंगसिर बदी १४ की रात

یہ بات ٹھرائی کہ ہر روز کچھ کچھ جنگل کاٹ کر آہستہ آہستہ آگے بڑہین +

۲۱-شعبان کو نجابت خان ایک گھاٹی کے اوپر چڑہا- اوسکے نیچے راجہ باسو کے باغ مین دشمنون کا مورچہ تہا دوسری طرف سے ذوالفقار خان اور تیسری طرف سے نظر بہادر اور راجہ مان وغیرہ پہونچکر دشمنون کے ساتھ تیر و تفنگ سے جنگ کرنے لگے نجابت خان اور راجہ مان کے آدمی ڈہالون کی جگہہ تختہ سامنے کرکے دوڑے اور ایک دیوار چوب و سنگ سے مقابل مورچہ مذکور کے بناکر جنگ و جدل مین مشغول ہوئے جس مین بہت سے آدمی دونون طرف کے مارے گئے +

۲۹ شعبان کی شب

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

को राजा मान ने १००० आदमी अपने किले "छत" पर भेजे जिन्होंने क़िलेदार को मारकर क़िला फ़तह कर लिया ॥

क़िले नूरपुर के गिर्द ७ सुरंगें दौड़ाई गईं थीं ६ से तो क़िले वालों ने वाक़िफ़ होकर उनके अंदर पानी छोड़ दिया और सातवीं क़िले से २१३ गज़ दूर रही थी कि सैयद खान जहां के बेटे और उस के आदमियों ने इस डर के मारे कि कहीं क़िले वाले उसको भी निकम्मी न करदेवें उसमें बारूत भरदी और खान को कहलादिया कि सुरंग पहुंच गई है खान ने सब मोरचों में हुक्म भेज दिया कि तैयार रहें ॥

मंगसिर बदी ३ को तीसरे पहर पीछे उस सुरंग में आग दीगई जिस से बुरज कुछ तो उड़ी और कुछ गिर गईं राजा ने हर बुर्ज के

کو راجہ مان نے ایک ہزار کے قریب پہاڑی آدمی اپنے وطن کے قلعہ "چھت" پر بھیجے اُنہون نے قلعدار کو مارکر قلعہ فتح کرلیا +

قلعہ نورپور کے گرد سات سرنگین لگائی گئین تھین چھ سے تو قلعہ والون نے آگاہ ہوکر اونکے اندر پانی ڈالدیا اور ساتوین سرنگ ابھی نورپور کے برج سے دوتین گز ادھر تھی کہ سید خانجہان کے بیٹے اور اُسکے آدمیون نے اس خیال سے کہ کہین قلعہ والے اُسکو بھی بیکار نہ کردین باروت بھردی اور خان کو کہلایا کہ نقب پوری ہوگئی ہے خان نے سب مورچون مین کہلا بھیجا کہ تیار ہو رہین۔

عصر کے وقت ۲۹ شعبان کو آگ لگائی گئی برج کچھ تو اُڑی اور کچھ گرگئی راجہ نے ہر برج کے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आगे एक एक दीवार उठाकर को
ट की दीवारों से मिला दी थी और
उसके ऊपर से किले में आने जाने
का रस्ता रख दिया था सो जो दीवा
र इस बुरज के आगे थी वह भी आ
धी गिर पड़ी मगर सुरंग पूरी न थी
इस सबब से लशकर वाले अंद
र न जा सके सैयद लुतफ़ अली
वग़ैरा कई शख़्स ख़ान के आद
मियों के साथ दौड़े तो उसी दी
वार के आड़े आजाने से अंदर न
जा सके और बेलदारों से उसको
गिरवाने लगे क़िले वाले और
स्ता होजाने के ख़्याल से अंदर
चले गये थे दीवार के बाक़ी रहने
का हाल मालूम करके पीछे चले
आये और आधी रात तक तीर औ
र बंदूक़ से लड़ते रहे जिस से कुछ
बादशाही आदमी मारे गये और कि
ला फ़तह न हुआ ॥

इसी अरसे में बहादुर ख़ां ने

آگے ایک ایک دیوار اُٹھاکر
کوٹ کی دیوار سے ملادی
تھی اور اوس کے اوپر سے
بُرج مین جانے کا راستہ
رکھدیا تھا چنانچہ اِس بُرج کی
دیوار بھی صدمہ سے آدھی گرگئی
مگر بہ سبب پوری نہونے سُرنگ
کے فوج اندر نہ جاسکے سید
لطف علی وغیرہ چند شخص جو
خان جہان کے آدمیون کے
ساتھ دوڑے اُنکو بھی وہی دیوار
حائل ہوئی اور وہ اُسکو بیلدارون
سے گروانے لگے قلعہ والے جو
بخیال راستہ ہوجانے کے اندر
چلے گئے تھے دیوار کے باقی
رہنے کا حال معلوم کرکے
واپس آئے اور رات تک تیرو
بندوق سے لڑتے رہے کچھ
بادشاہی آدمی مارے گئے اور قلعہ
فتح نہوا ۔

آخیر ماہ شعبان مین

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बुंदेलखंड से पठान में पहुंच कर अपनी फ़ौज की हाज़िरी दी ३००० सवार और इतने ही पैदल थे ॥

मंगसिर सुदी ९ को दमताल तो बहादुर खां की कोशिश से फ़तह हुआ और "थारी" "अल्लाहवे रदी खां की कोशिश से ॥

बादशाह ने यह हाल तसुनकर लिखा कि असालत खां तो नूरपुर के घेरे पर रहे और सैयद खान जहां वग़ैरा गंगथल के रस्ते से मऊ पर जाकर उसके फ़तह करने में कोशिश करें कि उसके फ़तह हो जाने से नूरपुर का फ़तह होजाना भी आसान हो जावेगा और शाहज़ादा मुराद राव अमरसिंघ और मिरज़ा हुसेन सफ़वी को पठानमें छोड़ कर उस टेकरी पर डेरा करे कि जहां से अबदुल्ला खां फ़ीरोज़ जंग उतर आया था और उनफ़ौजों को जो हर तरफ़ से मऊ की फ़तह के

بہادر خان نے ملک بندیلہ سے بموجب حکم بادشاہ کے پٹھان مین بادشاہزادہ کے پاس پہنچکر اپنی فوج کی حاضری دی تین ہزار سوار اور اسی قدر پیادے تھے

سلخ ماہ مذکور کو دمتال بہادر خان کی سعی سے اور تھاری الله ویردی خان کی کوشش سے فتح ہوا۔

بادشاہ کا حکم آیا کہ اصالت خان تو نورپور کے محاصرہ مین مشغول ہوا اور سید خانجہان و رستم خان وغیرہ راہ گنگتھل سے مئو کے اوپر جاکر اوسکے فتح کرنے مین کوشش کرین کہ جب وہ قلعہ فتح ہو جائیگا تو نورپور بآسانی فتح ہوگا اور شاہزادہ مراد راو امرسنگہ و مرزا حسین صفوی کو پٹھان مین چھوڑکر اوس ٹیکرے پر قیام کرے کہ جہان سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के वास्ते तई नात की गई है ताकी द करता रहे ॥

जब बादशाह ज़ादा मंग सि र सुदी ३ को पठान सेर वाने रुवा तो राना जगत सिंघ ने अपने बेटे राज रूप को भेज कर अल्लाह वे रदी ख़ां के वसीले से अर्ज़ कराई कि अकसर दरबारी अमीर ईरखा से इस मोहिम में मेरी जान ओर इज़्ज़त लिया चाहते थे इस लि ये मैं ने भी राज पूती की ग़ैरत से उन का मन चाहा न होने देने के वास्ते जैसा कुछ होसका उन का मुक़ा बिला किया मगर अब जो यह मोहिम आपके ज़िम्मे हो गई तो मैं भी हर तरह से रुकन ब जाने को हाज़िर हूं ॥

फिर मंगसिर सुदी ७ को वह खु द भी गुनह गारों के माफ़िक़ गले में रूमाल डाल कर हाज़िर होगया बादशाहज़ादे ने उसको तसल्ली दी

عبداللہ خان بہادر فیروزجنگ اُتر آیا تھا اور یہ فوجین اطرافُ جوانب سے واسطے فتح قلعہ مئو کے مامور ہوئے ہین اُونکو بھی تاکید وتہدید فتح کی کرتا رہے

بادشاہزادہ جب غُرّہ رمضان کو مئو کی طرف روانہ ہُوا تو راجہ جگت سنگہ نے اپنے بیٹے راجروپ کو بھیجکر اللہ ویردی خان کے وسیلہ سے شاہزادہ کو کہلایا کہ اکثر بندگان درگاہ نے کینہ ہمچشمی وہمسری سے اس مہم مین سوائے ہلاک قوم وقبیلہ ونقصان جان ومال بندہ کے اور خواہش نہین رکھتے تھے اسواسطے بندہ نے غیرت رجپوتی اور حمیت سپاہگری سے بآسانی تن بمرگ نہ دیکر جو کچھ ہوسکا تردد کیا اب یہ مہم آپکے ذمہ ہوگئی ہی اسلئے مین بھی اطاعت فرمانبرداری کے سوائے اور کوئی علاج نہین

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और फ़रमाया कि तुम्हारे क़सूर माफ़ कराने की बादशाह की ख़िदमत में अर्ज़ की जावेगी मगर बादशाह ने उसकी कई अरज़ें क़बूल न कीं इस लिये शाहज़ादे ने राजा को रुख़सत देदी और वह वतन में पहुंच कर फिर लड़ाई का सामान करने लगा ॥

सैयद ख़ान जहां और बहादुर ख़ां बादशाहज़ादे के हुक्म से गंगथल हो कर फिर मऊ के ऊपर गये जंगल काटते और दुश्मनों की मज़बूत दीवारों को जो मुक़ाबिले के वास्ते बना रक्खी थीं ठुकराते हुवे आगे बढ़े जब मऊ के क़रीब पहुंचे तो जगत सिंघ ने बहादुर भाई बंदों और पहाड़ी सिपाहियों के साथ सामने आकर ५ रोज़ तक बराबर जंग की सैयद ख़ान जहां और बहादुर ख़ां बहादुरी करके उससे

دیکھتا تو بھیرہ تاریخ ۵ رمضان کو مجنون کی طرح گلے مین فوطہ ڈالکر حاضر خدمت ہوا بادشاہزادہ نے اُسکی تسلی کی اور فرمایا کہ بارگاہ خلافت مین عفو تقصیر کیواسطے عرض کیجائیگی لیکن بادشاہ نے اُسکی بعض معروضات قبول نہ کئے اس لئے شاہزادہ نے راجہ کو رخصت دیدی اور وہ وطن مین پہونچکر پھر جنگ کا سامان کرنیلگا۔

سید خانجہان اور بہادر خان بادشاہزادہ کے حکم سے براہ گنگ تھل پھر مئو کے اوپر گئے جنگل کاٹتے ہوئے اور دشمنون کی مضبوط دیوارون سے جو آڑ کے واسطے بنا رکھی تھیں مقابلہ کرتے ہوئے آگے بڑھے جب مئو کے قریب پہونچے تو راجہ جگت سنگہ نے پانچ روز تک متواتر باتفاق بیشگان قبیلہ ذلیلہ خود و جمعی دیگر از دلیران کوہ نشین روبروے عساکر فیروزی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लड॰ इस ५ दिन की लड़ाई में ७०० आदमी बहादुर खां के मारे गये और इतने ही दूसरे बादशाही बंदे भी काम आये और ज़ख़्मी हुवे॥

जब यह लड़ाई इस तरह से दिन पकड॰ गई तो बादशाह का हुक्म आया कि खानजहां और बहादुर खां तो क़िल्ले के नीचे पहुंचें और दूसरी फ़ौज भी जंगल से क़िल्ले तक जावे और सब कोशिश करके उसको फ़तह करें तब शाहज़ादे ने पोस बदी ७ को १ पहाड़ी के ऊपर जो सब मोरचों से ऊंची थी चढ़कर सरदारों को हमला करने का हुक्म दिया हमला दो तरफ़ से हुआ राजा जयसिंघ भी जो हमला करने वालों में था कुली चखां ग़ोरा के साथ घाटे के रस्ते जंगलों में होकर पहाड॰ के ऊपर चढ़ा

شدہ ہنگام حرب و ضرب گرم گردانیدند"

سید خانجہان و بہادر خان نے

اُوسکے مقابلہ مین بڑی بہادری کی اس

پانچ دن کی لڑائی مین سات سو آدمی

بہادر خان کے اور اسیقدر دوسرے بادشاہی

بندے مقتول و مجروح ہوئے۔

جب اسطرح یہ مہم طول پکڑ گئی

تو بادشاہ کا حکم آیا کہ سید خانجہان

بہادر اور بہادر خان تو قلعہ کے نیچے

پہونچین اور دوسری فوج بھی

جنگل سے قلعہ تک جاوے اور

بالاتفاق کوشش کرکے

فتح کرین۔

برطبق اُسکے شاہزادہ نے

۲۰ رمضان کو ایک پہاڑی کے

اوپر جو سب مورچون سے اونچی

تھی چڑھ کر سرداران لشکر کو یورش

کرنے کا حکم دیا پس دو طرف سے

حملہ ہوا راجہ جے سنگہ بھی حملہ آوردون مین

تھا سرداران لشکر معہ قلیچ خان

وغیرہ کے براہ درہ جنگلون مین

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

राजा जगत सिंघ ने अपनी बाहर की फ़ौज भी जगह २ से क़िले में बुलाली और अंदर से बादशाही लशकर का मुक़ाबिला किया जब बहुत ही तंग हो गया तो तारा गढ़ के क़िले में चला गया जहां उसने अपने क़बीलों को पहिले से भेज दिया था यह ख़बर सुनकर नूर पुर के क़िलेदार और सिपाही भी भाग गये॥

जब इस फ़तह की खुशख़बरी बादशाह को पहुंची तो सैयद ख़ान जहां का मनसब ६ हज़ारी ज़ात ६ हज़ार सवार दोअस्पा और सिह अस्पा का और राजा रायसिंघ का ५ हज़ारी ५ हज़ार सवारों का कर दिया॥

राजा मान सिंघ गुलेरी को कि जिसने इस मोहिम में अच्छी ख़िदमत की थी ख़िलअत जड़ाऊ जमधर हाथी और घोड़ा

ہوکر پہاڑ کے اوپر چڑھے اور راجہ جگت سنگہ کو محصور کرکے تنگ کیا راجہ مذکور نے باہر کی جمعیت کو بھی جابجا سے قلعہ مین بُلالیا تھا اور اپنے عیال واطفال کو تو پہلے سے ہی تاراگڈہ کے قلعہ پر بھیجدیا تھا اور اب خود بھی بہ سبب غلبہ افواج بادشاہی کے فرار ہوکر قلعہ مذکور کو چلاگیا یہ حال سنکر نورپور کے قلعدار اور سپاہی بھی بھاگ گئے

جب یہ خوشی کی خبر بادشاہ کو پہونچی تو سید خانجہان بہادر ظفر جنگ کا منصب شش ہزاری ذات اور ششہزار سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ کا اور راجہ جے سنگہ کا پانچہزاری ذات اور پنجہزار سوار کا کردیا ❊

راجہ مان سنگہ گولیری نے اس مہم مین بخوبی خدمتگزاری اور جانثاری کی تھی اس لئے بادشاہ نے اسکو خلعت جمدہر

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इनायत ऊआ ॥

पोस बदी १० को शाहज़ादे ने बादशाह के ऊक्म से चंबे के ज़िमींदार प्रथ्वी चंद को अल्लावेरदी ख़ां और मीर तुज़क के साथ जो उसे लेने को गये थे बादशाह के हज़ूर में रवाने किया इस्के बाप को जगत सिंघ ने मार डाला था और यह इस सबब से बादशाही अमीरों के वसीले से बादशाही बंदों में दाख़िल ऊआ था ॥

फिर शाहज़ादे ने मऊ में राजा जय सिंघ को थारी में क़ुलीच ख़ां को दमटाल में गोकुल दास सीसोदिया को और पठान में मिरज़ा हसन सफ़वी को तईनात किया और दूसरे अमीरों को बऊत से बेलदारों और तबरदारों के साथ मऊ के जंगल काटने और पहाड़ों का रस्ता चौड़ा करने के वास्ते छोड़ा और आप

مرصع اور اسپ و فیل عنایت فرمایا۔

۲۳۔ رمضان کو بادشاہ زادہ نے حسب الحکم بادشاہ کے پرتھی چند زمیندار چنبہ کو کہ جسکے لینے کے لئے الہ ویردی خان اور میر تزک گئے تھے بادشاہ کے حضور مین روانہ کیا اُسکے باپ کو راجہ جگت سنگہ نے مار ڈالا تھا اور یہ اس سبب سے بوسیلہ اولیائے دولت زمرہ دولتخواہان سلطنت مین داخل ہوا تھا۔

پھر بادشاہزادہ نے مئو مین راجہ جے سنگہ کو تھاری مین قلیچ خان کو۔ دمتال مین گوکلداس سیسودیہ کو اور پٹھان مین مرزا حسن صفوی کو تعینات کیا اور کچھ بادشاہی بندون کو معہ بہت سے بیلدارون اور تبردارون کے مئو کے گرد کا جنگل کاٹنے اور راستہ چوڑا کرنے کے واسطے چھوڑا اور آپ بموجب حکم بادشاہ کے بہادر خان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

बमूजिब हुक्म बादशाह के बहादुर ख़ां और असालत ख़ां के साथ दरगाह कोरवाने हुआ माह सुदी १ को बादशाह के पास पहुंचा बादशाह ने १ भारी ख़िलअत और २ लाख रुपया इनाम दे कर वास्ते दूर करने फ़िसाद राजा जगत सिंघ के भेजा चंबे के ज़मींदार प्रथ्वी चंद को ख़िलअत जड़ाऊ जमधर हज़ारी ज़ात और ४०० सवारों का मनसब और राजा का ख़िताब और घोड़ा इनायत हुआ जिस पहाड़ पर कि तारा गढ़ का क़िला है और जिसपर जगत सिंघ ने अन्याय से क़बज़ा कर रक्खा था चंबे के इलाक़े से मिला हुआ है और उसपर १ ऐसी टेकरी है कि जिस्के हाथ आने से तारा गढ़ फ़तह हो सक्ता है इस लिये राजा प्रथ्वी चंद को वतन जाने की

اور اصالت خان کو ساتھ لے کر روانہ درگاہ ہوا اور ۲۹- رمضان کو بادشاہ کے حضور میں پہنچا بادشاہ نے اوسکو ایک بھاری خلعت اور دو لاکھ روپیے بطور انعام کے دیکر بغرض راجہ جگت سنگھ کا فساد رفع کرنے کو بھیجا-

زمیندار چنبہ پرتھی چند کو خلعت و اسپ و جمدھر مرصع و منصب ہزاری ذات اور چار سو سواروں کا معہ خطاب راجگی کے عنایت ہوا جس پہاڑ پر کہ تاراگڈھ کا قلعہ ہے اور جگت سنگھ نے ظلم سے قبضہ کر رکھا تھا چنبہ کے علاقہ سے ملا ہوا ہے اور اسکے اوپر ایک ایسی ٹیکری ہے کہ جسکے ہاتھ آجانے سے تاراگڈھ فتح ہو سکتا ہے اس لئے راجہ پرتھی چند کو وطن جانے کی رخصت دی گئی کہ ضروری بندوبست کر کے معہ جمعیت

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रुख़सत दी गई कि ज़रूरी बंदोबस्त करके मय काफ़ी जमैयत के तारा गढ़ के पीछे से आवे और उस टेकरी पर क़बज़ा करके क़िले वाला को तंग करे ॥

पोस सुदी ६ को शाहज़ादा मुराद मयसैयद ख़ान जहां वग़ैरा के नूरपुर में जाकर ठहरा और सैयद ख़ां को जम्मूं भेजा बहादुर ख़ां और असालत ख़ां को १२००० सवारों से तारा गढ़ फ़तह करनेको भेजा और राजा मान सिंघ गुलेरी को जो जगत सिंघ का जानी दुशमन था हुक्म दिया कि राजा प्रथ्वी चंद से मिलकर तारा गढ़ के ऊपर पीछे से हमला करे ॥

इस मौक़े पर बादशाही लशकर रस्ता पेंचदार और घना जंगल होने पर भी हमला करने में बहुत कोशिश की

شائستہ کے عقب تاراگڈہ سے حملہ کرے اور اُس ٹیکرے پر قبضہ کر کے قلعہ والون کو تنگ کرے۔

۵۔ شوال کو شاہزادہ مرادبخش معہ سعید خانجہان وغیرہ کے نور پور مین آکر ٹہرا سعید خان کو جموں کی طرف روانہ کیا اور بہادر خان و اصالتخان کو معہ بارہ ہزار سوارون کے تاراگڈہ فتح کرنے کے واسطے بھیجا اور راجہ مان سنگہ گلیری کو جو جانی دشمن جگت سنگہ تھا راجہ پرتھی چند سے ملکر تاراگڈہ کے اوپر پیچھے کی طرف سے حملہ کرنے کا حکم دیا ✠

اس موقع پر بادشاہی لشکر نے باوجود خرابی و پیچ در پیچ ہونے راستہ اور جنگل کے حملہ کرنے مین بہت کوشش و جانفشانی کی اور قلعہ والے بھی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और क़िले वाले भी बहुत बहा दुरी के साथ लड़े ॥

पोस सुदी १५ की लड़ाई में यमीनुद्दोला का बख़शी १०० आदमियों समेत मारा गया ॥

राजा जगत सिंघ को १ तरफ़ से बहादुर ख़ां और असालत ख़ां ने दूसरी तरफ़ से राजा मान सिंघ गुलेरी और प्रथ्वीचंद चंबे वाले ने यहां तक तंग किया कि उसने फिर शाहज़ादे से माफ़ी मांगी शाहज़ादे ने बादशाह का मनशा लेकर उसको कहला भेजा कि जगत सिंघ के क़सूर इस शर्त पर माफ़ हो सक्ते हैं कि वह तारा गढ का क़िला सौंप देवे जगत सिंघ ने मंज़ूर करके ख़ान जहां को बुलाया उसने जा कर कुछ हिस्सा क़िले का गिरा दिया और अपने जमाई सैयद फ़ीरोज़ को वहां छोड़ कर चैत सुदी ३

خوب بہادری کے ساتھ لڑے

۱۴۔شوال کی لڑائی مین یمین الدولہ آصف خان کا بخشی خسرو بیگ معہ ایک سو آدمیون کے مارا گیا۔

راجہ جگت سنگہ کو ایک طرف سے بہادر خان اور اصالت خان نے اور دوسری طرف سے راجہ مان سنگہ گلیری اور پرتھی چند چنبہ والے نے اسقدر تنگ کیا کہ اوس نے پھر شاہزادہ سے معافی مانگی شاہزادہ نے بادشاہ کا منشا معلوم کر کے حکم بھیجا کہ جگت سنگ کے قصور اس شرط پر معاف ہو سکتے ہین کہ وہ تاراگڈہ کا قلعہ حوالہ کرے جگت سنگہ نے خانجہان کو بلایا اوس نے جاکر باہر تک قلعہ گرا دیا اور اپنے خویش سید فیروز کو وہان چھوڑ کر ۲۹۔ذی الحجہ کو شاہزادہ کے پاس واپس آیا اور جگت سنگہ بھی ہمراہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

सं· १६९९ को राजा जगत सिंघ सहित शाहज़ादे के पास हाज़िर हुआ ॥

राजा जगसिंघ ने नूरपुर के सदर दरवाज़े के आगे १ बड़ी दीवार किले की जड़ से कंगुरों के सिरे तक १००० गज़ ऊंची बनाई थी और फिर उस्के ऊपर बुरज और कंगूरे भी भुकाये थे बादशाह का हुक्म उस्के गिरा देने का आया जिस्के वास्ते शाहज़ादे ने बहादुर खां और असालत खां को वहां छोड़ा और आप बादशाह के पास रवाने होगया

दरबार के हालात

मंगसिर बदी ३ गुरवार को यमीनुद्दौला आसिफ़ खां खानखानां सिपहसालार मरगया यह बादशाह का सुसरा जहांगीर बादशाह का साला और नूरजहां बेगम

لایا ❖

راجہ جگت سنگھ نے نورپور کے دروازہ کلان کے آگے ایک بڑی دیوار قلعہ کی جڑ سے کنگوروں کے سرے تک ہزار گز کی اونچی بنائی تھی اور اوسکے اوپر برج اور کنگورے بنائے تھے بادشاہ کا حکم اوس کے گرا دینے کا آیا جس کی تعمیل کرانے کے واسطے شاہزادہ نے بہادر خان اور اصالت خان کو تو وہاں چھوڑا اور آپ بادشاہ کے حضور میں روانہ ہوگیا ❖

دربار کا حال

۱۷ شعبان روز پنجشنبہ کو یمین الدولہ آصف خان خانخانان سپہ سالار مرگیا یہ بادشاہ کا خسر تھا اور جہانگیر بادشاہ کا سالا اور نورجہان بیگم کا بھائی تھا اور

का भाई था और बादशाह की इनायत से बहुत बड़े दरजे को पहुंचा था कभी कोई अमीर किसी बादशाह के वक्त में इतना नहीं बढ़ा था उसका मनसब ९ हज़ारी ज़ात और ९००० दोअस्पा और सिह अस्पा सवारों का था उमदा और जैयद जागीरों के मिलने से हर साल ५० लाख रुपये की आमदनी उसको अपने मनसब की जागीरों से होती थी वह ढाई करोड़ का जवाहर सोना चांदी और दूसरा माल असबाब छोड़ मरा जिस्में से बादशाह ने २० लाख का नक़द और जिनस तो उस के बेटों और बेटियों को दिया और बाक़ी सरकार में ज़ब्त किया उस की हवेली जो २० लाख रुपये की लागत से लाहौर में तैयार हुई थी शाहज़ादे दारा शिकोह को देदी॥

मंगसिर सुदी ५ को बादशाह ने आसिफ़ खां के दीवान राय

بادشاہ کی عنایت سے بہت بڑے درجے کو پہنچا تھا اتنا کوئی امیر کسی بادشاہ کے وقت مین نہین بڑھا تھا اسکا منصب نُہ ہزاری ذات اور نو ہزار سوار دو اسپہ و سہ اسپہ کا تھا اور عمدہ و جیّد جاگیرون کے ملنے سے ہر سال پچاس لاکھ روپیہ اوسکو ان جاگیرون سے حاصل ہوتا تھا ڈہائی کروڑ روپے کا زر و جواہر چھوڑ مرا بادشاہ نے اوسمین سے ۲۰ لاکھ روپیہ کا نقد و جنس اوسکے بیٹون اور بیٹیون کو دیا اور باقی ضبط کرلیا اور اوسکی حویلی جو لاہور مین ۲۰ لاکھ روپے کی لاگت سے بنی تھی شاہزادہ دارا شکوہ کو دیدی۔

۳ رمضان کو بادشاہ نے آصف خان کے دیوان راے مکند داس کو منصب

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुकंद दास को पांच सदी ज़ात और ३०० सवारों का मनसब औ रतन दफतर की खिदमत इ नायत की और जसवंत राय को जो यह काम करता था बादशा ही ख़ालिसे का काम मिला जो बिहारी मल करता था और बिहा रीमल पंजाब की दीवानी पर भेजा गया ॥

मंगसिर सुदी १२ को बाद शाह गांव बाहन से लाहौर में दाखिल हुवे ॥

माह बदी ५ मंगलवार को तुला दान के दरबार में महेश राठौड़ को हज़ारी ज़ात और १००० सवार का मनसब इना यत हुवा ॥

चैत बदी ६ को नौरोज़ के दूसरे दिन शाहज़ादा औरंग ज़ेब दक्खन से हाज़िर आया। और अपने बेटे मोहम्मद सुलतान

پانصدی ذات اور چار سو سوار کا عنایت کرکے دفترداری تن کی خدمت پر جسبونت رائے کے تغیر سے ممتاز فرمایا اور دفترداری خالصہ شریفہ کی خدمت جسبونت رائے کو بہاری مل کے تغیر سے عنایت کی اور بہاری مل کو خدمت دیوانی صوبہ پنجاب پر مقرر کیا ٭

١١- رمضان کو بادشاہ بعد سیر و شکار گانو دامن کے لاہور مین واپس آئے ٭

روز سہ شنبہ ١٩ شوال مطابق تاریخ ٢- بہمن کو جشن وزن شمسی مین مہیش راٹھوڑ منصب ہزاری ذات اور ہزار سوار سے معزز و ممتاز ہوا-

١٢- ذی الحجہ کو نوروز کے دوسرے دن شاہزادہ اورنگ زیب دکہن سے لاہور مین بادشاہ کے پاس حاضر آیا اور اپنے بیٹے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का सलाम कराया बादशाह ने २ लाख रुपये इनाम के दिये राव शत्रू साल हाडा और राजा पहाड़ सिंघ बुंदेला भी जो दक्खन में तईनात थे उसके साथ हाज़िर ऊवे राव शत्रू साल ने २ हाथी नज़र किये ॥

करमसी राठोड़ के बेटे स्याम सिंघ को शाहज़ादे औरंगज़ेब की अरज़ से हज़ारी ज़ात और ५०० सवार का मनसब इनायत ऊवा

राय काशीदास को सूबे आगरे की दीवानी मिली ॥

चैत बदी ११ को शाहज़ादा मुराद बख़्श दरगाह में हाज़िर ऊआ उसके साथ जगत सिंघ भी अपने बेटों समेत गरदन में रूमाल डाले ऊवे आया बादशाह ने उसका क़सूर माफ़ कर दिया ॥

राजा जय सिंघ राव अमर

محمد سلطان کا سلام کرایا بادشاہ نے اُسکو دولاکھ روپیہ لطور انعام دیئے۔

راجہ ستروسال ہاڈا اور راجہ پہاڑ سنگہ بندیلہ بھی جو دکہن مین تعینات تھے اُسکے ساتھ باریاب ملازمت ہوئے راؤ شتروسال نے دو ہاتھی نذر کیئے۔

کرم سی راٹھوڑ کے بیٹے شیام سنگہ کو بادشاہزادہ اورنگ زیب کی عرض سے بادشاہ نے ہزاری ذات اور پانسو سوار کا منصب عطا کیا۔

رائے کاشی داس کو صوبہ آگرہ کی دیوانی مفوض ہوئی۔

۲۵ ذی الحجہ کو شاہزادہ مراد بخش حاضر آیا اُسکے ساتھ راجہ جگت سنگہ بھی اپنے بیٹے سمیت گردنمین رومال باندھے ہوئے حاضر ہوا بادشاہ نے اُسکا قصور معاف کر دیا۔

راجہ جے سنگہ راؤ امر سنگہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिंघ और राजा रायसिंघ भी शाहज़ादे के साथ दरबार में हाज़िर हुवे थे ॥

इस बरस कशमीर में बहुत सख़्त काल पड़ा था जिससे वहां के ३०००० आदमी लाहौर में चले आये बादशाह ने १लाख रुपया ख़ज़ाने से उनको इनायत करके हुक्म दिया कि हर रोज़ २०० रुपये का खाना उनके लिये दियाजावे और ३०००० कशमीर के हाकिम तरबियत ख़ां के पास भेजकर लिखा कि २०० रुपये रोज़ का खाना वहां के ग़रीबों को बांटा करें मगर उससे इस का इन्तज़ाम अच्छी तरह से न हो सका तब बादशाह ने ज़फर ख़ां को फिर कशमीर का नाज़म करके भेजा और ३०००० और उसको वहां की परवरश के लिये दिये ॥

اور راجہ امر سنگھ بھی شاہزادہ کے ہمراہ حاضر بارگاہ ہوئے۔

اس برس کشمیر مین بہت سخت کال پڑا تھا جس سے وہان کے ۳۰ ہزار آدمی لاہور مین چلے آئے تھے بادشاہ نے ایک لاکھ روپیہ خزانہ سے اونکے واسطے عنایت کرکے حکم دیا کہ ہر روز دوسو روپیہ کا کھانا اونکو دیا جاوے اور ۳۰ ہزار روپیہ کشمیر کے حاکم تربیت خان کے پاس بھیجکر لکھا کہ ایکسو روپیہ روز کا کھانا وہان کے غریبون کو تقسیم کیا جاوے مگر اوس سے اسکا انتظام اچھی طرح سے نہو سکا تب بادشاہ نے ظفرخان کو پھر کشمیر کا ناظم کرکے بھیجا اور تیس ہزار روپیہ اور اسکو وہان کے غربا کی پرورش کے لئے دیئے ✤

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बरस १६वां	**برس سولہوان**
चैत सुदी ३ संबत १६९९ से चैत सुदी ३ संबत १७०० तक	سنہ ۱۰۵۲ھ ۱۳ مارچ سنہ ۱۶۴۲ع سے ۱۱ مارچ سنہ ۱۶۴۳ع تک
चैत सुदी ६ को शाहज़ादा औरंगज़ेब दक्खन की तरफ़ रवाने हुवा॥	۴ محرم کو شاہزادہ اورنگ زیب دکھن کو روانہ ہوا-
बैसाख बदी ६ को राजा जगत सिंघ और राजरूप के मंसब बहाल होगये॥	۱۹- محرم کو راجہ جگت سنگہ اور اوسکے بیٹے راج روپ کے منصب بدستور بحال ہوگئے
ईरान के शाह सफ़ी का क़ंधार पर आना	**ایران کے بادشاہ شاہ صفی کا قندھار پر آنا**
इरान के शाह सफ़ी ने जो रूम के सुलतान मुरादख़ां से सुलह करके कंधार पर चढ़ाई करने का सामान कर रहा था अपना सिपह सालार रुस्तम गुरजी को हिरोल कर के कंधार के ऊपर रवाने किया॥	شاہ صفی نے جو سلطان روم مرادخان سے صلح کرکے قندہار کے اوپر لشکرکشی کرنے کا سامان کررہا تھا اپنے سپہ سالار رستم گرجی کو بطور ہراول کے قندھار کے اوپر روانہ کیا بادشاہ نے یہ خبر سُنکر خود
बादशाह ने उसके मुक़ाबिले को जाने की तैयारी की	مقابلہ کے واسطے جانے کی تیاری کی لیکن شاہزادہ داراشکوہ نے عرض

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

लेकिन शाहज़ादे दाराशिकोह ने अर्ज़ कराई कि हज़रत तो लाहोर में ही तशरीफ़ रखें और इस मुहिम पर मुझ को भेजें बादशाह ने उसको २० हज़ारी ज़ात हज़ार सवार का मनसब १२ लाख रुपया इनाम और १ भारी खिल्अत देकर ५० हज़ार सवारों से क़ंधार की तरफ़ रवाने किया ३५ बड़े २ अमीर ५ हज़ार अहदी कमांदार बरक़ंदाज़ और ५ ही हज़ार बंदूक़ची मय बहुत से खज़ाने और तोपखाने के उसके साथ किये जिनमें रजपूत सरदार इतने थे॥

१ राजा जसवंत सिंघ	८ रामसिंघ राठेड़
२ राव अमरसिंघ	९ चंद्रमणि बुंदेला
३ राव शत्रूसाल	१० गोकुलदास सीसोदिया
४ राजा जयसिंघ	
५ राजा रायसिंघ	११ राजा अमरसिंघ नरवरी
६ हरीसिंघ राठेड़	
७ महेशदास राठेड़	१२ रायसिंघ झाला

گرانی کہ حضرت لاہور مین تشریف رکھین اور یہ مہم میرے متعلق فرماوین بادشاہ نے اُسکو بیس ہزاری ذات اور بیس ہزار سوار کا منصب بارہ لاکھ روپیہ انعام اور بہت بھاری خلعت وغیرہ معہ پچاس ہزار سوار کے قندھار کی طرف رخصت کیا ۳۵ بڑے بڑے امیر پانچہزار احدی کماندار برقنداز اور پانچہزار احدی بندوقچی معہ خزانہ و توپخانہ اوسکے ساتھ تعینات کیے جنمین راجپوت سردار حسب ذیل تھے۔

۱ راجہ جسونت سنگھ	۲ راؤ امر سنگھ
۳ راؤ شتروسال	۴ راجہ جے سنگھ
۵ راجہ رائے سنگھ	۶ ہری سنگھ راٹھوڑ
۷ مہیش داس راٹھوڑ	
۸ رام سنگھ راٹھوڑ	
۹ چندرمنی بندیلہ	
۱۰ گوکل داس سیسودیہ	
۱۱ راجہ امر سنگھ نروری	
۱۲ رائے سنگھ جھالا۔	

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजा जसवंत सिंघ और जय सिंघ को खिल्अत ख़ासा जड़ाऊ जमधर फूल कटारे समेत सुनहरी साज़ का घोड़ा तवेले ख़ासे से और ख़ासा हाथी इनायत हुआ ॥	راجہ جسونت سنگہ اور جیسنگہ کو خلعت خاصہ وجمدہر مرصع معہ پھول کٹارا و اسپ طویلہ خاصہ کے بازین طلا اور فیل حلقہ خاصہ سے عطا ہوا ॥
राव अमर सिंघ को खिल्अत ख़ासे और सुनहरी ज़ीन के घोडे के सिवाय हज़ारी ज़ात का इज़ाफ़ा भी हुआ जिससे ४ हज़ारी ज़ात और ३ हज़ार सवारों का मनसबदार हो गया ॥	راؤ امر سنگہ کو خلعت خاصہ اور اسپ معہ زین مطلا کے ملا اور اوسکا منصب بھی ہزاری ذات کے اضافہ سے چار ہزاری ذات اور تین ہزار سواروں کا ہوگیا ॥
राजा राय सिंघ को खिल्अत मिला और हज़ारी ज़ात के इज़ाफ़े से उसका मनसब ४ हज़ारी ज़ात और २ हज़ार सवार का होगया ॥	راجہ رائے سنگہ کو علاوہ خلعت کے ہزاری ذات کا اضافہ ہوا جس سے اوسکا منصب چار ہزاری ذات اور دو ہزار سوار کا ہوگیا۔
राव शत्रुसाल को खिल्अत और चांदी की ज़ीन का घोड़ा इनायत हुआ ॥	راؤ شتروسال ہاڈہ کو خلعت اور گھوڑا معہ زین نقرہ کے عنایت ہوا۔
राजा जगत सिंघ को खि	راجہ جگت سنگہ کو خلعت اور گھوڑا ملا۔

वह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लअत और घोड़ा मिला ॥

हरी सिंघ और महेशदास को खिलअत घोड़ा और झंडा मिला ॥

राम सिंघ राठोड़ को खिलअत और घोड़ा इनायत हुआ ॥

चंद्र मरिा बुंदेले को खिलअत घोड़ा और झंडा मिला

राजा अमर सिंघ नरवरी गोकुलदास सीसोदिया और राय सिंघ झाला को खिलअत और घोड़ा दिया [illegible] और हुक्म हुआ कि तमाम अमीरों को १०० सवार पीछे १०००) कि १००० सवारों के १०००००) मनसब के हिसाब से होते हैं मनसब की तनख़ाह के सिवाय मदद खर्च के तौर पर दे देवें अहदियों तोपचीयों और बंदूकचियों की ३ महीने की तनख़ाह पेशगी तक़सीम करें सो खर्च से तंग नहीं और उस दिन शाह

ہری سنگہ اور مہیش داس کو خلعت گھوڑا اور جھنڈا عطا ہوا۔

رام سنگہ راٹھوڑ کو خلعت اور گھوڑا مرحمت ہوا۔

چندرمن بندیلہ کو خلعت گھوڑا اور جھنڈا ملا۔

راجہ امر سنگہ نروری گوکلداس سیسودیہ اور رائے سنگہ جھالا کو خلعت اور گھوڑے دلائے گئے۔ اور حکم ہوا کہ تمام امیروں کو فی ایکسو سوار دس ہزار روپے کہ ایکہزار سوار کے ایک لاکھ روپیہ موافق حساب منصب کے ہوتے ہین علاوہ تنخواہ مناصب بطریق مدد خرچ کے دلائے جاوین احدیون بندوقچیون اور توپچیون کو تین مہینے کی تنخواہ پیشگی تقسیم کردیجاوے کہ خرچ سے تنگ نہون۔

اوسیدن شاہزادہ مراد بخش

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज़ादे मुरादबख़्श को ख़िलअ़त वग़ैरा देकर फ़रमाया कि नीलाब दरिया के किनारे पर जहांमुनासिब समझे मुक़ाम करे और जब ज़रूरत पडे· भाई की मदद कोर वाने हो जावें और काबुल के हाकिम अली मरदान ख़ां को लिखा गया कि वह बलख़ और बुख़ारा के हाकिम नज़र मोहम्मद ख़ां के मुक़ाबिले के वास्ते तैयार रहे॥

शाह सफ़ी का शान में पहुंच कर बैसाख सुदी १२ को ज़्यादा शराब पीने से मर गया शाहज़ादा दारा शिकोह जब नीलाब से उतरा तो उसको यह ख़बर लगी तो उसने बादशाह को अरज़ी लिखी और हुक्म आने तक ग़ज़नी में ठहर कर ३०००० सवार ख़ानदौरां और सईद ख़ां के साथ कंधार को भेजे और मोक़ा देख

کو بھی خلعت و انعام وغیرہ سے سرفراز کرکے روانہ کیا تاکہ دریائے نیلاب کے کنارے پر جہاں مناسب سمجھے فروکش ہو جاوے اور جب ضرورت پڑے تو جاکر بھائی کی مدد کرے۔

علیمردان خان حاکم کابل کو لکھا گیا کہ اگر نذر محمد خان ازبک حاکم بلخ کچھ ارادہ شر و فساد کا کرے تو اوسکے مقابلہ کے واسطے تیار رہے۔

شاہ صفی کاشان مین پہنچکر تاریخ ۱۲ صفر کو کثرت شراب خوری سے مر گیا بادشاہزادہ دارا جب نیلاب سے اُترا تو اُس کو یہ خبر پہونچی اُوسنے بادشاہ کو عرضی لکھی اور حکم آنے تک غزنین ٹھہرکر ۳۰ ہزار سوار خاندوران بہادر نصرت جنگ اور سعید خان بہادر ظفر جنگ کے ہمراہ قندھار کو روانہ ہوگئے ✣

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर हिरात और सीसतां के फ़तह करने का इरादा किया मगर बादशाह ने मुनासिब और मुरव्वत न समझ कर शाहज़ादे की वापिस हाज़िर होजाने का हुक्म लिख भेजा॥

ईरान के अमीरों ने काशान से "कज़वीन" में जाकर शाह सफ़ी के बड़े बेटे सुलतान मोहम्मद मिरज़ा को तख़्त पर बैठ कर शाह अब्बास का खिताब दिया॥

اُدہر ایران کے امیرون نے شاہ صفی کے بڑے بیٹے سلطان محمد مرزا کو شاہ عباس نام رکھکر تخت سلطنت پر بٹھایا ادہر شاہزادہ داراشکوہ نے موقع دیکھکر ہرات اور سیستان کے فتح کرلینے کا ارادہ کیا مگر بادشاہ نے اوسوقت یہ بات مناسب اور مروت نہ دیکھکر شاہزادہ کو واپسی کا حکم لکھبھیجا۔

दरबार के हालात

واقعات دربار

बैसाख सुदी ३ को चम्बे के राजा प्रथ्वी चंद को हाथी इनायत हुआ॥

गिरधर दास गौड़ का मनसब हज़ारी ज़ात और ४०० सवारों का असल और इज़ाफ़े से होगया

۲ صفر کو راجہ پرتھی چند زمیندار چنبہ عطائے فیل سے سربلند ہوا

گردہر داس گوڑ کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور چارسو سوار دن کا ہوگیا۔

مہم بندیلہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

मुहिमबुंदेला

अबदुल्लाखां बहादुर फ़ीरोज़ जंगसे चंपत और उसके साथियों की सज़ा देने की तामील जैसी कि चाहिये थी नहीं होसकी थी और अब जेठसुदी ८ को राजा पहाड़सिंघ ने जो उस मुल्क का ज़िमींदार था चंपत और उस्के भाईयों की सज़ा का ज़िम्मा किया इस लिये बादशाह ने अबदुल्लाखां की जगह पहाड़सिंघको मुक़र्रर करके उस्के मनसब में १००० सवार दोअस्पा का इज़ाफ़ा कर दिया॥

आसाढ सुदी ५ को शाहज़ादा मुराद बमूजिब हुक्म के हसन अबदाल से पीछा आगया॥

सावन वदी १ को अर्ज़ हुई कि जब राजा पहाड़सिंघ इसलामाबाद में पहुंचा तो चंपत लाचार होकर उस्के पास हाज़िर होगया

چنپت اور اوسکے ہمراہیون

کی سزادہی عبد اللہ خان بہادر فیروز جنگ سے جیسی کہ چاہیے تھی نہو سکی اسلئے بادشاہ نے ۶ ربیع الاول کو راجہ پہاڑ سنگہ کو جو اوس ملک کا زمیندار تھا خان مذکور کے تغیر سے اس خدمت پر مامور فرمایا کیونکہ اوس نے چنپت اور اوسکے بھائیون کی تنبیہ اور تادیب کا ذمہ کیا تھا اور اوسکے منصب مین ایک ہزار دو اسپہ سواروں کا اضافہ بھی کر دیا

۴- ربیع الثانی کو شاہزادہ مرادبخش حسن ابدال سے بموجب حکم کے واپس آگیا۔

۱۵- ربیع الثانی کو بادشاہ سے عرض ہوئی کہ جب راجہ پہاڑسنگہ اسلام آباد مین پہنچا تو چنپت مجبور ہوکر چاروناچار اوسکے پاس حاضر ہوگیا بادشاہ نے حکم دیا کہ چنپت جسطرح سے کہ پہاڑسنگہ کے باپ اور اوس کے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बादशाह ने हुक्म दिया कि चंपत जिस तरह पहिले राजा पहाड़ सिंघ और उसके बड़े भाई की नौकरी करता था उसी तरह अब भी राजा पहाड़ सिंघ की नौकरी करे चंपत कई दिन तक तो पहाड़ सिंघ की नौकरी में रहा फिर अपने भाइयों समेत बड़े शाहज़ादे का नौकर होगया ॥

दरबार के हालात

भादों सुदी १४ को माधो सिंघ हाडा ५०० सवारों के इज़ाफ़े से ३ हज़री ज़ात और ३००० सवारों का मनसबदार होगया

असोज बदी १ को महेशदास राठौड़ हजारी ज़ात और १००० सवारों के इज़ाफ़े से २ हज़ारी ज़ात और २००० सवारों का मनसबदार होगया ॥

بڑے بھائی کا نوکر تھا اوسی طرح اب بھی پہاڑ سنگہ کا نوکر رہے چنپت کچھ عرصہ تک تو راجہ کا نوکر رہا مگر پھر بڑے شاہزادہ کا متوسل ہوکر مع سجانی وغیرہ اپنے بھائیوں کے اوسکا نوکر ہوگیا۔

وقایع دربار

۱۴- جمادی الثانی کو مادہو سنگہ ہاڈا پانسو سوار کے اضافہ سے تین ہزاری ذات اور تین ہزار سواروں کے منصب کو پہنچا۔

۱۵- جمادی الثانی کو مہیشداس راٹھوڑ کا منصب ہزاری ذات اور ہزار سواروں کے اضافہ سے دو ہزاری ذات اور دو ہزار سواروں کا ہوگیا اور جالور کا پرگنہ بطریق وطن اوسکی جاگیر مین عنایت ہوا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और जालोर का परगना भी उस के वतन बनाने के वास्ते इनायत हुआ

आसोज बदी ३ को शाहज़ादा दारा शिकोह लाहोर में पहुंचकर बादशाह के पास हाज़िर हुआ और बादशाह ने उसको शाहबुलंदइक़बाल का ख़िताब दिया उस के साथ जो अमीर गये थे वे भी सब आगये

बादशाह ने ५०००० कशमीर के ज़मींदारों को इनायत किया ॥

असोज बदी ७ को रामसिंघ राठोड़ असल और इज़ाफ़े से डेढ़ हज़ारी ज़ात और ८०० सवारों का मनसबदार हुवा

आसोज सुदी ६ को राय मुकंददास दीवान "बयूतात" (कारखानों) का हुआ ॥

कातिक बदी ८ को राजा जयसिंघ और राव अमरसिंघ राठोड़ कंधार से आकर हाज़िर हुवे ॥

कातक सुदी ९ को बादशाह पहिली दफे बाग़ की सैर को गये जो लाहोर में नहर के किनारे पर नया तैयार हुवा था उस्के अंदर संगमरमर के महल बने थे ९ लाख रुपये

۱۷- جمادی الثانی کو شاہزادہ دارا شکوہ لاہور مین پہنچکر بادشاہ کے پاس حاضر ہوا بادشاہ نے اُسکو فرط عنایت سے شاہ بلند اقبال کا خطاب دیا اور جو امیر اُسکی تعیناتی مین تھے وہ بھی سب حاضر ہوگئے۔

بادشاہ نے پچاس ہزار روپیہ کشمیر کے زمیندارون کو بطور پرورش عنایت فرمائے۔

۲۱- جمادی الثانی کو رام سنگہ راٹھوڑ اصل اور اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ذات اور آٹھ سو سوارون کے منصب سے سرفراز ہُوا۔

۴- رجب کو رائے مکند داس عہدہ دیوانی بیوتات سے سربلند ہُوا

۲۱- رجب کو راجہ جے سنگہ اور راو امر سنگہ ولد راجہ گج سنگہ قندھار سے آکر حاضر درگاہ ہوئے

۷- شعبان کو بادشاہ اوّل

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसबाग़ और महल में ख़र्च ऊवे ये और १ लाख रुपया नहर में पहिले लगा था और १ लाख अब लगा ॥

कातक सुदी ३० को राव शत्रु साल हाडा हाज़िर ऊआ ॥

मंगसिर बदी ५ को बादशाह लाहोर से आगरे को लौटे ॥

मंगसिर बदी ६ को ख़्वाजा शमसुद्दीन की सराय में राजा जयसिंघ को ख़ासा ख़िलअत इनायत होकर घर जाने की रुख़सत मिली ॥

मंगसिर सुदी २ को शाहज़ादे दारा शिकोह को ऊक्म ऊआ कि नूरपूर और तारा गढ़ वग़ैरा को जो पहाड़ी इल्लाक़े राजा जगत सिंघ के हैं जाकर देखे शाहज़ादा उसको देख कर गांव बाहन में बादशाह के पास हाज़िर ऊआ और रस्ते की मुश्किलों और तारा गढ़ की मज़बूती का

مرتبہ سیر باغ کو گئے جو لاہور مین نہر کے کنارے پر تیار ہو گیا تھا اس بادشاہی باغمین سنگ مرمر کی عمارتین بھی جابجا تیار ہو گئین تھین چھ لاکھ روپیہ اسکی تیاری مین صرف ہوا تھا اور ایک لاکھ روپیہ سوائے ایک لاکھ سابق کے نہر مین لگا تھا۔

۸۔ شعبان کو راؤ شترو سال ہاڈا درگاہ مین حاضر ہوا

۱۵ شعبان کو بادشاہ لاہور سے آگرہ کو روانہ ہوئے

۲۲ شعبان کو خواجہ شمس الدین کی سرائے مین راجہ جے سنگہ کو خاصہ خلعت عنایت ہو کر وطن جانکی رخصت ملی۔

غرہ رمضان کو بادشاہزادہ داراشکوہ کو حکم ہوا کہ نورپور و تاراگڈہ وغیرہ محالات کوہستان متعلقہ راجہ جگت سنگہ مین جاکر وہان کے قلعہ جات کو دیکھے چنانچہ بادشاہزادہ ۶ رمضان کو بعد ملاحظہ قلعہ جات مذکورہ بادشاہ کے پاس موضع

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हाल जो देखा था अरज़ किया ॥

मंगसिर सुदी १५ को गिरधर दास गोड़ असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों का मनसब दार होगया ॥

पोस बदी ६ को सहरंद के दोलत खाने में मुक़ाम हुआ जहां सरकार सहरंद का दीवान अमीन और फ़ौजदार राय टोडर मल उमदा काम करने से असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार दो अस्पा और सि अस्पा का मनसब दार होगया ॥

पोस सुदी १५ को बादशाह ने दिल्ली में पहुंच कर क़िले को देखा जो बन रहा था ॥

माह बदी १० को बादशाह आगरे में दाखिल हुवे आगरे के क़िले दार राजा बिठ्ठलदास ने हाज़िर होकर मुजरा किया ॥

अली मरदान खां को ७

(گانو) واہن مین حاضر ہوا اور جو کیفیت دشواری راہ اور استواری قلعہ تارا گڈھ کی دیکھی تھی وہ بادشاہ سے عرض کی۔

۱۴- رمضان کو گردہرداس گوڑ کو اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور پانسو سوارون کا منصب عنایت ہوا۔

۲۰ رمضان کو دولتخانہ سہرند مین بادشاہ نے راے ٹوڈرمل دیوان وامین و فوجدار سرکار سہرند کے حسن خدمت سے خوش ہوکر اُسکو اصل و اضافہ سے ہزاری ذات اور ہزار سوار دو اسپہ وسہ اسپہ کا منصب عنایت فرمایا۔

۱۴- شوال کو بادشاہ کی سواری دہلی مین پہونچی اُسوقت قلعہ دہلی (لال قلعہ) تعمیر ہورہا تھا

۲۴- شوال کو بادشاہ دارالخلافہ اکبرآباد مین داخل ہوئے راجہ بٹھل داس جو قلعدار تھا حاضر خدمت ہوکر آداب بجالایا۔

علیمردان خان ناظم کابل کو جو حسب الحکم پشاور سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

हज़ारी ज़ात और ७००० सवारों का मनसब जिनमें ५००० सवार दो अस्पा और ती अस्पा थे और अमीर उल उमरा का ख़िताब इनायत हुआ १२ किरोड़· दाम की तनख़्वाह मुक़र्रर हुई जिसके ३ लाख रुपये सालाना होते थे ११ किरोड़· दाम तो मनसब की तलब थी और १ किरोड़· दाम इनाम के थे आसिफ़ ख़ां के पीछे यह आख़िरी मनसब अमीरों के वास्ते थे ॥

माह सुदी २ को तुलादान के दरबार में राजा बिट्ठलदास का मनसब हज़ारी ज़ात के इज़ाफ़े से पांच हज़ारी ३००० सवारों का हो गया ॥

फागण बदी ३ को बादशाह ने मुमताज़-उल ज़मानी बेगम (ताजबीबी) की क़बर पर सोने के कटहरे की जगह संगमरमर का कटहरा लगाया जो १० बरस में ५०००) की लागत से तैयार

حاضر آیا تھا منصب ہفت ہزاری ہفت ہزار سوار کا معہ خطاب - امیر الاُمرا کے عنایت ہوا منجملہ ہفت ہزار سواروں کے پانچہزار دو اسپہ اور سہ اسپہ تھے اور تنخواہ بارہ کروڑ دام کی مقرر ہوئی جسکے ٣٠ لاکھ روپیہ سالانہ ہوتے تھے گیارہ کروڑ دام تو منصب کی طلب تھی اور ایک کروڑ دام انعام کے تھے آصف خان کے بعد یہ آخری منصب اُمرا کے واسطے تھا -

غرہ ذیقعدہ روز جشن وزن شمسی تاریخ ٣ بہمن کو راجہ بیٹھل داس گوڑ ہزاری ذات کے اضافہ سے پانچہزاری ذات اور تین ہزار سوار کے منصب کو پہنچا -

١٧ - ذیقعدہ کو بادشاہ نے ممتاز الزمانی بیگم کی تربت پر سنگ مرمر کا محجر بجائے محجر طلا کے نصب کرایا جو دس برس میں پچاس ہزار روپیہ کی لاگت سے تیار ہوا تھا اور اس روضہ کی عمارت جسکو اب روضہ

हुआ और इस रोज़े की इमारत (जिस को अब ताज गंज कहते हैं) इस साल में ५० लाख रुपये की लागत से तैयार होगई जो १२ बरस से बनरही थी इस्के ख़रच के वास्ते १ लाख रुपये की आमदनी के गांव दिये गये थे और २ लाख रुपये सालाना भाडे के आते थे ॥

फागण बदी ६ को राजा बिट्ठल दास को १ खासा हाथी इनायत हुआ ॥

१७ वां बरस

चैत सुदी २ सं. १७०० से प्रथम चैत सुदी २ सं. १७०१ तक

जेठ सुदी ४ को राजा बिट्ठल दास को ख़ासा घोड़ा सोने की ज़ीन का इनायत हुआ

भादों सुदी १४ को बादशाह ने राजा जसवंत सिंघ को ख़िलअत ख़ासा इनायत करके वतन जाने की रुख़सत दी ॥

असोज बदी १२ को बादशाह

تاج گنج کہتے ہیں اس سال میں بارہ برس بعد پچاس لاکھ روپیہ کی لاگت سے تیار ہوگئی جسکے خرچ کے واسطے ایک لاکھ روپیہ کا علاقہ معہ کرایہ دو لاکھ روپیہ سالانہ کے وقف کیا گیا تھا

۲۳- ذیقعدہ کو راجہ بیٹھل داس کو ہاتھی حلقہ خاصہ سے عنایت ہوا۔

ستر ھواں برس

سنہ ۱۰۵۳ھ

۱۲ مارچ سنہ ۱۶۴۳ء سے ۳۱ مارچ سنہ ۱۶۴۴ء تک

۱۸ صفر راجہ بیٹھل داس کو گھوڑا طویلہ خاصہ سے معہ زین مطلا کے عنایت ہوا۔

۱۲- جمادی الثانی کو جشن وزن قمری میں راجہ جسونت سنگھ کو خلعت خاصہ عنایت ہوا اور وطن جانے کی رخصت ملی۔

۲۵- جمادی الثانی کو بادشاہ

दारा शिकोह के लड़के मुमताज़ शिकोह का मुंह देखने को उस की हवेली पर गये शाहज़ादे ने पग मंडे और नज़र निछावर करके किस्म २ के जवाहर पेश कश किये जिनमें से १ लाख रुपये का जवाहर बादशाह ने क़बूल किया और मुमताज़ शिकोह को १ माला मोतियों की मुंहदिखाई में दी जिस्में कई लाल भी लगे थे शाहजादे ने बादशाह के हुक्म से कई अमीरों को खिलअत दिये जिनमें १ खिलत फरज़ी समेत राजा बिठ्ठल दास गोड़ को भी मिला ॥

कातिक वदी ११ को राव शत्रू साल को १ ख़ासा हाथी इनायत हुआ ॥

कातिक सुदी १ को शाहज़ादे औरंगज़ेब का दूसरा बेटा मोहम्मद मोअज़्ज़म पैदा हुवा और

شاہ بلند اقبال داراشکوہ کے بیٹے ممتاز شکوہ کا موہنہ دیکھنے کے لئے جو نیا پیدا ہوا تھا شاہ موصوف کی حویلی پر گئے شاہ نے بعد ادائے مراسم پانداز اور نثار کے اصناف جواہر اور اقسام نفائیس پیشکش کئے اُنمین سے ایک لاکھ روپیہ کا متاع بادشاہ نے پسند کر کے قبول کیا او ممتاز شکوہ کو رونمائی مین ایک موتیون کا ہار جس مین کئی لعل بھی لگے تھے عنایت فرمایا شاہ بلند اقبال نے بادشاہ کے حکم سے کئی امیرون کو خلعت دئے ازانجملہ راجہ بیٹھل داس کو بھی ایک خلعت معہ فرجی کے ملا تھا۔

۲۴- رجب کو راؤ شترو سال کو ایک فیل حلقہ خاصہ سے عنایت ہوا ❊

۳۰- رجب کو شاہزادہ اورنگ زیب کا دوسرا بیٹا محمد معظم پیدا ہوا- اور دوسرے دن زینت النسا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरे दिन ज़ीनतउलनिसाबेगम पैदाऊई ॥

कातिकसुदी ६ को रायरायां ने १ हाथी नज़र किया उसके दिल में बऊत दिन से काशीसेवन की लोलगरही थी इस लिये बादशाह ने उसको रुख़सत दी ॥

मंगसिर बदी ३ को इतवार की रात को बादशाह आगरे से अजमेर की ज़ियारत के वास्ते रवाने ऊवे ॥

मंगसिर सुदी २ को चाटसू के पास राजा जयसिंघ ने अपने बेटों समेत वतन से हाज़िर होकर सलाम किया वहां सेउसका वतन पास था इस लिये उसने तीसरे दिन मंगसिर सुदी ४ को १ हाथी और ९ घोडे नज़र किये ॥

मंगसिर सुदी ८ को जोगी तलावपर डेरे ऊये यहां राना

بیگم پیدا ہوئی۔

۸۔ شعبان کو رائے رایان نے ایک ہاتھی نذر کیا اوس کے دلمین بہت دنون سے بنارس مین گوشہ نشینی کی آرزو تھی اس لئے بادشاہ نے اُسکو وہان جانے کی اجازت دی

شب دوشنبہ ۱۸۔ شعبان کو بادشاہ آگرہ سے زیارت کے واسطے اجمیر کو روانہ ہوئے۔

غرہ رمضان کو حوالی پرگنہ چاٹسو مین راجہ جے سنگہ نے معہ اپنے بیٹون کے وطن سے آکر دولت ملازمت حاصل کی۔

۳ رمضان کو راجہ جے سنگہ نے بوجہ قرب وطن کے نو گھوڑے اور ایک ہاتھی نذر کیا۔

۷۔ رمضان کو بادشاہ کے ڈیرے تالاب جوگی پر ہوئے وہان رانا جگت سنگہ کے بڑے بیٹے راج کنور نے حاضر ہوکر ایک ہاتھی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

जगत सिंघ का बड़ा बेटे राजकुंवर ने हाज़िर होकर १ हाथी नज़र किया बादशाह ने उस को खिलअत जड़ाऊ सरपेच जड़ाऊ जमधर तपचाक़ घोड़ा सोने की ज़ीन का इनायत फ़रमाया॥

बादशाह नामे में लिखा है, जब बादशाह राना अमरसिंघ की मोहिम ख़तम करके अपने बाप जहांगीर बादशाह के साथ कशमीर की सैर को गये थे तो राणा जगत सिंघ सवारी के साथ था इसी तरह दक्खन की हरेक मोहिम में बादशाह के साथ रहा था और अब इस सफ़र में उसने अपने बड़े बेटे को जो राठोड़ों के सिवाय जैसा कि लिखा जा चुका है और सब राजपूतों में बाप की जगह बैठता है और जिसको यह लोग टीकाई कहते हैं अपनी अवजी में भेजा॥

मंगसिर सुदी ८ को बाद

پیشکش کیا بادشاہ نے اوسکو خلعت فاخرہ سرپیچ مرصع جمدھر مرصع اوراسپ تپچاق معہ زین طلا کے عنایت فرمایا۔

بادشاہ نامہ مین لکھا ہے کہ جب بادشاہ ایام شاہزادگی مین بعد انصرام مہم رانا امرسنگہ کے اپنے باپ جہانگیر بادشاہ کے ساتھ کشمیر کو گئے تھے تو رانا جگت سنگہ ہمرکاب تھا اور دکھن کی ہر ایک مہم مین جب جب بادشاہ معہ فوج کے تشریف لے گئے تو بھی رانا جگت سنگہ معہ ایک ہزار سوار کے سواری مین حاضر رہا اوراس سفر مین اُسنے اپنے بڑے بیٹے کو بجائے خود بھیجا جو قوم راجپوت مین سوائے راٹھوڑون کے مستحق اور مخصوص جانشینی ہوتا ہے جیسا کہ پہلے لکھا جاچکا ہے اور جس کو یہ لوگ ٹیکائی کہتے ہین جسکے معنی فرزند جانشین کے ہین۔

۸ رمضان کو بادشاہ دولتخانہ اجمیر مین جو آناساگر تالاب

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाह अजमेर के दौलत खानेमें जो आना सागर तलाव के ऊप रहै दखिल हुवे और ख़ाजे सा हिब की ज़ियारत करके १०००) वहां के ख़ादिमों और ग़रीबों को तक़सीम फ़रमाया ॥

राजा जसवंत सिंघ नेअ पनेवतन से हाज़िर होकर मु जरा किया ॥

इसी दिन राजा जय सिंघ नेअपना निशान दिखलाया ५००० सवार गिने गये ॥

मंगसिर सुदी १३ को बादशा ह पिछले दिन से फिर ख्वाजासा हिब की दरगाह में गयेऔर हुक्म दिया कि तांबे की बड़ी देग मेंजो की जहांगीर बादशाह चढाई हुई है खासा शिकार की नील गायों का गोश्त और चांवल पकवा कर ग़रीबों को बांट देवें १५० मण गोश्त चांवल घी और दू सरा मसाला उस देग में पका ॥

पोस वदी १ को बादशाह

کے کنارہ پر واقع ہے داخل ہوئے - اور پھر خواجہ صاحب کی زیارت کر کے دس ہزار روپیہ وہان کے خادمون اور مسکینون کو تقسیم فرمائے -

راجہ جسونت سنگہ نے اپنے وطن سے حاضر ہو کر مجرا کیا - اوسیدن راجہ جے سنگہ نے اپنا نشان دکھایا پانچہزار سوار گنے گئے -

۱۴ - رمضان کو پچھلے دن سے بادشاہ نے خواجہ صاحب کی درگاہ مین جا کر حکم دیا کہ تانبے کی بڑی دیگ جو جہانگیر بادشاہ کی چڑھائی ہوئی ہے اسمین شکار کے نیل گاو اور چانول پکا کر فقیرون کو تقسیم کرین چنانچہ ۱۴۵ من بادشاہی تول سے گوشت و چانول معہ گھی اور دوسرے مصالحہ کے ایک دفعہ اسمین پک گئے

۱۵ - رمضان کو اجمیر سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का अजमेर से आगरे को कूंच ऊ
आ राजा जय सिंघ और राजा जस
वंत सिंघ को खासे खिलअत
और वतन जाने की रुखसत मि
ली राजा जय सिंघ के बेटे राम सिं
घ और कीरत सिंघ भी घोड़े और
सिर पांव पाकर अपने बाप के
साथ रुखसत ऊवे ॥

पोस बदी २ को राना जग
त सिंघ के बेटे राज कंवर को खि
लत तलवार और ढाल ॥ ॥ ॥
सोने के मीना कार साज़ के हा
थी घोड़े और कुछ जड़ाऊ ज़ेवर
जो राज पूत पहना करते हैं इना
यत होकर वतन जाने की इजा
ज़त ऊई और उस्के बाप के २ बड़े
रजपूतों को घोड़ा खिलअत और
८ दूसरे आदमियों को खिलअ
त इनायत ऊवे और कंवर के हा
थ राना के वास्ते मोतियों की
माला ढाल तलवार सुनहरी

بادشاہ کا کوچ آگرہ کی طرف ہُوا راجہ
جسونت سنگہ و راجہ جے سنگہ خلعت
خاصہ سے نوازش پا کر اپنے اپنے
وطنون کو رخصت ہُوے راجہ
جے سنگہ کے بیٹے رام سنگہ اور
کیرت سنگہ بھی خلعت اور اسپ سے
سرفراز ہوکر اپنے باپ کے ہمراہ
گئے ❊

۱۶ - رمضان کو رانا جگت سنگہ
کے بیٹے راج کنور کو خلعت شمشیر
سپر و یراق طلائی مینا کار اسپ
و فیل اور کچھ جڑاؤ زیور جو راجپوت
پہنتے ہین بادشاہ نے عنایت کرکے
رخصت کیا اُوسکے باپ کے دو بڑی
راجپوتون کو خلعت اور گھوڑے
اور ۲۸ دوسرے آدمیون کو
خلعت مرحمت ہوئے اور رانا
جگت سنگہ کے واسطے موتیون
کی مالا ڈھال تلوار اور یراق طلائی
مینا کار اور دو گھوڑے عربی
اور عراقی راج کنور کے ہاتھ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

मीनाकार साज़ के २ घोड़े १ अरबी सुनहरी ज़ीन का और दूसरा इराक़ी सुनहरी ज़ीन का भेजा गया ॥

पोस बदी १० को बादशाह की सवारी इलाक़े मालपुरे में पहुंची यह राजा बिट्ठल दास की जागीर में था राजा ने १ हाथी और १ हथनी नज़र की बादशाह ने हथनी पसंद की ॥

पोस सुदी २ को बाड़ी में डेरे हुवे वहां राजा किशन सिंघ भदोरिया के मरने की अर्ज़ हुई उसके कोई लड़का सिवाय १ छोकरी के बेटे के न था और ब्राह्मण लोग उस लड़के को ग़ुलाम के माफ़िक रखते हैं और उसके साथ खाना नहीं खाते हैं इस लिये बादशाह ने राजा किशन सिंघ के चचा के पोते राय बदन सिंघ को ख़िलअत और राजा का ख़िताब इ

بھیجے گئے عربی گھوڑا معہ زین طلا کے تھا اور عراقی کی زین مطلا تھی ✤

۲۴ - رمضان کو بادشاہ کی سواری مالپورہ دیکھ جاگیر راجہ بٹھل داس میں پہونچی اُسنے ایک ہاتھی اور ایک ہتھنی پیشکش کی بادشاہ نے ہتھنی قبول کرکے رکھلی -

سلخ رمضان کو مقام باڑی میں بادشاہ سے عرض ہوئی کہ راجہ کشن سنگھ بھدوریہ مرگیا اوسکے ایک لڑکا چھوکری سے تھا اور برہمن جو ہندوں کے مقتدا ہیں چھوکری کی لڑکی کو مثل غلام سمجھ رکھتے ہیں اور اُسکے ساتھ کھانا نہیں کھاتے ہیں اسلئے بادشاہ نے اوسکے چچا کے پوتے بدن سنگھ کو عنایت خلعت منصب ہزاری ذات و پانسو

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नायत करके मनसब भी उसका पांच सदी ज़ात और ५०० सवारों के इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और हज़ार सवारों का कर दिया॥	سوارے منصب ہزاری ذات اور ہزار سوار پر پہنچا کر راجگی کا خطاب عنایت کیا اور گھوڑا بھی مرحمت فرمایا-
पोस सुदी ३ को नाहर सोलंखी ने १ हाथी नज़र किया॥	غرہ شوال کو ناہر سولنکھی نے ایک ہاتھی پیشکش کیا
माह बदी २ को बादशाह आगरे में पहुंचे॥	۵ شوال کو بادشاہ آگرہ مین پہونچے ❖
माह सुदी ६ को तुलादान के दरबार में सुजान सिंघ सीसोदिया को हज़ारी ज़ात और ४०० सवारों का मनसब इनायत हुआ	۸-ذیقعدہ کو جشن وزن شمسی تھا جسمین سجان سنگھ سیسودیہ کو ہزاری ذات اور چارسو سوار کا منصب عطا ہوا-
राजा बदन सिंघ भदोरिया को हाथी इनायत हुआ॥	راجہ بدن سنگھ بھدوریہ کو ہاتھی عنایت ہوا-
फागण सुदी ६ को आगरे में हैज़ा शुरू हुवा और बादशाह शिकार के वास्ते सोकर की तरफ़ चले गये॥	۷-ذی الحجہ کو آگرہ مین وبا شروع ہوئی جس سے بادشاہ سیر اور شکار کے لیئے سوکر کی طرف تشریف لے گئے-
चैत बदी १३ को बादशाह वापिस आये और फिर चले गये क्यों के हैज़ा अभी बाक़ी था॥	۲۶-ذی الحجہ کو بادشاہ آگرہ مین واپس آئے اور پھر چلے گئے کیونکہ ہیضہ ابھی باقی تھا-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस साल में पिछले साल से ज़्यादा अकसर बड़े॰ २ आदमी ईरान तूरान अरब व काशग़र वग़ैरा से नोकरी के वास्ते हिन्दुस्तान में आये और जैसा कि मामूल था सब अपने २ दरजों के माफ़िक़ नोकर होगये आदिल खां और क़ुतब शाह के नज़राने भी दस्तूर के माफ़िक़ आये॥

१८ वांबरस

प्रथम चैत सुदी ३ संबत १७०१ से चैत सुदी २ सं॰ १७०२ तक ॥ ॥

पहिले चैत की ३ को बादशाह ने सफ़दर खां सूबेदार क़ंधार की शिकायत सुनकर उस को मोक़ूफ़ किया और उसकी जगह पंजाब के सूबेदार सईद खां को भेजा उससे और राजा जगत सिंघ से नाराज़ी थी इस लिये राजा को क़िलात की क़िलेदारी से बदल

اس سالمین اکثر نامی گرامی اشخاص ایران توران عرب ور کاشغر وغیرہ کی نوکری کے واسطے سالہائے دیگر سے زیادہ ہندوستان مین آئے اور بادشاہ نے حسب معمول سب کو علی قدر مراتب ملازم رکھ لیا۔ عادل خان اور قطب الملک کی پیشکشین بھی بدستور بیجاپور اور گولکنڈہ سے آئین ٭

اٹھارہوان برس

سنہ ۱۰۵۴

یکم مارچ سنہ ۱۶۴۴ سے ۱۷ فروری سنہ ۱۶۴۵ تک

غرہ محرم کو بادشاہ نے صفدر خان صوبہ دار قندہار کی شکایت سنکر اسکو معزول کیا اور اسکی جگہ سعید خان ظفر جنگ صوبہ دار پنجاب کو بھیجا چونکہ اوسکے اور راجہ جگت سنگ کے درمیان کدورت تھی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर काबुल के सूबे में तईनात किया ॥

बैसाख बदी १४ को रात के वक़्त, बादशाह की बड़ी बेटी जहांआरा बेगम कपड़ों में आग लग जाने से जल गई बादशाह ने ३ दिन तक ५००० मोहर और ५०००) रोज़ ख़ैरात किये फिर १ महीने तक २०००) रोज़ बांटे और दूसरे महीने से हर रोज़ १०००) ख़ैरात करने का हुक्म फ़रमाया और दीवानी क़ैदियों को छोड़ कर ७ लाख रुपया "एनुलमाल" से उनको बख़्शदिया और मदद मुआश (पुन्यार्थ) की जमा जो थोड़े दिनों से सनदों की तहक़ीक़ वग़ैरा के वास्ते अटकाई थी वह पीछे दिलवादी॥

पलामूं

पलामूं के ज़िमींदार प्रतापउज्जैनये ने अपनी क़ौम को ना

اِس لئے راجہ کو قلعداری قلات متعلقہ قندھار سے بدل کر صوبہ کابل کے کمکیون مین مقرر کیا۔

۲۷ محرم کو وقت شب بادشاہ کی بڑی بیٹی جہان آرا بیگم کپڑون مین آگ لگجانے سے جل گئی۔ بادشاہ نے تین دن تک ہر روز پانچہزار مہر اور پانچہزار روپیہ خیرات کئے پھر مہینے بھر تک دوہزار روپیہ روز خیرات ہوئے دوسرے مہینے سے ہزار روپیہ روز خیرات کرنے کا حکم ہوا اور دیوانی قیدیون کو آزاد کرکے سات لاکھ روپیہ اُنکو عین المال سے بخشدیا اور مدد معاش والون کی جمع جو کچھ دنون سے واسطے تحقیق اسناد وغیرہ کے روکی ہوئی تھی وہ اُنکو واپس دیدی

پلاموں

پلاموں کے زمیندار پرتاب نے اپنی قوم کو ناراض کردیا اُسکو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

राज़ करदिया जिससे उसके च
चा दरिया राय और तेजराय बि
हार के सूबेदार एतक़ाद ख़ांके
पास आये ख़ान ने उनको तसल्
ली दी जिसपर उन्हों ने इक़रार
किया कि हम प्रताप को पकड़
लावेंगे और जाकर उस को क़ैदक
र लिया और तेजराय उसक़ौम
का सरदार होगया मगर जब ख़ा
न ने ख़बर पाकर उनको लिखा
कि प्रताप को यहां हाज़िर करो
तो तेजराय ने अपने वकील को
भेजकर उज़र किया इस तरह
प्रताप बहुत दिनों उनकी क़ै
और द में रहा फिर दरिया राय क़ौम
चेरू के दूसरे सरदार जो तेजराय
को अपना सरदार बनाया चाह
ते थे दरिया राय से बाग़ी होगये
एतक़ादख़ां ने उसको दिलासा
देकर बंदगी पर राज़ी किया इस
परदरिया राय ने कहला भेजा

چچا دریارائے اور تیج رائے اعتقاد خان
صوبہ دار بہار کے پاس آئے
خان نے اُنکو دلاسا دیکر رکھ لیا
جس سے اُنہوں نے کہا کہ ہم
پرتاپ کو قید کر لائینگے اور جاکر
اُسکو قید کر لیا پھر تیج رائے اُس
قوم کا سردار ہوگیا مگر خان نے
اس بات سے آگاہ ہوکر اُسکو لکھا
کہ پرتاپ کو یہان بھیجدو تو اُسنے
اپنے وکیل کو بھیجکر چند در چند
عذرات غیر مسموع تحریر کئے
پرتاپ ایک عرصہ تک اُنکی
قید مین رہا۔
بعدہ تیج رائے کے بڑے
بھائی دریارائے اور دوسرے
عمائد قوم چیروسے جو تیج رائے کو
سردار رکھا چاہتے تھے مخالفت
ہوگئی اعتقاد خان نے اُنکو دلاسا
دیکر اطاعت پر راضی کیا دریارائے
نے خان سے کہلا بھیجا کہ اگر
فوج بھیجو تو قلعہ دیوگن مین جو

कि जो फ़ौज भेजो तो देवकन के
क़िले में जो पलासूं का बड़ा थाना
है अमल करा दूं खान ने ज़बरद
स्त खां को भेजा वह कातिक सु
दी २ सं· १७०० को क़िले के पास
पहुंचा दरिया राय आकर उससे
मिला देव कन के क़िले दार
भवाल और चंपत भी साथ थे उ
सने वह क़िला ज़बर दस्त खां
को सौंप दिया ज़बर दस्त खां ने
उसको तो एतक़ाद खां के पास
भेजा और आप वहां रह कर लो
गों को राज़ी करने, जंगल काटने
और क़िले को मज़बूत करने में
लगा ॥

आसौज सुदी १० को खा
न ने सुना कि तेजराय ने अपने व
कील मदन सिंघ ठकराई को ५००
सवार और ७००० पैदलों से गांव बा
वली चून की तरफ़ जो देवकन
से ५ कोस दक्खन में है भेजा है

بڑا تھانہ پلاسوں کا ہے عمل کرادوں
خان نے زبردست خاں کو بھیجا
وہ غرہ شعبان ۱۰۵۳ھ کو اس قلعہ
کے پاس پہنچا دریارائے نے
معہ اپنے بیٹوں اور قلعہداروں
بھوال و چنپت کے اس سے
ملاقات کی اور قلعہ سونپ دیا
زبردست خان نے دریارائے
کو اعتقاد خان کے پاس بھیجدیا
اور آپ وہاں رہکر لوگوں کو مطیع
کرنے جنگل کٹوانے اور قلعہ کو
مضبوط کرنے میں مشغول ہوا۔
۱۱۔ شعبان کو خان نے سُنا
کہ تیج رائے نے اپنے وکیل۔
بدن سنگہ کو معہ ۵۰۰ سوار اور
سات ہزار پیدلوں کے موضع
باولی جون کی طرف جو دیوکن
سے پانچ کوس دکھن میں ہے
بھیجا اور وہ ارادہ شبخون کا
کر رہا ہے اس لئے خان
نے کچھ فوج بھیجکر اس کو

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और वह छापा मारने के इरादे में है इसपर ज़बर दस्त खां ने कुछ फौज भेज कर उस को भगा दिया जब एतक़ाद खां ने यह हाल सुना तो अबदुल्ला खां बख़शी और दरिया राय को ज़बरदस्त खां की मदद पर भेजा॥

कातक सुदी ५ को तेज राय पलामूं के किले से निकल कर शिकार खेलने को गया पीछे से उसके वकील के बेटों सूरतसैन और सबल सैन ने दूसरे किले वालों से मिल कर प्रताप को क़ैद से छोड़ दिया जिससे प्रताप का अमल क़िले में होगया यह सुन कर बहुत से आदमी तेजराय के प्रताप के पास चले आये और तेजराय जंगल में चला गया मदन सिंघ जो फ़ौज समेत बादशाही अमीरों का मुक़ाबिला कर रहा था इस ख़बर के सुनते ही

بھگا دیا۔

اعتقادخان نے جب یہ ماجرا سُنا تو بخشی عبداللہ خان نجم ثانی کو معہ دریا رائے کے اوس کی مدد پر بھیجا۔

۳۔ رمضان کو تیج رائے شکار کے واسطے قلعہ پلامون سے نکلا اوسکے وکیل بدن سنگھ کے بیٹون صورت سین اور سبل سین نے باتفاق دیگر اہل قلعہ کے پرتاپ سے سازش کرکے اُس کو قید سے چھوڑ دیا قلعہ مین پرتاپ کا عمل ہوگیا یہ حال سُنکر تیج رائے کے بہت سے آدمی اُسکے پاس چلے آئے اور تیج رائے جنگل مین چلا گیا اوسکا وکیل بدن سنگھ جو بادشاہی اُمرا کا مقابلہ کررہا تھا یہ خبر سُنکر رات کو بھاگ گیا زبردست خا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रात को भाग गया ज़बरदस्त खां
इस हाल से वाकिफ़ होकर।
धरनी धरउज्जैनया और अपने नौ
करों को देव कन के क़िले में छो
ड़ के पलामूं को रवाने हुआ और
बड़ी मुशकिलों से जंगलों में होता
हुआ दुशमनों से लड़ता भिड़ता
मान गढ़ में पहुंचा तब तो प्रताप ने
डर कर लिखा कि वंदगी करने
—को तैयार हूं हुक्म हो तो हाज़िर
होजाऊं ज़बर दस्त खां ने पलामूं से
३ कोस गांव बारी में ठहर कर ज
वाब भेजा कि तेरा आना इस सूरत
में बहतर है कि मेरे साथ एत क़ाद
खां के पास चले नहीं तो पटने का
बख़शी आता है उस वक्त तू अपना
किया पायेगा उसने कहलाया कि
शायस्ते खां ने बहुत सी फौज से कि
ले के नीचे आकर बड़ी मेहनत औ
र कोशिश मेरी हाज़िरी के वास्ते की
थी मगर मैं उसके पास नहीं गया तब

جب یہ ماجرا سُنا تو قلعہ دیوگن اپنے
نوکرون اور دہرنی دہرا وجینیہ کو
سونپا اور آپ پلاموں کو روانہ
ہوا بدشواری جنگل سے گذرا اور
دشمنون کو ہٹاتا ہوا مان گڈھ مین
پہونچا پرتاپ نے ڈر کر لکہا
کہ مین اطاعت کرنے کو تیار
ہون اگر کہو تو حاضر ہو جاؤن
زبردست خان نے پلاموں
سے ۳ کوس موضع باری
مین قیام کرکے جواب بہیجا کہ
تیرا آنا اس صورت مین بہتر
ہے کہ میرے ساتھ اعتقاد خان
کے پاس چلے ورنہ پٹنہ کا بخشی
آتا ہے اُسوقت تو اپنا کیا پائیگا
اُسنے جواب دیا کہ شائیستہ خان
نے ہرچند قلعہ کے نیچے آکر حد
سے زیادہ جد وجہد کی تھی مگر بغیر
اس امر کے کہ مین اُسکو جاکر
دیکھون صلح کرکے اور پیشکش
لے کر چلا گیا اور اتو مین تم سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Trust, Delhi and eGangotri

वह सुलह करके और नज़राना ले के चलागया और अब तुम से तो मैं मुलाक़ात करताहूं मगर पटने जानेका क़ौल नहीं करसकता क्योंकि मेरेबापदादों में से कभी कोई पटने नहीं गया है लेकिन ज़बरदस्त ख़ां ने नहीं माना और उससे बहुतही ज़िद एतक़ाद ख़ां के पास पटनेमें चलने के वास्ते की प्रतापने भीला चार होकर उस्से नुक़सान न पहुंचाने का बचन लेकर मुलाक़ात की और १ हाथी भी उसको दिया ज़बरदस्त ख़ां ने एतक़ाद ख़ां को लिख कर अहद नामा मंगवा दिया और बख़शी को लिखा कि जहां पहुंचा हो वहीं ठहर जावे कि मैं भी लौटकर आता हूं ॥

मंगसिर बदी ४ को ज़बरदस्त ख़ां प्रताप को लेकर रवाने हुआ और मंगसिर बदी ८ को देवकन में बख़शी से मिला फिर दोनों मिल

ملاقات کرتا ہون مگر میرے بزرگوں میں سے جو سردار ہوئے وہ کبھی پٹنہ مین نہین گئے۔ اس لئے مین پٹنہ جانے کا اقرار نہین کرسکتا مگر جب زبردست خان نے اُس سے بہت ہی اصرار پٹنہ مین چلنے کے واسطے کیا تو اُسنے اپنی حفاظت کرنے اور ضرر نہ پہنچانے کا عہد وپیمان لے کر زبردست خان سے ملاقات کی اور ایک ہاتھی اُسکو دیا اور پٹنہ چلنے کا اقرار کیا تب زبردست خان نے اعتقاد خان کو لکھ کر عہدنامہ منگوادیا اور بخشی کو لکھا کہ جہان پہنچا ہو وہان ٹھہر جاوے کہ مین بھی لوٹ کر آتا ہون۔ ۱۷- رمضان کو زبردست خان معہ پرتاپ کے روانہ ہوا اور تاریخ ۲۳- رمضان کو دیوکن مین بخشی عبداللہ خان نجم ثانی سے ملا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर पटने में पहुंचे प्रताप एतक़ाद ख़ां के वास्ते भी हाथी लाया था फिर उसने १ लाख रुपया बादशाही ख़ज़ाने में दाख़िल करने का इक़रार किया ज़बर दस्त ख़ां ज़ामिन हुआ एतक़ाद ख़ांने उस्के वास्ते मनसब की अरज़ी लिखी बादशाह ने प्रताप की ख़ता माफ़ करके हज़ारी ज़ात और १००० सवार का मनसब उस को दिया और रयासत पलामूं की जमा १ किरोड़ दाम की मुक़र्रर की और वह उस्के क़बज़े में बहाल रक्खी ॥	پھر دونوں متفق ہو کر پٹنہ مین پہنچے پرتاپ اعتقاد خاں کے واسطے بھی ہاتھی لایا تھا اور وہاں اُسنے ایک لاکھ روپیہ خزانہ بادشاہی مین بھی داخل کرنے کا اقرار کیا اور زبردست خان اُسکا ضامن ہوا اعتقاد خان نے درگاہ معلےٰ مین پرتاپ کے واسطے منصب کی درخواست کی بادشاہ نے پرتاپ کی خطا معاف کرکے اُسکو ہزاری ذات اور ہزار سوار کا منصب دیا اور ولایت پلاموں کی جمع ایک کروڑ دام کی مقرر کرکے اوسکی جاگیر مین بخشدی۔
गुन्नोर के क़िल्ले की फ़तह	**فتح قلعہ گنور**
संग्राम गोंड़ ज़मींदार गुन्नोर के मरने पर मारू गोंड़ जो उस्का गुलाम था उस्के बेटे भोपत को क़ैद करके ख़ुद मालिक बन बैठा और माल गुज़ारी भी बंद करदी उस्की देखा देखी उस्के पड़ोसी भी	بعد انتقال سنگرام زمیندار گنور کے مارو نام اُسکا غلام اوس کے خورد سال بیٹے بہوپت کو بیدخل کرکے خود مالک بن بیٹھا اور مالگذاری دینا بند کردیا اوسکی دیکھا دیکھی اوسکے پڑوسی زمیندار بھی اداے مالواجب

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

माल गुज़ारी में ढील करने लगे तब ख़ान नुसरत जंग ने पिछले साल के बैसाख में अपने नोकरों, मालवे के तईनातयों, और कुछ ज़िमींदारों के साथ क़िले रायसैन से जंगल २ रवाना ऊवा १६ सफर (जेठ बदी ३ सं॰ १७००) को गुन्नोर के घाटे पर ५००० पैदल गोंडों और सात आठ सो बंदूकचियों को जो रस्ता रोके ऊवे थे शिकिस्त देकर गुन्नोर के पास पऊंच गया मारू ने डरकर ख़ान के नोकर गोयन दास राठोड़ और मिरज़ा वाली को अपना तरफ़दार बनाया और भोपत को क़ैद से छोड़ कर संग्राम के कई मातबर नोकरों के साथ ख़ान के पास भेजा ख़ान ने भोपत को नज़र बंद करके उस्के साथियों को क़ैद कर दिया क्योंके उसने सुन लिया था कि भोपत को भगा ले जाने का इरादा हो रहा है और लखेरे पहाड़ के ऊपर चढ कर वहां जो एक पुख़्ता

مین تعلل کرنے لگے تب خان نصرت جنگ معہ نمکیان صوبہ مالوہ اپنے نوکرون اور کچھ زمینداروں کے آخیر محرم سنہ ۱۰۵۳ھ مین قلعہ رائے سین سے براہ جنگل روانہ ہوا

اور ۱۶- ماہ صفر کو پانچہزار پیادہ گونڈ اور سات آٹھ سو تفنگچی کو جو راستہ روکے ہوئے تھے قریب کتل گنّور کے شکست دیکر گنّور پہنچگیا مارو نے خوف کہاکر مرزا والی اور گوبند داس راٹھوڑ ملازم خان کو اپنا متوسل بنایا اور بھوپت کو قید سے رہا کرکے معہ چند ملازمان معتبر سنگرام کے خان کے پاس بھیجا خان نے بھوپت کو نظربند کرکے اوسکے ہمراہیون کو بھی قید کردیا کیونکہ اُس نے سُن لیا تھا کہ بھوپت کے بھگا لیجانے کا ارادہ ہورہا ہے اور لکھیرہ پہاڑ کے اوپر چڑھکر وہان جو ایک پختہ مورچہ بنا ہوا تھا اسکو

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोरचा बनाऊवा था उसको गोंडोंसे
छुड़ालिया गुन्नौर का किला ऊंचे
नीचे चढ़ाव उतार में १ पहाड़ के ऊ
पर १ही पत्थर का कटाऊवा है औ
र किसी तरफ से उस के ऊपर चढ़ना
मुमकिन नहीं है और किसी जगह
दीवार नहीं बनानी पड़ी है सिर्फ़ १
जगह कुछ ज़रूरत दीवार बनाने की
थी सो वहां संग्राम ने १ मज़बूत दीवा
र बना दी थी गोंड अब बुर्जों और दमदमों
को तोप और बंदूक़ से मज़बूत कि
ये ऊवे थे जिन को खान दौरां ने ल
ड़ाई से फतह करना आसान देख
कर बादशाह को अरज़ी लिखी औ
र २ बड़ी तोपें मय कुछ अमीरों के मं
गवाई बादशाह ने तोपें तो आगरे के
क़िले से रवाने कीं और मदद के वा
स्ते आस पास के अमीरों को हुक्म लि
खा जिस पर रशीद खां और कुछ म
नसबदार बुरहानपुर से राजा पहा
ड़ सिंघ बुंदेला अपनी जागीर से ।

دشمنون کے ہاتھ سے چھوڑا لیا
قلعہ گنور دو پست و بلند زمینون
مین ایک پہاڑ کے اوپر سراپا
ایک لخت پتھر کا تراشا ہوا ہے اور
کسی طرف سے اوسکے اوپر چڑھنا
ممکن نہین ہے اور کسی جگہہ دیوار
کی حاجت بھی نہین ہے اور جو
ایک جگہہ کچھ ضرورت تھی تو وہان
سنگرام نے ایک مضبوط دیوار بنوا
دی تھی دشمن برج اور بارہ کو
توپ و تفنگ سے مستحکم کئے ہوئے
تھا خان دوران نصرت جنگ
نے لڑائی کے ذریعہ سے اوسکی
فتح آسان نہ دیکھکر بادشاہ کو عرضی
لکھی اور دو بڑی توپین معہ کسیقدر
امیرون کے طلب کین بادشاہ
نے قلعہ آگرہ سے دو بڑی توپین
روانہ کین اور مدد کے واسطے کچھ
امیرون کو حکم لکھا چنانچہ رشید خان
انصاری معہ چند منصب دارون
کے برہان پور سے راجہ پہاڑ سنگہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रथ्वी राज राठौड़ राम पुरे से और जां सुपार खां मंदसोर सेर वाने ड़वे ॥

चैतबदी ५ सं० १७०० को इतवार के दिन तड़के ही बादशाही फ़ौजों ने हल्ला करके वह दीवार गोंडों से छीन ली और क़िले के नीचे का हिस्सा फ़तह कर लिया फिर वे दो नों तोपें भी पहुंच गईं और दम दमें भी बन गये उधर क़िले के तलाव खा ली होगये जिससे मारू ने माफ़ी मांग कर इस बरस के आख़िरी मोहर्रम अर्थात चैत्रद्वितीय बदी में ख़ान से मिलने को आया ख़ान ने क़िले पर चढ़ कर वहां की सब बुर्जों और मो रचों को देखा और अपने भाई सलाह उद्दीन को ५०० सवार और ७०० बंदूकची यों से क़िले में रख कर बादशाह को अर्ज़ी भेजी ॥

بندیلا ہی جاگیر سے پرتھی راج راٹھوڑ رامپور سے اور جانسپار خان مندسور سے روانہ ہولئے۔

بعدہ صبح یکشنبہ ۱۹ ذی الحجہ کو بادشاہی افواج نے حملہ کرکے وہ دیوار دشمنوں سے چھین لی اور قلعہ کا زیرین طبقہ بھی فتح کرلیا اتنے مین وہ دونون توپین بھی پہونچگئین اور دمدمے بنگئے اُدہر قلعہ کے تالاب خالی ہوگئے اسلئے بارو گونڈ نے پناہ مانگی آخیر محرم سنہ ۱۰۵۴ کو وہ خان سے ملنے کو آیا خان نے قلعہ پر چڑھکر برج اور بارہ کو دیکھا اور محمد صلاح اپنے بھائی کو معہ پانسو سوار اور سات سو بندوقچی کے وہان رکھکر مفصل حقیقت اُسکی درگاہ مین عرض کی

दरबार के हालात

وقایع دربار

वैसाख बदी १ को दरबार में अ

۲۳۔ صفر سنہ ۱۰۵۴ھ کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज़ुहुई कि किशन सिंघ राठौड़ का बेटा हरी सिंघ मर गया उस्के कोई बेटा न था इस लिये बादशाह ने उस्के भतीजे रूप सिंघ को खिलअत और चांदी की ज़ीन का घोड़ा देकर कुछ मनसब भी बढ़ाया और किशन गढ़ जो उस्के चचा का वतन था उस्की जागीर में इनायत फरमाया॥

बैसाख सुदी ६ को औरंग ज़ेब दक्खन से आया॥

बैसाख सुदी १० को राजा सूरज सिंघ का बेटा सबल सिंघ जो सूबे गुजरात के मददगारों में तईनात था पांच सदी ज़ात और २०० सवारों के इज़ाफ़े से डेढ़ हज़ारी ज़ात और १२०० सवारों का मनसबदार होगया॥

जेठ बदी १ को बादशाह ने राव हदी सिंघ के लावल्द मरने पर उसके चचा के बेटे रूप सिंघ को जो रूप मुकंद का बेटा और राव चांदा का पोता था और बाद मरने हदी सिंघ

بادشاہ سے عرض ہوئی کہ راجہ سورج سنگھ کے چھوٹے بھائی کشن سنگھ کا بیٹا ہری سنگھ مرگیا اوسکے کوئی بیٹا نہ تھا اسلئے بادشاہ نے اوسکے بھتیجے روپ سنگھ کو عطائے خلعت اضافہ منصب و مرحمت اسپ سے معہ زین نقرہ کے سر بلند کرکے کشن گڈہ جو اوسکے چچا کا وطن تھا اوسکی جاگیر میں مقرر کردیا۔

۵ ربیع الاول کو شاہزادہ اورنگزیب دکھن سے آیا۔

۹۔ ربیع الاول کو راجہ سورج سنگھ کا بیٹا سبل سنگھ جو کمکیان صوبہ گجرات سے تھا پانصدی ذات اور دوسو سواروں کے اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ذات اور بارہ سو سواروں کے منصب کو پہنچا۔

۱۵۔ ربیع الاول کو بادشاہ نے راو چاندا کے پوتے اور راو دودا کے بیٹے ہٹی سنگھ کے لاولد مرنے کی خبر سنکر اوسکی جگہہ اوسکے چچازاد روپ سنگھ کو جو راو چاندا کا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के दरबार में हाज़िर हुआ हठीसिंघ की जगह मुक़र्रर किया नो सदी ज़ात और ९०० सवारों का मनसब और राव का ख़िताब देकर रामपुरा भी जो उस का वतन था ज़ागीर में बख़्शा हठी सिंघ रावदूदा का बेटा और राव चांदा का पोता था ॥

जेठ बदी १३ को शाहज़ादा मुराद मुलतान से अपनी बहन जहां आरा बेगम के देखने को आया ॥

जेठ सुदी २ को बादशाह ने औरंगज़ेब के फ़क़ीर होने के इरादे और उस की दूसरी हरकतों से नाराज़ हो कर उसको मनसब और दक्खन की हकूमत से दूर किया और मालवे के सूबेदार ख़ान दौरां को ८ हज़ारी ज़ात ७००० सवारों का मनसब और १ किरोड़ दाम इनाम देकर मालवे से दक्खन जाने का हुक्म भेजा पृथ्वी राज राठौड़ को दौलताबाद की क़िलेदारी पर औरबलराम के बेटे शिवराम गौड़ को आसेर

پوتہ اور روپ مکند کا بیٹا تھا اور بعد وفات راؤ ہٹی سنگ کے بامید پرورش درگاہ مین حاضر آیا تھا عنایت کردی اور نہصدی ذات اور ۹۰۰ سوار کا منصب اور خطاب راؤ کا دیکر پرگنہ رام پورہ جو ہٹی سنگہ کا وطن تھا اوسکی جاگیر مین عطا فرمایا۔

۲۷۔ ربیع الاول کو شاہزادہ مراد بخش ملتان سے اپنی بہن جہان آرا بیگم کی عیادت کے لئے آیا

غرہ ربیع الثانی کو بادشاہ نے بسبب ارادہ گوشہ نشینی اور دوسری حرکات ناملایم اورنگ زیب کے ناخوش ہوکر اوسکو منصب اور عہدہ نظامت دکہن سے معزول کیا اور خاندوران صوبہ دار مالوہ کو ہفت ہزاری ذات و ہفت ہزار سوار کا منصب دیکر ایک کروڑ دام انعام عطا کرکے دکہن جانے کا حکم بہیجا اور پرتھی راج راٹھوڑ کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गढ़ की क़िले दारी पर मुक़र्रर किया ॥

शाहज़ादे मुराद के मुलतान जाने की रुख़सत हुई ॥

जेठ सुदी ७ को जहांआरा बेगम के तुला दान का दरबार हुआ उस्में राजा बिट्ठल दास गौड़ को ख़िलअत इनायत होकर वतन जाने की रुख़सत मिली ॥

राव अमर सिंघ का मीरबख़्शी सलाबत ख़ां को मारकर ख़ुद भी मर जाना

तफ़सील इस अजीब किस्से की यह है कि अमर सिंघ बीमारी में से कुछ दिन त० दरबार में हाज़िर न हो सका था अब जो सावण सुदी १ बृहस्पत वार को पिछले दिन से दरबार में आया तो सलाबत ख़ां उस्को शाहज़ादे दारा शिकोह के

خدمت قلعداری دولت آباد پر اور سیوارام ولد بلرام گوڑ کو قلعداری آسیر پر مقرر و معین کیا -

شاہزادہ مرادبخش کو ملتان جانے کی رخصت بعد عطائے خلعت فاخرہ کے ہوئی -

۷ - ربیع الثانی کو بیگم صاحب یعنی جہان آرا بیگم کے وزن کی جشن تھی اُسمیں راجہ بیٹھل داس عطائے خلعت سے مفتخر ہوکر اپنے وطن کو رخصت ہُوا -

راؤ امر سنگہ راٹھوڑ کا میربخشی صلابت خان کو مارکر خود بھی مارا جانا

بیان اس ماجرائے عجیب کا یہ ہے کہ امر سنگہ بیماری کے سبب سے چند روز دربار میں حاضر نہوا تھا اب جو آخر روز پنجشنبہ سلخ جمادی الاول کو حاضر آیا تو صلابت خان میربخشی اُسکو شاہزادہ دارا شکوہ کی حویلی پر کہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

ख़िलवत ख़ाने में कि जहां बादशा
ह बिराजते थे[१] सलाम कराने को ले
गया राव बांई मिसल में अपनी
जगह पर खड़ा होगया और सला
बत ख़ां तख़्त की दाहनी तरफ़ जा
खड़ा हुआ जब बादशाह शाम की
नमाज़ पढ़ कर अपने हाथ से कि
सी अमीर के नाम हुक्म लिखने
लगे तो सलाबत ख़ां नीचे उतर आ
या और "चार शाख़े शमेदान" के
पास १ आदमी से कुछ बातें कर र
सिंघ हा था कि अमर क़टारी निकाल
कर एक दमसे दौड़ा और उस ग़ा
फ़िल की बाईं पसली पर इस ज़ोर
से मारी कि उस्का वहीं काम तमा
म हो गया जब अमर सिंघ से एसी
बे अदबी की हरकत बादशाह के
हज़ूर में हुई कि जिस का कोई ख़्याल

جہان بادشاہ ایک[۱] باعث سے
تشریف رکھتے تھے سلام کرانے
کو لے گیا بعد سلام کے راؤ
امرسنگہ صف دست چپ مین اپنی
جگہہ پر جا کر کہڑا ہو گیا اور صلابتخان
بطرف دست راست تخت بادشاہ
کے کہڑا رہا اس اثنا مین بادشاہ
بعد ادائے نماز شام کے کسی بڑے
امیر کے نام منشور لکہنے مین مشغول
ہو گئے اور صلابت خان کسی کام کے
واسطے ایوان سے اُتر کر شمعدان
چار شاخہ کے پاس کسی سے باتین
کرنے لگا کہ ناگاہ امرسنگہ جمدہر کہینچکر
دوڑا اور غفلت کی حالت مین -
صلابت خان کے سینہ پر ایسا مارا
کہ قبضہ تک گھُس گیا اور دل پر
ضرب پہونچنے سے صلابت خان
اُسیوقت مرگیا امرسنگہ نے

(१) बादशाह ५ दिनसे जहां आरा बेगम को लेकर हवा बदलने के लिये शाहज़ादा दारा शिकोह की हवेली पर रहते थे जो जमना के किनारे पर था।

۱؎ بادشاہ جہاں آرا بیگم کو تبدیل آب وہوا کے لئے تاریخ ۲۵- جمادی الاول سے بادشاہزادہ دارا شکوہ کے مکان پر لے آئے تھے جو جمنا کے کنارہ پر تھا ۱۲

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भी अपने दिल में नहीं कर सक्ता था तो ख़लीलउल्लाह ख़ां और बिट्ठल दास का बेटा अर्जुन गोड़· दोनों उस्से वाक़िफ़ होकर अमर सिंघ के ऊपर दोड़े· ओर बड़ा शोर हुवा तब बादशाह ने लिखते २ सिर उठाक र उस तरफ़ नज़र की तो देखा कि अमर सिंघ अर्जुन गोड़· से लड़ रहा है अमर सिंघ ने दो तीन वार कटारी के अर्जुन पर किये उसने ढाल पर रोक लिये मगर फिर कटारी फिसल कर अरजुन की गरदन पर लगी तब ख़लील उल्ला ख़ां ने अमर सिंघ पर तलवार मारी और अरजुन ने भी हिम्मत करके २ वार तलवार के किये और इस्के साथही सैयद सालार और सात आठ दूसरे गुर्ज़बरदार मनसबदारों ने दायें बायें से दोड़· कर मारे तलवारों के अमर सिंघ का काम तमाम कर दिया दैव गति से सलाबत ख़ां जैसा लायक़।

چونکہ ایسی بے ادبی کہ جسکا کوئی خیال بھی نہین کرسکتا تھا بادشاہ کے حضور مین کی تھی اس لیئے پہلے خلیل اللہ خان اور ارجن ولد راجہ بیٹھلداس آگاہ ہوکر اوسکے اوپر دوڑے پھر جب شور و غل ہوا تو بادشاہ نے لکھتے لکھتے اودہر توجہ کی تو دیکھا کہ امرسنگہ ارجن گوڑسی لڑرہا ہے ارجن نے دو تین وار اوسکے جمدہر کے تو ڈھال پر روک لیئے تھے اور ایک بار جو جمدہر پہسلا تو اوسکا کچھ زخم ارجن کی گردن پر لگا کہ اتنے مین خلیل اللہ خان نے راو امرسنگہ کے اوپر تلوار ماری پھر ارجن نے بھی دلیری کرکے دو وار تلوار کے امرسنگہ پر کیئے اسکے ساتھہی سید سالار نے سادات بارہ مین سے اور چھ سات دوسرے گرزبردار منصبداروں نے یمین و یسار سے دوڑ کر یکبارگی ماری تلواروں کے امرسنگہ کا کام تمام کردیا شعبدہ بازی قضا و قدر سے کہ جسکا بھید کوئی سوائے خدا کے نہین جانتا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जवान कि जो बादशाह की तरबियत से बड़े२ कामों के करने लायक़ था और अमर सिंघ जैसा जोधा कि जो राजपूतों में बहुत असील और बहादुर था और बादशाह उस्से उम्मेद रखते थे कि किसी बड़ी लड़ाई में भाई बंदों समेत हमारे काम आकर अपना नाम रोशन करेगा ये दोनों यों अकारथ मारे गये बादशाह ने सलाबत ख़ां की नौ जवानी पर अफ़सोस कर के इस वारदात का सबब बहुत दरयाफ़त किया मगर अमर सिंघ के हमेशा नशा करने और उस्के ऊपर कुछ दिनों बीमार रहने के सिवाये और कुछ पता न लगा और यह भी हो सक्ता है कि जो सबब इस का यह हो कि अमर सिंघ की जागीर नागौर की सरहद बीकानेर से मिली हुई थी राव अमर सिंघ तो दरगाह में हाज़िर था और बीकानेर का राव करन दकवन में अपनी नोकरी

ہے صلابت خان جیسا شائستہ جوان جو بادشاہ کی تربیت سے خدمات بزرگ کے انجام دینے کے واسطے مستعد تھا اور امر سنگھ کی مانند جوان کہ جو فرقہ راجپوتون میں اصالت اور بسالت کے ساتھ امتیاز رکھتا تھا اور بادشاہ کو اوسکی طرف سے یہ گمان تھا کہ کسی بڑی لڑائی مین معہ اپنی قوم و قبیلہ کے جان نثار ہو کر باعث اپنی بلند نامی کا ہوگا دونو ایک آن مین بے سبب جان سے گذر گئے بادشاہ نے حسن خدمت و حداثت سن صلابت خان پر افسوس کر کے ہر چند کہ سبب اس وقوعہ کا تفحص کیا مگر کوئی امر سوائے دوام ارتکاب نشہ و بیماری چندروزہ امر سنگھ کے ظاہر نہوا اور شاید یہ سبب ہو کہ ناگور اور بیکانیر کی سرحد ملی ہوئی ہے اور امر سنگھ کے نوکرون اور راؤ کرن سنگھ والی بیکانیر کے ملازمون مین سرحد زمین پر تکرار ہو کر نوبت کشت و خون

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

पर था और वहां जागीरों की सरह
द पर तकरार होकर उन के आद
मियों में लड़ाई हो गई राव करन
के आदमियों के पास बंदूकें ज़िया
दा थीं इस से अमर सिंघ के कुछ का
नू राजपूत मारे गये थे और अमर सिं
घ ने यह खबर पाकर अपने आद
मियों को लिखा था कि फिर खे
ड़ करके राव करन के नोकरों से
लड़ने को जावें राव करन ने जब
यह सुना तो सलाबत ख़ां को लि
खा कि अमर सिंघ के आदमियों
ने पहिले लड़ाई छेड़ी थी सो वह तो
जो होना था सो हो गया मगर अब
फिर उस ने अपने नोकरों को फ़िसा
द करने के वास्ते कहला या है औ
र इस झगड़े का नबेड़ा जब तक
न होगा कि आप दरगाह में अर्ज़ क
रके १ अमीन सरहद निकालने के
वास्ते न ले लेंगे और सलाबत ख़ां
ने अर्ज़ करके अमीन ले लिया अजब

کی پہونچ گئی تھی راؤکرن کے ملازمون
کے پاس بندوقین بہت تھین اس
سبب سے بہت کارآمدنی راجپوت
راؤ امرسنگہ کے مارےگئے اور امرسنگہ
نے یہ خبر پاکر اپنے آدمیون کو
لکہا تھا کہ پہر جمعیت فراہم کرکے
راؤکرن کے نوکرون پر جاوین راؤ
کرن نے جو صوبہ دکن مین تعینات
تھا یہ بات سنکر صلابت خان
کو لکہا کہ امرسنگہ کے نوکر بانی فساد
ہوئے تھے خیر وہ تو جو ہونا تھا
ہوگیا اب اوس نے پہر اپنے
آدمیوں کو کہلایا ہے کہ جمع
ہوکر فساد کرین اور اب اس
قضیہ کا فیصلہ جب تک کہ آپ
حضور مین عرض کرکے ایک
امین واسطے تشخیص سرحد کے
نہ لین ممکن نہین ہے صلابتخان
نے اوسکا مطلب بادشاہ سے
عرض کرکے امین لے لیا تھا
عجب نہین ہے کہ امرسنگہ نے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहीं कि जो अमर सिंघ ने कि जिसे उस वक़्त ख़फ़क़ान हो रहा था इस बात को सलावत ख़ां की तरफ़ दारी से समझ कर ऐसा ख़राब काम किया हो॥

बाद उस वारदात के बादशाह के हुक्म से मीर ख़ां मीरतुज़क और मलूक चंद मुशरफ़ ने अमर सिंघ की लाश को ख़िलवत ख़ाने के बाहर दहलीज़ के आगे रख कर उसके आदमियों को बुलाया ताकि लाश को अपने डेरे लेजा कर जो करना हो सो करें इस पर १५ ख़िदमतगार अमर सिंघ के आये और जब वे उस हाल से वाक़िफ़ हुवे तो कटारें और तलवारें निकाल कर भिड़ गये मलूक चंद तो मारा गया और मीर ख़ां ज़ख़्मी होकर दूसरी रात को मरा दरवाज़े के बाहर जो गुर्ज़।

اُسوقت کہ خبطی ہو رہا تھا اس بات کو صلابت خان کی حمایت پر حمل کرکے اس کار ناشائستہ کی جرأت کی ہو۔

غرض کہ بعد اس واردات کے بادشاہ کے حکم سے میر خان میر توزک و ملوک چند مشرف دولتخانہ خاص نے امر سنگھ کی نعش کو دہلیز بیرون خلوتخانہ پر رکھکر اوسکے آدمیونکو بلایا تاکہ اسکو منزل پر لیجاکر مراسم ناگزیر ادا کریں مگر جب پندرہ آدمی اوسکے وہاں آ گئے اور اوسکے حال سے واقف ہوئے تو انہوں نے جمدہر اور تلواریں نکالکر ملوک چند کو تو مار ڈالا اور میر خان کو زخمی کیا جو دوسری رات کو مر گیا گرز بردار احدی جو دروازہ کے باہر پہرہ دے رہے تھے اُنھوں نے جب یہ حال دیکھا تو تلواروں سے

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

बरदार अहदी पहरे पर थे उन्हों ने यह हाल देख कर उन लोगों को मार डाला मगर उन में से भी ६ गुर्ज़ बरदार तो मारे गये और ६ ज़ख़मी हुवे यह दिलेरी उनकी बादशाह के दिल को बुरी लगी जिस से अमर सिंघ के नोकर जो कुछ भी अक़ल रखते थे वे तो रातों रात अपने वतन को चल दिये और जो फ़सादी थे उन्हों ने यह बात ठहराई कि अर्जुन गौड़ के घर पर जो अमर सिंघ के डेरे के पास था जाकर उस्को मार डालें ॥

बल्लू राठौड़ और भाव सिंघ राठौड़ भी जो पहिले अमरसिंघ के और उस्के बाप के नोकर थे और अब बादशाही बंदों में दाख़िल थे सिर्फ़ इस बहाने से कि उनके घर उन लोगों के पास थे इस इरादे में उनके शामिल

اُن لوگون کو مار ڈالا مگر انمین سے چھہ احدی بھی مارے گئے اور چھہ زخمی ہوئے یہ دوسری جسارت تھی جو بادشاہ کے دلپر بہت گران گذری جس سے امرسنگھ کے نوکرون مین سے وہ لوگ کہ جو کچھ عقل رکھتے تھے راتون رات اپنے وطن کو چلے گئے اور جو فسادی تھے اُنھون نے یہ بات ٹھہرائی کہ ارجن کے گھر پر جو امرسنگھ کے احاطہ سے نزدیک تھا جاکر اُسکو مار ڈالین اور چونکہ جاہل راجپوت لڑائی کے واسطے بہانہ ڈھونڈھا کرتے ہین اس لئے بلّو راٹھوڑ جو امرسنگھ کا نوکر تھا اور بھاؤ سنگھ جو اُسکے باپ کا ملازم تھا اور اب دونو بادشاہی بندگان مین منسلک تھے صرف اس وجہ سے کہ اُنکے گھر اُن لوگون کے نزدیک تھے اس اندیشہ ناپسندیدہ مین شریک

होकर लड़ने मरने को तैयार ऊ
वे जब यह खबर बादशाह को
पऊंची तो मेहरबानी से फरमा
या कि इन बेवक़ूफों को समझा
वो कि अमर सिंघ और उस के दू
सरे शरीक जो इस जुर्म में थे अपनी
सज़ा को पऊंच गये और तुम ने
तो कोई क़सूर भी नहीं किया है
फिर क्यों अपनी जान और माल
को खराब करते हो और हम इ
नसाफ़ से ऊक्म देते हैं कि कोई
तुम से रोक टोक न करेगा तुम
अपने जोरू व बच्चे और मा
ल असबाब लेकर अपने घरों को
चले जाओ मगर जब देखा कि
अपनी जहालत और ज़िद्द के ऊ
पर जमे ऊवे हैं तो ऊक्म दिया कि
सैयद खान जहां और दल्ली के आ
दमियों के साथ और रशीद खां
कि जिनके पहरे की बारी है जा
कर उन लोगों को भी उनके सरदार

ہو کر لڑنے مرنے کو تیار ہو گئے
جب یہ خبر بادشاہ کو پہونچی - تو
بادشاہ نے ازراہ عطوفت جبلی
جہان کہ قہر کرنا چاہیے تھا اس
گروہ کی نادانی و گمراہی کو معاف
کرکے اپنے ایک دولتخواہ سے
فرمایا کہ ان جاہلون سے براہ نصیحت
کہین کہ امرسنگہ اور جو کوئی کہ
اس جرم خطیر مین اوسکا شریک
تھا اپنی سزا کو پہونچگیا اور تم نے
تو کوئی قصور نہین کیا ہے پھر کسواسطے
اپنی جان و مال کی خرابی کے
باعث ہوتے ہو ہم بمقتضائے
عدالت حکم فرماتے ہیں کہ کوئی آدمی
تم سے مزاحم نہوگا اور تمہاری
بہتری اسی مین ہے کہ معہ اپنے
عیال واطفال و مال واسباب
کے اپنے گھرون کو چلے جاؤ
مگر جب ظاہر ہوا کہ وہ اپنے ہٹھ
اور جہالت پر جمے ہوئے ہین
تو حکم دیدیا کہ سید خانجہان

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के पास पहुंचावें जब यह उस जग
ह पहुंचे कि जहां वे लोग इकट्ठे
हो रहे थे तो उन्हों ने इन को देख
ते ही तलवार की धार को अमृ
त की धारा समझ कर लड़ाई शु
रू कर दी और जब तक बदन हा
थ और सांस चलता रहा लड़ते
रहे आख़ीर में सब के सब बल्लू
और भाव सिंघ समेत मारे गये
अरदली के आदमियों में से सै
यद अबदुल रसूल जो मरदाना
जवान था और सब आदमियों से
आगे बढ़ कर मय अपने भतीजे
सैयद ग़ुलाम मोहम्मद और दूस
रे भाई बंदों के पैदल हो के लड़ा
था अपने साथियों समेत काम
आया बादशाह ने सलाबत ख़ां
के बेटे मोहम्मद मुराद को जो ४
बरस का था चार सदी ज़ात और
२०० सवार का मनसब बख़्शा
और मीर ख़ां के बेटे को भी जो

معہ مردم جلو کے اور رشید خان
انصاری کہ جنکے پہرے کی
نوبت تھی جاکر ان مقہورون
کو بھی انکے سردار کی جگہہ پہنچاوین
جب یہ لوگ اُس جگہہ پہونچے کہ
جہان وہ راجپوت جمع ہو رہے تھے
تو اُنہون نے تلوار کے ناگوار
پانی کو آبحیات جانکر تلوارون اور
برچھیون سے جنگ شروع کی اور
جبتک کہ اُنکے تن مین کچھ بھی
توانائی اور رمق زندگانی کی باقی
رہی لڑتے رہے آخر کار سب معہ بلّو
اور بھاؤ سنگہ کے مارے گئے اور مردم جلو
سے سید عبد الرسول بارھہ کہ جوان
مردانہ تھا اور تمام ہمراہیون سے
پیشدستی کرکے معہ سید غلام محمود
اپنے بھائی بھتیجے اور پانچ دوسرے
بھائیون اور رشتہ دارون کے پیادہ
ہوکر لڑائی مین مشغول ہوا تھا معہ اپنے
رفیقون کے شہید ہوا بادشاہ نے ان
جانبازون کے پسماندون کو عنایات

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बऊत ही छोटा था कुछ मनसब जो उसके लायक़ था दिया और अबदुल रसूल का मनसब जो चार सदी ज़ात और १०० सवारों का था वह उसके ४ बेटों पर बांट दिया और गुलाम मोहम्मद के कोई बेटा न था इसलिये उसका मनसब उसके छोटे भाई अली अकबर के नाम मुक़र्रर किया॥

दरबार के हालात

सावन सुदी २ को अरजुन गोड़॰असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ५०० सवार का मनसबदार होगया॥

सावन सुदी ३ को राजा मनरूप के बेटे गोपाल सिंघ का मनसब हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार का होगया॥

असोज बदी १३ को करमसी राठोड़॰ का बेटा शाम सिंघ पांचस

فراخور سے مختص کیا اور صلابت خان کے بیٹے محمد مراد کو جو چار برس کا تھا چارصدی ذات اور سو سوار کے منصب سے اور میر خاں کے بیٹے کو جو نہایت چھوٹا تھا اوسکے لایق منصب سے سرفراز فرمایا اور سید عبد الرسول کا منصب چارصدی ذات اور سو سوارون کا اُسکے چارون بیٹون کو اور غلام محمد کا منصب بسبب لاولدی کے اوسکے چھوٹے بھائی علی اکبر کو دیدیا۔

وقایع دربار

غرۂ جمادی الثانی کو ارجن کا منصب اصل و اضافہ سے ہزاری ذات اور پانسو سوار کا ہوگیا۔

۲- جمادی الثانی کو من روپ کے بیٹے گوپال سنگہ کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور ہزار سوار کا ہوگیا۔

شب ۲۷- رجب کو شیام سنگہ ولد کرمسی راٹھوڑ پانصدی ذات اور سو سوارون کے اضافہ سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दी ज़ात और १०० सवार के इज़ाफ़े से डेढ़ हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का मनसबदार होगया ॥

द्वारका दास के बेटे नरसिंघ दास को कावील गढ़ की क़िलेदारी जो बराड़ का मज़बूत और मशहूर क़िला है इनायत ऊई ॥

आसोज सुदी ८ को राव शत्रुसाल हाडा को ख़िलअत और चांदी की ज़ीन का घोड़ा इनायत होकर वतन जाने की रुख़सत मिली ॥

कल्याण झाला को जो कुछ दिन पहिले राना जगत सिंघ की अरज़ी लेकर हाज़िर ऊआ था ख़िलअत सुनहरी ढाल तलवार मीनाकार साज़ से चांदी की ज़ीन का घोड़ा और हाथी इनायत होकर वापिस जाने की रुख़सत मिली और उस के हाथ ख़िलअत ख़ासा जड़ाऊ कमर पेटी २ ख़ासा घोड़े सोने की

ڈیڑھ ہزاری ذات اور ۶۰۰ سوارون کے منصب کو پہونچا۔

دوارکا داس کا بیٹا نرسنگداس قلعہ کاویل کی قلعداری سے جو بہترین قلعہ ولایت براڑ کا ہے اور بلندی اور مضبوطی مین شہرت رکھتا ہے سربلند ہُوا۔

۸۔ شعبان کو راؤ شتروسال عنایت خلعت واسپ سے معہ زین نقرہ کے سربلندی پاکر اپنے وطن کو مرخص ہُوا۔

کلیان جھالا کو جو چند روز پیشتر رانا جگت سنگھ کی عرضی لیکر حاضر درگاہ ہوا تھا خلعت سپر وشمشیر معہ یراق طلائی میناکار کے واسپ بازین نقرہ وفیل عنایت ہوکر واپس جانے کی رخصت ملی اور اُسکے ساتھ رانا کے واسطے خلعت خاصہ کمر مرصع اور دو گھوڑے طویلہ خاصہ سے معہ زین طلا اور مطلا کے بھیجے گئے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औरसुनहरी काम की जीन के रा
ना के वास्ते भेजे गये ॥

आसोज सुदी ११ को बादशा
ह ने गोरधन राठौड़ को जोराजा
गज सिंघ के लायक़ और कारगु
ज़ार नोकरों में से था घोड़ा और सि
रो पाव देकर आसेर की क़िलेदा
री पर शिवराम गोड़ की जगह भे
जा ॥

कातिक बदी २ को राजा ज
य सिंघ के नाम हुक्म लिखा गया
कि वतन से दक्खन में जाकर ख़ा
न दोरां के वापिस पहुंचने तक जो
दरबार में बुलाया गया है उस मु
ल्क की हिफ़ाज़त करे ॥

कातिक बदी ६ को अल
फ़ ख़ां का बेटा दोलत ख़ां पांचस
दी ज़ात और २०० सवारों के इज़ा
फ़े से डेढ़ हज़ारी ज़ात और १०००
सवार का मनसब दार हो कर
नागोर की जागीर दारी पर रुख़सत

۱۰۔ شعبان کو گوردھن راٹھوڑ
کو کہ راجپوتان مقرری کارکردہ
راجہ گج سنگہ سے تھا خدمت
حراست قلعہ آسیر کی سیوارام
گوڑ کے تغیّر سے عنایت ہوئی
اور وہ خلعت واسپ کے عنایت
سے سربلند ہوکر اوسطرف کو
رخصت ہوا۔

۱۶۔ شعبان کو راجہ جے سنگہ
کے نام فرمان بھیجا گیا کہ دکن
جاکر تا واپسی خان دوران بہادر
نصرت جنگ کے جو حضور مین
طلب ہوا تھا اُس ملک کی حفاظت
کری۔

۲۰۔ شعبان کو دولتخان
ولد الف خان عنایت خلعت
واضافہ پانصدی ذات اور
دوسو سواروں سے جاگیرداری
ناگور پر نوازش پاکر اس طرف
کو رخصت ہوا۔

۲۴۔ شعبان راجہ

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुआ और उसको खिलअत भी मिला॥

कातिक बदी १० को राजा बिठ्ठल दास अपने वतन से हाज़िर आया॥

मंगसिर बदी ७ को बेगम साहिब अच्छी होकर नहाईं बादशाह ने इस ख़ुशी में ८ दिन तक बड़ी धूम धाम की मजलिस करके खूब सोना और जवाहिर लुटाया और अपने बेटों बेटियों और बेगमों वग़ैरा को भी बहुत कुछ माल असबाब दिया इस खुशी में २० लाख रुपया उठा और जो हज़ार रुपया रोज़ खैरात हुआ करता था २ लाख से ज़ियादा वह हुआ॥

बेगम साहिब की सिफ़ारिश से औरंग ज़ेब के क़सूर माफ़ हुवे और मनसब भी बहाल होगया जो १५ हज़ारी ज़ात और १०००० सवारों का था और १ भारी खिलअत भी

بیٹھلداس گوڑ اپنے وطن سے حاضر آکر شرفیاب ملازمت ہوا۔

۵۔ شوال کو غسل صحت بیگم صاحبہ جہان آرا بیگم کا ہوا بادشاہ نے اس خوشی مین آٹھ روز تک بڑی دہوم دہام سے مجلسین آراستہ کرکے خوب زر و جواہر لٹایا اور اپنے بیٹون بیٹیون اور بیگمون وغیرہ کو بہت کچھ دیا اس مین کل بیس لاکھ روپیہ خرچ پڑا اور جو ہزار روپیہ روز خیرات ہوا کرتا تھا دو لاکھ سے زیادہ وہ ہوا۔

بیگمصاحبہ کی سفارش سے بادشاہزادہ محمد اورنگ زیب کی خطا معاف ہوکر اُسکا منصب بدستور بحال ہوگیا جو پندرہ ہزاری ذات اور دس ہزار سوارون کا تھا اور ایک خلعت گران بہا بھی عنایت ہوا۔

اسکے سوا ایکہزار آدمیون

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिला॥ १००० आदमियों को खिलअत मिले और मनसब भी इज़ाफ़ ज़ुवे राजा बिट्ठल दास को खिलअत और ख़ासा घोड़ा सुनहरी ज़ीन का मिला और ५०० सवारों का इज़ाफ़ा भी ज़ुआ जिस्से उसका मनसब ५ हज़ारी ज़ात और ३५०० सवारों का होगया॥ हरी सिंघ के भतीजे रूपसिंघ को खिलअत हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का मनसब मिला॥ सुजान सिंघ सीसोदिये को खिलअत हज़ारी ज़ात और ५०० सवार का मनसब इनायत ज़ुआ॥ काबुल से खुश ख़बरी पज़ुंची कि वहां के सूबेदार अली मरदान ख़ां के आदमियों ने बलख़ और बुख़ारा के ख़ान नज़र मोहम्मद ख़ां के नोकर तरुद्दी अली ख़ां कतआन "उज़बक" के ऊपर फ़तह पाई	کو خلعت ملے اور منصب مین بھی اضافہ ہُوا- راجہ بیٹھل داس کو خلعت اور پانسو سوارون کا اضافہ ہوکر ایک گھوڑا بھی خاصہ طویلہ سے مطلا زین کا ملا اور اب اوس کا منصب پانچہزاری ذات اور ساڑہے تین ہزار سوارون کا ہوگیا- ہری سنگہ کے بھتیجے روپ سنگہ کو خلعت اور ہزاری ذات اور سات سو سوار کا منصب عطا ہُوا- سجان سنگہ سیسودیہ کو منصب ہزاری ذات اور پانسو سوار کا ملا کابل سے خوشخبری پہونچی کہ وہان کے صوبہ دار علیمردان خان کے آدمیون نے تردی علی خان قطغان قوم ازبک ملازم نذر محمد خان والی بلخ و بُخارا کے اوپر جو کابل و قندھار کی سرحد مین

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो काबुल और कंधार की सरहद में आकर फ़िसाद करने लगा था॥

पोस बदी ४ को अमर सिंघ के बेटे राय सिंघ ने हाज़िर होकर ४ हाथी नज़र किये बादशाह ने उस को बेगुनाह समझ कर ख़िलअत हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का मनसब इनायत किया ॥

पोस सुदी ११ को बादशाह दारा शिकोह के मकान पर उस्के बेटे सिप्हरशिकोह के देखने को गये साथ के अमीरों को शाहज़ादे ने बादशाह के हुक्म से ख़िलअत दिये जिस्में फरज़ी समेत ख़िलअत राजा बिट्ठल दास को भी मिला।

पोस बदी ३० को बादशाह का तुला दान "सौर मास" के हिसाब से हुआ जिसमें भी राजा बिट्ठल दास गौड़ को फ़रज़ी समेत ख़िलअत मिला ॥

माह बदी ११ को राजा पहाड़

مفسد و فساد ہوا تھا فتح پائی۔

۱۷۔ شوال کو عبداللہ خان بہادر فیروز جنگ ستر برس کا ہو کر مر گیا۔

۱۲۔ ذیقعدہ کو راؤ امر سنگہ کا بیٹا رائے سنگہ وطن سے آکر بادشاہ کے حضور مین حاضر ہوا۔ بادشاہ نے اوسکے باپ کا جرم نظر مین نہ لاکر اُسکو عطار خلعت اور منصب ہزاری ذات اور سات سو سوار سے سرفراز فرمایا۔

۱۴۔ ذیقعدہ کو بادشاہ شاہزادہ داراشکوہ کے مکان پر اُسکے لڑکے سپہر شکوہ کو دیکھنے کے واسطے گئے شاہزادہ نے ہمراہی امیرون کو بادشاہ کے حکم سے خلعت دیئے ازانجملہ خلعت معہ فرجی راجہ بیٹھلداس گوڑ کو بھی ملا۔

۲۴۔ ذیقعدہ کو جشن وزن شمسی بادشاہ مین بیگمصاحبہ کی طرف سے بھی راجہ بیٹھلداس کو خلعت

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिंघ ने १ हाथी नज़र किया॥

लाहोर जाना

मांह बदी १२ बुधवार को बादशाह आगरे से लाहोर को रवाने ऊवे॥

माह सुदी २ को मुक़ाम रूपबास में बादशाह ने राजा जसवंत सिंघ को खिलअ़त ख़ासा देकर नये सूबेदार शेख़ फ़रीद पऊंचने तक आगरे की हिफ़ाज़त करने का ऊक्म दिया॥

राय काशी दास को खिलअ़त इनायत करके आगरे की दीवानी पर भेजा॥

सूबे बिहार के दीवान बेनी दास का भेजा ऊआ हाथी बादशाह की नज़र से गुज़रा॥

मथुरा में बादशाह ने हासूं फ़क़ीर को कि जिसकी धूनी से बेगम साहिब के ज़ख्मों को आराम

معہ فرجی کے عطا ہُوا

۲۵- ذیقعدہ کو راجہ پہاڑ سنگہ نے ایک ہاتھی پیشکش کیا-

روانگی لاہور

چارشنبہ ۲۶- ذیقعدہ کو بادشاہ آگرہ سے لاہور کو روانہ ہُوئے-

غرّہ ذی الحجہ کو مقام روپ باس مین راجہ جسونت سنگہ کو خلعت خاصہ عنایت کرکے حکم دیا کہ شیخ فرید ولد قطب الدین خان کے پہونچنے تک جو ناظم صوبہ دارالخلافہ مقرر ہوا ہی دارالخلافہ کی حفاظت کری اور پھر روانہ درگاہ ہوجاوے-

رای کاسیداس مرحمت خلعت اور خدمت دیوانی دارالخلافہ سے مفتخر ہوکر اوسطرف کو رخصت ہُوا-

ایک ہاتھی جو بینی داس دیوان صوبہ بہار نے بطور پیشکش بہیجا تہا- بادشاہ کی نظر سے گذرا-

متھرا مین بادشاہ نے ہاسونام

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हु आधा रुपयों में तोल कर और १ गांव देकर रुख़सत किया उस वक्त हाथी घोड़े और ख़िल्अत के सिवाये उसको बहुत सा ज़ेवर और जवाहरात भी बादशाह की शाहज़ादों की और बेगम साहब की सरकार से मिला और अमीरों ने भी बहुत कुछ दिया ॥

माह सुदी ११ को बादशाह ज़नाने समेत मथुरा से किश्तियों में बैठ कर फागुन बदी ७ को दिल्ली में पहुंचे और अपने नये बनाये हुये क़िले में उतरे दस्तूर के मुआफ़िक ५०००) हुमायूं बादशाह के रोज़े में ख़ैरात किये ॥

फागुन बदी ३० को बादशाह ने शाहज़ादे औरंगज़ेब और उसके बेटे मोहम्मद सुलतान और मोहम्मद मोअज़्ज़म को भारी २ ख़िलअत हाथी और घोड़े इनायत करके गुजरात की सूबेदारी पर

گداے بینوا کو کہ جسکی دہونی نے بیگم صاحبہ کے زخمون پر اعجاز کا اثر دکہلایا تہا روپیوں میں تولکر - اور ایک گانو عنایت فرماکر رخصت کیا رخصت کے وقت ہاتھی گہوڑے اور خلعت کے علاوہ اوسکو بہت سا زیور اور جواہرات بھی بیگمصاحبہ بادشاہ - شاہزادون اور امیرون کی سرکار سے ملا جس سے اوسکا جنم بہر کا دلدر دور ہو گیا -

۱۰ - ذی الحجہ کو بادشاہ متہرا سے معہ اہل حرم کے شاہانہ کشتیون مین سوار ہوکر ۲۱ - کو دہلی مین پہونچے اور اپنے نو تیار قلعہ مین فروکش ہوئے اور حسب دستور مبلغ پانچ ہزار روپیہ ہمایون بادشاہ کے روضہ مین اہل استحقاق کو خیرات کیے

۱۹ - ذی الحجہ کو بادشاہ نے شاہزادہ اورنگزیب اور اوسکے بیٹون محمد سلطان اور محمد معظم کو خلاع فاخرہ اور ہاتھی گھوڑے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेजा ॥

बरस १९ वां

फागण सुदी ३ सं. १७०१ से फागण सुदी २ सं. १७०२ तक

चैत बदी ८ सोमवार को नौरोज़ के दरबार में राय टोडर मल को खिलअ़त हथनी समेत इनायत हुआ ॥

चैत सुदी ४ को बादशाह ने लाहोर पहुंच कर बाग़ फ़ैज़ बख़्श और फ़रह बख़्श में डेरा किया और क़िले दारी का खिलअ़त राठौड़ महेश दास को दिया ॥

लाहोर में कुछ अरसे से दरिया के किनारे पर संग मर मर की इमारत तैयार होरही थी बादशाह उसको देख कर चैत सुदी ८ को कशमीर को रवाने होगये और असालत ख़ां मीर बख़्शी को हुक्म हुआ कि काबुल में जाकर वह और

عنایت کرکے صوبہ گجرات کی حکومت پر روانہ کیا۔

انیسواں برس

۵۵ سنہ ہجری تک

۸ فروری ۱۶۴۵ سنہ اسی لغایتہ ۷ فروری ۱۶۴۶ سنہ ء

دوشنبہ ۲۱ محرم کو نوروز کے دربار میں رائے ٹوڈرمل کو خلعت معہ ہتھنی کے عنایت ہوا

۴ صفر کو بادشاہ نے لاہور پہنچکر باغ فیض بخش اور فرح بخش میں قیام کیا دریا کے اوپر جو عمارت سنگ مرمر کی تیار ہو رہی تھی اسکو ملاحظہ کرکے کشمیر جانے کی تیاری کی۔

مہیش داس راٹھوڑ کو دار السلطنت لاہور کی قلعداری معہ خلعت کے عنایت ہوئی۔

۶ صفر کو بادشاہ کشمیر کی طرف روانہ ہوئے اور اصالت خان میر بخشی کو کابل میں بھیجا کہ باتفاق رائے امیر الامرا

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अली मरदान ख़ां दोनों बलख़ और बदख़शां की मुहिम का सामान तैयार करें ॥

चैत सुदी १४ को ख़ानदौरां ख़ां बहादुर नुसरत जंग की अरज़ से जो लाहोर में हाज़िर होगया था प्रथ्वी राज राठौड़ क़िलेदार दौलताबाद का मनसब २ हज़ारी २००० सवार का होगया ॥

बैसाख सुदी ३ को बादशाह कशमीर में पहुंचे कुतुबुलमल्क और आदिलख़ां के वकील अपने २ मुल्क से सालाना पेशकश लेकर हाज़िर आये ॥

जेठ बदी ७ को अली मरदान ख़ां की अरज़ी काबुल से बलख़ और बदख़शां की मुहिम के वास्ते मदद भेजने के बारे में आई जिस पर बादशाह ने राजा जगत सिंघ को ख़िलअत तलवार मीनाकार साज़ की और घोड़ा चांदी

علیمردان خان کے بلخ اور بدخشان کی مہم کا سامان تیار کرے۔

۱۲۔ صفر کو خاندوران بہادر نصرت جنگ کی عرض سے جو دارالسلطنت لاہور میں حاضر ہو گیا تھا پرتھی راج راٹھوڑ قلعدار دولت آباد کے منصب میں اصل اور اضافہ سے دو ہزاری ذات اور دو ہزار سوار ونکا اضافہ ہو گیا

غرہ ربیع الاول کو بادشاہ کشمیر جنت نظیر میں پہونچے قطب الملک اور عادلخان کے وکیل اپنے اپنے ملک سے سالانہ پیشکش لیکر حاضر درگاہ والا ہوئے

۲۰۔ ربیع الثانی کو امیرالامرا علیمردان خان کی عرضی کابل سے واسطے طلب کمک مہم بلخ اور بدخشان کی آئی بادشاہ نے ۲۹۔ ماہ مذکور کو راجہ جگت سنگھ کو خلعت و شمشیر معہ یراق طلا و میناکار و اسپ بازین نقرہ عنایت

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीज़ीन का देकर उस तरफ़ को रवाने किया और कई मनसबदारों के नाम हुक्म लिखा कि १००० सवार और २००० पैदल लेकर लाहोर से काबुल को रवाने हों उनमें राजा राय सिंघ पहाड़ सिंघ और माधो सिंघ हाडा भी थे राजा राय सिंघ के हुक्म में इतनी बात ज़ियादा थी कि नक़दी पाने वाले बंदों की तनख़ाह के वास्ते २० लाख रुपया भी लाहोर के ख़ज़ाने से लेता जावे ॥

असाढ़ सुदी ३ को बादशाह ने इलाहाबाद का सूबा चिनार और रुहितास के किलों समेत शाहज़ादे दारा शिकोह को इनायत करके उस का मनसब २० हज़ारी २०००० सवार का असल और इज़ाफ़े से कर दिया जिसमें १०००० दो अस्पा और सिह अस्पा थे ॥

असाढ़ सुदी ८ मंगल वार को

کرکے اوسطرف کو رخصت کیا اور حکم صادر فرمایا کہ بہادر خان اپنی جاگیر سے و قلیج خان و نجابت خان و راجہ راے سنگہ و راجہ پہاڑ سنگہ و مادہو سنگہ ہاڈا و میرزا خان نبیرہ عبدالرحیم خان خانخانان و نظر بہادر خویشگی و سرانداز خان و شمس الدین خان وغیرہ منصبدار اور ہزار سوار برقنداز و دو ہزار پیادہ تفنگچی لاہور سے کابل کو روانہ ہوویں اور راجہ راے سنگہ بیس ۲۰ لاکھ روپیہ واسطے مواجب بندہاے نقدی کے خزانہ عامرہ دارالسلطنت لاہور سے اپنے ہمراہ کابل کو امیرالامرا کے پاس لیتا جاوے۔

غرہ جمادی الاول کو بادشاہ نے الہ آباد کا صوبہ معہ قلاع رہتاس و چنار کے بادشاہزادہ محمد دارا شکوہ کو عنایت کرکے پانچہزار سوار اور اوسکے تابینون میں سے دو اسپہ و سہ اسپہ کردی۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

ख़ानदौरां बहादुर नुसरत जंग जो बादशाह के पास से अपने काम पर दकखन के सूबे को रवाने हुआ लाहोर में १ कशमीरी ब्राह्मण के हाथ से मारा गया जिसको उसने मुसलमान करके अपना ख़िदमतगार बनाया था उस्के माल असबाब में से उसकी वसीयत के माफ़िक़ उस्की औलाद को देने के पीछे ६० लाख रुपया बादशाही ख़ज़ाने में दाख़िल हुआ उस का मनसब ७ हज़ारी ७ हज़ार सवार का था जिस की तनख़्वाह सालाना ३० लाख रुपये की थी और दखन के चारों सूबों (दौलताबाद, बराड: ख़ानदेस, तिलंगाना,) का हाकिम था उस की जगह इसलाम ख़ां मुकर्रर हुआ और राजा जयसिंघ को जो उस्की ग़ैर हाज़िरी में कायम मुक़ाम के तौर पर काम करता था ख़िलअत ख़ासा भेजा गया ॥

جس سے اوسکا منصب بیس ہزاری ذات اور بیس ہزار سوار دو اسپہ وسہ اسپہ کا ہوگیا وشایستہ خان صوبہ دار الہ آباد مالوہ مین مقرر ہوا اور سردار خان صوبہ دار مالوہ کو دہاموتی اور جوراگڈہ کی جاگیرداری دیگیئی۔ روز سہ شنبہ ۱۶ جمادی الاول کو خان دوران بہادر نصرت گنج لاہور سے دکہن کو روانہ ہوا اگر اوسی رات کو ایک کشمیری برہمن کے ہاتھ سے مارا گیا کہ جسکو اوس نے مسلمان کرکے اپنے خدمتگارون مین رکہا تہا اوسکے مال واسباب مین سے اوسکی وصیت کے موافق اوسکی اولاد کو دینے کے بعد مبلغ ساٹھہ لاکھہ روپیہ بادشاہی خزانہ مین داخل ہوا اوسکا منصب سات ہزاری ذات اور سات ہزار سوار کا تہا جسمین پانچہزار سوار دو اسپہ وسہ اسپہ تھے اور ایک کروڑ دام انعام کے مقرر تھے کہ کل کی جمع بارہ کروڑ دام یعنے ۳۰ لاکھہ روپیہ

असाढ सुदी ६ को राजा जसवंत सिंघ के नाम हुक्म लिखा गया कि लाहोर में बादशाह के पहुंचने तक हाज़िर होजावे॥

असाढ सुदी १४ को दूदा सीसोदिया का पोता ईसर दास का बेटा हमीर सिंघ जो राना जगत सिंघ के रजपूतों में से था नोकरी की उम्मेद में राना के पास. बादशाह के हज़ूर में हाज़िर हुआ और बादशाह ने उसको खिलअत देकर पांच सदी ज़ात और ३०० सवारों का मनसब इनायत फरमाया॥

भादों सुदी २ को बादशाह ने इसलाम खां को ६ हज़ारी ६००० सवार का मनसब देकर कशमीर से दकखन के चारों सूबों की हुकूमत पर रवाने किया॥

भादों सुदी ६ को खानदोरां बहादुर नुसरत जंग का नोकर राठोड़ गोयन दास पांच सदी

سالانہ کی تھی اور وہ دکھن کے چارون صوبہ یعنے دولت آباد۔ براڑ۔ خاندیس اور تلنگانہ کا حاکم تہا اوسکے بیٹے سید محمد و محمود کو منصب ہزاری ہزار سوار اور عبد النبی کو پانصدی اور دو سو سواران کے عنایت ہوئے اوسکی جگہہ اسلام خان صوبہ دار دکن مقرر ہوا اور راجہ جیسنگہ کو جو اوسکی غیر حاضری مین بطور قائمقام کے کام کرتا تہا خلعت خاصہ بہیجا گیا۔

۷۔ جمادی الاول کو راجہ جسونت سنگہ کے نام حکم لکھا گیا کہ بادشاہ کے پہنچنے تک لاہور مین حاضر ہو جاوے

۱۲۔ جمادی الاول کو ہمیر سنگہ ولد ایسر داس بن دودا سیسودیہ جو رانا جگت سنگہ کے راجپوتون مین سے تہا بارادہ عبودیت درگاہ والا کے حاضر ہوا بادشاہ نے اوسکو خلعت عنایت کرکے پانصدی ذات اور تین سو سوارون کے منصب سے مشرف فرمایا

۲۳ جمادی الثانی کو بادشاہ نے اسلام خان کو منصب ششہزاری ذات

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज़ात और २०० सवारों का मनसबदार हुआ ॥

शाहज़ादे शुजाअ का बेटा बलंद अख़्तर बंगाले में किस्त्वार के राजा कंवर सैन की बेटी से पैदा हुआ ॥

बलख़ की मुहिम

दो महीने पहिले ग़ोरबंद के थानेदार ख़लील बेग ने बलख़ के मालिक नज़र मुहम्मद ख़ां और उसके बेटे अबदुल अज़ीज़ ख़ां के आपस में लड़ाई चलते देख कर काबुल के सूबेदार अली मरदान ख़ां की इज़ाज़त से कहमुर्द का क़िला फ़तह कर लिया था जिस्को ३ महीने पीछे ही नज़र मुहम्मद ख़ां के आदमियों ने बादशाही क़िलेदारों को क़तल करके वापिस ले लिया तब पहिले तो अली

اور شش ہزار سواری سربلند کرکے کشمیر سے ملک دکن کے چارون صوبون کی نظامت پر روانہ کیا۔

۸۔ جمادی الثانی کو گوبند داس راٹھوڑ ملازم خان دوران بہادر نصرت جنگ کو منصب پانصدی ذات اور دو سو سوار کا عنایت ہوا

شاہزادہ شجاع کا بیٹا بلند اختر راجہ کورسین کستواری کی لڑکی سے بنگالہ مین پیدا ہوا۔

بلخ کی مہم

قبل اسکے ماہ ربیع الثانی مین خلیل بیگ تھانہ دار غوربند نے نذر محمد خان والی بلخ کو اوسکے بیٹے عبد العزیز خان والئ بخارا کے مقابلہ اور مدافعہ مین مصروف دیکھ کر امیر الامرا علیمردان خان کی اجازت سے قلعہ کہمرد فتح کرلیا تھا اور ماہ جمادی الاول مین نذر محمد خان کے آدمیون نے قلعداران بادشاہی کو قتل کرکے وہ قلعہ پھیر لیا تھا امیر الامرا اور نجبتی اصالت خان نے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मरदान ख़ां ने मीर बख़शी अ
सालत ख़ां को साथ लेकर कह
मर्द के ऊपर जाने के इरादे से
कूच किया मगर फिर रस्ते की
तकलीफ़ और नज़र मोहम्मद
ख़ां का पास होना सुन कर बद
ख़शां फ़तह करने को बाग मो
ड़ी लेकिन फिर वहां के भी रस
ते की तंगी और मुशकिलात का
हाल सुन कर मीरबख़शी को
१०००० सवारों से रवाने किया
वह कई मंजिल तक लूटमार
करके पीछा चला आया बाद
शाह ने इस बात को पसंद नहीं
किया और अली मरदान ख़ां
को लिखा कि खाती बेलदारों
र सिलावट भेज कर रस्ता चौड़ा
करे असालत ख़ां और निजाब
त ख़ां के नाम वापसी का हुक
म लिखा और राय सिंघ को हु
क्म दिया कि मय राजपूतों के

اول تو قلعہ کہمرد کے فتح کرنے کو
کوچ کیا اور پھر جب راستہ کی تکالیف
اور نذر محمد خان کے قریب ہونے کا
حال سنا تو واسطے فتح بدخشان کے
عنان عطف کی لیکن پھر وہان کے
راستہ کی تنگی اور دشواری کا بھی
حال سنکر بخشی کو معہ دس ہزار
سوارون کے بھیجا وہ چند منزل
تک تاخت و تاراج کرکے واپس چلا
آیا بادشاہ نے اس کارروائی کو
پسند نہ کیا اور علیمردان خان کو
لکھا کہ بیلدار کھاتی اور سنگتراش واسطے
کشادہ کرنے راستہ کے بھیجے اور
اصالت خان کو معہ نجابت خان
کے واپس بلایا اور راجہ رای سنگہ
کو حکم دیا کہ معہ راجپوتوں کے اٹک
پر جاکر جاڑا تیر کرے اور اسی طرح
اور لشکر کے لئے بھی جابجا قیام کرنی
کا حکم فرمایا۔

راجہ جگت سنگہ کا بلخ کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अटक पर जाकर जाड़ा तैर करो
इसी तरह दूसरे लशकर के लिये
जगह जगह ठहरने का हुक्म हुआ

राजा जगतसिंघ का ब
लख़ के ऊपर बढ़ना

राजा जगत सिंघ ने बादशाह
से यह अर्ज़ की थी कि मैं चाहिता हूं
कि कोई बंदगी बजा लाऊं और तू
ल के रस्ते से जो सब से अच्छा रस्ता
बदख़शां का है वहां पहुंच कर
"ख़ोसत" सुराब और इंद्राब के क़ि
लों को फ़तह और उस विलायत
की क़ौमों को सर करूं और जो को
ई हुक्म न माने उसको सज़ा दूं और
इसी वास्ते मैं ने बहुत से सवार औ
र पैदल अपने वतन से बुला लिये
हैं इनमें से जितने कि मेरे मनसब
से जियादा हों उनका रोज़गार सर
कार से मिलना चाहिये बादशा
ह ने यह अर्ज़ उस की अली मरदा
नख़ां की सिफारिश से मंज़ूर करके

اوپر چڑھنا

راجہ نے کارطلبی اور خدمت
پژوہی سے بادشاہ کی خدمت مین
یہ عرض کی تھی کہ کمترین یہ آرزو رکھتا
ہے کہ کوئی خدمت بجالاوے اور چاہتا
ہے کہ "طول" کے راستہ سے - جو
بہترین راستہ بدخشان کا ہے اُس
ملک مین داخل ہوکر خوست سراب
اور اندراب کو ضبط کرے اور اس
سرزمین کے اُلوسون اور ایماقون سے
بندگی کراے اگر کوئی جہالت سے
نہین مانے تو اسکو سزا دے - اور
اسی واسطے مین نے بہت سی -
جمعیت اپنے وطن سے بلائی ہے
اُمید کہ علوفہ اُس جمعیت کا جو طالبہ
منصب بندہ سے زیادہ ہو سرکار
بادشاہی سے عنایت فرمایا جاوے
اور یہ عرض اوسکی امیرالامرا کی
سفارش سے منظور ہوئی تھی اور
ڈیڑھ ہزار سوار اور دو ہزار پیادہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१५०० सवार और २००० पैदलों की तनख़ाह जो ज़ियादे थे काबुल के ख़ज़ाने से मुक़र्रर करदी राजा फ़ौज का सामान और दूसरी ज़रूरी बातों का बंदोबस्त करके कातक सुदी ६ को अली मरदान ख़ां से विदा हुवा और "तूल" की घाटी से गुजर कर अपने लशकर के २ हिस्से किये १ हिस्से को तो अपने बेटे भाव सिंघ के साथ हरोल करके रवाने किया और दूसरे को खुद लेकर खोसत के लूटने को रवाने हुवा जब यहां के सरदारों को यह हाल मालूम हुवा तो ३-४ कोस सामने आकर राजा से मिले और बंदगी कबुल करके अर्ज़ किया कि अगर कोई बादशाही बंदा यहां क़िला बना कर रहना शुरू करे तो हम लोग बंदगी करने को तैयार हैं जो बंदगी न करें तो बेशक वह हमारे घर लूट लेरा

کی تنخواہ جو وہ زیادہ لایا تھا خزانہ کابل سے مقرر کردی تھی بعد اسکے ۵ رمضان کو راجہ امیر الامرا سے رخصت ہوکر اپنے کام پر روانہ ہوا اور طول کی گھاٹی سے گذر کر اپنے لشکر کو دو حصہ کیا ایک حصہ تو اپنے بیٹے بھاؤسنگھ کے ہمراہ بطور منقلا یعنے پیشرو کے بھیجا اور دوسرا خود لے کر اوسکے پیچھے خوست لوٹنے کے ارادہ سے روانہ ہوا جب ارباب اور کلانتران خوست اوسکے اس ارادہ سے مطلع ہوئے تو تین چار کوس پیشوائی کو آکر راجہ سے ملے اور اظہار اطاعت کرکے بولے کہ اگر کوئی بادشاہی بندوں مین سے یہان ایک مضبوط قلعہ بنا کر رہے اور ہمسے سوائے بندگی اور جانسپاری کے کوئی دوسرا امر ظہور مین آوے تو لوٹ مار کرنے کا اختیار ہے چونکہ راجہ کا بھی یہی مقصد تھا اس لئے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

ना का भी यही मतलब था इस
लिये उस ने वहां थाना बैठा कर
डेरा कर दिया और उन लोगों को
बादशाही परवरिश का उम्मेद
वार करके किला बनाने के वास
ते जगह पूंछी तो उन्हों ने कहा
कि जो सुराब और इंद्राब के बी
च में क़िला बनाया जावे तो य
ह दोनों भी ख़ोसत समेत मज़
बूत हो जावेंगे दूसरे दिन राजा कूं
च करके उन के साथ सुराब को
गया वहां के लोगों ने भी हा
ज़िर हो कर बंदगी क़बूल कर
ली राजा बरफ़ बरसने से ३ दि
न वहां ठहर कर चौथे दिन इं
द्राब को रवाने हुवा जहां उस
ने सुराब और इंद्राब के बीच
में १ मज़बूत क़िला लकड़ियों
का बनाया जो वहां बहुता
यत से थीं और उसके ऊपर पत्थ
र के बुर्ज बना कर २ बड़े कुवे ।

اوسنے اوسی جگہہ ڈیرہ کردیا اور اُن
لوگون کو بادشاہی عنایات کا اُمیدوار
کرکے قلعہ بنانے کے واسطے صلاح
پوچھی اُنہون نے کہا کہ جو سراب اور
اندراب کے درمیان قلعہ بنایا جاوے
تو یہ دونون مقام بھی معہ خوست
کے مضبوط ہو جاوینگے دوسرے
دن راجہ نے کوچ کیا اور ان
لوگون کو بھی ساتھ لیا سراب کے
ارباب اور اہل شہر بھی پیشوائی کو
آئے اور فرمان پذیر ہوئے راجہ
نے اُنکو تسلی دی اور برف برسنے
سے سراب مین قیام کیا چوتھے دن
اندراب کو روانہ ہوکر سراب اور
اندراب کے بیچ میں ایک مضبوط
قلعہ لکڑی کا جو اوس سرزمین
بہت تھی بنایا اور پتھر کے برج
بنا کر دو بڑے کنوئین بھی کھودے
اس عرصہ مین کفش قلماق
اور دوسرے اُزبکون نے کہ
جنکو نذر محمد خان نے راجہ کے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क़िले में खुदाये इस अरसे में क
फ्शज़ाति के क़ल्माक़ और कुछ
उज़बक कि जिनको नज़र मोहम्म
द खां ने राजा से लड़ने के वास्ते
भेजाथा आ पहुंचे और २ तुंग होगये
१ में सवार थे और १ में पैदल जब
राजा के क़िरावलों ने यह खबर
दी तो राजा ने भी क़िले से निक
ल कर अपनी फ़ौज के ३ हिस्से
किये और घाटे के दोनों नाकों
को कि जहां से ग़नीम दाखिल
होसकता था बड़े २ लक्कड़ों
से बंद करके इतनी सी गली र
हने दी कि जिस्में से १ सवार मुश
किल से गुज़र सके और उन लक्क
ड़ों के पीछे दोनों तरफ बंदूक़ची
और तीर अंदाज़ तईनात करके
एक तरफ़ आप लड़ने के वास्ते खड़ा
हुआ और दूसरी तरफ अपने बे
टे भाऊ सिंघ को भेजा कुछ बंदू
क़ची हज़ारा ज़ाति के पैदलों के

مقابلہ کے واسطے بہیجا تھا اپنی فوج
کے تین گروہ کیئے دو سوارون
کے۔ اور ایک پیدلون کا جب
قراولون نے یہ خبر راجہ کو پہنچائی
تو راجہ نے بھی قلعہ سے نکلکر اپنے
لشکر کے تین حصّہ کیئے اور درہ
کے دونون دہانون پر کہ جہان
راستہ غنیم کے داخل ہونے کا
تہا راستہ بند کرنے کے لئے
بڑے بڑے لٹھے ڈال دیئے
جنکے پیچہے تفنگچی اور تیر انداز پیادون
کو تعینات کیا پھر ایک طرف خود
معہ ایک فوج کے اور دوسری
طرف بہاؤ سنگہ اوسکا بیٹا۔ معہ
دوسری فوج کے لڑنے کے
واسطے کہڑا ہوا کچھ بندوقچیون کو
پیادہ ہائے ہزارہ کے مقابلہ
پر بہیجا کہ جو پہاڑ کے اوپر چڑھ
گئے تھے۔ جب اُزبک کا لشکر
تین طرف سے پہونچا تو راجہ
اور اسکے بیٹے نے دونون

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुक़ाबिले पर रवाने किये जोप
हाड़ के ऊपर चढ़ गये थे जब उज़
बकों के तीनों लश्कर तीन तर
फ़ से आपहुंचे तो राना और उस
के बेटे ने २ तरफ़ से तीर और बं
दूक उन के ऊपर मारना शुरू
किया उज़बकों को हिन्दुस्ता
नियों के मुक़ाबिले की ताब न
हुई हार कर भाग गये और जो
बंदूक़ची पहाड़ के ऊपर गये
थे उनहों ने भी मारे बंदूक़ों के
हज़ारा ज़ाति के प्यादों से वह
मोरचा कि जो क़िले के बराब
र था छीन लिया और पीछा क
रके उन लोगों को पहाड़ से नी
चे उतार दिया फिर उज़बक
लोग राजा के मुक़ाबिले पर इ
तनी दूरी पर कि जहां बंदूक़
की गोली नहीं पहुंच सकती
थी इकट्ठे हुवे राना ने उन दोनों
फ़ौजों और पैदलों को भी बुला

طرف سے دلیری کے ساتھ
تیراندازی اور تفنگ افگنی شروع
کی اُزبک ہندوستان کے
جانبازون کی تاب جنگ نہ لاکر
بہاگ گئے اور جو پیادے پہاڑ
کے اوپر گئے تھے انہون نے
بہی بضرب بندوق اُس سرکوب
قلعہ کو پیادہ ہائے ہزارہ کے ہاتھ
سے چھین لیا اور تعاقب کرکے اُنکو
پہاڑ سے نیچے اوتار دیا - اوزبک اُس
جگہہ پر کہ جہان گولی بندوقکی نہین
پہونچتی تہی راجہ کے مقابل خیرہ
چشمی سے جمع ہوکر کہڑے ہوئے
راجہ نے سوار و پیادہ کی اُون
دونون فوجون کو اپنے پاس بلاکر
معہ تمام سپاہ کے اُزبکون پر حملہ کیا
لڑائی شروع ہوئی اور دونون
طرف کے کچھ کچھ آدمی مارے گئے
ازبکون نے ان ناموس پرستون
کے مقابلہ میں سوائے خسارہ
کے فائدہ نہ دیکھ کر راہ فرار اختیار کی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

कर एक दम से मय तमाम फौ
ज के हमला किया खूब लड़ा
ई ऊई जिस में बऊत से आदमी
ग़नीम के मारे गये और कुछ
बादशाही बंदे भी काम आये
उज़बकों ने जब इन बहादुरों
की यह बहादुरी देखी तो लड़
ने में फायदा न देख कर अपने
२ घरों को लोट गये राजा ने य
ह हाल अली मरदान ख़ां को।
लिख कर अपने क़िले के वा
स्ते सीसा बारूद मंगाई और
कुछ मदद भी मांगी अलीमर
दान ख़ां ने सीसा बारूत उसी
के बेटे राज रूप के हाथ भेज
कर तीन चार हज़ार सवार भी
सूबे काबुल के मददगारों औ
र अपने नोकरों में से ज़ुलक़द
र और अलीबेग वग़ैरा के साथ
रवाने किये॥

असाढ़ बदी ८ को रात के।

راجہ نے اس ماجرے کی حقیقت
امیرالامرا کو لکھہ کر مدد سیسہ اور
باروت کی طلب کی امیرالامرا
نے سیسہ اور باروت اوس کے
بیٹے راج روپ کے ہاتھ بھیجا
اور تین چار ہزار سوار بھی اپنے
تابعینون اور صوبہ کابل کے
کمکیون مین سے ہمراہ ذوالقدر
علی بیگ اسحاق بیگ اور اپنے
غلام فریدون کے تعینات
کئے۔

۲۳۔ رمضان کی رات
کو دو ہزار سوار اُزبک اور
پیادہ ہائے ہزارہ کفش
قلماق کے ساتھ اوس جماعت
کے اوپر کہ جسکو راجہ نے راستہ
کی حفاظت کے واسطے درہ
وہانہ پر تعینات کیا تھا حملہ
آور ہوئے اور اسدفہ بھی
ہزارون خرابی کے ساتھ
شکست کھا کر بھاگے۔

वक़्त उज़बकों के २००० सवार और क़ौम हज़ारा के बख़्त से पैदल और कफ़शक़ल माक़ उन लोगों के ऊपर आ गिरे कि जिन को राजा नरस्ते की निगहबानी के वास्ते घाटे की हिफ़ाज़त पर रक्खा था इस लड़ाई में भी कुछ बहादुर आदमी दोनों तरफ़ों के काम आये और उज़बक फिर लड़ाई हार कर बड़ी घबराहट से भाग गये॥

फिर राजा अपने लकड़ी के क़िले की हिफ़ाज़त और रसद वग़ैरा का बंदोबस्त कर के अपने भरोसे के रजपूतों को ५०० बंदूक़ची और ४०० रजपूतों से क़िले की रखवाली पर छोड़ कर असाढ बदी १० को परंदे की घाटी से पंचशेर की तरफ़ रवाने हुआ मगर बरफ़

راجہ نے اپنے قلعہ چوبین کی استواری اور فراہمی اذوقہ وغیرہ لوازم قلعداری سے دلجمعی حاصل کرکے اپنے معتمد راجپوتون کو معہ پانسو تفنگچی اور چارسو راجپوت کے حفاظت پر چھوڑا اور آپ ۲۵ رمضان کو راہ کتل پرندہ سے پنج شہر کی طرف روانہ ہوا اثناے راہ نوردی مین برف و باد سے بہت سے آدمی اور گھوڑے مرگئے اور مارے برف کے لشکر گھاٹی سے نہ اُتر سکا اس لئے راجہ کو رات بھر راستہ مین ہی بتکلیف تمام قیام کرنا پڑا اور صبح ہی ایک ایسی جگہہ پر کہ جہان لکڑی بکثرت تھی مراجعت کرکے مقام کیا یہان امیر الامرا کا غلام فریدون معہ تابعینان امیر الامرا کے اور سب کمکیون سے سبقت کرکے راجہ کے

और हवा की तकलीफ़ से बऊत से आदमी और घोडे मरगये औ रलशकर घाटी से न गुज़रसका लाचार वह रात रस्ते में ही बड़ी तकलीफ़ से तेर कर नीप ड़ी तड के ही वहां से लौट कर ऐसी जगह कि जहां लकड़ी बऊत थी मुक़ाम किया यहां दूसरे तई नातयों से पहिले अलीमरदान खां का ग़ुलाम फ़रैदूं अली मरदान खां के आदमियों को लेकर राजा से आमिला ग़ज़ बक मौक़ा देख कर लड़ने को आये राजा आप तो फ़ौज के बीच में रहा और अपने बडे बेटे राजरूप और फ़रैदूं को हिरावल किया लड़ाई में बऊत से उज़ंबक मारे गये और बाक़ी मैदान छोड भागे बादशाही लशकर ने २ कोस तक पीछा किया ग़ज़ बक क़िले वालों के डरसे किवे

پاس پہنچا اُزبک جو قابو ڈہونڈہتے تھے راہ بند ہوجانے اور راجہ کی فراجعت کی خبر سنکر پہر چڑہ آئے۔ راجہ خود تو قول مین رہا اور اپنے بیٹے راج روپ اور فریدون کو معہ ایک جماعت کے ہراول کیا بعد گرم ہونے ہنگامہ جنگ کے بہت سے اُزبک مارے گئے اور کچھ بادشاہی لشکر کے آدمی اور راجہ کے راجپوت بھی کام آئے اُزبک پہر لڑائی کی تاب نہ لاکر میدان چھوڑ بھاگے اہل لشکر دو کوس تک اونکے تعاقب مین گئے چونکہ اُنکو یہ خوف تھا کہ کہین مردم قلعہ ہمارا رستہ نہ روک لین اور تعاقب کرنے والے آگے آکر نہ مار ڈالین اسلئے پہاڑ سے نیچے اُتر کر اپنے اپنے گھرون کو چلے گئے راجہ اوس رات تو قلعہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहीं रास्ता न रोक लें भाग कर अपने २ घरों को चले गये इस लड़ाई में कुछ रजपूत और दूसरे आदमी काम आये उस दिन तो राजा ने क़िले के नीचे डेरा किया दूसरे दिन तूल के रस्ते से रवाने होकर घाटी से उतर आया और सुबह बरफ़ के पहाड़ से कि जिसका बर्फ दो तीन दिन से कम होगया था गुज़र कर पंच शेर की सरहद में पहुंचा॥

दरबार का हाल

असोज सुदी ६ को बादशाह काशमीर से लौटे

आसोज सुदी १० को मुकाम हीरा पुर में किस्टवार के राजा कंवर सैन का मनसब असल और इज़ाफे से हजारी जात और ४०० सवारों का होगया और उसे घर जाने की रुखसत

کے نیچے رہا اور دوسرے دن جادہ طول روانہ ہو کر گھاٹی کے نیچے ٹھہرا جب برف کچھ کم ہوئی تو پنج شیر کی سرحد میں پہنچا۔

دربار کا حال

۴۔ شعبان کو بادشاہ نے کشمیر سے مراجعت کی۔

۸۔ شعبان کو مقام ہیراپور میں بادشاہ نے راجہ کورسین کشتواری کو ہزاری ذات اور چار سو سواروں کا منصب دیکر وطن جانے کی رخصت عنایت فرمائی۔

۱۵۔ رمضان کو بادشاہ لاہور میں پہونچے شاہزادہ مرادبخش نے جو ملتان سے آگیا تھا اور راجہ جسونت سنگہ نے جو وطن سے حاضر ہوا تھا اور لاہور کے قلعہ دار ہیش داس راٹھور نے حاضر ہو کر مجرا کیا۔

۸۔ شوال کو رائے سنگہ جھالا ہزاری ذات

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिली ॥

मंगसिर बदी १ को बादशाह लाहौर में पहुंचे शाहज़ादे मुराद मुलतान से आगया था और राजा जसवंत सिंघ ने जो वतन से हाज़िर हुआ आया और लाहौर के क़िलेदार महेस दास राठौड़ ने हाज़िर हो कर मुजरा किया ॥

मंगसिर सुदी १० को राय सिंघ झाला को हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का मनसब मिला

पोस बदी ३ को राये टोडर मल पांच सदी ज़ात और २०० सवार दो असपा और सिह अस्पा के इज़ाफ़े से डेढ हज़ारी ज़ात और १२०० दो असपा और सिह असपा सवारों का मनसबदार होगया और सहरंद को रुख़सत हुआ

राजा मान सिंघ का पोता किशन सिंघ पांच सदी ज़ात और

اور چھ سو سواروں کے منصب سے سربلند ہوا

۱۴- شوال کو رائے ٹوڈرمل پانصدی ذات اور دو سو سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ کے اضافہ سے منصب ڈیڑھ ہزاری ذات اور بارہ سو سوار دو اسپہ و سہ اسپہ کو پہنچکر سہرند کی طرف رخصت ہوا-

راجہ مان سنگھ کا پوتہ کشن سنگھ پانصدی ذات اور ڈہائی سو سوار کے منصب سے سرفراز ہوا-

۱۸- شوال کو راجہ جے رام کا منصب ڈیڑہ ہزاری ذات اور ایک ہزار سواروں کا ہوگیا گوکل داس سیسودیہ ہزاری ذات اور آٹھ سو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२५०.सवारों के मनसब से सरफ़राज़ हुआ ॥

पोस बदी ५ को राजा जयराम का मनसब डेढ़ हज़ारी ज़ात और १००० सवारों का होगया ॥

रूप सिंघ राठोड़ का मनसब हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार का होगया ॥

गोकुल दास सीसोदिये का मनसब हज़ारी ज़ात और ८०० सवारों का होगया ॥

पोस बदी ६ को महेशदास राठोड़ असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों का मनसबदार हो गया ॥

पोस सुदी २ को जहांगीर बादशाह की मशहूर बेगम नूरजहां का लाहोर में इन्तक़ाल हो गया इस को २ लाख रुपये सालाना मिलता था ॥

माह सुदी ६ को नज़रमुहम्मद

سواروں کے منصب سے مشرف ہوا۔

۲۲-شوال کو مہیش داس راٹھوڑ اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور پانسو سوارون کے منصب کو پہنچا۔

۲۹-شوال کو نورمحل عرف نورجہان بیگم کا لاہور مین انتقال ہوگیا اس کو دو لاکہہ روپیہ سالانہ بعد وفات جہانگیر بادشاہ کے ملتا تہا۔

۴-ذی الحجہ کو نذرمحمد خان کا ایلچی تیس ہزار روپیہ کی پیشکش لے کر بلخ سے آیا

علامی سعدالله خان وزیر کا منصب چہہ ہزاری ذات اور دو ہزار سوار کا ہوگیا۔

۱۴-ذی الحجہ جشن

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ख़ां का एलची ३००००) की पेश कश लेकर बलख़ से आया।

सादुल्ला ख़ां का मनसब ढाई हज़ारी ज़ात और दो हज़ार सवारों का होगया॥

माह सुदी १५ को तुलादान के दरबार में जो इज़ाफ़ा अमीरों के मनसब का हुआ उस्में राजा बिट्ठल दास गोड़ का मनसब ७०० सवारों के इज़ाफ़े से ५ हज़ारी ज़ात और ४ हज़ार सवारों का होगया॥

राजा पहाड़ सिंघ बुंदेले के हज़ार सवार दो अस्पा और सिह अस्पा हो गये जिससे उस का मनसब ३ हज़ारी ३००० सवार दु अस्पा और सिह अस्पा का हो गया॥ ॰स

महेश दास गोड़ का मनसब पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े से ढाई हज़ारी ज़ात और २ हज़ार

وزن شمسی بادشاہ مین مندرجہ ذیل ترقیان ہوئیں

۱ راجہ بٹھل داس گوڑ پانسو سوار کے اضافہ سے پانچہزار سوارون کے منصب پر ترقی یاب ہوا۔

۲ راجہ پہاڑ سنگہ بندیلہ کے منصب سہ ہزاری ذات اور سہ ہزار سوار مین سے ایک ہزار سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ ہوگئے۔

۳ مہیش داس راٹھوڑ کا منصب پانصدی ذات کے اضافہ سے ڈہائی ہزاری ذات اور دو ہزار سوارون کا ہوگیا۔

۴ راجہ بٹھل داس کے بیٹے انرودہ کا منصب۔ پانصدی ذات کے اضافہ سے ہزاری ذات اور ساتسو سوارون کا ہوگیا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

सवारों का होगया॥

राजा बिठ्ठलदास के बेटे अनिरुद्ध का मनसब पांच सदी ज़ात के इजाफ़े से सिह हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का होगया

फागुण बदी ११ को अरज़ हुई कि राजा जगत सिंघ पिशोर में मरगया बादशाह ने उस के बड़े बेटे राजरूप को खिलअत भेजकर उस्का मनसब असल और इजाफ़े से डेढ़ हज़ारी ज़ात और १००० सवारों का कर दिया राजा का खिताब और वतन भी उसको बख्शा और जो लकड़ी का क़िला उसके बाप ने सुराब और इंद्राब में बनाया था उस्का इन्तज़ाम भी उसी के हवाले रक्खा और जो १५०० सवार और २००० पैदल उसके बाप को दिये गये थे उन में से ५०० सवार और २००० पैदल की तनखाह काबुल के

۲۴ - ذی الحجہ کو بادشاہ سے عرض ہوئی کہ راجہ جگت سنگھ پشاور مین مرگیا بادشاہ نے اوسکے بڑے بیٹے راجروپ کو خلعت اور منصب ڈیڑہ ہزار ذات اور ہزار سوار کا اصل اور اضافہ سے راجہ کا خطاب اور وطن جاگیر مین عنایت فرمایا اور خلعت کے ساتھ گھوڑا بھی بھیجا اور قلعہ چوبین کا بندوبست بھی جو اوسکے باپ نے درمیان سراب اور اندراب کے بنایا تھا اوسکے متعلق کرکے یہ حکم دیا کہ ڈیڑہ ہزار سوار اور دو ہزار پیدل جو اوسکے باپ کی مدد کے واسطے مقرر ہوئے تھے انمین سے پانسو سوار اور ڈیڑہ ہزار پیدل کی تنخواہ خزانہ کابل سے ملتی رہے۔

مہم بلخ و بدخشان

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ख़ज़ाने पर लिख दी॥

बलख़ और बदख़शां की मोहिम

फागण सुदी २ को बादशाह ने शाहज़ादे मुराद को ५०००० सवार और १०००० पैदल तोपची और बरक़ंदाज़ वग़ैरा और ७ लाख रुपये का ख़ज़ाना देकर लाहोर से बहुत से अमीरों और राजों के साथ बलख़ और बदख़शां फ़तह करने के लियेरवाने किया इस फौज में इतने राजपूत सरदार थे॥

१	राजा बिठ्ठल दास गोड़		राठोड़ का पोता
२	राव शत्रूसाल हाडा	७	राम सिंघ राठोड़
३	माधो सिंघ हाडा	८	सोहकम सिंघ
४	महेशदास दलपत	९	गोपाल दास
	राठोड़ का बेटा	१०	गोकुल दास सीसोदिया
५	सेवाराम गोड़	११	गिरधर दास गोड़
६	रूपसिंघ किशनसिंघ	१२	राजा अमरसिंघ नरवरका

۳۰- ذی الحجہ کو بادشاہ نے شاہزادہ مراد بخش کو پچاس ہزار سوار اور دس ہزار پیادون کے ہمراہ واسطے فتح بلخ وبدخشان کے لاہور سے روانہ کیا اس فوج مین راجپوت منصب دار حسب مندرجہ ذیل تھے -

ہراول میں

۱	راجہ بٹھل داس	۲	راؤ شترو سال ہاڈا
۳	مادھو سنگھ ہاڈہ	۴	مہیش داس ولد دلپت راٹھور
۵	سیوارام گوڑ	۶	روپ سنگھ نبیرہ کشن سنگھ راٹھور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१३	राय सिंघ झाला	२४	संग्राम कछवाहा
१४	अरजुन गोड़	२५	हमीर सिंघसीसोदिया
१५	महेशदासराठौड़दूसरा	२६	पृथ्वी सिंघ कछवाहा
१६	सुजान सिंघसीसोदया	२७	पेमचंदरायमनोहर का पोता
१७	किशन सिंघ तंवर		
१८	रावरूपसिंघचंद्रावत	२८	डायीदासमेड़त्ति या
१९	कृपाराम गोड़	२९	गोयनदासखान दोरानी
२०	उग्रसैन	३०	बल्लू चोहान
२१	इंद्रसाल	३१	राव नारायण दास सीसोदिया
२२	तिलोकचंद		
२३	चंद्रभान नरूका		

۷	رام سنگه راٹھوڑ	۸	مکرم سنگه	۹	گوپال داس
۱۰	گوکل داس سیسودیه	۱۱	گردھرداس گوڑ	۱۲	راجه امر سنگه نروری
۱۳	رائے سنگه جھالا	۱۴	ارجن گوڑ	۱۵	مہیش داس راٹھور دوسرا
۱۶	سجان سنگه سیسودیه	۱۷	کشن سنگه تنور	۱۸	راو روپ سنگه چندراوت
۱۹	کرپارام گوڑ	۲۰	اوگرسین	۲۱	اندرسال
۲۲	تلوک چند	۲۳	چندربھان نروکا	۲۴	سنگرام کچھواہا
۲۵	ہمیر سنگه سیسودیه	۲۶	پرتھی سنگه کچھواہا	۲۷	پیم چند نبیره رائے منوہر
۲۸	ڈانیداس میڑتیه	۲۹	گوبنداس خاندورانی	۳۰	ٹلو چوہان
۳۱	راوت نراین داس سیسودیه -				

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस हरोल में कुल ४८० अमीर और मनसबदार थे और अफसर कुल का राजा बिठ्ठल दास था ॥

दहने हाथ की फौज में ४६० अमीर और मनसबदार थे और हिन्दू राजों में से सिर्फ राजा देव सिंघ बुंदेला था ॥

बांये हाथ की फौज में २५० अमीर और मनसबदार थे इस में कोई हिन्दू सरदार नहीं था

क़ौल याने बीच की फौज में शाहजादा और ४०० अमीर थे उनमें भी कोई हिन्दू अमीर नहीं था

तरह याने दहने हाथ की मददगार फ़ौज में ३६८ अमीर और मनसबदार थे उन में हिन्दू अमीर

१ राजा राय सिंघ महाराजा भीम का बेटा

ان سب کا افسر راجہ بیٹھلداس مقرر ہوا اس ہراول میں کل ہندو مسلمان امیر اور منصبدار ۴۸۰ تھے۔

برانغار میں ۴۶۰ امیر اور منصب دار تھے جن میں ہندو صرف راجہ دیبی سنگھ بندیلہ تھا۔

جوانغار میں ڈہائی سو امیر اور منصب دار تھے جنمین ہندو سردار ایک بھی نہین تھا

قول مین شاہزادہ اور چارسو امیر تھے اُنمین بھی کوئی ہندو امیر نہین تھا۔

طرح دست راست مین تین سو اُنہتر امیر اور منصبدار تھے اُنمین راجپوت سردار اتنے تھے۔

۱ راجہ رائے سنگھ ولد مہاراجہ بھیم

۲ راجہ راج روپ

۳ راجہ جے رام ولد راجہ انوپ سنگھ

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२ राज़ा जय राम राजा अनूप सिंघ
का बेटा·
३ राजा राज रूप   ४ जग राम
५ राजा वहरोज़   ६ चत्र भुज चोहान
७ अजब सिंघ राव शत्रु साल का
बेटा-
८ किशन सिंघ कछवाहा-
बांये हाथ की मदद गार फ़ौज में
२०५ अमीर और मनसब दार
थे उन में रज पूत सरदार राजा
पहाड़ सिंघ बुंदेला चन्द्र मणि
बुंदेला और भोज राज थे-

विदा होती वक्त राव शत्रु
साल को ख़ासा खिलत जड़ाऊ
जमधर और घोड़ा इनायत हु
आ सेवा राम गोड़, रूप सिंघ
राठोड़, राम सिंघ राठो, गोकुल
दास सीसो दिया, गिरधर दास.
राजा अमर सिंघ नर वरी, राय
सिंघ झाला, और अरजुन गो
ड़ को खिलत और घोडे मिले-

۳- راجہ جی رام ولد راجہ انوپ سنگھ
۴- جگ رام - ۵- راجہ بہروز
۶- عجب سنگھ ولد ستر و سال
۷- چتر بھوج چوہان
۸- کشن سنگھ کچھواہا
طرح دست چپ میں دو سو پانچ امیر
اور منصب دار تھے اونمیں رجپوت
سردار راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ -
چندر من بندیلہ اور بھوج راج
تھے -

رخصت کے وقت راجہ
ستر و سال ہاڈا کو خلعت
خاصہ جمدھر مرصع اور گھوڑا
عنایت ہوا -

سیوا رام گوڑ - روپ سنگھ
راٹھور - رام سنگھ راٹھور -
گوکل داس سیسودیہ - گردھر
داس - راجہ امر سنگھ نروری
رائے سنگھ جھالا اور ارجن
گوڑ کو خلعت اور گھوڑے عطا
ہوئے -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

राव रूप सिंघ चन्द्रावत का मनसब हज़ारी ज़ात और १००० सवार का और राय सिंघ झाला का हज़ारी ज़ात और ७०० सवार का असल और इज़ाफ़े से हो गया-

बीसवाँ बरस

फागण सुदी ३ सं॰ १७०२ से फागन सुदी २ सं॰ १७०३ तक

लाहौर में काल के मारे लोग अपने बेटों को बेचते थे बादशाहने हुक्म दिया कि जो कोई अपना बेटा बेचे उस की कीमत सरकार से उस को देदें और बेटा भी उस के हवाले करदें और २०० रुपये रोज़ का खाना हर रोज़ १० जगह ८ तयार करके गरीबों को खिलावें

बेसाख वदी ४ को बादशाहने जानिसार खां को ख़त और साढे तीन लाख रुपये की सौ

راؤ روپ سنگہ کا منصب ہزاری ذات اور ہزار سوار کا اور رائے سنگہ جہالا کا منصب ہزاری ذات اور سات سو سوارون کا اصل و اضافہ سے ہوگیا-

برس بیسوان
سنہ ۱۰۵۶

۱۸ فروری سنہ ۱۶۴۶ع سے ۲۶ جنوری سنہ ۱۶۴۷ع تک لاہور مین قحط سالی سے لوگ اپنے بچون کو بیچتے تھے بادشاہ نے حکم دیا کہ جو اپنا بیٹا بیچے اوسکی قیمت خزانہ سے دیدین اور بیٹا بھی اوسکی حوالہ کردین اور دوسو روپیہ روز کا کھانا ہر روز غریبون کو دس جگہ کھلادین

۱۸ صفر کو بادشاہ نے جان نثار خان کو بہم رسالت روانہ ایران کرکے شاہ عباس کے لیئے خط اور ساڑھے تین لاکھ روپیہ کے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गात हिन्दुस्तान की देकर ईरान को रवाना किया –

तारा गढ में क़ब्ज़ा

बाद शाह ने बाद मरन राजा जगत सिंघ के कांगडे पहाड़ की तलहटी के फ़ौजदार मुरशिद कुली खांको हुक्म लिखा था कि राजा के वारिसों को ख़बर होने से पहिले २ तारा गढ के क़िले में अमल करले क्यों कि ऐसे मज़बूत क़िले का फ़सादी ज़मीदारों के हाथ में रहना मुनासिब नहीं है और बैसाख बदी ३ को फ़िदाई खां के नाम भी हुक्म गया कि बहुत जलदी वहां पहुंच कर इस काम में कोशिश करे मगर मुरशिद कुली खांने फ़िदाई खांके पहुंचने से १२ दिन पहिले तारा गढ़ में कब्ज़ा कर लिया था और जब फ़िदाई

بتحفے ہندوستان کے بھیجے –

فتح قلعہ تاراگڈ

بادشاہ نے بعد انتقال راجہ جگت سنگہ کے مرشد قلیخان فوجدار دامن کوہ کانگڑہ کو حکم لکھا تھا کہ راجہ کے وارثون کو خبر ہونے سے پہلے پہلے قلعہ تاراگڈ مین عمل کرلے کیونکہ ایسے مضبوط قلعہ کا زمینداران قابوجو کے ہاتھ مین رہنے دینا طریقہ حزم و احتیاط سے بعید تھا اور تاریخ ۱۷ صفر کو فدائی خان بھی مامور ہوا کہ بہت جلد وہان پہونچکر اس کام مین کوشش کرے مگر مرشد قلیخان فدائی خان کے پہونچنے سے بارہ دن پہلے اوس قلعہ پر قابض ہوگیا تھا اور بعد پہونچنے فدائی خان کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खां पहुंचा तो क़िला उस के हवा ले करके अपनी जगह पीछा च ला गया बादशाहने यह ख़बर सुन कर तारा गढ की क़िले दा री पर बहादुर कंबोह को भेजा

बादशाह का काबुल जाना

बेसाख बदी ४ गुरवार को बादशाह लाहौर से काबुल को रवाने हुवे–

बेसाख बदी १० को राजा जय सिंघ के बेटे कंवर राम सिंघ ने ५०० सवारों के साथ अपने वतन से दरबार में हाजिर हो कर १ हाथी नज़र किया बादशाह ने खिलअत हज़ारी ज़ात और १००० सवार का मनसब उस को इनायत फ़रमाया–

बेसाख सुदी ५ को चिनाब नदी के किनारे पर राजा जसवंत सिंघ को जड़ाऊ जमधर फूलक

قلعہ اوس کے حوالہ کرکے واپس اپنے مقام کو چلا گیا۔ بادشاہ نے یہ خبر سن کر بہادر کمبو کو واسطے قلعہ داری تاراگڈہ کے بھیجا۔

بادشاہ کا کابل جانا

۱۸ صفر روز پنجشنبہ کو بادشاہ لاہور سے کابل کو روانہ ہوئے

۲۴ صفر کو مقام جہانگیر آباد مین راجہ جے سنگہ کے بیٹے کنور رام سنگہ نے پانسو سوارون کے ساتہ وطن سے حاضر ہوکر ایک ہاتھی پیشکش کیا بادشاہ نے اوسکو خلعت اور ہزاری ذات و ہزار سوار کا منصب عنایت فرمایا۔

۳ ربیع الاول کو چناب ندی کے کنارے پر راجہ جسونت سنگہ کو جمدھر مرصع معہ پھول

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

टारे समेत और सोने के साज का घोड़ा इनायत हुआ-

जेठ वदी २ को कंवर राम सिंघ को सुनेहरी ज़ीन का घोड़ा इनायत हुआ-

जेठ वदी ६ को बाद शाह पिशोर में पहुंचे-

जेठ सुदी १० को शाह ज़ादा मुराद बख़्श जो अब तक पिशोर में ठहरा हुआ था काबुल में पहुंचा राजा विट्ठल दास भी बहुत से रज पूतों के साथ बंगश के घाटे से गुजर कर शाह ज़ादे के पास काबुल में हाजिर हुआ-

जेठ सुदी ६ को पिशोर में बाद शाह की साल ग्रह का तुलादान चन्द्र मास के हिसाब से हुआ उस की ख़ुशी में राजा जसवंत सिंघ के फिर १००० सवार दुअस्पा सिह अस्पा हो गये और अब उस का मनसब पंच हज़ा

گھارہ و اسپ عربی با یراق طلا مرحمت ہوا-

۱۵ ربیع الاول کو کنور رام سنگہ کو اسپ مع زین مطلا کے عطا ہوا-

۵ ربیع الثانی کو بادشاہ پشاور میں پہونچے-

شاہزادہ مراد بخش جو ابتک پشاور میں ٹھہرا ہوا تھا روانہ ہوکر ۹ ربیع الثانی کو کابل میں پہونچا-

راجہ بیٹھل داس بھی معہ بہت سے راجپوتوں کے بنگش کے راستہ سے گذر کر کابل میں بادشاہ زادہ مراد بخش کے پاس حاضر ہوگیا-

روز پنجشنبہ ۵ ربیع الثانی کو جشن وزن قمری میں ہزار سوار اور راجہ جسونت سنگہ کے منصب سے دو اسپہ و سہ اسپہ ہوگئے جس سے اب اوسکا منصب پنجہزاری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

री ज़ात और ५००० सवार का हो गया जिसमें २००० सवार दुअस्पा और सिह अस्पा थे-

महेस दास राठोड़ पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े से ३ हज़ारी ज़ात और २००० सवार का मनसबदार हो गया और उस को नक़्क़ारा भी इनायत हुआ-

जेठ सुदी १० को बादशाह ने पिशावर से कूंच किया और हुक्म दिया कि राजा जसवंत सिंघ और कंवर राम सिंघ बादशाही लश्कर से १ मंजिल आगे चला करें ता कि लश्कर आसानी के साथ ख़ैबर के घाटे और दूसरे तंग रस्तों से गुज़र करे-

यह ज़ाब्ता था कि जिस मनसबदार की जिस किसी सूबे में जागीर होती और वह उसी सूबेमें तईनात होता तो अपने तीसरे हिस्से के सवारों का दाग़ कराता था

پنجہزار سوار کا ہوگیا جس مین دو ہزار سوار دو اسپہ و سہ اسپہ تھے-

مہیش داس راٹھور پانصدی ذات کے اضافہ سے تین ہزاری ذات دو ہزار سوار کے منصب پر پہونچا اور اوسکو نقارہ بھی عنایت ہوا

۹ ربیع الثانی کو بادشاہ کا پشاور سے کوچ ہوا اور راجہ جسونت سنگھ و راجہ رام سنگھ کو حکم دیا گیا کہ بادشاہی لشکر سے ایک منزل آگے چلا کرین تا کہ لشکر کتل خیبر اور دوسرے تنگ راستون سے بآسانی گذر کرے-

یہ بادشاہی ضابطہ تھا کہ جس منصب دار کی جس کسی صوبہ مین جاگیر ہوتی تھی اور وہ اوسی صوبہ مین تعینات ہوتا تو اپنے تیسرے حصہ کے سوارون کا داغ کراتا تھا-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जैसे ३ हज़ारी ज़ात और ३००० स
वार [illegible]ला ३००० सवारों का दाग़
करा ता था और जब हिन्दुस्तान
के दूसरे सूबेमें लड़ाई पर जाता
तो चौथा हिस्सा सवारों का दाग़
के वास्ते हाज़िर करता यानी ४ ह-
ज़ारी ज़ात और ४००० सवार का
मन सब दार ३००० सवारों के दा
ग़ दिला ताथा मगर अब जो बल
ख़ और बदख़ शाँ पर फ़ौजें भेजी
गईं और ये मुल्क हिन्दुस्तान
से बहुत दूरथे इस लिये बादशा
ह ने [illegible] दिया कि जब तक
यह मोहिम रहे मन सब दार पांच
वें हिस्से के सवारों को दाग़ दिला
वें यानी जिस पंच हज़ारी मनसब
दार के ५००० सवार होवें तो वह
हज़ार का दाग़ करावे सिह अ-
स्पा दु अस्पा और इक अस्पा के
दाग़ की यह शरह मुकर्रर हुई-

جیسے تین ہزاری ذات اور
تین ہزار سوار کا منصب دار
ہزار سواروں کا داغ کراتا
تھا اور جب ہندوستان
کے دوسرے صوبوں مین لڑائی
پر جاتا تھا تو چوتھائی حصہ
سواروں کا داغ کے واسطے
حاضر کرتا یعنے چار ہزاری ذات
اور چار ہزار سوار کا منصب دار
صرف ہزار سواروں کو داغ دلاتا تھا
مگر جب بلخ اور بدخشان پر فوجین
بھیجی گئین اور یہ ملک ہندوستان
سے بہت دور تھے اسلیئے بادشاہ
نے یہ حکم جاری کیا کہ جبتک یہ مہم قائم
ہے منصب دار پانچوین حصہ کے
سواروں کو داغ دلاوین یعنی جس
پانچہزاری منصب دار کے پانچہزار
سوار ہوین تو وہ ہزار سواروں کا
داغ کراوے دو اسپہ
سہ اسپہ اور ایک اسپہ
کے داغ کی یہ شرح مقرر ہوئی۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

हासिल जागीर	सिह अस्पा	दुअस्पा	इक अस्पा	कुल	کل	یک اسپہ	دو اسپہ	سہ اسپہ	حاصل جاگیر
१२ महीने का	३००	६००	१००	१०००	۱۰۰۰	۱۰۰	۶۰۰	۳۰۰	دوازدہ ماہہ
११ महीने का	२५०	५००	२५०	१०००	۱۰۰۰	۲۵۰	۵۰۰	۲۵۰	یازدہ ماہہ
१० " "	०	८००	२००	१०००	۱۰۰۰	۲۰۰	۸۰۰	۰	دہ ماہہ
९ " "	०	६००	४००	१०००	۱۰۰۰	۴۰۰	۶۰۰	۰	نہ ماہہ
८ " "	०	४५०	५५०	१०००	۱۰۰۰	۵۰	۴۵۰	۰	ہشت ماہہ
७ " "	०	३५०	७५०	१०००	۱۰۰۰	۶۵۰	۳۵۰	۰	ہفت ماہہ
६ " "	०	१००	९००	१०००	۱۰۰۰	۹۰۰	۱۰۰	۰	ششماہہ
५ " "	०	०	१०००	१०००	۱۰۰۰	۱۰۰۰	۰	۰	پنجماہہ

और जिस के मनसब के सवार दुअस्पा और सिह अस्पा मुकर्रर हो गये हों तो वह ऊपर लिखे सवारों दुअस्पा और सिह अस्पा से दूने दाग़ करावें जैसे पंच हज़ारी पंच हज़ार दुअस्पा और सिह अस्पा वाला मन सब दार कि जिस की जागीर की आमदनी भी १२ महीने की हो ६०० सवार सिह अस्पा और १२०० दुअस्पा और २०० इक अस्पा दाग़ करावे इसी पर बाक़ी के मन सब दारों को समझ

اور جس کے منصب کے سوار دو اسپہ و سہ اسپہ مقرر ہوگئے ہوں تو وہ اوپر لکھے سواروں دو اسپہ و سہ اسپہ سے دوچند داغ کرادے جیسی پانچہزاری پانچہزار سوار دو اسپہ و سہ اسپہ والا منصب دار کہ جسکی جاگیر کی آمدنی بھی بارہ مہینے کی ہو چھ سو سوار سہ اسپہ بارہ سو دو اسپہ اور دو سو یک اسپہ داغ کرادے اسی پر باقی کے منصب داروں کا بھی قیاس

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लेना चाहिये-

इसी तरह नक़दी के मनसब दारों अहदी तीरंदाजों बरक़न दाज़ सवारों पेदल बंदूक चियों। और दूसरे शागिर्द पेशोंके लोगों को ३ महीने की तनख़ाह पेशगी देने का हुक्म हुआ और जिन जागीर दारों की आम दनी कि दाग के बरा बर थी यानी उतनी ही थी कि जितने उनके घोडों के दाग़ लगते थे उन को भी उन की आमदनी का चौथा हिस्सा कि जो ३ महीने के ख़र्च के बरा बर होता है पेशगी ख़ज़ाने से दिलाया गया ता कि उन को ख़र्च की तकलीफ़ नहो-

आसाद वदी चौथ को बहादुर ख़ां और राजा विट्ठल दास मय फ़ौज हिरावल के काबुल से बदख़ शां को रवाने हुवे और ३ दिन पीछे शाह जादे ने भी कूंच

کو لینا چاہیئے -

اسیطرح نقدی کے منصبدارون احدی تیراندازون برقنداز سوارون پیدل بندوقچیون اور دوسرے شاگرد پیشہ کے لوگون کو ۳ مہینے کی تنخواہ پیشگی دینے کا حکم ہوا اور جن جاگیردارون کی آمدنی داغ کے برابر تھی یعنی اوتنی ہی تھی جتنی اون کے گھوڑون کے داغ لگتے تھے اون کو بھی اون کی آمدنی کا چوتھا حصہ کہ جو ۳ مہینے کی تنخواہ کے برابر ہوتا تھا پیشگی خزانہ سے دیا گیا تاکہ اون کو خرچ کی تکلیف نہ ہو -

۱۵ ربیع الثانی کو بہادر خان اور راجہ بیٹھل داس مع فوج ہراول کے کابل سے بدخشان کو روانہ ہوے اور ۱۸ کو شاہزادہ نے بھی کوچ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया-

[illegible]साई वदी १० को बादशा ह काबुल में पहुंचे राजा जसवंत सिंघ और सादुल्ला खां वज़ीर पेशवाई को आये क्योंकि यह पहिले पहुंच गये थे-

असाढ़ वदी १२को सियादत खां पृथ्वीराज राठोड की जगह दौलताबाद का क़िले दार मुक़र्रर हुआ और पृथ्वी राज के नाम लिखा गया कि आगरे पहुंच कर बाकी खां की शामिलात में आगरेके क़िले की रखवाली करे-

राजा जय सिंघ के बेटे कंवर राम सिंघ को मोतियों की माला इनायत हुई-

असाढ़ बदी १३को लशकर हिरोल गु[illegible] पहुंचा बहादुरखां और राजा विठ्ठल दास ने अपने तमाम आदमियों

۲۲ ربیع الثانی کو بادشاہ کابل مین پہونچے راجہ جسونت سنگہ و علامی سعد اللہ خان پیشوائی کو آئے کیونکہ یہہ پہلے پہونچ گئے تھے۔

۲۶ ربیع الثانی کو سیادت خان بتغیر پرتھی راج راٹھور کے قلعہ دار دولت آباد کا مقرر ہوا اور پرتھی راج کے واسطے حکم صادر ہوا کہ دار الخلافہ اکبر آباد مین آکر بالاتفاق [illegible] کے قلعہ کی حفاظت کرے۔

کنور رام سنگہ ولد راجہ جیسنگہ کو موتیون کی مالا عنایت ہوئی۔

۲۷ ربیع الثانی کو لشکر ہراول [illegible] مین پہونچا بہادر خان اور راجہ بیٹھل داس نے اپنے تمام آدمیون

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को मजदूरों के शामिल बरफ उ-
ठाने में लगा कर रस्ता साफ़ कि
या-

असाढ सुदी २ को असा
लत खां और

असाढ सुदी ४ को बहादुर
खां और राजा विठुल दास और
असाढ सुदी १० को शाहज़ादा
मुराद और अली मरदान खां
तूल के घाटे से गुज़रे बादशाही
अमल दारी यहां तक थी-

शाहज़ादे ने दहनी बांई
फ़ौजें का़हमर्द और ग़ोरी के
फ़तह के वास्ते भेजा था सो ख़-
लील बेगने आषाढ सुदी १२
को कहमर्द का क़िला ख़्वाजमश
कूर से ले लिया मिरज़ा नोज़र
राजा देवी सिंघ और राजा पहा
ड़ सिंघ वग़ैरा गोरी के क़िलेपर
गये थे उन में से ग़ज़नफ़र ने
पेश क़दमी करके वह क़िला-

کو مزدوروں کے شامل برف
اوٹھانے میں لگاکر راستہ
صاف کیا-

یکم جمادی الاول کو اصالت
خان اور دوسری کو بہادر خان
اور راجہ بیٹھل داس اور
آٹھوین کو شاہزادہ مراد بخش اور
امیر الامرا طول کے گھاٹے سے
گذرے بادشاہ کی عملداری
یہان تک تھی-

بادشاہزادہ نے فوج برانغار
و جرانغار کو واسطے
فتح کہمرد اور غوری کے روانہ
کیا تھا ازانجملہ خلیل بیگ نے
۱۰ جمادی الاول کو خوجہ شکور سے
قلعہ کہمرد کا لے لیا مرزا نوذر اور
راجہ پہار سنگہ و راجہ دیبی سنگہ
وغیرہ قلعہ غوری پر گئے
تھے اون مین سے غضنفر نے
سبقت کرکے قلعہ غوری

قباد

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अरिक्षा खोर" किलेवाद से लड़ कर सावन वदी ६ को फ़तह किया-

नज़र मोहम्मद खां का वेटा खुसरो कुंदुज में था वह अलमान जाति के लुटेरों से तंग होकर शाह ज़ादे के पास आया और शाह ज़ादे ने उसको वादशाह की ख़िदमत में रवाने किया-

शाह ज़ादा मुराद सावण वदी ८ को कुंदुज़ में पहुंचा अलमान लोग तमाम मुल्क और शहर को लूट कर जामे मसजिद को जला कर चले गये शाह ज़ादे राजा राज रूप को क़िले कुंदुज में छोड़ कर सावन वदी ८ को वलख की तरफ रवाना हुआ और २ लाख रुपया राजा को ख़रच के वास्ते दे गया-

सावन वदी १२ को खुसरो वाद शाह के पास कावुल में पहुंचा वाद शाह ने एक लाख रुपया

... سے بعد جنگ ۲۰ جمادی الاول ... فتح کیا -

نذر محمد خان کا بیٹا خسرو قندز میں تھا وہ مفسدان قوم المان کے غلبہ سے تنگ ہو کر شاہزادہ مراد بخش کے پاس آیا اور شاہزادہ نے اوسکو بادشاہ کی خدمت میں روانہ کیا مراد بخش قندز میں پہنچا غارتگران قوم المان کہ جنکی غلبہ سے نذر محمد خان کا بیٹا خسرو شاہزادہ کے پاس آکر بادشاہ کی خدمت میں روانہ ہوا تھا تمام ملک اور شہر ... مسجد جامع کو جلاکر واپس چلے گئے -

بادشاہزادہ مراد بخش راجہ راجروپ کو قلعہ قندز میں معہ کسیقدر جمعیت کے چھوڑکر ۲۱ جمادی الاول کو بلخ کیطرف روانہ ہوا اور دو لاکھ روپیہ واسطے سامان کے راجہ کو دیگیا - ۲۵ جمادی الاول کو خسرو بادشاہ کے پاس کابل میں پہنچا بادشاہ نے ایک لاکھ روپیہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदे दूसरे असबाब और हाथी घोड़ों के उस को देकर ६ हज़ारी ज़ात और २००० सवारों का मन इनायत किया-

सावण वदी १० गुरवार को शाहज़ादे ने बलख के क़िले में क़बज़ा कर लिया नज़र मोहम्मद ख़ां जिस को बाद शाह ने लिखा था कि हमारी फ़ौज तुम्हारी मदद को आती है और जो शह ज़ादे से मिलने को तैयार बैठा था डर कर भाग गया शह ज़ादे ने बहादुर ख़ां और असालत ख़ां को उसके पीछे भेजा राजा विठ्ठल दास को और तमाम रजपूतों को हिरावल समेत अपने पास रख लिया महेस दास रूप सिंह और राम सिंघ कि तीनो राठोड़ थे और कई दूसरे रज पूत बहादुरी और लड़ाई के शौक़ से बहादुर ख़ां और

علاوہ دیگر اسباب ہاتھی گھوڑون کے اوسکو عنایت کرکے چھہ ہزاری ذات اور دو ہزار سوار کا منصب عطا فرمایا ۲۷ کو شاہزادہ بلخ کے قریب پہونچا اور ۲۸ پنجشنبہ کو اوس نے بلخ مین عمل کرلیا بادشاہ نے نذر محمد خان کو لکھا تھا کہ ہمنے شاہزادہ کو تمہاری مدد کے واسطے بھیجا ہے مگر جب شاہزادہ نے قلعہ بلخ مین قبضہ کیا تو نذر محمد خان جو ملاقات کے لیے آنے کا اقرار کرچکا تھا متوہم ہوکر بھاگ گیا۔ شاہزادہ نے بہادر خان اور اصالت خان کو اوسکے تعاقب مین بہیجا اور راجہ بیٹھل داس کو مع تمام راجپوتون اور ہراول کے اپنے پاس رکھ لیا۔ مہیش داس روپ سنگہ اور رام سنگہ کہ تینون راٹھور تھے اور کئی دوسرے راجپوت سردار بہادری اور لڑائی کے شوق سے بلا رخصت شاہزادہ کے بہادر خان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साबित खां के साथ और पूछे चले गये	بسالت خان کے پاس چلے گئے
१२ लाख रुपय का माल ढाइ हज़ार घोड़े घोड़िया और ३०० ऊंटनिया और ऊंट नज़र मोहम्मद ख़ां के ज़बत हुवे-	بارہ لاکھ کا مال ڈھائی ہزار گھوڑے گھوڑیاں اور تین سو اونٹ نر و مادہ اموال نذر محمد خان سے ضبط ہوئی
बलख और बदख़शां की पैदा-	حاصل ولایت بلخ و بدخشان
बलख की बलायत का हासिल अमन और आबादी के ज़माने में १५ लाख और बदख़शां का १० लाख के क़रीब था मगर वेरानी के सबब से पहिले बरस क़रीब आधे के और दूसरे बरस करीब चोथाई के आया और इतना ही हासिल बिलायत मावरउल-नहर (बुख़ारा समरकंद वग़ैरा) का भी [illegible] नज़र मोहम्मद ख़ां के बेटे अबदुल अज़ीज़ ख़ां के पास थी और कुल क़	حاصل ولایت بلخ کا بشرط امن و آبادی قریب پندرہ لاکھ - اور حاصل بدخشان قریب دس لاکھ کے تھا مگر بوجہ ویرانی کے سال اوّل مین قریب نصف کے اور [illegible] مین قریب چہارم کے بیٹھا اور حاصل ولایت ماوراءالنہر بھی جو نذر محمد خان کے بیٹے عبدالعزیز خان کے قبضہ مین تھے اسی قدر تھا اور کل قلمی سوار دونوں ولایتون کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[illegible] सवार दोनों वलायतों के ७०[illegible] के क़रीव थे-

सावन सुदी ५ को वरवल में वादशाह के नाम का खुतवा पढ़ा गया और वादशाह ने इस फ़तह की खुशी कावुल में ८ रोज़ तक वड़ी धूम धाम से की-

उज़बकों पर फ़तह

सावन सुदी ४ को जब वहादुर ख़ां और असालत ख़ां गांव गोती में पहुंचे तो उनको मालूम हुआ कि वहां से ७ कोस पर शेर गां में नज़र मोहम्मद ख़ां उज़बकों और अलमानों से मिल कर लड़ने का इरादा कर रहा है इन्होंने भी उससे लड़ने की तैयारी करके अपनी फ़ौज इस तरह पर सजाई कि आप दोनों तो वीच में रहे और नेक नाम को जो वहादुर ख़ां का चचा था

قریب سات ہزار کے [illegible]

بادشاہ کے نام کا خطبہ

۴ جمادی الثانی کو بلخ میں بادشاہ کے نام کا خطبہ اور سکہ جاری ہوا بادشاہ نے اس فتح کی خوشی کابل میں آٹھ روز تک بڑی دھوم دھام سے کی۔

اُزبکون پر فتح

دوشنبہ ۱۲ جمادی الثانی کو جب بہادر خان واصالت خان موضع کوٹلی مین پہونچے تو معلوم ہوا کہ نذر محمد خان سات کوس پر مقام شیرغان مین قوم اُزبک اور المان کے شامل ہو کر لڑنے کے ارادہ مین ہے بادشاہی لشکر نے بھی لڑنے کی تیاری کر کے صف بندی کی [illegible] بہادر خان تو قول مین رہا اور اپنے چچا نیکنام

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

[राज]पूतों के साथ हिरावल कि
या और कहा कि वह उन के आगे
परा बांधे चले राज पूत उस की
दहनी तरफ़ रहें और सैयद बां
ई तरफ़, ये वेही राज पूतथे जो
शाह ज़ादे और अली मरदान
खां से कहे बग़ैर अपनी बहा
दुरी दिखलाने के वास्ते उनके
साथ चल आये थे नाम उनके
यह हैं

१ महेस दास राठोड़
२ रूप सिंघ राठोड़
३ राम सिंघ राठोड़
४ राव रूप सिंघ चन्द्रावत
५ राजा अमर सिंघ राजावत
६ महेश दास दूसरा जो पहिले
राजा गज सिंघ के पास रहताथा
७ राय तिलोक चंद सेखावत
८ संग्राम सिंघ राजावत
९ गोविंद दास खांन दोरानी
१० बल्लू चोहान

[illegible] راجپوتون کے ہراول کیا
اور [illegible] اوس کے آگے آگے
صف باندھکر چلا کرے راجپوت
اوس کے دہنی طرف اور سیّد
بائیں طرف رہین - یہہ وہی
بہادر راجپوت تھے کہ جو شاہزادہ
مراد بخش اور امیر الامرا علیمردان خان
سے پوچھے بغیر اپنی بہادری
دکھانے کو اونکے ساتہ چلے
آئے تھے اور نام اونکے یہ ہین

۱ - مہیش داس راٹھور
۲ - رُوپ سنگہ راٹھور
۳ - [illegible] سنگہ راٹھور
۴ - راؤ روپ سنگہ چندراوت
۵ - راجہ امر سنگہ راجاوت
۶ - مہیش داس دوسرا جو پہلے راجہ
گج سنگہ کے پاس رہتا تھا -
۷ - رائے تلوک چند سیکہاوت
۸ - سنگرام سنگہ راجاوت
۹ - گوبند داس خاندورانی
۱۰ - [illegible] چوہان -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

असालत ख़ां के पास कोल (बीच के लश्कर) में इतने राजपूत सरदार थे

१ राजा जय राम
२ जग राम हिरदे राम कछवाहे का बेटा
३ अजब सिंघ शत्रु साल का बेटा
४ चतुर भुज लखमन सेन चोहान का पोता-
५ चन्द्र भान नरूका

नज़र मोहम्मद ख़ां के पास शेर ग़ान में १०००० उजबक और अलमान थे मगर जब सुना कि बाद शाही लशकर आता है तो बहुत से उनमें से अंद खुद को चले गये तो भी नज़र मोहम्मद ख़ां शेर ग़ान से बढ कर लड़ने को आया मगर मुकाबले के वक्त उस के साथ वाले बान और बंदूक की मारे से घबरा कर भाग निकले और ख़ान भी मुंह मोड़

اصالت خان بھی قول مین تھا اور اوس کے پاس اتنے راجپوت سردار تھے -

۱- راجہ جے رام
۲- جگ رام ولد ہردے رام کچھواہہ -
۳- عجب سنگھ ولد ستر و سال
۴- چتر بھوج نبیرہ لچھمن سین چوہان -
۵- چندر بھان نروکا -

نذر محمد خان کے پاس شیر غان مین دس ہزار اوزبک اور المان تھے مگر بادشاہی فوج کے آنے کی خبر سُنکر بہت سے تو اندخود کو چلے گئے اور خان مذکور شیر غان سے استقبال کرکے لڑنے کو آیا مگر ہنگام مقابلہ اوس کے ہمراہی بان اور بندوق سے گھبرا کر بھاگ گئی اور خان بھی منہ موڑکر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर अंद खूद को चला गया और कुछ साथी उसके बेटे सुबहान कुली को लेकर "चार जूई" की तरफ चल दिये बादशाही अमल शेरगान में हो गया -

बादशाहने सावन सुदी १० को यह ख़बर सुन कर अमीरों के मन सब बढाये उनमें महेस दास राठोड़ को खिलत मिला और ५०० सवारों का ईज़ाफ़ा हुआ जिस से उस का मनसब ३ हज़ारी जात और २५०० सवारों का हो गया॥

राजा जय राम को खिलअत मिला और उस का मनसबभी असल और इज़ाफ़े से डेढ हज़ारी ज़ात और १२०० सो सवारों का हो गया -

रूप सिंह राठोड़ राम सिंघ राठोड़ और राव रूप सिंह चंद्रावत को खिलअत मिले और हरेक का मन सब असल और इज़ाफ़ेसे डेढ

اندخود کو چلاگیا اور کچھ همراہی اوس کے اوسکے بیٹے سبحان قلی کو لیکر روانہ "چارجوی" ہوئے۔ بادشاہی اُمرا نے شیرغان مین عمل کر لیا۔

بادشاہ نے ۸ جمادی الثانی کو یہ خبر سُنکر امیرون کے منصب بڑھائے۔ اون مین مہیش داس راٹھور کو خلعت ملا اور منصب بھی پانسو سوارون کے اضافہ سے تین ہزاری ذات اور ڈھائی ہزار سوارون کا ہوگیا۔

راجہ جے رام کو خلعت ملا اور منصب ڈیڑہ ہزاری ذات اور بارہ سو سوارون کا اصل اور اضافہ سے عطا ہوا۔

روپ سنگہ راٹھور۔ رام سنگہ راٹھور اور راؤ روپ سنگہ سیسودیہ کو بھی خلعت ملے۔ اور ہرایک کا منصب اصل اور اضافہ سے ڈیڑہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हज़ारी ज़ात और हज़ार सवार का हो गया-

राजा गज सिंघ के नायब महेस दास राठोड़ का मनसब अस्ल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ६०० सवार का हो गया और उस को ख़िलत भी मिला-

इसी तरह शत्रु साल के बेटे अजब सिंघ, चोहान चतुर भुज, चन्द्र भान नरूका, राजा मान सिंघ के पोते संग्राम सिंघ, बल्लू चोहान, गोयन दास ख़ान दो रानी, के भी मनसब बढ़े-

भादों बदी १० को राजा राज रूप को जड़ाऊ जमधर मोतियों के कुंडल इनायत हुवे और पांच सदी ज़ात और ५०० सवारों का इज़ाफ़ा भी हुआ जिस से उस का मनसब २ हज़ारी ज़ात और १५०० सवारों का हो गया-

अब शाह ज़ादा मुराद इस

ہزاری ذات اور ہزار سوار کا ہوگیا۔

راجہ گج سنگھ کے نائب مہیش داس راٹھور کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور چھ سو سوار کا ہوگیا اور اوسکو بھی خلعت ملا

اسی طرح ستروسال کے بیٹے عجب سنگھ چوہان چتربھوج چندربھان نروکا راجہ مان سنگھ کے پوتے سنگرام سنگھ بلوچوہان اور گوبند داس خاندوران کے بھی منصب بڑھے۔

۲۲ جمادی الثانی کو راجہ راجروپ کو جمدھر مرصع اور موتیون کے گوشوارہ عنایت ہوکر منصب مین پانصدی ذات اور پانسو سوارون کا اضافہ ہوا جس سے اوسکا منصب دوہزاری ذات اور پانسو سوارون کا ہوگیا۔

اتنے ہی مین شاہزادہ مراد بخش اوس

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुल्क से घबरा गया और उस ने
केई अरज़ियां बादशाह को भेजी
कि मुझ को हुज़ूर में बुलालें जिससे
बादशाह ने नाराज़ होकर भादों व
दी १२ को सादुल्लु खां वज़ीर को र
वाना बलख किया उसने भादों सु
दी ८ को वहां पहुंच कर शाहजादे
को समझाया मगर जब वह लौटे
जाने के इरादे से बाज़ न आया तो
वज़ीर ने सब अमीरों को उसके डेरे
पर जाने से मने कर दिया बलख
की सूबेदारी असालत खां और
बहादुर खां को दी और बदख्शां
की कुलीच खां को सु पुरद की रा-
जा पहाड़ सिंघ और चंद्र मणि बुं
देले को तो दूसरे अमीरों के साथ
५०० सवारों से अंदखूद को रवा
ने किया और उग्रसेन कछवा
हे को कलना और गुरगांन की हि
फ़ाज़त और हकूमत पर भेजा इ
सी तरह और भी कई हाकिम

ملک کے قیام سے گھبرا اوٹھا
اور اوس نے مکرر بادشاہ کو عرضی
بھیجی کہ مجھے حضور مین بلا لین
بادشاہ نے ناخوش ہوکر سعد اللہ
خان وزیر کو تاریخ ۲۶ جمادی
الثانی بلخ کی طرف بھیجا شب دوشنبہ
۸ رجب کو اوسنے وہان پہونچکر
شاہزادہ کو بہت کچھ سمجھایا
مگر جب وہ ارادہ واپسی سے
باز نہ آیا تو سعد اللہ خان نے
امیرون کو اوسکے ڈیرہ پر جانے
سے منع کرکے بلخ کی صوبہ داری
اصالت خان اور بہادر خان کو
اور بدخشان کی قلیچ خان کو دی
اور راجہ پہاڑ سنگھ راجہ دیبی سنگھ
و چندر من بندیلہ کو معہ دوسرے
امیرون کے پانچہزار سوارون سے
اندخو کو روانہ کیا کلنہ اور گرگان کی
حکومت و حفاظت پر اوگر سین
کچھواہہ کو بھیجا اسیطرح اور
بھی کئی جگھہ حاکم

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और थानेदार जगह जगह मुकर्रर करके २२ दिन में सारा बंदोबस्त इन नये जीते हुवे मुल्कों का कर दिया-

बदख्शां का हाल

भादों वदी ८ को राजा राज रूप ने कुंदुज़ में सुना कि बहुत से अलमान आब ख्वाजा पाक से जो १ खाड़ी जेहूंनद्दी की है उतर कर इधर आते हैं इस पर फौरन अपने भरोसे के कुछ राजपूतों को आगे हिरोल बना कर रवाने कर दिया और आप किलेका बंदोबस्त करके सैयद असद उल्ला सैयद वाकिर और दूसरे अहदियों के साथ हिरोल के पीछे ही चल पड़ा अलमानों ने अभी कईग्रास कटों को जो जंगलमें सिपाहियों के वास्ते घास लकड़ी लेने को गये थे मारा था कि यह फौज वहां

اور تھانہ دار مقرر کرکے ۲۲ دن مین تمام ممالک مفتوحہ کا انتظام کردیا-

بدخشان کا حال

راجہ راجروپ کی عرضی سے بادشاہ کو معلوم ہوا کہ ۲۱ جمادی الثانی کو راجہ مذکور کو قندز مین خبر ملی کہ بہت سے المان آب خواجہ پاک سے جو ایک خلیج دریاے جیحون کی ہے اسطرف کو عبور کرتے ہین راجہ نے فوراً اپنے کچھ معتمد راجپوتون کو بطور ہراول کے پیشتر روانہ کیا اور آپ قلعہ کا ضابطہ کرکے مع سید اسد اللہ و سید باقر اور احدیون وغیرہ کے پیچھے سے راہی ہوا المان جو سپاہیون کے کچھہ نوکرون کو کہ لکڑی کے واسطے جنگل مین جاتے تھے مار چکے تھے اس فوج

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जा पहुंची और वे भागते ही नज़र आये राजा ने पीछा किया २ कोस गया था कि उन को दूसरी टुकडी ने जो पहाड़ी या और घाटियों में छुपी हुई थी बाहर निकल कर मुकाबिला किया मगर जब उन मेंसे बहुत से आदमी मारे गये तो बाक़ी के भी भाग गये–

राजा जीत पाकर लौटा और २।३ दिन बाद सुना कि वे भागे हुवे अलमान आस्ताने इमाम में गये हैं और कुछ दूसरे भी उन से आमिले हैं और अब फिर उन का इरादा कुंदुज़ के ऊपर आने का है और लश्कर के जासूस उनकी तेदाद पांच छः हज़ार सवारों की बतलाते थे और राजा के पास जो फ़ौज थी वह थोड़ी लिये उसने मैदान की लड़ाई लड़ना मसलिहत न देखी और शहर का बचाना ज़रूर समझा जो

کے پہونچتے ہی بھاگ گئے راجہ دو کوس تک اون کے تعاقب مین گیا اسنے مین دوسرے لوگ اون مین سے جو پہاڑون اور گھاٹیون مین چھپے ہوئے تھے نکل کر راجہ کے مقابل ہوئے کچھ تو لڑائی مین مارے گئے اور باقی ماندہ فرار ہوئے۔

راجہ مع ہمراہیون کے فتح پاکر واپس آیا دو تین روز بعد خبر پہونچی کہ المان جو بھاگ گئے تھے آستانۂ امام مین جمع ہوتے ہین اور اون سے کچھ اور بھی لوگ آملے ہین وہ قندز پر آنا چاہتے ہین جاسوسون نے اون کی تعداد قریب پانچ چھ ہزار سوار کے بتائی تھی اسلیئے راجہ نے اپنے پاس تھوڑی فوج ہونے سے تدبیر صف جنگ کو قرین مصلحت نہ دیکھکر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

बादशाही अमीरों के आदल और अहसान से आबाद हो गया था क्यों कि बदख़शां की बहुत सी रैयत अलमानों के ज़ुलम से वहां आ बसी थी राजाने कुछ अहदियों और बंदूकचियों और बुंदेले पैदलों को तो क़िले की रखवाली पर रकवा और राज पूतों को इस काम पर मुक़र्रर किया कि जिधर अलमानों की भीड़ देखें मदद के वास्ते जावें और आप रात दिन लड़ाई के वास्ते तैयार रहता था-

भादों सुदी ४ को शाह मोहम्मद वग़ैरा कई शख़्स जो क़ौम क़तान के अफ़सर थे पांच छः हज़ार सवार लेकर ३ तरफ से शहर के ऊपर आये और पहर भर तक तीर मारते रहे मगर फिर भाग कर आब ख़्वाजा पाक से उतरे और आस्ताने इमाम को गये-

रुसतम खां जो अंद ख़ोद

شہر کی حفاظت جہان بدخشان کی اکثر رعایا المانون کے ڈر سے آبسے تھے مقدم سمجھے احدیون تفنگچیون اور پیادہ ہاے بندیلہ کو تو قلعہ کے ضابطہ پر رکھا اور راجپوتون کو اس کام پر مقرر کیا کہ جس طرف دشمن کا ہجوم دیکھیں پہونچکر مدد کرین اور آپ رات دن لڑائی کے لئے مسلح و مستعد رہتا تھا۔

سور جب کو شاہ محمد اور گل محمد وغیرہ چند امیران قوم قطغان پانچ چھہ ہزار سوار لے کر تین طرف سے شہر کے اوپر آئے اور پہر بھر تک جا بجا کھڑے ہو کر تیر مارتے رہے مگر پھر بھاگ کر آب خواجہ پاک سے گذرے اور آستانہ امام کو چلے گئے۔

رستم خان جو حاکم اند خود مقرر

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का हाकिम मुकर्रर हुआ था उस को भी ख्वाजा दो कोह के पास अलमानों से मुकाबिला करना पड़ा उस दिन राजा देवी सिंघ हिरोल था अलमान उर्दू (लशकर) से १ कतार वार वरदारी के ऊंटों की पकड़ लेगये राजा ने पीछा करके वह कतार उनसे छुडाली इस पर १५०० अलमान जो पहाड़ के पीछे वैठे थे ३ तरफ़ से राजा के ऊपर दोड़ पड़े राजा के पास २०० से जियादा सवार न थे तो भी उसने खूब मुकाविला किया और बहुत अलमानों को मारा उसके भी अकसर साथी और ख़ास करके रिश्तेदार मारे गये और राजा की जान पर आवनी उसने भी वहां दुरी से मरने की ठान ली थी कि उसी वक्त १ सवार उसका दोड़ा हुआ मोहम्मद क़ासिम के पास पहुंचा जो रुस्तम ख़ां की तरफ़ से

مقرر ہوا تھا اوسکو قریب مقام خواجہ دو کوہ کے المانون سے اتفاق مقابلہ کا ہوا اوس دن راجہ دیبی سنگھ ہراول تھا کچھ المان ایک قطار شتران باربرداری کو اُردو سے پکڑلے گئے راجہ نے تعاقب کرکے وہ قطار اون سے چھڑالی اسپر پندرہ سو المان جو پہاڑ کے پیچھے بیٹھے تھے تین طرف سے راجہ کے اوپر حملہ آور ہوئے راجہ کے پاس دو سو سے زیادہ سوار نہتے تو بھی اوسنے خوب مقابلہ کیا بہت سے المانون کو مارا اوسکے بھی اکثر ہمراہی راجپوت اور رشتہ دار مارے گئے اور جان پر آبنی تو بھی راجہ نے حمیت اور بہادری سے مرنیکی ٹھان لی اوسوقت ایک سوار اوسکا دوڑا ہوا محمد قاسم کے پاس پہونچا جو رستم خان کی طرف سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिरावल और चन्दावल की हिफ़ाज़त पर रक्खा गया था और मोहम्मद क़ासिम उसी दम रवाने हो कर ऐन वक्त पर राजा के पास आ पहुंचा दुशमन उस को देख तेही भाग गये–

नज़र मोहम्मद खां का निकल जाना

नज़र मोहम्मद खां लड़ाई हार कर मर्व में गया और वहां से सफ़ा हां (ईरान) को रवाने हुआ वाद शाह ने यह सुन कर उसका उजर माज़रत (सुश्ता चारी) करके लिखा कि तुम्हारे क़बीलो को जहां कहो वहां तुम्हारे पास भिजवा देवें और यह तहरीर मीर अवदुल अज़ीज़ के हाथ भेजी जब मीर ईरान में पहुंचा तो नज़र मोहम्मद खां तो वहां से खुरासान को चल दिया था और शाह ईरा

ہراول اور چنداول کی حفاظت پر مقرر تھا محمد قاسم اوسی وقت روانہ ہوکر راجہ کے پاس جا پہونچا دشمن اوسکو دیکھتے ہی بھاگ گیا–

نذر محمد خان کا نکلجانا

نذر محمد خان بعد شکست کے مرو– مرو سے صفاہان اور صفاہان سے خراسان کو چلا گیا بادشاہ نے یہہ سُنکر اوسکو بعد عذر معذرت کے لکھا کہ تمہارے اہلِ حرم کو جہان کہو وہان تمہارے پاس بھیجدین–

میر عزیز یہہ خط لے کر اوس کی طرف روانہ ہوا وہ اوجس وقت صفاہان سے خراسان کو چل دیا تھا شاہ ایران

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न ने मीर को ठहराकर ईद के दिन (माह सुदी ११) उस से मुलाक़ात की-

बादशाह ने मीर की अरज़ी से नज़र मोहम्मद खां के रिजू न होने का हाल मालूम करके मीर को लौट आने का हुक्म लिख भेजा ॥

दरबार का हाल

आसोज बदी १ को राजा राज रूप के मनसब में ५०० सवारों का इज़ाफ़ा हुआ जिससे वह दो हज़ारी ज़ात और २०० सवार का मनसबदार हो गया-

आसोज बदी २ को राजा जसवंत सिंघ को खासा तवेले से १ घोड़ा सोने के साज का इनायत हुआ

असोज बदी ८ को बादशाहने आक़िल खां के हाथ २५ लाख रुपये बलख को फिर रवाने

نے صفاہان مین میر عزیز کو ٹھہرا کر عید الضحیٰ کے دن اوس سے ملاقات کی
بادشاہ نے میر عزیز کی عرضی سے نذر محمد خان کے ملتفت نہ ہونے کا حال معلوم کرکے میر عزیز کو واپسی کا حکم لکھ بھیجا۔

دربار کا حال

۱۵ رجب کو راجہ راجروپ کے منصب مین پانسو سوار کا اضافہ ہوا جس سے وہ دو ہزاری ذات اور دو ہزار سوار کا منصبدار ہوگیا۔
۱۶ رجب کو راجہ جسونت سنگہ کو خاصہ طویلہ سے ایک گھوڑا مع براق طلا کے عنایت ہوا۔ ۲۱ رجب کو بادشاہ نے عاقل خان کے ہمراہ پچیس لاکھ روپیہ بلخ کو پھر روانہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

किये राजा जगत सिंघ का वेटा वहादुर सिंघ भी उसके साथ जाने को तई नात हुआ-

आसोज वदी ८ को शाहज़ादा मुराद वख़्श कावुल से आया मगर वादशाहने उस को दरवार में आने से मना कर दिया-

आसोज वदी ३० को नज़रमोहम्मद खां की औरतें वेटियां वेटे और पोते जो वलख में थे उन सव को ले कर राजा विठ्ठल दास गोड़ और महेस दास राठोड़ कावुल में हाज़िर हुये क्यों कि वादशाह ने सादुल्ला खां वज़ीर से कह दिया था कि नज़र मोहम्मद खां की औरतों और लड़के वालों को राजा विठ्ठल दास महेस दास राठोड़ खलीलुल्लाह खां और लोहरास्प वगेरा के साथ हमारे पास भेज देना अव जो वे आये तो वादशाह ने उन

گئے راجہ جگت سنگھ کا بیٹا بہادر سنگھ بھی اوسکے ہمراہی مین تعینات ہوا۔

۲۲ رجب کو شاہزادہ مرادبخش کابل مین واپس پہونچا مگر بادشاہ نے اوسکو دربار مین آنے سے منع کر دیا۔

۲۸ رجب کو راجہ بیٹھل داس گوڑ اور مہیش داس راٹھور نذر محمد خان کے اون تمام بیٹون۔ پوتون۔ عورتون اور بیٹیون کو جو بلخ مین تھے لیکر کابل مین بادشاہ کے پاس حاضر آئے بادشاہ نے سعداللہ خان وزیر کو لکھدیا تھا کہ نذر محمد خان کی عورتون اور بال بچون کو راجہ بیٹھل داس مہیش داس راٹھور۔ خلیل اللہ خان اور لہراسپ وغیرہ کے ساتھ ہمارے پاس بھیجدینا۔ چنانچہ اب وہ آئے تو بادشاہ نے اون

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब के ऊपर निहायत महर वानी- और पर वरिश की-

आसोज सुदी ७ को सादुल्ला खां भी वलख से आ गया-

वाद शाहने ५ लाख रुपये के खर्च से काबुल में दौलत खां ना व नाया और पुराने महल्लों और बागों कीभी मरम्मत की-

आसोज सुदी ११ को वाद शाह ने काबुल से लाहौर की तरफ़ कूच किया और वलख़ वदख्शां का फ़तह नामा शाह ईरान के पास मय १ जड़ाऊ तल वारके भेजी और जो अमीर वलख़ के सूबे में तईनात हुवे थे उन के मनसव वढ़ाय गये जिनमें से राजा किशन सिंघ राठोड़ के पोते रूप सिंघ और राम सिंघ राठोड़ पांच पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े से २ हज़ारी ज़ात और २००० सवारों के मन सव दार हो गये-

سب کے اوپر بہت مہربانی اور نوازشش کی -

٥ شعبان کو علامی سعد اللہ خان بھی بلخ سے کابل مین آگیا

بادشاہ نے پانچ لاکھ روپیہ کے صرف سے کابل مین دولت خانہ بنایا اور قدیم عمارتون اور باغون کی بھی مرمت کرائی -

٩ شعبان کو بادشاہ نے کابل سے لاہور کی طرف مراجعت کی اور بلخ اور بدخشان کی فتح کا نامہ مع ایک قبضہ شمشیر مرصع کے شاہ ایران کے واسطے بھیجا اور جو امیر بلخ کے صوبہ مین تعینات ہوئے تھے اونکے منصبون مین اضافہ کیا گیا ازانجملہ راجہ کشن سنگہ راٹھور کے پوتے روپ سنگہ اور رام سنگہ راٹھور پانچ پانچ صدی ذات کے اضافہ سے دو ہزاری ذات اور دو ہزار سوارون کے منصب کو پہونچے -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

राजा जय राम का मनसव असल और इज़ाफ़े से डेढ हजारी ज़ात और १५०० सवारों का हो गया-

गोकल दास सीसो दिया पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े से डेढ हज़ारी ज़ात और ८०० सवारों के मनसव को पहुंचा-

भोज राज खंगार नरायण दास सीसो दिया केसरी सिंघ सहावत खानी और सारंग देव के वेटे पृथ्वी राज के मनसव भी इज़ाफ़े हुवे-

कातक सुदी १४ को पिशोर में वाद शाह ने राजा जय सिंघके वड़े वेटे राम सिंघ को खिलअत और घोड़ा सुनहरी ज़ीन का देकर वतन जाने की रुखसत दी क्यों कि राजा को दक्खन से वुलाया गया था·

कातक सुदी १० को भटनही

راجہ جی رام کا منصب اصل اور اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ذات اور پندرہ سو سواروں کا ہوگیا۔

گوکل داس سیسودیہ پانچ صدی ذات کے اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ذات اور ۸۰۰ سواروں کے منصب کو پہونچا۔

بھوج راج کھنگار نراین داس سیسودیہ کیسری سنگہ جہابت خانی اور سارنگ دیو کے بیٹے پرتھی راج کے منصب بھی بڑھائے گئے۔

۲۷ شعبان کو مقام پیشور میں بادشاہ نے راجہ جے سنگہ کے بڑے بیٹے کنور رام سنگہ کو خلعت اور اسپ معہ زین طلا عنایت کرکے وطن جانے کے واسطے مرخص کیا۔ کیونکہ راجہ جے سنگہ کے بلانے کا حکم دکہن کو گیا تھا۔

۱۰ رمضان

کو دریائے بہٹ

के ऊपर डेरे हुवे वहां राय काशी दास दीवान सूबे आगरे को वंगाले की दीवानी पर जाने का हुक्म लिखा गया-

मंगसिर वदी १० को चिनाव नदी के ऊपर मुकाम हुआ वहां जय राय का मनसव पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों का हो गया-

मंगसिर सुदी ८ को बादशाह लाहोर में दाखिल हुवे-

राजा विठ्ठल दास का मनसव इज़ाफ़ा हो कर पांच हज़ारी ज़ात और ५००० सवारों का हो गया

गिर धर दास गोड़ का मनसव असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ८०० सवारों का हो गया

उस को खिलअत भी मिला और आगरे की क़िले दारी पर बाक़ी खां की शामिलात पर भेजा गया-

کے کنارہ پر بادشاہ نے راے کاشی داس کو خدمت دیوانی صوبہ آگرہ سے بدل کر بنگالہ کی دیوانی پر مقرر کیا۔

۲۲ رمضان کو چناب ندی کے کنارہ پر راجہ جے رام کا منصب پانچ صدی ذات کے اضافہ سے دو ہزاری ذات اور ڈیڑھ ہزار سوار کا ہو گیا۔

۸ شوال کو بادشاہ لاہور مین داخل ہوئے۔

راجہ بیٹھل داس کا منصب پورا پانچ ہزاری پانچ ہزار سوار کا ہو گیا۔

گردھر داس گوڑ کو خلعت اور منصب ہزاری ذات اور آٹھ سو سوارون کا اصل و اضافہ سے عنایت ہوا اور خدمت قلعہ داری دار الخلافہ اکبرآباد کی بھی بشراکت باقی خان کے اوسکو ملی۔

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पोस वदी ६ को आगरे का अगला किले दार राठोड़ महेस दास वहां से १ करोड़ रुपयों का ख़ज़ाना जो बाद शाह ने मंगवाया था लेकर लाहोर में हाज़िर हुआ

पोस सुदी १० को शाहज़ादे मुराद का मनसब १२ हज़ारी था वह तो वहाल हो गया मगर सवारों मेंसे सिर्फ़ १००० सवार कम हुवे पहिले १०००० थे अब ९००० रहे-

उज़बकों के हमले

वज़ीर सादुल्ला खां के चले आने पर उजबकों ने जगह २ लूट मार मचादी बलख का सूबेदार बहादुर खां दो तीन दफे जा कर उनसे लड़ा १ दफ़े बहादुरखां ने कुछ आदमी गोरी का ख़ज़ाना लाने के वास्ते भेजेथे उजबकों ने उन का रास्ता रोक लिया तब बहा

۱۹ شوال کو قلعہ آگرہ کا قلعدار سابق راٹھور پرتھی راج ایک کروڑ روپیہ خزانہ عامرہ سے حسب الطلب بادشاہ کے لیکر لاہور مین حاضر ہوا۔

۱۰ ذیقعدہ کو شاہزادہ مراد کا منصب بارہ ہزاری ذات ایکہزار سوار کم ہوکر بحال ہوگیا پہلے سوار دس ہزار تھے اب ۹ ہزار رہے۔

اوزبکون کے حملے

سعد اللہ خان وزیر کے چلے آنے پر اوزبکون نے جگہہ جگہہ لوٹ مار مچادی بلخ کا صوبہ بہادر خان دو تین دفعہ جاکر اون سے لڑا ایکدفعہ بہادر خان نے کچھہ آدمی غوری کا خزانہ لانے کیلئے بہیجے تھے اوزبکون نے اونکا راستہ روک لیا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुर खां ने राजा जय राम गोपाल सिंघ राय तिलोक चंद और जग राम वग़ैरा राज पूत सरदारों और कुछ मुग़लों को भेजा इन्होंने उजबकों को मार भगाया फिर अलमानों ने जमा होकर शेर गान के क़िले दार ज़ब्बार कुली को घेर लिया राजा देवी सिंघ और तुर्क ताज़र खां ने जो बग़ैर हुक्म रुस्तम खां के इन्द ख़ुद से बलख़ को रवाने हुवे थे किले दार को मदद पहुंचा कर अलमानों को भगा दिया -

दरबार का हाल

माह सुदी १५ को राजा जगत सिंघ का वकील बल राम नई फतहों की मुबारिक बाद की अरज़ी और पेश कश लेकर हाज़िर हुआ बाद शाह ने राजा की पेश कश में से घोड़ा सोने के साज

بہادر خان نے راجہ جے رام گوپال سنگہ راے تلوک چند اور جگرام وغیرہ راجپوتون کو معہ کچھ مغلون کے بھیجا جنہون نے اوزبکون کو مار کر بھگا دیا پھر المانون نے جمع ہو کر جبار قلی قلعہ دار شیرغان کو گھیر لیا راجہ دیبی سنگہ وترکتاز خان نے جو بلا حکم رستم خان اندخود سے بلخ کو روانہ ہوئے تھے قلعہ دار کو مدد پہونچا کر المانون کو بہگا دیا۔

دربار کا حال

۱۴ ذی الحجہ کو رانا جگت سنگہ کا وکیل بلرام جو فتوحات جدیدہ کی مبارکباد کے واسطے مع عرضے رانا کے آیا تھا دربار مین حاضر ہوا رانا نے جو گہوڑا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नज़र मोहम्मद खांके बेटे ख़ुसरो को इनायत किया और कुछ दिनों पीछे बलराम को घोड़ा और ख़िलअत दे कर रुखसत दी और उस के हाथ राना और राणा के बड़े बेटे राज कुंवर के वास्ते क़ीमती ख़िलअत और सोने की ज़ीन के घोड़े भेजे- फागण वदी १० को शाह ज़ादा औरंग ज़ेब गुजरात से आया- फागण वदी ११ को बलख और बदख़शां की वलायत शाह ज़ादे औरंग ज़ेब को इनायत हुई और उस के वास्ते बलख में ५० लाख रुपये भेजने ठहरे थे इस लिये पृथ्वी राज को ख़िलअत और चांदी की ज़ीन का घोड़ा इनायत करके हुक्म दिया कि उस ख़ज़ाने को अपनी हिफ़ाज़त में लेकर शाह ज़ादे से पहिले रवाने हो जावे-	پیشکش میں بھیجا تھا بادشاہ نے نذر محمد خان کے بیٹے خسرو کو عنایت کیا اور بلرام کو بعد چندے گھوڑا اور خلعت دیکر رخصت کیا اور اوسکے ہاتھ رانا اور اوسکے بیٹے راج کنور کے واسطے خلعت فاخرہ و اسپ مع زین طلا کے بھیجا- ۲۳ ذی الحجہ کو شاہزادہ اورنگ زیب دکن سے آیا- ۲۴ ذی الحجہ کو بلخ اور بدخشان کی ولایت اوسکو عنایت ہوئی اور اوسکے واسطے بلخ میں پچاس لاکھ روپیہ بھیجنے ٹھیرے تھے اسلیے پرتھی راج کو خلعت اور چاندی کے زین کا گھوڑا عنایت ہو کر حکم ہوا کہ اوس خزانہ کو اپنی حفاظت میں لیکر شاہزادہ سے پہلے روانہ ہوجاوے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस वक्त बुखारा में बड़ी मरी पड़रही थी और लाहोर में काल था-

बरस २१वां

फागण सुदी २ सं. १७०३ से माह वदी दूज सं. १७०४ तक

फागण सुदी ३ को बादशाहने ३००००) रुपये ग़रीबों को बांटने केवास्ते दिये-

इसी दिन सुजान सिंघ सीसोदिये का मनसब पांच सदी ज़ात के इज़ाफ़े से डेढ हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों का हो गया-

चेत वदी १ को बादशाहने नज़र मोहम्मद खांके बेटे अबदुल अज़ीज़ खां के बुखारा से बलख पर आने की खबर सुन कर शाहज़ादे औरंग ज़ेब को विदा किया और चलते वक्त उस को बहुत सा ज़ेवर और जवाहर इनायत करके ५ लाख रुपये नक़द भी इनाम में दिया और फ़रमाया

اسوقت بخارا مین بڑی وباتھی اور لاہور مین قحط تہا

برس اکیسوان
سنہ ۱۰۵۷

۲۷ جنوری سنہ ۱۶۴۷ سے ۱۶ جنوری سنہ ۱۶۴۸ تک

غرہ محرم کو بادشاہ نے ۳۰ ہزار روپیہ واسطے امداد قحط زدگان کے تقسیم کئے۔

اسیدن سبحان سنگہ سیسودیہ کا منصب پانچصدی ذات کے اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ذات اور پانسو سوارون کا ہوگیا۔

۱۵ محرم کو بادشاہ نے عبد العزیز خان ولد نذر محمد خان کے بخارا سے بلخ پر آنیکی خبر سنکر بادشاہزادہ محمد اورنگزیب کو پانچ لاکہ روپیہ انعام

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि पिशोर में ठहर कर बहार के शुरू से अली मरदान खां राजा राय सिंघ राव शत्रु साल नज़र बहादुर खेशगी राव रूप सिंघ चन्द्रावत राजा अमर सिंघ राजावत वग़ैरा के साथ जो बलख़ और बदख़्शां को छोड़ कर पिशोर में आ गये थे और जिन के वास्ते अटक से नहीं उतरने देने का हुक्म था बलख़ को रवाने होवे-

रावत दयाल दास झाला भी शाहज़ादे के साथ तईनात हुआ और रुख़सत के वक़्त उस को भी घोड़ा इनायत हुआ-

चैत बदी २३ को बादशाह ने चंबे के ज़मीदार पृथ्वी चन्द को ख़िलअत और चांदी की ज़ीन का घोड़ा देकर घर जाने की रुख़सत दी-

शाहज़ादे दारा शिकोह के दीवान राय बिहारी मल को हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ार सवार का मनसब इनायत हुआ-

اور بہت ساز یور و جواہر عطا کرکے بلخ کی طرف روانہ کیا اور حکم دیا کہ پیشور مین ٹھہر کر اوائل بہار مین معہ علیمردان خان امیرالامرا اور راجہ رائے سنگہ و راسترو سال و نظر بہادر خویشگی و راو روپ سنگہ چندراوت و راجہ امر سنگہ راجاوت وغیرہ کے کہ جو بلخ و بدخشان سے بلا حکم پیشور مین آگئے تھے اور جنکے واسطے اٹک سے نہین اوترنے دینے کا حکم تھا بلخ کو روانہ ہوجاوے

راوت دیالداس جہالا بھی بادشاہ کے ساتھ تعینات ہوا اور وقت رخصت بادشاہ نے اوسکو بھی گھوڑا عنایت کیا

٢٧ محرم کو راجہ پرتھی چند چنبہ والہ کو خلعت اور اسپ معہ زین نقرہ کے عنایت ہوکر گھر جانیکی رخصت ہوئی - رائے بہاری مل دیوان شاہزادہ دارا شکوہ کو ہزاری ذات اور ڈیڑھ سو سوار کا منصب مرحمت ہوا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महेस दास राठोड का मरना

चेत सुदी १० को राजा सूरज सिंघ के भाई दलपत के बेटे महेसदास का इन्तक़ाल हो गया बादशाह नामे में लिखा है कि यह कामदेखे हुवे ओर लडाईयां किये हुवे अच्छे बंदा आदमियों में से था जब दोलत खाने खास में हाजिर होता था तो बादशाह के हुक्म से तख्त के पीछे उस संदली (चोकी) के पास खड़ा होता था कि जिस पर बादशाह का खासा तरकश ओर तलवार रखी रहती है ओर जो तख़्त से १० गज के फ़ासिले पर रखी जाती है ओर सवारी में २० गज के फ़ासिले से बादशाह के पीछे रहता था बादशाह ने फ़रमाया था कि यह किसी लड़ाई में काम आना चाहिये था कि बहुत आदमी उसके साथ मारे जाते ओर उस के वारिसों को खिलअ़त दिये बड़ा बेटा रतन जालोर में था उस का मनसब बढ़ा कर डेढ़ हज़ारी

انتقال مہیس داس راٹھوڑ

۹ صفر کو مہیس داس راٹھوڑ کا انتقال ہو گیا یہہ راجہ سورج سنگہ کے بیٹے دلیپ راٹھوڑ کا بیٹا بندگان کار دیدہ اور پیکار ورزیدہ سے تہا جب دولتخانۂ خاص مین حاضر ہوتا تہا تو بموجب حکم بادشاہ کے تخت معلی کے پیچھے اوس صندلی کے پاس کہ جس پہ شمشیر و ترکش خاصہ رکھا رہتا تہا کہڑا ہوا کرتا تھا یہہ صندلی یعنی چوکی ہمیشہ بادشاہ کے تخت سے دس گز کے فاصلہ پر رکھی جاتی تھی اور بوقت سواری بادشاہ کی بیس گز کے فاصلہ سے بادشاہ کے پیچھے پیچھے چلتا تہا بادشاہ نے فرمایا کہ چاہیے تہا کہ یہہ کسی لڑائی مین کام آتا کہ اوسکے ساتھہ بہت سے آدمی مارے جاتے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

डेढ़ हज़ार सवार का कर दिया कि जिस में उस के बाप की जमैयत बिखर ने न पावे-

बाद शाह का काबुल जाना

बैसाख बदी ४ को बाद शाह लाहोर से काबुल को रवाने हुवे क्यों कि नज़र मोहम्मद खां के बेटे अब दुल अज़ीज़ खां का बुख़ारा से बलख पर आने की ख़बर मशहूर हुई थी-

जेठ बदी ३ को बाद शाह ने सेवा राम को ख़िलअ़त दे कर अली मस जिद से किले काबुल की हिफ़ाज़त पर रवाने किया-

اوسکے پس ماندون کو غلعت ملے رتن اوسکا بڑا بیٹا جالور مین تہا بادشاہ نے اوسکو اصل و اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ذات اور پانسو سوارں کا منصب عطا فرمایا تاکہ اسکے باپ کی جمعیت متفرق نہو پہلے رتن کا منصب چار صدی ذات اور دو سو سوار کا تہا-

بادشاہ کا کابل جانا

۱۸ صفر کو بادشاہ لاہور سے روانہ کابل ہوئے کیونکہ بخارا سے عبدالعزیز خان کے آنے کی خبر گرما گرم سنی گئی تھی-

۱۶ ماہ ربیع الاول کو بادشاہ نے سیوا رام گوڑ کو حفاظت قلعہ کابل کی عنایت فرماکر مقام علی مسجد سے روانہ کابل کیا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

इसी दिन राजा विट्ठल दास को ख़्वासा तवेले से घोड़ा सुनेहरी ज़ीन का इनायत हुआ-

जेठ वदी ८ को वादशाहने काबुल के पास बाग़ सफ़ा में पहुंच कर राव रतन हाड़ा के वेटे माधो सिंघ, रूप सिंघ राठोड़ और राम सिंघ राठोड़ को जो वलख़ में थे रूपहरी जीनके घोड़े भेजे-

वलख़ में लड़ाई

फागण सुदी १४ को पहररात रहे वहुत से अलमान एकाएकी क़लते के क़िले पर चढ आये उग्र सेन कछवाहा नरूकाने जो कलते और गुरगान का थाने दार था वलख़ में ख़वर भेजी और वादशाही मन सवदारों व वंदूक चियों के साथ जो उस के पास मदद के वास्ते त

اسیدن راجہ بٹھل داس کو خاصہ طویلہ سے ایک گھوڑا معہ زین طلا کے مرحمت ہوا

۲۱ ربیع الاول کو بادشاہ باغ صفا مین جو کابل کے متصل ہے پہونچے راو رتن ہاڈہ کے بیٹے مادہو سنگہ اور روپ سنگہ راٹہور و رام سنگہ راٹہور کو جو بلخ مین تہے نقرہ زین کے گہوڑے بہیجے گئے۔

بلخ مین لڑائی

۱۲ محرم کو پہر رات گئے بہت سے المان ناگہان تہانہ کلتہ کے اوپر آے اوگرسین کچھواہہ نروکا نے جو کلتہ اور جرجان کا تہانہ دار تہا بلخ مین خبر بہیجی اور آپ پائے مردی سے معہ بعضے منصب دارون اور بادشاہی تفنگچیون کے جو مدد کے واسطے

ईनात थे बाहर निकल कर उन को भगा दिया बहादुर खाने इस माजरा की खबर पाकर राजा जय राम रूप सिंघ, राठोड़, गोकुल दास, सीसो दिया और दूसरे बाद शाही बंदों को अपने चचा नेक नाम और अपने २००० सवारों के साथ अलमानों के ऊपर भेजा जो कलता पहुंच कर मोमन आबाद को रवाना हुवे कि जिधर को वे लोग गये थे और अब दल का आना सुन कर जेह्न नदी के पार उतर गये तब येभी बलख को लोट आये

चैत बदी २२ को बहुत से अलमान जेह्न के घाट "नीलगूं" से उतर कर "शेर गांन" के पास से गुजरते हुवे शेरम और सरपुल की तरफ गये बहादुर खांने खबर पाकर राजा देवी सिंघ, राजा जयराम, रूप सिंघ राठोड़, राम सिंघ राठोड़, मोतमद खां मीर आतिश, गोकुल दास सीसो दिया, अलावललरीन, गोपाल सिंघ, महेस दास राठोड़,

اوسکے ہمراہ تھے باہر نکلا اور المانون کو قلعہ کلتہ کے پاس سے بھگا دیا بہادر خان نے اس ماجرا کی خبر سنکر راجہ جے رام روپ سنگہ راٹھور گوکل داس سیسودیہ اور دوسرے بادشاہی بندونکو اپنے چچا نیکنام اور اپنے دو ہزار سوارون کے ساتھ المانون کے دفعیہ کو روانہ کیا یہہ لوگ کلتہ پہونچکر مومن آباد کو گئے کیونکہ المان اوسطرف کو چل دیے تھے اور اب انکا آنا سنکر جیحون سے اوتر گئے اسلئے یہہ بھی بلخ کو لوٹ آئے -

۲۵ محرم کو بہت سے المان دریائے جیحون کے گذر نیلگون سے جو کلیف سے پائین تر ہے گذر کر شیر غان کے نزدیک ہوتے ہوئے شیرم اور سرپل کی طرف گئے بہادر خان نے خبر پاتے ہی راجہ دیوی سنگہ راجہ جے رام روپ سنگہ راٹھور معتمد خان میر آتش گوکل داس سیسودیہ علاولتین گوپال سنگہ مہیش داس راٹھور

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जग राम कछवाहा और अपने चचा नेक नाम को अपने २००० सवारों के साथ उनके मुक़ाबले पर भेजा यह फ़ौज पिछले दिन को औक़चे में पहुंचे थी कि अलमानों के सेरम और सरपुल से बहुत से घोड़े ऊंट गाय और बकरी लूटकर जेहूं की तरफ़ रवाना होने की ख़बर सुन कर चल खड़े हुवे २ पहर रात और ढाई पहर दिन बराबर चल कर उनके ऊपर जा पहुंचे और बहुत सों को मार कर गाय और बकरी वग़ैरा छीन लाये रात को "जेहूं" के किनारे पर ठहरे थे कि १ घड़ी रात गये पांच छः हज़ार सवार अलमानोंके फिर नदी से उतर आये और लड़ने लगे मगर बहुत से मारे गये बाद शाही बंदे फ़तह पा कर लौट आये-

جگ رام کچھواہہ اور اپنے چچا نیکنام کو معہ اپنے دو ہزار سواروں سے اونکی تنبیہ و تادیب کے لیے بھیجا شام قریب بیہ لشکر اوکچہ مین پہونچا المانان مذکور جو اشام نواحی سرپل و سیرم کو لوٹ چکے تھے بہت سے گہوڑے اونٹ بیل اور بکریاں لیکر جیہون کی طرف چل دیئے بادشاہی آدمی راویوں سے یہہ حال سنکر اوسیوقت اونکے تعاقب کو چلے اور دو پہر رات سے ڈہائی پہر دن تک برابر چل کر اونکے سر پر جا پہونچے اور بہت سے آدمیوں کو مار کر مویشی چہڑا لائے رات کو وہین رہے جب ایک گہڑی رات گئی تو پانچ چھہ ہزار سوار دوسرے دریا سے اوتر آئے اور لڑنے لگے مگر لڑائی مین بہت سے مارے گئے بادشاہی بندے بعد فتح واپس آئے ٭

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बदख़शां में लड़ाई

वैसाख सुदी ९ को क़ुली
च ख़ां को ख़बर पहुंची कि कई
हज़ार अलमान जेहूं नदी से उ
तर कर शहर तालक़ां के ऊपर
आते हैं उस वक़्त राजा राजरूप
मिल ने आया हुआ था वहादुर
ख़ां ने उस की और दूसरे सरदा
रों की सलाह से शहर में ही मोर
चा वंदी करके लड़ने का इरादा
किया क्यों कि दुशमनों का जि
यदा ज़ोर सुना गया था-

जेठ वदी ६ को १०-१२ ह
ज़ार तुरकि थाई और क़तग़ान
वग़ेरा १०-१२ सर दारों की अ
फ़सरी में आये राजा राज रूप
तो क़िले के वाहर कि जहां उ
तरा था अपनी फ़ौज सजा कर
खड़ा हो गया और दूसरे अफ़
सर भी वाहर आये इधर तो
लड़ाई शुरू हुई और उधर

بدخشان مین لڑائی

۷ ماہ ربیع الاول کو قلیچ خان کو خبر
پہونچی کہ کئی ہزار المان دریائے جیحون
سے روانہ ہوکر شہر طالقان کے
اوپر آتے ہین اوسوقت راجہ
راجروپ قلیچ خان سے ملنے کو آیا ہوا
تھا بہادر خان نے راجہ اور دوسرے
سرداروں سے صلاح کرکے بلحاظ
کثرت غنیم کے شہر مین ہی مورچہ
بندی کرکے لڑنے کا ارادہ کیا۔

۱۹ کو دس بارہ ہزار ترکیائی
اور قطعان وغیرہ دس بارہ
سرداروں کی افسری مین آئے
بادشاہی افسر اونکے مقابلہ کو
باہر نکلے راجہ راجروپ قلعہ کے باہر
کہ جہان اوسکا ڈیرہ تھا اپنی فوج
کو سجے ہوئے کھڑا تھا
لڑائی ایک طرف سے
شروع ہوئی اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुछ लोग बादशाही घोड़ों को लेजा
ने लगे अहदाद महमंदने उनके ऊ
पर हमला किया उस को दुशमनों
ने घेर लिया राजा यह देख कर
फ़ौरन दौड़ा और नूरूल हसन भी
राजा की मदद को गया कुलीचखां
से कहलाया कि इस वक्त शहर
से दूर जाना मसलिहत नहीं है
लेकिन उन्होंने बहादुरी के जोश
में कुछ ख़्याल न किया राजा ने
अहदाद को तो बचा लिया मगर
उसके ऊपर चारों तरफ से बहुत
सारे अलमान आ गिरे उस वक्त
बड़ी भारी लड़ाई हुई जिसमें रा
जा का हिरोल "ओघ" जो राजा की
क़ौम से था काम आया उसके
साथ और भी बहुत से आदमी
राजा के मारे गये राजा के भी ३
ज़ख़म लगे और उस का घोड़ा ती
र से ज़ख़मी हो कर गिर पड़ा नू
रूल हसन और अहदाद महमंद

کچھہ لوگ بادشاہی گھوڑون کو
لیجانے لگے احداد مہمند نے
اونکے اوپر حملہ کیا راجہ اوسکو
بہت سے دشمنون مین گھرا
ہوا دیکھہ کر بلاتوقف معہ اپنے
آدمیون کے اوسکی حمایت
وحفاظت کے لئے دوڑا اور نورالحسن
راجہ کی مدد کو گیا قلیچ خان نے ان
لوگون کی بہادری اور جسارت پر
اگاہ ہوکر کہدیا کہ اسوقت شہر
سے دور جانا مصلحت نہین ہے
لیکن اونہون نے کچھہ خیال نہ کیا
راجہ نے احداد کو بچایا مگر اوسکے
اوپر چارون طرف سے بہت سے المان
آگرے اوسوقت بڑی لڑائی ہوئی
راجہ کا ہراول اوبا نامی جو راجہ کا
ہمقوم آدمی تہا معہ اکثر مردمان راجہ
کے جوہر مردانگی دکہلاکر کام آیا راجہ
نے بہی تین زخم کہائے اور اوسکا گہوڑا
پیکان کے زخم سے میدان مین گرا
اور نورالحسن و احداد مہمند

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भी ज़रब भी हुवे राजा लड़ ना हुआ
शहर की तरफ़ लौटा आगे १ बाग़
की गली आगई राजा के कोतवा
ल ने दी वार पर चढ़ कर मारे ती
रों और बंदूकों के राजा और नू
रुल हसन का दुश्मनों से पीछा
छुड़ाया फिर उजबकों ने कई दि
नों तक शहर के पास लड़ाई जा
री रखी और नहर तोड़ कर पा
नी बंद कर दिया इधर बादशा
ही बंदों ने भी उनके मुक़ाबिले
में कमी न की आख़िर ग़नीम जे
ठ बदी ८ को फ़तह से ना उमेद
हो कर पीछा चला गया तब राजा
राज रूप और नूरुल हसन ने कु
लीच ख़ां से कहा कि तुमभी कुंद
ज़में चले जाओ कि "तालक़ान"
में पानी का भरोसा नहीं है मग
र कुलीच ख़ां ने तो फ़र ख़ार
को जाना पसंद किया जिस
से राजा को ही कुंदज़ के बचाने

وغیرہ بھی زخمی ہوئے تب ناچار
بادشاہی امرا لڑتے بھڑتے شہر کو لوٹے
آگے باغ کا کوچہ آگیا راجہ کے کوتوال نے
دیوار پر چڑھکر تیراندازی اور بندوقون
کی گولیون سے دشمنون کو راجہ اور
نورالحسن کے گرد سے دور کیا اور
بعد اسکے ازبکون نے شہر کے گرد
چند روز تک لڑائی کی اور نہر کو توڑ
کر پانی بند کر دیا مگر بادشاہی آدمیون
نے لڑائی مین کمی نہ کی آخر ش
غنیم ۲۲ ربیع الاول کو فتح سے
ناامید ہو کر واپس چلا گیا
تب راجہ راجروپ اور نورالحسن
نے قلیچ خان سے کہا کہ تم بھی
قندز مین چلے جاؤ کہ طالقان
مین پانی کا بھروسا نہین
ہے مگر قلیچ خان نے فرخار
جانا پسند کیا اور راجہ
اس اندیشہ سے کہ مبادا
دشمن قندز

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

के वास्ते उस तरफ़ जाना पड़ा मगर उस के साथी बहुत से तो मारे गये थे और जो रहे थे वे थोड़े से ही थे इस लिये नूरुल हसन उस के पहुंचाने को आया और कुलीच खां फ़रखार को गया और वहां से अशकमश जा कर किले की मरम्मत की और वहीं रहने लगा–

वैसाख सुदी ८ को पांच छः हज़ार अलमान अली मगूल के चशमे पर अबदुल अज़ीज़ खां के कहने से गये बहादुर खां ने असालत खां को राजा पहाड़ सिंघ और राजा जय राम के साथ भेजा उन्हों ने जाकर उनसे लूट का माल छीन लिया और बहुत से आदमियों को मार डाला–

वैसाख सुदी १० को १५००० सवार अबदुल अज़ीज़ खां के भेजे हुवे "खाना बाद" के थाने पर आये बहादुर खां असालत खां को ब–

کے محافظون کو ستاوین اوسطرف روانہ ہوا چونکہ اوسکے بہت سی ہمراہی کام آچکے تھے اور تہوڑے سے باقی رہے تھے اس لئے نورالحسن اوسکے پہونچانے کو ساتہہ ہوا قلیج خان فرخار کو گیا اور وہان سے اشکمش جاکر بعد مرمت قلعہ مقیم ہوا –

۲۶ ربیع الاول کو پانچ چہہ ہزار المان چشمہ علی مغول پر عبدالعزیز خان کے اشارہ سے گئے بہادر خان نے اصالت خان کو معہ راجہ پہار سنگہ و راجہ جے رام کے بہیجا اوہنون نے جاکر اونسے مال غنیمت چہین لیا اور بہت سے آدمیون کو مار ڈالا

۲۸ ربیع الاول کو پندرہ ہزار سوار عبدالعزیز خان کی ہدایت سے تہانہ خان آباد پر آئے بہادر خان اصالت خان کو

लख में छोड़ कर ख़ुद उन के मु
क़ाबिले को रवाना हुआ यह सुन
कर वे थाने से हट गये बहादुर खां
ने इमाम बकरी के पुल पर पहुंच
कर कुछ आदमी ग़नीम की ख़बर
लाने को भेजे इतने में सुना कि असा
लत खां जेठ वदी ९ को रवाने हो
गया है तो बहादुर ख़ां ने राम सिं
घ राठोड़ और अजब सिंघ क
छवाहे को भेज कर कहा कि मोह
कम सिंघ सीसो दिया और पहल
वान दर वेश से मिल कर क़िले
की हिफ़ाज़त करें अलमान जेहूं
नदी से उतर गये और अब दुल
अज़ीज़ खां करषी से इस तरफ़
वढा और "बेग ओली" उसके आ
गे आगे चला आता था बहादुर
खां यह सुन कर लड़ाई की तै
यारी के वास्ते बलख को लौट
आया –

नज़र मोहम्मद खां मेर

بلخ مین چہوڑکر اونکے مقابلہ
کو روانہ ہوا یہہ سُنکر وہ تہانہ
مذکور سے ہٹ گئے بہادر خان
نے پل امام بکری پر پہونچکر غنیم
کی خبر لانے کو آدمی بہیجے اتنے
ہین سُنا کہ اصالت خان ۲۲
ربیع الاول کو روانہ ہوگیا
پس رام سنگہ راٹہوڑ
اور عجب سنگہ سیسودیہ کو
بہیجا تاکہ باتفاق محکم سنگہ
سیسودیہ و پہلوان درویش
کے قلعہ کی محافظت کرین
المان جیحون سے اوتر
گئے اور عبدالعزیز خان قرشی سے
اس طرف کو روانہ ہوا
بیگ اوغلی اوسکی طرف سے
آگے آگے چلا آتا تہا
بہادر خان نے یہہ سنکر
واسطے تیاری جنگ کے
بلخ کو واپس چلا آیا۔
نذر محمد خان نے شیرخان

गान से मर्व और मर्व से जंगल-
के रस्ते मश हद हो कर सफ़ा हां ग
या शाह ईरान ने पेश वाई कर
के घोड़े पर मुला क़ात की शहर
के दर वाजे से १ कोस तक रंगीन
और रेशमीन कपड़े विछे हुवे थे
शाहने खांन की वड़ी खातिर की
दोनों १ गद्दी पर वैठे खान १५
दिन वहां रहा और फिर किसी-
कदर फ़ौज शाह की कि जिसको
पोशीदा तौर पर हुक्म हिरात से
आगे वढने का नहीं था लेकर म
शहद में आया और वहां से फ़ौ
ज को हिरात में जमा रहने का क
ह कर मर्व को गया और मर्व से
चेचक तू पहुंच कर अपने वेटेक़
तलक सुल तान को उज्जव कों के
पास भेजा और ४००० सवार मे
मने के फ़तह करने को भेजे फिर
खुद शीदृस किले के ऊपर आया
वाद शाही किले दार शाद खां

شبرغان سے مرو اور مرو سے
براہ جنگل مشہد ہو کر صفاہان
میں گیا وہاں شاہ ایران نے
گھوڑے پر ملاقات کی شہر کے دروازہ
سے ایک فرسخ تک رنگین
اور ریشمین کپڑے بطور
پا انداز کے بچھے ہوئے تھے
شاہ نے خان کی بڑی خاطر
کی اور اپنے برابر مسند پر
بٹھایا نذر محمد خان
پندرہ دن تک وہاں رہا
پھر کسی قدر فوج شاہ کے
ہمراہ لے کر کہ جسکو در پردہ
ہرات سے آگے بڑھنے کا
حکم نہ تھا مشہد آیا اور وہاں فوج
جمع ہونے کا حکم دیکر مرو اور سرد
سے بیچکتو گیا وہاں سے اپنے بیٹے قتلق
سلطان کو بھیجکر اوزبکوں کو بلایا
چار ہزار سوار میمنہ فتح کرنے کو
بھیجے پیچھے سے خود بھی آگیا
بادشاہی قلعہدار شاد خان

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने ४ महीने तक खूब मुकाबिला किया एक दो वार बाहर निकल कर भी लड़ा जिसमें बुंदेला पेदलों ने बहुत बहादुरी की-

वेसाख सुदी १० को खान ने सुरंगसेभी कुछ दीवार क़िले की उड़ाई मगर लड़ाई हार कर पीछा लौट गया उस वक़्त किसी ने उस से कह दिया कि बहादुर खां बलख में नहीं है इससे उस ने "कतलक सुलतान को बलख लेने के वास्ते भेजा मगर बुखारा के लोग जो अबदुल अज़ीज़ खां से नाराज़ होकर चले आये थे उसको बहका कर बहुत से उज़ब कों समेत उस फौज में लगये जो अबदुल अज़ीज़ खां की तरफ़ से बलख के ऊपर हमला करने वाली थी

शाहज़ादा औरंगज़ेब का

نے چار مہینے تک اوسکا خوب مقابلہ کیا دو ایک بار باہر نکل کر حملہ بھی کیا جس مین پیادگان بندیلہ نے خوب بہادری دکھلائی ۸ ربیع الاول کو خان نے سرنگ سے کچھ دیوار بھی قلعہ کی اوڑائی تاہم اوسکو شکست کھا کر ناکام واپس جانا پڑا اوس وقت کسی نے کہا کہ بہادر خان بلخ مین نہین ہے خان نے اپنے بیٹے قتلق سلطان کو بلخ فتح کرنے کے واسطے بہیجا مگر بخارا کے لوگ جو عبدالعزیز خان سے ناراض ہوکر چلے آئے تھے قتلق سلطان کو بہکا کر معہ بہت سے اوزبکون کے اوس فوج مین جا ملے جو عبدالعزیز خان کے حکم سے بلخ کے اوپر حملہ کرنے والی تھی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बलख जाना

वेसाख वदी ८ को पिशोर से कूच करके वेसाख सुदी १० को काबुल पहुंचा और वेसाख सुदी १४ को वहां से वलख को रवाना हुआ -

कज के घाटे में खलील वेग गिरदावर से और उजबकों से लड़ाई हुई वादशाह जादे ने महाराजा (भीम) के वेटे राजा राय सिंघ, राव शत्रु साल, नज़र वहादुर, राव रूप सिंघ चन्द्रावत, राजा अमर सिंघ कछवाहा, वल राम हाड़ा, और इन्द्र साल, को हिरावल की अनी में से उजवकों के ऊपर भेजा इन के पहुंचते ही उजवक भाग गये -

आसाढ वदी १२ को फिर घाटे कज़ में लड़ाई हुई इस दिन भी राजा राय सिंघ और शत्रु सा

شاہزادہ اورنگ زیب کا بلخ جانا

۲۳ صفر کو شاہزادہ اورنگ زیب پیشور سے کوچ کرکے ۸ ربیع الاول کو کابل پہونچا اور ۱۲ کو وہاں سے روانہ بلخ ہوا درہ گز مین خلیل بیگ گرداور سے اور اوزبکون سے لڑائی ہوئی بادشاہزادہ نے راجہ رائے سنگہ ولد مہاراجہ بھیم وراوسترو سال ونظر بہادر خویشگی راو روپ سنگہ چندراوت وراجہ امر سنگہ کچھواہہ و بلرام ہاڈہ واندر سال صف ہراول مین سے بہیجا اوزبک اونکے پہونچتے ہی بہاگ گئے ۔

۲۵ ربیع الثانی کو پہر گہاٹہ گز مین لڑائی ہوئی اسدن بہی راجہ رائے سنگہ اور سترو سال

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लहाड़ा हिरावल थे उज़बक फिर हार कर भाग निकले-

जेठ सुदी १ को बादशाह भी काबुल में दाखिल हो गये-

दर बार का हाल

जेठ सुदी २ को राजा जगमन को घोड़ा इनायत हुआ-

जेठ सुदी ६ को तुलादान के दरबार में विठ्ठल दास के बेटे अरजुन गोड़ का मनसब असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का हो गया-

ब्यूतात के दीवान राय मुकंद दास का भी इज़ाफ़ा हुआ-

राय मनोहर के पोते पेमचंद के मनसब में भी तरक्की हुई-

बैसाख बदी १० को शाहज़ादा शुजअ बंगाले से काबुल में हाज़िर आया और उस की अरज़ से शाहज़ादे मुराद बख़्श को भी दर

ہاڈہ ہراول تھے اوزبک شکست فاش کہاکر فرار ہوئے -

دربار کا حال

سلخ ربیع الاول کو بادشاہ کابل مین پہونچے

غرہ ربیع الثانی کو راجہ جگمن کو گہوڑا عنایت ہوا -

۵ ربیع الثانی کو جشن وزن قمری مین ارجن ولد بیٹھل داس گوڑ اصل و اضافہ سے ہزاری ذات اور سات سو سوارون کے منصب کو پہونچا -

بیوتات کے دیوان راے مکند داس کا بہی اضافہ ہوا

راے منوہر کے پوتے بہیم چند کے منصب مین ترقی ہوئی -

۲۴ ربیع الثانی کو شاہزادہ شجاع بنگالہ سے کابل مین حاضر آیا اور اوسکی عرض سے شاہزادہ مراد بخش کو بہی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बार में हाज़िर होने की इजाज़त हुई-	دربار مین حاضر ہونے اور ملازمت حاصل کرنے کی اجازت ملی
इसी दिन राजा जय सिंघ भी जो दखन से बुलाया गया था २००० सवारों से हाज़िर आया वह १ किरोड़ २० लाख रुपये और ३ लाख मोहरें आगरे के खज़ाने से लाया था सो लाहोर में बमूजब हुक्म के जाफ़र खां को सोंप आया था-	اسیدن راجہ جی سنگہ بھی جودکن سے بلایا گیا تہا معہ دوہزار سواران کے حاضر دربار ہوا وہ ایک کرور ۲۰ لاکہہ روپیہ اور تین لاکہہ مہرین حسب الحکم بادشاہ کے خزانہ عامرہ اکبرآباد سے لایا تہا سو لاہور مین جعفرخان کو سونپ آیا تھا
सादुल्ला खां वज़ीर का मनसब सात हज़ारी ७००० सवारों का और इसलाम खां का ७ हज़ारी ५००० सवारों का हो गया-	سعداللہ خان وزیر کا منصب سات ہزاری ذات سات ہزار سوار کا اور اسلام خان صوبہ دار دکن کا سات ہزاری پانچہزار سوار کا ہوگیا
असाद सुदी १२ को बादशाह ने राजा जय सिंघ को खिलअत खासा जड़ाऊ जमधर फूल कटारे समेत इनायत करके १००० सवार उसके सवारों में से दुअस्पा और सिह अस्पा कर दिये जिस से उस का मनसब पांच हज़ारी ज़ात और ५००० सवार का हो गया जि	۱۲ جمادی الاول کو بادشاہ نے راجہ جے سنگہ کو خلعت خاصہ جمدہر مرصع معہ پہول کٹارہ کے عنایت کرکے ایکہزار سوار اوسکے منصب سے دواسپہ اور سہ اسپہ کردیئے جس سے اب اوسکا منصب پانچہزاری ذات اور پانچہزار سوار کا ہوگیا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समें २००० सवार दुअस्पा और सिहअस्पा थे और १ घोड़ा खासा तवेले से सोने के साज़ का और २ लाख रुपये खर्चे के वास्ते देकर बलख़ जाने की रुख़सत दी और उस के हाथ २० लाख रुपये शाहज़ादे औरंग जेब के पास भेजे-

महेस दास राठौड़ का बेटा रतन जालोर से पिछले महीनेमें हाजिर हो गया था उस को खिलअत और घोड़ा इनायत हुआ-

हमीर सिंघ सीसो दिया व ल्लू चोहान महेस दास के भाई जसवंत और दूसरे कई राजपूत सर दारों को भी घोड़े मिले और ये सब राजा जय सिंघ के साथ भेजे गये-

बलख़ की मोहिम

असाढ सुदी १ को शाहज़ादा औरंग ज़ेब बलख़ पहुंचा वहा

جنمیں دو ہزار سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ تھے اور ایک گہوڑہ خاصہ طویلہ سے مع ساز طلاکے اور دو لاکھہ روپیہ خرچ کے واسطے دیکر بلخ جانیکی رخصت دی اور ۲۰ لاکھہ روپیہ اوسکے ساتھہ اورنگ زیبکے پاس بہیجے -

مہیس داس راٹہوڑ کے بیٹے رتن کو جو جالور سے پچہلے مہینے مین حاضر ہو گیا تھا خلعت اور گہوڑا عنایت ہوا

ہمیر سنگہ سیسودیہ بلّو چوہان مہیس داس کے بہائی جسونت اور دوسرے کئی رجپوت سرداروںکو بہی گہوڑے ملے اور یہ سب راجہ جیسنگہ کے ہمراہ بہیجے گئے -

بلخ کی مہم

سلخ ربیع الثانی کو شاہزادہ اورنگ زیب بلخ پہونچا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुरखां पेशवाई को आया-	بہادر خان نے پیشوائی کرکے ملازمت کی
आसाद सुदी २ को शाह ज़ादा बलख़ में दाख़िल हुआ और राव रतन हाड़ा के बेटे माधो सिंघ को किले बलख़ की हिफ़ाज़त पर मुकर्रर किया-	غرہ جمادی الاول کو شاہزادہ بلخ مین داخل ہوا اور راو رتن ہاڑے کے بیٹے مادہو سنگہ کو قلعہ بلخ کی حفاظت پر مقرر کیا
अबदुल अज़ीज़ खां का सेना पती बेग औगली तूरान के बहुत से लशकर के साथ आसोया नदी से उतर आया था औरंग ज़ेब ने फ़ौज सजा कर उसके मुकाबिले पर कूच किया-	عبدالعزیز خان کا سپہ سالار بیگ اوغلی بہت سی فوج کے ساتھہ آب آمویہ سے اوتر آیا تھا اورنگ زیب نے فوج اراستہ کرکے اوسکے اوپر کوچ کیا-
आसाद सुदी १० को तेमूराबाद में बहादुरखां और अमीरुल उमरा अली मरदान खां का मुकाबिला उज़बकों से हुआ शाह ज़ादे ने राजा राय सिंघ राव शत्रु साल ग़ज़नफ़र और मुरशिद कुली वगेरा को उन की मदद पर भेजा लड़ाई में बादशाही लशकर की फ़तह हुई मगर सैईद खां बहादुर ज़फ़र	۹ جمادی الاول کو مقام تیمورآباد مین بہادر خان اور امیرالامرا علیمردان خان سے اوراوزبکون سے لڑائی ہوئی بادشاہزادہ نے راجہ رائے سنگہ راو سترو سال غضنفر و مرشد قلی وغیرہ کو اونکی مدد پر بہیجا لڑائی مین بادشاہی لشکر کی فتح ہوئی مگر سعید خان بہادر ظفر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंग वग़ैरा कई अमीर ज़रवमी होकर काम आये-

असाढ सुदी ११ को शाह ज़ादे ने अली मरदान खां की सलाह से आगे को कूच किया लशकर के वांई तरफ़ की हिफ़ाज़त पर राजा राय सिंघ और शत्रु साल वग़ैरा राज पूतों और वरकंदा ज़ोंको सौंपी गई थी बेग औगली ने साम ने आकर जंग की लेकिन मेदान छोड़ कर भाग गया बादशाही लशकरने आगे बढ कर उस काडेरा लूट लिया "कतलक मोहम्मत" और "बेग ओगली" सो अलीआवादकी तरफ़ चले गये और सव हान कुली अबदुल अज़ीज़ खां के हुक्म से बहुत सा लश्कर लेकर आसताने अलवियाकी राह से बलख के ऊपर गया शाह ज़ादा यह सुन कर पीछे लौटा उज़बक चारों तरफ से दौड़े और लड़भिड़

جنگ وغیرہ کئی امیر زخمی ہوکر کام آئے -

۱۰ جمادی الاول کو شاہزادہ نے علیمردان خان کی صلاح سے آگے کو کوچ کیا تزک لشکر مین محافظت جانب چپ اُردو کی راجہ راے سنگہ و راو ستروسال وغیرہ راجپوتون اور برقندازون کے ذمہ کی گئی تھی بیگ اوغلی نے سامنے آکر جنگ کی مگر تاب مقاومت نہ لاکر بھاگ گیا بادشاہی لشکر نے آگے بڑھکر اوسکا ڈیرہ لوٹ لیا قتلق محمد اور بیگ اوغلی تو علی آباد کی طرف چلے گئے اور سبحان قلی عبدالعزیز خان کے حکم سے بہت سا لشکر لیکر آستانہ علویہ سے بلخ کے اوپر آیا شاہزادہ نے یہہ خبر سنکر مراجعت کی اوزبک چارون طرف سے حملہ آور ہوے اور لڑ بھڑکر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर सुबहान कुली से जा मिले औ र अबदुल अज़ीज़ खां भी "यलंग तोश" समेत वहां जा पहुंचा दूसरे दिन रस्ते चलते २ कुछ लड़ाई हुई-

असाढ सुदी १२ को उज़बकों का लशकर ७ हिस्से हो कर लड़ने को आया उनका मीर तज़ुक "याद गार" अली मरदान खां से लड़ा औ र ज़खमी हो कर पकड़ा गया उज़ब क फिर सामने से भाग गये दूसरे दिन कूंच के वक्त लड़ने को आ ये मगर राजा पहाड़ सिंघ मोत मिद खां मीर आतिश और बहा दुर खां के चचा नेक नाम ने हमला कर के उन को भगा दिया-

सावन वदी ४ को शाह ज़ादा बलख के क़ रीब आ पहुंचा मगर उज़बक भी पीछे ल गे हुवे आये अबदुल अज़ीज़ खां अपने भाई सुबहान कुली के वास्ते शाह ज़ादे से बलख मांगा था शाह-

سبحان قلی سے جا ملے عبد العزیز خان بہی معہ یلنگتوش کے وہان جا پہونچا دوسرے دن راستہ چلتے چلتے کچھ لڑائی ہوئی -

۱۴ جمادی الاول کو اوزبکون نے اپنے لشکر کو سات حصون مین منقسم کرکے حملہ کیا اونکا میر تزک "یادگار" علیمردان خان پر حملہ آور ہوکر گرفتار ہوا باقی اوزبک مقابلہ سے بہاگ گئے

۱۵ جمادی الاول کو پہر اوزبکون نے کوچ کے وقت حملہ کیا مگر راجہ پہاڑ سنگہ معتمد خان میر آتش و نیکنام عم بہادر خان نے مقابلہ کرکے اونکو بہگا دیا -

۱۸ جمادی الاول کو بادشاہزادہ بلخ کے قریب واپس پہونچا لیکن اوزبک بہی ساتہہ لگے ہوئے آئے - عبد العزیز خان اپنے بہائی سبحان قلی کے واسطے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हज़ादे के पास इस वक़्त बहुत-
थोड़ी फ़ौज थी उज़बक बहुत ज़िया
दा जमा हो गये थे १ लाख सवार
से ज़िया थे बेग ओगली कहताथा
कि हमारी बहादुरी और महनत
से जो हमने इस लड़ाई में कीहै
हिन्दुस्तान के ग़ैरत वाले सिपाहि
यों के सिवाय जो कोई दूसरा ल
शकर क्या "क़ज़ल बाशों" का औ
र क्या और कोई हो ताते ग़ारत
हो जाता-

शाह ज़ादेने अब यह तज़
वीज की कि बड़े लशकर को तो
अपने बेटे मोहम्मद सुलतान
के साथ बलख में छोड़ दे और
छड़ी सवारी से दुशमनो का मु-
क़ाबिला करे अबदुल अज़ीज़खां
जो बदख़शां पर हमला करनेका
नाम लेकर रस्ते से जेहून के कि
नरे पर पहुंचा था यह ख़बर सु
न करसावन स्दी १ को अपनी फ़ौज

بلخ مانگتا تھا اوسوقت شاہزادہ
کے پاس بہت تہوڑا لشکر تھا
اور اوزبک بہت زیادہ جمع ہو گئے
تھے بلکہ ایک لاکھہ سے زیادہ
تھے - بیگ اوغلی کہتا تھا کہ وہ
با این تردد و تلاشی کہ از ما درین
یساق بہ روئے کار آمدہ جز
ناموس پرستان جمیت دوست ہندوستان
ہر لشکرے کہ می بود وچہ قزلباش
وچہ غیر آنہا برہم مے خورد -
اب شاہزادہ اورنگ زیب نے
یہہ تجویز کی کہ اردوے بزرگ
کو اپنے بیٹے سلطان محمد کے
ساتہہ بلخ مین چھوڑ دے اور جریدہ
دشمنون کا مقابلہ کرے عبدالعزیز
خان یہہ سنکر بدخشان پر
حملہ کرنے کا نام لے کر راہ
خلم سے جیحون کے کنارہ
جا پہونچا اور وہان
سے سلخ جمادی الاول
کو معہ اپنی فوج کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समेत जेहूं से पार उतर गया उस वक़्त वहुत लोग दरिया में डूब गये अलमान इनसे पहिले चले गये थे जो हमेंशा वलख और वदखशां को लूटा करते थे -

वादशाह नामे में लिखा है कि वलख की मोहिम में १ खता तो शाहज़ादे मुराद बख्श से यह हुई कि जब चग़ताईयों के थोक उस को साहिब ज़ादा रकह कर वंदगी के वासते उसके पास आने वाले थे वह घबरा कर चला आया दूसरी ग़लती बहादुर खां से यह की कि नज़र मोहम्मद खां का पीछा न किया और थोर ग़ाल अंद खुद चेचक तूके इलाकों की हिफ़ाज़त की तीसरी खता औरंग ज़ेब की यह थी कि दुशमन से लड़ने के लिये वलख से आगे चला गया फिर पीछा आया और अबदुल अज़ीज़ खां का पीछा न किया

جیہون سے اوتر گیا اوسوقت بہت لوگ دریا مین ڈوب گئے اور المان اس سے پہلے چلے گئے تھے جو بلخ اور بدخشان کو لوٹا کرتے تھے ۔

بادشاہ نامہ مین لکھا ہے کہ بلخ کی مہم مین ایک خطا تو شاہزادہ مراد بخش سے یہہ ہوئی کہ جب چغتائیون کے الوس اور ایماقات اوسکو صاحبزادہ صاحبزادہ کہہ کر واسطے بندگی کے اوسکے پاس آنیوالے تھے وہ گھبرا کر چلا آیا دوسری خطا بہادر خان نے کی کہ نذر محمد خان کا تعاقب نکیا اور بعد وشبرغان وانہ خود و چیچکتو کی حفاظت کی تیسری خطا اورنگزیب کی یہہ تھی کہ دشمن کے مقابلہ کے لئے بلخ سے آگے چلا گیا اور پھر واپس آیا اور عبدالعزیز خان کا تعاقب نکیا

نوٹ

بادشاہ نامہ کی دوسری جلد یہان ختم ہوئی ہے کیونکہ شاہجہان بادشاہ کی تخت نشینی کو تاریخ جلوس کے حساب سے بیس برس پورے ہو گئے تھے

नोट - बादशाह नामे की दूसरी जिल्द यहां खतम हुई है क्यों कि शाह जहां बादशाह की तख्त नशीनी को जिलूस के हिसाब से २० बरस पूरे होगये थे.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाह जहां बादशाह के हिन्दू मनसबदार पहिले १० बरस में ॥

सम्बत १६८४ से सं० ९४ तक

पांच हज़ारी

१ राजा जगत सिंह ५ हज़ारी ५००० सवार-

२ राजा गज सिंघ राठोड़ राजा सूरज सिंघ का बेटा ५ हज़ारी ५००० सवार-

३ राजा जय सिंघ कछवाहा ५ हज़ारी ५००० सवार-

४ राव रतन हाड़ा ५ हज़ारी ५००० सवार- सन ४ जलूसी में बाल घाटे में मर गया-

५ राजा जुझार सिंघ बुंदेला राजा बर सिंघ देव का बेटा ५ हज़ारी ५००० सवार- सन ८ जलूसी में बागी हो कर मर गया-

تتمہ شاہ جہاں نامہ

ہندو منصب دار شاہ جہانی پہلے دس برس میں سنہ ۱۰۹۴ سے سنہ ۱۰۹۴ تک

پنجہزاری

۱- رانا امر سنگھ پنجہزاری پنج ہزار سوار۔

۲- راجہ گج سنگھ راٹھور خلف راجہ سورج سنگھ پنج ہزاری پنج ہزار سوار ٭

۳- راجہ جے سنگھ کچھواہا پانچہزاری پنج ہزار سوار

۴- راو رتن ہادا پانچہزاری پنج ہزار سوار سنہ ۴ جلوسی میں بالاگھاٹ میں مرگیا۔

۵- راجہ جوجہار سنگھ بندیلہ خلف راجہ برسنگھ دیو پنج ہزاری پنج ہزار سوار سال ۸ جلوسی میں باغی ہوکر مارا گیا ٭

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६ मालूजा दखनी खीलूजी का भाई ५ हज़ारी ५००० सवार-
७ ऊदाजी राम दखनी ५ हज़ारी ५००० स वार साल ६ में मरगया
८ वहा दरजी दखनी जादों राय का वेटा ५ हज़ारी ५००० सवार साल ८ में मर गया-

४ हज़ारी

९ राजा भारत वुंदेला ४ हज़ारी ३५०० सवार साल ७ में मर गया-
१० राजा विठ्ठल दास गोड ४ हज़ारी ३००० सवार-
११ राव सूर भुरटिया ४ हज़ारी ३००० सवार साल ४ में मर गया-
१२ जग देव राय जादों राय का भाई ४ हज़ारी ३००० सवार साल ५ में मर गया-
१३ हमीर राय दखनी ४ हज़ारी २५०० सवार साल ७ में मरगया

३ हज़ारी

१४ राव शत्रु साल हाड़ा रावरतन

۶۔ مالوجی دکھنی برادر کھیلوجی پنجہزاری پنجہزار سوار*
۷۔ اوداجی رام دکھنی پنجہزاری پنجہزار سوار سال ۶ جلوسی میں مرگیا*
۸۔ بہادرجی دکھنی خلف جادوں رائے پنجہزاری پنجہزار سوار*
۹۔ راجہ بھارت بندیلہ چارہزاری ۳۵۰۰ سوار*
۱۰۔ راجہ بٹھیلداس گوڑ چارہزاری تین ہزار سوار*
۱۱۔ راؤ سور بھورٹیہ چارہزاری تین ہزار سوار سال ۴ میں مرگیا*
۱۲۔ جگدیو رائے ولد جادوں رائے چار ہزاری۔ تین ہزار سوار۔ سال ۵ میں مرگیا*
۱۳۔ ہمیر رائے دکھنی۔ چار ہزاری۔ ۲۵۰۰ سوار۔ سال ۷ میں مرگیا*

تین ہزاری

۱۴۔ راؤ ستروسال ہاڈا راؤ رتن

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

۳ شاہجہاں بادشاہ

का पोता ३ हज़ारी ३००० सावार
१५ अमर सिंघ राठौड राजा गज
सिंघ का वेटा ३ हज़ारी २०००
सवार-
१६ माधो सिंघ हाड़ा राव रतन का
वेटा ३ हज़ारी ३००० सवार-
१७ राजा पहाड़ सिंघ वुंदेला राजा
वर सिंघ देव का वेटा ३ हज़ारी
२००० सवार साल ५ में मर गया-
१८ राजा जगत सिंघ राजा वासू
का वेटा ३ हज़ारी ३००० सवार-
१९ ऊदा जी राम ऊदाजी दखनी
का वेटा ३ हज़ारी २००० सवार-
२० राजा राय सिंघ सीसो दिया म
हा राजा भीम का वेटा ३ हज़ारी
१५०० सवार-
२१ राजा अनोप सिंघ ३ हज़ारी
१५०० सवार साल १० में मर ग
या-
२२ मनूजी ३ हज़ारी १५०० सवार
२३ पर सूजी दखनी ३ हज़ारी

کا پوتہ تین ہزاری تین ہزار سوار
۱۵- امر سنگہ راٹھوڑ ولد راجہ
گج سنگہ - تین ہزاری دو ہزار
سوار
۱۷- راجہ پہاڑ سنگہ بندیلہ ولد راجہ
بر سنگدیو تین ہزاری دو ہزار سوار
سال ۵ جلوسی میں مرگیا
۱۸- راجہ جگت سنگہ خلف راجہ باسو-
تین ہزاری دو ہزار سوار
۱۹- اوداجی رام خلف اوداجی دکھنی
تین ہزاری دو ہزار سوار
۲۰- راجہ رائے سنگ سیسودیہ مہاراجہ
بھیم کا بیٹا تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار
۲۱- راجہ انوپ سنگہ تین ہزاری
۱۵۰۰ سوار - سال ۱۰ میں
مرگیا
۲۲- منگوجی دکھنی تین ہزاری
۱۵۰۰ سوار
۲۳- پرسوجی دکھنی تین
ہزاری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१५०० सवार-
२४ जादों राय दखनी ३ हज़ारी १००० सवार-
२५ राजा मन रूप कछवाहा ३ हज़ारी १००० सवार साल ३ में मर गया-
२६ दयाजी वहादुर जी का वेटा ३ हज़ारी १००० सवार-

ढाई हज़ारी

२७ राजा देव सिंघ राजा भारत बुंदेले का वेटा

२ हज़ारी

२८ जुग राज बुंदेला २ हज़ारी २००० सवार साल ८ में अपने वाप के साथ मारा गया-
२९ पृथ्वी राज राठोड़ २ हज़ारी १७०० सवार-
३० राव करण राव सूर भुरटिया का वेटा २ हज़ारी २५०० सवार
३१ राव दूदा राव चांदा का पोता

۱۵۰۰ سوار ۔
۲۴- جادوں رائے دکھنی تین ہزاری ہزار سوار ۔
۲۵- راجہ منروپ کچھواہا تین ہزاری ہزار سوار سال ۳ میں مرگیا ۔
۲۶- دیاجی ولد بہادر جی تین ہزاری ایکہزار سوار ۔

ڈہائی ہزاری

۲۷- راجہ دیبی سنگہ خلف بہارت بندیلہ ۔

دو ہزاری

۲۸- جگراج بندیلہ دو ہزاری دو ہزار سوار - سال ۸ میں اپنے باپ کے ساتھ مارا گیا ۔
۲۹- پرتھی راج راٹھوڑ دو ہزاری سترہ ہزار سوار ۔
۳۰- راؤ کرن خلف راؤ سور بہورٹیہ دو ہزاری پندرہ ہزار سوار ۔
۳۱- راؤ دودا نبیرہ راؤ چاندا ۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२ हज़ारी १५००० सवार- साल ६ में दोलता बाद को मोहिम में काम आया-	دو ہزاری- پندرہ ہزار سوار- سال ۶ میں مہم دولت آباد میں کام آیا ۰
३२ रावत राय धन गर दखनी २ हज़ारी १५०० सवार-	۳۲- راوت رائے دہنگر دکھنی دو ہزاری پندرہ سو سوار ۰
३३ विहारी दास कछवाहा २ हज़ारी १२०० सवार - साल चार में मर गया-	۳۳- بہاری داس کچھواہا دو ہزاری بارہ سو سوار- سال ۴ میں مرگیا ۰
३४ राजा राम दास नर वरी २ हज़ारी १००० सवार-	۳۴- راجہ رام داس نروری دو ہزاری- ایکہزار سوار ۰
३५ राजा रोज अफ़जू २ हज़ारी १००० सवार- साल ८ में मर गया-	۳۵- راجہ روز افزوں دو ہزاری ایکہزار سوار سال ۸ میں مرگیا ۰
३६ अनी राय २ हज़ारी १००० सवार	۳۶- انی رائے دو ہزاری ایکہزار سوار ۰
३७ पाधूजी अचलाजी का बेटा दखनी २ हजारी १००० सवार-	۳۷- پیتھوجی ولد اچلاجی دکھنی دو ہزاری ایک ہزار سوار ۰
३८ हापाजी वेडिया २ हज़ारी ८०० सवार-	۳۸- ہاپاجی ڈوڈیہ دو ہزاری آٹھ سو سوار ۰
डेढ हज़ारी	**ڈیڑہ ہزاری**
३९ रावल पूजा डूगर पुरका ज़मीदार डेढ हज़ारी १२०० सवार	۳۹- راول پونجا زمیندار ڈونگرپور- ڈیڑہ ہزاری پندرہ سو سوار ۰
४० सेवा राम गोड़ बल राम का बेटा	۴۰- سیوارام گوڑ پسر بلرام

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

डेढ हज़ारी १००० सवार-
४१ हिरदे राम वाका कछवाहे का बेटा डेढ हज़ारी १००० सवार- साल ९ में मर गया-
४२ राजा द्वारिका दास राजा गिरधर कछवाहे का बेटा डेढ हज़ारी १००० सवार- साल ४ में ख़ानजहां लोदी के मुकाविले में काम आया-
४३ शत्रु साल कछवाहा डेढ हज़ारी १००० सवार- साल ३ में ख़ान जहां लोदी के मुकाविले में काम आया-
४४ राव हटी सिंघ राव दूदा चन्द्रावत का बेटा डेढ हज़ारी १००० सवार-
४५ राजा प्रताप सिंह उज्जेनिया डेढ हज़ारी १००० सवार- साल १० में अबदुल्ला ख़ां के हाथ से मारा गया-
४६ करम सी राठौड़ डेढ हज़ारी ८०० सवार- ख़ान जहां के मुकावि

ڈیڑہ ہزاری ہزار سوار*
۴۱- ہردی رام خلف بانکا کچھوا ڈیڑہ ہزاری ہزار سوار سال ۹ میں مرگیا*
۴۲- راجہ دوارکا داس ولد راجہ گردہر کچھوا ڈیڑہ ہزاری ایک ہزار سوار سال ۴ میں خان جہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا*
۴۳- ستر دسال کچھواہ ڈیڑہ ہزاری ایک ہزار سوار سال ۳ میں خان جہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا*
۴۴- راؤ ہٹی سنگہ راؤ دودا چندراوت کا بیٹا- ڈیڑہ ہزاری- ایکہزار سوار*
۴۵- راجہ پرتاب سنگہ اوجنیہ ڈیڑہ ہزاری- ایک ہزار سوار- سال ۱۰ میں عبد اللہ خاں کے ہاتھ سے مارا گیا*
۴۶- کرم سی راٹھور ڈیڑہ ہزاری آٹھ سو سوار خان جہاں کے مقابلہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लेमें मारा गया-	میں مارا گیا ❖
४७ भीम राठोड़ डेढ हज़ारी ८०० सवार-	۴۷- بھیم راٹھوڑ ڈیڑہ ہزاری۔ آٹھ سو سوار ❖
४८ चन्द्र मरिा बुंदे ला डेढ हज़ारी ८०० सवार-	۴۸- چندرمن بندیلہ ڈیڑہ ہزاری آٹھ سو سوار ❖
४९ जग माल राठोड़ किशन सिंघ का वेटा डेढ हज़ारी ८०० सवार- साल २ में मर गया-	۴۹- جگمال راٹھوڑ ولد کشن سنگہ- ڈیڑہ ہزاری - آٹھ سو سوار سال ۲ میں مرگیا ❖
५० संग्राम गुन्नोर का जमीदार हज़ारी	۵۰- سنگرام زمیندار گنور ❖ ہزاری
५१ रावल ।समर सी बांस वाडे का ज़मी दार हजारी १००० सवार-	۵۱- راول سمرسی زمیندار بانسواڑہ ہزاری - ایکہزار سوار ❖
५२ हरी सिंघ राठोड़ किशन सिंघ का वेटा हज़ारी १००० सवार-	۵۲- ہری سنگہ راٹھوڑ خلف کشن سنگہ راٹھوڑ ❖
५३ जय राम राजा अनी राय का वेटा हज़ारी १००० सवार-	۵۳- جے رام راجہ انی رائے کا بیٹا ہزاری - ہزار سوار ❖
५४ वल वद्र शेखावत हज़ारी ६०० सवार- साल २ में खान जहां लोदी के मुक़ाविल में काम आया-	۵۴- بلبھدر سیکھاوت ہزاری چھہ سو سوار سال ۲ میں خانجہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا ❖
५५ राजा बीरना रायरा गूजर हज़ारी ६०० सवार- साल ३ में मरगया	۵۵- راجہ بیر نراین بڑگوجر ہزاری۔ چھہ سو سوار سال ۳ میں مارا گیا ❖

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

५६ भगवान दास राजा वर सिंघ देव बुंदेला का बेटा हज़ारी ६०० सवार-

५७ किशन सिंघ भदोरिया हज़ारी ६०० सवार-

५८ रूप गुलरी हज़ारी ६०० सवार साल ९ में श्री नगर की मोहिम में काम आया-

५९ भार मल किशन सिंघ राठोड़ का बेटा हज़ारी ५०० सवार-

६० राजा गिरधर केसो दास का बेटा जेमल मेड़तिया का पोता हज़ारी ५०० सवार-साल ३ में खानजहा लोदी के मुकाबिले में काम आया-

६१ जेत सिंघ राठोड़ हजारी ५०० सवार- साल ३ में मरा-

६२ मित्र सेन राजा स्याम सेन तंवर का भाई हजारी ५०० सवार- साल ६ में मरा-

६३ स्याम सिंघ सीसोदिया हज़ा

۵۶- بھگوان داس خلف راجہ برسنگہ دیو بندیلہ ہزاری چھ سو سوار ٭

۵۷- کشن سنگہ بھدوریہ ہزاری چھ سو سوار ٭

۵۸- روپ گولیری ہزاری چھ سو سوار سال ۹ میں سری نگر کی مہم میں کام آیا ٭

۵۹- بھار مل خلف راجہ کشن سنگہ راٹھوڑ ہزاری پانسو سوار ٭

۶۰- راجہ گردھر ولد کیسو داس نبیرہ جے مل میڑتیہ ہزاری پانسو سوار خان جہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا ٭

۶۱- جیت سنگہ راٹھوڑ ہزاری پانسو سوار سال ۳ میں مرا ٭

۶۲- ترسین راجہ سیام سنگہ تنور کا بھائی ہزاری پانسو سوار سال ۶ میں مرا ٭

۶۳- سیام سنگہ سیسودیہ ہزاری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ी ५०० सवार-
६४ राजा कुंवर सेन किस्टवार का राजा हजारी ३०० सवार-
६५ राय माई दास हज़ारी १५० सवार- साल ५ में मरा-
६६ राय वन माली दास हज़ारी १०० सवार- साल ४ में मरा-

९ सदी

६७ राजा मान सिंघ गुलेरी ९ सदी ८५० सवार-
६८ सवल सिंघ राजा सूरज सिंघ राठोड़ का वेटा ९ सदी ८०० सवार-
६९ गोपाल मनूप कछवाहे का वेटा ९ सदी ६०० सवार-
७० गोकल दास सीसो दिया ९ सदी ५०० सवार-
७१ राव हरचन्द कछवाहा ९ सदी ४०० सवार- साल ४ में मरा-
७२ राय कासी दास ९ सदी ४०० सवार-

پانسو سوار۔
۶۴- راجہ کنور سین کشتوار کا راجہ ہزاری ۳۰۰ سوار۔
۶۵- رائی مائیداس ڈیڑہ ہزاری ۱۵۰ سوار سال ۵ میں مرا۔
۶۶- رائے بن مالی داس ہزاری ۱۰۰ سوار سال ۴ میں مرا۔

نہصدی

۶۷- راجہ مان سنگہ گولیری وصدی ۸۵۰ سوار۔
۶۸- سبل سنگہ خلف راجہ سورج سنگہ راٹھوڑ - ۹ صدی ۸۰۰ سوار۔
۶۹- گوپال ولد منروپ نہصدی ۶۰۰ سوار۔
۷۰- گوکلداس سیسودیہ نہصدی ۵۰۰ سوار۔
۷۱- راو ہرچند کچھواہا نہصدی چارسو سوار- سال ۴ میں مرا۔
۷۲- رائے کاسی داس نہصدی ۴۰۰ سوار۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

७३ दयानत राय ९ सदी १५० सवार-	۷۳- دیانت رائی نہصدی ۱۵۰ سوار ۞
८ सदी	۸ صدی
७४ महेस दास दलपत राठोड का बेटा ८ सदी ६०० सवार-	۷۴- مہیس داس ولد دلپت راٹھور ۸ صدی ۶۰۰ سوار ۞
७५ राय तिलोकचन्द राय मनोहर का पोता ८ सदी ५०० सवार-	۷۵- رائے تلوک چند نبیرہ رائے منوہر ۸ صدی ۵۰۰ سوار ۞
७६ लखमी सेन चोहान ८ सदी ५०० सवार-	۷۶- لکھمی سین چوہان ۸ صدی پانسو سوار ۞
७७ उग्रसेन कछवाहा ८ सदी ४०० सवार-	۷۷- اوگرسین کچھواہا ۸ صدی ۴۰۰ سوار ۞
७८ भोज राज राय साल दरबारी का बेटा ८ सदी ४०० सवार-	۷۸- بھوج راج ولد رائی سال درباری ۸ صدی ۴۰۰ سوار ۞
७९ राय जगन्नाथ राठोड़ ८ सदी ४०० सवार- साल ३ में मर गया-	۷۹- رائی جگناتھ راٹھوڑ ۸ صدی ۴۰۰ سوار سال ۳ میں مرگیا ۞
८० राजा उदय सिंघ स्याम सिंघ तंवर का बेटा ८ सदी ४०० सवार	۸۰- راجہ اودے سنگھ ولد سیام سنگھ تنور کا بیٹا ۸ صدی ۴۰۰ سوار ۞
८१ सुजान सिंघ सीसोदिया ८ सदी ३०० सवार- साल ८ में मर गया-	۸۱- سجان سنگھ سیسودیہ- ۸ صدی ۳۰۰ سوار- سال ۸ میں مرگیا ۞
८२ राजा जोधा ज़मीदार उमर कोट	۸۲- رانا جودھا زمیندار امرکوٹ

In Public Domain; Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

८ सदी ३०० सवार-
८३ फ़तह सिंघ सीसो दिया महारा
जा भीम का बेटा ८ सदी २०० सवार
साल ९ में मर गया-

७ सदी

८४ क्रिया राम गोड़ ७ सदी ७०० स
वार-
८५ शत्रु साल राव सूर भुरटिये
का बेटा ७ सदी ६०० सवार-
८६ राजा बह रोज़ राजा रोज़ अफ़ज़ूं का बे
टा ७ सदी ५०० सवार-
८७ जग नाथ ७ सदी ३०० सवार-
८८ बीर नारायण ज़मींदार पचेट
सूबे विहार ७ सदी ३०० सवार-
साल ६ में मर गया-
८९ हिरदे राम भगवान दास क-
छवाहे का बेटा ७ सदी ३०० सवा
र-
९० रूप सिंघ कछ वाहा ७ सदी
३०० सवार-
९१ बाला जग नाथ कछ वाहे का

۸ صدی تین سو سوار ۔
۸۳ - فتح سنگھ سیسودیہ خلف مہاراجہ
بھیم ۸ صدی ۲۰۰ سوار سال ۹ میں
مرگیا ۔

۷ صدی

۸۴ - کرپارام گوڑ ۷ صدی ۷ سو
سوار ۔
۸۵ - ستر و سال ولد راؤ سور بھورٹیہ
۷ صدی ۶۰۰ سوار ۔
۸۶ - راجہ بہروز ولد راجہ روز افزوں
۷ صدی پانسو سوار ۔
۸۷ - جگناتھ ۷ صدی تین سو سوار ۔
۸۸ - بیرنارائن زمیندار پچیٹ صوبہ بہار
۷ صدی ۳۰۰ سوار - سال ۶ میں
مرگیا ۔
۸۹ - ہروے رام ولد
بھگوان داس کچھوا ۷ صدی
۳ سو سوار ۔
۹۰ - روپ سنگھ کچھواہہ ۷
صدی تین سو سوار ۔
۹۱ - بالا کچھواہہ ولد جگناتھ ۷ صدی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बेटा ७ सदी २०० सवार - साल ३
में मर गया-
९२ राय बनारसी दास ७ सदी २००
सवार-

६ सदी

९३ स्याम सिंघ करमसी राठोड़
का बेटा ६ सदी ४०० सवार-
९४ राजा उदय भान राजा गिरधर
का बेटा ६ सदी ४०० सवार-
९५ उग्रसेन भ्रतु साल कछवाहे
का बेटा ६ सदी ४०० सवार-
९६ बाघ शेरखां तंवर का बेटा ६
सदी ३०० सवार
९७ इन्द्र साल राव रतन का बेटा
६ सदी ३०० सवार-
९८ मुकंद दास राठोड़ ६ सदी ५०
सवार-

५ सदी

९९ नरसिंघ दास राजा द्वारिकादा
स का बेटा ५ सदी ४०० सवार-
१०० चन्द्र भान नरू का ५ सदी ४००

۲۰۰ سوار۔ سال ۳ میں
مرگیا۔
۹۲۔ رائے بنارسیداس ۷ صدی
۲۰۰ سوار۔

۶ صدی

۹۳۔ سیام سنگھ ولد کرمسی راٹھوڑ ۶ صدی
۴۰۰ سوار۔
۹۴۔ راجہ اودے بھان ولد راجہ گردہر
۶ صدی ۴۰۰ سوار۔
۹۵۔ اوگرسین ولد ستر دسال کچھوا
۶ صدی ۴۰۰ سوار۔
۹۶۔ باگھ ولد شیرخاں تنور۔ ۶ صدی
۳۰۰ سوار۔
۹۷۔ اندرسال خلف راو رتن ہاڈہ
۶ صدی ۳۰۰ سوار۔
۹۸۔ مکنداس راٹھوڑ۔ ۶ صدی
۵۰ سوار۔

پانصدی

۹۹۔ نرسنگداس خلف راجہ دوارکاداس
پانصدی ۴۰۰ سوار۔
۱۰۰۔ چندربھان نروکا پانصدی ۴۰۰

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सवार-
१०१ मथरा दास कछवाहा ५सदी ४००सवार-
१०२ हरी सिंघ राव चांदा का बेटा ५सदी ४०० सवार-
१०३ नाहर सोलंखी ५सदी ४०० सवार-
१०४ बीर भान ज़मी दार चन्द्र कोटा बंगाला ५ सदी ३०० सवार-
१०५ राजा जग मणि जादों ५सदी ३००सवार-
१०६ चन्द्र भान ज़मी दार कांगड़ा ५सदी ३०० सवार-
१०७ दल पत मांडण राठोड़ का बेटा ५सदी ३०० सवार- साल ३ में मर गया-
१०८ मुकंद जादों ५सदी ३०० सवार-
१०९ राजा उदय सिंघ राजा मान सिंघ ज़मी दार जंमू का बेटा ५सदी २५० सवार-साल १० में मर ग

سوار۔
۱۰۱- متھراداس کچھواہا پانصدی ۴۰۰ سوار۔
۱۰۲- ہری سنگھ خلف راوچاندا- پانصدی ۴۰۰ سوار۔
۱۰۳- ناہر سولنکھی پانصدی ۴۰۰ سوار۔
۱۰۴- بیربھان زمیندار چندر کوٹہ صوبہ بنگالہ پانصدی ۳۰۰ سوار۔
۱۰۵- راجہ جگ منی جادون پانصدی ۳۰۰ سوار۔
۱۰۶- چندربھان زمیندار کانگڑا- پانصدی ۳۰۰ سوار۔
۱۰۷- دلپت خلف مانڈن راٹھوڑ- پانصدی ۳۰۰ سوار- سال ۳ میں مرگیا۔
۱۰۸- مکند جادون پانصدی ۳۰۰ سوار۔
۱۰۹- راجہ اودے سنگھ خلف راجہ مان سنگھ زمیندار جمبو پانصدی ۲۵۰ سوار سال ۱۰ میں-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

या-
११० रावत दयाल दास झाला ५ सदी २५० सवार-
१११ मान सिंघ राना विक्रमाजीत राना का वेटा ५ सदी २५० सवार-
११२ माधो सिंघ सीसो दिया ५ सदी २५० सवार-साल ८ में मर गया
११३ वेनी दास राजा वर सिंघ देव बुंदेले का वेटा ५ सदी ४०० सवार
११४ नर हर दास वेनी दास का भाई ५ सदी २०० सवार -साल ७ में मर गया-
११५ वदन सिंघ भदो रिया ५ सदी २०० सवार-
११६ गिरधर दास राजा विठ्ठल दास का भाई ५ सदी २०० सवार-
११७ रघु नाथ जमी दार सो सिंघ ५ सदी २०० सवार-
११८ हर दास झाला ५ सदी २०० सवार- साल ३ में मर गया-
११९ नर हर दास झाला ५ सदी

مرگیا *
۱۱۰- زادت ویالداس جھالا پانصدی ۲۵۰ سوار *
۱۱۱- مان سنگه (رانا) خلف بکرماجیت پانصدی ۲۵۰ سوار *
۱۱۲- مادہو سنگه سیسودیه پانصدی ۲۵۰ سوار سال ۸ میں مرگیا *
۱۱۳- بینی داس راجه نرسنگدیو بندیله کا بیٹا پانصدی ۴۰۰ سوار *
۱۱۴- نرہرداس برادر بینی داس - پانصدی - ۲۰۰ سوار - سال ۷ میں مرگیا *
۱۱۵- بدن سنگه بہدوریه پانصدی - ذات ۲۰۰ سوار *
۱۱۶- گردہرداس برادر راجه بیٹھلداس پانصدی ۲۰۰ سوار *
۱۱۷- رگناته زمیندار سوسنگ پانصدی ۲۰۰ سوار *
۱۱۸- ہرداس جہالا - پانصدی ۲۰۰ سوار *
۱۱۹- نرہرداس جہالا - پانصدی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

२०० सवार- साल ३ में ख़ान जहां लोदी के मुक़ाबिले में काम आया	۲۰۰ سوار۔ سال ۳ میں جان جہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا ٭
१२० मुकंद दास राजा गोपाल दास गोड का बेटा ५सदी १५० सवार- साल ४ में ख़ान जहां लोदी के मुक़ाबिले में काम आया-	۱۲۰۔ مکند داس ولد راجہ گوپالداس گوڑ۔ پانصدی ذات۔ ۱۵۰ سوار سال ۴ میں خاں جہاں لودی کے مقابلہ میں کام آیا ٭
१२१ हिरदे नरायरा ५सदी १५० सवार-	۱۲۱۔ ہردے نراین پانصدی ۱۵۰ سوار ٭
१२२ राय सभा चंद ५सदी ९० सवार-	۱۲۲۔ رائے سبھاچند پانصدی ۹۰ سوار ٭
१२३ मंगू राम दखनी ५सदी ८० सवार-	۱۲۳۔ منگورام دکھنی پانصدی ۸۰ سوار ٭

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिन्दू मनसबदार ॥

पिछले १० बरसों में

संबत १६९४ से सं. १७०४ तक

पांचहज़ारी

१ राजा जसवंत सिंघ राजा गज सिंघ का बेटा ५ हज़ारी ५००० सवार जिनमें २५०० दुअस्पा और तिअस्पा –

२ राजा जय सिंघ ५ हज़ारी ५००० सवार जिनमें २००० दुअस्पा और निअस्पा थे

३ राजा गज सिंघ ५ हज़ारी ५००० सवार जेठ सुदी ३ सं. १६९५ को गुज़र गया –

४ राना जगत सिंघ ५ हज़ारी ५००० सवार –

५ राजा बिठ्ठल दास गोड़ ५ हज़ारी ५००० सवार –

४ हज़ारी

ہندو منصب دار

پچھلے دس برس میں

سمت ۱۰۴۷ سے سمت ۱۰۵۷ تک

پانچہزاری

۱۔ راجہ جسونت سنگہ خلف راجہ گج سنگہ پانچہزاری ذات پانچہزار سوار جن میں ۲۵۰۰ دو اسپہ اور سہ اسپہ تھے ٭

۲۔ راجہ جے سنگہ پانچہزاری ذات پانچہزار سوار۔ جنمیں دوہزار سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ تھے ٭

۳۔ راجہ گج سنگہ پانچہزاری ذات پانچہزار سوار۔ ۲ محرم ۱۰۴۸ھ کو گذر گیا ٭

۴۔ راجہ جگت سنگہ پانچہزاری پانچہزار سوار ٭

۵۔ راجہ بیٹھلداس گوڑ پانچہزاری۔ پانچہزار سوار ٭

چارہزاری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६ राव अमर सिंघ राठोड़ राजा गज सिंघ का बेटा ४ हज़ारी ३००० सवार- सावन सुदी १ सं. १७०१ को जनून और बेअदबी में अपनी जान खो बैठा-

७ राजा राय सिंघ महा राजा भीम का बेटा ४ हज़ारी २००० सवार संवत १६९७ में बंगाले में गुजर गया

३ हज़ारी

८ राजा पहाड़ सिंघ बर सिंघ देव बुंदेले का बेटा ३ हज़ारी ३००० सवार जिससे २००० सवार दु अस्पा और ति अस्पा थे-

९ शत्रु साल हाड़ा ३ हज़ारी ३००० सवार-

१० माधो सिंघ हाड़ा ३ हज़ारी ३००० सवार-

११ महेस दास राठोड़ दल पत का बेटा - चेत सुदि २ सं. १७०३ को मर गया ३ हज़ारी २५०० सवार-

۶- راؤ امر سنگہ راٹھوڑ خلف راجہ گج سنگہ چار ہزاری تین ہزار سوار ۔ سلخ جمادی الاول ۱۰۵۴ھ کو جنون اور بے ادبی سے اپنی جان کھو بیٹھا ۔

۷- راجہ رای سنگہ خلف مہاراجہ بھیم سیسودیہ چار ہزاری دو ہزار سوار ۱۰۵۰ھ میں گذر گیا ۔

تین ہزاری

۸- راجہ پہاڑ سنگہ خلف راجہ نرسنگدیو بندیلہ تین ہزاری تین ہزار سوار جس میں ۲ ہزار سوار دو اسپہ و سہ اسپہ تھے ۔

۹- راؤ ستر سال ہاڈا تین ہزاری تین ہزار سوار ۔

۱۰- مادہو سنگہ ہاڈا تین ہزاری تین ہزار سوار ۔

۱۱- مہیس داس راٹھوڑ ولد دلپت - ۹ صفر ۱۰۵۷ھ کو مرگیا - تین ہزاری ڈہائی ہزار سوار ۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

१२ भर जी बगलाने का ज़मींदार ३ हज़ारी २५०० सवार सं. १६९५ में मर गया-	۱۲- بہرجی زمیندار بگلانہ سہ ہزاری ڈہائی ہزار سوار ۱۰۴۸ھ میں مرگیا
१३ राजा जगत सिंघ राजा बासू का बेटा ३ हज़ारी २००० सवार संवत १७०२ में मर गया-	۱۳- راجہ جگت سنگہ خلف راجہ باسو ۳ ہزاری ۲ ہزار سوار ماہ ذی الحجہ ۱۰۵۵ھ میں مرگیا
१४ ऊदा जी राम दखनी ३ हज़ारी २००० सवार-	۱۴- اوداجی رام دکہنی ۳ ہزاری دوہزار سوار
१५ परसूजी भोंसला ३ हज़ारी १५०० सवार-	۱۵- پرسوجی بہوسلہ تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار
१६ जादों राय दखनी ३ हज़ारी १५०० सवार-	۱۶- جادون رائے دکہنی تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار
१७ मंगूजा वनालकर ३ हज़ारी १५०० सवार-	۱۷- منکوجی بنالکر تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار
१८ रावत राय दखनी ३ हज़ारी १५०० सवार-	۱۸- راوت رائے دکہنی تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار
१९ दताजी दखनी ३ हज़ारी २५०० सवार-	۱۹- دتاجی دکہنی ۳ ہزاری ایکہزار سوار
ढाई हज़ारी	**دوہزاری و پانصدی**
२० राजा देवी सिंघ राजा पहाड़ सिंघ बुंदेले का बेटा २५०० ज़ात २००० सवार-	۲۰- راجہ دیوی سنگہ خلف راجہ پہاڑ سنگہ بندیلہ ڈہائی ہزاری دوہزار سوار

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो हज़ारी	دوہزاری
२१ पृथ्वी राज राठोड़ २ हज़ारी ज़ात २००० सवार-	۲۱- پرتھی راج راٹھوڑ دوہزاری دوہزار سوار۔
२२ राजा राज रूप २ हज़ारी ज़ात २००० सवार-	۲۲- راجہ راجروپ دوہزاری دو ہزار سوار۔
२३ सबल सिंघ राजा सूरज सिंघ राठोड़ का बेटा २ हज़ारी १५०० सवार-	۲۳- سبل سنگہ ولد راجہ سورج سنگہ راٹھوڑ دوہزاری پندرہ سو سوار۔
२४ राव करण भुरटिया २ हज़ारी १५०० सवार-	۲۴- راؤکرن بُھرٹیہ دوہزاری ذات ۱۵۰۰ سوار۔
२५ राजा जै राम बड़ गूजर २ हज़ारी १५०० सवार-	۲۵- راجہ جے رام بڑگوجر دوہزاری پندرہ سو سوار۔
२६ रूप सिंघ किशन सिंघ राठोड़ का पोता २ हज़ारी २००० सवार-	۲۶- روپ سنگہ خلف کشن سنگہ راٹھوڑ دوہزاری ایکہزار سوار۔
२७ राम सिंघ करम सी राठोड़ का बेटा २ हज़ारी १००० सवार-	۲۷- رام سنگہ خلف کرمسی راٹھوڑ دوہزاری ایکہزار سوار۔
२८ राजा राम दास नर वरी २ हज़ारी २००० सवार- सं- १६९६ में गुज़र गया-	۲۸- راجہ رام داس نروری دوہزاری ہزار سوار ۱۰۴۹ میں مرگیا۔
२९ पीथूजी दखनी २ हज़ारी १००० सवार-	۲۹- پیتھوجی دکہنی دوہزاری ایکہزار سوار۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३० रवी राय दखनी २ हज़ारी १००० सवार-	۳۰- ربی رائے دکھنی دو ہزاری ایکہزار سوار۔
३१ हापाजी दखनी २ हज़ारी १००० सवार-	۳۱- ہاپاجی دکھنی دو ہزاری ایکہزار سوار۔
डेढ हज़ारी	**ڈیڑہ ہزاری**
३२ राय टोडर मल डेढ़ हज़ारी १५०० सवार दु॰अस्पा ति॰अस्पा	۳۲- رائے ٹوڈرمل ڈیڑہ ہزاری ۱۵۰۰ سوار۔
३३ रतन राठोड़ डेढ हज़ारी १५०० सवार-	۳۳- رتن راٹھوڑ ڈیڑہ ہزاری ۱۵۰۰ سوار۔
३४ रावल पूंजा ज़मीदार डूंगर पुर का डेढ हज़ारी १५०० सवार-	۳۴- راول پونجا زمیندار ڈونگرپور ڈیڑہ ہزاری ۱۵۰۰ سوار۔
३५ अनि रुद्ध राजा बिट्ठ दास का बेटा डेढ हज़ारी १५०० सवार-	۳۵- انرودھ خلف راجہ بیٹھلداس ڈیڑہ ہزاری ۱۵۰۰ سوار۔
३६ सेवा राम गोड़ डेढ हज़ारी १५०० सवार-	۳۶- سیوارام گوڑ ڈیڑہ ہزاری ۱۵۰۰ سوار۔
३७ राव हठी सिंघ चंद्रा वत डेढ हज़ारी १००० सवार-सं० १७०१ में दखन में मर गया-	۳۷- راوہٹی سنگھ چندراوت ڈیڑہ ہزاری ایک ہزار سوار سنہ ۵۴ھ میں دکھن میں مرگیا۔
३८ राव रूप सिंघ चंद्रा वत डेढ हज़ारी १००० सवार-	۳۸- راؤ روپ سنگھ چندراوت ڈیڑہ ہزاری ایکہزار سوار۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३९ भीम राठौड़ डेढ हजारी १००० सवार सं. १७०२ में मर गया-	۳۹- بہیم راٹھوڑ ہزاری ایکہزار سوار ۱۰۵۵ھ میں مرگیا۔
४० दोलत मंद भरजी जमी दार बगलाणे का वेटा डेढ हजारी १००० सवार-	۴۰- دولت مند ولد بہرجی زمیندار بگلانہ ڈیڑہ ہزاری ایکہزار سوار۔
४१ हरी सिंघ राजा सूरज सिंघ का छोटा भाई डेढ हज़ारी ९०० सवार सं. १७०१ मैं मर गया-	۴۱- ہری سنگہ راجہ سورج سنگہ کا چہوٹا بہائی ڈیڑہ ہزاری ۹۰۰ سوار ۱۰۵۴ھ میں مرگیا۔
४२ चन्द्र मणि बुंदेला डेढ हज़ारी ८०० सवार-	۴۲- چندرمن بندیلہ ڈیڑہ ہزاری ۸۰۰ سوار۔
४३ स्याम सिंघ करमसी राठोड़ का वेटा डेढ हज़ारी ६०० सवार	۴۳- سیام سنگہ ولد کرمسی راٹھوڑ ڈیڑہ ہزاری ۶۰۰ سوار۔
४४ संग्राम ज़मींदार गुन्नोर डेढ हज़ारी ६०० सवार सं. १६८९ में गुज़र गया-	۴۴- سنگرام زمیندار گنور ڈیڑہ ہزاری ۶۰۰ سوار ۱۰۴۲ھ میں گذر گیا۔
४५ राय बा जादों राय दखनी का भाई डेढ हज़ारी ६०० सवार-	۴۵- رایبا برادر جادوں رائے دکہنی ڈیڑہ ہزاری ۶۰۰ سوار۔
४६ सुजान सिंघ सीसो दिया डेढ हज़ारी ५०० सवार-	۴۶- سجان سنگہ سیسودیہ ڈیڑہ ہزاری پانسو سوار۔

हज़ारी ہزاری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

४७ कंवर राम सिंघ राजा जय सिंघ का बेटा हज़ारी १००० सवार	۴۷- کنور رام سنگھ خلف راجہ جے سنگھ کچھواہا ہزاری ہزار سوار۔
४८ गोपाल सिंघ राजा मन रूप कछवाहे का बेटा हज़ारी १००० सवार-	۴۸- گوپال سنگھ خلف راجہ منروپ کچھواہا- ہزاری ایک ہزار سوار۔
४९ राजा बदन सिंघ भदोरिया हज़ारी १००० सवार-	۴۹- راجہ بدن سنگھ بھدوریہ ہزاری ایکہزار سوار۔
५० रावल समर सी बांस बाड़े का जमीदार हज़ारी १००० सवार-	۵۰- راول سمرسی زمیندار بانسواڑہ ہزاری ایکہزار سوار۔
५१ प्रताप चर बा हज़ारी १००० सवार-	۵۱- پرتاب جروہ ہزاری ہزار سوار۔
५२ गिरधर दास गोड़ हज़ारी ८०० सवार-	۵۲- گردھرداس گوڑ ہزاری ۸۰۰ سوار۔
५३ राय सिंघ राजा गज सिंघ राठोड़ का पोता राव अमर सिंघ का बेटा हज़ारी ७०० सवार-	۵۳- رائے سنگھ ابن راؤ امر سنگھ خلف راجہ گج سنگھ ہزاری ۷۰۰ سوار۔
५४ अरजुन गोड़ राजा बिट्ठल दास का बेटा हज़ारी ७०० सवार-	۵۴- ارجن گوڑ خلف راجہ بٹھلداس ہزاری سات سو سوار۔
५५ राय सिंघ झाला हज़ारी ७०० सवार-	۵۵- رائے سنگھ جھالا ہزاری سات سو سوار۔
५६ राजा अमर सिंघ नर बरी ह	۵۶- راجہ امر سنگھ نروری

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज़ारी ६०० सवार-
५७ महेस दास राठोड़ हज़ारी ६०० सवार
५८ राज सिंघ खीया राठोड़ का बेटा हज़ारी ६०० सवार- संवत १६९० में मर गया-
५९ भग वान दास राजा बर सिंघ देव बुंदेल का बेटा हज़ारी ६०० सवार सं॰ २६९८ में मर गया-
६० किशन सिंघ भदो रिया हज़ारी ६०० सवार- सं॰ १७०२ में मर गया-
६१ राय तिलोक चन्द कछवाहा हज़ारी ५०० सवार-
६२ भोज राज दखनी हज़ारी ५०० सवार-
६३ राजा कंवर सेन किस्त वार का ज़मी दार हज़ारी ४०० सवार-
६४ राजा पृथ्वी चंद चम्बे का ज़मादार हज़ारी ४०० सवार
६५ राय कासी दास हज़ारी २५०

ہزاری چھ سو سوار۔
۵۷ - مہیس داس راٹھوڑ ہزاری ۶۰۰ سوار۔
۵۸ - راج سنگھ ولد کھیان راٹھوڑ ہزاری ۶۰۰ سوار سنہ ۱۰۵۰ کے آخیر میں مرگیا۔
۵۹ - بھگوان داس خلف راجہ برسنگھدیو بندیلہ ہزاری ۶۰۰ سوار سنہ ۱۰۵۰ میں مرگیا۔
۶۰ - کشن سنگھ بھدوریہ ہزاری ۶۰۰ سوار۔ سنہ ۱۰۵۴ میں مرگیا۔
۶۱ - رائے تلوک چند کچھواہہ ہزاری ۵۰۰ سوار۔
۶۲ - بھوج راج دکنی ہزاری ۵۰۰ سوار۔
۶۳ - راجہ کنورسین زمیندار کشتوار ہزاری ۴۰۰ سوار۔
۶۴ - راجہ پرتھی چند زمیندار چنبہ ہزاری ۴۰۰ سوار۔
۶۵ - رائے کاسیداس ہزاری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सवार-	۲۵۰ سوار۔
६६ राय रायां हज़ारी २५० सवार	۶۶۔ رائے رایان ہزاری ۲۵۰ سوار
६७ राय भार मल हज़ारी १५० सवार-	۶۷۔ رائی بہارمل ہزاری ۱۵۰ سوار۔
९ सदी	**نہصدی**
६८ राजा मान गुलेरी ९ सदी ८५० सवार-	۶۸۔ راجہ مان گلیری ۹صدی ۸۵۰ سوار۔
६९ जग राम कछवाहा ९ सदी ८५० सवार-	۶۹۔ جگرام کچھواہا نہصدی ۸۵۰ سوار۔
८ सदी	**۸صدی**
७० नर सिंघ दास राजा द्वार कादास का बेटा ८ सदी ८०० सवार-	۷۰۔ نرسنگداس خلف راجہ دوارکاداس آٹھ صدی ۸۰۰ سوار۔
७१ कृपा राम गोड़ ८ सदी ७५० सवार-	۷۱۔ کرپارام گوڑ ۸صدی ۷۵۰ سوار۔
७२ उग्रसेन कछवाहा ८ सदी ६०० सवार-	۷۲۔ اوگرسین کچھواہا ۸صدی ۶۰۰ سوار۔
७३ लखमन सैन चोहान ८ सदी ५०० सवार- सं. १६९० में मर गया-	۷۳۔ لکھمن سین چوہان ۸صدی ۵۰۰ سوار۔ سنہ ۱۶۵۰ میں مرگیا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

७४ गोरधन राठोड़ ८ सदी ४०० सवार-
७५ इन्दर साल हाड़ा ८ सदी ४०० सवार-
७६ नाहर सोलंखी ८ सदी ४०० सवार-
७७ अजब सिंघ शत्रु साल कछवाहे का वेटा ८ सदी ३०० सवार-
७८ राना जोधा ज़मीदार उमरकोट ८ सदी ३०० सवार सं. १७०० में मर गया-

७ सदी

७९ राजा वहरोज़ राजा रोज़ अफ़ज़ू का वेटा ७ सदी ५५० सवार
८० भोज राज कछवाहा ७ सदी ५०० सवार-
८१ चन्द्रभान कछवाहा नरूका ७ सदी ५०० सवार-
८२ रावत दयाल दास झाला ७

۷۴- گوردہن راٹھوڑ اٹھ صدی ۴۰۰ سوار +
۷۵- اندرسال ہاڈا ۸ صدی ۴۰۰ سوار +
۷۶- ناہر سولنکی ۸ صدی ۴۰۰ سوار +
۷۷- عجب سنگہ ولد سترو سال کچھواہہ ۸ صدی ۳۰۰ سوار +
۷۸- رانا جودہا زمیندار اومرکوٹ ۸ صدی ۳۰۰ سوار سنہ ۱۰۵۲ میں گذرگیا +

ہفت صدی

۷۹- راجہ بہروز خلف راجہ روز افزوں ہفتصدی ۵۵۰ سوار +
۸۰- چندربھان کچھواہہ نروکا ۷ صدی ۵۰۰ سوار
۸۱- بھوج راج کچھواہہ ۷ صدی ۵۰۰ سوار +
۸۲- راوت دیالداس جالا ۷ صدی

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सदी ५०० सवार-

८४ चतुर भुज चोहान ७ सदी ५०० सवार-

८५ जगन्नाथ राठोड़ ७ सदी ४०० सवार- सं. १६८८ में मर गया

८६ संग राम कछवाहा ७ सदी ४०० सवार-

८७ मथरादास कछवाहा ७ सदी ४०० सवार-

८८ राजा उदे भाराा ७ सदी ४०० सवार-

८९ नारायरा दास सीसोदिया ७ सदी सवार ३००

९० राय सभा चन्द ७ सदी २०० सवार-

६ सदी

९१ प्रताप सिंघ चोहाराा ६ सदी ५०० सवार-

९२ उग्र सेन शत्रु साल कछवाहा का बेटा ६ सदी ४०० सवार-

صدی ۵۰۰ سوار ٭

۸۴- چتربھوج چوہان ۷ صدی ۵۰۰ سوار ٭

۸۵- جگناتھ راٹھوڑ ۷ صدی ۴۰۰ سوار سنہ ۱۰۵۰ میں مرگیا ٭

۸۶- سگرام کچھواہا ۷ صدی ۴۰۰ سوار ٭

۸۷- متھراداس کچھواہا ۷ صدی ۴۰۰ سوار ٭

۸۸- راجا اودے بہان ۷ صدی ۴۰۰ سوار ٭

۸۹- نارائن داس سیسودیہ ۷ صدی ۳۰۰ سوار ٭

۹۰- رائے سبھا چند ۷ صدی ۱۰۰ سوار ٭

ششصدی

۹۱- پرتاب سنگھ چوہان ۶ صدی ۵۰۰ سوار ٭

۹۲- اوگرسین ولد ستروسال ۶ صدی ۴۰۰ سوار ٭

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

९३ पेम चन्द राय मनोहर का पोता ६सदी ४०० सवार-	۹۳- پیم چند نبیرہ رائے منوہر ۶ صدی ۴۰۰ سوار*
९४ बाघा शेर खां तंवर का बेटा ६सदी ३०० सवार-	۹۴- باگھا ولد شیر خاں تنور ۶ صدی ۳۰۰ سوار*
५सदी	**پانصدی**
९५ राजा किशन सिंघ तंवर ५सदी ५०० सवार-	۹۵- راجہ کشن سنگہ تنور ۵ صدی ۵۰۰ سوار*
९६ चतुर भुज सोन ग्रा ५सदी ५०० सवार-	۹۶- چتر بھوج سوانگرا ۵ صدی ۵۰۰ سوار*
९७ राजा जग मन जादों ५सदी ५०० सवार-	۹۷- راجہ جگمن جادون ۵ صدی ۵۰۰ سوار*
९८ हमीर सिंघ सीसो दिया ५सदी ५०० सवार-	۹۸- ہمیر سنگہ سیسودیہ ۵ صدی ۵۰۰ سوار*
९९ बल्लू चोहान ५ सदी ३०० सवार-	۹۹- بلو چوہان - ۵ صدی ۳۰۰ سوار*
१०० गोविंद दास राठोड़ ५सदी २५० सवार-	۱۰۰- گوبند داس راٹھوڑ ۵ صدی ۲۵۰ سوار*
१०१ जसवंत महेस दास राठोड़ का भाई ५सदी २५० सवार	۱۰۱- جسونت برادر مہیس داس راٹھوڑ ۵ صدی ۲۵۰ سوار*
१०२ पृथ्वी सिंघ राजा मान सिंघ	۱۰۲- پرتھی سنگہ راجہ مان سنگہ-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कछवाहे का पोता ५सदी २५०सवार-	کچھواہا کا پوتہ ۵ صدی ۲۵۰ سوار ۞
	۱۰۳- کشن سنگہ راجہ مان سنگہ کچھواہا کا پوتہ ۵ صدی ۲۵۰ سوار ۞
१०४ सकत सिंघ चोहाण ५सदी २५० सवार-	۱۰۴- اسکت سنگہ چوہان ۵ صدی ۲۵۰ سوار ۞
१०५ बेनी दास राजा वर सिंघ देव बुंदेले का वेटा ५सदी २०० सवार-सं-१६६८ में १ राजपूत के हाथ से मारा गया-	۱۰۵- بینی داس ولد راجہ برسنگدیو بندیلہ ۵ صدی ۲۰۰ سوار سنہ ۱۰۵۰ میں ایک راجپوت کے ہاتھ سے مارا گیا ۞
१०६ उग्रसेन राजा मान सिंघ कछवाहा का पोता ५सदी २०० सवार	۱۰۶- اوگرسین نبیرہ راجہ مان سنگہ کچھواہہ ۵ صدی ۲۰۰ سوار ۞
१०७ मान सिंघ राजा विक्रमा जीत का वेटा ५सदी २०० सवार-	۱۰۷- مانسنگہ راجہ بکرماجیت کا بیٹا ۵ صدی ۲۰۰ سوار ۞
१०८ मनोहर दास विठ्ठल दास का भाई ५सदी २०० सवार-	۱۰۸- منوہرداس برادر بٹھیلداس ۵ صدی ۲۰۰ سوار ۞
१०९ कन्ही वलभद्र सेरवावत का वेटा ५सदी २०० सवार-	۱۰۹- کنہی ولد بلبدھر شیخاوت ۵ صدی ۲۰۰ سوار ۞
११० केसरी सिंघ राठोड़ ५सदी २०० सवार-	۱۱۰- کیسری سنگہ راٹھوڑہ ۵ صدی ۸۰ سوار ۞
पांच सदी सेकम की फेरिस्त वादशाह नामे में नहीं दी गई हे ॥	پانصدی سے کم کی فہرست بادشاہ نامہ میں نہیں دی گئی۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नामावली

इस किताब के दोनों हिस्सों में जिन हिन्दु सर दारों के नाम आये हैं वे यहां छांट कर लिखे जाते हैं कि जिस से उनकी औलाद को फ़ायदा पहुंचे॥

अचला जादों राय का बेटा-

अनि रुद्ध बड़ा बेटा राजा बिठ्ठल दास का-

अनि राय सिंघ दलरा दूसरा नाम राजा अनूप सिंघ बड़ गूजर-

अनोप सिंघ राजा बड़ गूजर-

अनोप सिंघ बड़ गूजर-

अरजुन गोड़ बिठ्ठल दास का बेटा-

अरजुन राजा जगत सिंघ का चचा

فہرست اسمائے

اس کتاب کے دونوں حصوں میں جن جن ہندو سرداروں کا ذکر آیا ہے اُنکے نام اخذ کرکے یہاں لکھے جاتے ہیں کہ جس سے اُنکی اولاد کو فائدہ پہونچے

اچلا خلف جادوں رائے۔

انرودہ خلف کلاں راجہ بیٹھلداس۔

انی رائے سنگہ دلن عرف راجہ انوپ سنگہ بڈگوجر۔

انوپ سنگہ (راجہ) بڈگوجر۔

انوپ سنگہ بڈگوجر۔

ارجن گوڑ ولد راجہ بیٹھلداس۔

ارجن عم راجہ جگت سنگہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

अमर सिंघ रा आवत कछवाहा-	امر سنگھ راجاوت کچھواہا *
अमर सिंघ राजा नर वर के राजा राम दास का पोता-	امر سنگھ (راجہ) نبیرہ راجہ رام داس نروری کچھواہا
अमर सिंघ राना-	امر سنگھ (رانا)
अमर सिंघ (राव) राजा गज सिंघ का बेटा-	امر سنگھ (راو) خلف راجہ گج سنگھ راٹھوڑ *
इन्द्र भान-	اندربہان *
इन्द्र मणि बुंदेला-	اندرمن بندیلہ
इन्द्र साल हाड़ा राव रतन का बेटा	اندرسال ہاڈا راو رتن کا بیٹا-
ईसर दास राना जगत सिंघ का नोकर-	ایسرداس ملازم رانا جگت سنگھ *
उग्र सेन राजा मान सिंघ का पोता	اوگرسین نبیرہ راجہ مان سنگھ *
उग्र सेन कछवाहा-	اوگرسین کچھواہا *
	اوگرسین *
उग्र सेन शत्रु साल का बेटा कछवाहा-	اوگرسین ولد ستروسال (سین) کچھواہا
उदय सिंघ (राव) वागड का-	اودے سنگھ راو باگڑ کا *
उदय सिंघ मोटा राजा, राजा सूरज सिंघ का बेटा-	اودے سنگھ (موٹہ راجہ) خلف راجہ سورج سنگھ-
उदय सिंघ राना-	اودے سنگھ (رانا)
उदय भान राठोड़	اودے بہان راٹھوڑ *

नोट- ये तीनों नाम १ ही शख़्स उग्रसेन के मालूम होते हैं

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उदय भान राजा गिरधर का बेटा सेखावत-	اودے بھان ولد راجہ گردہر سیکھاوت ∗
उदय भान जुझार सिंघ का बेटा	اودے بھان خلف راجہ جوجہار سنگہ بندیلہ ∗
ऊदाजी राम दखनी	اوداجی رام دکھنی ∗
एत बार राव	اعتماد راؤ دکھنی ∗
एत माद राव	اعتبار راؤ دکھنی ∗
•कंवर सेन किस्त वार का राजा	کنور سین راجہ کستوار ∗
कन्हर राव क़िले दार	کنہر راؤ قلعہ دار ∗
कनक सेन बैस	کنک سین بیس
कनेही बल भद्र सेखावत का बेटा	کنہی ولد بلبھدر سیکھاوت
कया ज़मींदार चांदा (गोड़)	کیا زمیندار چاندا (گونڈ)
करन (राना)	کرن رانا ∗
करन (राव) राव सूर का बेटा	کرن (راؤ) ولد راؤ سور بھورٹیہ ∗
करम सिंघ	کرم سنگہ ∗
करम सी राठोड़	کرم سی ∗
कल्याण झाला	کلیان جہالا ∗
कल्याण (रावल) जेसल मेर	کلیان (راول) جیسلمیر ∗
काका जी पंडित	کاکاجی پنڈت ∗
कासीदास (राय) बखशी काबुल	کاسیداس (رائے) بخشی کابل ∗

ے یہ تینوں نام ایک ہی شخص سے معلوم ہوتے ہیں ∗

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रपा राम	کرپارام
किशन सिंघ तंवर	کشن سنگہ تنور
किशन सिंघ (राजा) राजा सूरज सिंघ राठोड़ का भाई	کشن سنگہ (راجا) برادر سورج سنگہ راٹھوڑ
किशन सिंघ राजा मान सिंघ का पोता	کشن سنگہ نبیرہ راجہ مان سنگہ
किशन सिंघ भदोरिया	کشن سنگہ بھدوریا
किशनाजी वकील	کشناجی وکیل
किशनाजी (कृष्णाजी) शिरज़ा राव	کشن جی (کرشناجی) شرزہ راؤ
कीरत सिंघ जय सिंघ का बेटा	کیرت سنگہ ولد راجہ جے سنگہ
कीरत सिंघ	کیرت سنگہ
केबा ज़मींदार चांदा	کیبا زمیندار چاندا
केसरी सिंघ महाबत खानी	کیسری سنگہ مہابت خانی
कोकिया	کوکیان
खीलूजी भोंसला	کھیلوجی بھوسلا
खेम दास राजा बिक्रमा जीत का भाई	کھیمداس برادر راجہ بکرماجیت
गज सिंघ राठोड़ (राजा) राजा सूर सिंघ का बेटा	گج سنگہ (راجہ) خلف راجہ سورج سنگہ
गज सिंघ बिहारी दास का बेटा	گج سنگہ ولد بہاری داس
गिरधर दास विठ्ठल दास का बेटा	گردھرداس ولد بٹھلداس

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिर धर (राजा) बड़ा बेटा केशो दास का-	گردہر (راجہ) خلف اکبر کیشوداس ٭
गूजर गुलरी-	گوجر گوالیاری (گلیری)
गोकल दास सीसो दिया-	گوکل داس سیسودیہ -
गोपाल दास गोड़ (राजा)	گوپال داس گوڑ (راجہ)
गोपाल सिंघ मन रूप का वेटा-	گوپال سنگہ ولد منروپ ٭
गोपी नाथ	گوپی ناتہ -
गोविन्द दास राठेड़-	گوبند داس راٹہوڑ -
गोविन्द दास खान दोरानी	گوبند داس خاندورانی ٭
गोरधन राठेड़	گوردہن راٹہور -
चन्द्र नारायण	چندنارائن -
चन्द्र भान कछवाहा	چندربہان کچھواہا -
चन्द्र भान चौहान (राय)	چندربہان (رائے)
चन्द्र मणि राजा बर सिंघ देव बुंदेले का बेटा-	چندرمن ولد راجہ نرسنگدیو بندیلہ ٭
चंपत (बुंदेला)	چنپت بندیلہ -
चंपाल	چنپال -
चतुर भुज चोहान	چتربہوج چوہان ٭
चतुर भुज सोनग्रा	چتربہوج سونگرہ -
चांदा (राव) गोंड़ धारो का ज़मींदार	چاندا (راؤ) زمیندار گونڈوانہ
चेत सिंघ-	چیت سنگہ -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जग जीवन जर्राह	جگ جیون جراح۔
जग जीवन ऊदाजी का बेटा	جگ جیون اوداجی کا بیٹا۔
जग राम हिरदे राम का बेटा	جگ رام خلف ہردے رام۔
जग राम कछवाहा	جگ رام کچھواہا۔
जगनाथ कलांवत महा कवि राय	جگناتھ کلاونت مہاکبی رائی۔
जग नाथ दलपत का बेटा	جگناتھ ولد دلپت رائی۔
जग नाथ राठोड़ (राय)	جگناتھ راٹھوڑ (رائے)
जग नाथ राठोड़	جگناتھ راٹھوڑ۔
जगदेव राय जादों राय का भाई	جگدیورائے برادر جادوں رائی
जग मणि जादों	جگ من جادوں۔
जग माल किशन सिंघ राठोड का बेटा	جگمال ولد کشن سنگھ راٹھوڑ۔
जगत सिंघ (राना) राना करण का बेटा	جگت سنگھ (رانا) خلف رانا کرن۔
जगत सिंघ (राजा) राजा वास्सू का बेटा-	جگت سنگھ (راجہ) خلف راجہ باسو۔
जय राम बड़ गूजर अनोप सिंघ का बेटा	جے رام بڈگوجر ولد راجہ انوپ سنگھ۔
जय सिंघ (राजा) राजा मान सिंघ का पोता-	جے سنگھ (راجہ) بنبیرہ راجہ مان سنگھ۔
जसवंत सिंघ (राजा) राजा गज सिंघ का बेटा-	جسونت سنگھ (راجہ) خلف راجہ گج سنگھ۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जसवंत राठोड़ महेस का भाई	جسونت راٹھوڑ برادر مہیس
जसवंत राय	جسونت رائے۔
जसवतराय	جسونت راو۔
जादों राय कायथ दीवान ब्यूतात	جادوں رائے کایستھ دیوان بیوتات
जादों दास	جادوں داس۔
जादों राय	جادوں رائے۔
जुझार सिंघ बुंदेला राजा बर सिंह देव का बेटा	جوجہار سنگھ بندیلہ ولد راجہ نرسنگدیو۔
जेत सिंघ राठोड़	جیت سنگھ راٹھوڑ۔
जेत सूर	جیت سور۔
जोकू (राजा) दोलत मंद	جوکو (راجہ) دولت مند۔
जोधा (राणा) ज़मीदार उमर कोट	جودہا (رانا) زمیندار امرکوٹ
डूंगर सी	ڈونگرسی۔
तामा जी डोडिया	تاماجی ڈوڈیہ
ताना जी दखनी	تاناجی دکھنی۔
तान सेन कलावत	تان سین کلاوت۔
तिलोक चन्द	تلوک چند۔
तिलोक चन्द (राजा) सेखा वत	تلوک چند (راجہ) سیکھاوت۔
तिलंग राय	تلنگ رائی۔
तेज राय	تیج رائے۔
तोडर मल अफ़ज़ल खानी	تودرمل افضل خانی۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोड़र मल (राय)	ٹوڈرمل (رائے)
तोड़र मल (राजा)	ٹوڈرمل (راجہ)
दत्ताजी दखनी	دتاجی دکھنی-
दलपत राय	دلپت رائے-
दलपत माड़रा राठोड़ का बेटा	دلپت خلف مانڈن راٹھوڑ-
दयानत राय गुजराती	دیانت رائے گجراتی-
दयाल शेर खां का बेटा	دیال پسر شیر خان-
दयाल दास (रावत) झाला	دیال داس (راوت) جھالا-
दादाजी पंडित	داداجی پنڈت-
दुर्ग भान जूझार सिंघ बुंदेले का बेटा	درگ بھان ولد راجہ جوجھار سنگھ بندیلہ
दुर्जन साल विक्रमाजीत का बेटा	درجن سال خلف بکرماجیت-
दूदा (राव) राव चांदा का बेटा	دودا (راؤ) ولد راؤ چاندا-
देव जी	دیوجی-
देवी सिंघ राजा बुंदेला	دیبی سنگھ (راجہ) بندیلہ-
दोलों न ग नाथ	دولو ناگ ناتھ-
द्वारिका दास कछवाहा राजा गिरधर का बेटा	دوارکاداس کچھواہا ولد راجہ گردھر-
नर पत हाड़ा	نرپت ہاڈا-
नर सिंघ दास (राजा) द्वारिका दास का बेटा-	نرسنگداس (راجہ) ولد دوارکاداس-
नर सिंघ देव राजा विक्रमा जीत का	نرسنگدیو (راجہ) ولد بکرماجیت

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बेटा-	ٹ
नर हर दास राजा वर सिंघ देव बुंदेले का बेटा-	نرہرداس ولد راجہ برسنگدیو بندیلہ-
नर हर दास झाला	نرہرداس جہالا-
नायक बखश्‌	نایک بخشو-
नाहर सोलंखी	ناہر سولنکھی-
नित्या नन्द	نتیانند-
निहाल चंद जोहरी	نہال چند جوہری-
पतंग राय जादों	پتنگ جادوں-
परमजी (दोलत मंद) भरजी का बेटा	پرم جی- (دولتمند) بہرجی کا بٹیا-
परस राम	پرسرام-
परसूजी खीलूजी का भाई	پرسوجی کھیلوجی کا بہائی-
परसूजी	پرسوجی-
परसो तम राजा राज सिंघ का पोता	پرسوتم نبیرہ راجہ راج سنگہ-
पहाड़ सिंघ (राजा) राजा वर सिंघ देव का बेटा-	پہاڑ سنگہ (راجہ) ولد راجہ برسنگدیو-
पहाड़ सिंघ राठोड़	پہاڑ سنگہ راٹہوڑ-
पारबती (रानी) वर सिंघ देव की	پاربتی (رانی) زوجہ کلاں راجہ برسنگدیو
पिथोरा राय	پتہورا (رائے)
पीथू जी अच लाजी का बेटा	پیتہوجی خلف اچلاجی-
पूंजा रावल	پنجا راول-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पेम चंद राय मनोहर का पोता	پیم چند ولد رائے منوہر
पेम नरायण ज़मीदार	پیم نراین زمیندار۔
प्रताप उज्जनिया	پرتاب اوجنیہ۔
प्रताप ज़मीदार प्रलामूं	پرتاب زمیندار پلاسو۔
प्रताप सिंघ चोहान	پرتاب سنگہ چوہان۔
प्रताप वलभद्र का वेटा	پرتاب ولد بلبھد ہر چیرو۔
प्रीछत	پرچہت۔
पृथ्वी राज सारंग देव का वेटा	پرتہی راج ولد سارنگدیو۔
पृथ्वी राज राठोड़	پرتہی راج راٹھوڑ۔
पृथ्वी सिंघ कछवाहा	پرتہی سنگہ کچھواہا۔
पृथ्वी चंद चम्बे का ज़मी दार	پرتہی سنگہ زمیندار چمبہ۔
फ़तह सिंघ सीसो दिया महा राना भीम का वेटा	فتح سنگہ سیسودیہ خلف مہاراجہ بہیم۔
वख़ तावर (राजा)	بختاور (راجہ)
वदन सिंघ भदोरिया (राव)	بدن سنگہ (راؤ) بہدوریہ۔
वन माली दास (राय)	بنمالیداس (رائے)
वनारसी दास (राय)	بنارسی داس۔ (رائے)
वर वल राव	بربل راؤ۔
वल देव प्रीछत का वेटा	بلدیو ولد پرچہت۔
वलभद्र सेखावत	بلبھدر سیکھاوت۔
वलराम हाड़ा	بلرام ہاڑا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बलराम गोड़ राजा गोपाल दास का बेटा-	بلرام گوڑ ولد راجہ گوپال داس-
बलराम राना जगत सिंघ का वकील-	بلرام ولد راناجگت سنگھ
बल्लू चोहान	بلّو (رائے) چوہان
बल्लू राठोड़	بلّو راٹھوڑ-
बस राम	بسرام-
बसेता जी ज़मीदार	بستیاجی زمیندار-
बह रोज़ (राजा)	بہروز (راجہ)
बहादर जी दखनी	بہادرجی دکھنی-
बहादर सिंघ (राजा)	بہادرسنگھ (راجہ)
बाघ, शेरखां, तंवर का बेटा	باگھ ولد شیرخاں تنور
बाघ राना अमर सिंघ का बेटा	باگھ ولد رانا امرسنگھ
बाबू लछमन ज़मीदार	بابولچھمن زمیندار
बाला राजा जग नाथ कछवाहे का बेटा	بالا ولد راجہ جگناتھ کچھواہا
बासू (राजा)	باسو راجہ
बिक्रमा जीत राजा जूझार सिंघ बुंदेला का बेटा	بکرماجیت ولد راجہ جوجھارسنگھ بندیلہ-
बिक्रमा जीत (राजा) असली नाम सुंदर दास ब्राह्मण	بکرماجیت (راجہ) اصلی نام سندرداس برہمن-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विक्रमाजीत राजा मानसिंघतंवरका वेटा	بکرماجیت ولد راجہ مان سنگھ تنور۔
विक्रमाजीत भदोरिया	بکرماجیت بھدوریہ۔
विठ्ठल दास (राजा) गोड़	بیٹھل داس (راجہ) گوڑ۔
विलास तान सेन का वेटा	بلاس ولد تان سین۔
विहारी दास कछवाहा-	بہاریداس کچھواہا۔
विहारी मल	بہاری مل۔
वीर नरायरा ज़मीदार पचेट	بیرنارائن زمیندار پچیٹ۔
वीर नारायरा (राजा) ज़मी दार कोच विहार	بیرنرائن زمیندار کوچ بہار۔ ؛؛ ۔
वीरसदे	بیرم دیو۔
वनी दास (राजा) वर सिंघ देव वुंदे ले का वेटा	بینی داس (راجہ) ولد راجہ برسنگھ دیو۔
भगवान दास राजा वर सिंघ देव वुंदे ले का वेटा	بھگوان داس ولد راجہ برسنگھ دیو بندیلہ۔
भरजी ज़मीदार वगलारा	بہرجی زمیندار بگلانہ۔
भागीरथ भील	بھاگیرتھ بھیل۔
भारत वुंदेला (राजा)	بھارت بندیلہ (راجہ)
भार मल (राजा) किशन सिंघ का वेटा	بہار مل (راجہ) خلف راجہ کشن سنگھ۔
भारमल इडरिया	بہار مل ایڈریہ۔
भाव सिंघ (राजा) जगत सिंघ का	بہاؤ سنگھ کچھواہا (راجہ)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

बेटा कछवाहा	خلف جگت سنگہ-
भीकू जी	بہیکوجی-
भीम सीसो दिया (महाराजा) रान अ	بہیم (مہاراجہ) سیسودیہ خلف رانا
मर सिंघ का बेटा-	امر سنگہ-
भीम राठोड़	بہیم راٹھوڑ-
भीम सेन	بہیم سین-
भोज राज दखनी	بہوج راج دکہنی-
भोज राज सेखावत राय सल दर	بہوج راج سیکہاوت ولد رائے
बारी का बेटा	سال درباری-
भोज कच्छ के ज़मीदार भारा क	بہوج راج ولد بہارا زمیندار
छ का बेटा	کچہ-
भोज राज किलेदार	بہوج راج قلعدار-
भोज बल नायक बारी	بہوج بل نایکہ اڈی -
भोपत	بہوپت -
भोपत संग्राम का बेटा	بہوبت سنگرام کا بیٹا-
मंगूजी बना लकर	منگوجی بنالکر -
मंगूजी दखनी	منگوجی دکہنی-
मंगू राम दखनी	منگورام دکہنی -
मथरा दास कछवाहा	متہرا داس کچہواہا-
मदन सिंघ भदोरिया	مدن سنگ بہدوریہ
मन रूप (राजा) जग नाथ कछवा	منروپ (راجہ) ولد جگناتہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाहे का वेटा	کچھواہا۔
मनोहर दास विट्ठल दास का भाई	منوہرداس بٹھلداس کا بھائی۔
मलूक चन्द मुसरफ़ (कायस्थ)	ملوک چند مشرف (کائستھ)
महेस दास महावत खानी	مہیس داس مہابت خانی۔
महेस दास राठोड़	مہیس داس راٹھوڑ۔
माधो सिंघ सीसो दिया	مادہو سنگہ سیسودیہ۔
माधो सिंघ राजा वासूके वेटे सूरज मल का भाई -	مادہو سنگہ برادر سورجمل خلف راجہ باسو۔
माधो जी	مادہوجی۔
माधो सिंघ हाड़ा राव रतन का वेटा	مادہو سنگہ ہاڈا ولد راؤ رتن۔
मान सिंघ गवालेरी (गुलेरी)	مان سنگہ گوالیاری (گولیری)
मान (राजा) तंवर	مان (راجہ) تنور۔
मान सिंघ मिरज़ा राजा (कछवाहा)	مان سنگہ مرزا راجہ کچھواہا
मान सिंघ (राजा) विकमा जीत का वेटा -	مان سنگہ (راجہ) ولد بکرماجیت۔
मान सिंघ रावत	مان سنگہ راوت۔
मानक चोहान	مانک چوہان۔
मानी दास (राय)	مانی داس (رائے)
मालूजी भोसला	مالوجی بھوسلہ۔
माई दास (राय)	مائیداس (رائے)
मित्र सेन राजा स्याम सिंघ का भाई	مترسین برادر راجہ سیام سنگہ۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुकंद ज़मीदार	مکند زمیندار۔
मुकंद जादों	مکند جادوں۔
मुकंद दास राजा गोपाल दास का भाई	مکند داس راجہ گوپالداس کا بھائی۔
मुकंद दास राठोड़	مکند داس راٹھوڑ۔
मुकंद दास (राय) यमीनुद्दोला का वकील	مکند داس (رائے) وکیل یمین الدولہ۔
मुरारी पंडित	مراری پنڈت
मेदनी राय	میدنی رائے۔
मेदनी मल	میدنی مل۔
मेदनी राय	میدنی رائے۔
मेना जी साहू जी का भाई	مینا ساہوجی کا بھائی۔
मोहकम सिंघ सीसोदिया	محکم سنگھ سیسودیہ۔
मोहन सिंघ	موہن سنگھ۔
यशवंत राय दखना	یونت رائی دکھنی۔
रतन (राव) हाड़ा	رتن راؤ ہاڈا۔
रतन राठोड़ महेस दास का बेटा	رتن راٹھوڑ ولد مہیس داس
रतनाई	رتنائی۔
रवी राय साठिया	ربی رائے ساٹھیا۔
राघो चौधरी	راگھو چودھری
राघो जादों राय का बेटा	راگھو ولد جادوں رائے۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राज कंवर राणा जगत सिंघ का वेटा	راج کنور ولد رانا جگت سنگہ
राज रूप (राजा) राजा जगत सिंघ का वेटा	راج روپ (راجہ) ولد راجہ جگت سنگہ۔
राम दास (राजा) कछवाहा	رام داس (راجہ) کچھواہا۔
राम सिंघ करमसी राठोड़ का वेटा	رام سنگہ ولد کرم سی راٹھوڑ۔
राम सिंघ (कंवर) राजा जय सिंघ कछवाहे का वेटा	رام سنگہ (کنور) خلف راجہ جے سنگہ۔
राय सिंघ भाला	رائے سنگہ جہالا۔
राय सिंघ राव अमर सिंघ राठोड़ का वेटा	رائے سنگہ خلف راؤ امر سنگہ راٹھوڑ۔
रावत राव	راوت راؤ۔
रावत राय धनगर	راوت دھنگر۔
रावत राय दखनी	راوت راؤ دکنی۔
रुघ नाथ सो सिंघ का ज़मीदार	رگناتھ زمیندار سوسنگ
रुघ नाथ भाटी	رگھناتھ بھاٹی۔
रुस्तम राव	رستم راؤ۔
रूप चंद गुलेरी	روپ چند گوالیاری (گلیری)،
रूप सिंघ कछवाहा	روپ سنگہ کچھواہا۔
रूप सिंघ राठोड़ हरी सिंघ का भतीजा-	روپ سنگہ راٹھوڑ ہرسنگہ کا بھتیجا۔
रूप सिंघ राव मुकंद का वेटा	روپ سنگہ ولد راؤ مکند۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रूप सिंह (राव) चन्द्रावत	روپ سنگه (راو) چندراوت
रोद बाय जमी दार	رود بلیے زمیندار -
लछमी नारायण	لچھمی نراین -
लखमन सेन चौहान	لکھمن سین چوہان -
संगी वमरखल वड़ी तिब्बत का ज़मीदार-	سنگی بمخل زمیندار تبت کلاں -
संग्राम गुन्नोर का ज़मी दार	سنگرام زمیندار گنور -
संग्राम जम्बू का जमी दार	سنگرام زمیندار جمبو -
संग्राम सिंघ कछवाहा	سنگرام سنگه کچھواہا -
संग्राम सिंघ राजावत	سنگرام سنگه راجاوت -
संग्राम राजावत	سنگرام راجاوت -
सतरसी खींची	ستروی کھیچی
सबलसेन	سبل سین
सबल सिंघ राजा सूर सिंघ का बेटा	سبل سنگه ولد راجه سورسنگه -
सभा चन्द (राय)	سبھا چند (رائے)
समरसी रावल वांस वाड़ा	سمرسی راول بانسواره -
सरदार जमी दार	سردار زمیندار -
सर्ग देव आसाम का राजा	سرگ دیو راجه آسام
सहना राजा अमर सिंघ का भाई	سہنا برادر راجه امر سنگه -
सांगा राना	سانگا (رانا)
साबाजी	سابا جی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सामाजी	ساماجی۔
सारंग देव (राजा)	سارنگدیو (راجہ)
साहूजी	ساہوجی۔
सुखदेव (राजा) बुंदेला	سکھدیو (راجہ) بندیلہ
सुजान सिंघ सीसोदिया	سجان سنگہ سیسودیہ۔
सुन्दर ब्राह्मण कवि राय	سندر برہمن کب رائی۔
सुन्दर दास मीर सामान	سندرداس میر ساماں
सूरज हाडा (राव)	سرجن ہاڈا (راؤ)
सूर भुरटिया (राव)	سور بہرٹیہ (راؤ)
सूरज सिंघ राठोड (राजा)	سورجسنگہ (راجہ) راٹھوڑ
सूरज मल (राजा) राजा वासू का वेटा -	سورجمل (راجہ) راجہ باسو کا بیٹا۔
सूरज मल राना अमर सिंघ का वेटा	سورجمل ولد رانا امرسنگہ پ
सोम देव भरजी का दामाद	سوم دیو داماد بہرجی۔
स्याम ददा	سیام ددا۔
स्याम सिंघ राठोड करम सी का वेटा	سیام سنگہ راٹھوڑ ولد کرم سی
शंकर (राना) राना उदय सिंघ का वेटा	سنکر (رانا) ولد رانا اودیسنگہ پ
शक्ति सिंघ	سکت سنگہ۔
शत्रुसाल राव सूर भुरटिया का वेटा	ستروسال پسر راو سور بہورٹیہ۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शत्रुसाल कछवाहा माधो सिंघका बेटा-	ستروسال کچھواہہ خلف مادہوسنگہ-
शत्रुसाल हाड़ा राव रतन का पोता	سترو سال ہاڈا نبیرہ راو رتن
शमशेर खां शेरखां तंवर का बेटा	شمشیر خان خلف شیر خاں تنور
शत्रुजीत	ستروجیت
शुभ कर्ण	سبھ کرن
श्री सिंघ राठोड़	سری سنگہ راٹھور-
हमीर राव दखनी	ہمیر راو دکھنی
हमीर सिंघ ईसर दास सीसो दिये का बेटा-	ہمیر سنگہ ولد ایسرداس سیسودیہ-
हर चन्द (राव) कछवाहा	ہرچند (راو) کچھواہا-
हटी सिंघ (राव) राव दूदा का बेटा	ہٹی سنگہ (راو) ولد راو دودا
हर दास झाला	ہرداس جھالا-
हर नाथ महा पात्र	ہرناتھ مہاپاتر
हर राम भगवान दास कछवाहे का बेटा	ہررام ولد بھگوان داس
हरी सिंघ राव रतन हाड़ा का बेटा	ہرسنگہ ولد راو رتن ہاڈا
हरी सिंघ तिलोक चन्द का बेटा	ہری سنگہ ولد تلوک چند
हरी सिंघ राव चांदा का बेटा	ہرسنگہ ولد راو چاندا شاید ہٹی سنگہ ہ
हरी सिंघ किशन सिंघ राठोड़ को बेटा-	ہری سنگہ ولد کشن سنگہ راٹھوڑ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होपा जी दखनी	ہوپاجی دکنی -
हिम्मत सिंघ	ہمت سنگھ -
हिरदे राम कछवाहा	ہردے رام کچھواہا -
हिरदे राम बांका कछवाहे का बेटा	ہردے رام خلف بانکا کچھواہا -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

शाहजहांनामेकी दूसरी जिल्दका ग[illegible]मा

सफ़ा	सतर	गलत	सही	सफ़ा	सतर	गलत	सही	सफ़ा	सतर	[illegible]	सही
[illegible]	१२	फिर	फिर	〃	〃	जह	जेठ	२०८	४	वस्त	वक्त
〃	〃	यमालियर	गमालियर	〃	१९	८४	९४	११९	२०	वहां	वहांकेग़रीबों
〃	१६	गवालियर	गवालियर	४०	२१	दा	दी	११२	१६	आपना	अपने
〃	१८	विश्न	विष्णु	४१	८	को	की	११८	७	योंकी	योंको
〃	२२	नो	जो	४५	२१	मरफ	तरफ़	१२०	४	शाहक	शाहके
७	१०	की	को	४७	६	यडंग	गडढे	〃	७	जागये	आगये
〃	१३	राजा	दाना	५१	९	बगाले	बंगाले	१२१	१८	उसको	उनको
८	२	वहीं	वही	५३	६	८सदी	६सदी	१२२	१२	के	था
〃	४	मत्त	मत	५४	३	इरान	ईरान	१२५	१९	विराजा	नेराजा
〃	〃	मारने	मानके	〃	४	लारव	२लारव	१२७	१	बड़ा	बडे
〃	१७	हाथी	२हाथी	६३	२१	छोदी	छोटी	१२९	२	सुनहरी	सोनेकी
१०	१	सफ़ी	सफ़ी	६७	१३	मे	ने	१२९	२१	गोड	गौड
〃	२	उम्न	उस	७०	२१	ते	ने	१४२	१०	हेगय	होगये
〃	३	रान	राज	७२	[illegible]	[illegible]	कुशामीके	〃	२१	आखिरी	अखबीर
१९	८	सोसंग	सोसंगके	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वस्त	〃	१६	८हजारी	७हजारी
२०	४	नुकचोंकी	नकदूदी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४१	१२	मर	मारा
२२	१३	(२००४)	(२००[illegible])	〃	[illegible]	[illegible]	[illegible]	〃	९९	मेस	से
२३	७	कदवी	कस्बो	७७	१५	को[illegible]	[illegible]	१५६	२१	था	थी
२४	१५	जोलुस	जेलुस	〃	१६	घोडा[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	बातकी	बातको
२५	१८	जोन	जेन	७८	१०	सिटं[illegible]	साजका	४	१०	[illegible]	[illegible]
२७	२	राने	सने	७९	१४	बेट	बेटे	५	१	[illegible]	[illegible]
〃	२१	सुदी	सुदी२१	८४	४	(२०००)	(२०००)	〃	१४	पा[illegible]	[illegible]
२८	१४	आये	जोभी	८७	४, ९८	न	ने	〃	१६	वेडिया	[illegible]
			गयाऔर	१००	६	नरोसे बंदों	नरोसे बंद	〃	२१	बटा	[illegible]
३३	५	आघार	औघार	१०२							
〃	६	कजली	कजली								
〃	८	टाली	डाली								
३५	२	नामक	नामके								
३६	१९	कस	क[illegible]								
३९	१५	२४०००	[illegible]०००								
〃	२१	को	का								

(१) सफ़े १५९ और १७६ के बीचमें नम्बर उ[illegible] पढ़ने वाले अंकों कोदेरवकर पढें।

(२) सफ़े ३ सूचीमें पहाड़ सिंघ बुंदेलेका स[illegible] गयाहै सोउस कोकाटदेवें।

[illegible]) सफ़े ७ में संग्राम ज़मीदार गुन्नोरके [illegible] लिरव देवें –

शुद्धिपत्र

सफ़ा	सतर	गलत	सही	सफ़ा	सतर	गलत	सही	सफ़ा	सतर	गलत	सही
२८७	२१	और	और अ	२२०	१०	रवा	खड़ा	६	२	वीका	बाका
२०१	२२	१०००	१००००	〃	१८	साव	साथ	७	६	संपाम	संग्राम
२०४	८	लोटे	छोर	२२१	१०	का	को	७	२०	गूजर	बड़गूजर
〃	१७	रवा	रवा	२२२	१४	कछवा हों	कछवाहे	१०	१०	लरवमी	लरवमन
२०५	१०	पर	परराजा ने	२२३	१०	ग्राना	खाना	१३	४	हरी	हटी
२०६	३	उनको	उनकी	२२४	४	येहफ़ौज	येलोग	२४	१४	राना	राजा
〃	४	पहाडिय	पहाडियों	〃	५	थी	थे	〃	५	रानाका	का
〃	१८	घोडी	घोडी	२२८	१८	अजाज	अज़ीज	४७	३	जनून	जिनून
			थीइस	२३७	६	परराजा	राजा	〃	४	में	से
२०८	१२	उसन	उसने	〃	१३	मोहम्मत	मोहम्मद	१८	१३	जा	जी
२०९	१२	उसका	उसको	२३९	२१	मांगा	मांगता	२९	१५	राजा	राना
२१०	२	११	११को	२४०	१०	[illegible]	२	३३	३	गुजरी	गुलेरी
२१२	१४	नेजी	नेजा	〃	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३६	१५	नग	नाग
〃	१६	बढाय	बढाये	〃	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४१	११	नारा	नारा
〃	२०	२००००	२०००	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	〃	१२	कछका	का
२१४	२१	पर	में	[illegible]	[illegible]	[illegible]	…रा	〃	१३	नाज	नोज
२१६	६	शेर	शेर	[illegible]	[illegible]	१९००	१५००	५३	१३	मोहक	मोहकम
〃	२१	साज	[illegible]	[illegible]	[illegible]	देव	देवी	〃	१५	यसवत	यशवंत
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५०००	१५००	〃	〃	दरबना	दखनी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पीपू	५७	८	शाम	शुम्न
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	…उडिया	〃	१७	वठा	बेटा
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	…टा	〃	२०	को	का

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	केसाथ और	के…
[illegible]	[illegible]	मोहिम	मोहम	〃	२०	कि	कि…
[illegible]	[illegible]	के	को	१६२	५	ईरावहां	वहां
[illegible]	२	की	को	१६९	४	[illegible]	सव
[illegible]	२६	रायसिंघ	जयसिंघ	१७३	७	पर	में
…३	१०	वरीले	बसीले	१८०	१०	७००	५००
१.५	५	बारना	बारेव	१८१	४	सिहहजारी	हजारी
〃	८	सैयद	सईद	१८६	८	देव	देवीसिं
〃	१९	लशकर	लशकरने	१८७	१७	राठो	राठोड़
…३	४	जगसिंघ	जगतसिंघ	१९७	४	मरन	मरने
[illegible]	[illegible]	…ची	ऊंची	१९८	१२	वयरा	बंग…

…उलट पलट छपगये हैं सो

…ल ५ में मरना गलत छ…

…हजारी ६०० सवार और…

فہرست کتب مصنفہ منشی دیبی پرشاد صاحب

افسانہ خرد افروز یعنے قصہ بہرام و بہروز	۲ر
تعلیم النساء عورتون کے پڑھنے کی کتاب	۸ر
تاریخ میواڑ قدیم زمانہ سے۔	۴ر
کارنامہ نو آئین یعنی تقویم مویدالمورخین	۵
لطائف ہندی۔ اسم بامسمی۔	۳ر
سوانح عمری نوشیروان بادشاہ	۴ر
سوانح عمری شاہجہان بادشاہ	عہ
سوانح عمری ہمایون بادشاہ	۲ر
سوانح عمری طہماسپ ایرانی	ار
سوانح عمری رانا سانگا	۴ر
سوانح عمری رانا اودے سنگھ	۴ر
سوانح عمری راؤ بیکا جی بانی بیکانیر	۴ر
سوانح عمری راؤ جیت سی جی۔	۳ر
سوانح عمری راجہ پرتھی راج و پورنمل بھارمل و بھگونت داس راجگان جے پور	۶ر
سوانح عمری نواب خانخانان	۴ر
میزان عدالت حکایات انصاف	۶ر
نفائس التواریخ حالات حکمائے سلف	۴ر
جغرافیہ و تواریخ مارواڑ	۵
ریوٹ راج مارواڑ	عہ

نصیحت نامہ	۵
گلدستہ ادب علم اخلاق و معاشین	۵
رسالہ چہل جواب تاریخی	۵
تاریخ سروہی مکمل	عہ
سوانح عمری راجہ کرن معاصر علاؤالدین خلجی	۸ر
لطائف الظرفا	۳ر
سوانح عمری اکبر بادشاہ	عہ
سوانح عمری بابر بادشاہ	ار
سوانح عمری شیرشاہ بادشاہ	۲ر
سوانح عمری بیربل مصاحب اکبر بادشاہ	۲ر
سوانح عمری راجہ نارتن سی و بکرماجیت	۳ر
سوانح عمری رانا پرتاب سنگھ	۴ر
سوانح عمری راؤ لون کرن	۲ر
سوانح عمری راؤ کلیان مل جی	۲ر
سوانح عمری راجہ مان سنگھ امیر والا	۲ر
سوانح عمری راؤ مالدیو جی والی مارواڑ	۲ر
تاریخ ہند	۲ر
تذکرہ شعرائے ہنود	عہ
تفریح الطلباء	۲ر
جواہر التعبیر علم خواب ترجمہ سنسکرت	۲ر

دیگر کتب

یہ کتابین مطبع رضوی
دہلی سے ملنی ہیں

ناول طلسم فطرت
دہلی کی بیساختہ زبان میں
شہرت نے لکھا ہے
دلچسپ قصہ و لطف انگیز
مرزا سخنور بغلول ظریف
ہنسی کے مارے پیٹ پھول
ہے قیمت عہ
ناول نورجہان و جہانگیر
ناول شہنشاہ جہانگیر و نورجہان
حالات میں لکھا گیا ہے اور
ہو چکی ہے اور دو
ظریف اخبار چلتا پرزہ کے
سنہ ۹۶ سے چھپتی ہے
طلسم ہوش افزا۔ یہ عجیب
داستان قصہ امیر حمزہ سے
کی گئی ہے جس کی خوبی
رکھتی ہے قیمت ۱۲ر
مجمع الصنائع جدید۔
صنعت و فنون کے (۵۰۰) نسخے قیمت

فہرست کتب مصنفہ منشی دیبی پرشاد صاحب

کتاب	قیمت
افسانہ خرد افروز یعنے قصہ بہرام و بہروز	۲ر
تعلیم النساء عورتون کے پڑھنے کی کتاب	۸ر
تاریخ میواڑ قدیم زمانہ سے -	۴ر
کارنامہ نو آئین یعنی تقویم نوید المورخین	۵ر
لطایف ہندی - اسم باسمی -	۳ر
سوانح عمری نوشیروان بادشاہ	۴ر
سوانح عمری شاہ جہان بادشاہ	عہ
سوانح عمری ہمایون بادشاہ	۲ر
سوانح عمری طہماسپ ایرانی	ار
سوانح عمری رانا سانگا	۴ر
سوانح عمری رانا اودے سنگہ	۴ر
سوانح عمری راؤ بیکا جی بانی بیکانیر	۴ر
سوانح عمری راؤ جیت سی جی -	۳ر
سوانح عمری راجہ پرتھی راج و پورنمل و بھارمل و بھگونت داس و جگان جے پور [?]	۶ر
سوانح عمری نواب خانخانان	۴ر
میزان عدالت حکایات انصاف	۶ر
نفائس التواریخ حالات حکمائے سلف	۴ر
جغرافیہ و تواریخ مارواڑ	۵ر
ریپوٹ راج مارواڑ	عہ

کتاب	قیمت
نصیحت نامہ	۵ر
گلدستہ ادب علم اخلاق و معاشیین	۵ر
رسالہ چہل جواب تاریخی	۵ر
تاریخ سروہی مکمل	عہ
سوانح عمری راجہ کرن معاصر علاؤ الدین خلجی	۸ر
لطائف الظرفا	۳ر
سوانح عمری اکبر بادشاہ	عہ
سوانح عمری بابر بادشاہ	ار
سوانح عمری شیر شاہ بادشاہ	۲ر
سوانح عمری بیربل مصاحب اکبر بادشاہ	۲ر
سوانح عمری راجہ نارتن سی و بکرماجیت	۳ر
سوانح عمری رانا پرتاب سنگہ	۴ر
سوانح عمری راؤ لون کرن	۲ر
سوانح عمری راؤ کلیان مل جی	۲ر
سوانح عمری راجہ مان سنگہ امیر والا [?]	۲ر
سوانح عمری راؤ مالدیو جی والی مارواڑ	۲ر
تاریخ ہند	۲ر
تذکرہ شعرائے ہنود	عہ
تفریح الطلباء	۲ر
جواہر التعبیر علم خواب ترجمہ سنسکرت	۲ر

دیگر کتب

یہ کتابین مطبع رضوی اخبار... دہلی سے ملتی ہین

ناول طلسم فطرت - مشہور فسانہ... دہلی کی بیساختہ زبان مین منشی نثار علی... شہرت نے لکھا ہے اسمین علاوہ... دلچسپ قصہ و لطف انگیز مضامین... مرزا سخنور بغلول ظریف کا مکالمہ... ہنسی کے مارے پیٹون مین بل... ہے قیمت عہ

ناول نورجہان و جہانگیر - یہ تاریخی...

ناول شہنشاہ جہانگیر و نورجہان - ... حالات مین لکہا گیا ہے اول جلد... ہو چکی ہے اور دوسری جلد دہلی... ظریف اخبار چلتا پرزہ کے ساتھ... سنہ ۹۷ع سے چھپتی ہے فی جلد...

طلسم ہوش فزا - یہ عجیب غریب... داستان قصہ امیر حمزہ سے کی گئی ہے جس کی خوبی... رکھتی ہے قیمت ۱۲ر

مجمع الصنائع جدید - انگریزی... صنعت و فنون کے (۵۰۰) نسخے قیمت...

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नं. ९।१०।११।१२ जिल्द ४
सितमबर सन ९३ से दिसंबर तक

۹-۱۰-۱۱-۱۲ جلد ۴
نمبر ۹-۱۰ ستمبر سنہ ۹۳ سے دسمبر سنہ ۹۳ تک

مجموعۃ التصاویر

یعنی

مرقع المشاہیر

جسمین مشہور اور معروف شخصون کی تصویرین مع سوانح عمری کے مشتہر کیجاتی ہین اور جو ماہوار دارالسرور شہر جودہپور سے شایع ہوتا ہی

प्रसिद्ध चित्रावली

जिसमें

जगद्विख्यात महत्पुरुषोंके चित्र और जीवन चरित्र प्रकाशित कियेजातेहैं और जो महीनेके महीने राजस्थान जोधपुर से प्रगट होताहै॥

شرح قیمت سالانہ مع محصول ڈاک — वारसिक मोल डाकब्यय सहित.

(۱) گورنمنٹ انگریزی و والیان ملک سے .... للعہ — १ अंग्रेज़ी सरकार वा राजों महाराजों से .... ४।)

(۲) حکام رئیسون اور امیرون سے .... ۳ — २ हाकिमों और रईसों और अमीरों से .... ३।)

(۳) عام شائقین سے .... ۲ — ३ सर्बसाधारण रसिकजनोंसे २।)

(۴) طالب علمون سے .... ۱ — ४ विद्यार्थियों से .... १)

فہرست اندراج نمبر ہذا — इस नम्बर की सूची

بقیہ سوانح عمری و تصویر شاہجہان بادشاہ — बाकी सवाने उमरी व तसवीर

دیبی پرشاد بمقام جودہپور — देबीप्रसाद.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

شاہجہان نامہ اردو

معہ تصویر

جس میں ابو المظفر شہاب الدین محمد شاہجہان صاحبقران ثانی بادشاہ غازی کا

پورا حال ہے

اور جسکو منشی دیبی پرشاد قوم کایستھ مؤرخ راجپوتانہ ومنصف راج جودھپور نے بادشاہ نامہ

وغیرہ کتب تواریخ سے نفس مطلب اخذ کرکے اردو زبان میں بعبارت سلیس عام فہم مرتب کیا

मुग़ल सम्राट शाह जहां बादशाह का जीवन चरित्र

सचित्र जिस्को

मुनशी देबी प्रसाद कायस्थ मुनसिफ़ राज जोध
पुरने बादशाह नामें वग़ैरा की फ़ारसी तवारीख की कि
ताबों का सार लेकर हिन्दी में बनाया

جلد سوم

तीसरा

पहिला भाग

संबत १९५३

مطبع رضوی دہلی میں سید میر حسن کے اہتمام سے چھپا

سنہ ۱۸۹۶ء

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

شبیہ شاہجہان بادشاہ

शाहजहां बादशाह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

نمبر صفحہ	سطر	غلط	صحیح	صفحہ	سطر	غلط	صحیح	صفحہ	سطر	غلط	صحیح
۷	۸	خان	خان کو	۵۳	۱۴	کیونکہ کی	کیونکہ وہاں کی	۱۰۶	۷	تین لاکہہ	تین لاکہہ روپیہ
〃	۱۰	دیر سے	دیر سے	۵۷	۴	ایک ہزار کا	ایکہزار سوار کا	〃	۱۵	بہادہرہ	بہادر
۹	۵	غور	غوربند	۶۴	۱۶	بیس ہزار	تیس ہزار	۱۰۸	۲۳	۱۵۹	۵۹
〃	۸	گہر کر	رگر کر	۶۵	۱۳	پانی برسا	پانی نہیں برسا	۱۰۹	۱۸	بخششی گیری	بخششی گری
〃	۲۰	اپنے اپنے	اپنے اور اپنے	〃	۲۰	کو اتنی	کو چہوڑ کر اتنی	۱۱۰	۴	وغیرہ ایک سو	وغیرہ معہ ایک سو
۱۲	۱۵	خان	خاں نے	۶۸	۴	احمد	احمد سعید	〃	۵	تہی	تہیں
۱۳	۳	لڑے	ٹہرے	〃	۱۰	بہیجے گئے	بہیجا گیا	۱۱۱	۱۳	۱۸۵۶	۱۶۵۶
〃	۵	ذی قعدہ	ذی قعدہ کو	۷۲	۲۲	کرنیکے کی	کرنے کی	۱۱۳	۱	بخشتادر آمیر	بخشتا آمیر
〃	۱۴	جدیہ	جدید	۷۳	۱۲	جلوسی سے سنہ	جلوسی سنہ	۱۱۶	۱۵	عالموں	عاملوں
۲۲	۹	درجنوبی	اور جنوبی	۷۵	۱۶	جل	جل کر	۱۱۷	۲۰	نگروہ دو	نگردو
〃	۲۲	کے	نیے	۷۹	۹	سلہٹ	بہٹ	۱۱۹	۳	نمود	تموز
۲۳	۱۹	انعام	انعام میں	〃	۱۸	سرور	خسرو	۱۲۲	۲۱	جن	جس
۲۵	۱	کرکے	مقرر کرکے	〃	۲۴	رکہناتہہ	رگہناتہہ کو	۱۲۳	۴	پندرہ	معہ بندرہ
〃	۲۲	۱۴	۲۴	۸۰	۳	سنہ ۱۶۵۱	سنہ ۱۶۵۲	〃	۶	کو	کے
۲۶	۲۳	نجومیوں کے	نجومیوں کو	۸۰	〃	سنہ ۱۶۵۲	سنہ ۱۶۵۳	۱۲۵	۱۷	جملہ دار	جملہ دار
۲۷	۱۰	امراے	امراے سے	۸۱	۱۲	بار	بان	۱۲۶	۱۹	طلائی	طلائی کے
۲۹	۹	ٹیر	تیر	〃	۲۰	نرودی	نروری	۱۲۷	۲	رکہے	کریں
〃	۱۲	سنہ ۱۶۵۹	سنہ ۱۶۵۹ سے	۸۲	۱۳	جمادی الثانی	جمادی الثانی کو	۱۲۹	۱۳	چاند	چاندا
۳۲	۴	سکو	کو	۸۳	۱۷	دار	سوار	۱۳۵	۱	علاوہ	علاوہ میر جملہ نے
〃	۲۲	پہونچنے	پہونچے	۸۳	۲۱	شاہزازادہ	شاہزادہ	۱۳۸	۱۳۱	بدنامی	بدنامی
۳۵	۴	داور	اور	۸۵	۱	اوس	دس	۱۳۹	۴	کرمیے	کرینے
〃	۸	کریے	کرییے	۸۸	۲۶		اودہر راجہ راج بنہ	۱۴۰	۲	ہو	ہو تو
۳۸	۲۱	تمام	قایم	۹۰	۱۷	اوس سے	روپ برج چہلیں اس سے	۱۴۴	۱۲	تندیلہ	بندیلہ
۴۰	۹	عشرت	عسرت	۹۱	۱۵	اورہر	اودہر	۱۴۶	۵	کو	کوکہ
〃	۱۳	سردار	صوبہ دار	〃	۲۴	گرہ	مگر	۱۴۸	۱۳	برگنوں	برگنوں سے
〃	۲۰	میں	میں سے	۹۲	۱۰	گل چلے	گل پچلے	۱۴۹	۸	ایک	ایک لاکہہ
۴۳	۵	یادشاہ	بادشاہ زادہ	۹۳	۸	تیردں	تیروں سے	۱۵۰	۱۰	میر خاں	خاں
۴۴	۲۱	آیا	آیا سلہ	۹۷	۴	اسعد اللہ	سعد اللہ	〃	۲۱	ہزار	ہزار روپیہ
〃	حاشیہ	یہہ حال	یہہ حال سلہ	۹۹	۵	فنذ	نقد	۱۵۱	۶	۱۵	۱۵ کو
۴۵	۳	قلعدار اور	قلعدار	۱۰۱	۱۴	برہانپور	برہانپور کے	۱۵۲	۱۳	کروڑ	کروڑ روپیہ
۴۷	۱۴	پٹھاون	پٹھانوں	〃	۲۳	سفر	سفیر	〃	۱۷	لڑکوں لڑکیوں	لڑکوں اور لڑکیوں
۴۸	۲۶	ٹہر		〃	۲۵	مازوبین	بازومیں بندہی	۱۵۳	۷	مرجان نے	مرجان کا
〃	〃	پہونچے	پہونچنے	۱۰۲	۱۲	صورت	سورت سے	〃	۱۲	اس کے	اوس کے پاس
〃	۲۸	جلایا	چلدیا	۱۰۳	۲۰	سفارش	سفارش اوٹہا کر	۱۵۴	۱۳	اپنے	اپنے بیٹوں
۴۹	۲۴	تمہارے	ہمارے	۱۰۵	۵	سنہ ۱۰۶۵	سنہ ۱۰۵۸ تک	〃	۱۴	شرار	شرارہ
۵۲	۱	سعید اللہ	سعد اللہ	〃	〃	ہجری تک	سنہ ۱۰۶۵ ہجری تک	〃	۱۶	دونوں	"دو"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
۱۵۵	۱۷	بگرگہ	گلبرگہ
۱۵۶	۵	اورنگ بہ بٹ	اورنگ زیب نے
۱۵۸	۶	آیے	آیا
۱۵۹	۶	بیدرمن	بدرمیں
۱۶۰	۲	ملبائی	کہائی
۱۶۲	۸	شاہزادہ	شاہزادے نے بادشاہ
۱۶۳	۱۸	روپے	روپیہ
۱۶۵	۱۳	بلاکر	ملاکر
۱۶۶	۱۳	علیل	بحال
〃	۱۸	السنہوال	۹۷ وال
۱۶۷	۲۱	روپے	روپیہ
۱۶۵	۱	۲۲	معہ بہت سی فوج کے ۲۲
۱۶۶	۷	دعاکر کے	دعا دی
〃	〃	اور	اور آنکھوں میں
〃	۱۲	ہری	ہوے
۱۸۰	۳	کتنا	کتنا بڑا
۱۸۲	۴	مناسب	مناصب
〃	۷	معہ فرماں	معہ فرمان و اورنگ زیب
۱۸۴	۱۸	بہیجا	بہیجا اور
۱۹۰	۱	ارکان	ارکان
۱۹۰	۱۰	سرکار کے	سرکار وسیع
۱۹۱	۱۸	۹ کرور	۹۰ کرور
〃	۲۰	۱۵ کرور	۵۵ کرور
〃	۲۱	۳۵ کرور	۵۵ کرور
۱۹۲	۵	۳۰ کرور	۴۰ کرور
〃	۹	۴ کرور	۴۰ کرور
〃	۱۴	صوبہ	ولایت
۱۹۳	۲	کرور	کرور کی
〃	۱۰	ولدیت	ولایت
〃	۲۰	۴۰ سال	۲۰ سال
〃	۱۳	دوکرور	دوکرور کا
۱۹۵	۱۰	ثانیہ	ثانیہ
۱۹۷	۴	لاکھہ کرورہ	کرور
〃	۱۴	اسی	اوسی
۱۹۸	۱	سکار	شکار

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
۱۹۸	۱۰	شہر	سفر
۱۹۹	۱۴	ربیع الثانی	ربیع الاول
〃	۱۳	نوجوانوں	خوانوں
۲۰۰	۹	ہتہیاروں	ہتہیاروں اور
۲۰۱	۲۱	شال	شامل
۲۰۲	۷	مگر جیب	جیب
〃	۱۵	سنگہ جلوسی	سنہ ۲ جلوسی
۲۰۴	۲۰	راجہ جگب سنگہ	رانا جگت سنگہ
۲۰۷	۲۱	شجاع و اعظم	شجاع و معظم و اعظم
〃	〃	مراد بخش	کام بخش
۲۰۸	۵	برہم سے	برہم ہونے سے
۲۱۰	۹	چار ہزاری	چار ہزاری ۲۵۰۰ سوار
〃	۲۳	۳۰۰۰	۲۰۰۰
۲۱۱	۱	۵۰۰	۱۵۰۰
〃	۱۳	ہزاری	دوہزاری
۲۱۲	۱۸	پانسو	ہزار و پانسو
۲۱۳	۱۶	ہزاری	ہزاری ۱۰۰۰ سوار
۲۱۵	۸	کالیداس	کاسیداس
〃	۱۲	ہزاری	ہزاری ۱۵۰۰ سوار
〃	۱۹	صدی	صدی ۴۰۰ سوار
〃	۲۱	راسے تر	راے کرند
۲۱۷	۴	بہائی	بہائی
〃	۱۸	۶۰۰	۳۰۰
〃	۱۹	ولد امر سنگہ	اکبر دگہبیر سنگہ ولد امر سنگہ
۲۱۸	۴	کرلیا ہتا	کرلیا گیا ہتا
〃	۱۶	سپرنیدہ	پرنیدہ
〃	۲۳	اسے	نہ آنے دیا
۲۱۹	۱۴	بادشاہ	باپ
〃	۲۰	یہی	ہی
۲۲۰	۲	عمارت	عمارات
〃	۳	وغیرہ اب بہی موجود	وغیرہ موجود
۲۲۱	۱۶	کام	کام جو
〃	۲۰	اوس	اوسکی
۲۲۲	۲	شال کے	سال کے ہی
〃	۸	ایک	جوایک

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
۲۲۲	۲۱	دوسروی	دوسروں
〃	۲۲	اگرکسی	اگر ایسے کسی
۲۲۶	۳	قدمہ	مقدمہ
۲۲۵	۱۲	خطا	عطا
〃	۴	المیسا	الیسا
۲۲۷	۱۳	بیش	بیش بہی
۲۳۰	۵	بر آتش	میر آتش
۲۳۱	۲	گرارے	گذرانے
۲۳۲	۸	نابیناں	نابیناں
۲۳۴	۱۷	تنخواہ	تنخواہ کی
۲۳۷	۱۸	سلطنت کے	سلطنت کی
۲۳۹	۱	فور	تور

صفحات کی پیشانی پر

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
۷۰	۰	سنہ ۱۶۵۱	سنہ ۱۶۵۲
۷۱	۰	〃	〃
۷۲	۰	سنہ ۱۰۶۱	سنہ ۱۰۶۲
〃	۰	سنہ ۱۶۱۵	سنہ ۱۶۵۲
۷۳	۰	سنہ ۱۰۱۶	سنہ ۱۰۶۲
〃	۰	سنہ ۱۶۱۵	سنہ ۱۶۵۲
۷۴	۰	سنہ ۱۶۱۵	سنہ ۱۶۵۲
۷۵	۰	سنہ ۱۰۱۶	سنہ ۱۰۶۲
〃	۰	سنہ ۱۶۱۵	سنہ ۱۶۵۲
۷۷	۰	سنہ ۱۰۶۱	سنہ ۱۰۶۲
〃	۰	سنہ ۱۶۱۵	سنہ ۱۶۵۲
۷۸	۰	سنہ ۱۰۱۶	سنہ ۱۰۶۲
〃	۰	سنہ ۱۶۱۵	سنہ ۱۶۵۲
۷۹	۰	سنہ ۱۰۶۳	سنہ ۱۰۶۲
۸۰	۰	سنہ ۱۰۱۶	سنہ ۱۰۶۳
〃	۰	سنہ ۱۶۱۵	سنہ ۱۶۵۴
۸۱	۰	سنہ ۱۰۱۶	سنہ ۱۰۶۳
〃	۰	سنہ ۱۶۱۵	سنہ ۱۶۵۲
۸۲	۰	سنہ ۱۰۶۱	سنہ ۱۰۶۳
〃	۰	سنہ ۱۶۱۵	سنہ ۱۶۵۳
۸۳	۰	سنہ ۱۶۵۴	سنہ ۱۶۵۳

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ग़लतनामा

सफ़ा	सतर	ग़लत	सही	सफ़ा	सतर	ग़लत	सही
७	२३	घरा	घबरा	८८	१८	उठनेपाये	उठनेनपाये
८	६	घेरा	अंधेरा	९०	१	र्थात	अर्थात
११	१५	कीसी	किसी	"	२	जाता	जानता
१४	१९	कुडे	कुंडे	"	९	से	से
२०	१६	म	में	"	२५	करतोतों	करतूतों
२१	२२	कुई	कुईची	९१	१५	सेकिले	सेसिपाहीकिले
२६	१३	नहमज	बहमन	९२	३१	बो	के
२७	५	औजारी	जारी	९४	२२	दिस	दिन
२९	१३	फागए	माह	१०१	२३	कीमाला	की१माला
३०	१०	किस्त	किले	"	२४	जिसेकी	जिसकी
३०	१८	शगहने	बादशाहने	"	"	के	की
३३	१५	बदि	सुदि	१०२	२७	ख्वाजाखां	ख्वाजा
४१	१	यादगारखां	यादगारबेग	"	"	नेजा	नेजी
"	६	बग	बेग	१०७	९	घाटे	घाट
४४	२१	खिउ	खिबउ	१०८	१	१०००के	१००० सवारोंके
४६	५	मददकी	मददको	"	२	हज़ारीऔर	हज़ारीजात और
५७	१	महसुदि	माहबदि	११०	५	रही	रहती
"	१६	के	का	१११	४	वह	परवह
५८	२१	खिलअत	यखिलअत	११२	८	सेऔर	सेशाहजादे शुजाअ कोऔर
६३	३	मकद	नकद				
६३	२१	बादशाहरातों	बादशाह	११७	३१	नी	नी
६४	११	१२:०००/	१३:०००/	"	२४	मस्तोफी	मुस्तोफी
६५	१	अरज़	अरज़ी	१२३	४	मिसोर	पिशोर
"	२	औजो	जो	१३१	३	चेनेजे	चे
७२	९	करवसत	रुखसत	१३२	२०	का	के
"	१९	रुपयापेशगी	रुपयातलब और २ महीने की पेशगी	१३४	१४	हज	हेज
"	२२	रहने	देने	१३९	१७	है पहिले	है कि पहिले
७४	५	गा	गे	१४०	९	तरनत	सरखत
७५	२	औ	और	"	१०	सरह	तरह
७९	१२	रलों	रेलों	१४१	३	खासा	खासाहाथी
८१	६	लाखकी	लाख	"	१४	नके	मके
८२	११	३७	२७	१४२	१४	६०	६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सफा	सतर	गलत	सही	सफा	सतर	गलत	सही
१४६	९	हवील	हवेली	१९२	५	३०	४०
"	१४	की	का	१९३	१	करोड़	अरब
१४७	१५	ख़िताब	ख़िताबजी	१९५	१४	ध्यान	धन
१५१	१६	२हज़ारके	२हज़ारसवारोंके	१९८	१	क़िराबली	क़िराबल
१५४	१७	मामूल	मालूम	२००	१९	तजतेथे	तुलतेथे
१५५	४	ली	लीतो	२०५	३२	राजाजगत सिंघ	राजाजगत सिंघ
"	३७	बेरंग	बरंग	२०६	२२	नेसदी	नोसंदी
१५९	१४	ठहर	ठहरे	२०७	२५	मोअज़्ज़म अकबर	मोअज़्ज़म आजम अकबर
१६५	१८	खलीलुल्ला	खलीलुल्ला ह	२११	१४	२१५७	१२५०
१६६	१९	५९	६९	"	२७	दासान	दास
१६७	१	खुशी	खुशीजी	२१७	१	नयरादास	मथरादास
"	१९	साजयानी	सालयाना	"	२	राननाटी	राजनाटी
१७७	३	बंदो	बंदे	"	१५	दसदी	दूसदी
१८१	६	सरदारजी	सरदार	२२४	१३	दरदार	दरबार
१८३	३	बादशाह	बादशाहज़ादे	२२८	८	होतहैं	होताहै
१८७	१३	बामी	बानी	२३९	१८	किस्ता	किस्सा
१८९	२०	आ	और	२४६	११	पा	पर
१९०	१३	लाख	लाखरुपये	२५५	९	की	कीथी
१९१	२०	५०	५५				
"	२१	५३	५५				

सूचना

(१) जो लंबाई चौड़ाई शाहजहां बादशाह के राजकी सफे ९९ में लिखी गई है वह तखमीने से लिखी है और सही परिमान उसका सफे २४५ में है मगर उसमें बलख और बदख शां के सूबों की लंबाई चौड़ाई शामिल नहीं है जो दो तीन बरस तक इस राज्य में रहेथे-

(२) खातिमे में यह बात लिखने से रह गई है कि मुल्ला ज़ाहिद का बादशाह नामा भी किसी शाहजहां नामे का खुलासा है जो उसने औरंगज़ेब के बादशाह होने के पीछे हिजरी सन १०८० (संवत १७...) में कियाथा

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाहजहां नामे के तीसरे हिस्से का सूचीपत्र

सफ़ा	हाल
१	इक्कीसवें बरस का बाक़ी हाल
"	शाहज़ादे मुराद बख़्श को उज़बकों पर भेजना
२	नज़र मोहम्मद ख़ां का शाहज़ादे औरंगज़ेब से सुलह चाहना
"	बादशाह का कूच काबुल से लाहोर को
"	टोडरमल को इज़ाफ़ा और राजा का ख़िताब
३	बादशाह लाहोर में
"	इसलाम ख़ां का मरना और शाहनवाज़ ख़ां का मालवे से दखन में जाना
४	बलख़ की मोहिम का ख़ातमा और औरंगज़ेब का नज़र मोहम्मद ख़ां को मुल्क वापस देकर हिन्दुस्तान को रवाने होना रस्ते में उज़बकों वगैरा की लूट मार-
१३	दरबार का हाल
"	बादशाह गांव बाहन में-
"	मेहर शिकोह का मरना।
"	बादशाह दिल्ली में।
१४	खंभात के हाकिम अली अकबर का एक हिन्दू के हाथ से मारा जाना।
"	मंदसोर के जागीरदार जां निसार ख़ां का एक ज़मीदार के हाथ से क़तल होना।
"	बादशाह आगरे में।
१५	अम्बर का जड़ाऊ कंदील।
१६	२२ वां बरस।
"	शाह शुजाअ का काबुल से आना।
"	अम्बर का कंदील मदीने को भेजना।
१७	शुजाअ को बंगाले भेजना।
"	शाहज़ादे मुराद बख़्श को दखन से बुलाना
"	राना जगत सिंघ के बेटे राज कंवर का अपने बाप की अर्ज़ी लाना।

فہرست مضامین حصہ سیوم شاہجہاں نامہ

مضمون	صفحہ
اکیسویں برس کا باقی حال	۱
شاہزادہ مرادبخش کو اوزبکوں کے اوپر بھیجنا	"
نذر محمد خاں کا شاہزادہ اورنگ زیب سے صلح کرنا	۲
بادشاہ کا کوچ کابل سے لاہور کو	"
ٹوڈرمل کا اضافہ اور راجہ کا خطاب	"
بادشاہ لاہور میں	۳
اسلام خاں کا مرنا اور شاہنواز خاں کا مالوہ سے دکھن میں جانا	"
بلخ کی مہم کا خاتمہ اورنگ زیب کا نذر محمد خاں کو ملک واپس دیکر ہندوستان کو روانہ ہونا راستہ میں اوزبکوں وغیرہ کی لوٹ مار	۴
دربار کا حال	۱۳
بادشاہ کا نوواہن میں	"
مہر شکوہ کا مرنا	"
بادشاہ دہلی میں	"
کھنبات کے حاکم علی اکبر کا ایک ہندو کے ہاتھ سے مارا جانا	۱۴
مندسور کے جاگیردار جان نثار خاں کا ایک زمیندار کے ہاتھ سے قتل ہونا	"
بادشاہ آگرہ میں	"
قندیل مرصع عنبر	۱۵
۲۲ واں برس	۱۶
شاہ شجاع کا کابل سے آنا	"
قندیل مرصع عنبر کا مدینہ میں بھیجا جانا	"
شاہ شجاع کو بنگالہ بھیجنا	۱۷
شاہزادہ مراد بخش کو دکھن سے بلانا	"
رانا جگت سنگھ کے بیٹے راج کنور کا اپنے باپ کی عرضی لیکر حاضر آنا	"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१७	बदनसिंघ भदोरिया का मस्त हाथी से लड़ना	بدن سنگھ بھدوریہ کا مست ہاتھی سے لڑنا	۱۷
१८	औरंगज़ेब को मुलतान जाने का हुक्म	اورنگ زیب کو ملتان جانے کا حکم	۱۸
"	बादशाह का कूच दिल्ली को	بادشاہ کا کوچ دہلی کو	"
"	राजकंवर को रुख़सत	راج کنور کو رخصت	"
"	बादशाह दिल्ली में	بادشاہ دہلی میں	"
"	शहर और क़िले शाहजहानाबाद की आबादी और वहां की इमारतों का हाल	شہر و قلعہ شاہجہان آباد کی آبادی اور وہاں کی عمارتوں کا حال	"
२२	बादशाह का क़िले शाहजहानाबाद में दाख़िल होकर ख़ुशी करना	بادشاہ کا قلعہ شاہجہان آباد میں داخل ہوکر خوشی کرنا	۲۲
२३	बलख़ की मोहिम	بلخ کی مہم	۲۳
"	बुख़ारा के अबदुल अज़ीज़ख़ां का बलख़ को घेरना और बादशाह का राजा बिट्ठलदास वग़ैरा को भेजना	عبد العزیز خاں والی بخارا کا بلخ کو گھیرنا اور بادشاہ کا راجہ بیٹھل داس وغیرہ کو مدد کے واسطے بھیجنا	"
२४	राय रायां का बनारस से फिर आकर बादशाही नौकर होना	رائے رایان کا بنارس سے پھر آکر بادشاہی ملازمت اختیار کرنا	۲۴
"	मुरादबख़्श का कशमीर से आना और दक्खन की सूबेदारी पर भेजा जाना	مراد بخش کا کشمیر سے آنا اور دکھن کے صوبہ داری پر بھیجا جانا	"
२५	गुजरात का सूबा दाराशिकोह को और खड़ीसे का शुजाअ को इनायत होना	گجرات کا صوبہ داراشکوہ کو اور اوڑیسہ کا شاہ شجاع کو عنایت ہونا	۲۵
"	शाह ईरान का कंधार लेलेना	شاہ ایران کا قندہار لے لینا	"
२७	औरंगजेब और सादुल्लाहख़ां की कंधार पर तईनाती	اورنگ زیب اور سعد اللہ خاں کی قندہار پر تعیناتی	۲۷
"	अली मरदानख़ां का काकड़ख़ां और राजा अमरसिंघ वग़ैरा को काबुल से कंधार पर भेजना	علی مرداخاں کا کاکڑ خان اور راجہ امر سنگھ وغیرہ کو کابل سے قندھار پر بھیجنا	"
२८	२३ वां बरस	۲۳ واں برس	۲۸
"	औरंगज़ेब को १५ हज़ारी मनसब	اورنگ زیب کا پندرہ ہزاری منصب	"
"	शाह ईरान के क़ंधार लेने की ख़बर पहुंचना और औरंगजेब को कंधार जाने की ताकीद	شاہ ایران کے قندہار لینے کی خبر پہنچنا اور اورنگ زیب کو قندہار جانیکی تاکید	"

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३०	राजा जसंवतसिंघ राजा विट्ठलदास गौड़ कंधार की फ़ौज में	راجہ جونت سنگھ و راجہ بیٹھلداس گوڑ قندہار کی فوج میں	۳۰
३२	बलख से नज़र मोहम्मद खां के एलची का आना.	بلخ سے نذر محمد خاں کے ایلچی کا آنا	۳۲
〃	बादशाह का कूच काबुल को.	بادشاہ کا کوچ کابل کو	〃
〃	कंधार के क़िलेदार खवास खां का कंधार शाह ईरान को दे देना.	قندہار کے قلعہ دار خواص خاں کا قندہار شاہ ایران کو دیدینا	〃
३५	औरंगज़ेब और सादुल्लाखां वज़ीर का मुशकिल रास्तों से बड़ी खराबी के साथ कंधार पहुंच कर क़िले को घेरना.	اورنگ زیب اور سعد اللہ خاں وزیر کا مشکل راستوں سے بڑی خرابی کے ساتھ قندہار پہونچکر قلعہ کو گھیرنا	۳۵
३९	ईरान के वकील का आना.	ایران کے وکیلونکا آنا	۳۹
〃	बादशाह का काबुल पहुंचना.	بادشاہ کا کابل پہونچنا	〃
४०	नज़र मोहम्मद खां के कबीलों को बलख में भेजना और उसके २ बेटों खुसरो सुलतान और बहराम सुलतान का हिन्दुस्तान में रह जाना.	نذر محمد خاں کے قبیلوں کو بلخ میں بھیجنا اور اوسکے دو بیٹوں خسرو سلطان اور بہرام سلطان کا ہندوستان میں رہ جانا	۴۰
४३	कंधार की मोहिम — औरंगज़ेब सादुल्ला खां का हमला क़िले कंधार पर और क़िला फ़तह न होने से लौट आना.	قندہار کی مہم - اورنگ زیب سعد اللہ خاں کا حملہ قلعہ قندہار پر اور قلعہ فتح نہونے سے لوٹ آنا	۴۳
४६	शाह ईरान की फ़ौज से लड़ाई और फ़तह -	شاہ ایران کی فوج سے لڑائی اور فتح	۴۶
४९	दरबार का हाल	دربار کا حال	۴۹
〃	बहादुर खां के बेटे की परवरिश.	بہادر خاں کے بیٹے کی پرورش	〃
〃	बादशाह का कूच काबुल से.	بادشاہ کا کوچ کابل سے	〃
〃	ईरानियों पर फ़तह पाने की खुशी.	ایرانیوں پر فتح پانیکی خوشی	〃
〃	तवारीख मुन्तख़िबउल्लुबाब से कंधार की मोहिम का हाल.	تواریخ منتخب اللباب سے قندہار کی مہم کا حال	〃
५१	कंधार का हाल	قندہار کا حال	۵۱
〃	दरबार का हाल.	دربار کا حال	〃
〃	बादशाह पिशोर में	بادشاہ پشاور میں	〃

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

५२	सादुल्लाखांका हाज़िर होना	سعد اللہ خاں کا حاضر ہونا	۵۲
〃	रुस्तमखांका ईरानियोंसे छीने हुवे निशान और तोपें नज़र करना	رستم خانکا ایرانیوں سے چھینے ہوئے نشان اور توپیں نذر کرنا	〃
〃	दिल्लीके सूबेदार मकरमतखां का मरना और जाफ़रखांका उसकी जगह मुक़र्रर होना	مکرمت خان صوبہ دار دہلی کا مرنا اور جعفر خانکا اوسکی جگہ مقرر ہونا	〃
〃	ठट्ठे भक्कर और सेवानका भी औरंगज़ेबको मिलना	ٹھٹھہ بھکر اور سیوان کا بھی اورنگ زیب کو ملنا	〃
५३	बादशाहका कूच दिल्लीको	بادشاہ کا کوچ دہلی کو	۵۳
〃	अलीमरदानखांको काबुलके सिवाय कश्मीरकी सूबेदारी भी मिलना	علی مردان خانکو کابل کے سوائے کشمیر کے صوبہ داری بھی ملنا	〃
〃	२४ वां बरस	۲۴ واں برس	〃
〃	बादशाह दिल्लीमें	بادشاہ دہلی میں	
〃	शाहज़ादे मुरादबख़्शका १२ हज़ारी मनसब	شاہزادہ مراد بخش کا بارہ ہزاری منصب	
〃	शाहज़ादे दाराशिकोहका हुज़ूरमें पुंचना	شاہزادہ دارا شکوہ کا حضور میں پہونچنا	〃
〃	सादुल्लाखांका ७ हज़ारी होना	سعد اللہ خانکا ہفت ہزاری ہونا	
〃	शाहजहानाबादमें पहिले नौरोज़की ख़ुशी	شاہجہاں آباد میں اول نوروز کی خوشی	〃
〃	हाफ़िज़मोमिनको इनाम	حافظ مومن کو انعام	〃
५५	राजा जयसिंघके बेटे कीरतसिंघकी तईनाती मेवातियोंपर	راجہ جیسنگہ کے بیٹے کیرت سنگہ کی تعیناتی میواتیوں پر	۵۵
〃	रुघनाथको रायका ख़िताब	رگھناتھ کو رای کا خطاب	〃
〃	ताहरखांको इनाम	طاہر خاں کو انعام	〃
〃	२४ वां जलूसी साल	۲۴ واں جلوسی سال	〃
५६	नज़रमोहम्मदखांका वकील	نذر محمد خانکا وکیل	۵۶
〃	मीरसालेहका मरना	میر صالح کا مرنا	〃
〃	नाज़रफ़रामतका मक्के मदीने को भेजना	ناظر فراست کا مکہ مدینہ کو بھیجنا	〃
〃	कीरतसिंघका इज़ाफ़ा मेवातियोंको सर करनेमें	کیرت سنگہ کا اضافہ میواتیوں کو سر کرنے میں	〃
〃	बादशाहकी उमर ६० बरसकी होना	بادشاہ کی عمر ساٹھ برس کی ہونا	〃

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४८	अकबराबादी महल की मसजिद में नमाज़	اکبر آبادی محل کی مسجد میں نماز	
५८	मुरतिज़ा खां की पैनसन	مرتضیٰ خاں کی پنشن	۵۹
"	मुल्ला शफ़ीयाय का नौकर होना	ملا شیفعاے کا نوکر ہونا	"
"	सुलतान रूम के वकील का आना	سلطان روم کے وکیل کا آنا	"
५९	२५ वां बरस	۲۵ واں برس	۵۹
"	औरंगजेब का मुलतान से आना	اورنگ زیب کا ملتان سے حاضر آنا	"
"	बादशाह का कूच कशमीर को और औरंगज़ेब को मुलतान की रुख़सत	بادشاہ کا کوچ کشمیر کو اور اورنگ زیب کو ملتان کی رخصت	"
"	जाफ़र खां का सूबेदार पटना और ख़लीलुल्लाह खां का सूबेदार शाहजहानाबाद होना	جعفر خاں کا صوبہ دار پٹنہ اور خلیل خاں کا صوبہ دار شاہجہاں آباد ہونا	"
"	मुल्ला शफ़ीया को इनाम	ملا شفیعای کو انعام	۵۹
६०	बादशाह लाहौर में	بادشاہ لاہور میں	۶۰
"	जानबेग का बंदर हुगली को लेना	جان بیگ کا بندر ہوگلی کو لینا	"
"	अबदुल रहमान सुलतान का बलख़ से आना	عبدالرحمن سلطان کا بلخ سے آنا	"
"	बादशाह का कूच कशमीर को	بادشاہ کا کوچ کشمیر کو	۶۱
"	काल और रईयत के नुक़सान की तहक़ीक़ात	قحط اور نقصان رعایا کی تحقیقات	"
६२	आदिल खां की पेशकश	عادل خاں کی پیشکش	۶۲
६३	दरबार का हाल	دربار کا حال	۶۳
"	१ प्रसिद्ध कवि को हथनी और २००० रुपये इनायत	ایک مشہور کبیشور کو ہتھنی اور دو ہزار روپیہ عنایت	"
"	बादशाह कशमीर में	بادشاہ کشمیر میں	"
"	मुल्ला शाह बदख़शी का मिलना	ملا شاہ بدخشی کا ملنا	"
६४	आदम खां को छोटी तिबत का राज दिया जाना	آدم خاں کو چھوٹی تبت کا راج دیا جانا	۶۳
"	कशमीर में काल और बादशाह का कूच	کشمیر میں کال اور بادشاہ کا کوچ	"
६६	बादशाह का लाहौर पहुंचकर अमीरों और राजों को कंधार भेजने के वास्ते बुलाना	بادشاہ کا لاہور پہنچکر امیروں اور راجوں کو قندہار بھیجنے کے واسطے بلانا	۶۶

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६७	रूसके वकीलका आना	روم کے وکیل کا آنا	٦٧
〃	नज़र मोहम्मद ख़ाँ का मरना	نذر محمد خاں کا مرنا	〃
〃	सुलतान रूसके ख़त का जवाब	سلطان روم کے خط کا جواب	〃
६८	राजा विट्ठलदास का मरना और अरजुन वग़ैरा उसके बेटों को मनसब मिलना	راجہ بٹھیلداس کا مرنا اور ارجن وغیرہ اوسکے بیٹوں کو منصب ملنا	٦٨
६९	सादुल्लाख़ाँ की फ़ौज की हाज़िरी	سعد اللہ خاں کی فوج کی حاضری	٦٩
〃	२६ वाँ बरस	۲۶ واں برس	〃
〃	सईद ख़ाँ ज़फ़र जंग का मरना और महाबत ख़ाँ का सूबेदार काबुल होना	سعید خاں ظفر جنگ کا مرنا اور مہابت خاں کا صوبہ دار کابل ہونا	〃
७०	लाहोर में आगरे से १ किरोड़ रुपया आना	لاہور میں آگرہ سے ایک کروڑ روپیہ آنا	٧٠
〃	बादशाह को ६१ वाँ बरस	بادشاہ کو ۶۱ واں برس	〃
〃	मोतियों का मीनाकार तख़्त	موتیوں کا مینا کار تخت	〃
〃	औरंगज़ेब को काबुल जाने का हुक्म	اورنگ زیب کو کابل جانے کا حکم	〃
७१	बादशाह का कूच लाहोर से काबुल को	بادشاہ کا کوچ لاہور سے کابل کو	٧١
〃	सादुल्लाख़ाँ वज़ीर राजा जयसिंघ राजा राजरूप राव शत्रुसाल वग़ैरा को क़ंधार पर भेजना	سعد اللہ خاں وزیر راجہ جی سنگہ راجہ راجروپ راو ستروسال وغیرہ کو قندہار پر بھیجا	〃
७२	औरंगज़ेब का मनसब २० हज़ारी होना	اورنگ زیب کا منصب بیس ہزاری ہونا	٧٣
〃	बादशाह काबुल में	بادشاہ کابل میں	〃
〃	शाहज़ादे शुजाअ का बंगाले से आना और उसका २० हज़ारी होना	شاہزادہ شجاع کا بنگالہ سے آنا اور اوسکا بیس ہزاری ہونا	〃
〃	२६ वें जलूसी सन की खुशी	۲۶ ویں جلوسی سالگرہ کی خوشی	〃
〃	क़ंधार की मोहिम		
〃	औरंगज़ेब का क़िले को घेरना और राजरूप की कोशिश	اورنگ زیب کا قلعہ قندہار کو گھیرنا اور راجپوتوں کی کوشش قلعہ کشائی میں	〃
७४	क़ंधार का फ़तह होना और औरंगज़ेब का वापस आना	قندہار کا فتح ہونا اور اورنگ زیب کا واپس آنا	٧٤
७५	दरबार का हाल	دربار کا حال	٧٥
〃	दाराशिकोह का क़ंधार फ़तह करने को तैयार होना	دارا شکوہ کا قندہار فتح کرنے کو تیار ہونا	〃
〃	दाराशिकोह और सुलेमानशिकोह के मनसबों में इज़ाफ़ा	دارا شکوہ اور سلیمان شکوہ کے منصب میں اضافہ	〃
〃	औरंगज़ेब को मुलतान से दखन के चारों सूबों की सूबेदारी पर भेजना	اورنگ زیب کو ملتان سے دکھن کے چاروں صوبوں کی صوبہ دار	٧٦

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

७८ मुलतान का सूबा दाराशिकोह को—
काबुल का सुलेमान शिकोह को और
गुजरात का शायस्ता खां को इनायत होना
〃 शाहज़ादे शुजाअ को बंगाले जाने की रु
खसत और १ किरोड़ दाम का इनाम
〃 सादुल्ला खां अली मरदान खां और राजा
जयसिंघ का कंधार से हाज़िर आना·
〃 बादशाह का कूच काबुल से
〃 औरंगज़ेब का कंधार से आना और द
खन को रवाने होना· और उसको १
किरोड़ दाम का इनाम·
〃 बादशाह लाहोर में·
〃 सरहिन्द में राय रघुनाथ को तनख़ा
ह खालिसे का दफ़तर इनायत होना·
८० २७ वां बरस·
〃 बादशाह शाहजहानाबाद में
〃 सुलेमान शिकोह का इज़ाफ़ा
〃 नुसरत खां को इनाम और इज़ाफ़ा
〃 शक्कुरुन्निसा बेगम का इन्तक़ाल
〃 शाहज़ादे दाराशिकोह को कंधार जा
ने के वास्ते खिलअत और इनाम·
〃 रुस्तम खां राजा जयसिंघ राजा रा
यसिंघ राव शत्रुसाल राजा पहाड़
सिंघ रूपसिंघ रामसिंघ राजा अ
मरसिंघ नरवरी वग़ैरा का दाराशि
कोह के साथ तईनात होना·
८२ राना राजसिंघ की अर्ज़ी और उस
को ५ हज़ारी मनसब·
〃 कंधार की मोहिम·
८३ दाराशिकोह का लाहोर से मुलता
न और मुलतान से कंधार को रवा
ने होना और रस्ते की तकलीफ़·
८४ कंधार को घेरना राजा जयसिंघ औ
र बदनसिंघ के मोरचे·
〃 क़िले बस्त का फ़तह होना·
८५ शाहज़ादे की ताकीद अमीरों को

پر بھیجنا
٧٨ ملتان کا صوبہ داراشکوہ کو کابل کا
سلیمان شکوہ کو اور گجرات کا شایستہ
خاں کو عنایت ہونا
〃 شاہ شجاع کو بنگالہ جانے کی رخصت
اور ایک کروڑ دام کا انعام
٧٨ سعد اللہ خاں علی مرداں خاں اور
راجہ جیسنگہ کا قندہار سے حاضر آنا
〃 بادشاہ کا کوچ کابل سے
〃 اورنگ زیب کا قندہار سے آنا اور
دکھن کو روانہ ہونا اور اوسکو ایک
کروڑ دام کا انعام
〃 بادشاہ لاہور میں
〃 سرہند میں رائے رگھناتھ کو تنخواہ
اور خالصہ کا دفتر عنایت ہونا
٢٧ واں برس
٨٠ بادشاہ شاہجہاں آباد میں
〃 سلیمان شکوہ کا اضافہ
〃 نصرت خاں کو انعام اور اضافہ
〃 شکر النسا بیگم کا انتقال
〃 شاہزادہ داراشکوہ کو قندہار پر جانے
کے واسطے خلعت اور انعام
〃 رستم خان - راجہ جیسنگہ - راجہ رائے سنگہ
راو ستر سال راجہ پہاڑ سنگہ
روپ سنگہ رام سنگہ راجہ امر سنگہ
نروری وغیرہ کا داراشکوہ کے ہمراہ
تعینات ہونا
٨٢ رانا راج سنگہ کی عرضی اور اوسکو
پانچہزاری منصب
٨٣ داراشکوہ کا لاہور سے ملتان اور
ملتان سے قندہار کو روانہ ہونا
اور راستہ کی تکلیف
٨٤ قندہار کو گھیرنا راجہ جیسنگہ اور
بدن سنگہ کے مورچے
〃 قلعہ بست کا فتح ہونا
٨٥ شاہزادہ کی تاکید امیروں کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

	क़िला फ़तह करने के वास्ते-	قلعہ فتح کرنیکے واسطے	
८५	मोहम्मद जाफ़र की कोशिश और क़िले वालों का सख़्त मुक़ाबिला करना-	محمد جعفر کی کوشش اور قلعہ والوں کا سخت مقابلہ کرنا	۸۵
८९	२ फ़क़ीरों और १ ज्योतिषी की अजब कारस्तानी-	دو فقیروں اور ایک جوتشی کی عجب کارستانی	۸۹
९०	क़िले पर क़ुलीच खां और राजा जयसिंघ वगैरा का हल्ला और क़िले वालों का आग बरसाकर हटा देना-	قلعہ پر قلیچ خاں اور راجہ جی سنگھ وغیرہ کا ہلّہ اور قلعہ والوں کا آگ برساکر ہٹا دینا	۹۰
९४	कंधार का फ़तह न होना और दारा शिकोह का वापस आना-	قندہار فتح ہونا اور دارا شکوہ کا واپس آنا	۹۴
९५	दरबार का हाल-	دربار کا حال	۹۵
"	औरंगज़ेब के बेटे मोहम्मद आज़म का पैदा होना-	اورنگ زیب کے بیٹے محمد اعظم کا پیدا ہونا	"
"	बहार बानू बेगम का मरना-	بہار بانو بیگم کا مرنا	"
"	इब्राहीम को असदख़ां का ख़िताब-	ابراہیم کو اسدخاں کا خطاب	"
"	बादशाह का कूच दिल्ली से आगरे को-	بادشاہ کا کوچ دلی سے آگرہ کو	"
"	२९ वां बरस-	۲۹ واں برس	
"	बादशाह आगरे में-	بادشاہ آگرہ میں	"
"	आगरे में जुमामसजिद का तैयार होना-	آگرہ میں جامع مسجد کا تیار ہونا	"
९६	इमादपुर में शिकार की नई इमारत तैयार होना-	عمادپور میں شکارگاہ کی نئی عمارت طیار ہونا	۹۶
"	राजा जगतसिंघ के भाई ग़रीबदास का बिना रुख़सत चला जाना-	راجہ جگت سنگھ کے بھائی غریب داس کا بلا رخصت چلا جانا	"
"	बादशाह दिल्ली में-	بادشاہ دہلی میں	"
९७	दारा शिकोह और सुलेमान शिकोह का मुलतान से आना-	دارا شکوہ اور سلیمان شکوہ کا ملتان سے آنا	۹۷
"	बादशाह का मोतियों के मीनाकार तख़्त पर बैठकर ख़ुशी करना-	بادشاہ کا موتیوں کے میناکار تخت پر بیٹھکر خوشی کرنا	"
"	राजा जसवंत सिंघ को महाराजा का ख़िताब मिलना-	راجہ جسونت سنگھ کو مہاراجہ کا خطاب ملنا	"
९७	सुलेमान शिकोह के मनसब का इज़ाफ़ा और दारा शिकोह को फिर १ किरोड़ दाम का इज़ाफ़ा-	سلیمان شکوہ کے منصب کا اضافہ اور دارا شکوہ کو پھر ایک کروڑ دام کا اضافہ	۹۷
९८	शाहज़ादे मुरादबख़्श का मय अपने बेटे ऐज़दबख़्श के हाज़िर आना गुजरात की सूबेदारी ५ लाख रुपया इनाम १५ हज़ारी मनसब पाना-	شاہزادہ مرادبخش کا معہ اپنے بیٹے ایزدبخش کے حاضر آنا گجرات کی صوبہ داری پانچ لاکھ روپیہ انعام اور پندرہ ہزاری منصب پانا	۹۸

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

९८ अतरूप में उतिया का बादशाह पर तलवार लेकर दौड़ना और चांदी के कटहरे के बाहर ही मारा जाना।
" बादशाह का दाराशिकोह के मकान पर जाना।
" मोहम्मद जाफ़र को मीरआतिश का ख़िताब।
" किरोड़ दाम का इनाम दाराशिकोह को।
" सुलतान रूम के वकील का आना।
सुलतान का ख़त और तुहफ़ा नज़र करना।
१०० सुलतान के वकील को २७५०००) मिलना।
१०१ कायम बेग को वकील करके सुलतान रूम के पास भेजना।
१०२ बादशाह का सुलेमान शिकोह के मकान पर जाना।
" शेख़ अब्दुलहमीद का मरना।
" लाख रुपये का माल मक्के को भेजना।
१०३ बादशाह का अजमेर जाना और चीतोड़ गिराने को फ़ौज भेजना।
" राना का माफ़ी मांगना।
१०४ बादशाह अजमेर में।
" सादुल्ला ख़ां का चीतोड़ का किला गिरा कर वापस रवाने होना।
" राना के बड़े बेटे का हाज़िर होना।
" हाजी अहमद सईद का रूम से वापस आना।
" श्री नगर के ज़मीदार पर फ़ौज भेजना।
१०५ २९ वां बरस।
" बादशाह का कूच अजमेर से।
" मालपुरे में राना के बेटे का हाज़िर होना और उसका नाम सोभाग सिंह रखा जाना।
" सादुल्ला ख़ां का चीतोड़ से वापस आना।
" राना के बेटे को रुख़सत।
१०६ औरंगज़ेब के बेटे मोहम्मद सुलतान का हाज़िर आना।
" बादशाह फ़तहपुर में।
" बादशाह का आगरे हो कर दिल्ली को रवाने होना।

حسرت [illegible] کا بادشاہ پر تلوار کھینچ کر دوڑنا اور چاندی کے کٹہرہ کے باہر ہی مارا جانا ۹۸
بادشاہ کا داراشکوہ کے مکان پر جانا "
محمد جعفر کو میر آتش کا خطاب "
کروڑ دام کا انعام داراشکوہ کو "
سلطان روم کے وکیل کا آنا سلطان کا خط اور تحفہ نذر کرنا "
سلطان کے وکیل کو دو لاکھ پچہتر ہزار روپیہ ملنا ۱۰۰
قایم بیگ کا وکیل ہو کر روم کو جانا ۱۰۱
بادشاہ کا سلیمان شکوہ کے مکان پر جانا ۱۰۲
شیخ عبد الحمید کا مرنا "
ایک لاکھ روپیہ کا مال مکہ کو بہیجنا "
بادشاہ کا اجمیر جانا اور قلعہ چتوڑ کے گرانے کو سعد اللہ خان کے ہمراہ فوج بہیجنا ۱۰۳
رانا کا معافی مانگنا "
بادشاہ اجمیر میں ۱۰۴
سعد اللہ خان قلعہ چتوڑ گرا کر واپس روانہ ہونا "
رانا کے بڑے بیٹے کا حاضر ہونا "
حاجی احمد سعید کا روم سے واپس آنا "
سری نگر کے زمیندار پر فوج "
۲۹ واں برس ۱۰۵
بادشاہ کا کوچ اجمیر سے "
مالپورہ میں رانا کے بیٹے کا حاضر آنا اور اوسکا نام سوبہاگ سنگہ رکہا جانا "
سعد اللہ خان کی چتوڑ سے واپسی "
رانا کے بیٹے کو رخصت "
اورنگ زیب کے بیٹے محمد سلطان کا حاضر آنا ۱۰۶
بادشاہ فتح پور میں "
بادشاہ کا آگرہ ہو کر دہلی کو روانہ ہونا "

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

〃	मोहम्मदसुलतानकोरुखसत·	محمد سلطان کو رخصت	۱۰۶
१०७	ईरानके वज़ीरकेभानजेकाहाज़िर होकर नोकरहोना·	ایران کے وزیر کے بھانجہ کا حاضر ہوکر نوکر ہونا	۱۰۷
〃	बादशाह किलेशाहजहानाबादमें·	بادشاہ قلعہ شاہجہان آباد میں	〃
〃	दाराशिकोहको ३० लाखरुपया और २५०००० काजवाहरइनायतहोनाऔर तख्तके पासकुरसी पर बैठनेका हुक्म·	دارا شکوہ کو ۳۰ لاکھ روپیہ ساڑھے تین لاکھ کا جواہر عنایت ہونا اور تخت کے پاس کرسی پر بیٹھنے کا حکم	〃
〃	सुलेमानशिकोहके मनसबमें इज़ाफ़ा·	سلیمان شکوہ کے منصب میں اضافہ	
१०८	शायस्तेखांकोमालवेकी सूबेदारी·	شایستہ خان کو مالوہ کی صوبہ داری	۱۰۸
〃	मोहम्मद सालह को मोतमिदखां का खिताब·	محمد صالح کو معتمد خاں کا خطاب	〃
〃	बादशाहका दाराशिकोहके मकान परजाना सादुल्लाखां और जसवंतसिंघ वगैरा बड़े२ अमीरोंको खिलअत मिलना·	بادشاہ کا دارا شکوہ کے مکان پر جانا سعد اللہ خان اور جسونت سنگھ وغیرہ بڑے بڑے امیروں کو خلعت ملنا	〃
१०९	सिरोहीके राव अखेराजका हाज़िर होना·	سروہی کے راؤ اکھے راج کا حاضر ہونا	۱۰۹
〃	हरजी बोहरेके ४ घोड़े नज़र होना·	ہرجی بوہرہ کے چار گھوڑے نظر ہونا	〃
〃	शाहशुजाअके भेजेहुवे ५२ घोड़े बंगालेसे आना·	شاہ شجاع کے بھیجے ہوئے ۵۲ گھوڑے بنگالہ سے آنا	〃
〃	मोहमदसुलतान को १ किरोड़ दाम इनायत·	محمد سلطان کو ایک کروڑ دام عنایت	〃
〃	मुल्लाशफ़ीआयको दानिशमंदखां का खिताब·	ملا شفیعائے کو دانشمند خان کا خطاب	〃
〃	हकीमसालहको ज़रजेब इनायतहोना	حکیم صالح کو زر جیب عنایت ہونا	〃
११०	आदिलखांके वास्ते सोनेकी तख़्ती भेजना —	عادل خاں کے واسطے سونے کی تختی بھیجنا	۱۱۰
〃	नई ईदगाहमें नमाज़ पढ़ना·	عیدگاہ جدید میں نماز	〃
〃	रूमके वकीलका वापसजातेहुवे रस्तेमें मरना·	سفیر روم کا واپس جاتے ہوئے رستہ میں مرنا	〃
१११	३० वां बरस	۳۰ واں برس	۱۱۱
〃	औरंगज़ेबको ६ लाखरुपयेइनायतहोना·	اورنگ زیب کو چھ لاکھ روپیہ عنایت ہونا	〃
〃	क़ुतुबुलमुल्कके नोकर मीरजुमला का करनाटकको फ़तहकरना और क़ुतुबुलमुल्क काउससे नाराज़होना	قطب الملک کے نوکر میر جملہ کا ملک کرناٹک کو فتح کرنا اور قطب الملک کا اوس سے ناراض ہونا	〃

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

११२	मीरजुमला का औरंगज़ेब से मिलावट करना और औरंगजेब का बादशाह से उसके वास्ते ५ हज़ारी मनसब मंगवाना।	میر جملہ کا اورنگ زیب سے سازش کرنا اور اورنگ زیب کا بادشاہ سے اوسکے واسطے پانچہزاری منصب منگوانا	112
"	शाहशुजाअ के बेटे का बंगाले से आना।	شاہ شجاع کے بیٹے کا بنگالہ سے آنا	"
"	बादशाह की ६५वीं सालगिरह में दाराशिकोह का मनसब ४० हज़ारी हो जाना।	بادشاہ کی ۶۵ ویں سالگرہ میں داراشکوہ کا چہل ہزاری منصب ہوجانا	"
"	सुलेमान शिकोह का ८ हज़ारी होना और ठट्ठे की सूबेदारी मिलना।	سلیمان شکوہ کا آٹھہ ہزاری ہونا اور ٹھٹھہ کی صوبہ داری ملنا	"
"	शाहशुजाअ के बेटे जैनुल आबदीन को ७ हज़ारी मनसब मिलना।	شاہ شجاع کے بیٹے زین العابدین کو سات ہزاری منصب ملنا	"
"	६६वीं सालगिरह के दरबार में १० लाख रुपये शुजाअ को और १ लाख औरंगज़ेब के बेटों को इनायत होना।	۶۶ ویں سالگرہ کے دربار میں ۱۰ لاکھہ روپیہ شجاع کو اور ایک لاکھہ اورنگ زیب کے بیٹوں کو عنایت ہونا	112
११३	काशग़र के वकील का आना।	کاشغر کے وکیل کا آنا	113
"	सुलतान ज़ैनुल आबदीन की रुखसत	سلطان زین العابدین کو رخصت	"
११४	जवार के ज़मींदार स्रीपत की ज़मींदारी राव करण को इनायत होना।	سری پت زمیندار جوار کی زمینداری راؤ کرن کو عنایت ہونا	114
	३०वां जलूसी सन।	۳۰ واں جلوسی سن	
"	सादुल्लाखां वज़ीर का मरना और उसके बेटों की परवरिश।	سعد اللہ خاں وزیر کا مرنا اور اوسکے بیٹوں کی پرورش	"
११५	राय रघुनाथ को राय रायां का खिताब और दीवानी का काम।	راے رایان کا خطاب راے رگھناتھہ کو اور دیوانی کا کام	115
"	चंद्रभान को राय का खिताब पाकर हिन्दू मुनशियों पर अफसर होना।	چندربھان کا راے کے خطاب سے مشرف ہو کر ہندو منشیوں پر افسر ہونا	"
"	सादुल्लाखां वज़ीर के गुण और उसके हुक्म।	سعد اللہ خاں وزیر کے اوصاف اور احکام	"
११६	दरबार का हाल।	دربار کا حال	116
"	आदिलखां और कुतुबुलमुल्क की पेशकशें आना।	عادلخاں اور قطب الملک کی پیشکش	"
"	कमाऊं के ज़मींदार बहादुरचंद का हाज़िर होना और उसको २ परगने इनायत होना।	بہادر چند زمیندار کماون کی حاضری اور اوسکو دو پرگنہ عنایت	"

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१२०	हयातखां को लकवा मारना।	حیات خاں کو لقوہ مارنا	١٢٠
〃	बालाघाट के दीवान का दक्खन में उम्दा बंदोबस्त करना।	بالاگھاٹ کے دیوان کا دکھن میں عمدہ بندوبست	〃
१२२	पठानों का फसाद।	پٹھانوں کا فساد	١٢٢
〃	गोलकुंडे की मोहिम।	گولکنڈہ کی مہم	
१२३	कुतुबुल्मुल्क का मीरजुमले के बेटे को पकड़ना और बादशाह का हुक्म उसके छुड़ाने के वास्ते औरंगज़ेब को पहुंचना।	قطب الملک کا میر جملہ کے بیٹے کو پکڑنا اور بادشاہ کا حکم اوسکے چھوڑانے کے واسطے اورنگ زیب کو پہونچنا	١٢٣
१२४	औरंगज़ेब का मोहम्मद सुलतान को गोलकुंडे पर भेजना और फिर खुद भी रवाने होना।	اورنگ زیب کا محمد سلطان کو گولکنڈہ بھیجنا اور پھر خود بھی روانہ ہونا	١٢٤
〃	कुतुबुल्मुल्क का मोहम्मद अमीन को छोड़ देना।	قطب الملک کا محمد امین کو چھوڑ دینا	
१२५	मोहम्मद सुलतान की हैदराबाद पर चढ़ाई और कुतुबुल्मुल्क का गोलकुंडे में चला जाना और मोहम्मद सुलतान के पास जवाहरात का संदूकचा भेजना।	محمد سلطان کی حیدرآباد پر چڑھائی اور قطب الملک کا گولکنڈہ میں چلا جانا اور محمد سلطان کے پاس جواہرات کا صندوقچہ بھیجنا	١٢٥
१२६	हैदराबाद का लुट जाना।	حیدرآباد کا لٹ جانا	١٢٦
१२७	कुतुबुल्मुल्क और मीरजुमला का मोहम्मद सुलतान के पास नज़राना भेजना।	قطب الملک اور میر جملہ کا محمد سلطان کے پاس نذرانہ بھیجنا	١٢٧
〃	औरंगज़ेब का हैदराबाद पहुंचना और कुतुबुल्मुल्क की फ़ौज से लड़ाई होना।	اورنگ زیب کا حیدرآباد پہونچنا اور قطب الملک کی فوج سے لڑائی ہونا	〃
〃	कुतुबुल्मुल्क का औरंगज़ेब के वास्ते जवाहरात भेजना मगर औरंगज़ेब का उसको कबूल न करना।	قطب الملک کا اورنگ زیب کے واسطے جواہرات بھیجنا مگر اورنگ زیب کا قبول نہ کرنا	〃
१२८	कुतुबुल्मुल्क का अपने सिपाहियों को लड़ने का हुक्म देना और इधर से मालूजी दखनी का उनके ऊपर जाना।	قطب الملک کا اپنے سپاہیوں کو لڑنے کا حکم دینا اور ادھر سے مالوجی دکھنی کا اوسکے اوپر جانا	١٢٨
१२९	औरंगज़ेब का ... करनाटकी बरकंदाज़ों से लड़ने को जाना।	اورنگ زیب کا ہزار کرناٹکی برقندازوں سے لڑنے کو جانا	١٢٩
〃	ज़मीदार चांदा का मदद के वास्ते आना।	زمیندار چاندا کا مدد کے واسطے آنا	١٢٩
〃	शायस्ताखां और इफ़्तखारखां वग़ैरा अमीरों का बादशाह के हुक्म से औरंगज़ेब की मदद को आना।	شایستہ خاں اور افتخار خاں وغیرہ امیروں کا بادشاہ کے حکم سے اورنگ زیب کی مدد کو آنا	〃

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१३०	मोहम्मदसुलतानके वास्ते ७ हज़ारी मनसब पहुंचना-	محمد سلطان کے واسطے سات ہزاری منصب ہونچنا	۱۳۰
〃	कुतुबुल्मुल्कके कसूरोंकी माफ़ीका फ़रमान आना मगर औरंगज़ेबका उसको छुपा रखना और कुतुबुलमुल्क को तंग करना-	قطب الملک کے قصوروں کی معافی کا فرمان آنا مگر اورنگ زیب کا اوسکو چھپا رکھنا اور قطب الملک کو تنگ کرنا	〃
१३१	कुतुबुल्मुल्कका अपनी मांको भेजना और उसका अपने बेटे के कसूर माफ़ कराकर मोहम्मद सुलतानकी शादी अपनी पोतीसे ठहराजाना-	قطب الملک کا اپنی ماں کو بھیجنا اور اوسکا اپنے بیٹے کے قصور معاف کراکر محمد سلطان کی شادی اپنے پوتی سے ٹھہرا جانا	۱۳۱
१३२	दखनियोंसे और बादशाही फ़ौज से लड़ाई हो पड़ना-	دکھنیوں سے اور بادشاہی فوج سے لڑائی ہو پڑنا	۱۳۲
〃	मीरजुमलेका करनाटक से औरंगज़ेबके पास आना-	میر جملہ کا کرناٹک سے اورنگ زیب کے پاس آنا	〃
१३३	मोहम्मदसुलतानका निकाह कुतुबुल्मुल्ककी बेटीसे १० लाख रुपया और रामगढ़का इलाक़ा डायजेमें आना	محمد سلطان کا نکاح قطب الملک کی بیٹی سے ۱۰ لاکھ روپیہ اور رام گڑہ کا علاقہ جہیز میں آنا	۱۳۳
१३४	औरंगज़ेबका मीरजुमलेके मकान पर आकर उसकी नज़र लेना	اورنگ زیب کا میر جملہ کے مکان پر جاکر اوسکی نذر لینا	۱۳۴
१३५	औरंगज़ेबका कूच गोलकुंडेसे औरंगाबादको	اورنگ زیب کا کوچ گولکنڈہ سے اورنگ آباد کو	۱۳۵
१३६	मीरजुमलाके वास्ते फ़रमान और मोअज़्ज़मख़ांका ख़िताब और उसका बादशाहकी ख़िदमतमें रवाने होना-	میر جملہ کے واسطے فرمان اور معظم خان کا خطاب اور اوسکا بادشاہ کی خدمت میں روانہ ہونا	۱۳۶
१३७	अमीरोंके इज़ाफ़े और शायस्ताख़ांको ख़ानजहांका ख़िताब-	امیروں کے اضافے اور شایستہ خاں کو خان جہاں کا خطاب	۱۳۷
〃	कुतुबुल्मुल्कको २०००००) की माफ़ी	قطب الملک کو ۲۰ لاکھ کی معافی	〃
१३८	बांधोंगढ़के ज़मीदार अनोपसिंघका हाज़िर होना-	باندھوں گڑہ کے زمیندار انوپ سنگہ کا حاضر آنا	۱۳۸
〃	बादशाहका इनसाफ़ मुत्सद्दी बंदर सूरतको सांपसे कटानेकी सज़ा और राजा रुघनाथकी अरज़से उसका बचाव-	بادشاہ کا انصاف متصدی بندر سورت کو سانپ سے کٹانے کی سزا اور راجہ رگھناتھہ کی عرض سے اوسکا بچاؤ	〃
१४०	मीरजुमलेका वज़ीर होना-	میر جملہ کا وزیر ہونا	۱۴۰
१४१	शाहज़ादे मुरादकी दूसरी शादी-	شاہزادہ مراد کی دوسری شادی	۱۴۱
	३१ वां बरस	۳۱ واں برس	
१४२	सुलेमानशिकोहकी शादी-	سلیمان شکوہ کی شادی	۱۴۲
〃	मीरजुमलेके बेटे मोहम्मद अमीनका हाज़िर होना-	میر جملہ کے بیٹے محمد امین کا حاضر آنا	〃

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

१४२ बीजापुर की मोहिम·
" आदिलखां व उसके गुलामों का अली नाम १ शख़्स को तख़्त पर बैठाना और औरंगजेब को उस मुल्क के फ़तह करने का हुक्म मोअज़्ज़म ख़ां वज़ीर वग़ैरा अमीरों का शाहज़ादे की मदद पर जाना·
" रायरायां का क़ायम मुक़ाम वज़ीर होना·
१४४ महाबतखां राजा रायसिंघ राजा सुजानसिंघ बुंदेला वग़ैरा की तईनाती·
" दिल्ली में मरी और बादशाह का सोरों की तरफ़ जाना·
१४६ बादशाह दिल्ली में और ६६वीं सालग्रह·
" दाराशिकोह का इज़ाफ़ा·
" सिपेहरशिकोह और मोहम्मद अमीनखां का इज़ाफ़ा·
१४७ बहादुरखां को काबुल की सूबेदारी·
" फिर मरी का फैलना और बादशाह का मुखलिसपुर को जाना·
" मुखलिसपुर में मकान बनाने के लिये दाराशिकोह और सिपेहशिकोह को रुपये देना·
" शाहजहानाबाद का कोट·
१५० ३३ वां जलूसी सन·
" बलख़ के वकील का आना·
" क़ुतुबुल्मुल्क की पेशकशें·
" बादशाह दिल्ली में·
" अली मरदानखां का इन्तक़ाल·
१५२ बीजापुर की मोहिम·
१५३ औरंगजेब का क़िले बिदुर को फ़तह करना·
१५४ बीजापुर वालों पर महाबतखां और राव शत्रुसाल वग़ैरा की फ़तह·
१५६ सेवा और रमनजी भोंसले के मुक़ाबिले पर नुसरत और राव करण वग़ैरा का तईनात होना·

۱۴۲ بیجاپور کی مہم
" عادل خاں کا مرنا۔ اوسکے غلاموں کا علی نام ایک شخص کو تخت پر بٹھانا اورنگ زیب کو اوس ملک کے فتح کرنے کا حکم معظم خاں وزیر وغیرہ امیروں کا بادشاہزادہ اورنگ زیب کی مدد پر جانا
" رائے رایاں کا قائمقام وزیر ہونا
۱۴۴ مہابت خاں راجہ رائے سنگھ راجہ سجان سنگھ بندیلہ وغیرہ کی بہی تعیناتی
" دہلی میں طاعون اور بادشاہ کا سوروں کی طرف جانا
۱۴۶ بادشاہ دلی میں اور ۶۶ ویں سالگرہ
۱۴۶ دارا شکوہ کا اضافہ
" سپہر شکوہ اور محمد امین خاں کا اضافہ
۱۴۷ بہادر خاں کا کابل کی صوبہ داری
" پہر طاعون کا شیوع اور بادشاہ کا مخلص پور کو جانا
" مخلص پور میں مکان بنانے کے لیئے دارا شکوہ اور سپہر شکوہ کو روپیہ دینا
" شاہجہاں آباد کا کوٹ
۱۵۰ ۳۳ واں جلوسی سن
" بلخ کے وکیل کا آنا
" قطب الملک کی پیشکش
" بادشاہ دہلی میں
" علی مردان خاں کا انتقال
۱۵۲ بیجاپور کی مہم
۱۵۲ اورنگ زیب کا قلعہ بدر کو فتح کرنا
۱۵۴ بیجاپور والوں پر مہابت خاں اور راو ستروسال وغیرہ کی فتح
۱۵۶ سیوا اور رمن جی بہوسلہ کے مقابلہ پر نصرت خاں اور راو کرن وغیرہ کا تعینات ہونا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१५७	औरंगज़ेबका कलियानी के क़िले को घेरना·	اورنگ زیب کا قلعہ کلیانی کو محاصرہ	١٥٧
,,	उदयपुर की फ़ोजके सरदार शिव राम का माराजाना·	اودےپور کی فوج کے سردار شیورام کا مارا جانا	,,
१५८	राजारायसिंघ और सुजानसिंघ का ज़खमी होना·	راجہ راے سنگہ اور سجان سنگہ کا زخمی ہونا	١٥٨
,,	औरंगज़ेबकी १ और फ़तह दखिनयोंपर·	اورنگ زیب کی ایک اور فتح دکھنیوں پر	١٥٨
,,	सेवाजीकी हार·	سیواجی کی شکست	,,
,,	तिलंगानेकी और झंझोलीके क़िलेकी फ़तह·	تلنگانہ اور جھنجھوبی کے قلعوں کی فتح	,,
१६०	कल्याणीकी फ़तह·	کلیانی کی فتح	١٦٠
१६१	बादशाह का औरंगज़ेबको कल्याणी और रामगढ देना·	بادشاہ کا اورنگ زیب کو کلیانی اور رام گڈہ دینا	١٦١
,,	बिदुक़ानाम ज़फ़राबाद·	بدر کا نام ظفرآباد	,,
,,	मीरजुमला को करनाटक इनायत·	میر جملہ کو کرناٹک عنایت	,,
१६२	आदिलखांका डेढ़ किरोड़ रुपीया कोंकनका मुल्क और [illegible] का क़िला देना और के सुलह करना·	عادلخانکا ڈیڈہ کرور روپیہ کوکن کا ملک اور پرینڈہ کا قلعہ دیکر کے صلح کرنا	١٦٢
,,	औरंगज़ेबको वापसीका हुक्म·	اورنگ زیب کو واپسی کا حکم	,,
,,	बादशाहका बीमार होना·	بادشاہ کا بیمار ہونا	,,
१६३	दाराशिकोहका ५० हज़ारी मनसब बीमारी की ख़िदमतमें	داراشکوہ کا پچاس ہزاری منصب بیماری کی خدمت میں	١٦٣
१६४	औरंगजेबके बेटे अकबरकी पैदाइश·	اورنگ زیب کے فرزند اکبر کی ولادت	١٦٤
,,	मीरजुमला को वज़ीरातसे मोक़ूफ़ कियाजाना·	میر جملہ کا وزارت سے موقوف کیا جانا	,,
,,	क़ायमबेगका हलबमें मरना·	قایم بیگ کا حلب میں مرنا	,,
१६५	३१ वां बरस·	آٹھواں برس	١٦٥
,,	बादशाहका कूच आगरे को·	بادشاہ کا کوچ آگرہ کو	,,
,,	औरंगज़ेबका औरंगाबाद पहुंचना·	اورنگ زیب کا اورنگ آباد پہونچنا	,,
१६६	बादशाह आगरे में·	بادشاہ آگرہ میں	١٦٦
,,	६९ वीं साजगह और आराम होने की खुशी में दाराशिकोह को	۶۹ ویں سالگرہ اور ارام ہونیکی خوشی داراشکوہ کو ۶۰ ہزاری اور	,,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

	६० हज़ारी और सुलेमानशिकोह को १२ हज़ारी मनसब होना।	اور سلیمان شکوہ کو ۱۲ ہزاری منصب ہونا	
१६८	जाफ़रखां का वज़ीरकुल होना।	جعفر خاں کا وزیر کل ہونا	۱۶۸
〃	रायरायां को हिसाबों और परवानों पर दस्तख़त करने का हुक्म।	رائے رایاں کو حسابوں اور پروانوں پر دستخط کرنے کا حکم	〃
〃	मुल्ला अब्दुल हकीम स्यालकोटी का मरना।	ملا عبدالحکیم سیالکوٹی کا وفات پانا	〃
〃	महाबतखां को काबुल की सूबेदारी मिलना।	مہابت خاں کو کابل کی صوبہ داری ملنا	〃
१६९	बादशाह का छत्रभंग होना।	زوال سلطنت بادشاہ	۱۶۹
〃	बादशाह की बीमारी में डाक बंद होने से बादशाह के मरने की ख़बर उड़ जाना।	بادشاہ کی بیماری میں ڈاک بند ہونے سے بادشاہ کے مرنے کی خبر اڑ جانا	〃
〃	मुरादबख़्श का गुजरात में बादशाह बन बैठना और शुजाअ का बंगाले से चलकर बनारस तक क़ब्ज़ा कर लेना।	مراد بخش کا گجرات میں بادشاہ بن بیٹھنا اور شجاع کا بنگالہ سے چلکر بنارس تک قبضہ کر لینا	〃
१७०	दाराशिकोह का बादशाह से कहकर सुलेमानशिकोह और राजा जयसिंघ को शुजाअ के ऊपर भेजना।	دارا شکوہ کا بادشاہ سے کہکر سلیمان شکوہ اور راجہ جے سنگھ کو شجاع پر بھیجنا	۱۷۰
१७१	शुजाअ का सुलेमानशिकोह से लड़ाई हार कर माफ़ी मांगना।	شجاع کا سلیمان شکوہ سے لڑائی ہار کر معافی مانگنا	۱۷۱
१७२	सुलेमानशिकोह को २० हज़ारी और जयसिंघ को ६ हज़ारी मनसब।	سلیمان شکوہ کو بیس ہزاری اور جے سنگھ کو چھ ہزاری منصب	۱۷۲
〃	दाराशिकोह का औरंगज़ेब के पास से महाबतखां वग़ैरा अमीरों को वापस बुलाना और औरंगज़ेब का मीरजुमला को क़ैद कर देना।	دارا شکوہ کا اورنگ زیب کے پاس سے مہابت خاں وغیرہ امیروں کو واپس بلانا اور اورنگ زیب کا میر جملہ کو قید کر دینا	〃
१७४	महाराजा जसवंतसिंघ को ७ हज़ारी मनसब और मालवे की सूबेदारी देकर औरंगज़ेब का रास्ता रोकने को भेजना।	مہاراجہ جسونت سنگھ کو ہفت ہزاری منصب اور مالوہ کی صوبہ داری دیکر اورنگ زیب کا راستہ روکنے کے لئے بھیجنا	۱۷۴
१७५	क़ासिमखां को गुजरात की सूबेदारी देकर मुरादबख़्श के ऊपर रवाने करना।	قاسم خاں کو گجرات کی صوبہ داری دیکر مراد بخش کے اوپر روانہ کرنا	۱۷۵

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१७५	मुराद बख़्श और औरंगज़ेब का महाराजा जसवंत सिंघ और कासम ख़ां को उज्जैन के पास लड़ाई में हरा कर आगरे को रवाने होना.	مراد بخش اور رنگ زیب کا مہاراجہ جسونت سنگہ اور قاسم خان کو اوجین کے پاس لڑائی میں شکست دیکر آگرہ کو روانہ ہونا	۱۷۵
१७७	दारा शिकोह का औरंगज़ेब के मुक़ाबिले पर जाना.	داراشکوہ کا اورنگ زیب کے مقابلہ پرجانا	۱۷۷
"	औरंगज़ेब की अरज़ी बादशाह को दाराशिकोह को पंजाब में भेज देने के वास्ते	اورنگ زیب کی عرضی داراشکوہ کو پنجاب میں بھیجدینے کے واسطے۔	"
	दाराशिकोह पर औरंगज़ेब की फ़तह रुस्तम ख़ां राव शत्रुसाल हाड़ा राजा रूपसिंघ राठौड़ राम सिंघ राजा सेवाराम गोड़ और अरजुन गोड़ वग़ैरा का काम आना.	داراشکوہ پر اورنگ زیب کی فتح رستم خان راو ستر وسال ہاڑا راجہ روپ سنگہ راٹھور۔ رام سنگہ راجہ سیوارام گوڑ اور ارجن گوڑ وغیرہم کا کام آنا۔	۱۸۱
"	दाराशिकोह का दिल्ली को जाना और औरंगज़ेब का आगरे में दाख़िल होना और बाप को क़ैद कर देना.	داراشکوہ کا دہلی کو جانا اور اورنگ زیب کا آگرہ میں داخل ہونا اور باپ کو قید کرنا	"
१८६	मुग़ल बादशाहों में बाप से बग़ावत	مغل بادشاہوں میں باپ سے بغاوت	۱۸۶
१८९	शाहजहां बादशाह का फ़ुटकर हाल	شاہ جہاں بادشاہ کا متفرق حال	۱۸۹
"	अमलदारी.	عملداری	"
१९०	सूबेदार और अमला.	صوبہ دار اور عملہ	۱۹۰
१९१	जमाबंदी.	جمعبندی	۱۹۱
"	आमदनी	آمدنی	"
१९३	ख़ज़ाना.	خزانہ	۱۹۳
१९५	सिक्का.	سکہ	۱۹۵
१९६	ख़र्च.	خرچ	۱۹۶
१९७	इनाम और ख़ैरात	انعام اور خیرات	۱۹۷
१९९	बादशाही जश्न.	جشن اور تقریبات سلطنت	۱۹۹
२०१	लश्कर	لشکر	۲۰۱
—	मनसबदार.	منصب دار	۲۰۳
२०३	बड़े २ मनसबदार.	بڑے بڑے منصب دار	
२०६	मनसबदारों की आख़री लिस्ट.	منصب داروں کی اخیر لیسٹ	۲۰۶

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

२०६	शाहज़ादे	شاہزادے	۲۰۶
"	उमराव	اُمراو	
२०७	शाहज़ादोंकी १८ आसामियोंकी तफ़सील	شاہزادوں کی ۱۸- آسامیاں اور اُن کی تفصیل	۲۰۷
२०८	मुसलमान उमराव	مسلمان اُمرا	۲۰۸
"	हिन्दू अमीर	ہندو اُمرا	"
"	सातहज़ारी	ہفت ہزاری	"
२०९	पांचहज़ारी	پانچ ہزاری	۲۰۹
२१०	तीन हज़ारी	تین ہزاری	۱
२११	ढाईहज़ारी	ڈہائی ہزاری	۲۱
"	दो हज़ारी	دو ہزاری	
२१२	डेढ़हज़ारी	ڈیڑہ ہزاری	۲۱۲
२१३	हज़ारी	ہزاری	۲۱۳
२१५	नौसदी	نہ صدی	۲۱۵
"	आठसदी	آٹھ صدی	"
२१६	सात सदी	ہفتصدی	۲۱۶
२१७	छः सदी	ششصدی	۲۱۷
२१८	दक्खनकी सल्तनतें	دکہن کی سلطنیتں	۲۱۸
२१९	दस्तकारी और कारीगरी	دستکاری اور کاریگری	۲۱۹
२२२	शाहजहां बादशाहके गुण	شاہ جہان بادشاہ کے اوصاف	۲۲۲
२२७	दिनचरिया	اشغال شبانہ روزی	۲۲۷
२४०	सूरत शकल	خط وخال بادشاہ	۲۴۰
२४१	भाषा	بادشاہ کی زباندانی	۲۴۱
२४३	आगरेके किले और सूबेका हाल	بیان قلعہ وشہر وصوبہ آگرہ	۲۴۳
२४५	बादशाहके राजका मांप	عرض وطول سلطنت شاہ جہاں	۲۴۵
२४६	बड़े २ शहरोंकी दूरी दिल्लीसे	بڑے بڑے شہرونکا فاصلہ دہلی سے	۲۴۶
२४९	आगरेसे	آگرہ سے	۲۴۹
२५०	समकालीन सल्तनतें	سلطنتیں ہم عہد	۲۵۰
"	तूरान	توران	"
२५६	ईरान	ایران	۲۵۶
२५९	खातिमा	خاتمہ	۲۵۹

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीसरा हिस्सा

२१ वें बरस का बाक़ी हाल

बलख की मुहिम

असाढ़ सुदि २ बृहस्पति वार संबत १७०३ को २१ वां जलूसी बरस शुरू हुआ मामूल के माफ़िक नौरोज़ की खुशी के जलसे हुवे

असाढ़ सुदि ७ को बादशाह ने उज़बकों के बलख पर आने की ख़बर सुनकर शाहज़ादे मुराद को उस तरफ़ रवाने किया मगर वह चारीकार तक पहुंचकर दूसरा हुक्म पहुंचने से ७ वें दिन पीछा लौटा क्यों कि उज़बकों ने अपना इरादा बदल दिया था

जब शाहज़ादा मुराद बख़्श हाज़िर हुआ तो बादशाह ने उसको खिलअत और पन्ने का सिरपेच देकर कशमीर की सूबेदारी पर भेज दिया

नज़र मोहम्मद ख़ां ने ईरान से

تیسرا حصہ

۲۱ ویں برس کا بقیہ حال

بلخ کی مہم

روز پنجشنبہ غرہ جمادی الثانی ۱۰۵۷ھ مطابق ۲۶ جون ۱۶۴۷ء سے اکیسواں جلوسی سنہ شروع ہوا معمول کے موافق نوروز کے جشن آراستہ ہوئے بادشاہ نے اوزبکون کے بدخشان پر آنے کی خبر سنکر ۵ جمادی الثانی کو شاہزادہ مراد بخش کو اوسطرف روانہ کیا مگر یہ سنا کہ اوزبکون نے اپنا ارادہ فسخ کر دیا ہے اسلئے شاہزادہ کو واپسی کا حکم لکھا جسکے پہونچنے پر چھ دن بعد اوسنے مقام چاریکار سے مراجعت کی۔

جب شاہزادہ مراد بخش حاضر آیا تو بادشاہ نے اوسکو خلعت اور زمرد کا سرپیچ دیکر کشمیر کی صوبہ داری پر روانہ کر دیا۔

نذر محمد خان نے ایران سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाउमेद वापस आकर शाह
ज़ादे औरंगज़ेब से सिष्टाचा
री की शाहज़ादे ने बादशाह
को अरज़ी लिखी बादशाह
ने जवाब भेजा कि जो नज़
रमोहम्मद खां आकर शाह
ज़ादे से मुलाक़ात करे तो बा
दशाही फ़ौजें उसको बलख
और बदख़्शां पीछा देकर ह
ट आवें

भादों सुदि २ को बादशाह
काबुल से लाहोर को रवा
ने हुवे और शाहज़ादे शुजा
अ को औरंगज़ेब के वापस
आने तक काबुल में छोड़
आये

शहरंद के अमीन तोडर
मल की कारगुज़ारी से खु
श होकर बादशाह ने उस
के मनसब में पांचसदी ज़ा
त का इज़ाफ़ा फरमाया और
उस को राजा का ख़िताब भी
बख़शा अब उस का मनस

ناکام لوٹ کر شاہزادہ
اورنگ زیب کو صلح کے
واسطے خط بھیجا شاہزادہ
نے وہ خط معہ اپنی عرضی کے
بادشاہ کے پاس بھیجدیا
بادشاہ نے جواب بھیجا کہ اگر
نذر محمد خان آکر تمسے ملے تو
بلخ اور بدخشان اوسکو دیکر
اپنی فوجین وہان سے
اٹھالو

سلخ رجب کو بادشاہ
کابل سے لاہور کو روانہ
ہوے اور شاہزادہ
شجاع سے کہہ آے
کہ جب اورنگ زیب
کابل کے حد مین آجاوے
تو تم چلے آنا

توڈرمل امین سہرند کی
حسن خدمت سے
خوش ہوکر بادشاہ
نے اوسکی منصب مین
پانصدی ذات کا اضافہ
کیا کہ جواب

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब असल और इज़ाफ़े से २ हज़ारी ज़ात और २ हज़ार सवार का होगया।

जब बादशाह की सवारी अटक से उतरी तो शाहज़ादे दाराशिकोह अपने बेटे सुलेमान शिकोह के समेत लाहोर से पेशवाई को आया बादशाह ने १ हीरा १०० रती भर का जिसकी कीमत १ लाख रुपये की थी खिलअत और घोड़ों समेत उसको इनायत किया—

कातिक सुद ७ को बादशाह लाहोर में पहुंचे और मंगसर बद ५ को आगरे की तरफ रवाने हुवे—

मंगसर सुदि ४ को सहरंद में दखन के सूबेदार इसलाम खां के मरने की खबर पहुंची बादशाह ने उसके भाई और बेटों को खिलअत भेजकर मालवे के सूबेदार शाहनवाज़ खां को लिखा कि औरंगाबा

اصل اور اضافہ سے دو ہزاری دو ہزار سوار کا ہوگیا اور اسکو راجہ کا خطاب بہی مرحمت فرمایا -

جب بادشاہ کی سواری دریائے اٹک سے اوتری تو شاہزادہ داراشکوہ نے لاہور سے آکر ملازمت کی بادشاہ نے اوسکو ایک ہیرا قیمتی ایک لاکھ روپیہ کا جو وزن مین سو رتی بہر تھا مع خلعت اور گہوڑون کے عنایت کیا -

۵ شوال کو بادشاہ لاہور مین پہونچے اور ۱۹ کو آگرہ کی طرف روانہ ہوئے -

۳ ذی قعدہ کو مقام سہرند مین دکن کے وقایع سے بادشاہ کو عرض ہوی کہ اسلام خان صوبہ دار دکن مرگیا بادشاہ نے اوسکے بہائی اور بیٹون کیواسطے ماتمی کی خلعت بہیجکر مالوہ کے صوبہ دار شاہ نواز خان کو لکہا کہ تا پہونچنے دوسرے صوبہ دار کے اورنگ آباد

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द में पहुंच कर वहां के बंदोबस्त से ख़बरदार रहे -

बल्ख़ की मोहिम का ख़ातमा

नज़र मोहम्मद ख़ां की अरज़ी पहुंची कि शाहज़ादे के पास हाज़िर होने से पहिले मैं मने" का क़िला मुझको इनायत हो जावे बादशाह ने जवाब में लिखा कि हाज़िर होने के बाद उसकी दरख़्वास्त से बढ़ कर इनायत होगी मगर नज़र मोहम्मद ख़ां मारे वहम के ख़ुद तो बीमारी का बहाना करके शाहज़ादे के पास हाज़िर न हुआ और अपने पोते कासम सुलतान को भेज दिया बादशाहज़ादे ने उसको गद्दी पर अपने बराबर बैठाया उस वक़्त नाज का काल था और बरफ़ भी गिरने वाला था इसके सिवाय बल्ख़ के सूबे का ख़रच भी आमदनी से ज़ियादा

پہنچکر وہاں کا بندوبست کرے

بلخ کی مہم کا خاتمہ

نذر محمد خان کی عرضی پہونچی کہ شاہزادہ کے پاس حاضر ہونے سے پہلے میمنہ کا قلعہ مجھکو عنایت ہوجاے بادشاہ نے لکہا کہ حاضر ہونے کے بعد اوسکی درخواست سے بڑہ کر عنایت ہوگی مگر نذر محمد خان نے توہم سے فسخ عزم حاضری کرکے اپنے پوتے محمد قاسم کے ہاتھہ بیماری کا عذر لکہہ بہیجا اور خود حاضر نہوا

بادشاہزادہ نے محمد قاسم سلطان کو اپنے برابر گدی پر بٹھایا اور اچھی طرح سے ملاقات کی

اوسوقت غلہ کمیاب تھا اور برف بھی پڑنے والا تھا علاوہ اسکے آمدنی اور خرچ زیادہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

था और उज़बक हर वक़्त फ़ि
साद करने को तैयार रहते थे इ
सलिये औरंगज़ेब ने बादशा
ह के हुक्म का इन्तज़ार न कर
के बलख और बदख़्शां का
मुल्क नज़र मोहम्मद खां के वा
स्ते छोड़कर फ़ैज़ाबाद से कूच
किया और बलख का क़िला
६ लाख रुपये की रोकड़ और
जिनस समेत क़ासिम सुल
तान और कफ़श क़लमाक़ को
सौंप दिया-

राजा जयसिंह भी त्रिमिज़
से आकर शामिल हो गया-

शुरू मोहिम बलख से उस
दिन तक कि शाहज़ादे ने ब
लख छोड़ा २ किरोड़ रुपया
तो तनख़्वाहों में और २ किरोड़
सामानों में ख़र्च हुआ था औ
र लड़ाइयों में बहुत से आ
दमी दोनों तरफ़ के मारे गये
थे ख़ासकर के ७ दिन की ल
ड़ाई में जो रात दिन बराबर

تھا اور اوزبک ہر وقت فساد
کرنے پر آمادہ رہتے تھے اسلئے
اورنگ زیب نے بلا انتظار
حکم بادشاہ کے بلخ اور بدخشان
کا ملک نذر محمد خان کے واسطے
چھوڑکر فیض آباد سے مراجعت
کی اور بلخ کا قلعہ معہ نقد وجنس
قیمتی ٦ لاکھہ روپیہ کے
قاسم سلطان اور کفش
قلماق کو سونپ دیا راجہ
جیسنگہ بھی ترمذ سے آکر
شامل ہوگیا

شروع مہم بلخ سے
اوس تاریخ تک کہ شاہزادہ
نے مراجعت کی دو کروڑ
روپیہ تو تنخواہون مین
خرچ ہوا لڑائیون مین
بہت سے آدمی دونو
طرف کے مارے
گئے خاص کر کے ۷
دن کی لڑائی مین جو رات
دن برابر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होती रही थी ६००० सवार उज़बकों के और ५००० बादशाही लशकर के काम आये थे -

आसोज सुदि १५ को शाहज़ादे ने बलख़ से कूच किया

कातिक बदि १ को लशकर घाटी से उतरा उज़बकों और अलमानों ने पीछा किया जहां थोड़े आदमी देखते हल्ला करदेते थे शाहज़ादा हर रोज़ नाज की चौकसी के वास्ते फ़ौज भेजा करता था -

कातिक बदि ४ को शमशेर ख़ां वगैरा काशग़र वालों से और अलमानों से मुठभेड़ हुई बहादुर ख़ां ने काशग़र वालों की मदद पर पहुंचकर अलमानों को भगाया -

कातक बदि ११ को शाहज़ादा ग़ोरी में पहुंचा उज़बक २ तरफ़ से चढ़कर आये अमीरुलउमरा और मोतमद ख़ां ने हिरोल की फ़ौज के साथ

ہوتی رہی تھی چھ ہزار سوار ازبک اور پانچ ہزار سوار بادشاہی کام آئے تھے

۱۴ رمضان کو شاہزادہ نے بلخ سے کوچ کیا

۱۶ کو لشکر گھاٹی سے اوترا ازبکوں اور الامانوں نے تعاقب کیا جدہر تھوڑے آدمی دیکھتے تھے حملہ کر دیتے تھے شاہزادہ ہر روز واسطے حفاظت غلہ لشکر کے ایک فوج بھیجتا تھا۔

۱۸ رمضان کو شمشیر خان وغیرہ کاشغریوں کا الامانوں سے مقابلہ ہوا بہادر خان نے کاشغریوں کی مدد پر پہونچکر الامانوں کو شکست دی

۲۵ کو شاہزادہ غوری میں پہونچا ازبک دو طرف سے ہجوم ہوا امیر الامرا اور معتمد خان نے مع فوج ہراول کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाकर उनको भगा दिया -

बादशाह का हुक्म आया था कि गोरी और कहमर्द को बादशाही अमलदारी में शामिल रखें इस लिये शाहज़ादे ने वहां २ दिन ठहर कर नूरुलहसन और ज़ुलक़दर खां को मुक़र्रर किया -

कातिक सुदि १ को ख़्वाजा ज़ाहिद के रस्ते से कूच हुआ डेरे सुरख़ाब नदी के किनारे पर हुवे मगर रस्ते में घाटी पर उज़बक और हज़ारा के लोग चारों तरफ़ से घिर आये और लशकर वालों का असबाब लूट कर ख़ज़ाने पर जा गिरे रात तक लड़ाई हुई आख़िर अमीरुलउमरा ने मदद करके उनको भगा दिया -

कातिक सुदि ३ को कूच करने के पीछे भी तंग घाटियों में दुशमन फिर नज़र आये जिस से घबरा कर के बहुत से आदमी

جاکراونکو بہگادیا

بادشاہ کا حکم آیا تھا کہ غوری اور کہمرد کو ممالک محروسہ مین داخل رکہہ کر قلعداروں کو بحال رکہین اسواسطے شاہزادہ نے وہان دو مقام کرکے نورالحسن اور ذوالقدر خان مقرر کیا

۲۹ کو خواجہ زاہد کے راستہ سے کوچ ہوا ڈیرے سرخاب کے کنارہ پر ہوئے تھے مگر راستہ مین ایک تنگ گہاٹی پر اوزبک اور ہزارہ حملہ آور ہوئے اور لشکریون کا اسباب لوٹ کر خزانہ پر جا گرے رات تک لڑائی ہوئی آخر الامر امیرالامرا نے مدد کر کے اونکو بہگایا

غرہ شوال کو کوچ کرنے کے بعد بہی تنگ راستون مین دشمنون نے ہجوم کیا بہت سے آدمی اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और जानवर घबराहट में पहाड़
से लुढककर मरगये-

हिन्दूकोह के नाके पर ७-८ ह
ज़ार उज़बकों ने शमशेरखां को
जो घास चारा लेने के लिये ग
या था घेरा और बहुत से ऊंट औ
र घोड़े घेरकर आदमियों को
भी मारा और ज़ख्मी किया
बहादुरखां मदद को जाकर श
मशेरखां को उस आफ़त से ब
चालाया-

कातिक सुदि ६ को हिन्दूकोह
की घाटी से उतरना पड़ा वह बर
फ़ से डटी हुई थी इस लिये वहां
भी आदमियों को बहुत तक
लीफ़ हुई-

कातिक सुदि ८ को गौरबंद
में और दूसरे दिन चारीकार में
मुकाम हुआ-

गौरबंद पहुंचने तक इसी तरह
३ बार और उज़बकों से मुकाबि
ला हुआ हर मुकाबिले में बहु
त से आदमी दोनों तरफ़ के मारे

جانور گھبراہٹ میں پہاڑ سے
لڑھک کر مر گئے -

ہندو کوہ کے ناکے پر سات
آٹھ ہزار اوزبکون
نے شمشیر خان کو جو گھی لینے
کے واسطے گیا تھا چاروں
طرف سے گھیر لیا اور بہت
سے اونٹ اور گھوڑے
چھین کر آدمیون کو مقتول و مجروح
کیا بہادر خان نے جا کر شمشیر خان
کو اوس تہلکہ سے بچایا
۸ کو ہندو کوہ کی گھاٹی سے
گذرے وہ برف گرنے سے
یخ بستہ تھی اسلئے وہاں
سے گذرنے میں بھی آدمیون کو
بہت تکلیف ہوئی
۹ کو غوربند میں اور ۱۰ کو چاریکار
میں مقام ہوا
غوربند پہونچنے تک
اوسیطرح تین بار اور
اوزبکون سے مقابلہ ہوا
ہر مقابلہ میں بہت سے
آدمی دونو طرفون کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गये और जरवमी हुवे-

"गोरबंद में याना बैठा कर और १० लारव रुपये जो वहां मोजूद थे लेकर रवाने हुवे जिस दिन कि गोर बंद की घाटी में उतरे हजारों आदमी कौम हज़ारा के चढ़ आये और माल असबाब जो हाथ लगा उसको लूट कर रवज़ाने पर जा गिरे यहां बादशाही बंदे बहुत काम आये और ज़रवमी हुवे पहर रात गये तक लड़ाई होती रही किसी को उमेद बचने की न थी ज़ुलफ़िक़ाररवां और नूरुलहसन जो रवज़ाने के साथ थे जरवमी होकर भी रवूब लड़े और रवज़ाने को बचा लाये-

जब हिन्दूकुश के घाट में पहुंचे तो रस्ते की तंगी और बरफ़ बरसने की तकलीफ़ से बहुत से जानवर बारबरदारी के नष्ट हुवे जो गिरा आदमियों और चोपगों के पैरों में कुचल लगया इसी तरह जिस सवार या पैदल ने ठोकर खाई वह फिर न उठ सका-

مجروح و مقتول ہوئے غور بند مین تھانہ بیٹھا کر اور دس لاکھ روپیہ کا خزانہ جو وہان موجود تھا لیکر روانہ ہوئے جس دن غور کے درہ سے گذرے ہزارون آدمی قوم ہزارہ کے شاہزادہ کے لشکر پر گھر کر لڑنے لگے اور مال اسباب جو کچھ ہاتھ آیا اوسکو لوٹ کر خزانہ پر ٹوٹ پڑے یہان بادشاہی آدمی بہت مجروح اور مقتول ہوئے پہر رات گئے تک صدائے دار و گیر بلند تھی اور کسیکو امید نجات نہ رہی تھی مگر ذوالفقار خان اور نورالحسن جو خزانہ کے ساتھ تھے باوجود زخمی ہونے کے خوب لڑے اور خزانہ کو بچا لائے

جب ہندوکش کے گھاٹہ مین پہونچے تو راستہ کی تنگی اور برف باری سے بہت سے جانور تلف ہوئے جو جانور گرا آدمیون اور چوپایون سے روندا گیا اور جس سوار یا پیدل نے ٹھوکر کھائی وہ پھر نہ اوٹھ سکا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाहज़ादा तो मंगसर बदि ६ को
काबुल में पहुंच गया लेकिन ब
हादुर खां रुहेला ज़ुलफ़िकार खां
और नूरुलहसन के ऊपर जो
ख़ज़ाने के साथ पीछे रह गये-
थे इसक़दर बरफ़ गिरी कि पल
क झपकने की फ़ुरसत न मिली
और बहुत से आदमी और जा
नवर मारे ठंड के मर खपे-

अब बहादुर खां ज़ुलफ़िकार
खां से बिछड़ गया और आधे से
ज़ियादा जानवर ख़ज़ाने के ठि
काने लगे तब ज़ुलफ़िकार खां
ने बाक़ी के ऊंटों पर जितना
ख़ज़ाना लद सका उस को तो
लाद कर शाहज़ादे के पास
रवाने किया और बाक़ी बार
बरदारी न मिलने से अपने पा
स रख लिया बरफ़ हर रोज़ ब
रसता था इस पर भी क़ौम
हज़ारा ने इसंगीन फ़ौज से ख़
ज़ाने के ऊपर धावा कर के ब
ड़ा गज़ब ढाया जिस में कम कि

شاہزادہ تو ۲۳ شوال کو کابل
میں پہنچ گیا لیکن بہادر خان روہیلہ
ذوالفقار خان اور خواجہ نور الحسن
جو خزانہ کے ساتھ پیچھے رہ گئے
تھے اونکے اوپر اسقدر برف برسا
کہ پلک مارنے کی فرصت نہ ملی
بہت آدمی اور جانور مارے ٹھنڈ
کے تلف ہو گئے -

اب بہادر خان ذوالفقار خان
سے بچھڑ گیا اور آدھے سے زیادہ
خزانہ کے بارکش جانور ٹھکانے
لگے تب ذوالفقار خان نے
جسقدر کہ خزانہ باقی کے اونٹوں
پر لد سکا لادکر شاہزادہ
کے پاس روانہ کیا اور باقی خزانہ بار
برداری نہ ملنے سے اپنے پاس رکھا
ہمیشہ اور برف ہر روز
برستا تھا اور اسپر
بھی قوم ہزارہ نے فوج
سنگین سے خزانہ
پر حملہ کرکے ایسی
لوٹ مار کی جس
میں کم

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

सी का माल असबाब जो [illegible] बचा
४।५ हज़ार घोड़े और बहुत से
आदमी बारबरदारी के जानवरों स
मेत लुट गये और बहुत से जान
वर बर्फ़ के नीचे दब गये -

जो सरदार और सिपाही जंग
जीते हुवे और काम किये हुवे थे
स बर ख़ज़ाने के ऊपर जम कर ल
ड़े और सब चीज़ों को छोड़ क
र अपनी जानों को ख़ज़ाने के सा
थ बचा लाये तो भी बेशुमार लू
ट हज़ारा वालों के हाथ आई जि
सको वे ले भागे -

बहादुरख़ां ने जब यह सुना तो हु
क्म दे दिया कि जिस को सी का
जानवर देखें पकड़ कर ज़ुल्फ़ि
कारख़ां के पास भेज दें मगर
पठानों ने जानवर नहीं दिये इ
स पर उनसे लड़ाई हुई तब ब
हादुरख़ां ने अपने और अपने
भाई बेटों के ख़ासा और बार
गीर ऊंट ज़ुल्फ़िकारख़ां के
पास भेज दिये और ख़ुद भी अपनी

کسیکا مال اسباب اور ناموس
محفوظ رہا چار پانچ ہزار گھوڑے
اور بہت سے آدمی معہ
باربرداری کے چارپایون
کے جو باقی رہگئے تھے کٹ گئے
اور بہت سے جانور برف
کے نیچے دب گئے

جو سردار اور سپاہی جنگ
دیدہ اور کار آزمودہ تھے
وہ سب خزانہ کے اوپر
جمکر لڑے اور تمام چیزون
کو چھوڑ کر اپنی جانین اور خزانہ
ہزارہ کے ہاتھون سے
بچا لائے اسپر بھی اون لوگون
کے ہاتھ بیشمار لوٹ لگی جسکو لیکر بھاگ گئے

بہادر خان نے جب یہہ سنا تو حکم دیدیا کہ
جس کسیکا جانور دیکھین پکڑ کر ذوالفقار
خان کے پاس بھیجدین مگر پٹھانون نے جانور
دینے سے دریغ کیا اور اسپر اون سے
لڑائی ہوئی آخر بہادر خان نے اپنے بھائی
بیٹون کے خاصہ اور باربرداری کی
اونٹ ذوالفقار خان کے پاس
پہونچائے اور پیچھے سے خود بھی

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फ़ौज समेत वहां पहुंचा मगर उसके पहुंचने तक ५-६ हज़ार आदमी बरफ़ और जाड़े से ठिठर कर मरगये थे बाक़ी का यह हाल था कि बाप बेटे को छोड़ कर अपनी जान बचाना चाहता था—

बहादुर ख़ां ने वहां पहुंच कर देखा कि बार बरदारी के जानवर ख़ज़ाना लेजाने के लिये पूरे नहीं हैं और जो हैं वे जाड़े और बरफ़ के मारे अधमूए हो रहे हैं इस लिये ख़ज़ाने की थैलियां गिन २ कर जमादारों को दीं और वे घोड़ों पर लाद कर रवाने हुवे हज़ारा लोग फिर रस्ता रोक कर लड़े मगर बहादुर ख़ां और ज़ुल्फ़िक़ार ख़ां बड़ी मुशकिलों से तमाम ख़ज़ाने को उन घाटों से निकाल कर काबुल में ले गये (1)

معہ اپنی فوج کے پہونچا مگر اوسکے پہونچنے تک پانچ ہزار آدمی برف سے ٹھٹھر کر مرگئے تھے اور باقی کا یہہ حال تہا کہ باپ بیٹے کو چھوڑ کر اپنی جان بچانا چاہتا تھا

بہادر خان نے وہان پہونچکر دیکھا کہ جانوران باربرداری خزانہ کے لیجانے کے واسطے کافی نہین ہین اور جو ہین وہ جاڑے اور برف سے ادہ موئے ہو رہے ہین اس لئے خزانہ کی تھیلیان گن گن کر جماعہ دارون کے حوالہ کین جنکو وہ اپنی گھوڑون پر لاد کر روانہ ہوے ہزارہ لوگ پھر سر راہ آکر لڑے مگر بہادر خان و ذوالفقار خان بمشکل تمام خزانہ کو معہ اپنی جانون کے اون گھاٹیون سے صحیح و سالم نکالکر کابلمین لے گئے (۱)

(1) आमेर के राजा जैसिंघजी फ़ौज में थे उन्हों ने भी लशकर और ख़ज़ाने के बचाने में बहुत कोशिश की थी बिहारी सतसई का यह दोहा इसी बात की तारीफ़ में है—

दोहा

यौं दल काढ़ौ बलख़ तें
तैं जयसिंघ भुवाल ॥
उदर अघासुर के परे
ज्यौं हरि गाय गवाल ॥१॥

امیر کے راجہ جی سنگہ بھی اس فوجمین تھے اونھون نے بھی لشکر اور خزانہ کی بچانے میں بہت کوشش کی تہی بہاری ستسئی کا یہہ دوہا اسی کارنمایان کی تعریف میں ہے

دوہا

یون دل کاڑھیو بلخ تین
مین جی سنگھ بھوال
اودر اگھاسر کے پڑے
جیون ہر گئے گوال

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दरबारका हाल

बादशाह लाहोरसे कूचकरके कुछ दिन गांव वामनमें ठहरे मंगसर सुदि ७ को वहांसे रवाने हुवे रस्तेमें पोस बदि ५ को शाहज़ादे दाराशिकोह का दूसरा बेटा महर शिकोह ४ बरस ९ महीने का होकर मरगया बादशाहने उसकी लाश लाहोरको भेजी जहां उसकी मांके बागमें दफ़न हुई—

पोस सुदि ४ को बादशाह दिल्लीमें पहुंचकर नूरगढमें ठहरे दूसरे दिन सवार होकर नये क़िलेकी इमारतोंके देखनेको गये जो ८ बरससे बनरही थीं और अगले नौरोज़तक तैयार होजानेकी ताक़ीद करके आगरेको रवाने हुवे—

دربار کا حال

بادشاہ لاہور سے کوچ کرکے کچھ دن گانو واہن مین ٹہرے ۷ ذی قعدہ کو وہان سے روانہ ہوئے رستہ مین ۱۹ ذی قعدہ شاہزادہ داراشکوہ کا دوسرا بیٹا مہرشکوہ چار سال ۹ ماہ کا ہوکر مرگیا بادشاہ نے اوسکی لاش لاہور کو بہیجی جہان اوسکی مان کے باغ مین دفن ہوئی

۳ ذی الحجہ کو بادشاہ دہلی پہونچکر نورگڈہ مین ٹہرے دوسرے دن سوار ہوکر واسطے ملاحظہ و تجویز مکانات جدیدہ قلعہ کے جو آٹھہ برس سے تیار ہورہا تہا تشریف لیگئے اور یہہ تاکیدی حکم دیکر کہ نوروز آئندہ تک سب تیار ہوجاوین آگرہ کو روانہ ہوئے۔

यानी बख़्तरबमें से लशकर ईस तरह से निकाला तूने है राजा जयसिंघ— किजैसे अघासुर के पेटमें पड़े हुवे गवालों और गायों को भगवानने निकाला था—

یعنی بلخ مین سے لشکر کو اسطرح سے نکالا تونے اے راجہ جیسنگہ کہ جیسے اگہاسر دراکشش) کے پیٹ مین پڑے ہوئے گوالون اور گایون کو بہگوان نے نکالا تہا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सूरतबंदर के अखबार से मालूम हुआ कि वहां के और खंभात के हाकिम अली अकबर को १ हिन्दू ने बुरा बोलने पर जमधर से मारडाला बादशाह ने उसकी जगह मालवे के दीवान मोअज़्ज़उलमुल्क को मुकर्रर किया -

इसीतरह मालवे के अख़बार से मंदसोर के जागीरदार जान निसार खां का १ फ़सादी ज़मीदार के हाथ से कि जिसे वह पकड़ लाया था रोबकारी के वक़्त मारा जाना मालूम हुआ ॥

माह वदि १ को बादशाह आगरे के किले में दाखिल हुवे -

अंबर का जड़ाऊ कंदील।

गोलकंडे की खान से १ हीरा १८० रती भर का निकाला था बादशाह ने उसकी ख़बर सुन कर कुतुबुल्मुल्क को लिखा कि इस हीरे की कीमत करके

سورت بندر کے اخبار سے معلوم ہوا کہ وہان کے اور کھنبات کے حاکم علی اکبر کو ایک ہندو نے بدگوئی کرنے پر جمدھر سے مار ڈالا بادشاہ نے مالوہ کے دیوان معز الملک کو اوسکی جگہہ مقرر کیا۔

اسیطرح مالوہ کے وقایع سے مندسور کے جاگیردار جان نثار خان کا ایک مفسد زمیندار کے ہاتھہ سے کہ جسے وہ پکڑ لایا تھا بروقت روبکاری کے مارا جانا معلوم ہوا۔

۵ ذی الحجہ کو بادشاہ قلعہ آگرہ مین داخل ہوئے

قندیل مرصع عنبر

گولکنڈہ کی کہان سے ایک ہیرا ایکسو اسی رتی بہر نکلا تھا بادشاہ نے اوسکی خبر سنکر قطب الملک کو لکھا کہ اس ہیرے کی قیمت کرا کر

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पेशकश के हिसाब में हमारे पास
भेज देवे कुतुबुल्मुल्क ने हुक्म
पहुंचने से पहिले बेगड़िये को दे
कर १० रती उसमें से छिलवाड़
ना था मगर बाद हुक्म पहुंचने
के उसी दिन रवाने कर दिया य
हां पहुंचने पर ७० रती और उ
समें से तराशा गया तो १०० रती
खरा बगैर दाग धब्बे के रहगया
जिसकी कीमत डेढ लाख रुपये
की हुई और २०००० का चूरा आ
का गया इत्तिफ़ाक़ से उसी दि
न १०० तोले भर अंबर का ड
ला ५०००० में खरीद होकर आ
या उसकी शक्ल कंदील जैसी
थी इस लिये बादशाह ने हुक्म
दिया कि इस अंबर का कंदील
सोने और जवाहिरात से बना
कर ऊपर तो उस हीरे को ज
ड़ें और नीचे उसके चूरे को जी
जगह जगह जड़ देवें जब इस त
रह यह कंदील तैयार हुआ तो
ढाई लाख की लागत बैठी—

پیشکش مقررہ کے حساب مین
ہمارے پاس بہیجدے قطب الملک
نے حکم پہونچنے سے پہلے
حکاک کو دیکر دس رتی اوسمین
سے چہلوا ڈالا تھا مگر بعد حکم پہونچنے
کے اوسیدن روانہ کردیا
یہان آنے پر ستر رتی اور
اوسمیں سے تراشا گیا تو
ایکسو رتی بے عیب رہگیا
جسکی قیمت ڈیڈہ لاکہہ روپیہ کے
ہوئے اور بیس ہزار کے ریزے
شمار ہوے اتفاق وقت
سے اوسیدن سو تولہ بہر
عنبر کا ایک ٹکڑا قندیل
کی شکل مین پچاس ہزار روپیہ
کو خرید ہوکر آیا بادشاہ نے
حکم دیا کہ اس عنبر کا قندیل
سونے اور جواہرات سے بناکر
یہہ ریزے بہی اوسمین جڑدین
سب کے اوپر اوس سو رتی
والی ہیرے کو جڑین جب اسطرح یہہ جڑاو
قندیل تیار ہوگیا تو سب ملاکر اوسپر
ڈہائی لاکہہ روپیہ کی لاگت بیٹھی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२२वां बरस

माह सुदि ३ संबत १७०४ से
माह सुदि २ संबत १७०५ तक

माह सुदि ४ को शाहज़ादा "शुजाअ" अपने बडे बेटे "जैनुल आबदीन" समेत काबुल से दरबार में हाज़िर आया-

फागण बदि १० को बादशाह ने वह अंबर का कंदील जो ३५००००) में तैयार हुआ था हाजी सईद के हाथ मदीने को रवाने किया उसको १६००००) मक्के के ग़रीबों के वास्ते देकर यह हुक्म दिया कि आधे रुपये में अहमदाबाद से वह माल कि जिसके अरब में दूने हो जाते हैं ख़रीद ले जावे उसमें से आधा तो मक्के के शरीफ़ (महंत) को मय ५००००) रोकड़ के देवे और बाक़ी रुपया और माल वहां के ग़रीबों को बांट देवे और कंदील को मदीने में ले जाकर पैग़म्बर साहिब की दरगाह में लटका देवे

بائیسوان برس

سنہ ۱۰۵۸ ہجری

۱۷ جنوری سنہ ۱۶۴۸ سے ۵ جنوری سنہ ۱۶۴۹ تک

۱۰ محرم کو شاہ شجاع کابل سے آیا اوس کا بڑا بیٹا سلطان زین العابدین بہی اوس کے ساتھہ تھا

۲۳ محرم کو بادشاہ نے وہ عنبر کا قندیل جو معہ ہیرے کے ساڑہے تین لاکھہ روپیہ کی قیمت کا تہا حاجی سعید کے ہمراہ مدینہ کو روانہ کیا اور مساکین مکہ کے واسطے ایک لاکھہ ساٹھہ ہزار روپیہ اوس کے حوالہ کر کے حکم دیا کہ آدہا نقد لیجاوے اور آدہے مین احمدآباد سے وہ متاع خریدے کہ جسکے عرب مین دونے ہوجاتے ہین - ازانجملہ پچاس ہزار کی جنس و نقد تو شریف مکہ کو دے اور باقی غریبون کو تقسیم کرے اور قندیل کو مدینہ لیجا کر پیغمبر صاحب کے روضہ مین لٹکاوے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फागण सुदि २ को बादशाह ने शाहज़ादे शुजाअ को १ लाख रुपये की क़ीमत का जड़ाऊ सरपेच इनायत करके पीछा बंगाले की तरफ़ बिदा किया -

शाहज़ादा मुराद कशमीर से दक्खन की सूबेदारी के वास्ते बुलाया गया।

चेत बदि ४-५ को राणा जगतसिंघ का पाटवी बेटा राजकुंवर अपने बाप की अरज़ी बाबत मुबारक बाद फ़तह बलख़ और बदख़्शां के लेकर हाज़िर आया -

१ दिन राजा बदनसिंघ बादशाह के रूबरू खड़ा था पीछे से १ मस्त हाथी ने झपट कर राजा को १ आदमी समेत जो उसकी मदद के वास्ते आया था दांतों के नीचे दबा लिया राजा ने नीचे से ही जमधर खेंच कर उस की सूंड में मारी उधर चरखीवान ने चरखियों में (१) आग देदी जिससे राजा अपने नोकर समेत उसके दांतों से निकल गया बादशाह ने राजा को बहुत शाबाशी दी और खिलअत देकर उसके जिम्मे की बाकी माल गुजारी में से ५००००) माफ़ किये।

۲۰ صفر کو بادشاہ نے ایک لاکھ روپیہ کا مرصع سرپیچ عنایت کرکے شاہ شجاع کو بنگالہ کیطرف رخصت کیا

شاہزادہ مراد کشمیر سے دکن کی صوبہ داری کے واسطے طلب کیا گیا

۱۱ صفر کو رانا جگت سنگھ کا جانشین بیٹا راج کنور اپنے باپ کی عرضی بابت مبارکباد فتح بلخ و بدخشان کی لیکر بادشاہ کی خدمت مین حاضر آیا۔

ایکدن راجہ بدن سنگھ بادشاہ کے روبرو کھڑا تھا پیچھے سے ایک مست ہاتھی نے جھپٹ کر راجہ کو مع اوسکے ایک آدمی کے جو مدد کے واسطے آیا تھا دانتوں کے نیچے دبا لیا راجہ نے نیچے سے ہی جمدھر کھینچکر اوسکی سونڈ مین مارا اودھر چرخی بان نے چرخیون مین آگ دیدی جس سے راجہ مع اپنے نوکر کے اوسکے دونو دانتون مین سے نکل گیا بادشاہ نے اوسکی جرات اور ہمت پر بہت آفرین کی اور خلعت دیکر اوسکے ذمہ کے مطالبہ مین سے پچاس ہزار روپیہ بطور انعام کے اوسکو معاف کردیا

(१) ऐसे मोक़े पर हाथियों के चमकाने और डराने के लिये बारूद की चरखियां चलाते थे।

ایسے موقعون پر ہاتھیون کے چمکانے اور ڈرانے کے لئے بارود کی چرخیان چلایا کرتے تھے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चैतबदि १२ को नौरोज़ के दिन बादशाह ने शाहज़ादे औरंगज़ेब के नाम जो बलख़ से आकर अटक के किनारे पर हुक्म से ठहरा हुआ था हुक्म लिखा कि मुलतान को अपनी जागीर में समझ कर परबारा वहां चला जावे और ३० लाख रुपया सालियाना अपनी बाक़ी तलब के लिये मुलतान के ख़ज़ाने से लेता रहे —

चैतसुदि १४ को बादशाह आगरे से दिल्ली को रवाने हुवे और राजकंवर को लालों और मोतियों की माला और हाथी घोडे देकर रुख़सत किया —

बैसाखबदि ६ को बादशाह की सवारी शाहजहानाबाद के पास पहुंची

क़िला शाहजहानाबाद और शहर.

बादशाह ने आगरे और लाहोर की गलियों और जिलौख़ानों को तंग देख कर दिल्ली के मैदान में नूरगढ़ के पास जमना के ऊपर नया शहर बसाने का हुक्म दिया था जहां क़िले की नींव बैसाखबदि ११ बृहस्पतवार संवत १६९६ की रात को

۲۵ صفر کو کہ روز جشن نوروز تھا بادشاہ نے شاہزادہ اورنگ زیب بہادر کے نام جو بلخ سے آکر دریائی اٹک کے کنارے پر حکم کا منتظر تھا لکھا کہ ملتان کو اپنی جاگیر سمجھکر بالا بالا وہان چلا جاوے اور باقی طلب اپنی جو ۳۰ لاکھ روپیہ سالیانہ ہوتی ہے ملتان کے خزانہ سے نقد لیتا رہے

۱۲ ربیع الاول کو بادشاہ آگرہ سے دہلی کیطرف روانہ ہوئے اور راج کنور کو لعل و مروارید کی مالا اور ہاتھی گھوڑے دیکر رخصت کیا۔

۲۲ ربیع الاول کو بادشاہ کی سواری قلعہ شاہجہان آباد کے قریب پہونچی

ذکر آبادی شہر و قلعہ شاہجہان آباد

بادشاہ نے آگرہ اور لاہور کے کوچوں اور جلو خانوں کو تنگ دیکھکر دہلی کے سواد میں نورگڈھ کے قریب ایک جدید شہر آباد کرنے کا حکم دیا تھا جہان قلعہ کی بنیاد شب جمعہ ۲۵ ذی الحجہ سنہ ۱۰۴۸ کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसताद अहमद और हामद की तज
बीज़ से खोदी गई थी और बैसाख
सुदि ९ बृहस्पतवार की रात को नरी
गई वह अब ५० लाख रुपये के ख़र
च से बन हुआ था और इतना ही रु
पया ज़नाने महलों और मरदानी
इमारतों में ख़र्च हुआ था—

किला ६ लाख गज़ ज़मीन में
लाल पत्थर का टांकी बंद बना
था इसका कोट २० हज़ार गज लं
बा ६० गज़ चौड़ा और २५ गज़ ऊंचा
था जिसमें ४ दरवाज़े और २ खि
ड़कियां थी और फ़ीरोज़ शाह वा
ली नहर जमना की जो बहुत दिनों
से बंद पड़ी थी बनाकर और साफ़
करके इस क़िले के अंदर से निका
ली गई थी—

क़िले में उत्तर की तरफ़ बादशाह
के रहने के वास्ते दौलतख़ाना, बाग़
हयात बख़्श हम्माम शाह महल औ
र बेगमों के वास्ते इमतियाज़ महल,
सुनहरी महल और दूसरे मकान म
कराने के बनाये गये थे—

बाग़ के पास तलाव और दौलत
ख़ाने से मिलता हुआ १ हौज़ पानी

اوستاد احمد وحامد معماران کی
تجویز سے کہودی گئی تھی اور شب
جمعہ ۹ محرم سنہ ۱۰۴۹ کو عمارت کی نیو
رکھی گئی وہ قلعہ اب پچاس لاکھہ
روپیہ کے خرچ سے تیار ہوگیا تھا
اور اسیقدر روپہ شاہی عمارات اور
زنانہ محلات مین صرف ہوا تھا

قلعہ شاہجہان آباد ۶ لاکھہ گز
زمین مین سرخ پتھر تراش
کر بنایا گیا تھا۔ اوسکی دیوار
بیس ہزار گز لمبی ۶۰ گز
چوڑی اور ۲۵ گز اونچی تھی
فیروز شاہ کی نہر جو اوسنے
اپنی شکارگاہ خضرآباد
سے نکالی تھی اور بہت
برسون سے بے مرمت ہوکر
بند پڑی تھی دوبارہ کہودکر قلعہ کے اندر
سے نکالی گئی—

تفصیل عمارات

اوترکیطرف بادشاہ کے رہنے کا دولتخانہ
باغ حیات بخش حمام شاہ محل اور بیگمون کے
واسطے امتیاز محل سنہری محل اور
دوسرے مکان سنگ مرمر کے بنائے گئے تھے

باغ کے پاس تالاب اور دولتخانہ
سے ملتا ہوا ایک حوض شصت در

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का ६० गज समचौरस था जिसके बीचमें ४९ और किनारोंपर ११२ फंवारे चांदीके लगाये गये थे-

बागमें चोपड़ कीतरहेपर ६ गज चौड़ी नहर जारीथी जिसके किनारे लालपत्थरके बनेहुवे थे और बीचमें ३० फंवारे चलतेथे-

यहबाग ३ तरफ़ से जमनाके ऊपर आगयाथा और तीनों तरफ़ झरोके पानीपर झुके हुवेथे जोमकराने के पत्थर के थे नहर हरजगहसे निकाली गईथी-

इमतियाज़ महल के १ तरफ़ दर्शन का झरोका और दूसरी तरफ़ खास आमका बंगला था जिसमें रंगरंग के पत्थर सोनेकी पच्चीकारी से लगेथे-

बंगलेके आगे ४ थंभोंकी १ कचहरी ६७ गज लंबी और २६ गज चौड़ी बनी थी जिसमें तीन तरफ़ १ कटहरा आदमीके क़द के बराबर चांदीका लगाथा और इसके बाहर १०४ गज लंबा और ६० गज चौड़ा कठहरा लालपत्थरका था इसके आगे २०४ गज लंबा और १६

شصت پانی کے واسطے بنایا تھا اسکے وسط مین ۴۹ اور کنارون پر ۱۱۲ فوارے چاندی کے لگائے گئے تھے

باغ مین چوپڑ کی روش پر چھ گز چوڑی نہر جاری تھی جسکے کنارے سرخ پتھر کے تراشے ہوئے تھے اور بیچ مین تیس فوارے چلتے تھے

یہہ باغ تین طرف سے جمنا کے اوپر آگیا تھا اور تینون طرف جھروکے پانی پر جھکے ہوئے تھے جو سنگ مرمر کے بنے تھے اور نہر ہر جگہہ سے نکالی گئی تھی

امتیاز محل کے ایک طرف درشن کا جھروکہ اور دوسری طرف بنگلہ خاص و عام تھا جس مین رنگ رنگ کے پتھر سونے کی پچی کاری سے لگے تھے

بنگلہ کے آگے چار ستونون ہر ایک کچہری ۶۷ گز لمبی اور ۲۶ گز چوڑی بنائی گئی تھی جس مین تین طرف چاندی کا کٹہرہ قد آدم لگا تھا اور اسکے باہر ۱۰۴ گز لمبا اور ۶۰ گز چوڑا کٹہرا لال پتھر کا تھا اسکے آگے ۲۰۴ گز لمبا اور ۱۶۰

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गज चौड़ा चौक था जिसके चौतरफ़ पत्थर के ६४० मकान बने हुवे थे जिनमें खूब कोरनी कीगई थी इनके आगे तबेले वगैरा कारखाने थे-

जो दरवाज़ा किले का पच्छम की तरफ़ था उस तरफ़ बाज़ार दोहरी दुकानों का था बीच में नहर थी= बाज़ार में कोटवाली चबूतरा ४८० गज का था यह बाज़ार लाहोर की तरफ़ था और ऐसा ही दूसरा बाज़ार आगरे की तरफ़ भी था-

बेगमसाहिब के बाग़ की तरफ़- फ़तहपुरी महल की मसजिद थी इससे बड़ी मसजिद अकबराबादी महल की आगरा बाज़ार में थी जो (१५००००) के खरच से बनी थी यह ६३ गज लंबी और ७०।। गज चौड़ी थी-

इसी तरह शाहजहानाबाद भी १० कोस के घेरे में आबाद हुआ था-

किले से १००० गज़ के करीब पच्छम की तरफ़ १ पहाड़ी है उस के ऊपर भी १ मसजिद तैयार हुई जिस का काम सादुल्ला खां वज़ीर और अफ़ज़लखां मीरसामान की हाजरी में जारी किया गया था और खतम होने

گز چوڑا صحن تھا جسکے چارون طرف ۶۴۰ مکان سنگین بنے تھے جن مین خوب سنگتراشی کی گئی تھی انکے آگے طویلہ وغیرہ کارخانے تھے-

قلعہ کا دروازہ پچھم کیطرف تھا اوس طرف دوہری دوکانون کا بازار تھا بیچ مین نہر تھی بازار مین چبوترہ کوتوالی چار سو اسّی گز کا تھا یہ بازار لاہور کیطرف تھا اور ایسا ہی دوسرا بازار آگرہ کیطرف بھی تھا-

بیگم صاحب کے باغ کیطرف فتحپوری محل کی مسجد تھی اس سے بڑی مسجد اکبرآبادی محل کی آگرہ بازار مین تھی جو ڈیڑھ لاکھ روپیہ کے صرف سے تیار ہوئی تھی یہ ۶۳ گز لمبی اور ساڑھے ستر گز چوڑی تھی-

اسیطرح شاہجہان آباد بھی دس کوس کے محیط میں آباد ہوا تھا

قلعہ سے ایکہزار گز کے قریب پچھم کیطرف ایک پہاڑی ہے اوسکے اوپر بھی ایک مسجد تیار ہوئی تھی جسکا کام سعداللہ خان دیوان اور افضل خان میرسامان کے حضور مین جاری کیا گیا تھا اور ختم ہونے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तक हर रोज़ ५००० सिलावट और खा ती वग़ेरा काम किया करते थे यह म सजिद ९० गज़ लंबी और ३३ गज़ चौड़ी थी इसके ऊपर ३ बड़े गुंबद और २ ऊंचे मीनार बनाये गये थे य ह ६ बरस में १० लाख रुपये के ख़र्च से बनी थी इसके चोक में दक्खन को मदरसे और उत्तर को शफ़ाख़ानों के मकान थे-

बादशाह का नये किले में प्रवेश करना.

वैसाख बदि ११ को मंगल के दिन ६ घड़ी दिन चढ़े सिंह लग्न में [बादशाह] दरिया के रस्ते से नये किले के अंदर दाख़िल हुवे और बड़ी धूमधाम से दल बाद लडेरे में दरबार किया जो ७० गज़ लंबा और ४० गज चौड़ा १ लाख रु पयों की लागत से अहमदाबाद के बादशाही कारख़ाने में तैयार हु आ था और जिसको २२ गज ऊंची ४ चोबों पर ३००० फ़र्राशों ने बड़ी म हनत से खड़ा किया था-

. फिर गुसलखाने में होकर महल में पधार गये इस दिन शाहज़ादे दा राशिकोह का मनसब १० हजारी ज़ात

تک ہر روز پانچ ہزار سلاوٹ و کہاتی وغیرہ کام کیا کرتے تھے یہہ مسجد ۹۰ گز لمبی اور ۳۳ گز چوڑی تھی اوسکے اوپر تین بڑے گنبد اور دو مینار بنائے گئے تھے یہہ عرصہ چہہ سال مین مبلغ دس لاکہہ کے صرف سے بنی تھی اور اسکی چوک مین شمالی رخ مدرسون کو در جنوبی رخ شفاخانون کے مکانات تہے

بادشاہ کا قلعۂ شاہ جہان آباد مین داخل ہونا

روز سہ شنبہ ۲۴ ربیع الاول مطابق ۲۰ فرور دین ۲۱ سنہ جلوسی کو چہہ ساعت گذرنے پر طالع اسد مین دروازہ کنارہ دریا سے جو شاہ محل کو جاتا بادشاہ داخل قلعہ ہوئے اور بڑی دہوم دہام اور تزک واحتشام سے خیمہ دلبادل مین دربار کیا جو ستر گز لمبا ۴۰ گز چوڑا ایک لاکہہ روپیہ کی لاگت سے احمد آباد کے کارخانہ مین تیار ہوا تہا اور جسکو ۲۲ گز اونچی چار چوبون کے اوپر تین ہزار فراشون نے بڑی محنت سے کہڑا کیا تہا ۔

بعد برخاست ہونے دربار کے بادشاہ غسل خانہ مین ہوکر مشکوئے معلی کو تشریف لیگئے اوسدن شاہزادہ دارا شکوہ کا منصب

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

केइज़ाफ़ेसे ३० हज़ारीज़ात श्रौर २०
हज़ारसवार दु अस्पाका होगया-
४ लाख रुपया रोकड़ श्रौर १ ला
ख रुपये का जड़ाऊ जेवर बेगमसाहि
बको इनायत हुश्रा इसी तरह दूसरी
बेगमों शाहज़ादों श्रौर अमीरोंको २०
दिनतक खिलश्रत रोकड़ रुपये श्रौर
जवाहर इनायत होते रहे पहिले दि
नसादुल्लाखां वगैरा १०० नामी अमी
रोंके मनसब बढे थे श्रौर भारी सि
रोपाव मिलेथे इसी तरह की नवा
ज़िश हर रोज़ सौसो अमीरोंको नौ
रोज़के दिन तक हुश्रा करती थी
शायरों, पंडितों, श्रौर गवैयों, वगैरा
को रोज़ इनाम मिलता था ईरान (तूरान) श्रौ
र कशमीर के गानेवालों हिन्दुस्ता
न के नाचनेवालों को खूबखूब चां
दीसोना श्रौर जवाहरात मिला श्र
कसर कारीगरों ने अपनी अपनी
कारीगरी की चीजें नज़र की श्रौर
इनाम में मोहरें श्रौर रुपये पाये-

बलख की मोहिम

अलीमरदानखां की अरज़ी पहुं
ची कि अबदुल अज़ीज़ खां ने फि
बुखारा से नज़र मोहम्मदखां के

دس ہزاری ذات کے اضافہ سے ٣٠ ہزاری
ذات اور ٢٠ ہزار سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ کا کیا گیا
چار لاکھ روپیہ نقد اور ایک لاکھ
روپیہ کا زیور مرصع بیگمصاحبہ کو عنایت
ہوا اسیطرح دوسری بیگموں اور
شاہزادوں کو بھی - امیروں کو ٢٠ دن
تک خلعت جواہر اور زر نقد بطور انعام
کے ملتا رہا -
اول دن سعد اللہ خان وغیرہ ایکسو
نامی امرا کے منصب میں اضافہ ہوا اور اونکو
خلاع فاخرہ بھی مع زر وجواہر کے ملے
نوروز تک سو سو امیروں کو نوازش
ہوا کرتی تھی -
عالموں فاضلوں شاعروں اور ارباب
نشاط کو ہر روز انعام واکرام عطا ہوتا
تہا ایران توران اور کشمیر کے گویّے اور
ہندوستان کے ناچنے گانے والوں کو بہت
کو خوب خوب زر وجواہر ملا اکثر اہل ہنر نے اپنی
اپنی کاریگری کی چیزیں نذر کیں اور انعام زر سرخ
وسفید پایا شاعروں نے جو تاریخیں پیش کیں اونمیں
سے یہ تاریخ پسند ہوئی -
شد شاہ جہان آباد از شاہجہان آباد

بلخ کی مہم

امیر الامرا علیمردان خان کی عرض سے معلوم ہوا کہ
عبدالعزیز خان والی بخارا نے فوج بھیجکر نذر محمد خان

ऊपर चढ़ाई करके बलख को घेर लि
या है उसपर हुक्म हुआ कि बहादुर
खां और राजा विट्ठलदास कोरा २
अमीर अली मरदान खां के पास जा
कर उसकी तजवीज़ के माफ़िक न
ज़र मोहम्मद खां की मदद को रवाने
होवें

दरबार का हाल.

रायरायां जो कुछ बरसों से रोज़
गार छोड़ कर बनारस में जा बैठा था
फिर दुनियादारी की हवस से हज़ूर में
हाज़िर आया बादशाह ने उसको ए
क हज़ारी ज़ात और २५० सवार का
मनसब देकर दखन के कुल सूबों
की दीवानी मय फ़ौजदारी बगला
ने के इनायत फ़रमाई -

असाढ सुद २ को २२ वां जलूसी
बरस शुरू हुआ और मामूल के मा
फ़िक दरबार और जलसे हुवे -

सावन बद २ को शाहज़ादे मुराद
कशमीर से आया -

बादशाह ने नौरोज़ से फ़ुरसत
पाकर बादशाहज़ादे मुरादब
ख़श को बहुतसी इनायतों से सरफ़
राज़ करके दखन की सूबेदारी पर

ابو بلخ مین گھیر لیا ہے بادشاہ نے یہہ خبر سنکر راجہ
بیتھلداس گوڑ اور نظر بہادر کو بہت سی
فوج سے کابل کیطرف بھیجا اور بہادر
خان قلیج خان اور رستم خان کو بھی
اپنی اپنی جاگیرون سے جانے کا حکم لکھا
کہ کابل پہونچکر حسب الحکم امیر الامرا
کے نذر محمد خان کی مدد کو روانہ ہون

دربار کا حال

رائے رایان جو مدت سے ترک
علایق روزگار کر کے بنارس مین گوشہ
نشین تھا پھر جذبہ حب جاہ سے حضور
مین حاضر آیا بادشاہ نے اوسکو
منصب ہزاری ذات اور ۲۵۰
سوارون کا دیکر کل صوبہ جات دکن
کی دیوانی مع خدمت فوجداری ولایت
بگلانہ کے عنایت فرمائی -

یکم جمادی الثانی کو ۲۲ وان جلوسی
سال شروع ہوا اور معمول کے موافق
جلسہ اور دربار ہوئے

۱۴ جمادی الثانی کو شاہزادہ مراد بخش
کشمیر سے آیا

بادشاہ نے جشن نوروز سے فرصت
پاکر بادشاہزادہ مراد بخش کو انواع
عنایات سے سرفراز کر کے دکہن کی
صوبہ داری پر بجائے اسلام خان جو مر گیا تھا

इसलामखांकी जगह जो मरगया था
मुकर्रर करके भेजा और शाहनवाज़
खांको जो मालवेसे दखन में भेजा ग
याथा शाहजादे का अतालीक मुकर
रैकर दिया और गुजरात का इन्तजा
म शायस्ताखांसे अच्छी तरहसे न
होसका था इसलिये वह सूबा दारा
शिकोह को इनायत हुआ और उस
का नायब बाकी बेग जो इलाहाबाद
का सूबेदार था असल और इजा-
फेसे २ हजारी ज़ात ५०० सवारों के
मनसब और गैरतखां के खिताब
से मान पाकर गुजरात के इन्तजा
म पर गया-

उड़ीसे का सूबा शाहजादे शुजा-
अ को इनायत हुआ-

बलखसे खबर पहुंची कि अबदु
ल अजीज़खां ने नज़र मोहम्मदखां
से सुलह करली इसलिये बादशाह
ने बहादुरखां वगैरा को वापसी का
हुक्म लिखा-

शाह ईरान का कंधार लेना·

कातिक बदि ११ को बादशाह शि
कार गाह खास में शिकार खेल रहे-
थे कि कंधार के किलेदार खवासखां

کرکے بھیجا اور منصب بیس ہزاری
پندرہ ہزار سوار کا بخشا اور شاہ نوازخان
کو جو بطور عاریت مالوہ سے دکہن مین بھیجا گیا تھا
شاہزادہ کا اتالیق مقرر کردیا اور گجرات
کا انتظام شایستہ خان سے بطور
شایستہ نہو سکا تہا اسلئے وہ صوبہ
دارا شکوہ کو عنایت ہوا اور اوسکا
نائب باقی بیگ جو الہ آباد کا صوبہ دار
تہا اصل و اضافہ سے دو
ہزاری ذات اور پانسو سوارون
کے منصب و خطاب غیرت خان
سے مشرف ہوکر گجرات
کے انتظام پر گیا -

اوڑیسہ کا صوبہ شاہزادہ
شجاع کو عنایت ہوا

بلخ سے خبر پہونچی کہ عبدالعزیز خان
نے نذر محمد خان سے صلح کرلی
اس سبب سے بادشاہ نے
بہادر خان وغیرہ کو واپسی
کا حکم لکہا

شاہ ایران کا قندہار لے لینا

۱۴ رمضان کو بادشاہ شکارگاہ
خاص شکار مین مصروف
تہے کہ خواص خان

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

y Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और बस्तके किलेदार गैरतखांकी अ-
रज़ी पहुंची जिसमें लिखाथा कि ई-
रान का बा॰ शाह अब्बास दूसरा चे
तसुदि ५ को बहुतसा लशकर लेक-
र अस्फहां से कंधार फतह कर-
नेके वास्ते रवाने होकर चादोंसुद
१० को मशहद में पहुंचा और अपने
१ अमीर को पहिले से हिरात की तरफ़
भेजदिया सो खुरासान के ताजी को
मेंसे जो लड़ाई के वक्त बगेर तनखाह
आगे होकर ज़ान देते हैं मामूल के मा
फ़िक १०००० बरकंदाज और ५००० बे
लदार तैयार करें और दे, वह मज्ज (पो
स मार) के महीनों में जब कि हिन्दुस्ता-
नकी फौज को बरफ़ बरसने और रस्ता
बंद होजाने से मदद नहीं पहुंच सकती
है कंधार के ऊपर जावे सो अब बहुत
जलद मदद आना चाहिये-

इसके साथ यहभी ज़ाहिर हुआ कि
शाहका एलची शाह कुली नी रवत से
कर कंधार मांगनेको आता है-

बादशाहने यह खबरें सुनकर ज्यो-
तषियोंको महूर्त निकालने का हुक्म
दिया और काज़ी अफज़ल को जो दा-
राशिकोह की तरफ़ से लाहोर का =

قلعہ ارقندہار و غیرت خان محافظ
حصار بست کی عرضی پہونچی جس میں
لکہا تہا کہ ایران کا بادشاہ عباس
صفوی قندہار فتح کرنے کے ارادہ سے
چہارم ربیع الاول کو اصفہان سے
کوچ کر کے ہفتم شعبان کو مشہد میں
پہونچا اور اپنے ایک امیر کو پیشتر روانہ
ہرات کیا کہ خراسان کے تاجیکون میں
سے جو جنگ کے وقت بغیر علوفہ کے پیش
قدم ہو کر جانفشانی کرتے ہیں معمول کے
موافق دس ہزار برقنداز و پانچہزار بیلدار
تیار کرے اور دے دیہمن کے مہینوں میں
جبکہ ہندوستان کی فوج برف باری
بوجہ بند ہوجانے راستون کے قلعہ قندہار
کی مدد کو نہیں پہونچ سکتی ہے قندہار
کے اوپر جاوے سو اب بہت جلد
پیشگاہ والا سے کمک
پہونچنا چاہیے -

اسکے ساتھ یہ بھی ظاہر ہوا کہ
شاہ ایران کا ایلچی شاہ قلیخان معہ مکتوب
کے قندہار مانگنے کے واسطے آتا ہے

بادشاہ نے یہہ خبرین سنکر
نجومیوں سے ساعت روانگی نکالنے کا
حکم دیا اور قاضی افضل کو جو دارا شکوہ
کی نیابت میں لاہور کا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हाकिम था शाहकुली को लाहोर से आगे नहीं बढने देने का हुक्म लिखा और हर तरफ़ के अमीरों के नाम भी लशकर समेत हज़ूर में हाज़िर होने के ताकीदी हुक्म भी जारी हुवे-

कातिक सुदि ३ को बादशाह शिकारगाह से शाह जिहांनाबाद के किले में पहुचे इतने में शाह ईरान के आने की गरमागर्म खबरें आने लगीं जिससे बादशाह ने सादुल्ला खां वज़ीर को १३५ बडे बडे अमीरों के साथ शाहज़ादे औरंगज़ेब की अफसरी में कंधार भेजने के वास्ते तैयार किया और हुक्म दिया कि ६०००० सवार और १०००० बरकंदाज़ का सुमार तैयार करें जिनमें बारह के सैयद उजबक, पठान और रजपूत ज़ियादा हों ईरानी बहुत कम इस हिन्दी फ़ौजमें दाखिल किये जावें-

इसी दरमयान में काबुल से यह खबर आई कि अलीमरदान खां ने क़िलेदार कंधार की लिखावट आने पर ५००० सवार और १००० बरकंदाज़ काकड खां राजा अमरसिंघ और अहदियों के बख़शी नुरुलहसन की सरदारी में काबुल से रवाने कर दिये हैं और ५ लाख

حاکم تھا شاہ قلی کو لاہور سے آگے نہ بڑھنے دینے کا حکم لکھا اور ہر طرف امیرون کے نام بھی معہ لشکر حضور مین حاضر ہونیکے واسطے تاکیدی احکام جاری ہوئے۔

۳ شوال کو بادشاہ شکارگاہ سے قلعہ شاہجہان آباد مین پہونچے اس عرصہ مین شاہ ایران کی آمد آمد کی خبر گرم ہوئی جس سے بادشاہ نے سعد اللہ خان وزیر کو معہ ۱۳۵ امرای شاہزادہ اورنگ زیب کی ماتحتی مین قندہار بھیجنے کے لئے تیار کیا اور حکم دیا کہ ساٹھ ہزار سوار اور دس ہزار برقنداز کا طومار مرتب کرین جن مین اکثر سادات بارہہ اوزبک افغان اور راجپوت ہون ایرانیون مین سے بہت کم لوگ اس ہندی فوج مین داخل کئے جاوین۔

اسی اثنا مین عرض ہوئی کہ علیمردان خان نے بموجب تحریر قلعدار قندہار کے پانچہزار سوار ایکہزار برقنداز کاکر خان راجہ امر سنگہ و نورالحسن بخشی احدیان کی سرداری مین کابل سے روانہ کر دیے ہین اور پانچ لاکھ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

रुपया भी खरच के वास्ते उसके पास-
भेज दिया है-

पोस बदि १० को बादशाह औरंगज़ेब और उसके तईनातियों को बहुत सी इनायतें और निवाज़िशों के साथ रुखसत करके आप भी लाहोर को रवाने हुवे पोस सुदि ४ को सुतलज से और पोस सुदि ८ को ब्यास नदी से उतरे और पोस सुदि १२ को लाहोर में पहुंचे-

बादशाह का पहिले तो यह इरादा हुआ था कि शाहज़ादे औरंगज़ेब को आगे भेजें मगर फिर यह बात ठहरी कि लाहोर और काबुल तक साथ जावे आराम चाहने वाले अमीरों ने दुनिया की भलाई ज़ाहर करके अरज़ की कि आज़र, दे, व, हमन (मगसर- पोस, माह,) इन ३ महीनों में क़ज़लबाश (ईरानी) सफर और लड़ाई की ताक़त नहीं रखते हैं और इन दिनों में जो शाह अब्बास के कंधार पहुंचने की खबर मशहूर हो रही है सो भी अक़ल के खिलाफ है और इस के साथ ही उस इलाके में घास चार और नाज के कम मिलने की खबर पहुंची तो बादशाह ने भी कह दिया कि

روپیہ کا خزانہ بھی بلا حکم اونکے ساتھ بھیجدیا ہے

۲۲ ذی قعدہ کو بادشاہ اورنگزیب اور اوسکے ہمراہیون کو بانواع عنایات مرخص کرکے خود بھی لاہور کو روانہ ہوئے ۳ ذی الحجہ کو ستلج سے اور ۷ کو بیاس ندی سے اوترکر ۱۲ ذی الحجہ کو لاہور پہونچے

بادشاہ کا پہلے تو یہہ ارادہ ہوا تھا کہ شاہزادہ اورنگزیب کو پیشتر روانہ کرین پھر یہہ بات ٹھہری کہ لاہور اور کابل تک ساتھ ساتھ جاوین آرام طلب امیرون نے باظہار خیرخواہی خلایق عرض کی کہ آذر دے بہمن ان تین مہینون میں قزلباشون کو سفر اور رزم کی تاب نہین ہوتی ہے پس ان دنون مین جو شاہ عباس کے قندہار پر پہونچنے کی خبر مشہور ہوئی ہے وہ خلاف عقل ہے اور اسکے ساتھ ہی اوس ضلع مین غلہ چارہ اور گھاس کے کمیاب ہونے کی خبر بھی پہونچی تو بادشاہ نے یہہ بات پسند کی کہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बेशक इन तीन चार महीनों में कि बरफ़
और जाड़े से मुसाफ़िर मर जाया कर
ते हैं अकसर क़ज़लबाश सफ़र नहीं
करते फिर कंधार के ऊपर क्यों चढ़ा
ई करने लगे-

इस तरह काबुल जाने का इरादा
जो हुआ था मौकूफ़ रह गया और य
ह बात ठहरी कि बरफ़ और जाड़े के
दिन लाहोर में ही सैर करें-

बरस २३ वां

माह सुदि ३ सं- १७०५ से-

पोस सुदि १ सं- १७०६ तक-

फागण सुदि १३ को बादशाह की ज
न्मपत्री के हिसाब से ५८ वां बरस
लगा जिसके तुलादान की ख़ुशी
में शाहज़ादे औरंगज़ेब का मनसब
१५ हज़ारी ज़ात और ८००० सवार
दुअस्पा और सिह अस्पा का होग
या उस दिन अकसर अमीरों का इ
ज़ाफ़ा हुआ और इनाम भी मिला-

आज़मखां ७२ बरस का होकर मरगया-

बादशाह अभी तक तईनाती अमी
रों के पहुंचने का रस्ता देख रहे थे जिन
के लाने को गुर्ज़बरदार गये हुवे थे-
और जो बादशाह ईरान के मशहद से

في الواقع ان تین چار مہینوں میں
کہ برف اور ٹھنڈ سے مسافر مرجایا
کرتے ہیں اکثر قزلباش سفر
نہیں کرتے ہیں محاصرہ و تسخیر قندھار کے
واسطے کیوں گھر سے نکلنے اور فوج کشی کرنے لگے تھے

اس طرح کابل جانے کا ارادہ
جو قرار پا چکا تھا فسخ ہو گیا اور یہ بات
ٹھہری کہ برف اور جاڑے کے دن
لاہور میں ہی سیر کریں -

۲۳ واں برس

سنہ ۱۰۵۹ ہجری

۶ جنوری سنہ ۱۶۵۹ء سے ۲۶ دسمبر سنہ ۱۶۴۹ء تک

۱۲ محرم کو جشن وزن شمسی شروع ہو کر
سال ۵۸ کا ہوا جس میں اورنگزیب
کا منصب پندرہ ہزاری ذات اور
آٹھ ہزار سوار دو اسپہ سہ اسپہ
کا ہو گیا اکثر امیروں کے
منصب میں اضافہ ہوا اور
بعضوں کو انعام بھی ملا -

اعظم خان ۷۲ برس کا
ہو کر مر گیا

بادشاہ ابھی تک امرائے
اطراف کے پہونچنے کی انتظار میں تھے کہ جنکے
لانے کو گرزبردار بھیجے گئے تھے اور جو خبر
شاہ ایران کے مشہد سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

रवानेहोनेकी खबर मशहूर होरही थी उसके तहकीक होनेका भी इन्तज़ार था और मचाहनेवाले अमीर छावनी छाने ही फिकरमें थे और जो टटटूं जिये सरदार थे वे डेरोंमें पड़े रहनेको जरूरे और सफ़र की तकलीफ़ोंसे ग़नीमत समझ कर कूच करनेमें हरज होनेका शुक्र भेजरहे थे कि एक दम से शाह अब्बासके कंधार पहुंच जानेकी खबर किलेदार की अर्ज़ी से ज़ाहिर हुई जिसमें लिखा था कि शाहने सख्ती उठाकर इस बर्फ़ और बारिश के मोसममें धावा करके ५० हज़ार सवार कज़लबाश तुर्क ताज़िक और तोपखाने संगीन से पोस सुदि १० को पहुंचकर किले को घेर लिया है तुरत मदद पहुंचना चाहिये -

इस खबरके पहुंचतेही शाहने शाहज़ादे औरंगज़ेबको लिखा कि मुल्तानसे भी धा कंधारको रवाने होजावे उसके साथ जाने के वास्ते सादुल्ला खां वज़ीर बहादुरखां राजा जसवंतसिंघ कुलीचखां राजा विट्ठलदास गोड़ रुसतमखां निजाबतखां सरदारखां और लहरास्पखां

روانہ ہونے کی اوڑتی بھی اوسکی راست و دروغ ہونے کی تحقیق کر رہے تھے فراغت جو امیر چھاونی ڈالنے کی فکر مین تھے اور بے بضاعت سردار خیمہ مین گذر کرنے کو بقدیعہ سفر زستان سے غنیمت سمجھکر ہرج مرج کوچ مقام کا شکر رہے تھے کہ دفعتہ شاہ ایران کے قندہار پہونچ جانے کی خبر قلعہ دار کی عرضی سے نازل ہوئی جسمین لکہا تھا کہ شاہ نے سخت جانی سے اس موسم برف و باران مین بطریق یلغار معہ پچاس ہزار ترک تاجیک قزلباش اور توپخانہ سنگین کے ۱۰ ماہ ذی الحجہ کو قندہار پہونچکر قلعہ کا محاصرہ کر لیا ہے مدد بہت جلد پہونچنی چاہیئے -

اس خبر کے پہونچتے ہی بادشاہ نے شاہزادہ اورنگ زیب کو لکہا کہ ملتان سے بالا بالا قندہار کو واسطے مقابلے شاہ ایران کے روانہ ہو جاوے اور اسکی ساتھ جانے کو واسطے سعداللہ خان وزیر بہادر خان راجہ جسونت سنگھ قلیچ خان راجہ بٹھلداس اور رستم خان نجابت خان سردار خان و لہراسپ خان

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बग़ैरा १३२ अमीरोंको ५०००० सवारों
से ३ महीनेकी पेशगी तनख्वाह देकर
विदा किया शाहज़ादेकी रुख़सत
जल्दी का महूरत होनेसे बग़ैर लवा
ज़में यानी ख़िलअ़त बग़ैरा के हुई थी
इस लिये उसके वास्ते ख़िलअ़त जवाह
र हाथी और घोड़े बग़ैरा पीछेसे साद्
उल्लाखां के साथ भेजे गये और उसको-
नज़दीक के रस्ते बंगशरोद से जाने
का हुक्म दिया गया और ख़र्च के वा
स्ते यह हुक्म हुआ कि जो नौकर क़दीम
से नक़दी पाते हैं उनको चढ़ी हुई तलब
के सिवाय आसामीवार चाकरों सम्
त १०० देवें और नये नौकरों को कि
जिनकी सनदें अबतक तैयार नहीं
हुई हैं और नये पुराने मनसबदा
रों को कि जिन्हें जागीरें दी हुई हैं ३
महीने की तनख्वाह नक़द देदेवें रुपया
दिलाने के वास्ते सज़ावल (सिपाही)
और लशकर को ताकीद करके रवाने
करने के लिये गुर्ज़बरदार मुकर्रर हुवे-
शाह ईरान का क़ोरची बाशी हसन
बेग तुर्कमान कंधार छोड़कर बादशा
ह के पास आया बादशाहने उसको-
ख़िलअ़त सोने का ख़ंजर ४००० नक़द

وغیرہ ۱۳۲ امیروں کو معہ
پچاس ہزار سوار کے سہ ماہہ
تنخواہ پیشگی دیکر لاہور سے
روانہ کیا
شاہزادہ کی رخصت کو احتیاط
ساعت و عدم فرصت سے بغیر
لوازمہ یعنی خلعت وغیرہ کے عمل میں
آئی تھی اسلئے اوسکے واسطے خلعت
اسپ جواہر اور ہاتھی سعد اللہ خان کے
ہمراہ بھیجے گئے اور اوسکو نزدیک کے راستہ
بنگش رود سے کابل ہوکر قندہار پہونچنے
کا حکم دیا گیا اور خرچ کے واسطے یہ
ارشاد ہوا کہ بندہ ہائے قدیم
نقدی کو سوائے طلب لغایت
حال کے فی نفر ایکسو روپیہ معہ
تابینوں کے دیں اور نو ملازم
بندوں کو کہ جنکی سند تیار نہیں
ہوئی ہے اور منصبداران قدیم وجدید کو جو
جاگیر رکھتے ہیں تین ۳ مہینے نقد دیدیں اور پہونچ
دلانے کیلئے سزاول مقرر ہوئے اور روانگی
لشکر کے واسطے گرز بردار تعینات ہوئے کہ تاکید کرکے اوسکو
علائق غیر ضروری سے جدا کرکے بہت جلد روانہ کریں
حسن بیگ ترکمان قورچی باشی شاہ ایران
کو جو قندہار سے جدا ہوکر حضور میں حاضر ہوا تھا
خلعت اسپ خنجر طلا چار ہزار روپیہ نقد

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

y Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और हज़ारीजात ५०० सवार का मनस
ब इनायत किया -

नज़रमोहम्मदखांके वकीलख्वाजा
जानको जो खत और कुछ तोहफे
लेकर आया था खिलअत घोड़ा औ
र १५०००) नकद देकर रुखसत किया -

चेतसुदि २ सं· १७०६ को बादशाह-
खुदभी लाहोरसे काबुलको रवाने हुवे

चेतसुदि १२ को चिनाब नदी से उत
र रहे थे कि उस गुर्ज़बरदार ने जो औ
रंगज़ेबके पास फरमान लेकर ग-
या था जाफ़रखां मीर बख़शी के डेरे
मे पहुंचकर ज़ाहिर किया कि सिया
दतखांने सादुल्लाखांको लिखा है
कि फागणसुदि ९ को ख्वासखां ने
कंधारका किला शाह ईरानके हवा
ले कर दिया है और उस ज़िलेके दूस
रे किले बस्त और ज़मीनदावर पर
भी ईरानियोंका कब्ज़ा होगया है औ
र साथही इसके गज़नीसे भी काग-
ज़ कासीदों और जिलोदारोंके हाथ
पहुंचे जिनको जाफ़रखांने बादशाह
की खिदमतमें जाकर अरज़ किया -

खुलासा यह था कि शाहको १ मही
ना किले के घेरने और किलेवालोंसे

معہ منصب ہزاری ذات اور
پانسو سوار کے عنایت ہوا۔

نذر محمد خان کے وکیل خواجہ جان
کو جو معہ نامہ اور بعض تحائف
کے آیا تھا خلعت اسپ اور پندرہ
ہزار روپیہ نقد دیکر رخصت کیا گیا۔

۶ ربیع الاول کو بادشاہ خود بھی
کابل کیطرف کوچ کرکے ۱۲ کو چناب
سے اوتر رہے تھے کہ اوس وقت اوس
گرزبردار نے جو اورنگ زیب کے
پاس فرمان لیگیا تھا جعفر خان میر
بخشی کے ڈیرہ میں پہونچکر ظاہر کیا
کہ سیادت خان کا نوشتہ سعد اللہ
خان کے نام اس مضمون کا پہونچا
ہے کہ ۸ صفر کو خواص خان قلعدار
قندہار نے قلعہ شاہ ایران کو
دیدیا ہے اور اوس صوبہ کے دوسرے
قلاع زمینداور اور بست وغیرہ پر بھی شاہ
کا قبضہ ہوگیا ہے۔ اور اسی کے
ساتھ ساتھ غزنین سے بھی اسی مضمون کے
خطوط قاصدوں اور جلوداروں کے
ہاتھ پہونچے جعفر خان نے وہ سب حقیقت خطوط
مین بادشاہ سے عرض کی۔

خلاصہ ان خطوط کا یہہ تھا کہ شاہ
نواب ایک مہینا قلعہ کے محاصرہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ाड़ने में गुज़रा अंदर से उस के लशक
र पर खूब गोले बरसाये गये और
क़िले वाले बाहर निकल कर भी ल
ड़े मगर क़िलेदार ने क़ज़लबाशों
के घेरे से घबराकर दिल छोड़ दि
या शाह के लशकर में रसद की क-
मी और हिन्दुस्तान से फ़ौज रवाने
होने की ख़बर से गड़बड़ पड़ी हुई-
थी जिस का परचा १ मुख़बर ने तीर से
बांधकर क़िले में फेंक दिया था तो भी
क़िलेदार मदद पहुंचने तक न ठहर
सका और १५ दिन तक शाह को सु
लह का संदेसा भेजता रहा आख़ि
र जब शाह ने मंज़ूर कर लिया तो फा
गण बदि १० को क़िले से बाहर निक
ल आया और २ दिन की मोहलत
लेकर अपने माल असबाब और बा
ल बच्चों को भी निकाल लाया तीस
रे दिन ईरान का क़िलेदार महराब ख़ां
क़िले में दाख़िल हुआ और वह सूबा
बादशाह के क़ब्ज़े से निकल गया-

फिर ख़वास ख़ां क़िलेदार, काक
ड़ ख़ां, और अबुल हसन वग़ैरा समेत
शाह के दरबार में गया और दम भर
वहां ठहर कर हिन्दुस्थान को रवाने हुआ-

اور مقابلہ میں گذرا اندر سے
بخوبی اوسکے لشکر پر گولہ باری
کی گئی اور قلعہ والے باہر
نکلکر بھی لڑے مگر قلعہ دار
نے قزلباشوں کے محاصرہ
سے تنگ آکر دل چھوڑ دیا
ہر چند کہ شاہ کے لشکر میں
کمی غلہ و رسد و خبر روانگی
فوج ہندوستان سے زلزلہ
پڑا ہوا تھا اور ایک مخبر نے
یہہ خبر کاغذ پر لکھہ کر تیر کے
ذریعہ سے قلعہ کے اندر پہونچا
بھی دی تھی تو بھی قلعدار کمک
پہونچنے کا انتظار نہ کر سکا اور
پندرہ دن تک شاہ سے صلح کا سوالجواب
کرتا رہا اور جب شاہ نے منظور کر لیا
تو ۹ صفر کو قلعہ سے باہر آکر دو
دن کی مہلت اپنی اسباب اور بال بچوں کے
نکالنے کو لی تیسرے دن ایران کا قلعدار
محراب خاں قلعہ میں داخل ہوا اور وہ
صوبہ بادشاہ کے قبضہ سے نکل گیا۔

پھر خواص خاں سعد کا کر
خاں اور ابو الحسن وغیرہ کے
شاہ کی ملازمت میں گیا اور ایک
لمحہ بیٹھ کر

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

y Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाह का खिलअत अपने ऐब छुपाने के वास्ते नहीं लिया और रोता हुआ बादशाह के पास आया -

फिर क़ज़लबाशों ने बस्त, और ज़मानदावर वगैरः के क़िले भी ले लिये जिनमें ६०० सवार उनके और ९०० इन क़िलों के मारे गये क़िलेदार महराबखां का बचन लेकर बाहर आये मगर जब उनसे हथियार लेने लगे तो बाज़े तो कि जो ग़ैरत वाले थे लड़ कर अपने जी से गुज़र गये बाक़ी अपने बाल बच्चों समेत क़ैद हो कर शाह के पास भेजे गये शाह भी जाड़े की तेज़ी और बारबरदारी के घोड़े मर जाने से चेत बदि में हिरात को लौट गया और १०००० सवार बंदूकची महराबखां के पास छोड़ गया कंधार का घेरा लगा जब से लेकर कूच करने के दिन तक शाह को ढाई महीने लगे थे -

बादशाह ने सादुल्लाखां को लिखा कि अब शाह ईरान भी कंधार लेकर लौट गया है तुम जल्दी कंधार पहुंच कर उसके लेने की कोशिश करो

ہندوستان کو روانہ ہوا شاہ کا خلعت اپنا عیب چھپانے کے واسطے نہ لیا اور روتا ہوا بادشاہ کی خدمت میں حاضر ہوا

پھر قزلباشوں نے بست زمین داور وغیرہ کے قلعہ بھی لے لئے جن میں ۶ سو سوار اونکے اور ۹ سو ان قلعہ داروں کے مارے گئے اور سب قلعدار محراب خاں کے پاس سے عہدنامہ جان بخشی کا لیکر حاضر ہوئے مگر جب ہتھیار لے لینے کا حکم ہوا تو بعضے جو کہ عزت والے تھے لڑکر اپنی جان سے گذر گئے اور باقیماندہ معہ اہل و عیال کے قید ہو کر شاہ کے پاس گئے شاہ بھی شدت سرما اور اسپان باربرداری کے مرجانے سے آخر ماہ صفر میں ہرات کو مراجعت کرگیا اور دس ہزار سوار تفنگچی محراب خاں کے پاس چھوڑ گیا ابتدائے محاصرہ سے کوچ کرنے تک شاہ کو ڈھائی مہینے قندہار میں لگے تھے -

بادشاہ نے سعداللہ خاں کو لکھا کہ اب شاہ ایران بھی قندہار لیکر واپس چلا گیا ہے تم جلد قندہار پہونچکر اوسکی فتح کرنیکی کوشش کرو -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वज़ीर और शाहज़ादे की फौज का हाल -

बादशाह ने चलते वक्त शाहज़ादे और वज़ीर को कहा था कि कंधार में जल्दी पहुंचना शाह तुम्हारा पहुंचना सुनकर क़िले के नीचे से उठ जावेगा और जो शायद क़िला फ़तह करले तो तुम उसको नया सामान जमा करने का अवकाश न देना और फ़ौरन क़िले को जा घेरना लेकिन शाहज़ादे को मुलतान में लशकर और ज़रूरी सामानों के जमा करने में और वज़ीर को रस्ते में शाहज़ादे के इन्तज़ार और बे मौसम बरसात हो जाने से ठहरना पड़ा -

सादुल्ला खां चेत बदि २ को नीलाब नदी से उतरा और बादशाहज़ादा भी मुलतान से रवाने होकर सक्खर पहुंचा मगर आगे बर्फ़ बहुत पड़ा हुआ था इस लिये पिशोर की तरफ़ लौटा आगे जाकर दोनों फ़ौजें इकट्ठी हुई -

खलील बेग रस्ते में से बरफ़ हटाने और झाड़ी काटने के वास्ते गया था उसकी रपोट आई कि

شاہزادہ اور وزیر اعظم کی فوج کا حال

بادشاہ نے رخصت کے وقت شاہزادہ اور وزیر سے ارشاد فرمایا تھا کہ قندہار میں جلدی پہونچنا اول تو شاہ تمہاری آمد سنکر محاصرہ چھوڑ جاویگا اور جو خدا نخواستہ وہ قلعہ فتح کرے تو بھی تم اسکو تازہ ذخیرہ جمع کرنیکی فرصت نہ دیکر وہاں پہونچ جانا اور قلعہ کا محاصرہ کر لینا لیکن شاہزادہ کو ملتان میں لشکر اور سامان ضروری جمع کرنے میں اور وزیر کو رستہ میں شاہزادہ کے انتظار اور بیموسم بارش ہو جانے سے خواہ مخواہ ٹھہرنا پڑا۔

سعد اللہ خاں ۱۵ صفر کو نیلاب سے اترا اور بادشاہزادہ بھی ملتان سے روانہ ہوکر سکھر پہونچا مگر آگے برف بہت پڑا ہوا تھا اس لئے پشور کی طرف لوٹا آگے جاکر دونو فوجیں یکجا ہوئیں۔

خلیل بیگ جو رستہ میں سے برف ہٹانے اور درخت کاٹنے کیواسطے گیا تھا اوسکی رپوٹ آئی کہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

y Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बरफ़ इतना गिरा है कि जो फिर न गि
रे तो १ महीने में मुश्किल से रस्ता
निकल सक्ता है इसी दरमयान में
शाह के कंधार को घेरने और फ़तह
करने की ख़बर और बादशाह की
ताकीदें जल्दी रवाने होने के वास्ते
पहुंची और फिर तुरतही शाह के कू
च करने की भी ख़बर आई तब तो शा
हज़ादे और वज़ीर को कूच करना
ही पड़ा और वे उस रस्ते को कि जिध
र से जाना मंज़ूर था छोड़ कर २७००
गज़ ऊंचे पहाड़ों पर से पैदल मय फ़ौ
ज के गुज़रे और जो कुछ सामान अ
सबाब साथ था उसको जहां का त
हां छोड़ गये इस दौड़ में बहुत लोग
जाड़े से ठिठर कर मर गये और बहु
त से भाग गये खाना दाना कुछ पा
स न रहा जब इस हाल से जेठ बदि ८
को काबुल में पहुंचे तो वहां इतनी महं
गाई थी कि १) का गेहूं ५ सेर और घा
स ४ सेर भी हाथ नहीं आता था आ
दमी और जानवर का पेट १) में भी
नहीं भरता था और बादशाह की ता
कीद कंधार पहुंचने के वास्ते हद से
ज़ियादा थी तो भी शाहज़ादे को घोड़े

برف اس قدر گرا ہوا ہے کہ جو
اور نہ گرے تو ایک مہینے میں
بمشکل رستہ نکل سکتا ہے
اوسی عرصہ میں شاہ کے محاصرہ
و تسخیر قندہار کی خبریں آئیں اور
اوسکے ساتھ ہی بادشاہ کی تاکید
بھی جلد روانہ ہونے کے واسطے
پہونچی اور شاہ کے قندہار سے
کوچ کرجانے کی بھی خبر آئی
تب ناچار شاہزادہ اوس رستہ کو
کہ جدھر سے جانا منظور تھا چھوڑکر دو
ہزار سات سو گز بلند اونچے پہاڑوں
پر سے پیدل معہ فوج کے گذرا
اور جو کچھ سامان اسباب تھا وہ سب
چھوڑنا پڑا بہت لوگ جاڑے سے
ٹھٹھر کر مر گئے اور بہت سے
بھاگ گئے غلہ اور چارہ کچھ نہ رہا جب
اس حال سے آخر ربیع الثانی کو کابل
میں پہونچے وہاں اس قدر گرانی
تھی کہ روپیہ کے گیہوں پانچ سیر
اور گھاس چار سیر بھی ہاتھ نہ آتی
تھی آدمی اور جانور کا پیٹ ایک روپیہ
میں بھی نہیں بھرتا تھا اور بادشاہ کی
تاکید قندہار پہونچنے کیواسطے از حد تھی
تو بھی شاہزادہ کو وہاں گھوڑے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वगैरा बारबरदारी के जानवर ख़री
दने के लिये १५ दिन वहां ठहरना
पड़ा फिर कूच करके ग़ज़नी पहुं
चा तो यहां घास का काल था ख़ास
ख़ास आदमियों के वास्ते १) का सेर
भर नाज और १॥ सेर घास मिलता
था जिससे लशकर का बहुत पत
ला हाल हो गया और शाहज़ादे ने
बादशाह को अरज़ी लिखी कि य
हां रुपये सेर नाज है और घास ना
पैद है आगे कुछ चीज़ नहीं मिलती
है इस सबब से लशकरी और सि
पाही बहुत तंग आगये हैं बादशाह
ने लिखा कि मुल्कगीरी में आराम
नहीं होता है ऐसी बातों का ख़याल
न करके फ़ौरन क़ंधार को रवाने हो
जाओ—और क़ज़लबाशों को क़िले
में नया ज़ख़ीरा जमा करने और ठ
हरने की फ़ुरसत न दो और फ़सल-
जो तैयार है उसको उनके हाथ में न
पड़ने दो ख़ुद काट लो और हमको
भी पहुंचा जाने—इस पर शाहज़ादे
और वज़ीर ने लशकर में डोंडी पिट
वा दी कि सब लोग ग़ज़नी से रस्ते
के वास्ते रसद लेलेवें और १५ दिन पीछे

وغیرہ جانوران باربرداری کے
خریدنے کے لئے پندرہ دن ٹھہرنا
پڑا پھر کوچ کرکے غزنین میں پہونچے
تو وہاں گھاس کا کال تھا خاص
خاص آدمیوں کیواسطے ایک
روپیہ کا ایک سیر غلہ اور ڈیڑھ سیر گھاس
ملتا تھا جس سے لشکر کا بہت پتلا حال
ہوگیا اور شاہزادہ نے بادشاہ کو
عرضی لکھی کہ یہاں روپیہ سیر ناج
ہے اور گھاس ناپید ہے آگے کچھ
چیز نہیں ملتی ہے اس سبب سے
لشکری اور سپاہی بہت تنگ آگئے
ہیں بادشاہ نے لکھا کہ ملک گیری
میں آرام نہیں ہوتا ہے ایسی باتوں
کا خیال نہ کرکے فوراً قندھار کو روانہ
ہو جاؤ اور قزلباشوں کو قلعہ میں
نیا ذخیرہ جمع کرنے اور ٹھہرنے کی
فرصت نہ دو اور فصل جو تیار ہے اوسکو
بھی ونکے ہاتھہ آنے نہ دو خود تحصیل
کرلو اور ہمکو بھی پہونچا جاتا اسپر
شاہزادہ اور وزیر نے لشکر میں
منادی کرادی کہ غزنین
سے راستہ کے واسطے رسد
لے لیں اور پندرہ روز
بعد

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कूचकरके ३ दिनमेंक़ज़लबाशोंके
र क़िलेपरपहुंचेजिसकोवे लोगख़ा
लीकरगयेथे-

बादशाहीलशकर ७ फ़ौजहोकर
असाढबदि २ को क़िले कंधारकेपा
स पहुंचा और गंजअली के बाग़
मेंउतरातीसरेदिन जावसिंघवग़ै
रा कई बहादुर सरदारों ने क़िलेको
१ तरफ़ सेज़ाबतेसेखाली देखक
र शाहज़ादेसेपूछे बिना वहां मोर
चा जमाया क़िलेवालोंने ख़ब
र पाकर ऐसी आग बरसाई कि बहु
त आदमी मारे गये और ठहरना मु
श्किलहोगया. सादुल्लाखां ने
राजासे कह लाया कि बग़ैरहुकम
के ऐसी जुरअतकरना बेजाथी म
गर अब वहीजंगल के रूखोंकीआ
ड़लेकर जमे रहो नहींतो क़िलेवाले
ज़ियादा शेर होजावेंगे और इसत
रह बड़ीमुश्किलोंसे बहुत जानें खो
पानेके पीछे क़िलेका घेरा दियागया.

दरबार का हाल.

· जबबादशाह का कूच हसन अब
दालसे हुआ तो शाह अब्बास के
वकील शाह वरदी ख़ां के काबुल में

کوچ کرکے تین روز میں قزلباشوں
کے ایک قلعہ پر پہونچے جسکو وہ
لوگ خالی کرگئے تھے -

بادشاہی لشکر سات فوج ہوکر
۱۴ر جمادی الاول کو قلعہ قندہار
کے پاس پہونچا اور گنج علی کے
باغ میں اترا تیسرے دن بہاو
سنگہ وغیرہ کئی بہادر سرداروں
نے قلعہ کو ایک طرف ضابطہ سے
خالی دیکھکر بغیر اطلاع شاہزادہ
وہاں مورچہ جا جمایا قلعہ والوں
نے خبر پاکر ایسی آگ برسائی کہ
بہت سے بادشاہی آدمی مارے گئے
اور ٹھیرنا مشکل ہوگیا سعد اللہ خاں
نے راجہ سے کہلا بھیجا کہ اگرچہ
بغیر حکم کے ایسی جرأت کرنا بیجا
تھا مگر اب وہیں جنگل کے درختوں
کی آڑ لیکر جمے رہو ورنہ قلعہ والے
زیادہ شوخ ہوجاوینگے اسطرح
بمشکل تمام بہت سی جانیں ضایع
ہونے کے بعد قلعہ کا محاصرہ تمام ہوا-

دربار کا حال

جب بادشاہ کا کوچ حسن ابدال
سے ہوا تو شاہ عباس کے ایلچی شاہ وردی
بیگ کے کابل میں

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहुंचने की ख़बर आई बादशाह ने
उसके लाने को गुर्ज़बरदार भेजा-
बादशाह बैसाख सुदि ६ को नी
लाब से उतरे और ४ कूच में पिशौर में
पहुंचे वहां बाग़ फ़रहबख़्श के मु
क़ाम पर शाहबेग एल्ची आ पहुंचा मग
र बादशाह ने उसको अपने रूबरू न
बुलाया और शाइस्तखां व जाफ़
रखां से फ़रमाया कि उसको अपने
डेरे में ठहराकर उसके पास से ख़त
तो नहीं लेवें और हमारी तरफ़
से कहैं कि हमने शाह ईरान की ख़ुश
तेनी दोस्ती पर भरोसा करके अ
पने १ ख़वास को कंधार के क़िले में
रख छोड़ा था अगर यह जानते कि
उनकी तरफ़ से ऐसी हरकत होगी
तो १ तजरुबेकार जंगी अमीर को
रखते जो जीते जी क़िले को न छोड़
ता अब इस उम्मेद के ख़िलाफ़ कर
तूत के बदले का भी औलंभा न
हीं देना चाहिये पहिले शाह क़ुली
के आने की ख़बर आई थी फ़िर शा
ह के कंधार पहुंचने की ख़बर आई
तो शाह क़ुली को लाहौर में रखने
का हुक्म दिया गया गरज़ जब इस

پہونچنے کی خبر پہونچی بادشاہ نے
اوسکے لانیکو گرزبردار بھیجا- نی
بادشاہ نے تاریخ ۵ ربیع الثانی
کو نیلاب سے عبور کیا اور چار کوچ میں
پیشاور پہونچے باغ فرح افزا
میں شاہ بیگ وکیل ایران کہ جسکو
داراے ایران نے قندہار سے
کوچ کرنے کے بعد بھیجا تھا حاضر
آیا مگر بادشاہ نے اپنے روبرو نہ
بلایا اور شایستہ خاں و جعفر خاں
کو فرمایا کہ اوس سے ایک مجلس میں ملاقات
کر کے اوسکے پاس سے نامہ تو نہ
لیں اور ہماری طرف سے کہیں
کہ ہم نے شاہ ایران کی موروثی دوستی
پر نظر کر کے اپنے ایک خواص کو
قندہار کے قلعہ میں رکھ چھوڑا
تھا اگر یہہ جانتے کہ اونکی طرف سے
ایسی حرکت ہوگی تو ایک تجربہ کار
جنگی امیر کو رکھتے جو تا بزیست خود قلعہ
کی حفاظت نہ چھوڑتا اس خلاف توقع
عمل کے بدلہ کا بھی گلہ شکوا نہ چاہیے پہلے
شاہ قلی کے آنیکی خبر آئی تھی بعد شاہ
کے قندہار پہونچنے کی خبر آئی تو
شاہ قلی کو لاہور میں رکھنے کا حکم
دیا گیا غرض جب اسطرح

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तरहदोस्तीकाचश्माग़दलाहोग
यातोरवत और वकीलके भेजनेमें
क्यामज़ाहै-

फिरफ़रमायाकि शाहवरदी बे-
गसेकहदो किजलालाबादमेंजा
करठहरे कबुलपहुंचकर हमतुम
दोनोंवकीलोंको इज़्ज़तकेसाथ-
रुखसतकरेंगे और शाहवरदीबेग
कीतकलीफ़काहाल सुनकर १००००
उसको इनायतफ़रमाये-

शाहज़ादादाराशिकोहजोपहिले
रवानेहोगयाथा इसमंज़िलमें का
बुलके सूबेदार अलीमरदानखां
वग़ैरासमेत पेशवाईकोआया-

बादशाह जेठसुदिमें काबुलके
दौलतखानेमें पहुंचे चौथेदिन अ
लीमरदानखांके मकानपरपधारे
औरउसकीपेशकशमेंसे १लाखरु
पयेकीजिनसकबूलकी-

बलखमें अबफिरबहुतसेफ़सा
द नज़रमोहम्मदखांके व अबदुल
अज़ीज़खांके और सुबहानकुलीखां
के आपसमें हुवे तोभी नज़रमोह
म्मदखांने अपनी सलतनत पर का
यमहोकरबादशाहको खलीतालिखा

چشمہ الفت غبار کدورت سے بھر گیا ہو
تو نامہ اور ایلچی بھیجنے میں کیا
لطف ہے-

پھر فرمایا کہ شاہ ویردی بیگ
سے کہدو کہ جلال آباد میں جاکر
ٹھہرے کابل پہونچکر ہم دونو
ایلچیوں کو عزت کے ساتھ رخصت
کرینگے اور شاہ ویردی بیگ کی
عشرت کا حال سنکر دس ہزار
روپیہ عنایت فرمائے

بادشاہزادہ دارا شکوہ جو پہلے
روانہ ہوگیا تھا اس منزل میں
معہ امیرالامرا علیمردان سردار
کابل وغیرہ کے پیشوائی کو آیا-

شروع جمادی الاول میں
بادشاہ کابل پہونچے اور چوتھے
دن علیمردان خاں کے مکان پر
تشریف لیگئے اور ایک لاکھ روپیہ
کی پیشکش قبول کی-

بلخ میں اب پھر بہت سے
فساد نذر محمد خاں کی و عبدالعزیز خاں
کے اور سبحان قلیخاں کے باہم برپا ہوئے
اور نذر محمد خاں نے اپنی سلطنت پر
قایم ہوکر بادشاہ کو خریطہ
لکھا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसको लेकर उसका वकील मुराद बेग आया उसके साथ यादगार खां चौलाक भी था -

नज़र मोहम्मदखांके बेटे सुबहान कुलीखांने सेवन्ज तरुदी अलीक तगान और मोहम्मद बेग कबचाक वग़ैरः बाग़ियों को क़तल करके उनके सिर नज़र मोहम्मदखांके पास भेजे थे वे भी नज़र मोहम्मदखांने बादशाहको दिखानेके वास्ते शाहज़ादे दारा शिकोहके पास भेजे अब बलख़ और बदख़शांमें नज़र मोहम्मदखांका पूरा क़बज़ा होगया था इसलिये उसने अपने बेटों और क़बीलोंको बुलवाया और कुछ ख़र्च भी मांगा -

असाढ सुदि २ को २३ वां जलूसी बरस शुरू हुआ जिसके दरबारमें बादशाह ने नज़र मोहम्मदखांके बेटे अबदुलरहमान सुलतानको ख़िलअत जीग़ा (तुर्रा) तलवार ख़ंजर और ढाल जड़ाऊ साज़से और ३०००० रोकड़ देकर बलख़ जानेकी रुख़सत इनायत की और २०००० के जवाहरात और जड़ाऊ ज़ेवर वग़ैरः

جس کو اوسکا وکیل مراد بیگ لیکر آیا اوسکے ساتھہ یادگار بیگ چولاق بھی تھا

نذر محمد خاں کے بیٹے سبحان قلیخاں نے سیونج تروذی علی قطغان اور محمد بیگ قبچاق وغیرہ باغیونکو قتل کرکے اونکے سر نذر محمد خاں کے پاس بھیجے تھے وہ بھی نذر محمد خاں نے باظہار اخلاص واسطے ملاحظہ کے بادشاہ کے شاہزادہ دارا شکوہ پاس بھیجدیئے اور اب چونکہ بلخ اور بدخشاں میں نذر محمد خاں کا بدستور قبضہ ہوگیا تھا اسلیئے اوس نے اپنے فرزندوں اور متعلقوں کو بادشاہ سے طلب کیا اور کچھہ خرچ بھی منگوایا

غرہ جمادی الثانی کو ۲۳ واں جلوسی سال شروع ہوا جسکے دربار میں بادشاہ نے نذر محمد خاں کے بیٹے عبدالرحمن سلطان کو خلعت جیغہ خنجر و شمشیر معہ ساز مرصع و مبلغ تیس ہزار روپیہ عنایت فرماکر بلخ جانیکی رخصت دی اور شاہزادہ دارا شکوہ نے بھی جو اوسکی تربیت کرتا تھا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दाराशिकोह ने भी बादशाह के हुक्म से दिये क्योंकि अबदुलरहमान की संभाल उसके ज़िम्मे की गई थी—

नज़र मोहम्मद खां को १०००००) तो पहिले काबुल के खज़ाने से इनायत हुवे थे और १०००००) अब फिर उसके वास्ते और ५००००) जड़ाऊ तलवार समेत सुबहानकुली खां के वास्ते अबदुलरहमान सुलतान के हाथ भेजे गये—

दूसरे असाढ़ की सुदि ३ को नज़र मोहम्मद खां की औरतें और बेटियां भी जो लाहोर से काबुल में पहुंच गई थीं बलख को रवाने हुईं उनको भी कई लाख रुपये की नक़दी और जिनस इनायत हुई इन बेगमों को अब तक ३ लाख रुपया मदद खरच का मिल चुका था और जो बादशाही बेगमों ने दिया था वह इसके अलावे था नज़र मोहम्मद खां के वास्ते इनके साथ भी १ लाख रुपया और १ हाथी भेजा गया—

ये लोग २ बरस और १० महीने के क़रीब हिन्दुस्तान में रहे थे—

नज़र मोहम्मद खां के २ बड़े बेटे खुसरो सुलतान और बहराम सुलतान हिन्दुस्तान के मज़े न छोड़ सके और

بموجب حکم بادشاہ کے بیس ہزار روپیہ کا نقد و جنس عطا فرمایا۔

نذر محمد خاں کو ایک لاکھ روپیہ تو پہلے خزانہ کابل سے عنایت ہوئے تھے اور اب ایک لاکھ روپیہ اوسکے واسطے اور پچاس ہزار روپیہ نقد معہ ایک قبضہ شمشیر مرصع کے سبحان قلیخاں کے لیے عبدالرحمن سلطان کے ہاتھ بھیجے

غرہ رجب کو نذر محمد خاں کی عورتیں اور بیٹیاں بھی جو لاہور سے کابل میں پہونچ گئیں تھیں بلخ کو روانہ ہوئیں اونکو بھی کئی لاکھ روپیہ کا نقد و جنس عطا ہوا ان بیگموں کو ابتک تین لاکھ روپیہ مدد خرچ کے مل چکے تھے اور جو بادشاہ کی بیگموں نے دیا تھا وہ اسکے علاوہ تھا نذر محمد خاں کے واسطے انکے ساتھ بھی ایک لاکھ روپیہ اور ایک ہاتھی بھیجا گیا۔

یہہ لوگ دو برس اور دس مہینے کے قریب ہندوستان میں رہے تھے

نذر محمد خاں کے دو بڑے بیٹے خسرو سلطان اور بہرام سلطان لذات ہند کی وابستگی سے بلخ جانیکو نہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बादशाही नौकरी पर राज़ी होकर बल्ख़ को नहीं गये—

क़ंधार की मोहिम।

दूसरे असाढ़ की बदि १ को सादुल्ला ख़ां ने शाहज़ादे से कहा कि क़िलेदार ने मग़रूरी से ख़ंज़र और वैस क़रन दरवाज़ों को आज तक बंद नहीं किया है इस बात से अपने लश्कर की सुस्ती और अबतरी ज़ाहर होती है—

शाहज़ादा दूसरे दिन क़िले की तरफ़ बढ़ा क़िलेवालों ने मारे तोपों के बहुत से आदमियों को गिरा दिया—

क़िले से गोले मेह की तरह हर रोज़ बरसा करते थे तो भी सादुल्ला ख़ां ने कुछ दिन पीछे ५-६ सलामतकूचे बनाकर ९२ गज़ ज़मीन खोदी और क़िले की खाई तक सुरंग पहुंचाई मगर क़िलेवालों ने उसके अंदर पानी छोड़ दिया—

इस तरह बादशाही लश्कर ने क़िला फ़तह करने के वास्ते कोशिश करने और जान लड़ाने में कोई बात बाक़ी नहीं छोड़ी मगर गोला बारूद वग़ैरा सामान पूरा तैयार नहीं था और

اور مواجب مناسب پر راضی ہوکر ہندوستان میں رہ گئے

قندہار کی مہم

۱۴ جمادی الثانی کو سعد اللہ خاں نے بادشاہ سے کہا کہ قلعدار نے دلیری سے آج تک خضر اور ویس قرن دروازوں کو بند نہیں کیا ہے اس سبب سے بادشاہی لشکر کی سستی ابتری اور قلعدار کی خیرہ چشمی پر حمل ہوتا ہے

شاہزادہ دوسرے دن قلعہ کیطرف بڑہا قلعہ والوں نے مارے توپوں کے بہت سے آدمیوں کو گرا دیا قلعہ سے گولے مینہ کیطرح برستے تھے تو بھی سعد اللہ خاں نے چند روز بعد پانچ چھ سلامت کوچے تیار کرکے ۹۲ گز زمین کھودی اور خندق تک سرنگ پہونچائی لیکن قلعہ والوں نے اوسکے اندر پانی چھوڑ دیا

اسطرح بادشاہی لشکر نے کوشش اور جانفشانی میں کوتاہی نہ کی مگر قلعہ گیری کا مصالحہ بالکل تیار نہ تھا اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

जाड़े का मौसम भी आ गया था इस लिये लौट चलने की सलाह ठहरी मगर इतने ही में ख़बर पहुंची कि क़ज़लबाशों के ३०००० सवार मुरतिज़ा क़ुली खां वग़ैरा ३१ बड़े २ अमीरों की अफ़सरी में चले आते हैं शाहज़ादे ने यह सुनकर सावण सुद १४ को रुस्तम ख़ां और क़ुलीच ख़ां वग़ैरा को उनके मुक़ाबिले पर भेजा बड़ी घमसान लड़ाई हुई दोनों तरफ़ से ख़ूब कोशिश और मरदानगी दिखलाई गई आख़िर को बादशाही आदमी एकदम से हल्ला करके दुश्मनों पर जा गिरे और बहादुरी से उनको भगा कर डेरों की तरफ़ लौटे दूसरे दिन शाहज़ादे के पास पहुंचे शाहज़ादा इस फ़तह को कंधार की फ़तह से बढ़ कर समझ कर पीछा लौटा और कंधार की फ़तह को अगले साल पर छोड़ आया — +

तवारीख़ मुन्तख़िबुल्लुबाब में लिखा है कि घेरे के पीछे १ तरफ़ से सादुल्ला ख़ां ने और दूसरी तरफ़ से रुस्तम ख़ां और क़ासम ख़ां वग़ैरा ने

+ यह हाल मुल्ला ज़ाहिद के बादशाह नामे से लिखा गया है —

اور موسم سرما بھی قریب آپہونچا تہا اسلیے با مصلحت وقت سے مراجعت کی صلاح ٹھہری مگر اتنے ہی میں خبر پہونچی کہ قزلباشونکے تیس ہزار سوار مرتضی قلیخاں قورچی باشی وغیرہ ۳۱ بڑے بڑے امیروں کی افسری میں چلے آتے ہیں شاہزادہ نے یہہ سنکر ۱۴ شعبان کو رستم خاں و قلیچ خاں وغیرہ کو اونکے مقابلہ پر بھیجا بڑی سخت لڑائی ہوئی دونو طرف سے خوب کوشش و مردانگی ظہور میں آئی لیکن آخر کو بادشاہی آدمی یکبارگی دشمنوںپر حملہ آور ہوے اور جلادت مردانہ سے اونکو شکست دیکر مظفر و منصور اپنے خیمونکو لوٹے اور دوسرے دن شاہزادہ کی خدمت میں پہونچے شاہزادہ اس فتحکو قندہار کی فتح سے بڑہکر سمجھکر مراجعت فرما ہوا اور فتح قندہار کو سال آیندہ پر چھوڑ آیا۔ تواریخ منتخب اللباب میں لکھا ہے کہ بعد محاصرہ قندہار کے ایکطرف سے سعد اللہ خاں نے اور دوسری طرف سے رستم خاں و قاسم خاں وغیرہ نے مورچے

یہہ حال ملا زاہد کی بادشاہ نامہ سے اخذ کیا گیا ہے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क़िले के पास तक मोरचे बढ़ाये और सुरंगें भी खाई तक पहुंचाईं लेकिन ईरान के क़िलेदार महराबख़ां की होशयारी और तजरुबाकारी से कि जिसने रूम की लड़ाईयों में ख़ूब लड़ाई और क़िलेदारी के काम देखे थे कुछ पेश नहीं गई वह क़िले में से रात दिन बराबर ऐसी लगातार गोलियां और गोले बरसाता था कि आदमियों को मोरचों में भी चलने फिरने की फ़ुरसत नहीं मिलती थी और वह अक्सर तो सुरंगों को ही मारे गोलों के उड़ा देता था इधर से हल्ले जो किये जाते थे उनमें सरदारों के सिर और सिपाहियों के बदन खाई की भरती भरने के काम में आते थे तो भी कुछ काम नहीं निकलता था–

उधर से क़ज़लबाश जो लड़ने को बाहर निकलते थे तो भी बड़ी २ लड़ाईयां होती थीं जो क़ैदी उनके हाथ लगते थे उनको वे क़िले में ले जाते थे और जो बादशाही लशकर के हाथ आते उनको वे अपने डेरों में ले आते थे–

قلعہ کے پاس تک بڑھائے اور سرنگیں بھی خندق تک پہونچائیں لیکن ایران کے قلعدار اور محراب خاں کی ہوشیاری اور تجربہ کاری سے جس نے روم کی لڑائیوں میں خوب جنگ اور قلعداری کی تھی کچھ پیش نہ گئی وہ قلعہ میں سے رات دن برابر ایسے گولے اور گولیاں برساتا تہا کہ آدمیوں کو مورچوں میں پہرنے کی فرصت نہ دیتا تہا اور اکثر سرنگوں کو بھی مارے گولوں کے اڑا دیتا تہا ادہر سے جو حملے کئے جاتے تہے ان میں بھی سرداروں کے سر اور سپاہیوں کے بدن خندق کی بھرتی بھرنے میں کام آتے تہے تو بھی کچھ کام نہیں نکلتا تہا

ادہر سے جو قزلباش لڑنے کو باہر نکلتے تہے تو بھی بڑی بڑی لڑائیاں ہوتی تہیں جو قیدی اونکے ہاتھ لگتے تہے اونکو وہ قلعہ میں لیجاتے تہے اور جو بادشاہی لشکر کے ہاتھ آتے تہے اونکو وہ اپنے ڈیروں میں لے آتے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१ दिन कुछ कज़लबाश इसी तरह
पकड़े आये थे उनकी ज़बानी मालू
म हुआ कि शाह अब्बास ने हिरात प
हुंचकर २० अमीर और २०००० सवा
र महराबखां की मदद को रवाने कि
ये हैं उनमें से ३-४००० तो बहुत करी
ब आ पहुंचे हैं इसी तरह की खबर
१ बादशाही बंदे ने भी जो शाह के ल
शकर में पकड़ा गया था आकर कु
लीचखां को दी इसके साथ ही शुतर
वानों, फीलवानों, और खच्चर वालों
ने आकर फरियाद की कि कज़लबा
श एकाएकी हमला करके बहुत से
आदमीयों और जानवरों को पकड़
लेगये और अकसर लोगों को भी
ज़खमी करगये हैं रुस्तमखां ने जो
अपने वक्त का रुसतम था यह सु
नकर वग़ैर हुक्म के ही कज़लबाशों
का पीछा किया और ४-५ कोस पर
उनको जा लिया पहिले बंदूक और
बान की लड़ाई हुई और फिर तल
वार चली दोनों तरफ़ के बहुत से-
आदमी मारे गये रुस्तमखां अपने
और उनके हाथी घोड़े ऊंट बैल और

ایکدن کچھ قزلباش اسیطرح
پکڑے آئے تہے اونکی زبانی
معلوم ہوا کہ شاہ عباس نے ہرات
پہونچکر بیس امیر اور تیس ہزار
سوار محراب خاں کی مدد کو روانہ
کئے ہیں وہیں سے تین چار ہزار
سوار بہت قریب آپہونچے ہیں
اور اسیطرح کی خبر ایک بادشاہی
بندہ نے بہی جو شاہ کے لشکر
میں پکڑا گیا تہا قلیچ خاں کو
آکر دی اسکے ساتہہ ہی شتربانوں
فیلبانوں ور خچربانوں نے آکر
فریاد کی کہ قزلباش دفعتہً گہی
پر حملہ کرکے بہت سے آدمیوں
اور چارپایوں کو پکڑ لے گئے اور
اکثر لوگوں کو زخمی بہی کر گئے
رستم خاں جو اپنے وقت کا رستم تہا
یہ سنتے ہی بلا حکم قزلباشوں کا پیچھا
کیا اور چار پانچ کوس پر اونکو
جالیا پہلے تو بندوق اور بان
کی لڑائی ہوئی پہر تلوار چلی دونو
طرف کے بہت آدمی مارے گئے
رستم خاں نے اپنے اور اونکے جس قدر
ہاتہی گہوڑے اونٹ بیل اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ख़च्चर जितने कुछ उसका लेकर शाहज़ादे के पास हाज़िर हुआ और सब ने उसकी इस बहादुरी की बड़ी तारीफ़ की।
दूसरे दिन तड़के ही ख़बर पहुंची कि ३०००० सवार क़ज़लबाशों के नज़र अली ख़ां हाकिम अर्दबेल, अली क़ुली ख़ां, और मुरतज़ा ख़ां वग़ैरा कई अमीरों की अफ़सरी में बहुत क़रीब पहुंच गये हैं इधर से भी रुस्तम ख़ां और क़ुलीच ख़ां वग़ैरा कई अमीर दस हज़ार सवार और बहुत सा तोपख़ाना लेकर उनके मुक़ाबिले पर गये जोंही उनकी फ़ौज नज़र आई सैयदों पठानों मुग़लों और राजपूतों ने घोड़े उठाये ईरानी ठहर गये मगर जब इधर से गोले और बान चलने लगे तो उन्होंने ३ तरफ़ से हल्ला करके हिन्दुस्तानियों के ऊपर हमला किया और कई बार अपने सामने की फ़ौज को हटा दिया मगर रुस्तम ख़ां क़ुलीच ख़ां और बहादुर राजों ने मस्त हाथियों को आगे रखकर और अपनी सवारी के हाथियों के पावों में ज़ंजीरें डालकर

خچر اسکا لیکر شاہزادہ کے پاس حاضر ہوا اور سب نے اوسکے اس کار شایستہ کی بہت تعریف کی۔
اوسکے صبح ہی خبر پہونچی کہ قزلباشوں کے ۳۰ ہزار سوار مع کئی نامی امیروں مثل نظر علیخاں حاکم اردبیل و علیقلی خاں مرتضی قلیخاں وغیرہ کے بہت قریب پہونچگئے ہیں اسطرف سے بھی رستم خاں قلیچ خاں وغیرہ امرا دس ہزار سوار اور بہت سا توپخانہ لیکر اونکے مقابلہ پر گئے جونہی اونکی فوج نظر آئی سیدوں پٹھانوں مغلوں و راجپوتوں نے گھوڑے اوٹھائے ایرانی ٹھہر گئے مگر جب ادہر سے گولے اور بان چلنے لگے تو اونہوں نے تین طرف سے حملہ کرکے ہندوستانیوں کے اوپر دھاوا کیا اور کئی بار اپنے مقابل فوج کو ہٹا دیا مگر رستم خاں قلیچ خاں اور بہادر راجوں نے مست ہاتھیوں کو آگے رکھکر اور اپنی سواری کے ہاتھیوں کے پانوؤں میں زنجیریں ڈالکر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

...ya Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब लोगों को दिलासा दिया और अपना क़दम भी आगे बढ़ाया और जो लोग ज़िरह बकतर पहिने हुवे थे वे दुश्मनों के दरमियानी लशकर से जा भिड़े जहां के नामी सरदार और बहुत से ग़ैर मशहूर आदमी मारे गये और अकसर ज़ख़मी हुवे आख़िर क़ज़लबाशों के पांव उखड़ गये और वे सामने से भागते ही नज़र आये बादशाही अमीर उनके बहुत से घोड़े और ख़च्चर लेकर शाहज़ादे के पास लौट आये +

سب لوگوں کو دلاسا دی اور اپنا قدم بھی آگے بڑھایا اور جو لوگ زرہ پوش تھے وہ قلب لشکر غنیم جا بھڑے جہاں کئی نامی سردار اور بہت سے غیر مشہور آدمی مارے گئے اور اکثر زخمی ہوئے آخر قزلباشوں کے پاؤں اکھڑ گئے اور وہ سامنے سے بھاگتے نظر آئے بادشاہی امیر بہت سے گھوڑے اور خچر انکے لیکر شاہزادہ کے پاس لوٹ آئے له

+ सेरुल मुताख़रीन में लिखा है कि शाह अब्बास कंधार फ़तह करके अस्फ़हां में नहीं गया हिरात में ठहरा रहा जब हिन्दुस्तान की फ़ौज के पहुंचने की ख़बर उसको पहुंची तो उसने अपने सरदारों को शाहज़ादे औरंगज़ेब के मुक़ाबिले पर भेजा शाम के वक़्त चग़ताइयों और क़ज़लबाशों की मुठभेड़ हुई रात हो जाने से दोनों लशकर अपने २ डेरों को लौट गये सुबह होते ही औरंगज़ेब कूच का नक़्क़ारा बजाकर चल दिया सियावश ख़ां ने कुछ दूर तक पीछा किया ईरानी अमीर सरहदी क़िलों को मज़बूत करके शाह के पास चले गये और शाह मशहद में ज़ियारत करके अस्फ़हान को गया इधर बादशाह ने इसी ज़रा सी ख़िदमत में औरंगज़ेब का मनसब १५ हज़ारी १२००० सवार दो अस्पे और सिह अस्पे का और सादुल्ला ख़ां का ७ हज़ारी ७००० सवार दु अस्पा और सिह अस्पा का और अली मरदान ख़ां का ५ हज़ारी ५००० सवार दु अस्पा और सिह अस्पा का कर दिया रुस्तम ख़ां को फ़ीरोज़जंग का ख़िताब बख़्शा और क़ुलीच ख़ां को काबुल का सूबेदार मुक़र्रर किया—

له سیر المتاخرین میں لکھا ہے کہ شاہ عباس بعد فتح قندہار کے اصفہان کو نہ گیا ہرات میں ٹھہرا جب لشکر ہندوستان پہونچنے کی خبر پہونچی تو اپنے سرداروں کو شاہزادہ اورنگ زیب کے مقابلہ پر بھیجا شام کو وقت چغتائیوں اور قزلباشوں کا مقابلہ ہوا رات ہو جانے سے دونو لشکر اپنے اپنے ڈیروں کو واپس گئے صبح ہی اورنگ زیب کوچ کا نقارہ بجاکر چلا سیاوش خاں نے کچھ دور تک پیچھا کیا ایرانی امیر سرحدی قلعوں کو مضبوط کرکے شاہ کے پاس واپس گئے اور شاہ مشہد میں زیارت کرکے اصفہان کو چلا گیا اور شاہ جہاں نے اسی ذرا سی خدمت میں اورنگ زیب کا منصب پندرہ ہزاری بارہ ہزار سوار دو اسپہ سہ اسپہ کا سعد اللہ خاں کا ہفت ہزاری ہفت ہزار سوار دو اسپہ سہ اسپہ کا قلیچ خاں کا پنج ہزاری پنجہزار سوار دو اسپہ سہ اسپہ کا کر دیا رستم خاں کو فیروز جنگ کا خطاب بخشا اور قلیچ خاں کو کابل کا صوبہ دار مقرر کیا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दरबार का हाल.

दूसरे असाढ़ की सुदि १० को कंधार के अख़बार से मालूम हुआ कि बहादुरख़ां पठान मर गया बादशाह ने उसके ६ बेटों में से बड़े दिलावर को हज़ारी ज़ात का मनसब दिया और बाक़ियों की भी परवरिश की-

भादों सुदि २ को बादशाह काबुल से हिन्दुस्तान को रवाने हुवे और शाहज़ादे दाराशिकोह को औरंगज़ेब के पहुंचने तक काबुल में रहने का हुक्म दे गये-

भादों सुदि ५ को बादशाही लश्कर के ईरानियों पर फ़तह पाने की ख़बर पहुंची बादशाह ने खुश होकर शाहज़ादे औरंगज़ेब और अकसर अमीरों को जिन्हों ने उस लड़ाई में अच्छा काम दिया था इज़ाफ़े और इनाम से सर बलंद किया-

मुन्तख़िबुल्लुबाब में लिखा है कि जब पहिली फ़तह की ख़बर बादशाह के पास पहुंची तो उन्हों ने फिर शाहवर्दीबेग ईरान के वकील से कहलाया कि बड़े शाह अब्बास १० बरस तक हमसे साथ

دربار کا حال

۱۰ رجب کو واقعات قندہار سے معلوم ہوا کہ بہادر خان افغان مرگیا بادشاہ نے اُسکے ۶ بیٹون مین سے بڑے دلاور کو ہزاری ذات کا منصب دیا اور باقی کی بہی پرورش کی-

سلخ شعبان کو بادشاہ کابل سے ہندوستان کو روانہ ہوئے اور شاہزادہ دارا شکوہ کو اورنگ زیب کے پہونچنے تک کابل مین رہنے کا حکم دے گئے-

۳ رمضان کو بادشاہی لشکر کے ایرانیون پر فتح پانیکی خبر پہونچی بادشاہ نے خوش ہوکر شاہزادہ اورنگ زیب اور اکثر امیرون کو جنہون نے اوس جنگ مین اظہار تردد وجلادت کیا تہا اضافہ اور انعام عنایت کیے

منتخب اللباب مین لکہا ہے کہ جب پہلی فتح کی خبر بادشاہ کے پاس پہونچی تو اونہون نے شاہ ویردی بیگ وکیل ایران سے کہلایا کہ بڑے شاہ عباس ۱۰ برس تک تمہارے ساتہہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

मोहब्बत रखते थे उनके पीछे जो उम्मेद हम उनके खानदान से रखते थे इस साल उसके ख़िलाफ़ ज़हूर में आया अब हम भी जो हम से हो सकेगा कमी नहीं करेंगे और १०००० इनायत करके उसको गुर्ज़बरदार के साथ शाहज़ादे औरंगज़ेब के पास रवाने किया और शाहज़ादे को लिखा कि वह भी इसी तरह गुर्ज़बरदार को साथ करके शाह के पास पहुंचा देवे

लश्कर पर जो कुछ मिहनत और तकलीफ़ कंधार के घेरे में गुज़रती थी और जिससे कुछ मतलब नहीं निकलता था उसकी लगातार ख़बरें बादशाह ने सुनकर जान लिया कि घेरे से ज़ियादा दिनों तक रहने में फ़ौज के तबाह होने के सिवाय और कुछ काम नहीं निकलेगा इस लिये शाहज़ादे को लिखा कि अब मसलिहत वक़्त यही है कि कँधार का फ़तह करना दूसरे साल पर मौक़ूफ़ रखकर किले के नीचे से उठ आओ और शाहज़ादे दाराशिकोह से फ़रमाया कि औरंगज़ेब के ग़ज़नी पहुंचने की ख़बर आने तक तुम काबुल में

محبت رکھتے تھے اونکے بعد جو امید ہمکو اونکے خاندان سے تھی اس سال اوسکے خلاف ظہور مین آیا اب ہم بھی جو ہم سے ہو سکیگا دریغ نکرینگے۔ پھر دس ہزار روپیہ عنایت کرکے اوسکو گرزبردار کے ساتھ شاہزادہ اورنگ زیب کے پاس روانہ کیا اور شاہزادہ کو لکھا کہ وہ بھی اسیطرح گرزبردار ساتھ کرکے شاہ کے پاس پہونچادے

لشکر پر جو کچھ سختی اور تکلیف قندہار کے محاصرہ مین گذرتی تھی اور جس سے کچھ فایدہ نہ نکلا تھا اوسکی خبرین بادشاہ نے متواتر سنکر جان لیا کہ محاصرہ کے طول پکڑنے مین سوا اسکے ضایع ہونے سپاہ کے اور کچھ نتیجہ مرتب نہوگا اسلئے شاہزادہ کو لکھا کہ اب بنظر مصلحت وقت قندہار کا فتح کرنا سال دیگر پر موقوف رکھکر قلعہ کے نیچے سے اوٹھہ آوے اور بادشاہزادہ داراشکوہ سے فرمایا کہ اورنگ زیب کے غزنین پہونچنے کی خبر آنے تک کابل مین

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहना और आप भादों सुदी में हिन्दुस्तान की तरफ़ रवाने हुवे मगर पहिली मंज़िल में बादशाही लशकर से कज़लबाशों के शिकस्त खाकर भाग जाने की ख़बर आई इससे बादशाह को बहुत ख़ुशी हुई क्यों कि उनको बहुत फ़िकर थी इस ख़ुश ख़बरी के पहुंचते ही ३ दिन तक शादियाने बजाने का हुक्म दिया सादुल्ला ख़ां रुस्तम ख़ां और कुलीच ख़ां वग़ैरा तमाम अमीरों के मनसब में इज़ाफ़ा फ़रमाया-

कंधार का हाल.

शाहज़ादा औरंगज़ेब बादशाह का हुक्म पहुंचने पर ४ महीने बाद कंधार घेरने के जबकि २ तीन हज़ार आदमी और ४-५ हज़ार जानवर तलफ़ हो चुके थे क़िले के नीचे से उठकर बादशाह की ख़िदमत में रवाने हुआ

दरबार का हाल.

आसोज बदि ११ को बादशाह पिशोर में पहुंचकर बाग़ ज़फ़र में ठहरे और वहां से चलकर आसोज बदि १२ को हसन अबदाल में और कातिक बदि ९ को लाहोर में पहुंचे सादुल्ला

رہے اور آپ اوایل رمضان میں کابل سے لاہور کو روانہ ہوئے جون ہی منزل اول مین پہونچے قزلباشون کے بادشاہی لشکر سے مغلوب ہوکر بھاگ جانے کی خبر آئی اس سے بادشاہ کو بہت خوشی ہوئی کیونکہ اونکو بہت تشویش تھی اور تین روز تک شادیانہ بجانے کا حکم دیا سعد اللہ خان رستم خان اور قلیچ خان وغیرہ تمام امیرون کے منصب مین اضافہ کیا-

قندہار کا حال

شاہزادہ اورنگ زیب بادشاہ کا حکم پہونچنے پر ۴ مہینے بعد محاصرہ قندہار کے کہ دو تین ہزار آدمی اور چار پانچ ہزار جانور تلف ہو چکے تھے قلعہ کے نیچے سے اوٹھکر بادشاہ کی خدمت مین روانہ ہوا-

دربار کا حال

۲۴ رمضان کو بادشاہ پیشور پہونچکر باغ ظفر مین فروکش ہوئے ۲۶ کو حسن ابدال کے باغ مین ٹھہرے ۱۸ شوال کو لاہور مین داخل ہوئے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

खांजी ८ दिनमें काबुलसे आया-

कातिक सुद ८ को शाहज़ादा दारा-शिकोह अपने बेटे सुलेमान शिकोह समेत हाज़िर आया-

मगसर सुदि ७ को औरंगज़ेब अपने बेटे मोहम्मद सुलतान और तमाम तइनातियों के साथ क़ंधार की मुहिमसे हाज़िर आया रुस्तम खांने जो कई तोपें और निशान क़ज़लबाशों के छीने थे वे बादशाह के नज़र किये बादशाहने उसको बहुत शाबाशी दी और अकसर अमीरों को इज़ाफ़े इनाम और खिताब बख़्शे-

शाहजिहानाबाद का सूबेदार मकरमत खां जिसने अपनी उमर वहां की इमारतोंके तमाम करनेमें ख़र्च की थी मरगया बादशाहने उसकी जगह जाफ़र खां को हजार सवार दुअसाके इज़ाफ़े से मुकर्रर किया-

मुलतान का सूबा तो पहिले से औरंगज़ेब के पास था और अब ठठे का सूबा और सरकार भक्कर और सेवस्तान भी तीनों उसको इनायत हुवे-

मंगसर सुदि १४ को बादशाहने

سعید اللہ خان نے کابل سے آٹھ روز مین حاضر ہوکر ملازمت کی ۶ ذی قعدہ کو شاہزادہ داراشکوہ معہ اپنے بڑے بیٹے سلیمان شکوہ کے حاضر آیا۔

۵ ذی الحجہ کو شاہزادہ اورنگ زیب نے معہ اپنے بیٹے سلطان محمد اور تمام تعیناتیون کے مہم قندہار سے آکر ملازمت کی اکثر امیر انعام خطاب اور اضافہ منصب سے سرفراز ہوئے

رستم خان نے جو کئی توپین اور نشان قزلباشون کے چھینے تھے وہ نذر کرکے مصدر تحسین و آفرین ہوا۔

شاہ جہان آباد کا صوبہ دار مکرمت خان جسنے اپنی عمر وہان کی عمارتون کے تمام کرنے مین صرف کی تھی مرگیا بادشاہ نے اوسکی جگہہ جعفر خان کو مقرر کیا اور اوسکی منصب مین ایکہزار سوار دو اسپہ کا اضافہ فرمایا

صوبہ ملتان تو پہلی اورنگ زیب کے متعلق ہوچکا تہا اب ٹھٹھہ سرکار بھکر اور سیوستان بہی اوسکو مرحمت ہوئے

۱۲ ذی الحجہ کو بادشاہ نے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाहोरसे शाहजहानाबादकी तर
फ़ कूच किया अलीमरदानखांकोजो
काबुलसे हाज़िर आयाथा कशमी
रकीभी सूबेदारी मिली और हुकमहु
आकि खुद तो काबुलमें जावे और अ
बदुलग़नी को नायब करके कश
मीरमें भेज देवे-

२४ वां बरस

पोससुदि २ संवत १७०६ से=
पोससुदि २ संवत १७०७ तक

पोससुदि १२ को बादशाह शाहज
हानाबादके क़िलेमें दाखिल हुवे
उसी दिन शाहज़ादा मुरादबख़श
भी दक्खनसे आया क्योंकि वहांकी
आबहवा उसको नहीं स
धीथी और सूबेका बंदोबस्त भी
अच्छी तरह नहीं जमाया-

बादशाहने शाहज़ादा मुरादके
मनसब में २ हज़ारी ज़ातका इज़ा
फ़ाकरके उसका मनसब १२ हज़ा
री ज़ात और १०००० सवार दुअस्पा
और सिह अस्पाका कर दिया और
माहसुदि ११ को काबुलकी सूबेदा
री उसको दी-

शाहज़ादा दाराशिकोह जो-

شاہجہان آباد کی طرف کوچ کیا
علیمردان خان کو جو کابل
سے حاضر آیا تہا کشمیر کی بہی
صوبہ داری ملی اور حکم ہوا کہ خود
تو کابل کو جاوے اور عبد الغنی
کو اپنا نایب مقرر کرکے
کشمیر مین بہیجدے -

چوبیسوان برس

سنہ ۱۰۶۰ ہجری
۲۶ دسمبر سنہ ۱۶۴۹ سے ۱۴ دسمبر سنہ ۱۶۵۰ تک

۱۱ محرم کو بادشاہ قلعہ شاہ
جہان آباد مین داخل ہوئے
اوسیدن شاہزادہ مرادبخش
بہی دکن سے آیا کیونکہ آب و ہوا
اوسکے مزاج کو موافق نہین
آئی تہی اور وہان کا بندوبست
بہی اچہی طرح سے قایم نہوا تہا
بادشاہ نے شاہزادہ مراد کے
منصب مین دو ہزاری ذات کا
اضافہ کرکے اوسکا منصب بارہ
ہزاری ذات اور دس ہزار سوار
دو اسپہ سہ اسپہ کا کردیا اور
۲۵ محرم کو کابل کی صوبہ داری
پر رخصت کیا

شاہزادہ داراشکوہ جو

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

...Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

माह सुदि ११ को लाहोरसे रवाने हुआ था अपने बेटों समेत हजूरमें पहुंचा सादुल्लाखां वज़ीर जिसका मनसब उसकी लयाक़त और बादशाह की महरबानीसे हरसाल बढ़ा करता था ७ हज़ारी ज़ात और ७००० सवारोंके मनसबको पहुंचा जिसमें २००० सवार दुअस्पा और सिह अस्पा थे और ११ किरोड़ दाम बरसाबरसी इनामके उसके वास्ते मुकर्रर हुवे आसिफ़खांके पीछे कोई अमीर इस दरजेको नहीं पहुंचा था और नः इतना इनाम सिवाय बादशाहज़ादोंके और किसीको मिलता था—

चेतवदि २ को नौरोज़ यानी पहिला दिन नये सालको सौरपक्षसे था और शाहजहानाबादमें यह पहिलाही नौरोज़ था इस लिये बहुत धूमधामसे कियागया जिसमें बादशाहने १००० बड़े २ मनसबदारों को खिलअत बख्शे और बहुतोंके मनसबमें भी इज़ाफ़ा हुआ और बाज़ोंको खिताब भी मिले।

इसदिन हाफ़िज़ मोमिनने जो शाह ईरानके गवय्योंमें से था

۲۵ محرم کو لاہور سے روانہ ہوا تھا
معہ اپنے بیٹوں کے حضور میں پہونچا
سعد اللہ خان وزیر جسکا منصب
ذاتی لیاقت اور بادشاہ کی مہربانی
سے ہر سال بڑھا کرتا تھا سات
ہزاری سات ہزار سوار کے منصب
کو پہنچا جسمین دو ہزار سوار دو
اسپہ اور سہ اسپہ تھے اور
گیارہ کروڑ دام انعام دوازدہ
ماہہ سے بھی سرفراز ہوا لیکن الدولہ
اصف خان خانخانان کے بعد کوئی
امیر اس درجہ کو نہ پہونچا تھا اور
نہ دوازدہ ماہہ سوائے بادشاہزادوں
کے اور کسیکو عطا ہوتا تھا۔

۱۶ ربیع الاول کو جشن نوروز ہوا
چونکہ شاہجہان آباد میں یہ
اول دفعہ ہوا تھا اسلئے بادشاہ نے
بڑی دہوم دہام سے اس جشن
کی آرایش کی اور ایکہزار بڑے
بڑے منصب داروں کو خلعت
بخشے اور اکثر امرا کے منصب میں
اضافہ بھی کیا اور بعضوں کو خطاب
بھی دئے۔

اسدن حافظ مومن نے جو شاہ ایران
کے مشہور موسیقی دانوں میں سے تھا

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हाज़िर होकर अपने बनाये हुवे गीत
जो बादशाह के नाम पर बनाये थे सु
नाये बादशाह ने उसको खिलअत
और १०००) देकर अपनी सरकार में
नोकर रख लिया—

इसी दिन बादशाह ने मेवातियों
को सज़ा देने के वास्ते जिन्हों ने आ
गरे और दिल्ली के बीच में के गांवों
को लूट कर उजड़ कर दिया था—
राजा जयसिंघ के दूसरे बेटे कीरत
सिंघ को मुक़र्रर करके कामा पहा-
ड़ी का परगना वतन बनाने के वा
स्ते उसकी जागीर में इनायत किया

बादशाह ने
इसी दिन सादुल्लाखां वज़ीर
के पेशकार रुघनाथ की लयाक़
त और कारगुज़ारी पसंद करके
उसको
राय का ख़िताब तन दिवानी का
काम और सोने का कलमदान
इनायत किया—

बृहस्पतवार की पेशकशी सा
लतक ताहरखां के इनाम में मु
क़र्रर हुई—

जेठ सुदि ३ को २४ वां बरस बादशाह
के जलूसी सन का शुरू हुआ—

बादशाहने ख्वाजा क़ासिमको

حاضر ہوکر اپنی تصنیف جو بادشاہ کے
نام بنائی تھی گائی بادشاہ نے
خوش ہوکر خلعت اور دس ہزار
روپیہ نقد اوسکو دیا اور اپنی سرکار
مین نوکر رکھ لیا —

اسیدن بادشاہ نے میواتیوں
کی سزا دہی کیواسطے کہ جنہون نے
مواضعات درمیانی اکبرآباد اور
شاہجہان آباد کو لوٹ مارکے
ویران کردیا تھا راجہ جیسنگہ کے
دوسرے بیٹے کیرت سنگہ کو
مقرر کرکے کامان پہاڑی کا پرگنہ
وطن بنانے کیلئے اوسکی جاگیر مین عنایت کیا

اسیدن جملۃ الملک سعد اللہ
خان وزیر کے پیشدست رگھناتھ کو
رائے کا خطاب سونے کا قلمدان
اور دیوان تن کا عہدہ اوسکی
لیاقت اور کارگذاری پسند
کرکے عنایت فرمایا —

روز پنجشنبہ کی پیشکش
ایک سال تک طاہر خان کے
انعام مین مقرر ہوئی —

یکم جمادی الثانی کو ۲۴ وان
جلوسی سنہ شروع ہوا
بادشاہ نے خواجہ قاسم کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

खत और १लाख रुपये के जवाहर देकर नज़र मोहम्मद खाँ के पास भेजा और १०००० खान के छोटे बेटे अबदुलरहमान सुलतान के वास्ते भी भेजे -

असाढ सुदि ४ को नज़र मोहम्मद खाँ का बकील सुभानकर बेग खत ले कर आया जिसमें मदद मिलने के वास्ते लिखवाया था -

सावन सुदि ७ को मीर सालह खुशनवीस मर गया बादशाह ने उस की जगह किताबखाने की दरोगाई सैयद जलाल के बेटे सयद अली को इनायत की -

भादों बदि ३ को बादशाह ने फ़रासखाँ नाज़िर को मक्के जाने की रुखसत देकर हुकम दिया कि १५०००० वहां के कंगालों के वास्ते अहमदाबाद के खज़ाने से लेता जावे -

कीरतसिंघ ने चार पांच हज़ार सवार और छः सात हज़ार बंदूकची और तीरंदाज़ नोकर रखकर मेवातियों को मारा और उनके औरत बच्चों को कैद कर के बाकियों को निकाला और अपने आदमियों को

معہ خریطہ جواہرات قیمتی ایک لاکھ روپیہ کے نذر محمد خان حاکم بلخ کے پاس بھیجا اور دس ہزار روپیہ نذر محمد خان کے چھوٹے لڑکے عبدالرحمن سلطان کے واسطے بھی مرسل ہوئے

۲ رجب کو نذر محمد خان کا سفیر سنکر بے بلخ سے مراسلہ لے کر حاضر آیا جسمین خان نے واسطے طلب مدد کے لکھا تھا

۵ شعبان کو میر صالح خوشنویس مر گیا جس سے کتاب خانہ کی داروغگی سید جلال کے بیٹے سید علی کو مرحمت ہوئی۔

۱۵ شعبان کو بادشاہ نے ناظر فراست خان کو مکہ اور مدینہ جانے کی رخصت دیکر حکم دیا کہ ڈیڑھ لاکھ روپیہ خزانہ احمدآباد سے مسکینان عرب کے واسطے لیتا جاوے۔

کیرت سنگ نے چار یا پانچ ہزار سوار اور چھہ سات ہزار تفنگچی و تیرانداز نوکر رکھ کر میواتیون کا قلع و قمع کیا اور اونکی زن و فرزند نکو اسیر کر کے باقی ماندونکو نکال دیا جس سے دلی اور آگرہ کے مضافات مین

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहां बसादिया जिससे दिल्ली और आम्पेर की तलहटी में अमन चैन होगया और बादशाह ने खुश होकर उस के मनसब में १००० सवारों का इज़ाफ़ा फ़रमाया —

अब बादशाह की उमर ६० बरस की हो गई थी इस लिये मोलवियों ने फ़तवा दिया कि जो बादशाह बुढापे की कमज़ोरी से रोज़ा न रख सकें तो ६०००) हरेक रमज़ान के महीने में फ़क़ीरों को देते रहें बादशाह ने ३०००) सालियाना तो पहिले से ही मुक़र्रर कर रक्खा था अब २०००) और बढा दिया और २०००) ही कुल रोज़ों के कुफ़्फ़ारे (प्रायश्चित) में जो भूलचूक से या जान बूझकर नहीं रक्खे गये थे गरीबों और मोहताजों को इनायत फ़रमाया —

अकबराबादी महल ने जो क़िले शाहजहानाबाद से ३॥ कोस के फ़ासिले पर सराय बावली के पास लाहोर और कश्मीर के फ़ैज़बख़्श और फ़रहबख़्श बाग़ों के नमूने पर १ मसजिद और बाग़ २ लाख रुपये की लागत से ४ बरस में तैयार कराया था बादशाह उस बेगम की

امن و امان ہو گیا جب اس حال کی عرض درگاہ میں پہنچی تو بادشاہ نے خوش ہو کر اوسکی منصب میں یکہزار سوار کا اضافہ فرمایا۔

چونکہ اب بادشاہ کی عمر ساٹھ برس کی ہو گئی تھی اسواسطے مولویون نے فتوا دیا کہ اگر بادشاہ ضعیف البدنی سے روزہ نہ رکھہ سکین تو ساٹھہ ہزار روپیہ ہر رمضان مین فقیرون کو دیا کرین بادشاہ نے تیس ہزار روپیہ سالیانہ تو پہلے سے مقرر کر رکھا تھا اب بیس ہزار روپیہ اور بڑھا دیا اور بیس ہزار روپیہ عوض فطار و کفارہ روزہ وغیرہ مین جو سہواً و عمداً انہوں رکھے گئے تھے غریبون و محتاجون کو بطور خیرات عنایت کئے۔

اکبرآبادی محل نے جو قلعہ شاہ جہان آباد سے ڈہائی کوس کے فاصلہ پر سرائے باولی کے پاس لاہور اور کشمیر کے فیض بخش و فرح بخش باغون کے نمونہ پر ایک باغ معہ مسجد دو لاکھہ روپیہ کی لاگت سے چار برس مین تیار کرایا تھا بادشاہ اوس مسجد مین بیگم

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

...aya Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अरज़ से उस मसजिद में नमाज़
पढ़ने को गये बेगम ने १८ खान सो
ने और जवाहरात के जड़ाऊ जेव
रों के नज़र और निछावर की तोर
पर पेश किये-

मुरतिज़ाखां बूढ़ा होगया था
जिस से उसका मनसब दूर होकर
२० लाख दाम सालाना की पेंन
शन मुकर्रर होगई-

मंगसर सुदि १२ को मुल्ला शफ़ी
आय यज़दी ने सूरत से हाजिर
आकर बादशाह से सलाम किया
बादशाह ने हज़ारी ज़ात और १००
सवार का मनसब मुकर्रर करके
नोकर रख लिया-

रूम के सुलतान महंमद खां के
एलची मैं यद मोहीउद्दीन के सू
रत में पहुंचने की खबर सुनकर
बादशाह ने उसके लाने के वास्ते
ख़्वाजा रोशन गुर्ज बरदार को भे
खिलअत के भेजा और ५०००
रुपये ख़ज़ाने सूरत से और १५०००
बुरहानपुर मांडो और मालवे के
दीवानों से दिलवाये-

کی عرض سے نماز پڑھنے کو
گئے بیگم نے ۱۸ خوان سونے
اور جواہرات کے جڑاؤ زیور کو
نذر اور نچھاور کی طور پر
پیش کئے

مرتضی خان بوجہ ضعف پیری
کے منصب سے برطرف ہوکر
بیس لاکھ دام سالیانہ پر داخل
دعاگویان ہوا

۹ ذی الحجہ کو ملا شفیعائے
یزدی نے سورت سے آکر ملازمت
کی اور ہزاری ذات و یکصد
سوار کے منصب پر ملازم
سرکاری شاہی
ہوگیا-

بادشاہ نے محمد خان
سلطان روم کے ایلچی محی الدین
کے سورت میں پہونچنے کی خبر
سنکر خواجہ روشن گرزبردار
کو اوسکے لانے کے واسطے
مع خلعت کے بھیجا اور دس ہزار
روپیہ خزانہ سورت سے اور پندرہ
ہزار روپیہ برہان پور مندو اور مالوہ کے
دیوانوں سے ایلچی کو دلوائے-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२५ वांबरस पोससुदि २ सं० १७०७ से पोससुदि ३ सं० १७०८ तक फागणबदि ५ को शाहजादा औरंगजेब अपने बेटों समेत मुलतानसे हाज़िर आया बादशाह ने बुलाया था— फागणसुद ३ को बादशाह कश्मीर को रवाने हुवे और शाहज़ादे औरंगजेबको मुलतान जानेकी सीख दी— ज़फ़रखांको पटने जाने की और खलीलुल्लाहखां को शाहजानाबाद की सूबेदारी मिली सईदखां ज़फ़रजंग पटने से बदला गया— चेतसुदि ३ को बादशाह लाहोर पहुंचकर बाग़ फैजबख्श में ठहरे और हुक्म दिया कि पेशकशके जब्त करने वाले मुतसद्दी इतवारके दिनकी नजर रसालतकमुआफ़ी रक्खा करें आयकोदेते रहें यह बड़ा शायर था और व्योपार के वास्ते ईरानसे सूरत बंदर में आया था बादशाह ने	**پچیسوان برس** سنہ ۱۰۶۱ ہجری ۱۶ دسمبر سنہ ۱۶۵۰ع سے ۶ دسمبر سنہ ۱۶۵۱ع تک ۱۷ محرم کو شاہزادہ محمد اورنگ زیب معہ اپنے بیٹون کے حسب الطلب ملتان سے حاضر آیا۔ غرہ ربیع الاول کو بادشاہ شاہجہان آباد سے کشمیر کو روانہ ہوئے اول منزل سے شاہزادہ اورنگ زیب کو ملتان جانے کی رخصت ملی جعفر خان پٹنہ کا صوبہ دار سعید خان ظفر جنگ کے تغیر سے ہوا اور خلیل اللہ خان شاہجہان آباد کا۔ غرہ ربیع الثانی کو بادشاہ لاہور پہونچکر باغ فیض بخش مین فروکش ہوئے اور حکم دیا کہ پیشکش کے متصدی اتوار کے دن کی نذر ایک سال تک ملا شفیعائے کو دیتے رہین یہ بڑا شاعر تھا اور تجارت کے واسطے ایران سے بندر سورت مین آیا تھا بادشاہ نے

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तारीफ़ सुनकर कुछ महीने पहिले ५०००) खर्च के भेजकर अपने पास बुला लिया था और दोनों वक्त मुजरा करने के वास्ते हाज़िर होने का हुक्म दे दिया था-

चेत सुदि ५ को बादशाह लाहोर के क़िले में दाखिल हुवे-

बंगाले के अख़बार से मालूम हुआ कि हुगली का क़िला शाहज़ादे शुजाअ के नौकर जान बेग ने जो सूबे उड़ीसे का काम करता था वहां के ज़मींदारों से लेकर बादशाही सल्तनत में शामिल किया-

अब्दुल रहमान का बलख से आना·

अब्दुलरहमान जो बलख को रवाने हुआ था जब अपने बाप नज़र मोहम्मद खांके पास पहुंचा तो नज़र मोहम्मद खां ने अपने आदमी साथ करके उसको गोरबंद की हकूमत पर भेजा दूसरे भाई सुबहानक़ुली खां ने बाप के पास फ़ौज कम रह जाने की खबर सुनकर बलख पर हमला करके उसको इस क़दर तंग किया कि

تعریف سنکر چند ماه بیشتر پانچہزار روپیہ خرچ کے بہیجکر اپنے پاس بلایا تہا اور دونو وقت مجرا کیواسطے دربار مین حاضر ہونے کا حکم دیدیا تہا-

۵ ربیع الثانی کو بادشاہ قلعہ لاہور مین داخل ہوئے

وقایع بنگالہ عرض ہوئی کہ بندر ہگلی کو معہ قلعہ حاکم نشین کے شاہزادہ محمد شجاع کے ملازم جان بیگ نے جو صوبہ اوڑیسہ مین مقرر تہا وہان کے زمینداروں سے لیکر ممالک محروسہ مین داخل کیا

عبدالرحمن سلطان کا بلخ سے آنا

عبدالرحمن جو بلخ کو روانہ ہوا تہا جب اپنے باپ نذر محمد خان کے پاس پہونچا تو نذر محمد خان نے اوسکو اپنے آدمی ہمراہ کرکے غوربند کی حکومت پر بہیجا دوسرے بہائی سبحان قلیخان نے باپ کے پاس فوج کم رہ جانے کی خبر سنکر بلخ پر حملہ کیا اور باپ کو اس قدر دبایا کہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसने अबदुलरहमान को रस्ते
से पीछा बुलाया मगर सुबहा
न कुली खां के कलमाक़ बी
च में से ही उसको पकड़ लेग
ये सुबहान कुली खां ने अब
दुलरहमान को क़ैद कर दिया
मगर वह पहरे वालों की मिला
वट से निकल कर बादशाह-
के पास भाग आया बादशाह
ने उसको ४ हज़ारी ज़ात ५०० स
वार का मनसब और २०००० रु
पये हाथी घोड़ा और कुछ ज-
ड़ाऊ ज़ेवर इनायत किया और
उसके साथियों को भी उसके
कहने के माफ़िक़ तजवीज त-
नख़्वाह की करके नौकर रख लिया-

जेठ सुदि ९ को बादशाह ने ला
होर से कश्मीर की तरफ़ कूच क
रके रावी नदी के पास डेरा किया
और शाहज़ादे औरंगज़ेब को मा
लवे की सूबेदारी पर जाने का
हुक्म लिखा-

इस साल में नाज की महँगाई
और मेह के नहीं बरसने से लो
गों को बहुत तकलीफ़ हो रही-

کہ اوسنے عبدالرحمن کو رستہ سے ق
واپس بلایا مگر سبحان قلیخان کی قلما
بیچ مین سے ہی اوسکو پکڑ لیگئے سبحان
قلیخان نے عبدالرحمن کو قید کرا دیا
لیکن وہ پہرہ والون کو ملاکر بادشاہ
کے پاس بہاگ آیا بادشاہ نے اوسکو
چار ہزاری ذات پانسو سوار کا منصب اور
بیس ہزار روپیہ معہ اسپ و
فیل و مرصع آلات کے مرحمت
کیا اور اوسکے ہمراہیون کو بہی
اوسکے کہنے کے موافق تجویز
تنخواہ کی کرکے نوکر رکہ لیا-

۲۹ جمادی الاول
کو بادشاہ نے سیر کشمیر
کے واسطے لاہور سے
کوچ کرکے راوی ندی
کے اوسطرف ڈیرہ کیا
اور شاہزادہ اورنگزیب
کو مالوہ کی صوبہ داری پر
جانے کا حکم دیا-

اس سال مین
قحط غلہ اور امساک
باران سے لوگون کو
بہت تکلیف ہو رہی تہی مگر
جس دن کہ بادشاہ نے

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

थीमगर जिस दिन कि बादशाह ने-
कूच किया मेंह बरसना शुरू हुआ
और इतना बरसा कि बादशाह को
रस्ते में १ हफ़्ते तक ठहरना पड़ा
इस मेंह से रैयत का नुक़सान
हुआ कि पहिले तो बोने का मौक़ा
नहीं मिला और जो कुछ बोया भी था
तो वह पानी में बह गया इस वास्ते
जमाबंदी के वक़्त ख़ालसे के पर-
गनों की रैयत पुकारू आई बादशा-
ह ने सादुल्लाखां वज़ीर को हुक्म
दिया कि कई दिन तक आम ल-
गाकर रैयत की शिकायत ख़ुद सुने

आदिलखां की पेशकश

इसलाम खां का बेटा मोहम्मद
सफ़ी आदिलखां के पास से पीछे
ले सनों की बाक़ी पेशकश ला-
ने के वास्ते भेजा गया था सो नीचे
लिखे माफ़िक़ लेकर हाज़िर हुआ-
१ बादशाह के वास्ते पेशकश न-
क़द और जिन्स जिसमें ४० हाथी
और जड़ाऊ चीजें ४० लाख रुप-
ये की थी-
२ मलिके जहां बादशाह बेगम
के वास्ते पेशकश नक़द और

لاہور سے کوچ کیا مینہ برسنا
شروع ہوا اور اسقدر
برسا کہ بادشاہ کو راستہ
مین ایک ہفتہ تک ٹھہرنا پڑا
مگر اس بارش سے
رعایا کا بھی نقصان ہوا کہ اول
تو کاشتکاری کا موقع نملا
پھر جو بویا وہ پانی مین بہہ گیا
اسواسطے بر وقت تشخیص جمع کے
پرگنات خالصہ کی رعایا فریادی
آئی بادشاہ نے سعد اللہ خان
کو حکم دیا کہ خود چند روز متوجہ ہو کر
مالگذارون کی شکایت سماعت کرے

عادل خان
والی بیجاپور کی پیشکش

اسلام خان کا بیٹا محمد صفی عادلخان
کے پاس پچھلے سنون کی باقیماندہ
پیشکش وصول کرنیکے واسطے
گیا تھا وہ حسب ذیل پیشکش لیکر حاضر آیا
۱ بادشاہ کے واسطے پیشکش نقد
جنس و مرصع آلات معہ ۴۰
ہاتھیون کے قیمتی
چالیس لاکھ روپیہ
۲ ملکہ جہان بادشاہ بیگم
کے واسطے پیشکش نقد و

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिनस ५ लाख रुपये की -
३ शाहज़ादे दारा शिकोह के वास्ते पेशकश नक़द और जिनस १५ लाख रुपये की -

इसके सिवाय आदिलखां ने डेढ़ लाख रुपया रोकड़ और जवाहरात मोहम्मद सफ़ी को और छ लाख रुपये नक़द और माल शाहज़ादा दारा शिकोह के नौकर सैयद बाक़िर को दिया था वह भी बादशाह की नज़र से गुज़रा -

दरबार का हाल.

जेठ सुदि २ को २५ वें बरस के नौरोज में १ मशहूर कवि ने जो बादशाह का मुसाहिब भी था १ कवित्त बादशाह की तारीफ़ में कह कर सुनाया जिसके इनाम में बादशाह ने उसको १ हथनी और २००० रुपये इनायत किये -

शाहज़ादे दारा शिकोह को बेटों समेत लाहोर जाने का हुक्म हुआ -

असाढ़ बदि १० को बादशाह कशमीर में पहुंचे रस्ते में बर्फ़ से बहुत तकलीफ़ हुई मगर कशमीर में बड़ी बहार थी बादशाह रातों

جنس قیمتی پانچ لاکھ
۳ شاہزادہ دارا شکوہ کے واسطے پیشکش قیمتی پندرہ لاکھ روپیہ

اسکے سوائے عادل خان نے ڈیڑھ لاکھ روپیہ نقد پانچ ہاتھی اور کچھ جواہرات محمد صفی کو اور چھہ لاکھ روپیہ نقد و جنس مرکے شاہزادہ دارا شکوہ کے ملازم سید باقر کو دیا تھا وہ بھی بادشاہ کی نظر سے گذرا -

دربار کا حال

غرہ جمادی الثانی کو پچیسواں جلوسی سنہ شروع ہوا جسکے جشن مین ایک مشہور ہندی شاعر نے جو بادشاہ کا مقرب بھی تھا ایک کبت بادشاہ کے تعریف مین بنا کر پیش کیا بادشاہ نے ایک ہتھنی اور دو ہزار روپیہ اوسکو عنایت کی

شاہزادہ دارا شکوہ کو معہ بیٹون کے لاہور واپس جانے کا حکم ہوا

۲۳ جمادی الثانی کو بادشاہ شکار کھیلتے اور سیر دیکھتے ہوئے کشمیر کے دولت خانہ مین داخل ہوئے اگرچہ راستے مین برف سے بہت تکلیف ہوئی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

बेगमों समेत नावों में बैठकर रातों
को तलाव डल की सैर किया करते
थे ये नावें रंग २ के ज़री के परदे और
लाजवर्द के काम की चोबों से स-
जी हुई थीं और ऊपर सोने के जड़ा-
ऊ कलस लगे हुवे थे इसी तरह
बागों में जाकर वहां की बहार दे-
खते थे और झोली भर २ कर रुप-
या मल्लाहों और बागवानों को दि-
या करते थे—

एक दिन अली मरदान खां
की अरज़ से उसके बाग और म-
हल के देखने को पधारे अलीम-
रदान खां ने जो पेशकश नज़र से
गुज़रानी उसमें से १२००००) का मा-
ल क़बूल फरमाया गया—

१ दिन मुल्ला शाह बदख़शी बाद-
शाह से मिलने को आया दूसरे
दिन बादशाह और मलिका ज़-
मानी बेगम उसके मकान पर गये
जो बेगम ने ४००००) लगाकर बन-
वा दिया था और २००००) के दूसरे-
मकानात फ़कीरों के वास्ते उस
के पास तैयार कराये थे—

असाढ सुदि १ को आदम खां

کشمیر مین بڑی بہار تھی بادشاہ اونکو
کو معہ بیگمات کی کشتیون مین بیٹھکر
تالاب ڈل کی سیر کیا کرتے تھے
جو رنگ برنگ کی زربفت پردون
لاجورد کی منقش ستونون اور
سونے کے جڑاؤ قبون سے آراستہ
تھین اسیطرح باغون کی سیر کو
جاکر دامن دامن روپیہ باغبانون
اور ملاحون کو عنایت کیا
کرتے تھے

ایکدن علیمردان خان کی
عرض سے اوسکے باغ اور محل کے
ملاحظہ کو تشریف لیگئے علیمردان
خان نے جو پیشکش پیش کی
اوسمین سے ایک لاکھ اور
بیس ہزار روپیہ کی نذر قبول ہوی

ایکدن ملا شاہ بدخشی
بادشاہ سے ملنے کو آیا دوسرے
دن بادشاہ بھی معہ ملکہ زمان بادشاہ
بیگم کے اوسکے مکان پر گئے جو ملکہ
زمان نے چالیس ہزار روپیہ لگاکر
بنوا دیا تھا اور بیس ہزار روپیہ کے
مکانات اوسکے پاس دوسرے
فقیرون کے واسطے بھی تیار کرادئے تھے

۲۹ جمادی الثانی کو آدم خان

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तिब्बती की अर्ज़ से मालूम हुआ कि मिरज़ाय तिब्बती जो हज़ूर में से भाग कर तिब्बत का मालिक बन बैठा था अब बादशाह के इकबाल से भाग गया है बादशाह ने आदम खां का मनसब असल और इज़ाफ़े से हज़ारी ज़ात और ५०० सवार का करके तिब्बत का मुल्क जो ८० लाख दाम (२ लाख रुपये) का था वतन के तौर पर उसको और उसके भाइयों की जागीर में दे दिया।

इस साल में पहिले तो पानी नहीं बरसा और फिर बरसा तो ज़ियादा बरसा जिससे कशमीर के अक्सर मकानों और बाग़ों की शोभा जाती रही थी इस लिये बादशाह यहां की सैर से पहिले के माफ़िक ख़ुश नहीं हुवे और फ़रमाया कि लाहोर और आगरे के जैसे क़ीमती मकानों और बाग़ों को छोड़कर अपने दिल की ख़ुशी के वास्ते इतनी दूर आना कि जिसमें ख़ुदा की ख़लक़त को बहुत तकलीफ़ पहुंचती है ख़ुदा से नहीं डरने की बात है और २ महीने रहने के पीछे शाहबाद

تبتی کی عرضی سے معلوم ہوا کہ مرزا ے تبتی جو حضور مین سے بہاگ کر تبت کے اوپر قابض ہوگیا تہا اقبال بادشاہی سے بہاگ گیا ہے بادشاہ نے آدم خان کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور پانسو سوار کا کر کے تبت کا ملک جو اسی لاکہہ دام کی جمع کا تہا بطور وطن کے اسکی اور اسکے بہائیون کی جاگیر مین دیدیا۔

اس سال مین پہلے تو پانی برسا اور پہر برسا تو زیادہ برسا کشمیر کے اکثر مکانات اور باغات کی اصلی رونق اور بہار جاتی رہی تھی اسلئے بادشاہ یہان کی سیر سے چندان خوش نہوئے اور فرمایا کہ دار الخلافت اور دار السلطنت کے باصفا باغات اور مکانات کو اتنی دور کی مسافت حظ نفس کے واسطے طے کرنا کہ جس مین خلق خدا کو بہت صدمہ پہونچتا ہے طریقہ خدا پرستی سے بہت دور ہے اور بعد قیام دو مہینے کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

...ya Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केरस्तेसेलशकरकोसीधेरस्तेरवाने करके कहा किअबमें इसतरफ़ फिरन हीं आऊंगा और सादुल्लाखां बज़ीर को हुकमदिया कि सब कामोका बंदो ब-स्तकरकेजल्दी लाहोर में आजावे-

आसिफ़ाबादमें दरयासे उतरते वक्त आदमियों की जियादा भी ड़होजाने से पुल जो पुरानाहोग याथा टूटगया २५० आदमी और ब हुतसेजानवर मालअसबाबसमेत जोउनपरलदाहु आथादरयामें गिरपड़े

आसोजबदि ९ को बादशाह-की सवारी भंबरमें पहुंची दूसरे दि नकूचके वक्त शाहज़ादे दाराशि कोह ने अपने बेटों समेत लाहोर मेंआकर मुजरा किया और नज़र मोहम्मदखां के बेटे अबदुलरह-मांन और खुसरोने भी पेशवाईमें हाज़िरहुवे-

जबबादशाह लाहोरके पास-पहुंचेतो सादुल्लाखां वज़ीरभी क शमीरसेआकरहाज़िरहोगया-

बादशाहने लाहोर पहुंचकर रुसतमखां और राजों व अमीरों को जो हाज़िर और गेर हाज़िर थे

غرہ رمضان کو وہان سے دار الخلافت کیطرف روانہ ہوئے اور لشکر کو براہ راست جانے کا حکم دیکر فرمایا کہ اب پہر مین اسطرف نہین آؤنگا- اور سعد اللہ خان کو حکم دیا کہ چند روز مین مقدمات مالی اور ملکی کا انتظام کرکے لاہور آجاوے

منزل آصف آباد مین دریا سے گذرتے وقت آدمیون کا زیادہ ہجوم ہو جانے سے پل جو بہت پرانا ہوگیا تہا ٹوٹ گیا ڈہائی سو آدمی اور بہت سے جانور معہ مال و اسباب کے دریا مین گر پڑے

۲۲ رمضان کو بادشاہ کی سواری بہمبر مین پہونچی دوسرے دن کوچ کیوقت شاہزادہ دارا شکوہ نے معہ اپنے بیٹون کے لاہور سے آکر ملازمت کی نذر محمد خانکے بیٹے عبدالرحمن اور خسرو بہی پیشوائی مین حاضر ہوئے-

جب بادشاہ لاہور کے پاس پہونچے تو سعد اللہ خان وزیر بہی کشمیر سے آکر حاضر ہوگیا- بادشاہ نے لاہور پہونچکر رستم خان اور نزدیک و دور کے دوسرے امیرون و راجون کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुक्म भेजा कि कंधार की मोहिम के
वास्ते सामान और तोपखाने समेत
हाज़िर हो जावें और शाहज़ादे मु
राद बख़्श के बुलाने के वास्ते अप
ने हाथ से फ़रमान लिखा—

मुलतान रूम के एलची मोही
उद्दीन ने लाहौर में पहुंच कर अपने
मालिक का ख़त पेश किया जिसके
साथ २ घोड़े जड़ाऊ ज़ीन के और १
पोशाक मोतियों की नीची और ५
घोड़े अपनी तरफ़ से नज़र किये—
बादशाह ने उसको ५०००) घोड़ा ख़ि
लअत और तलवार और एक कि
लंगी इनायत की—

बलख़ से नज़र मोहम्मद ख़ां के
मरने की ख़बर पहुंची यह हज कर
ने को जाता था असाढ़ सुदि १ को
शिग़नान के क़रीब पहुंच कर मर ग
या बादशाह ने ख़ुसरो, बहराम और
अब्दुल रहमान उसके बेटों को
मातमी के ख़िलअत दिये—

क़ैसर रूम के ख़त का जवाब सा
दुल्ला ख़ां वज़ीर ने अरबी में लिखा
और बादशाह ने उसके साथ २ ला
ख रुपये की लागत की १ किलंगी और

حکم بھیجا کہ معہ سامان توپ خانہ
مہم قندہار کے واسطے حاضر ہوں اور
شاہزادہ مراد کے بلانے کے
واسطے فرمان خاص دستخط سے
لکھہ کر بھیجا-

روم کے ایلچی محی الدین نے
لاہور مین پہونچکر قیصر کا نامہ معہ
دو جڑاؤ زین کے گھوڑوں اور
موتیونکی عبا کے پیش کیا اور
پانچ گھوڑے اپنی طرف سے نذر
کیے بادشاہ نے اوسکو پندرہ
ہزار روپیہ معہ خلعت اسپ
و خنجر اور جیغہ کے مرحمت
فرمایا-

بلخ سے نذر محمد خان کے
مرنے کی خبر پہونچی یہہ حج
کرنے کو جاتا تہا سلخ جمادی الثانی
کو شغنان کے قریب دنیا سے گذر
گیا بادشاہ نے اوسکے بیٹوں
خسرو و بہرام اور عبد الرحمن پر کمال
مہربانی و ہمدردی ظاہر کی-

قیصر روم کے نامہ کا جواب سعد اللہ
خان نے عربی مین لکہا جسکو بادشاہ نے
معہ جیغہ شمشیر مرصع اور پرتلہ
قیمتی مبلغ دو لاکہہ کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

...Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१ जड़ाऊ तलवार परतले समेत कै
सरके वास्ते भेजी मोहीउद्दीन को
१५०००) रुपये और घोड़ा सुनहरी सा
मानका देकर बिदा किया और हा
जी अहमद सईद मीर अदलको
अपनी तरफ़ से उसके साथ कैस
रके पास भेजा १२०००) उसको भी
दिये और १०००००) रुपये नक़द और
१०००००) का माल उसके साथ मक्के
और मदीने के ग़रीबों के वास्ते भेजा-

मीर अदल की जगह शेख़ अब
दुलसमद को अदालत की ख़िद
मत इनायत हुई-

क़ैसर के वकील को आने के दि
नसे विदा होने तक ६००००) की रो
कड़ और जिनस मिली थी-

पोस बदि १४ को अरज़ हुई कि
राजा बिट्ठलदास गौड़ अपने व
तन में मर गया बादशाह ने बहुत
अफ़सोस किया उसके बड़े बेटे अ
निरुद्ध को डेढ़ हज़ारी जात और
२००० सवार के इज़ाफ़े से ३ हज़ा
री ज़ात और ३००० सवार का मन
सब देकर राजा पदवी और रण
थंभोर की क़िलेदारी इनायत फ़रमाई-

محی الدین کے حوالہ کیا اور
محی الدین کو پندرہ ہزار روپیہ
اور گھوڑا معہ ساز طلائی مرحمت
کرکے رخصت دی اور حاجی احمد
میر عدل کو اپنی طرف سے اسکی
ساتھہ بطور ایلچی کے قیصر روم کے
پاس بھیجا بارہ ہزار روپیہ اسکو بھی
دئے اور اسکے ساتھہ ایک لاکھہ روپیہ
نقد اور ایک لاکھہ روپیہ کا مال فقرائے
مکہ اور مدینہ کے واسطے بھیجے گئے-

قیصر کے وکیل کو روز ورود
سے رخصت کے وقت تک ساٹھہ
ہزار روپیہ نقد و جنس کرکے ملا تھا-

(۲۸) ذی الحجہ کو عرض
ہوئی کہ راجہ بیٹھل داس گوڑ
اپنے وطن مین مرگیا بادشاہ
نے بہت افسوس کیا اور اسکے
بڑے بیٹے انرودھہ کو
ڈیڑھہ ہزاری ذات اور
دو ہزار سوار کے اضافہ سے
منصب سہ ہزاری ذات سہ
ہزار سوار دو اسپہ کا معہ
خطاب راجگی اور قلعداری
رنتھنبور کے عنایت
فرمایا ارجن اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अरजुन और भीम के इज़ाफ़े हुवे और
राजा विट्ठलदास के बड़े भाई बलराम के
बेटे शिवराम और छोटे भाई गिरधर
वग़ैरा के मनसब में भी इज़ाफ़ा हुआ—
राजा विट्ठलदास १० लाख रुपया
रोकड़ ५ लाख रुपये के जवाहर हाथी
और दूसरा माल छोड़ मरा था वह सब
बादशाह ने उसके बेटों को बख़्श दिया—
सादुल्लाखां ने अपने लशकर का मो
हल्ला बादशाह के नज़र कराया यानी
फौज की हाज़री दी जिसमें ४००० स
सवार १००० बरकंदाज़ ५०० बेलदार
और तबरदार गिने गये और उसके बे
टे लुत्फ़ुल्लाह और इनायतुल्लाह की
भी नज़र हुई जो पहिली दफ़े सलाम
को हाज़िर हुवे थे बादशाह ने सादुल्ला
खां को बहुत शाबाशी दी और उसके
बेटे लुत्फ़ुल्लाह को मोतियों की माला
बख़्शी और इनायतुल्लाह को सरपेच दिया—

बरस २६ वां

पोससुदि ३ संवत १७०८ से
पोससुदि २ संवत १७०९ तक

सईदखां ज़फ़रजंग काबुल में म
र गया जो ७ हज़ारी ज़ात और ५०००
सवार दो अस्पे का मनसबदार था—

بہیم کے بہی اضافہ ہوئے راجہ بیٹھلداس
کے بڑے بہائی بلرام کے بیٹے شیورام
اور چہوٹے بہائی گردہر اور دوسرے
تمام اسکے بہائیوں کے بہی منصب بڑہائے گئے
راجہ بیٹھلداس دس لاکہہ روپیہ نقد پانچ
لاکہہ روپیہ کا مال مثل جواہرات و ہاتہیوں
وغیرہ کے چہوڑ مرا تہا وہ سب بادشاہ
نے اسکے بیٹوں کو بخشدیا

سعد اللہ خان نے اپنے لشکر کا
محلہ یعنی جائزہ بادشاہ کو ملاحظہ کرایا
جسمین چار ہزار سوار ایکہزار برقنداز پانسو
بیلدار اور تبردار شمار کیے گئے اور اُسکے
بیٹوں لطف اللہ اور عنایت اللہ کی
بہی نذر ہوئی جو اول مرتبہ سلام
کو حاضر ہوئے تہے بادشاہ نے سعد اللہ
خان کو آفرین کرکے لطف اللہ کو موتیوں
کا ہار، اور عنایت اللہ کو سرپیچ
عنایت فرمایا

چہبیسوان برس

سنہ ۱۰۶۲

۱۵ محرم سنہ ۱۰۶۱ سے ۲۳ نومبر سنہ ۱۶۵۱ع تک
بخشی کابل کی عرضی سے معلوم ہوا کہ سعید خان
ظفر جنگ جو ہفت ہزاری ذات اور پانچہزار
سوار دو اسپہ کا منصب رکہتا تہا کابل مین مرگیا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

महाबतखां के बेटे लोहरास्प को महाबतखां का खिताब ५ हज़ारी ज़ात ५ हज़ार सवार का मनसब और काबुल का सूबा इनायत हुआ—

निजाबतखां आगरे के खज़ाने से बमूजिब हुक्म बादशाह के १ करोड़ रुपया लाहोर में लाया—

फ़ागण बदि ५ को जन्मपत्री के हिसाब से ६१ वां बरस शुरू हुआ उस दिन के तुलादान की सभा में बादशाह ने बड़े २ अमीरों से लेकर छोटे मनसबदारों तक कि जिनको बादशाह पहिचानते थे सबके मनसब बढाये और १००० खिलअत गुर्जबरदारों वगेरा को मिले—

फागुण सुदि ९ को बादशाह ने सोने के मीनाकार जड़ाऊ तख़्त पर जो ९ महीने में ५ लाख रुपये के ख़र्च से तैयार हुआ था जलूस किया और शाहज़ादे औरंगज़ेब को लिखा कि चेत बदि २ को काबुल जाने का महुरत है तुम भी उसी दिन मुलतान से क़ंधार को रवाने होजाना और जब फागुण सुदि १४ को उसके रवाने होजाने की ख़बर आई तो ५ लाख रुपये

بادشاہ نے لہراسپ خان کو اصل و اضافہ سے پانچہزاری پانچہزار سوار کا منصب اور مہابت خان کا خطاب دیکر کابل کی صوبہ داری پر بھیجا۔

نجابت خان ایک کروڑ روپیہ خزانہ آگرہ سے بموجب حکم بادشاہ کے لاہور مین لایا۔

۱۸ صفر سے بادشاہ کو ۶۱ واں شمسی برس شروع ہوا اُس دن کے جشن وزن شمسی مین بڑے بڑے امیرون سے لیکر چھوٹے منصبداروں تک کہ جنکو بادشاہ پہچانتے تھے سبکے منصبون مین اضافہ ہوا اور ایکہزار خلعت گرز برداروں وغیرہ کو عنایت ہوے۔

۹ ربیع الاول کو بادشاہ نے تخت موتیون کے مینا کار سونہری پر جو ۹ مہینے مین پانچ لاکھ روپیہ کے صرف سے تیار ہوا تھا جلوس کیا اور شاہزادہ اورنگزیب کو لکھا کہ ۱۶ ربیع الاول کو کابل جانے کی ساعت ہے تم بھی اوسی دن ملتان سے قندہار کو روانہ ہو جانا اور جب ۱۲ ربیع الاول کو اوس کے روانہ قندہار ہونے کی خبر پہونچی تو پانچ لاکھ روپیہ نقد

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नक़द और ५००००) का ज़ेवर १ नारी ख़िल
अत बढ़िया क़ीमत की किलंगी २ घोड़े
२ हाथी सोने चांदी के साज़ों से उसके
पास भेजे कुलीच खां और राजा पह
ड़सिंघ वग़ैरा २० अमीर २०००० सवार
से उसके पास तईनात किये इन २०
अमीरों में से हरेक लड़ाई के मैदा
न का शेर कहलाता था बहुतसा
ख़ज़ाना और क़िले फ़तह करने-
का सामान भी शाहज़ादे के पास
भेजकर लिखा कि क़ंधार पहुंचकर
दूसरे बैसाख की सुदि ५ को इतवार
के दिन जो दरबार के ज्योतिषियों
का मुक़र्रर किया हुआ महूर्त है कि
ले को घेर लेवें-

चैत बदि ८ को बादशाह ख़ुद भी-
तख़्तरवां पर बैठ कर काबुल को रवा
ने हुवे उसी दिन सादुल्लाखां वज़ीर
को भी ५०००० सवार ९००० पयादे-
बरक़ंदाज़ और बहुत से बेलदारों स
मेत क़ंधार की तरफ़ रुख़सत कि
या उसके साथ २० तोपें बड़ी २० म
झोली २० हथनाल १० मस्त जंगी
हाथी १०० शुतरनाल २ किरोड़ रु
पये नक़द और बहुत सा सामान

اور پچاس ہزار کا زیور اوسکے
واسطے بہیجا گیا جسمین ایک
بیش قیمت جیغہ معہ خلعت
فاخرہ کے تہا دو گہوڑے اور
دو ہاتھی بہی کہ جنکے ساز و سامان
سونے چاندی کے تہے بہیجے گئے
نوازش خان قلیچ خان اور راجہ پہار سنگہ
بندیلہ وغیرہ بیس امیر جنمین سے
ہر ایک شیر بیشہ رزم کہا جاتا تہا
معہ ۲۰ ہزار سواروں کے اوسکی
خدمتمین تعینات ہوئے بہت سا
خزانہ اور مصالحہ قلعہ گیری بہی
اوسکے پاس بہیجا گیا اور یہہ بہی
لکہا گیا کہ روز یکشنبہ ۳ جمادی الثانی
کو جو ساعت مختار منجمان کا ہے
قندہار پہونچکر قلعہ کا محاصرہ کریں۔

۱۶ ربیع الاول کو بادشاہ تخت
رواں پر سوار ہوکر لاہور سے کابل کو کوچ
کیا اور اسیوقت سعد اللہ خان
وزیر کو بہی معہ پچاس ہزار سوار نو
ہزار پیادہ برقنداز اور بہت سے بیلدارون
کے محاصرہ قندہار مین شامل ہونے کے
واسطے رخصت فرمایا اوسکے ساتہ
توپین بڑی بیس مجہولی بیس گجنال بیس
مست ہاتہی جنگی ایکسو شترنال دو کروڑ روپیہ اور بہت

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किला फ़तह करने का भी भेजा और उसी महूर्त पर उसको भी किले कंधार पर घेरा देने की ताकीद करके सुरंग लगाने दमदमा बनाने और मोरचे बढ़ाने बग़ैरः की हिदायत की राजा जयसिंह क़ासिम ख़ां रुस्तम ख़ां राव सत्रसाल राजा रूप और महाबत ख़ां बग़ैरः बड़े बड़े अमीर भी उसके साथ रुख़सत हुवे—

इस मोहिम में सब मिलाकर ७०००० सवार तोपख़ाने के सिवा तईनात हुवे जिनके साथ ६० अमीर और बाक़ी मनसबदार थे कि जिनको बादशाह पहिचानते थे रुस्तम ख़ां बग़ैरः तमाम अमीरों को हाथी घोड़े ख़िलअत और जवाहरात मिले और उनके मनसबों में भी इज़ाफ़ा हुआ १ किरोड़ रूपया पेशगी तनख़्वाहों में दिया गया सब अमीरों और तोपख़ाने वालों को काबुल में रहने का हुक्म हुआ और उनको यह भी हुक्म था कि पहिले बस्त और ज़मीनदावर के क़िलों को फ़तह करने की कोशिश करें जिससे कंधार के क़िले वाले डरजावें—

مصالحہ قلعہ گیری کا بھیجا اور حکم دیا کہ وہ بھی کابل کے راستہ سے اُسی تاریخ کو بادشاہزادہ کے پاس پہونچکر سرنگ لگانے دمدمہ بنانے اور مورچہ بڑہانے وغیرہ تدابیر قلعہ کشائی مین کوشش کرے راجہ جیسنگ قاسم خان رستم خان راو ستر سال راجروپ نجابت خان نصیر خان اور مہابت خان وغیرہ امرای نامی بہی اُسکی ساتھ تعینات ہوے

اس مہم مین کل ستر ہزار سوار سوای توپخانہ کے متعین ہوئے جنمین ۶۰ امیر اور باقی روشناس منصب دار تھے رستم خان وغیرہ سب امیرون کو علاوہ اضافہ منصب کے خلعت گھوڑے ہاتھی اور جواہرات عطا ہوئے ایک کروڑ روپیہ طلب مین اور سہ ماہہ پیشگی سب امیرون اور توپخانہ والون کو کابل مین دینے کا حکم ہوا اور یہہ بھی ہدایت ہوئی کہ اول قلعہ بست و زمین داور کے فتح کرنے کی کوشش کرین کہ جس سے قندہار والے لرز جاوین۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औरंगजेब का मनसब असल-
और इज़ाफ़े से २० हज़ारी ज़ात और
१५००० सवारों का होगया-

पहिले बैसाख की सुदि ५ को बादशा
ह काबुल में पहुंचे-

दूसरे बैसाख की बदि ४ को शाहज़ा
दा शुजा भी बंगाले से आगया-
बादशाह ने उसका मनसब भी औरंग
ज़ेब के बराबर करदिया और २०० घो
ड़े भी इनायत किये -

दूसरे बैसाख की सुदि ३ को २६ वां
जलूसी बरस शरू हुआ जिसकी खु
शी में अकसर नामी अमीरों के मन
सब बढ़े और उनको इनाम भी मिले-

जेठ बदि ११ को ३०००००) की पेश
कश शाहज़ादे शुजाअ की बादशाह
की नज़र से गुज़री जिसमें बंगाले की
तुहफ़ा चीज़ें थीं -

नज़र मोहम्मद खां के बेटे अब
दुलरहमान का ढंग बादशाह के
पसंद न आया इसलिये उसको बं
गाले में तईनात किया-

कंधार की मोहिम.

औरंगज़ेब और सादुल्ला खां ने
कंधार पहुंचकर दूसरे बैसाख की

اورنگ زیب کا منصب پنجہزاری
ذات اور تین ہزار سواروں کی اضافہ
سے بیس ہزاری ذات اور پندرہ
ہزار سواروں کا کردیا گیا-

۱۴ جمادالاول کو بادشاہ کابل میں پہونچے

۱۸ جمادالاول کو شاہزادہ شجاع
بھی بنگالہ سے آگیا بادشاہ نے اُسکا
منصب بھی اسیقدر اضافہ سے اورنگ
زیب کے برابر کردیا اور دوسو گھوڑے بھی
اُسکو عنایت کیے -

یکم جمادی الثانی کو ۲۶ - واں
جلوسی سنہ شروع ہوا جسکی
خوشی میں اکثر نامی امیروں کے منصب
بڑہے اور اُن کو انعام بھی ملے

۲۴ جمادی الثانی کو تین لاکھ
روپیہ کی پیشکش شاہ شجاع کی بادشاہ
کی نظر سے گزری جو بنگالہ کے نادر
اور نفیس اشیا سے شامل تھی

نذر محمد خاں کا بیٹا عبدالرحمن سلطان
ناپسندیدگی وضع سے بنگالہ میں
تعینات ہوا

قندھار کی مہم

شہزادہ اورنگ زیب اور
سعداللہ خاں نے قندھار پہونچکر
۳ جمادی الثانی کو قلعہ کا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

...ya Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुदि ५ को क़िले को घेरा और लश्कर को चौतरफ़ ऐसी जगह उतार कर कि जहां गोला नहीं पहुंचता था सुरंगें और मोरचों का बंदोबस्त करने लगा सब से ज़ियादा सादुल्ला ख़ां वज़ीर ने और राजपूतों ने इस काम में कोशिश की क़िलेदार क़िले में कई दिनों तक चुप बैठा रहा किसी को अंदर से किसी आदमी की आहट और बोली भी नहीं सुनाई दी हिन्दुस्तानी लोग क़िले के नीचे जा जाकर क़िलेदार को बहुत बुरा भला सुनाते थे मगर वह सुनी अनसुनी कर जाता था—

जब रुस्तम ख़ां और सादुल्ला ख़ां के मोरचे खाई तक पहुंच गये तो राजा राजरूप ने जो एक मशहूर बहादुर था शाहज़ादे के पास जाकर कहा कि खाई के पास बुर्ज के नीचे कुछ ऐसी जगह है कि जहां से ऊपर चढ़ने का ख़ूब मौक़ा है और क़िले वाले बिलकुल बेख़बर मालूम होते हैं अगर मुझ को हुक्म हो तो कमंद और नसीनी लगाकर ऊपर चढ़ जाऊं लश्कर-

کو قلعہ کا محاصرہ کیا اور لشکر کو چاروں طرف ایسی جگہ کہ جہاں گولہ نہیں پہنچتا تھا اُتار کر نقب کنی اور مورچہ سازی کی کارروائی شروع کی سب سے زیادہ سعد اللہ خان اور راجپوتوں نے اس کام میں مدد دی قلعدار قلعہ میں چند روز تک چپ بیٹھا رہا کسیکو اندر سے آدمی کی آواز اور آہٹ بھی سنائی نہ دی ہندوستانی لوگ قلعہ کے نیچے جا جاکر بہت آوازے کستے تھے اور سخت سست کہتے تھے لیکن وہ سُنی ان سُنی کر جاتا تھا

جب رستم خان اور سعد اللہ خان کے مورچے خندق تک قلعہ کے نیچے پہونچ گئے تو راجہ راج روپ نے جو ایک مشہور بہادر تھا شاہزادہ کے پاس جاکر ظاہر کیا کہ خندق کے نزدیک ایک برج کے نیچے ایسی جگہ ہے کہ جہاں سے اوپر چڑھنے کا خوب موقع ہے اور قلعہ والے بالکل بےخبر معلوم ہوتے ہیں اگر مجھکو حکم ہو تو کمند اور زینہ کے ذریعہ سے اوپر چڑھ جاؤں لشکر تمام

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तमाम तैयार रहैं जब नेरी बजै तो
नसैनी लगाकर ऊपर चढ़ आवें-
शाहज़ादे और वज़ीर ने यह सुन
कर उसको हुक्म दे दिया और वह क
ई आदमियों से जो क़िला फ़तह-
करने के कामों में बहुत मशहूर और
अजूबी थे ऊपर चढ़ गया और ने
री बजादी जिसको सुनते ही बाद
शाही आदमी कमंद और नसैनि
यां लेलेकर आगे बढ़े उधर क़िले
वालों ने जो ऐसी ही आवाज़ सुनने
के वास्ते चुपचाप बैठे थे हर तरफ़ से
महताबें रोशन करके तोप और बं
दूक़ चलानी शुरू की आग पत्थ
र गर्म तेल और दूसरे मसाले ऐसी
तेज़ी से फैंके कि जो लोग बुरज के
ऊपर जा पहुंचे थे और जो पहुंच रहे
थे सब जलकर नीचे गिर पड़े और म
र गये और जो क़िले के अंदर गिरे
उनका कुछ पता न लगा हर तरफ़-
मुरदों के ढेर लग गये मुसलमान
और राजपूत ज़ियादा मरे जो मु-
शकिल से पहिचाने जाते थे कि मु
सलमान हैं या राजपूत-
उस दिन से २ महीने और ८ दिन

تیار رہے جسوقت کہ قرنا بجے زینہ
لگاکر چڑہ آوے
شاہزادہ اور وزیر نے یہ سنکر
اسکو حکم دیدیا اور وہ کئی آدمیون سے
جو فن قلعہ گیری مین بہت مشہور اور
مجرب تہے ایک رات کو اوپر چڑہ گیا
اور قرنا بجادیا جسکے سنتے ہی بادشاہی
لشکر کمند اور زینہ لے کر آگے بڑہا
ادہر قلعہ والون نے جو ایسی ہی آواز
سننے کے واسطے چپ چاپ بیٹہے تہے
ہر طرف سے مہتابین روشن کرکے
توپ بندوق و بان چلانے شروع
کیے آگ پتہر گرم تیل اور دوسرے مصالحے
ایسی تیزی سے پہینکے کہ جو لوگ برج
پر جا پہنچے تہے اور جو پہونچ رہے تہے
سب جل نیچے گر پڑے اور مر گئے
اور جو قلعہ کے اندر گرے اُن کا
کچھہ پتہ نہ لگا ہر طرف مُردون
کے ڈہیر لگ گئے مسلمان
اور راجپوت زیادہ مرے
جو ایک دوسرے سے بمشکل
پہچانے جاتے تہے
اُسدن سے لے کر
دو مہینے اور آٹھہ روز تک برابر
لڑائی اوپر نیچے سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

... Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तक बराबर नीचे ऊपर लड़ाई होती रही जो आदमी मोरचे से सिर निकालता था उसी दम मारा जाता था रातों को क़ज़लबाश क़िले से निकल कर मोरचों पर हल्ले करते थे और बहुत से आदमियों और जानवरों को मार जाते थे १ रात को सादुल्ला ख़ां और रुस्तम ख़ां के मोरचे पर लड़ कर कई तोपों को कील गये बादशाही लोगों ने उनका पीछा भी किया लेकिन कुछ न कर सके क्योंकि क़िले से बेतरह बरसती थी तोपें तो इधर से भी बहुत चलती थीं लेकिन हिन्दुस्तानी गोलंदाज़ रूमी और क़ज़लबाश गोलंदाज़ों के मुक़ाबिले में कुछ नहीं बना सकते थे जिनके बेख़ता निशानों से हिन्दुस्तान के सरदारों की सारी मिहनत और कोशिश अकारथ जाती थी इसी तरह बुस्त और ज़मीनदावर के क़िले भी बहुत सी कोशिश होने पर भी अफ़सरों की राय न मिलने से फ़तह न हुवे-

जब ये ख़बरें बादशाह को पहुंचीं कि क़िले का घेरा बिगड़ गया और

ہوتی رہی جو مورچہ سے سر نکالتا تھا اُسی دم مارا جاتا تھا راتوں کو قزلباش قلعہ سے نکل نکل کر مورچوں پر حملہ کرتے تھے اور بہت سے آدمیوں و جانوروں کو مار جاتے تھے ایک رات کو سعد اللہ خاں و رستم خاں کے مورچہ پر لڑ کر کئی توپوں کو کیل گئے بادشاہی لوگوں نے اُنکا تعاقب بھی کیا لیکن کچھ نہ کر سکے کیونکہ قلعہ سے بیطرح آگ برستی تھی توپیں تو ادہر سے بھی بہت چلتی تھیں لیکن ہندوستانی گولہ انداز رومی اور قزلباش گولہ اندازوں کے مقابلہ میں کچھ نہیں کر سکتے تھے جنکی بے خطا نشانہ بازی سے ہندی سرداروں کی ساری محنت اور کوشش رد ہو جاتی تھی اسیطرح قلعہ بست و زمین داور کی فتح بھی جیسی کہ چاہیے تھی باوجود بہت سی کوشش کے اختلاف رائے سرداروں سے ظہور میں نہ آئی-

جب یہ خبریں بادشاہ کو پہونچیں کہ محاصرہ طول پکڑ گیا- اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोपरवाने का सामान हो चुका तो बहुत रंज हुआ और इसके साथ ही यह भी अरज़ हुई कि उज़बक लोग गज़नीन की तरफ़ लूटमार करने लगे हैं तो बादशाह ने अपने हाथ से औरंगज़ेब को हुक्म लिखा कि अभी तो चले-आओ फ़िर देखा जायगा +

दरबार का हाल

अब बड़े शाहज़ादे दाराशिकोह ने काबुल के सूबे का बंदोबस्त अपने ज़िम्मे लिया बादशाह ने उसको असल और इज़ाफ़े से ३० हज़ारी ज़ात और २०००० सवार का मनसब और ३ किरोड़ दाम इनाम के लाहौर और मुलतान की सायर से मुक़र्रर करके-गुजरात के बदले मुलतान का सूबा इनायत किया और काबुल का सूबा उसके बेटे सुलेमान शिकोह को-देकर ८ हज़ारी ज़ात और ४००० सवार का मनसब और लाल डेरा भी

توپ خانہ کا سامان ہو چکا تو بہت رنج ہوا اور اسکے ساتھہ یہہ بھی عرض ہوئی کہ اوزبک طرف غزنین مین لوٹ مار کرنے لگے ہیں تو بادشاہ نے اپنے خاص دستخط سے شہزادہ کو فرمان واسطے چلے آنے اور مہم کو دوسرے وقت پر چھوڑ دینے کا لکھہ بھیجا

دربار کا حال

اب شہزادہ کلان دارا شکوہ نے کابل کے بندوبست کا ذمہ کیا اسلئے بادشاہ نے اسکے واسطے اصل و اضافہ سے تیس ہزاری ذات اور ۲۰ ہزار سوار کا منصب یکر تین کروڑ دام انعام کے لاہور اور ملتان کے سایر سے مقرر کئے اور گجرات کے عوض ملتان کا صوبہ عطا کرکے کابل کا صوبہ اسکے خلف کلان سلطان سلیمان شکوہ کو دیا اور اسکا منصب آٹھہ ہزاری ذات اور چار ہزار سوار کا مقرر کرکے خیمہ سرخ بھی عنایت کیا

१ सैरुलमुताख़रीन में लिखा है कि जब ईरान के शाह अब्बास को औरंगज़ेब के कंधार पर पहुंचने की ख़बर लगी तो उसने लशकर की तैयारी का हुक्म देकर असफ़हान से कूच किया और कुछ फ़ौज आगे रवाने करदी जिसके डर से औरंगज़ेब और हिंदुस्तान का लशकर कंधार से कूच करगया-

۱ سیر المتاخرین میں لکھا ہی کہ جب شاہ عباس کو اورنگ زیب کے قندہار پہونچنے کی خبر لگی تو اسنے لشکر کی تیاری کا حکم دیکر اصفہان سے کوچ کیا اور کچھہ فوج پیشتر روانہ کی جس کے خوف سے اورنگ زیب اور ہندوستان کا لشکر قندہار سے کوچ کر گیا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

...ya Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इनायत कर दिया जो अबतक कि-
सी शाहज़ादे के बेटे को नहीं मिला था-

सूबे मुल्तान के बदले औरंग
ज़ेब को दक्खिन के चारों सूबों की सू
बेदारी दी गई-

गुजरात की सूबेदारी शायस्ता
खां को इनायत हुई-

सावन बदि ११ को शाहज़ादा सु
जाअ को बादशाह ने बंगाले जाने
की रुख़सत दी और उसके वास्ते
एक किरोड़ दाम इनाम के उड़ीसा
और मछली बंदर से मुक़र्रर हुवे-

सावन सुदि २ को सादुल्लाखां
अमीरुलउमरा अली मरदानखां
राजा जयसिंघ और क़ुलीचखां बग़ै
रा हुज़ूर में हाज़िर हो गये-जो असा
ढ सुदि १२ को कंधार से रवाने हुवे थे
और सावन सुदि १३ को बादशाह
भी काबुल से लाहोर को रवाने
हुवे-दाराशिकोह को अमीरुल
उमरा राजा जयसिंघ और क़ुली
चख़ां समेत वहीं छोड़ आये-

भादों बदि २ को शाहज़ादा-

جو آجتک کسی شہزادہ کے بیٹے
کو نہین ملا تہا-

اورنگ زیب کو عوض
صوبہ ملتان کے دکن کے چارون
صوبوں کی صوبہ داری دیگئی-

گجرات کی صوبہ داری
شائستہ خان کو عنایت ہوئی-

(۲۴) شعبان کو شاہزادہ
شجاع کے واسطے ایک کروڑ دام
کا انعام محال اوڑلیسہ اور مچھلی بندر
سے مقرر ہوا اور اسکو بنگالہ
جانے کی رخصت ہوئی

غرہ رمضان کو سعد اللہ خان
امیر الامرا علی مردان خان راجہ
جیسنگہہ اور قلیچ خان وغیرہ جو
۱۲ شعبان کو قندہار سے روانہ
ہوئے تھے حضور مین حاضر ہوگئے
اور (۱۱) رمضان کو بادشاہ
بہی کابل سے لاہور کو روانہ
ہوئے. دارا شکوہ اور سلیمان
شکوہ کو مع امیر الامرا راجہ
جیسنگہ اور قلیچ خان کے وہین
چہوڑ آئے-

(۱۶) رمضان کو شہزادہ اورنگ زیب بہادر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औरंगज़ेब अपने बेटों समेत कंधार से हाज़िर आया और भादों बदि ८ को दक्खिन को रुखसत हुआ उस को १ किरोड़ दाम इनाम के बंगाले से दिलाये गये-

भादों सुदि २ को बादशाह पिशोर में पहुंचे आसोज बदि ४ को अटक से और आसोज सुदि २ को अटक से उतरे-

आसोज सुदि ७ को चिनाब से गुज़र कर कातिक बदि ३ को लाहोर के बाग़ फ़ैज़बख़्श में दाखिल हुवे रस्ते में कुछ आदमी मेंह और पानी की रेलों में बह गये-

मिरज़ा रुस्तम सफ़वी का बीमारी और बुढ़ापे से १००० रुपये सालाना मुकर्रर हुआ इसी तरह नज़र मोहम्मद खां का बेटा खुसरो भी मनसब से दूर होकर लाख रुपया सालयाना पाने लगा-

कातिक बदि ९ को बादशाह लाहोर से कूच करके मंगसर बदि ३ को सरहिन्द में पहुंचे वहां तन और खालिसे के दफ़्तर का काम राजा रघुनाथ को इनायत हुआ-

مع اپنے بیٹون کے مہم قندہار سے حاضر آیا اور (۲۱) کو رواۂ دکن ہوا اسکو ایک کروڑ دام انعام کے بنگالہ سے دلائے گئے

سلخ رمضان کو بادشاہ پیشاور مین پہونچے (۱۷) شوال کو اٹک سے اور سلخ شوال کو سلہٹ سے اُترے

(۵) ذیقعدہ کو چناب سے گذر کر (۱۵) کو لاہور کے باغ فیض بخش مین داخل ہوئے راستہ مین کچھہ آدمی بارش اور پانی کی طغیانی سے نالون مین بہ گئے

مرزا رستم صفوی کا ہزار روپیہ سالانہ بسبب ضعف پیری کے مقرر ہوا۔ اسیطرح نذر محمد خان کا بیٹا سرور بہی منصب سے معزول ہوکر ایک لاکھہ روپیہ سالانہ پانے لگا۔

(۲۱) ذیقعدہ کو بادشاہ لاہور سے کوچ کرکے ۱۲ ذی الحجہ کو سرہند مین پہونچے وہان تن اور خالصہ کی دفترداری رای رگہناتہ عنایت ہوی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बरस २७ वां

मंगसर सुदि ३ संवत १७०९ से —
मंगसर सुदि २ संवत १७१० तक

मंगसर सुदि १३ को बादशाह शाहजहानाबाद के क़िले में दाखिल हुवे —

सुलेमान शिकोह का मनसब हज़ारी ज़ात और १००० सवार के इज़ाफ़े से ९ हज़ारी ज़ात और ५००० सवारों का होगया —

नुसरत खां को अकबराबादी महल का इलाज करने के इनाम में ३०००) रोकड़ और मनसब साढे तीन हज़ारी ज़ात और १००० सवार का इनायत हुआ —

पोस सुदि ७।८ को जहांगीर बादशाह की छोटी बहन शकुरुन्निसा बेगम जो आगरे से दिल्ली को आती थी मथरा में पहुंच कर मर गई और बादशाह के हुक्म से अकबर बादशाह के रोज़े यानी क़बरस्थान में दफ़न हुई —

शाहज़ादे दाराशिकोह ने लाहोर से अरज़ी लिखी कि लशकर की रवानगी का महूरत माघ सुदि ५ को और क़ंधार घेर ने का —

ستائیسواں برس

سنہ ۱۰۶۳

۲۴ نومبر سنہ ۱۶۵۱ سے ۱۱ نومبر سنہ ۱۶۵۲ تک

۱۱ محرم کو بادشاہ قلعہ شاہجہاں آباد مین داخل ہوئے۔

سلیمان شکوہ کا منصب ہزاری ذات اور ایکہزار سوار کے اضافہ سے نوہزاری ذات اور پانچہزار سواروں کا ہوگیا

نصرت خاں کو اکبرآبادی محل کا علاج کرنے کے صلہ مین ۳ ہزار روپیہ نقد اور منصب ساڑھے تین ہزاری ذات اور ہزار سوار کا عطا ہوا

۵ صفر کو جہانگیر بادشاہ کی چھوٹی بہن شکرالنسا بیگم کا جو اکبرآباد سے دہلی کو آتی تھی متھرا مین انتقال ہوگیا اُسکی لاش بموجب حکم بادشاہ کے اکبر بادشاہ کے روضہ مین دفن کی گئی۔

شاہزادہ داراشکوہ نے لاہور سے عرضی بھیجی کہ روانگی لشکر کی ساعت ۳ ربیع الاول کو اور محاصرہ قندھار کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

वैशाख सुदि ८ को निकलता है सो जाने
की इजाज़त मिले बादशाह ने मुल
तान के रस्ते से जाने की इजाज़त दे
कर उसके वास्ते बहुत से ख़िलअ
त जवाहरात हाथी घोड़े १ लाख रु
पया रोकड़ और १ लाख की अशर
फ़ी कई दफ़े करके भेजी और यह-
सब २० लाख रुपये का माल था औ
र लड़ाई के वास्ते २ तोपें एक एक
मन का गोला खाने वाली और ७-
तोपें हवाई मझोली और ३० तोपें
छोटी १००० गोले ५००० मन बारूत ५००
मन सीसा १४००० बान ३००० ऊंट ख
ज़ाने और सिलहखाने के * और १
किरोड़ रुपये नक़द भेजे और रुस्त
म खां, राजा जयसिंघ, कुलीच खां,
निजाबत खां, महाबत खां, राजा राय
सिंघ, राव शत्रुसाल, राजा पहाड़ सिं
घ, रूपसिंघ, रामसिंघ, इफ़्तख़ार
ख़ां, ताहर खां, क़िबाद खां, बाक़ी खां,
राजा अमरसिंघ नरवरी, फ़ीरोज़ खां,

* ख़ाफ़ी ख़ां ने अपनी किताब मुन्तख़िब
उल लुबाब में लिखा है कि यह सब सामा
न बादशाह ने पिछले बरस में ३ महीने ९ दि
न तक लाहौर में रहकर तयार कराया था
और रसद पहुंचाने के वास्ते बनजारों को दि
लासा देकर मुकर्रर किया था—

۲۰ رجادی الثانی مقرر ہوئی ہو بادشاہ
نے ملتان کے راستہ سے روانہ
ہونے کی اجازت لکھکر اُس کے
واسطے بہت سے خلعت ہاتھی گھوڑے
ایک لاکھہ روپیہ نقد اور ایک لاکھہ
اشرفی کہ کل کی جمع بیس لاکھہ
روپیہ کی ہوتی ہے کئی دفعہ کر کے
ارسال کئے اور دو توپیں ایک ایک
من کا گولہ کھانے والی سات توپیں
مجھولی اور ۳۰ چھوٹی ایکہزار گولے
پانچہزار من باروت پانسو من سیسہ
چودہ ہزار بار تین ہزار اونٹ خزانہ
اور قورخانہ کے اور ایک کروڑ روپیہ
نقد بھیجے اور بڑے بڑے سردار
مثل رستم خاں راجہ جیسنگہ قلیچ
خاں نجابت خاں مہابت خاں
راجہ رائے سنگہ راو ستروسال
راجہ پہاڑ سنگہ روپ سنگہ رام سنگہ
افتخار خاں طاہر خاں قباد خاں
راجہ امر سنگہہ نروورے
فیروز خاں دلیر خاں

لہ خافی خاں نے اپنی کتاب منتخب اللباب
مین لکھا ہے کہ یہ سب سامان بادشاہ نے
سال گزشتہ مین تین مہینے نو دن تک
لاہور مین رہکر تیار کرایا تھا اور رسد پہنچانے
کے واسطے بنجاروں کو دلاسا دیکر مقرر کیا تھا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

...Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दलेरखां एतमादखां सैयद अबदुल
रसूल दिलावरखां बहादुरखां का
बेटा सैयद मक़बूल आलम, राजा
सेवाराम जैसे बड़े बड़े ७० अमीर
और ५००० मनसबदार अहदी तीरं
दाज बरकंदाज कि कुल ७०००० स
वार १०००० बंदूकची ६००० बेलदार
५०० सुरंग खोदनेवाले ५०० भिशती
और ६० मस्त जंगी हाथी थे शाहज़ा
दे के साथ जाने के लिये तईनात किये-

बैसाख सुदि १ को २७ वां जलूसी
साल शुरू हुआ-

जेठ बदि १४ को राणा जगतसिंघ
के बेटे राजसिंघ की अरज़ी जो बाद
गुजरने अपने बाप के भेजी थी दरगा
ह में पहुंची बादशाह ने उसको राणा
का ख़िताब पांचहज़ारी ५००० सवार
का मनसब देकर जड़ाऊ जमधर औ
र हाथी घोड़े वग़ैरा उसके वास्ते भेजे-

कंधार की मोहिम

माघ सुदि ५ को शाहजादा दारा-
शिकोह लाहोर से रवाने हो कर फाग
ण बदि २ को मुलतान पहुंचा और-
फागण बदि १२ को मुलतान के दरया
में नावों के पुल पर से उतर कर नीलाब

اعتماد خان سید عبد الرسول
دلاور خان سید مقبول عالم ولد
بہادر خان وغیرہ کے اور پانچ ہزار
منصب دار احدی تیر انداز و برقنداز
کہ کل جمعیت ستر ہزار سوار اور
دس ہزار بندوقچی کی معہ چھہ ہزار
بیلدار پانسو سرنگ کھودنے والے
پانسو بہشتی اور ۶۰ مست جنگی
ہاتھی کی تھی شاہزادہ کے ساتھ جانے
کے لئے تعینات کئے -

غرہ جمادی الثانی کو ۲۷ واں
جلوسی سال شروع ہوا -

۲۷ جمادی الثانی رانا راج سنگھ
ولد رانا جگت سنگھ کی عرضی کہ جو اوسنے
بعد مرنے اپنے باپ کے بھیجی تھی ملاحظہ
سے گذری بادشاہ نے اوسکو رانا
کا خطاب پانچہزاری پانچہزار سوار
کا منصب معہ جمدھر مرصع ہاتھی اور
گھوڑے وغیرہ کے عنایت کیا

مہم قندہار

۳ ربیع الاول کو شاہزادہ
دارا شکوہ لاہور سے روانہ ہو کر
۱۵ کو ملتان پہونچا اور ۲۵
کو دریائے ملتان سے بذریعہ پل
کشتیوں کے عبور کر کے نیلاب

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

के किनारे पहुंचा वहां १ हफ़्ते में ९० नावों का पुल तैयार हुआ था जिससे तमाम लश्कर का गुज़रना मुश्किल था और घेरे का महूरत पास आ गया था इसलिये शाहजादे ने रुस्तम खां बहादुर खां निजाबत खां मीर कासम मीर आतिश अब्दुल्लाह बख्शी और अपने मीर आतिश मीर जाफर को पहिले रवाने कर दिया ये लोग १२००० सवारों से धावा कर के बैसाख सुद ७ को कंधार पहुंचे और किले के सामने गोले की मार बचा कर ठहरे उज़बक किले की तरफ़ दौड़े उधर से कज़लबाशनी निकले दोनों में लड़ाई हुई और दोनों तरफ़ के आदमी मारे गये—

दूसरे दिन रुस्तम खां लश्कर सज कर किले के गिर्द मोरचे लगाने की नाल में फिरा और इस तरह ३ दिन तक फिरता रहा—

फिर बादशाहजादा भी विकट पहाड़ों और सकड़ी घाटियों से उतर कर जेठ बदि ९ को किले के पास पहुंचा और महूरत के वास्ते किले से दूर ठहर कर ७ दिन तक मोरचों की जगह जांचने को जाता रहा फिर मिरज़ा कामरां के बाग में

کے کنارہ پر پہونچا وہان ایک ہفتہ مین صرف ۹۰ کشتیون کا پل تیار ہوا تھا جس سے تمام لشکر کا گذرنا مشکل تھا اور ساعت محاصرہ قریب آپہونچی تھی اسلیئے شاہزادہ نے رستم خان بہادر خان نجابت خان میر قاسم میر آتش بادشاہی عبداللہ بخشی اور اپنے میر آتش جعفر کو پیشتر روانہ کردیا یہہ لوگ بارہ ہزار سواروں سے برسبیل ایلغار ۲ ماہ جمادی الثانی کو قندھار پہونچکر گولے کی زد سے دور اترے اوزبک قلعہ کیطرف دوڑے ادہر سے قزلباش بھی نکلے دونون مین لڑائی ہوئی اور دو طرفہ آدمی مارے گئے۔

دوسرے دن رستم خان لشکر آراستہ کرکے قلعہ کے گرد مورچے تجویز کرنے کے واسطے پھرا اور اسطرح تین روز تک پھرتا رہا۔

پھر شاہزادہ بھی مشکل منزلون اور تنگ گھاٹیون سے عبور کرکے ۱۵ جمادی الثانی کو قلعہ کے پاس پہونچا اور ساعت کے انتظار مین قلعہ سے دور ٹہر کر ہفتہ بھر تک موقع دیکھنے کو جاتا رہا بعدہ مرزا کامران کے باغ مین

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

जाकर उतरा जो क़िले से आध कोस था और रुस्तम ख़ां वग़ैरा तमाम अमीरों को मोरचे तोपख़ाने समेत बांट दिये राजा जयसिंघ का मोरचा बुर्ज आब दुज़्द के और बदन सिंघ का दरवाज़े बाबा के सामने था-

हर ऐक सरदार मोरचों के बढाने में हद से ज़ियादा कोशिश करता था मोहम्मद ज़ाफ़र मीर आतिश तो सब से ज़ियादा जान मारता था वह सिर के ऊपर १ बड़ा पर लगाये रहता था १ दिन उसके १ मुसाहिब ने जो बहुत मुंह लगा हुआ था पूछा कि इतना बड़ा पर लगाने से क्या फ़ायदा है उसने कहा कि जिस दिन धावा होगा मैं इसी पर से उड़कर क़िले में पहूंच जाऊंगा-

बादशाह का हुक्म क़ंधार इलाके के क़िले बुस्त वग़ैरा को पहिले फ़तह करने का था इस लिये शाहज़ादे ने रुस्तम ख़ां और निजाबत ख़ां वग़ैरा २० अमीरों और बहादुर राजों को १५००० सवारों से बुस्त का क़िला फ़तह करने को भेजा उन्हों ने वहां पहुंचकर क़िले को ३ तरफ़ से

جو قلعہ قندھار سے آدہ کوس ہے جاکر ٹھہرا اور رستم خاں وغیرہ تمام امیروں کو جابجا تعینات کرکے مورچے مع توپخانہ کے تقسیم کردیے راجہ جے سنگھ کا مورچہ برج آب دزد کے سامنے اور راجہ بدن سنگھ کا دروازہ بابا کے پاس تھا۔

ہر ایک سردار مورچوں کے بڑہانے میں بہ دو بیلداروں کے از حد جد و جہد کرتا تھا محمد جعفر میر آتش تو سب سے زیادہ جان مارتا تھا وہ سر پر ایک بڑا پر لگاتا تھا اُس کے ایک گستاخ مصاحب نے پوچھا کہ اتنا بڑا پر لگانے سے کیا فائدہ ہے تو کہا کہ جس دن حملہ ہوگا اسی پر سے اُڑکر قلعہ میں پہونچ جاؤنگا۔

بادشاہ کا حکم پہلے قلعہ بست وغیرہ قلاع توابع قندھار کے فتح کرنے کا تھا اسلئے بادشاہزادے نے رستم خاں کو مع ۲۰ امیر مثل نجابت خاں اور بہادر راجوں کے پندرہ ہزار سوار سے قلعہ بست کے اوپر بھیجا جب اُنھوں نے وہاں پہونچکر اُس قلعہ کو تین طرف سے گھیرا

घेरा और हर तरफ़ से सुरंगें दौड़ाकर १० दिन तक गोले मारे और एक तरफ़ की दीवार उड़ा दी तो वहां के क़िलेदार महदीकुली ने रुस्तमख़ां के पास हाज़िर होकर क़िले की कुंचियां सौंप दीं और क़िले में जो उसके बाल बच्चे थे उनको माल असबाब समेत नाहरख़ां शाहज़ादे के पास ले गया मगर उसके बेटे ने गरशक का क़िला अपने बाप के लिखने पर भी नहीं छोड़ा और कई रोज़ तक बादशाही फ़ौज से लड़कर निकल गया तब रुस्तमख़ां ने दूसरे क़िलों को घेरा मगर कुछ काम न निकला।

बादशाह की ताकीदें कंधार का क़िला फ़तह करने के वास्ते बराबर जाती रहती थीं इसवास्ते मीर जाफ़र और राजा राजरूप ने शाहज़ादे के हुक्म से एक बड़ा दमदमा बनाना शुरू किया और बाज़े सरदारों ने सुरंगें भी खोदीं।

शाहज़ादा अमीरों को बुलाकर कहता था कि मुझे औरंगज़ेब मत समझना जो दो दफ़े फ़तह किये बिना इस क़िले के नीचे से चला गया अगर फ़तह न करोगे तो मैं तुम में से

اور ہر طرف سے سُرنگیں دوڑا کر اُس روز تک گولے مارے اور ایک طرف کی دیوار اُڑا دی تب تو مہدی قلی قلعدار نے رستم خاں کے پاس حاضر ہو کر قلعہ کی کُنجیاں سونپ دیں لیکن اُس کے بیٹے نے قلعہ گرشک کو باوجود لکھنے اپنے باپ کے سپرد نہیں کیا۔ اور چند روز تک جنگ کر کے نکل گیا۔ پھر رستم خاں نے دوسرے قلعوں کا بھی محاصرہ کیا مگر کچھ فائدہ نہوا۔ قلعہ بست میں جو بال بچے مہدی قلی کے تھے انکو معہ مال اسباب کے ناہر خاں شہزادہ کے پاس لیگیا

بادشاہ کی تاکیدیں قلعہ فتح کرنے کے واسطے برابر جاتی رہتی تھیں اسلئے میر جعفر اور راجہ راجروپ نے شاہزادہ دارا شکوہ کے حکم سے ایک بڑا دمدمہ بنانا شروع کیا۔ اور بعض سرداروں نے سُرنگیں بھی کھودیں

شاہزادہ امیروں کو بلا بلا کر کہتا کہ مجھے اورنگ زیب مت جاننا جو دو دفعہ فتح کئے بغیر اس قلعہ کے نیچے سے چلا گیا۔ اگر تم قلعہ فتح نہ کرو گے تو میں ایک کو تم میں سے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एक कोभी जीता न छोड़ूंगा—

मोहम्मद जाफ़र सबसे ज़ियादा किला फ़तह करने में जी खपाता था और शाहज़ादे से कहता था कि किला फ़तह हुवे पीछे मैं १ को भी किले वालों में से जीता न छोड़ूंगा ऐसा न हो कि आप उनके करुणा करने और गिड़गिड़ाने पर तरस खाकर उनकी जान बख़्श देवें—

शाहज़ादा जवाब देता था कि हम बादशाहों को रहमत का दरिया कहते हैं दुशमन के हाज़िर हो जाने पर रहम करना ज़रूर है—

सुरंगों और मोरचों के बढ़ाने में कोशिश तो बहुत ही की जाती थी मगर किले वाले मारे गोलों के बार नहीं लेने देते थे आख़िर मोहम्मद जाफ़र ने शाहज़ादे के हुक्म से १ दमदमा ७५ गज़ लंबा ५५ गज़ चौड़ा और २७ गज़ ऊंचा १ लाख रुपये के ख़रच से ४० दिन में बनाया और उसके ऊपर १० तोपें बड़ी बड़ी चढ़ाई जिनके गोले सीधे किले में गिरने लगे इसी तरह दूसरे दमदमों के हवाई गोले और बाण बराबर बरसने

زندہ نچھوڑونگا۔

محمد جعفر حد سے زیادہ قلعہ کشائی مین کوشش کرتا تھا اور بادشاہزادہ سے کہتا تھا کہ بعد فتح ہونے کے ایک کو بھی مین قلعہ والون مین سے زندہ نرکھونگا ایسا نہو کہ آپ اونکی عجز وزاری پر رحم کرکے جان بخشی کردین۔

بادشاہزادہ کہتا تھا کہ ہم بادشاہون کو دریاے رحمت کہاجاتا ہے دشمن کے رجوع لانے پر رحم کرنا ضرور ہے۔

نقب اور مورچے ہرچند کہ خندق اور دیوار قلعہ تک بڑہاے جاتے تھے مگر قلعہ والون کے گولون سے ٹھہر نہین سکتے تھے محمد جعفر نے شاہزادہ کے حکم سے ایک دمدمہ ۷۵ گز لمبا ۵۵ گز چوڑا اور ۲۷ گز اونچا ایک لاکھ روپیہ کے خرچ سے چالیس دن مین بنایا اور اوسکے اوپر دس توپین چڑہائین جنکے گولے سیدہے قلعہ مین گرنے لگے اسیطرح دوسرے دمدمون کے ہوائی گولے اور بان برابر برسنے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शुरू हुवे जब इन गोलों से क़िले वालों की जान और माल का नुक़सान होने लगा तो उन्हों ने १ ऐसी तोप जगाई कि जिस से गोले शाहज़ादे के दौलतखाने पर बरसने लगे जिन से घोड़े और आदमी बहुत मरते थे तब १ बादशाही गोलंदाज़ ने निशाना बांधकर उस तोप का मुंह गोले से उड़ा दिया और वह तोप कई दिन तक बंद रही मगर फिर क़िले वालों ने उस जगह १ नया दमदमा बनाकर तोप का मुंह उस में छुपा दिया और फिर उसी तरह गोले मारने लगे अब सिवाय आवाज़ और धूंवे के और कुछ सुनने और देखने में नहीं आता था और हर रोज़ शाम और सुबह १०।१२ फ़ैर उस तोप के हुआ करते थे -

दमदमों के सिवाय दूसरा बड़ा काम बादशाही लशकर ने यह भी किया कि खाई का पानी तमाम चुरा लिया और हवाई गोलों से क़िले का १ बारूतखाना भी उड़ा दिया और बरसते हुवे गोलों में कई बार हल्ले भी किये मगर कुछ फ़ायदा न हुआ -

شروع ہوے جب ان گولون سے قلعہ والون کی جان اور مال کا نقصان ہونے لگا تو انہون نے ایک ایسی توپ لگائی کہ جسکے گولے شاہزادہ کے دولتخانے پر برسنے لگے جنسے گھوڑے اور آدمی بہت مرتے تھے تب ایک بادشاہی گولندازنے نشانہ باندہکر اوس توپ کا منہہ گولے سے اوڑا دیا اور وہ توپ کیٔ دن تک بند رہی مگر پھر قلعہ والون نے اوس جگہہ ایک نیا دمدمہ بناکر توپ کا منہہ اوس مین چھپا دیا اور پھر اوسی طرح گولے مارنے لگے اب سوائے آواز اور دہوئین کے اور کچھ سننے اور دیکھنے مین نہین آتا تھا ہر روز صبح شام دس بارہ فیر اوس توپ کے ہوا کرتے تھے ۔

دمدمون کے سوائے دوسرا بڑا کام بادشاہی لشکر نے یہہ بھی کیا کہ خندق کا تمام پانی چرالیا اور ہوائی گولون سے قلعہ کا ایک باروتخانہ بھی اوڑا دیا پھر برستے ہوئے گولون مین بار بار حملہ بھی کیا مگر کچھ فائدہ نہوا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बीचमें १ दफ़े क़िलेवाले फिर चुप चाप होगये तो मोहम्मद जाफ़र ने १ दिन शाहज़ादे से अरज़ की कि अंदर से न आदमियों की आवाज़ आती है और न कुछ आहट सुनाई देती है बल्कि ऐसी बास आती है कि जैसे मुरदे सड़ गये हों मालूम होता है कि क़िलेदार बहुत से आदमियों समेत मरी से मर गया है इस पर लशकर ने बड़े मज़े से क़िले पर चढ़ाई की मगर ज्योंही दीवार के नीचे पहुंचकर लोगों ने कमंदों और नसेनियों से ऊपर चढ़ना शुरू किया कि एक दम से क़िले का तोपख़ाना चला और इतने सवार और पैदल मारे गये कि जिनके वारिस कई दिन तक उनकी लाशें मारे गोलों के न उठाने पाये रजपूत लोग अलबत्ता बड़ी महनत से रातों को अपने मुरदों के ऊपर लकड़ियां फेंक फेंक कर आग दे देते थे —

असाढ़ सुदि ५ को जब कि घेरे को ५६ दिन गुज़रे थे क़ुलीच ख़ां अबदुल्लाख़ां और क़ासम ख़ां का मोरचा १००० गज़ चलकर खाई तक पहुंचा

درمیان مین قلعہ والے ایک دفعہ پھر چپ چاپ ہوگئے تھے محمد جعفر نے ایکدن شاہزادہ سے عرض کی کہ اندر سے آدمیوں کی اواز یا آہٹ کچھ نہین سُنائی دیتی ہے بلکہ ایسی بدبو آتی ہے جیسے مُردے سڑتے ہوں معلوم ہوتا ہے کہ قلعدار مع اکثر آدمیوں کے و باسے مر گیا ہے اسپر لشکر نے بڑے ذوق شوق سے قلعہ کی طرف پیشقدمی کی مگر جون ہی دیوار کے نیچے پہونچکر لوگوں نے کمندوں اور نسیینوں سے اوپر چڑھنا شروع کیا کہ ایکدم سے قلعہ کا توپخانہ چلا اور اسقدر سوار و پیدل مارے گئے کہ اُنکے وارث گولوں کی مار سے کئی دن تک اُنکی لاشین نہ اُٹھانے پائے اور راجپوت تو بڑی محنت سے راتو نکو اپنے مُردوں کے اوپر لکڑیاں پھینک پھینک کر آگ دے دیتے تھے

۴ شعبان کو کہ تاریخ محاصرہ سے ۵۶ دن گذرے تھے قلیچ خاں عبداللہ خاں اور قاسم کا مورچہ ہزار گز چل کر خندق تک پہونچا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उधर राजा राजरूप के आदमियों ने बुर्जचह लजी नें, को कि जिस के फ़तह करने का ज़िम्मा राजा राजरूप ने किया था नीचे से खोद कर उस की मिट्टी निकाल डाली और फिर उस में क़ब्ज़ा ली कर लिया मगर किले वालों नें तोपों और बंदूकों के सिवाय नुफ्त के तेल में भिगोये हुवे कपड़े जला जलाकर इतने फैंके कि जिनके मारे वे न आगे बढ़ सके और न ठहर सके पीछे लौट आये—

१ दिन मोहम्मद जाफ़र ने २ फ़क़ीरों को शाहज़ादे के पास हाज़िर करके कहा कि ये दुनिया का हाल बताते हैं

शाहज़ादे ने बड़ी खातिर से उन को अपने पास बैठा कर ईरान का हाल पूछा तो उन्हों ने समाधि लगा कर कुछ देर पीछे कहा कि अभी हम चलते २ जो असफहान में पहुंचे तो क्या देखते हैं कि शाह अब्बास का मातम हो रहा है और उस को दफ़न कर दिया है—

इसी तरह १ दिन १ गणित विद्या जानने वाले को लाकर अरज़ की कि

کے فتح کرنے مین کہ جسکا لیناوسکی ذمہ تہا بہت کوشش کرتا تہا اوسکے آدمیون نے اوس جلکو کہکہلر کرکے اوسمین قبضہ کرلیا لیکن قلعہ والون نے توپون اور بندوقون کے سوا روغن نفت کی بہری ہوی چادرین آگ مین جلاکر اس قدر اون کے اوپر پہینکین کہ وہ نہ آگے بڑہ سکے اور نہ ٹہر سکے ناچار واپس چلے آئے۔

ایکدن محمد جعفر نے دو فقیرون کو شاہزادہ کے پاس حاضر کرکے کہا کہ یہہ دنیا کے حال سے خبر دیتے ہین بادشاہ نے بڑی خاطر سے اپنے پاس بٹہا کر ایران کا حال پوچہا تو اونہون نے مراقبہ مین جاکر کچہہ دیر بعد کہا کہ ہم سیر کرتے ہوئے اصفہان مین پہونچے تو دیکہا کہ شاہ عباس کا ماتم ہو رہا ہے اور اوس کو دفن کر دیا گیا ہے۔

اسیطرح ایکدن ایک ریاضی دان کو لاکر کہا کہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

[Digitized] by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहदेव जिनयति भूतप्रेतोंके बुलाने
का इल्म जानताहै और वह बोला कि
जो १ रंडी ऐसी ऐसी सूरत और शक
ल की मिल जावे तो मैं उसके खून और
शराब से कई हज़ार जंतर लिख कर
जिनों का लशकर तुम्हारी मदद पर
बुलादूं यह सुनकर लशकर की त-
मामर डियां छुप गईं आखिर बहुत
सा ढूंढने और खोज लगाने से १ रंडी
उस रंग रूप की मिली जो बहुत सी
शराब के साथ उसको सौंपी गई वह
कुछ दिनों का कौल करके उसके साथ
मौज उड़ाता रहा और जब देखा कि
अब कौल पूरा होने को आया तो भा
गकर किले में चला गया वहां भी
निचला नहीं बैठा कोट पर चढ़कर
लशकर वालों से बातें किया करता
था जिससे कज़लबाशों ने मिलाव
ट समझकर उसको मारडाला-

मोहम्मद जाफ़र ने फिर कहना
शुरू किया कि आजकल में किला
फ़तह हो जावेगा और किलेदार अप
ने साथियों समेत पकड़ा आवेगा आ
प तरस न करके सबको मेरे हवाले
कर देना सो मैं उनके करतोंतों की

یہہ دیو و جن کی دعوت جانتا ہی
اور اونے کہا کہ اگر ایک رنڈی
ایسی ایسی شکل و شمایل کی ملجاوے
تو مین اوسکے خون اور شراب سے
کئی ہزار نقش لکھکر جنون کا لشکر تمہاری
مدد پر بلوادونگا یہہ خبر سنکر سب
رنڈیان لشکر کی روپوش ہوگئین
آخر بڑی تلاش کے بعد ایک
اوس شان و شکل کی ملی جو معہ
بہت سی شراب کے اوس کے
حوالہ کی گئی وہ کچھہ دنون کا وعدہ
کرکے اوسکے ساتھہ عیش
اوڑاتا رہا جب مہلت قریب
پہونچی تو بہاگ کر قلعہ مین
چلا گیا وہان فصیل پر سے اکثر
لشکر والون کے ساتھہ بات
چیت کیا کرتا تہا اس سے
قزلباشون نے بدگمان ہوکر
اوسکو مار ڈالا۔

محمد جعفر نے پہر کہنا شروع
کیا کہ آج کل مین قلعہ فتح ہو جاوے
گا اور قلعدار معہ اپنے ہمراہیون کے
پکڑا آئیگا آپ رحم نہ کرکے اون سب کو میرے
حوالہ کردینا تاکہ مین باذیت تمام اون
کے اعمال کی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सज़ा देकर मारूं, बादशाहज़ादेने कहा कि हम लोग बादशाह हैं हमें अपराधियोंको मारनेसे बख्शनेमें ज़ियादा मज़ा आता है -

जब क़िलेके घेरेको ४ महीने होगये तो कुलीचखां राजा जयसिंघ लशकरखां ईरचखां कासमखां अबदुल्लाखां और जाफ़र वग़ैरा सरदारों ने क़िला फतह न होनेसे अपनी बड़ी शरमिंदगी समझकर भादवा सुदि १० को जब ५ घड़ी रात बाक़ी थी अपने २ मोरचोंसे हल्ला किया उनके साथ बहुत से आदमी नसेनियोंको कंधे पर उठा कर लेगये थे जिनके ऊपर से क़िलेके कोट पर जा चढे उधर दमदमों परसे गोले भी ख़ूब बरसाये गये दीवारें जो गिरपड़ती थीं उनको और दिन तो रातके वक्त क़िलेवाले उठा लिया करते थे मगर इस रातको वह न करसके मोहम्मद जाफ़रने सिपाहियोंको क़िलेपर चढ जानेके लिये पुकारते २ अपना गला बिठा दिया मगर ज्योंही सुबह हुई क़िलेवालोंने एकदमसे इतने गोले गिराबके

سزا دیکر ماروں بادشاہ زادہ نے کہا کہ ہم بادشاہ لوگ ہیں ہمکو مجرموں کے مارنے سے بخشنے میں زیادہ لذت آتی ہے -

جب قلعہ کے محاصرہ کو چار مہینے ہوگئے تو قلیچ خان راجہ جیسنگہ لشکر خان ایرج خان قاسم خان عبد اللہ خان اور جعفر وغیرہ سرداروں نے طول محاصرہ کو اپنی خجالت کا موجب سمجھکر ۹ شوال کو جب پانچ گھڑی رات باقی تھی اپنے اپنے مورچوں سے حملہ کیا اونکے ساتھ بہت آدمی نیو کو کندہوں پر اوٹھا کرلے گئے تھے جن کے ذریعہ سے سپاہی دیوار پر چڑہ گئے اور دمدموں پر سے گولے بہی خوب برسائے گئے دیوارین جو گرپڑتی تھین اونکو اور دن تو رات کے وقت قلعہ والے اوٹھا لیا کرتے تھے مگر اس رات کو وہ بہی نہ کرسکے محمد جعفر نے سپاہیوں کو قلعہ پر چڑہ جانے کے لئے پکارتے پکارتے اپنا گلا بیٹھا دیا مگر جوں ہی صبح ہوئی قلعہ والون نے یکدم سے اتنے گولے گرائے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छूरें लोहे के टुकड़े तुफ़क के तेलमें ज
लसेहुवे कपड़े और छोटे बड़े पत्थ
र बरसाये कि जिनसे बहुतसे सैयद
जो गांव बारे के रहनेवाले थे, मुगल,
रजपूत, और पठान, मारेगये और
जो बचे वे घबराकर पीछे लौटे २५ ब
ड़े २ अमीर और रजपूत सरदार मारे
गये जिनमें अहदियों का बरख़्शी ज़ि
याउद्दीन और राजा मानसिंघ भी
था इसपरभी कुछ दिलचले आदमी
इज़ाफ़ा पाने के लालच से सुरंगों में
हो कर खाई में उतरे लेकिन वेभी डू
बकर मरगये —

उस दिन सब मिलाकर २००० आ
दमी के क़रीब खेत रहे —

शाहज़ादे ने रुस्तमख़ां वग़ैरा अ
मीरों को बुलाकर नाराज़ी से कहा कि
हम फ़िर फ़रमाते हैं कि हमको औरं
गज़ेब भाई मत समझना कि फ़तह
किये बिना चले जावें अमीरों ने अ
र्ज़ की कि आप जैसा हुक्म देंगे हम
तामील करेंगे यह कहकर उन्होंने
नये सिरे से सुरंगे बनाने मोरचे ब
ढाने और दमदमे उठाने शुरू किये
जिनके ऊपर किसबी गोलों से हर रोज़

چھرے لوہے کے ٹکڑے وغن
نفت مین جلتے ہوئے کپڑے
اور چھوٹے بڑے پتھر برسائے کہ جنسے
بہت سے بارہ کے سید مغل
راجپوت۔ اور پٹھان مارے گئے باقیماندہ
جلدی سے پیچھے کو لوٹے ۲۵ بڑے
بڑے امیر اور راجپوت سردار مثل
ضیاءالدین بخشی احدیان و راجہ
مان سنگہ وغیرہ کے کام آئے
پہر کچھ کل چلے آدمی اضافہ پانے
کی امید سے سرنگون مین
ہوکر خندق مین اوترے مگر
وہ بہی ڈوب گئے۔

اوس دن سب ملاکر دو ہزار کے
آدمی قریب کہیت رہے۔

شاہزادہ داراشکوہ نے
رستم خان وغیرہ امیرون کو بلاکر
ازروے اعتراض کہا کہ ہم پہر فرماتے
ہین کہ ہمکو بہائی اورنگ زیب
مت سمجہنا جو بغیر فتح کئے قلعہ کے
چلے جاوین انہون نے تعمیل حکم کا
اقرار کرکے نئے سر سے سرنگین
بنانے مورچے بڑہانے اور
دمدمے اوٹہانے شروع کئے
جن کے اوپر ہر روز

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बादशाही आदमी मारे जाते थे॥

यह हाल देखकर ईरान और हिन्दुस्तान के कारीगरों ने लकड़ियों पर तखते जड़ कर रस्सों में बांधे और सिपाही उनमें बैठ कर क़िले के नीचे कि जहां गोलों का बचाव था जा पहुंचे क़िले वालों ने नुफ़्त के तेल से मशकें भर २ कर उन तखतों के ऊपर उतारीं फिर उनमें तीरों से छेद कर के वह तेल तखतों पर गिराया और जलते हुवे कपड़े और गूदड़े फेंक फेंक कर उनमें आग लगा दी इस तरह उन सब तखतों को रस्सों और सिपाहियों समेत जला दिया और खाई में से सुरंगें दौड़ा कर दमदमों के नीचे की तमाम मिट्टी चुरा ली और उनको खाली कूओं के माफ़िक बना दिया॥

जब घेरे को ५ महीने गुज़र गये गोला बारूत और सीसा हो चुका लशकर में नाज और जंगल में घास नहीं रहा बरफ़ बरसने लगा लशकर के आदमी और जानवर जाड़े और भूक से मरने लगे अमीरों में फूट पड़ गई एक सलाह नहीं रही तो बादशाह ने अपने खास दस्तखतों से

بہت سی جانیں تلف ہوتی تہیں

یہہ حال دیکھکر عرب عجم اور ہندوستان کے کاریگروں نے لکڑیوں پر تختے جڑکر رسیوں میں باندہے اور سپاہی انمیں بیٹھکر قلعہ کے نیچے کہ جہاں گولوں سے بچاؤ تھا جا پہونچے قلعہ والوں نے روغن نفت سے مشکیں بہر بہر کر اوپر سے اون تختوں پر اوتاریں اور پھر اونمیں تیروں سے چھید کرکے وہ روغن لکڑیوں پر گرا دیا بعدہ جلتے ہوئے کپڑے اور لحاف وغیرہ پھینک پھینک کر اونمیں آگ لگادی اور اسطرح اون تختوں کو معہ سیتوں اور سپاہیوں کے جلادیا اور خندق میں سے سرنگیں دوڑا کر دمدموں کے نیچے کی تمام مٹی چرالی اور اونکو خالی کنوؤں کے موافق بنادیا

غرض جب محاصرہ کو پانچ مہینے گذر گئے گولہ بارود اور سیسہ ختم ہوگیا لشکر میں غلہ اور جنگل میں گہاس نہ رہا برف برسنے لگا لشکر کے آدمی اور جانور جاڑے اور بہوک سے مرنے لگے امیروں میں پہوٹ پڑگئی ایک صلاح نہیں رہی تو بادشاہ نے بخط خاص

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाहज़ादे को लिखा कि अब चले आओ-

रुस्तमखां को जब इस हुक्म की खबर पहुंची तो उसने बस्त का किला गिरा दिया और खुराक का जो सामान था वह लोगों को बांट दिया और जो मसाला तोपखाने का था वह अपने साथ लेकर शाहज़ादे से आ मिला तब शाहज़ादे ने कातिक बदि में किले के नीचे से कूच किया बहीर के आदमियों को कज़लबाशों और पठाणों की लूटमार के ख़याल से पहिले ही तोपखाने के साथ गैरतखां के चार्ज में रवाने कर दिया जिससे बाद कूच करने के पिछली फौज को उन लोगों के हाथ से बहुत नुकसान पहुंचा-

मंगसर बदि १ को दोकी में डेरे हुवे वहां से शाहज़ादा डबल कूच करके ९ दिन में मुलतान पहुंचा फिर रुस्तमखां भी २१ दिन में वहां पहुंच गया शाहज़ादे ने ११ दिन मुलतान में रहकर मंगसर बदि ८ को लाहौर की तरफ़ कूच किया-

شاہزادہ کو لکہا کہ اب واپس چلے آؤ-

رستم خان کو جب یہہ خبر پہونچی تو اوسنے بست کا قلعہ گرادیا اور جو خوراک کا سامان تہا وہ آدمیون کو تقسیم کرکے توپخانہ کا مصالحہ اپنے ساتہہ لیا اور وہان سے کوچ کرکے شاہزادہ سے آملا تب شاہزادہ داراشکوہ نے آخر ماہ ذیقعدہ مین قلعہ قندہار کے نیچے سے کوچ کیا بہیر کے آدمیون کو قزلباشون کے تعاقب و افغانون کی لوٹ مار کے خوف سے معہ توپخانہ کے غیرت خان کے چارج مین پہلے ہی روانہ کردیا تہا جس سے کوچ کرنے کے بعد پچہلی فوج کو اون لوگون کے ہاتہہ سے بہت نقصان پہونچا-

۱۵ ذی الحجہ کو مقام دوکی مین منزل ہوئی وہان شاہزادہ رستم خان کو معہ لشکر کے چہوڑکر خود بطریق یلغار ملتان کیطرف روانہ ہوا اور ۹ دن مین وہان پہونچا بعد رستم خان بہی ۲۱ دن مین ملتان پہونچگیا شاہزادہ ۱۱ دن ملتان مین رہکر ۲۳ ذی الحجہ کو لاہور کیطرف کوچ کرگیا-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दरबारका हाल।

असाढ सुदि १३ मंगलवार को शाहज़ादे औरंगज़ेब की अरज़ी से लड़का पैदा होने की खुशखबरी पहुंची बादशाह ने उसका नाम सुलतान मोहम्मद आज़म रक्खा यह शाहनवाज़खां सफ़वी की लड़की से पैदा हुआ था-

आसोज बदि १ को बादशाह की बहन बहारबानू बेगम ६५ बरस की उमर में होकर मर गई और मरयम मकानी के मक़बरे में दफ़न हुई-

मोहम्मद इब्राहीम अख़ताबेगी को असदखां का खिताब मिला-

कातिक सुदि १० को बादशाह नावों में बैठ कर दिल्ली से आगरे को रवाने हुवे-

बरस २८ वां

मंगसर सुदि १ संबत १७१० से-
कातिक सुदि २ संबत १७११ तक

पौस बदि २ को बादशाह आगरे में दाखिल हुवे और शाम को जुमा मसजिद के देखने को गये जो क़िले में ९ लाख रुपये की लागत से ७ बरस में तैयार हुई थी-

دربار کا حال

۱۳ شعبان ۱۰۶۳ سہ شنبہ کو شاہزادہ اورنگ زیب کی عرضی سے لڑکا پیدا ہونے کی خوشخبری معلوم ہوئی بادشاہ نے اسکا نام سلطان محمد اعظم رکھا یہہ شاہ نواز خان صفوی کی لڑکی سے پیدا ہوا تھا-

۱۵ شوال کو بادشاہ کی بہن بہار بانو بیگم ۶۵ برس کی عمر مین ہو مر گئی اور مریم مکانی کے روضہ مین دفن ہوئی-

محمد ابراہیم اختہ بیگی کو اسد خان کا خطاب عنایت ہوا-

۹ ذی الحجہ کو بادشاہ کشتیون مین سوار ہوکر دہلی سے براہ دریا آگرہ کو روانہ ہوئے-

۲۸ وان برس
سنہ ۱۰۶۴

۱۱ نومبر سنہ ۱۶۵۳ سے ۳۰ اکتوبر سنہ ۱۶۵۴ تک

۱۱ محرم کو بادشاہ آگرہ مین داخل ہوئے اور شام کو جامع مسجد دیکھنے گئے جو قلعہ مین ۹ لاکھ روپیہ کی لاگت سے سات برس مین تیار ہوئی تھی-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

इसमसजिदकी लंबाई ५६ गज़ और चौड़ाई २१ गज़है जिसमें २१ चशमें ३ कतारोंमें हैं जिनपर ३ गुंबद बनेहैं यह जमीनसे ११ गजऊंचीहै इसकाचोक ६० गजसम चौरसथा बीचमें दसगज़ लंबा और इतनाही चौड़ा १ होज़ मकरानेकाथा जिसमें १ फ़ुहारा चलताथा-

बादशाहने वहां नमाज़ पढ़कर १०००० ख़ैरात किये-

समोगरकी शिकारगाहकी इमारत पुरानी होगईथी इसलिये उससे आधकोस जमना के किनारे इमादपुरमें बादशाहने नई इमारत बनवाईथी वहभी ८०००० की लागतसे तैयार होगईथी बादशाह वहां शिकार खेलने कोगये और पोससुदि २ को लोटकर शाहजिहानाबादकी तरफ़ रवानाहोगये-

राणाजगतसिंघका भाई ग़रीबदास बग़ैर हुक्मके अपने वतनको चलधराथा इसपर उसके मनसब और जागीर की बरतरफ़ीका हुक्म हुआ-

माह बदि २ को बादशाह शाहजहाना

اس مسجد کی لمبائی ۵۶ گز چوڑائی ۲۱ گز ہے جسمین ۲۱ چشمے ۳ قطارون مین ہین اوپر تین گنبد ہین صحن زمین سے گیارہ گز اونچا ۶۰ گز مربع سنگ مرمر کا ہے بیچ مین دہ در دہ ایک حوض سنگ مرمر کا تہا جس مین ایک فوارا اچہلتا تہا۔

بادشاہ نے اس مسجد مین نماز پڑہ کر دس ہزار روپیہ خیرات کئے

شکارگاہ سموگر کی عمارت پورانی ہوگئی تہی اس لئے اوس سے آدہ کوس دریا کے اوپر موضع عماد پور مین ایک نئی عمارت شروع کیگئی تہی جو اب بصرف مبلغ اسّی ہزار روپیہ کے اختتام کو پہونچی بادشاہ وہان شکار کہیلنے کو گئے اور ۲۹ محرم کو مراجعت کرکے شاہجہان آباد کیطرف روانہ ہوگئے۔

رانا جگت سنگہ کا بہائی غریب داس جو حضور مین تہا بغیر حکم کے اپنے وطن کو چلدیا اس لئے اوسکی منصب و جاگیر کی برطرفی کا حکم ہوا۔

۴ صفر کو بادشاہ قلعہ شاہجہان

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाद के किले में दाखिल हुवे दूसरे दिन शाहज़ादा दारा शिकोह सुलेमान शिकोह समेत मुलतान से हाज़िर आया सादुल्लाखां और असदखां पेशवाई करके दरबार में लेगये-

माह बदि १४ को बादशाह ने जड़ाऊ मीनाकार तख्त के ऊपर जो ५ लाख रुपये के खरच से तैयार हुआ था जलूस करके और सालगिरह का तुलादान किया इस खुशी में शाहज़ादा दारा शिकोह को ४ लाख रुपये के जवाहर जड़ाऊ जेवर हाथी और घोड़े इनायत हुवे और सुलेमान शिकोह का मनसब दसहज़ारी जात और ६००० सवार का होगया-

राजा जसवंतसिंघ को महाराज का खिताब मिला और मनसब में भी इजाफ़ा हुआ-

फागण सुदि २-३ को चांद्रमास के हिसाब से जो तुलादान जन्मदिन का हुआ उसके दरबार में शाहज़ादे दारा शिकोह को अगले इनाम ८ किरोड़ दाम के सिवाय १ किरोड़ दाम और इनाम के मुकर्रर हुवे-

آباد مین داخل ہوے دوسرے دن شہزادہ دارا شکوہ بھی معہ اپنے بیٹے سلیمان شکوہ کے ملتان سے آکر حاضر ہوا سعداللہ خان و اسد خان پیشوائی کرکے حضور مین لیے گئے -

٢٦ صفر کو بادشاہ نے تخت گوہر نگار مینا کار کے اوپر جو پانچ لاکھ روپیہ کی لاگت سے تیار ہوا تہا جلوس کرکے جشن وزن شمسی کو رونق دی اس خوشی مین شاہزادہ دارا شکوہ کو چار لاکھ کے جواہرات معہ مرصع آلات و فیل و اسپ کے عنایت ہوے اور سلطان سلیمان شکوہ کا منصب دہ ہزاری ذات اور چھہ ہزار سوار و کا ہوگیا -

راجہ جسونت سنگہ کو مہاراج کا خطاب ملا اور اوسکے منصب مین بہی اضافہ ہوگیا -

غرہ ربیع الثانی کو جشن وزن قمری مین دارا شکوہ کو سوائے آٹھہ کروڑ دام انعام سابق کے ایک کروڑ دام اور انعام کے مقرر ہوے -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाहज़ादा मुरादबख़्श अपने बेटे ईज़दबख़्श को लेकर हाज़िर हुआ उसी वक़्त उसको अहमदाबाद की सूबेदारी शायस्तेख़ां से उतर कर मिली और ५ लाख रुपये इनाम के मिले और मनसब का इज़ाफ़ा होकर १५ हज़ारी ज़ात और १०००० सवारों का होगया जिसमें ५००० सवार दुअस्पा और तिअस्पा थे उस दिन और भी अमीरों के मनसब बढ़े थे-

जसरूप मेड़तिया जो बादशाही नोकर था तलवार खेंचकर चांदी के कटहरे के बाहर से बादशाह की तरफ़ दौड़ा तख़्त की पहिली पैड़ी पर पहुंचा था कि नौबतख़ां कोटवाल वग़ैरा ३ आदमियों के हाथ से मारागया-

चैत बदि ९ को बादशाह बड़े शाहज़ादे के मकान पर गये और ४ लाख रुपये की पेशकश क़बूल की-

मोहम्मद जाफ़र को जिसने कंधार के घेरे में बहुत महनत की थी शाहज़ादे की सिफ़ारिश से मीर आतिश का ख़िताब मिला-

شاہزادہ مراد بخش معہ اپنے بیٹے سلطان ایزد بخش کے حاضر آیا اُسیوقت اوسکو احمد آباد گجرات کی صوبداری شایستہ خان سے تغیر ہوکر عنایت ہوئی پانچ لاکھہ روپیہ فنڈ بطور انعام ملے اور منصب بہی اوسکا اضافہ ہوکر پندرہ ہزاری ذات اور دس ہزار سواروں کا ہوگیا جسمین پانچ ہزار سوار دو اسپہ و سہ اسپہ تھے اوسدن اور بہی کئی امیرون کے منصب بڑہے تھے۔

جس روپ میڑتیہ جو ملازم شاہی تہا ایک دن تلوار کہینچکر چاندی کے کٹہرہ کے باہر سے بادشاہ کی طرف دوڑا ایوان کے اول زینہ پر پہونچا تہا کہ نوبت خان کوتوال وغیرہ ۳ شخصون کے ہاتہہ سے مارا گیا۔

۲۲ ربیع الثانی کو بادشاہ بڑے شاہزادہ دارا شکوہ کے مکانپر گئے اور چار لاکھہ روپیہ کی پیشکش قبول کی۔

محمد جعفر کو جسنے قندہار کے محاصرہ مین بہت محنت و جانفشانی کی تہی شاہزادہ کی سفارش سے میر آتش کا خطاب ملا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरे दिन शाहज़ादे दारा शिकोह के तुलादान का महूरत था बादशाह ने उसके इनाम के दाम असल और इज़ाफ़े से १२ किरोड़ सालियाना पंजाब और मुलतान के परगनों में मुक़र्रर कर दिये १२ किरोड़ दाम के ३० लाख रुपये होते थे-

बंदर सूरत के मुत्सद्दी की अरज़ी पहुंची कि रूम के सुलतान मोहम्मद खां का एलची ज़ुलफ़िक़ार आक़ा ख़त और सोग़ातें लेकर आता है बादशाह ने गुर्ज़बरदार के हाथ हुक्म भेजा कि उसको १२०००) ख़र्च के वास्ते सूरत का मुत्सद्दी ५०००) नज़रबार और सुलतानपुर का फ़ौजदार और १२०००) बुरहानपुर का दीवान देवे ५०००) उज्जैन के और १२०००) आगरे के ख़ज़ाने से मिलें इसके सिवाय सूबेदार लोग भी अपने २ इलाक़े में अपनी तरफ़ से "तवाज़े" करें-

बैसाख सुदि ३ को २८ वां जलूसी सन शुरू हुआ उस दिन ज़ुलफ़िक़ार आक़ा के सर रूम के वकील न-कोलश कर ख़ां बख़शी और ताहिर

دوسرے دن شاہزادہ داراشکوہ کے وزن کی ساعت تھی سلئے بادشاہ نے اس تقریب پر اوسکے انعام کے دام اصل ور اضافہ سے ۱۲ کروڑ سالانہ پنجاب ور ملتان کے پرگنون مین مقرر کردیے ۱۲ کروڑ دام کے ۳۰ لاکھ روپیہ ہوتے تھے۔

متصدی بندر سورت کی عرضی سے معلوم ہوا کہ سلطان محمد خان قیصر روم کا ایلچی ذوالفقار آغا مع نامہ اور تحایف کے آتا ہے بادشاہ نے گرزبردار کے ہاتھ حکم بھیجا کہ اوسکو بارہ ہزار روپیہ مد خرچ کے متصدی بندر سورت ور پانچہزار روپیہ فوجدار نندربار و سلطانپور اور بارہ ہزار روپیہ دیوان برہانپور اپنے اپنے علاقہ مین دین ور پانچہزار روپیہ اوجین سے اور بارہ ہزار روپیہ آگرہ کے خزانہ سے ملین اسکے سوائے صوبہ دار لوگ بھی اپنے اپنے صوبہ مین اوسکی تواضع کرین۔

۷ جمادی الثانی کو ۲۸ وان جلوسی سال شروع ہوا اوسدن ذوالفقار آغا ایلچی روم کو لشکر خان بخشی اور طاہر خان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रवां पेशवाई करके हज़ूर में लाये उ
न्होंने कैसर का खत दिया और २ घो
ड़े जिनके साज़ सोने और मोती
के थे जड़ाऊ तलवार और जड़ाऊ
गुर्ज़ जो खास हथियार उस मुल्क
के बादशाहों का है पेश किया और
२९ घोड़े अपनी तरफ़ से नज़र किये-

बादशाह ने खत को बड़ी इज्जत
से लेकर वकील को खिलअत
जड़ाऊ तलवार ३००००) रोकड़ १
मोहर ४०० तोले की और इतना ही
भारी १ रुपया १ पानदान सोने का
और ३ पियाले अरगजे के इनाय
त किये और १ बादशाही महल्ल
में कि जहां सब ज़रूरी सामान
तैयार करा दिया गया था ठहरा
ने का हुक्म दिया -

फिर सुल्तान सुलेमान शिको
ह की शादी में ३००००) बादशाही स
रकार से २५०००) शाहज़ादा दारा
शिकोह की सरकार से १५०००) म
लिके दौरान नवाब कुदसिया की
सरकार से और ५०००) सुलेमान
शिकोह की सरकार से उसको मि
ले और जवाहरात ३००००) का इसके

پیشوائی کرکے بادشاہ کے حضور مین
لیگئے اونہنے قیصر کا نامہ معہ دو اسپ
ساز طلاوزین مروارید دوز وکمر و خنجر
مرصع و گرز مرصع کے جو خاص اسلحہ
اوس ولایت کے سلاطین کا ہے
پیش کیا اور ۹ گھوڑے اپنی
طرف سے نذر کئے -

بادشاہ نے نامہ کو بکمال
عزت ایلچی کے پاس سے لیکر اوسکو
خلعت و خنجر مرصع ۳۰ ہزار روپیہ نقد
ایک مُہر ۴۰۰ تولہ کی اور اتنی ہی تولون
کا ایک روپیہ اور تین پیالہ ارگجہ کے معہ
پاندان طلا کے عنایت کئے اور ایک
بادشاہی منزل مین کہ جہان سب
ضروری سامان مہیا گیا تھا
اوس کے ٹھہرانے کا
حکم دیا -

پھر سلطان سلیمان شکوہ
کی شادی مین تیس ہزار روپیہ
سرکار والا سے ۲۵ ہزار شاہزادہ
دارا شکوہ کی سرکار سے پندرہ
ہزار روپیہ ملکہ دوران نواب
قدسیہ کی سرکار سے معہ
جواہرات قیمتی ۳۰ ہزار
کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिवाय था और १५०००) सादुल्लाखां
वज़ीरने घोड़े और खिलअत वगैरः
के साथ दिये आया था उस दिनसे
लेकर विदा होनेके वक़्ततक कुल
२७५०००) उसको मिला था क़ायमबेग
को जो अरबी और तुरकी बोली अ-
च्छीतरहसे बोलना जानता था उसके
साथ क़ैसर रूम के दरबारमें जानेका
हुक्म हुआ ख़तका जवाब सादुल्ला-
ख़ां वज़ीर ने अरबीमें लिखा क़ैसर
के वास्ते १ तलवार १००००) कीमत
की जिसमें मोती और पन्ने की लड़ि-
यां लगी हुई थीं १ पेटी ४००००) कीम-
तकी, बंगाले अहमदाबाद और बुर-
हानपुर के सादा और ज़री के कपड़ों
के १००० थान, जो १००००) के थे और
५० तोला अतर जहांगीरी ५०००) की
क़ीमतका जो १ शीशी में था क़ाय-
मबेगके हवाले कियागया और व-
कील के विदा करते वक़्त वकील-
की ज़बानी इस्तंबोल में हैज़ा फैल-
नेका ज़िकर सुनकर बादशाहने ज-
वाहरातके १०० दानोंकी माला जि-
ससे की सुमरनी ज़हर मोहरे की थी
और जो हमेशा बादशाहके भुजमें

اوسکو ملے اور اسکی علاوہ پانچہزار روپیہ
سلطان سلیمان شکوہ نے اور پندرہ
ہزار سعد اللہ خان وزیر نے بہی علاوہ
خلعت واسپ وغیرہ کے دیے
اس طرح کل نقد وجنس
روز ملازمت سے وقت
رخصت تک سفیر مذکور کو
دولاکہہ پچہتر ہزار روپیہ
کا ملا تہا۔
قایم بیگ کو جو عربی وترکی زبان
بخوبی جانتا تہا اوسکے ساتہہ قیصر روم
کے دربار مین جانیکا حکم ہوا نامہ کا جواب
سعد اللہ خان وزیر نے عربی مین لکہا
اور قیصر کے واسطے بادشاہ نے ایک خنجر
مرصع قیمتی ایک لاکہہ روپیہ جسمین مروارید
وزمرد کی لڑیان لگی تہین اور کمر مرصع
قیمتی چالیس ہزار روپیہ یکہزار پارچہ
بنگالہ و احمد آباد وبرہان پور سادہ وزردوز
قیمتی ایک لاکہہ روپیہ اور پچاس تولہ
عطر جہانگیری کا ایک شیشہ قیمتی
چار ہزار روپیہ قایم بیگ کے حوالہ
کیا اور بوقت رخصت سفر کے اوسکی بابت
استنبول مین ہیضہ پہیلنے کا ذکر سنکر ایک
تسبیح صد دانہ جواہر اام زہر مہرہ کی بہی
جو ہمیشہ بادشاہ کے بازو مین

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बंधी रहती थी उनसे सोगात में मे शामिल करदी क़ायमबेग को भी वहुतसा माल और रुपया दिया गया-

जेठ बदि १ को बादशाह अपने पोते सुलतान सुलेमान शिकोह के मकान पर गये उसने १ लाख रुपये की पेशकश बादशाह के नज़र की और जो अमीर साथ गये थे उनमें से अकसर को बादशाह के हुक्म से ख़िलअत दिये-

दूसरे भादों की बदि १४ को शेख अबदुल हमीद जो बादशाह नामा लिखा करता था मरगया-

बादशाह ने मक्के में नाज की महंगाई सुनकर १०००००) की जिनस अहमदाबाद और बंदर सूरत से दिलाकर ख़्वाजा ज़ाबित को मक्के भेजा और हुक्म दिया कि तीसरे हिस्से की जिनस तो मक्के के शरीफ़ (महंत) को देवे और बाक़ी ग़रीबों को बांट दे और मदीने की मसजद की लंबाई चौड़ाई के बराबर १ कमख़ल की जानमाज़ मुलतान की बुनी हुई भी ख़्वाजा के हाथ भेजा-

आसोज सुदि ७ को बादशाह

تہا کرتی تہی اون تحایف کے شامل کردی۔

قایم بیگ کو بہی وقت روانگی کے بہت سا نقد و جنس عنایت ہوا

۱۵ جمادی الثانی کو بادشاہ اپنے پوتے سلیمان شکوہ کے مکان پر گئے اوس نے ایک لاکھ روپیہ کی پیشکش دی اور اکثر ہمراہی امرا کو بہی بادشاہ کے حکم سے خلعت عنایت کئے۔

۲۶ شوال کو شیخ عبد الحمید بادشاہ نامہ کا مصنف مر گیا یہہ شیخ ابو الفضل کا شاگرد تہا۔

بادشاہ نے مکہ مین گرانی کا حال سنکر ایک لاکھ روپیہ کی جنس خرید کر احمد آباد و بندر صورت خواجہ ضابطہ کے ہاتھہ بہیجی اور حکم دیا کہ تیسرے حصہ کی جنس شریف مکہ کو دیکر باقی فروخت کرے اور اوسکا روپیہ وہاں کے غریبون کو تقسیم کر دے اور ایک عمدہ کمل ملتان کا بنا ہوا بہی جو عرض و طول مسجد مدینہ کے برابر تہا خواجہ ضابطہ کے ہاتھہ مدینہ کو بہیجا۔

۱۰ ذی الحجہ کو بادشاہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ख्वाजापीरकी ज़ियारतके लिये अज
मेरको रवानेहुवे उस वक़्त यह अर-
ज़ हुई कि जहांगीर बादशाह के ज़मा
नेमें क़िले चीतोड़ की मरम्मत नहीं
करने का हुक्म जारी हो चुका था मग
र राना जगतसिंघ ने उसको न मान
कर मरम्मत करली है यह सुनकर
बादशाह ने अबदाल बेग को देख
नेके वास्ते भेजा उसने आकर अर
ज़ की कि पच्छिम की तरफ़ ७ दरवाज़े
एक के ऊपर एक कुछ तो पुराने गिरे
पड़े सुधारे गये हैं और कुछ नये भी
बने हैं और बहुत सी जगह पर कि ज
हां से पहाड़ के ऊपर चढ़ना मुशकि
ल न था । भीत बनादी है इस पर बा
दशाह ने सादुल्लाखां वज़ीर को हुक्म
दिया कि ३०००० सवार से जाकर क़िले
को गिरादे राणा ने ख़बर पाकर अप
ने वकील भेजे और शाहज़ादे दारा
शिकोहकी सिफ़ारिश लाकर माफ़ी
के वास्ते अरज़ कराई बादशाह ने फ़
रमाया कि जो राणा अपने टीकाई
लड़के को हज़ूर में भेजे और क़दीम
दस्तूर के माफ़िक १००० सवार दखन
में हाज़िर रखे तो उसके क़सूर माफ़

خواجہ صاحب کی زیارت کے واسطے
اجمیر کو روانہ ہوے اوس وقت یہہ عرض
ہوئی کہ جہانگیر بادشاہ کے عہد مین
قلعہ چیتوڑ کے شکست و ریخت کی
مرمت نہ کرنیکا حکم صادر ہو چکا تہا
مگر رانا جگت سنگہ نے جرات کر کے
مرمت کر لی ہے بادشاہ نے ابدال بیگ
کو دیکھنے کیواسطے بہیجا اوس نے آکر عرض
کی کہ پچہم کیطرف سات دروازہ درجہ
بدرجہ کچہہ از سر نو درست کیے گئے
ہین اور کچہہ نئے بنائے گئے ہین اور
بہت سی جگہ کہ جہان پہاڑ کے
اوپر چڑہنا مشکل نہ تہا ایک دیوار
کہڑی کر دی ہے اسپر بادشاہ نے
سعد اللہ خان وزیر کو حکم دیا کہ تیس
ہزار سوار لے جاکر قلعہ کو
گرادے
رانا نے یہہ خبر سنکر اپنے وکیل
بہیجے اور شاہزادہ کلان کی سفارش
معافی کی درخواست کی بادشاہ نے
فرمایا کہ اگر اپنے ولیعہد لڑکے کو
حضور مین بہیجے اور قدیم دستور کے موافق
ایک ہزار سوار دکہن مین حاضر
رکہے تو اوس کے قصور
معاف

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करदिये जावेंगे राणाने जवाब में अर
ज़ कराई कि जो सरकार का दीवान
शेख अबदुल करीम आजावे तो मैं
अपने बेटे को उसके साथ हज़ूर में
हाज़िर करूं और १००० सवार अगले
क़ायदे के माफ़िक़ दखनको भेजूं-

कातिक बदि १३ को बादशाह अज
मेर पंहुच कर आनासागर तलाव
के ऊपर दौलतखाने में उतरे और
उसी दिन ख्वाजको ज़ियारत करने गये-

इसी दिन सादुल्लाखां किले चीतौ
ड़ के पास पहुंचा और १४ दिन में वहां
के बुरज और कंगुरे गिराकर पीछा लौटा-

राणाने अपने बड़े बेटे को जो ६ बर
सका था कई बड़े बड़े सरदारों से अ
बदुलकरीम और सरकारी मुनशी
चंद्रभान के साथ हज़ूर में भेजा-

हाजी अहमद सईद रूमसे वा
पस आया-

कातिक सुदि १ को अमीरुल्उम
रा अलीमरदांन खांने अपने बेटों स
मेत कशमीर से आकर मुजरा किया-

श्रीनगर का ज़मींदार अपने वि
कट पहाडों के भरोसे भूल कर अब
तक दरगाह में हाज़िर न हुआ था-

کردیے جاوینگے رانانے اسکے جواب مین
عرض کرائی کہ اگر شیخ عبدالکریم دیوان
سرکار عالی جاوی تو مین اپنے بیٹے کو
اوسکے ہمراہ حضور مین روانہ کرون
اور ایکہزار سوار بہی بدستور دکن کو
بہیجتا ہون۔

۵ ذی الحجہ کو بادشاہ اجمیر
پہونچکر اناساگر تالاب کے اوپر دولت
خانہ مین فروکش ہوا اور اسیدن شام
کو زیارت کرنیکیواسطے گئے۔

اسیدن سعداللہ خان قلعہ چیتوڑ
کے قریب پہونچا اور ہم اونین ۱۴ دن
برج اور کنگورے گراکر متوجہ حضور ہوا۔

رانانے اپنے بڑے بیٹے کو جو ۶
برسکی عمر مین تہا معہ چند معتمد نوکرون
اور عرضی اظہار اطاعت کے عبدالکریم و چندربہان
منشی سرکار کے ہمراہ حضور مین بہیجا۔

حاجی احمد سعید سفارت روم
سے واپس آیا۔

سلخ ذی الحجہ کو امیرالامرا علیمردان
خان نے معہ اپنے بیٹون کے کشمیر سے
آکر ملازمت کی۔

چونکہ مرزبان سری نگر دشوار گذار
پہاڑون کے استظہار سے ابتک
حاضر درگاہ نہوا تہا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस लिये बादशाह ने ख़लीलुल्ला ख़ां को ८००० सवारों से उसके ऊपर रवाने किया -

२९ वां बरस.

कातिक सुदि २ संबत १७११ से.
कातिक सुदि २ संबत १७१२ तक

कातिक सुदि ९ को बादशाह ने ख़्वाजा साहिब की दरगाह में जाकर दुबारा ज़ियारत्त की -

कातिक सुदि १९ को बादशाह ने अजमेर से कूच किया मंगसर बदि ८ को मांडलपुरे में मुक़ाम हुआ. वहां अबदुल करीम राणा के बेटे को लेकर हाज़िर आया उस लड़के का अब तक नाम नहीं रक्खा गया था इसलिये बादशाह ने उसका नाम सोभाग सिंघ रक्खा और उसको मोतियों का सरपेच जड़ाऊ उर्बसी वग़ैरा इनायत फ़रमाया उसके साथियों में से रामचंदर वग़ैरा ५ आदमियों को घोड़े और ख़िलअत इनायत किये -

मंगसर बदि ९ को सादुल्लाख़ां लश्कर समेत चीतोड़ से हाज़िर आया -

मंगसर बदि १३ को राणा के बेटे को हाथी और घोड़ा इनायत हुआ और

اسلیے بادشاہ نے خلیل اللہ خان کو آٹھ ہزار سوار سے اوسکی سزادہی کیواسطے تعینات کیا۔

۲۹ وان برس

۳۰ نومبر سنہ ۱۶۵۴ع سے ۱۹ اکتوبر سنہ ۱۰۶۵ ہجری تک

۹ محرم کو بادشاہ نے خواجہ صاحب کی درگاہ مین جاکر دوبارہ زیارت کی۔

۱۴ محرم کو بادشاہ نے اجمیر سے کوچ کیا۔ ۱۲ محرم کو مالپورہ مین مقام ہوا وہان عبدالکریم رانا کے بیٹے کو لیکر حاضر آیا اوس لڑکے کا نام اتبک نہین رکھا گیا تھا اسلیے بادشاہ نے اوسکا نام سوبھاگ سنگھ رکھا اور اوسکو موتیون کا سرپیچ اور مرصع اور بسی وغیرہ زیور عنایت فرمایا اور اوسکے ساتھیون مین سے رام چندر وغیرہ ۵ شخصونکو گھوڑے اور خلعت عنایت کیے

۲۲ محرم کو سعد اللہ خان معہ زیر لشکر کے چتوڑ سے حاضر آیا

۲۶ محرم کو رانا کے بیٹے کو ہاتھی اور گھوڑا عنایت ہوکر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घर जाने की रुख़सत हुई -

मंगसर सुदि २ को शाहज़ादे औरंगज़ेब के बेटे मोहम्मद सुलतान ने दखन से घाटी चांदा के रस्ते हाज़िर आकर अपने बाप के भेजे हुवे हाथी और जड़ाऊ ज़ेवर ३ लाख की क़ीमत के नज़र किये बादशाह ने घोड़ा और ख़िलअत देकर उसका रोज़ीना असल और इज़ाफ़े से २००) रुपये का कर दिया -

पोस बदि १ को बादशाह रूपबास में शिकार खेलकर फ़त्तहपुर में पहुंचे -

पोस बदि ४ को बादशाह क़िले आगरे में दाख़िल होकर शाहज़ादे दारा शिकोह के मकान पर लौट आये और शाम के वक़्त बहादुरपुर को रवाने हुवे क्योंकि दिल्ली जाने के वास्ते वहां छावनी डाली गई थी

पोस बदि ६ को बादशाह ने दिल्ली जाते हुवे घाट स्वामी से मोहम्मद सुलतान को ५००००) देकर बुरहानपुर जाने की रुख़सत दी और १ लाख रुपया शाहज़ादे औरंगज़ेब को बुरहानपुर के ख़ज़ाने से इनायत किया -

گھر جانے کی رخصت ہوئی۔

غرہ صفر کو شاہزادہ اورنگ زیب کے بیٹے محمد سلطان نے دکن سے براہ گھاٹی چاندا معہ شایستہ خان کے حاضر درگاہ ہو کر اپنے باپ کے بھیجے ہوے مرصع آلات و فیل وغیرہ قیمتی تین لاکھ نظر سے گذرانے بادشاہ نے اسپ و خلعت عنایت کر کے اوسکا روزینہ اصل و اضافہ سے دو سو روپیہ کا کر دیا۔

۱۴ صفر کو بادشاہ بعد سیر و شکار روپ باس کے فتحپور میں داخل ہوئے۔

۱۷ صفر کو قلعہ آگرہ میں جا کے شاہزادہ دارا شکوہ کے مکان پر لوٹ آئے اور شام کے وقت موضع بہادر پورہ کو روانہ ہوئے جہان دہلی جانے کے واسطے چھاؤنی ڈالی گئی تھی۔

۱۹ صفر کو گھاٹ سوامی سے محمد سلطان کو پچاس ہزار روپیہ عنایت کر کے برہان پور جانے کی رخصت دی اور ایک لاکھ روپیہ شاہزادہ اورنگ زیب کو برہان پور کے خزانہ سے عطا کیا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाह ईरान के वज़ीर ख़लीफ़ा सुल्तान का भानजा मीर जाफ़र नोकरी की उमेद पर अपने वतन से हाज़िर आया बादशाह ने उसको १००० इनाम के देकर डेढ़ हज़ारी ज़ात और १००० सवार के मनसब पर नोकर रख लिया —

पोस सुदि ११ को बादशाह ख़्वाजा ख़िज़र के घाट से नाव में विराजकर शाहजहांनाबाद के क़िले में दाख़िल हुवे —

माह सुदि १०।११ को चांद्रमास के हिसाब से ६६ वां बरस बादशाह को लगा उस दिन के तुलादान की महफ़िल में शाहज़ादे दाराशिकोह को ढाई लाख रुपये का ख़ासा ख़िलअत सोने के काम की नादरी समेत कि जिसके फूलों में हीरे और किनारों में मोती टके हुवे थे- और १ लाख रुपये का जड़ाऊ सरपेच और ३० लाख रुपया इनायत फ़रमाया तख़्त के पास १ सोने की चोकी पर बैठने का हुक्म और शाह बुलंद इक़बाल का ख़िताब बख़्शा शाहज़ादे सुलेमान शिकोह का

شاہ ایران کے وزیر خلیفہ سلطان کا بہانجہ میر جعفر بامید نوکری اپنے وطن سے حاضر آیا بادشاہ نے اوسکو دس ہزار روپیہ انعام دیکر ڈیڑہ ہزاری ذات اور ہزار سوار کے منصب پر نوکر رکہہ لیا۔

۹ ربیع الاول کو بادشاہ منزل خواجہ خضر سے کشتی مین سوار ہوکر قلعہ شاہ جہان آباد مین داخل ہوئے۔

۸ ربیع الثانی سے بادشاہ کو ۶۶ وان قمری برس شروع ہوا جشن کے جشن وزن مین شاہزادہ دارا شکوہ کو ڈہائی لاکہہ روپیہ کا خلعت خاصہ معہ نادری زرنگار کے کہ جسکی پہولون مین ہیرے کی کنیان اور دور مین موتی ٹکے ہوئے تھے اور ایک لاکہہ روپیہ کا سرپیچ مرصع معہ مبلغ ۳۰ لاکہہ روپیہ نقد کے عطا فرمایا اور تخت کے پاس ایک سونے کی صندلی پر بیٹھنے کا حکم اور شاہ بلند اقبال کا خطاب بخشا اور سلطان سلیمان شکوہ کا منصب دو ہزاری ذات اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनसब दो हज़ारी ज़ात और १००० के इज़ाफ़े से १२ हज़ारी और ७००० सवारों का होगया -

शायस्ताखां को मालवे की सूबेदारी इनायत हुई इसी तरह से दूसरे अमीरों को भी इनाम खिताब और इज़ाफ़ों से सरफ़राज़ी बख़्शी गई अमीरुलउमरा को कशमीर जाने की रुखसत मिली -

बयूतात के दीवान मोहम्मद सालह को मोतमदखां का खिताब २ हज़ारी २००० सवारों का मनसब सोने का क़लमदान और शाह बलंद इक़बाल की दीवानी का ओहदा मिला और शेख अबदुलकरीम जो अगला दीवान था उसको ५ लाख दाम परगने थानेसर से इनायत हुवे -

माह बदि १४ को बादशाह ने शाह बुलंद इक़बाल दाराशिकोह के मकान पर पधारकर २ लाख रुपये की पेशकश कबूल की सादुल्लाखां और महाराजा जसवंत सिंघ वग़ैरा ४९ बडे २ अमीरों को दरजेवार इनाम और खिलअत चारकुब,

ہزار سوار کے اضافہ سے بارہ ہزاری سات ہزار سوار کا کر دیا -

شایستہ خان کو مالوہ کی صوبہ داری عنایت ہوئی اسیطرح دوسرے امیرون کو بھی انعام خطاب اور اضافہ منصب سے سرفرازی بخشی گئی امیر الامرا کو کشمیر جانے کی رخصت ہوئی -

محمد صالح دیوان بیوتات کو معتمد خان کا خطاب دو ہزاری دو ہزار سوار کا منصب سونے کا قلمدان اور شاہ بلند اقبال کی دیوانی کا عہدہ شیخ عبدالکریم کے تغیر سے ملا اور شیخ عبدالکریم کو پانچ لاکھہ دام تھانیسر کے خزانہ سے مرحمت ہوئے -

۲۵ ربیع الثانی کو بادشاہ نے شاہ بلند اقبال کے مکان پر تشریف لیجاکر دو لاکھہ روپیہ کی پیشکش قبول فرمائی سعد اللہ خان وزیر اور مہاراجہ جسونت سنگھ وغیرہ ۵۹ بڑے بڑے امیرون کو اونکے درجہ اور رتبہ کے موافق انعام اور عطا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और फ़रजी वग़ैरा समेत शाहबुलंदइक़बाल की सरकार से इनायत हुये-

इसी मजलिस में सिरोही के राव अखैराज ने हाज़िर होकर मुजरा किया बादशाह ने उसको सरपेच जड़ाऊ कड़े और घोड़े इनायत किये-

हरजी बोहरे के ४ अरबी घोड़े बादशाह की नज़र से गुज़रे और उसको बादशाह की तरफ़ से हाथी इनायत हुआ सूरत में इसके बराबर कोई धनवान नहीं था-

भादों बदि ७ को ५२ घोड़े शाहशुजाअ के भेजे हुवे बादशाह की नज़र से गुज़रे-

औरंगज़ेब के बेटे सुल्तान मोहम्मद को १ किरोड़ दाम बंगाले और उड़ीसे के सूबे से इनायत हुवे-

मुल्लासुफ़ीआय को दानिशमंद ख़ां का ख़िताब और दूसरे बख़्शी का ओहदा लशकर ख़ां से उतरकर मिला-

भादों सुदि ५ को तमाम ज़ेरजेब हकीम सालह को इनायत हुआ- ज़ेरजेब १ खौनचे का नाम था जो ...ता और हरजगह हज़ूर में मौजूद

خلعت مع چارقب فرجی وغیرہ
کے شاہزادہ کی سرکار سے عنایت ہوئے
اسی مجلس مین سروہی کے
راو اکھی راج نے حاضر ہوکر ملازمت
کی بادشاہ نے اوسکو سرپیچ دست
بند مرصع اور گھوڑا وغیرہ عنایت کیا
ہرجی بوہرہ کے چار عربی
گھوڑے بادشاہ کی نظر سے گذرے
بادشاہ کیطرف سے وسکو ہاتھی
عنایت ہوا اوسوقت سورت مین
بوہرہ مذکور کے برابر کوئی دولتمند نہ تھا۔
۱۲ شوال کو ۵۲ گھوڑے
شاہزادہ محمد شجاع کے بھیجے ہوئے
بادشاہ کی نظر سے گذرے۔
اورنگ زیب کے بیٹے سلطان
محمد کو ایک کروڑ دام صوبہ بنگالہ
اور اوڑیسہ سے عنایت ہوئے
ملا شفیعائے کو دانشمند خان
کا خطاب اور بخشی گیری دویم کا
عہدہ بجائے لشکر خان کے
مرحمت ہوا۔
۲۰ ذی قعدہ کو تمام زرجیب
حکیم صالح کو مرحمت ہوا زرجیب
عبارت ایک خوانچہ سے تھی جو
ہمیشہ اور ہر جگہہ حضور مین موجود

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहताथा जिसमें तिरयाक़, दवाउल मुश्क, नोशदारू, कमूनी, ज़हरमोहरा, मूमयाई और जदवार खताई, जैसी दवाईयें १०० रुपये और १०० मोहरें रखी रहीथी—

भादों सुदि १५ को मूसवी खां के बेटे नूरुद्दीन कुली को हुक्म हुआ कि सोने की तखती जिसपर बादशाही फ़रमान आदिलखां की अरज से खोदा गया था कुछ सोग़ात और जड़ाऊ खंजर के साथ लेजाकर बीजापुर में पहुंचा आवे—

आसोज सुदि ११ सोमवार को बादशाह ईद की नमाज़ पढ़ने के वास्ते शाह जिहानाबाद की शहर पनाह के बाहर ईदगाह में तशरीफ़ लेगये जो डेढ़ बरस में ५०००) के खर्च से तैयार हुई थी—

क़ायम बेग की अरज़ी जद्दे से पहुंची उसमें लिखा था कि रूम का वकील ज़ुलफ़िक़ार आक़ा सूरत से जहाज़ रज़ाई के ऊपर सवार होकर जब कनफ़ज़े के बंदर में पहुंचा कि जहां से मक्का १२ मंजिल रहजाता है तो उसने अपना और असबाब को

رہتا تہا جس مین اکثر ضروری
چیزین مثلاً تریاق دوالمسک
نوشدارو کمونی زہر مہرہ
موسیائی وجدوار وغیرہ ایکسو
روپیہ نقد اور ایکسو مہرین رکہی ہوئی تہی
۱۴ ذی قعدہ کو نورالدین
قلی ولد موسوی خان کو حکم ہوا
کہ سونے کی تختی جسپر بادشاہی
فرمان بموجب التماس عادل خان
کے کندہ کیا گیا تہا مع بر سے
تحفہ و خنجر مرصع کے لیجا کر
بیجاپور مین پہونچاوے۔
روز دوشنبہ ۱۰ ذی الحجہ
کو بادشاہ عید کی نماز پڑہنے
کے واسطے شہر پناہ شاہجہان
آباد باہر عیدگاہ مین تشریف لیگئے
جو ڈیڑہ برس مین پچاس ہزار
روپیہ خرچ سے تیار ہوئی تہی۔
قایم بیگ کی عرضی جدہ سے
پہونچی اوسمین لکہا تہا کہ ذوالفقار
آقا ایلچی روم سورت سے جہاز
رضائی کے اوپر سوار ہوا تہا جب بندر
قنفدہ مین پہونچا کہ جہان سے مکہ
بارہ منزل رہتا ہے تو اوسنے
اپنا اور اسباب تو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

जहाज़में रहने दिया और आप ३००००
इब्राहीमी (रुपया) और जवाहरातका
संदूकचा लेकर खुशकी के रस्तेसे
६ दिनमें जद्दे पहुंच गया वह जहाज़
नहीं पहुंचा क्योंकि रस्ते में ही डूब
गया था ज़ुल्फ़िक़ार खां का बीमा
रतो पहिले से ही था अब जो जहाज़
का डूबना सुना तो असबाब खोजा
ने के दुख से मर गया-

बरस ३०वां

कातिक सुदि २ संबत १७१२ से-
कातिक सुदि २ संबत १७१३ तक.

मंगसर बदि ९।१० को ६ लाख रु
पये दखन के खज़ाने से शाहज़ादे
औरंगज़ेब को इनायत हुवे-

मीरजुमला जो कुतुबुलमुल्क
का नोकर था करनाटक का मुल्क
जो १५० कोस लंबा और ३० कोस
चौड़ा था और जिसमें बहुत सी-
खानें हीरे वगैरे की थीं और हासि-
ल नी ४० लाख रुपया से कम न था
फ़तह करके बहुत ज़ोर पकड़ गया
था और इस सबब से उसके दुश
मनों ने कुतुबुलमुल्क का दिल
उसकी तरफ़ से फेर दिया था.

جہاز مین رہنے دیا اور آپ ۳۰ ہزار
ابراہیمی اور جواہر کا صندوقچہ لیکر خشکی
کے رستہ سے ۶ دن مین جدہ پہونچگیا
اوسوقت بیمار تہا پہر جہاز کے غرق
ہونے کی خبر آئی تو اِس صدمہ
سے مرض الموت مین گرفتار
ہوکر بحسرت تمام
اِس دنیاے دون سے
گذر گیا۔

تیسوان ۳۰ برس
سنہ ۱۰۶۶ ہجری

۲۵ اکتوبر سنہ ۱۶۵۵ع سے ۱۸ اکتوبر سنہ ۱۶۵۶ع تک

۲۳ محرم کو چہ لاکہہ روپیہ خزانہ دکن
سے شاہزادہ اورنگ زیب کو
عنایت ہوئے۔

قطب الملک کے ملازم میر محمد سعید
اردستانی عرف میر جملہ نے کرناٹک کی
ولایت جو ڈیڑہ سو کوس لمبی اور ۳۰
کوس چوڑی ہی اور جسمین بہت سی
کہانین ہیرہ وغیرہ کی ہین اور جسکا
حاصل چالیس لاکہہ روپیہ سے کم نہ تہا [illegible]
سے فتح کرکے بہت سی قوت اور جمعیت
پیدا کر لی تہی اور اس سبب سے اوسکے
دشمنون نے قطب الملک کا مزاج اوسکی
طرف سے منحرف کر دیا تہا

जिससे घबरा कर उसने शाहज़ादे औरंगज़ेब का आसरा लिया और शाहज़ादे के लिखने से बादशाह ने उसके वास्ते ५ हज़ारी ज़ात ५ हज़ार सवार का मनसब और उसके बेटे मोहम्मद अमीन के वास्ते मनसब २ हज़ारी १००० सवार का क़ाज़ी मोहम्मद आरिफ़ के हाथ भेजा।—

मंगसर सुदि ८ को शाहज़ादे शुजाअ का बेटा सुलतान ज़ैनुलआबदीन बंगाले से हाज़िर आया।—

माह बदि ११ को ६५ वां बरस बादशाह की उमर का सौर पक्ष से शुरू हुआ जिसके तुलादान की मजलिस में बादशाह ने शाह बुलंद इक़बाल दाराशिकोह को १ लाख रुपये का जवाहर और ५०००० रोकड़ इनायत करके १० हज़ारी ज़ात के इज़ाफ़े से ४० हज़ारी ज़ात और २०००० सवार का मनसब इनायत फ़रमाया उसके छोटे बेटे सिपहरशिकोह को ८ हज़ारी ज़ात २००० सवार का मनसब और ठट्ठे का सूबा दिया और सुलतान ज़ैनुल आबदीन को ७ हज़ारी ज़ात और २००० सवार का

اور وہ اسباب سے متفکر ہوکر شاہزادہ اورنگ زیب سے ملتجی ہوا جس پر بادشاہ نے اوس کو منصب پانچ ہزاری پانچ ہزار سوار کا اور اوس کے بیٹے محمد امین کو دو ہزاری دو ہزار سوار کا قاضی محمد عارف کے ہاتھ بھیجا۔

۷ صفر کو شاہ شجاع کا بیٹا سلطان زین العابدین بنگالہ سے حاضر آیا۔

۱۰ ربیع الاول کو ۶۵ وان شمسی برس بادشاہ کی عمر کا شروع ہوا جسکے جشن وزن مین بادشاہ نے شاہ بلند اقبال دارا شکوہ کو ایک لاکھ روپیہ کے جواہر اور پچاس ہزار نقد عنایت کرکے دس ہزاری ذات کی اضافہ سے چالیس ہزاری ذات اور بتیس ہزار سوار کا منصب عنایت فرمایا سلطان سپہر شکوہ کو آٹھ ہزاری ذات اور دو ہزار سوار کا منصب اور ٹھٹھہ کا صوبہ دیا اور سلطان زین العابدین کو سات ہزاری ذات اور دو ہزار سوار کا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनसब बख़्शा— अमीरुलउमरा और सादुल्लाख़ां से लेकर हज़ारीज़ात के मनसब तक के अमीरों को जैसा कि जिसका दरजा था खिलअ़त मिला।

माह सुदि ३ को ६६ वां बरस बादशाह की उमर का चांद्र मास के हिसाब से शुरू हुआ उस दिन के दरबार में ६ लाख रुपया बिहार के ख़ज़ाने से और १ लाख रुपया दखन के ख़ज़ाने से शाहज़ादे औरंगज़ेब के बेटों को इनायत हुआ और रामसिंघ को खिलअ़त मिला—

इन दोनों तुलादानों के दरबार में २६ लाख की पेशकश जवाहरात और जड़ाऊ चीज़ों वग़ैरा की क़बूल हुई—

काशग़र के मालिक अबदुल्लाख़ां के वकील हाजी फ़ौलाद ने हाज़िर होकर ८ घोड़े नज़र किये उसको ६००० इनाम के मिले—

माह सुदि ९ को सुलतान जैनुलआबदीन को बंगाले जाने की रुख़सत हुई उसको हाज़िर होने के दिन से अब तक हाथी घोड़ों के सिवाय १ लाख रुपये के जवाहर

منصب بخشا ور امیر الامرا اور سعد اللہ خان سے لیکر ہزاری ذات تک کے منصب داروں کو علی قدر مراتب خلعت عطا کیے۔

غرہ ربیع الثانی کو چہیاسٹھوان برس بادشاہ کی عمر کا قمری حساب سے شروع ہوا اوسدن کے دربار مین چھہ لاکھہ روپیہ خزانہ بہار سے شاہزادہ شجاع کو اور ایک لاکھہ روپیہ خزانہ دکھن سے شاہزادہ اورنگ زیب کے بیٹون کو عنایت ہوئے اور رام سنگھ کو خلعت ملا۔

ان دونون جشنون یعنی وزن شمسی اور قمری مین ۲۳ لاکھہ روپیہ کی پیشکش جواہرات و مرصع آلات وغیرہ سے قبول ہوی۔

عبد اللہ خان والی کاشغر کے ایلچی حاجی فولاد نے حاضر ہوکر آٹھہ گہوڑے نذر کیے اور چھہ ہزار روپیہ انعام سے مشرف ہوا۔

۷ ربیع الثانی کو سلطان زین العابدین کو بنگالہ جانے کی رخصت ہوی اوسکو تاریخ ملازمت سے اب تک سوا اسپ اور فیل کے ایک لاکھہ روپیہ کے جواہر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इनायत हो चुके थे और १०० घोड़े उसके बाप शाह शुजाअ के वास्ते भी उसको दिये गये-

जवार का ज़मीदार श्रीपत जिसकी उत्तर सीमा बगलाणे से और दक्षिण सीमा कोकन से मिली थी और चोल का बंदर भी उसके क़ब्ज़े में था हुक्म नहीं माना करता था इस लिये वहां की ज़मीदारी शाहज़ादे औरंगज़ेब की अरज़ से राव करण को इनायत हुई-

चेत सुदि २ सनीचर वार को ३० वां जलूसी संन शुरू हुआ जिसके दरबार मामूल के माफ़िक हुवे

सादुल्लाखां वज़ीर का मरना-

चेत सुदि १४ को सादुल्लाखां वज़ीर जो अक़्ल और तदबीर में अपने वक़्त का इकता था क़ौलंज की बीमारी से मर गया इससे बादशाह को इतना रंज हुआ कि आंखों से आंसू निकल पड़े उसका बड़ा बेटा लुतफ़ुल्लाह १५ बरस का था उसको भी ७ सदी ज़ात और १०० सवार का मनसब मिला

عنایت ہو چکے تھے اور ایکسو گھوڑے اوسکے باپ شاہ شجاع کے واسطے اوسکے حوالہ کیے گئے -

جوار کا زمیندار سری پت جسکی شمالی حد بگلانہ سے اور جنوبی کوکن سے ملحق تھی اور جیول نام کا ایک بندر بھی اوسکے قبضہ مین تہا سرکشی کرتا تہا اسلیے وہان کی زمینداری شاہزادہ اورنگ زیب کی عرض سے راو کرن کو پیشگاہ بادشاہ سے عنایت ہوئی -

روز شنبہ غرہ جمادی الثانی کو ۳۰ وان جلوسی سنہ شروع ہوا جشن اور دربار معمول کے موافق ہوئے -

وفات سعد اللہ خان وزیر

۲۲ جمادی الثانی کو جملۃ الملک سعد اللہ خان جو فنون علم رسمی فصاحت زبان اور عقل و تدبیر مین اپنے زمانہ کا یکتا تہا عارضہ قولنج سے مر گیا اس واقعہ سے بادشاہ کو اسقدر رنج و غم ہوا کہ بے اختیار آنکھون سے آنسو نکل پڑے اوسکا بڑا بیٹا لطف اللہ پندرہ برس کا تہا اوسکو سات صدی ذات اور سو سوار منصب ملا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाक़ी ३ बेटों २ बेटियों और ४ औरतों का मुनासब रोज़ीना मुक़र्रर होगया उसके नोकर अबदुल्लनबी को ह ज़ारीज़ात और ४०० सवार का मन सब मय फ़ौजदारी शमसाबाद के इनायत हुआ इसीतरह से उसके दूसरे नोकरों की भी परवरिश हुई ४ किरोड़ दाम उसकी जागीर में से शाह बलंद इक़बाल दारा शिकोह को इनायत हुवे जो मथुरा वग़ैरा प रगनों के थे और उन परगनों की फ़ौजदारी और राहदारी भी शाह बु लंद इक़बाल के नोकर शेख दा ऊद के ज़िम्मे की गई–

रघनाथ जो तन दफ़तर का द फ़तरदार था और सादुल्ला खांका ब नाया हुआ था उसको बादशाह ने हज़ारीज़ात ४०० सवार का मनसब और रायरायां का ख़िताब देकर यह हुक्म फ़रमाया कि दीवान आ ला के मुक़र्रर होने तक दीवानी का काम संभाले और कामों का ख़ुलासा अरज़ करतारहे और ख़ुद बादशाह भी कामों की जांच करने लगे।

चंद्रभान को जो अफ़ज़लखां

اور باقی تین بیٹون و بیٹیون اور چار عورتون کا مناسب وزینہ مقرر ہوگیا اوسکی نوکر عبدالنبی کو ہزاری ذات اور چار سو سوار کا منصب مع فوجداری شمس آباد کے عطا ہوا اسیطرح سے اوسکے اور نوکرونکی بہی پرورش ہوئی - چار کروڑ دام اوسکی جاگیر مین سے شاہ بلند اقبال داراشکوہ کو مرحمت ہوئی اور اوس محال کی فوجداری اور راہداری شاہ موصوف کے ملازم شیخ داؤد کے متعلق کی گئی یہہ محال چار کروڑ دام کے متہرا وغیرہ پرگنون مین تھے -

رگہناتہہ جو دفتر تن کا دفتر دار تہا اوسکو بادشاہ نے ہزاری ذات چار سو سوار کے منصب اور رائی رایان کے خطاب سے مشرف کرکے یہہ حکم فرمایا کہ دیوان اعلی کے مقرر ہونے تک دیوانی کا کام سنبہالے اور خلاصہ مطالب عرض کرتا رہے اور بادشاہ بذات خاص بہی معاملات ملک و مال کی تنقیح کرنے لگے -

چندر بہان جو مطلب

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का बदाया हुआ १ लायक़ मुनशी था और दाराशिकोह ने बादशाह से मांग लिया था अब फिर बादशाह ने दाराशिकोह से लेकर मुनशीगरी पर मुक़र्रर किया और रायचंद्रभान का ख़िताब देकर दूसरे हिंदू मुनशियों का अफ़सर बनाया-

सादुल्लाख़ां बहुत नेक आदमी था इश्वर से डरकर ईमानदारी से काम करता था उसने अपनी वज़ारत में रैयत पर कोई नई लाग लगाने की बदनामी नहीं ली मुक़द्दमों और हसाबी झगड़ों को ग़रीबों के नुक़सान बचाकर फ़ैसल करता था। पहिले यह क़ायदा था कि आमिलों यानी तहसीलदारों को तहसील के रुपयों में से ५) सैंकड़ा मुजरा दिया जाता था यानी १००) में से ९५) सरकार में जमा होकर ५) छूट हो जाते थे सादुल्लाख़ां ने १ दिन किसी आमिल के हिसाब का फ़ैसला करते हुवे सरकार के फ़ायदे की नज़र से यह हुक्म जारी कराया कि आमिल लोग १०५) तहसील करके १००) सरकार में जमा

نویسی مین بے نظیر اور تربیت کیا ہوا افضل خان کا تہا اور شاہزادہ کلان نے بادشاہ سے مانگ لیا تہا اب پہر بادشاہ نے شاہزادے سے لیکر دار الانشا کی خدمت پر مقرر کیا اور رائے چندر بہان کا خطاب دیکر دوسرے ہندو منشیونپر امتیاز بخشا۔

سعد اللہ خان بہت نیکذات تہا امانت دیانت اور خداترسی سے کام کرتا تہا اوسنے اپنی وزارت مین رعایا پر کوئی نئی لاگ لگانیکی بدنامی نہین لی مقدمات اور محاسبات شاہی کو غریبون کے نقصان کا لحاظ رکہہ کر فیصل کرتا تہا پہلے ضابطہ تہا کہ عاملون کو زر تحصیل مین سے فیصدی پانچ روپیہ مجرا دیا جاتا تہا یعنی ایک سو روپیہ مین سے ۹۵ جمع ہوکر پانچ روپیہ اونکو چہوٹ ہوجاتے تہے سعد اللہ خان نے ایک دن کسی عامل کے مطالبہ کا تصفیہ کرتے ہوئے بنظر کفایت یہہ حکم جاری کرایا کہ عامل لوگ ایکسو پانچ روپیہ تحصیل کرکے سو روپیہ سرکار مین جمع

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

करें और ५) अपने हक़ के लेलेवें मगर फ़िर बहुत पछताया और मुद्दत तक अफ़सोस करकर के कहता था कि जिस दिन मैं ने इस ज़ुल्म का हुक्म लिखा मेरा हाथ क्यों नहीं सूखगया-

शाहज़ादा दाराशिकोह सादुल्ला ख़ां से नाराज़ रहा करता था १ दिन उसने बादशाह से अरज़ की कि सादुल्लाख़ां ने वैरान और कम हासिल परगने तो हमारी जागीर में दिये हैं और ज़ियादा पैदावार के खुद ले लिये हैं सादुल्लाख़ां ने यह सुनकर शाहज़ादे के वकील को बुलाया और जो परगने कि शाहज़ादे के आमिलों के ज़ुल्म से उजड़ गये थे वे तो अपनी जागीर में ले लिये और उनके बदले अपनी जागीर में से जो परगने कि वकील ने मांगे शाहज़ादे की तनख़्वाह में लिख दिये मगर दो एक साल पीछे ही वे भी पहिले परगनों से ज़ियादा वैरान होगये-

सादुल्लाख़ां के दस्तख़तों में से जो उसने मुस्तोफ़ी की बदरनवीसी (हरताल) की फ़रदों पर किये

کرین اور پانچ روپیہ اپنے حق کے لے لیں مگر پھر بہت پچھتایا اور مدت تک افسوس کر کر کہتا رہا کہ جسدن مینے اس بدعت کا حکم دیا میرا ہاتھ کیون نہین خشک ہوگیا۔

شاہزادہ داراشکوہ سعداللہ خان سے ناراض رہا کرتا تھا ایکدن اوس نے بادشاہ سے عرض کی کہ سعداللہ خان نے ویران اور کم حاصل پرگنہ تو ہماری جاگیر مین دئے ہین اور زیادہ پیداوار کے خود لے لیے ہین سعداللہ خان نے یہہ سنکر شاہزادہ کے وکیل کو بلایا اور جو پرگنہ کہ شاہزادہ کے عاملون کی بدعت سے ویران ہو گئے تھے وہ تو اپنی جاگیر مین لے لیے اور بالعوض اون کے جو پرگنہ کہ وکیل نے مانگے وہ اپنی جاگیر مین سے شاہزادہ کی جاگیر مین لکھدیے مگر دو ایک سال کے بعد ہی وہ بھی اگلے پرگنون سے زیادہ ویران ہو گئے۔

سعداللہ خان کے دستخطون مین سے جو اوس نے مستوفی کی بدرنویسی کی فردون پر کیے تھے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

دو دفعہ یہان لکھی جاتی ہین-
دفعہ اول تو یہہ کہ راجہ ٹوڈرمل نے
اکبر بادشاہ کے عہد مین یہہ ضابطہ مقرر
کیا تہا کہ عاملون اور کروڑیون کی فاضلات
اگر سو روپیہ سے کم ہو تو مستوفی حساب
مین مجرا نہ دین اور زیادہ ہو تو
دیدین مگر شاہ جہان بادشاہ
کے عہد مین مستوفی لوگ
شرارت سے عاملون کی
فاضلات مجرا دینے مین
مشکلین ڈالتے تھے جب ایسے
ایک محاسبہ کی فرد سعد اللہ
خان کے سامنے پیش ہوئی
تو اوسنے اوس پر یہہ دستخط
کیے کہ اے مستوفی ہندی
مثل مشہور ہے کہ لینا لینا
دینا دینا جب کہ ضابطہ سرکار کا
ایسا مقرر ہو چکا ہے کہ ایک
سو سے اوپر فاضل مجرا دی
جاوے تو تو کیون بدعت کرکے
بد عاقبتی کی دعا تیرے اور
میرے واسطے لینے کو راضی
ہوتا ہے دفعہ ۲ کروریان محال
خالصہ سے بدرنویسی کی
بازیافت کے

ये २ दफ़ें यहां लिखे जाते हैं-
१ राजा टोडरमल ने अकबर
बादशाह के राज में यह ज़ाबता
मुकर्रर किया था कि आमिलों
और किरोड़ियों की फ़ाज़िल
जो १००) से कम हो तो मुस्तोफ़ी
हिसाब में मुजरा न देवे और ज़ि
यादा होवे तो दे देवे मगर शाह
जहां के ज़माने में मस्तोफ़ी लो
ग बदनीयती से आमिलों की
फ़ाज़िल मुजरा देने में दिक़्क़तें
डालते थे जब ऐसे १ हिसाब की
फ़र्द सादुल्ला ख़ां के सामने पे
श हुई तो उसने यह दस्तख़त
किये कि ऐ मस्तोफ़ी हिंदी म
सल मशहूर है कि "लेना लेना
और देना देना" जब कि सरकार
का ज़ाबता मुक़र्रर हो चुका है कि
१००) से ऊपर फ़ाज़िल मुजरा दी
जावे तो तू क्यों नई लाग लगा क
र अपने और मेरे वास्ते आक़बत
ख़राब होने की बद दुआ लेता है-।
२ एक दिन ख़वास से के किरोड़ि
यों से बदर नवीसी (दफ़्तर वालों
की ख़ारज़ की हुई) की रक़म जराने के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वास्ते फ़र्द पेश हुई तो यह दस्तख़त किये कि इस बर्फ़ के मीनारे को धूप में रख देवें पिंगल जाने के बाद जो बाक़ी रहे वह नरा लेवें— १

दरबार का हाल।

आदिलख़ां की पेशकश नज़र से गुज़री उसमें १ बड़ा हाथी सोने की सजाई से था जिसकी क़ीमत ६०००० हुई बादशाह ने भी आदिलख़ां के वास्ते १ जड़ाऊ पेटी ३०००० रुपये की भेजी—

इसी तरह क़ुतुबुल्मुल्क की पेशकश ४ हाथी २ हथनी और कुछ जवाहर अब्दुलसमदख़ां की मारफ़त पेश हुई उसको १५००० इनायत हुवे और क़ुतुबुल्मुल्क के नाम मेहरबानी का फ़रमान लिखा गया—

कमाऊं के ज़मींदार बहादुरचंद ने ख़लीलुल्लाख़ां के साथ दरगाह में हाज़िर होकर २ हाथी और

واسطے ایکدن فرد پیش ہوئی تو یہ دستخط کیے کہ این منارۂ برف را پیش آفتاب بدارند ہرچہ بعد نمود آن باقی ماند باز یافت نمایند۔ ۱

دربار کا حال

عادل خان کی پیشکش بادشاہ کی نظر سے گذری اوسمین ایک بڑا ہاتھی سونے کی جھول کا تھا جس کی قیمت ساٹھ ہزار روپیہ ہوئی بادشاہ نے بھی عادل خان کے واسطے ایک جڑاؤ پیٹی ۳۰ ہزار روپیہ کی بھیجی

اسیطرح قطب الملک کی پیشکش سعہ چار ہاتھی دو ہتھنی اور کچھ جواہرات کے عبد الصمد خان کی معرفت پیش ہوئی اوسکو پندرہ ہزار روپیہ عنایت ہوئے اور قطب الملک کے نام فرمان عنایت آمیز لکھا گیا۔

کماؤن کے زمیندار بہادر چند نے خلیل اللہ خان کے وسیلہ سے درگاہ مین حاضر ہوکر دو ہاتھی اور

१ मुन्तख़िबउल्लुबाब में लिखा है कि सादुल्लाख़ां की इसी नेकनीयती से अब तक कि उसको मरे हुवे ७४ बरस गुज़र चुके हैं उसकी औलाद आसूदगी और नेकनामी से बसर हुई है नहीं तो दूसरे अमीरों का नाम निशान नहीं रहा है और जो किसी की औलाद है तो न खाने को मिलता है और न कुछ आबरू है—

۱ صاحب منتخب التواریخ لکھتا ہے کہ اسی نیک نیتی سعد اللہ خان سے اتبک کہ اوسکی وفات کو ۷۴ برس گذر چکے ہین اوس کی اولاد فراخ روزی و نیک نامی سے عمر بسر کر رہی ہے ورنہ اور امرا کا تو نام و نشان بھی نہین رہا اور جو کسیکی اولاد ہے تو وہ رزق اور آبرو سے محروم ہے۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

बाज़ी चीज़ें अपने मुल्क की नज़र की बादशाह ने १०० घोड़े तुर्की, कच्छी, जमधर, तलवार, ढाल मीनाकार, जड़ाऊ सरपेच, मोतियों की माला और कड़े वग़ैरा इनायत करके कमाऊं की विलायत भी उसको बख्शदी बल्कि २ परगने और भी कि जिनकी जमा १२ लाख दाम की थी इनायत किये और घर जाने की रुख़सत दी-

हयात ख़ां को जिसकी उमर ७० बरस से गुज़र गई थी लक़वे की बीमारी होजाने से गुसलख़ाने की दारोगाई नामदार ख़ां को इनायत हुई और हयात ख़ां के वास्ते २० लाख दाम हवेली आगरे से जागीर के तौर पर मुक़र्रर हुवे-

दखन का इन्तज़ाम.

बाला घाट का दीवान मुरशद कुली ख़ां दखन के चारों सूबों का मुस्तक़िल (पक्का) दीवान मुक़र्रर हुआ और उसको उस मुल्क के आबाद करने की बहुत ताकीद की गई-

दखन में ज़मीन की पैमायश और बीघे के ऊपर जमा बांध कर-

بعضی چیزین اپنے ملک کی نذر کین بادشاہ نے ایکسو گہوڑے ترکی کچہی جمدہر تلوار سپر مینا کار مع یراق و سرپیچ مرصع و مالاے مروارید و دست بند وغیرہ کے عطا کرکے کماؤن کی ولایت بہی بدستور سابق اوسکو بخش دی بلکہ دو پرگنے اور بہی کہ جن کی جمع بارہ لاکہہ دام کی تہی عنایت کیے اور وطن جانیکی رخصت دی-

حیات خان کو جس کی عمر ستر برس کی ہوگئی تہی بسبب لقوہ ہو جانے کے ۲۰ لاکہہ دام حویلی اکبر آباد سے بطور جاگیر کے مقرر ہوئے اور داروغگی غسلخانہ کی نامدار خان کو عنایت ہوئی-

انتظام دکہن

بالاگہاٹ کا دیوان مرشد قلیخان دکہن کے چارون صوبون کا مستقل دیوان مقرر ہوا اور اوس کو واسطے آبادی ملک مفتوحہ کے بہت کچہہ تاکید کی گئی-

دکہن مین زمین کی پیمایش اور بیگہہ کے اوپر جمع کی تشخیص کرکے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हासिल लेनेका दस्तूर नहीं था काश्तकार २ बैल और २ हलों से जोजिनस पैदा करताथा उसके ऊपर थोड़ासा हासिल ले लिया जाताथा कम ज़ियादा पैदावार होनेकी कुछ पूछ ताछ नहीं की जाती थी जब इस मुल्क में मुग़लों का अमल हुआ तो तरह २ की तकलीफ़ें रैयत को हुईं जिससे वह तबाह होकर निकल गई गांव और परगने सब उजड़ गये मुरशदकुलीखां तुर्क था तो भी मुत्सद्दीपेशा और समझदार था हिसाब किताब जानता था जिसतरह कि अकबर बादशाह के राजमें राजा तोडरमल्लने हिन्दुस्थान के इंतज़ाम का दस्तूर उल अमल (कानून) बनायाथा उसी तरह इसने भी रैयत को जगह २ से बुलाकर मुल्क में ईमानदार अमीन (तहसीलदार) भेजे पहिले ज़मीन मापकर रक़बा निकाला और खेती के काबिल ज़मीन को नाक़ाबिल से जुदा करके रैयत को खेतीबाड़ी पर लगाया जहां मुक़द्दम (पटेल)

حاصل لینے کا دستور نہ تھا کاشتکار ایک ہل اور دو بیلوں سے جو جنس پیدا کرتا تھا اوسکے اوپر تھوڑا سا حاصل لے لیا جاتا تھا کم زیادہ غلہ پیدا ہونے کی کچھ باز پرس نہیں کیجاتی تھی - جب اوس ملک میں مغلوں کا عمل ہوا تو طرح طرح کی آفتوں سے رعایا اوجڑ گئی اور گانو و پرگنہ سب ویران ہو گئے مرشد قلیخاں اگرچہ ترک تھا تو بھی متصدی پیشہ سیاق دان اور سمجھدار تھا جس طرح کہ اکبر بادشاہ کے وقت میں راجہ ٹوڈر مل نے ہندوستان کے انتظام کا دستور العمل بنایا تھا اسی طرح اسنے بھی رعایا کو جا بجا سے بلا کر ملک میں ایماندار امین مقرر کئے پہلے زمین ماپ کر اوس کا رقبہ نکالا اور قابل زراعت اراضی کو ناقابل زراعت سے جدا کرکے رعایا کو کھیتی باڑی پر لگایا جہاں مقدم

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न थे वहां लायक आदमियों को मुक़	نتھے وہاں لایق آدمیوں کو
द्दम बनाया और उनको बैलों वग़ैरे	مقدم کیا - اور اونکو بیلوں
के वास्ते तक़ावी (पेशगी रुपया) देकर	وغیرہ کے واسطے تقاوی دیکر
२ उसकी खेतियां करलीं और जमा	قسطین مقرر کرلیں اور تشخیص
मुक़र्रर करने के वास्ते ३ तरीक़े जारी किये	جمع کے تین طریقہ جاری کئے
१ सरबस्ता (मुक़ाता) जो क़दीम ज़माने में जारी था	اول سربستہ جو قدیم زمانہ
	میں مروج تھا
२ बटाई या हासिल	دویم بٹائی یا حاصل
३ बीघोड़ी या ज़मांबंदी	سویم جمعبندی
बटाई में बारानी ज़मीन का आ	بٹائی میں بارانی زمین کا
धा और चाही (कूवे की ज़मीन) का	آدھا - اور چاہی کا تیسرا حصہ
तीसरा बांटा मुक़र्रर किया मगर अं	مقرر کیا مگر انگور نیشکر کیلہ
गूर सांठा केला ख़शख़श हल्दी	خشخاش - ہلدی اور زیرہ وغیرہ
और ज़ीरे वग़ैरा का हिस्सा चौथे से	کا چوتھے حصہ سے نویں حصہ
नवें तक रक्खा क्यों कि ये चीज़ें बहु	تک حاصل رکھا کیونکہ یہ چیزیں
त ख़र्च से ज़ियादा अरसे में पैदा	بہت خرچ سے زیادہ مدت میں
होती थीं और नहर से जो पैदावार	پیدا ہوتی ہیں - اور نہر سے جو پیدا
होती उसका हिस्सा जैसा मुनासि	وار ہو اسکا حصہ جیسا موقع ہو ویسا لیا جاتا تھا -
ब होता लिया जाता था -	
बीघोड़ी के वास्ते ख़ुद मुरशद -	جمعبندی کے واسطے مرشد قلیخاں
क़ुली ख़ां जरीब पकड़ कर खेती	خود اپنے ہاتھ سے جریب پکڑ کر
को अपने हाथ से नापता था औ	زراعت کی پیمایش کرتا تھا جس
र बीघे पीछे जमा मुक़र्रर करता	میں کوئی غبن نہیں کرسکتا تھا او
था जिसमें कोई कुछ ग़बन नहीं	پھر خود ہی جمع فی بیگہ مقرر کرتا تھا
कर सकता था इस इन्तज़ाम से	اوسکی اس جزرسی سے دکن کی آبادی
आबादी और आमदनी दिन दिन	اور آمدنی روز بروز

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बढ़तीजातीथी-

पठानोंका ग़दर.

अज़ीज़खां बदख्शी जागीरदार इलाक़ पिशावर को वहांके फ़सादी आदमियोंने १४ मनसबदारों और ३४ उसके नोकरों समेत मारडाला था इसलिये बादशाहने पिशावरके हाकिम बहादुरखां को वहांके फ़सादियों को सज़ा देनेका हुक्म लिखा उसने २००० सवार भेजे फ़सादियोंने भी चार पांच महीने तक मुक़ाबिला किया बहुतसे बादशाही आदमी मारेगये ५०० फ़सादी भी क़तल हुवे बाज़े पकड़े गये उनके घर जला दिये गये बकरियां और ऊंट बहुतसे लूटमें आये-

गोलकुंडेकी मोहिम.

कुतुबुल्मुल्कने बेसमझीसे मीरजुमलाके बेटे मोहम्मद अमीनको उसके आदमियों समेत कैद कर दिया और घरबार भी उसका ज़ब्त कर लिया था इसलिये बादशाहने शाहज़ादे मोहम्मद औरंगज़ेब बहादुर को लिखा कि खुद

بڑھتی جاتی تھی۔

مفسدہ افغانان

عزیز خان بدخشی جاگیردار علاقہ پشاور کو وہاں کے مفسد افغانوں نے پندرہ منصب داروں اور ۳۴۰ اوسکے نوکروں کو مارڈالا اسلئے بادشاہ نے بہادر خاں ناظم پشاور کو مفسدوں کی سزادہی کا حکم لکھا اوسنے دو ہزار سوار بھیجے مفسدین نے بھی چار پانچ ماہ تک مقابلہ کیا۔ بہت سے بادشاہی بندے مارے گئے پانچسو مفسد قتل ہوئے۔ بعضے پکڑے گئے اور اونکے گھر جلا دیئے گئے بہت سی بکریاں اور اونٹ لوٹ میں آئے۔

گولکنڈہ پر مہم

قطب الملک نے کوتہ اندیشی سے میر جملہ کے بیٹے محمد امین کو معہ متعلقوں کے قید کر دیا اور اوس کا گھربار بھی ضبط کر لیا تھا اِس لیے شاہزادہ اورنگزیب بہادر کو حکم ہوا کہ خود

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

गोलकुंडे जाकर जैसे बने मोहम्म
अमीन को क़ैद से छुड़ावे मा
लवे के सूबेदार शायस्तेखां इफ़
तख़ार खां और नुसरतख़ां वग़ैरा को
भी हुक्म पहुंचा कि जलदी शाह
ज़ादे के पास हाज़िर हो जावें-

औरंगज़ेब ने अपने बेटे मोह
म्मद सुलतान को शाहज़ादे शुजा
अ की बेटी के साथ शादी करने
के बहाने से पोस सुदि ९ को आप
ने बहुत से आदमियों और बादशा
ही के साथ रवाने किया और पीछे
से आप भी माह सुदि ५ को शिका
र का बहाना करके रवाने हुआ-

जब सुलतान मोहम्मद गोलकुं
डे के पास पहुंचा तो अबदुल्लाकु
तबशाह मिज़मानी की तैयारी
करने लगा मगर जब सुना कि मि
ज़मान तो लड़ाई के सामान से
आया है तो सिफ़ारशी की अर
ज़ी अज़ीज़ बेग गुर्ज़बरदार के
हाथ भेजकर पीछे से मोहम्मद अ
मीन को भी उसकी मां के साथ र
वाने किया वह हैदराबाद से १२
कोस पर सुलतान मोहम्मद के

گولکنڈہ جاکر محمد امین کو خواہ
مخواہ قید سے چھوڑا دے
مالوہ کے صوبہ دار شائستہ خان
اور افتخار خاں و نصرت خاں
وغیرہ امرا کو بھی حکم پہنچا
کہ جلد شاہزادہ کے پاس
حاضر ہو جاویں۔

اورنگ زیب نے اپنے بیٹے
محمد سلطان کو بہت سے بادشاہی
ملازموں اور اپنے نوکروں کے
ساتھ ۲۰ ربیع الاول کو اوسطرف
روانہ کیا اور ۲۰ ربیع الثانی کو
خود بھی شکار کے بہانہ سے روانہ
ہوا۔

جب سلطان محمد گولکنڈہ کے
پاس پہنچا تو عبداللہ قطب شاہ
ضیافت کا سامان کرنے لگا۔ مگر
جب یہ سنا کہ مہمان تو لڑائی
کے سامان سے آیا ہے تو عذر
خواہی کی عرضی عزیز بیگ
گرز بردار کے ہاتھ بھیجکر
پیچھے سے محمد امین کو بھی
اوسکی والدہ کے روانہ کردیا
چنانچہ وہ حیدرآباد سے بارہ ۱۲
کوس پر سلطان محمد کے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पास पहुंचा उसने और ज़ियादा
शिकायत कुतबुल्मुल्क की की
और कुतबुल्मुल्क ने माल अ-
सबाब जो उसका न भेजा था इ-
सलिये सुलतान मोहम्मद हैद-
राबाद को बढ़ा जो गोलकुंडे से ३
कोस इधर मोहम्मद कुली कुत-
बशाह का बसाया हुआ है और
बादशाही फ़ौजने कुतबुल्मुल्क
का मुल्क भी लूटना शुरू किया-

कुतबुल्मुल्क यह सुनकर
माह सुदि ७ को हैदराबाद से गो-
लकुंडे में भाग गया और जितना
ख़ज़ाना व जवाहरात साथ ले जा
सका ले गया और बाक़ी माल औ-
र ब्योपारियों के असबाब की हि-
फ़ाज़त के लिये मूसा महलदार
और तोपख़ची बेग को पांच छः
हज़ार सवार और बन्दूक़से पया-
दों से छोड़ गया-

दूसरे दिन सुलतान मोहम्मद
हैदराबाद पहुंच कर हुसेनसागर
तलाव पर उतरा कुतबुल्मुल्क ने
मोहम्मद नासिर के हाथ १ संदूक़
जवाहरात से भरा हुआ नज़र के

پاس پہونچا۔ اوسنے اور زیادہ
شکایت قطب الملک کی۔ کی اور
قطب الملک نے اوسکا مال
اسباب بھی جو لے لیا تھا نہیں
بھیجا تھا اسواسطے سلطان محمد
حیدرآباد کو جو گولکنڈہ سے
۳ کوس اس طرف محمد قلی قطب شاہ
کا آباد کیا ہوا ہے روانہ
ہوا۔ اور بادشاہی فوج نے
قطب الملک کا ملک بھی لوٹنا شروع کیا

قطب الملک یہ خبر سُنکر
۵ ربیع الثانی کو حیدرآباد
سے گولکنڈہ کے قلعہ میں بھاگ
گیا اور جسقدر نقد و جواہر ساتھ
لیجا سکا لے گیا۔ باقی مال اور
بیوپاریوں کی حفاظت کیواسطے
موسی جملہ دار۔ اور توپچی بیگ
کو معہ پانچ چھہ ہزار سوار
اور دو چند پیادوں کے مقرر کر گیا

دوسرے دن سلطان محمد
حیدرآباد پہونچکر حسین ساگر تالاب
کے اوپر اوترا اوسیوقت قطب الملک
کے معتمد محمد ناصر نے پہونچکر
ایک صندوقچہ جواہرات سے
بھرا ہوا نذر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के वास्ते भेजा मगर उसके पहुंचने
से पहिले बादशाही आदमी शहर
में घुसने लगे तो कुतबुल्मुल्क के
आदमियों ने रोका इसपर लड़ाई
हुई शाहज़ादे ने हुसेन सागर से
जहां वह ठहरा हुआ था मोहम्मद
बेग को कुछ आदमियों से लूट
बंद करने के वास्ते भेजा और मो
हम्मद नासिर को जो इसके पीछे
पहुंचा था क़ैद कर लिया मगर
शहर मोहम्मद बेग के पहुंचने से
पहिले लुट गया था और औरंग
ज़ेब का ओहदेदार जो गोलकुंडे में
रहता था मूसा के हाथी और दूस
रा असबाब लेकर आया और १
संदूक चा जवाहर का २ हाथी औ
र २ घोड़े सोने के साजों समेत
अपनी तरफ़ से नज़र किये—

दूसरे दिन शाहज़ादे मोहम्मद
सुल्तान ने शहर में अमलदार
के हादी दाद खां वगैरा को हुक्म
दिया कि शहर की इमारतों को
जो तमाम लकड़ी की हैं लशक
रियों की लूट मार और आग से
बचावें और कुतबुल्मुल्क जो माल

کیا۔ مگر اوس کے پہونچنے سے
پہلے بادشاہی آدمی شہر میں
گھسنے لگے تو قطب الملک کے
آدمیوں نے روکا اسپر
لڑائی شروع ہوگئی بادشاہزادے
حسین ساگر سے جہاں وہ ٹھہرا ہوا
تھا محمد بیگ کو کچھ آدمیوں سے
لوٹ بند کرنے کے واسطے
بھیجا اور محمد ناصر کو جو اسکے
بعد پہونچا تھا قید کرلیا
مگر شہر محمد بیگ کے
پہونچنے سے پہلے لٹ گیا تھا
اور شاہزادہ اورنگ زیب
کا حاجب جو گولکنڈہ میں
رہتا تھا موسیٰ جملہ دار کے
ہاتھی اور دوسرا اسباب
لیکر آیا اور ایک صندوقچہ
جواہر کا مع دو ہاتھی اور دو
اسپ طلائی اپنی طرف سے نذر کیا دوسرے
دن محمد سلطان نے حیدرآباد میں عمل کرکے
ہادی داد خاں وغیرہ کو حکم دیا کہ شہر کی
عمارتوں کو جو تمام لکڑی کی ہیں
لشکریوں کی لوٹ مار اور آتش
زنی سے محفوظ رکھیں اور
قطب الملک جو مال

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

असबाब अपनी हवेली में छोड़ गया है उसकी हिफ़ाज़त रखे—

इसी दिन क़ुतबुल्मुल्क के वकील हकीम निज़ामुद्दीन अहमद ने हाज़िर होकर जवाहरात और जड़ाऊ चीज़ों की २ संदूकें २ हाथी और ४ घोड़े जो सोने चांदी के गहनों से सजे हुवे थे सुलतान मोहम्मद के नज़र किये ११ हाथी और ६० घोड़े मीर जुमले के जो कुछ दूसरे असबाब समेत लाकर दिये—

क़ुतबुल्मुल्क ज़ाहिर में तो इस तरह शिष्टाचारी करता था और अंदर २ लड़ाई की तैयारी करके आदिलखां और दखन के ज़मीदारों के पास मदद मगाने के वास्ते ख़त भेजता था शाहज़ादा औरंगज़ेब यह सुनकर १६ दिन में हैदराबाद पहुंचा मगर ठहरा नहीं सीधा गोलकुंडे को गया उसको देखते ही क़ुतबुल्मुल्क की फ़ौज ने भी लड़ाई की तयारी की—

औरंगज़ेब ने सुलतान मोहम्मद को भी अपनी फ़ौज समेत सवार होने के वास्ते कह लाया उस दिन शाम तक लड़ाई हुई—

اسباب اپنی حویلی میں چھوڑ گیا ہے اوس کی حفاظت رکھے

اوسیدن قطب الملک کے وکیل حکیم نظام الدین احمد نے حاضر ہوکر دو صندوقچہ جواہرات اور مرصع آلات کے مع دو فیل اور چار گھوڑے جو سونہری روپہلی ساز و سامان سے آراستہ تھے سلطان محمد کی نظر سے گذرانے۔ اور گیارہ ہاتھی اور ساٹھ گھوڑے میر جملہ کے بھی معہ کسیقدر دوسرے اسباب کے لاکر پیش کئے۔

قطب الملک اسطرح تو بظاہر اطاعت اور مدارا کرتا تھا مگر درپردہ سامان جنگ کی تیاری میں مصروف ہوکر عادل خاں اور دیگر سرداران دکن کے نام متواتر خطوط واسطے طلب کمک کے بھیجتا تھا شاہزادہ اورنگ زیب یہ خبر سنکر ۱۶ دن میں حیدرآباد پہونچا اور وہاں متوقف نہوکر قلعہ گولکنڈہ کو روانہ ہوا۔ اوسکو دیکھکر قطب الملک کی فوج نے بھی لڑائی کی تیاری کی۔

اورنگ زیب نے سلطان محمد کو بھی معہ اوسکی فوج کے سوار ہونیکے واسطے کہلایا اور اوس دن شام تک لڑائی ہوئی۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

... by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरे दिन शाहज़ादे ने क़िले को घेर लिया और मिरज़ाख़ां व केसरसिंघ वग़ैरा ने सुरंगें लगाकर क़ुतबुल्मुल्क को इस क़दर तंग किया कि उसने फागण बदि १० को ४ संदूकचे जवाहर और जड़ाऊ चीजों से भरे हुवे मीर फ़सीह के हाथ भेजकर अरज़ कराई कि मैं अपनी मां को कसूर माफ़ कराने के वास्ते नज़राने समेत भेजता हूं मगर शाहज़ादे ने ख़फ़गी से मीर फ़सीह को रूबरू नहीं बुलाया- और जवाहरात भी नहीं लिया लेकिन अपनी फ़ौज को गोलंदाज़ी से मने कर दिया-

क़ुतबुल्मुल्क ने जो शाहज़ादे का यह रूखापन मालूम किया तो अपने बहुत से आदमियों को बिरगीगरी के तरीक़े से जंग करने को भेजा जो दखनियों का पेशा था उनका लड़ने को आना कुछ देर लड़कर भाग जाना और फिर आकर लड़ना बिरगीगरी कहलाता था वे लोग मिरज़ाखां के मोरचे पर आये इधर से-

دوسرے دن شاہزادہ نے قلعہ کو گھیر لیا مرزا خاں اور کیسر سنگھ وغیرہ نے سرنگیں لگا کر قطب الملک کو اسقدر تنگ کیا کہ اوس نے ۲۲- ربیع الثانی کو چار صندوقچہ جواہرات اور مرصع آلات وغیرہ کے میر فصیح کے ہاتھ بھیجکر عرض کرائی کہ میں اپنی ماں کو قصور معاف کرانے کے واسطے معہ پیشکش کے بھیجتا ہوں مگر شاہزادہ نے خفگی سے میر فصیح کو بار نہ دیا- اور صندوقچہ کے لینے میں بھی تامل کیا- مگر اپنی فوج کو گولہ اندازی سے منع کر دیا

قطب الملک نے جو شاہزادہ کی طرف سے یہ کم توجہی معلوم کی تو اپنے بہت سے آدمیوں کو برگی گری کے طریقہ سے جنگ کرنے کو بھیجا جو دکھنیوں کا پیشہ تھا اونکا لڑنے کو آنا اور کچھہ دیر لڑکر بھاگ جانا اور پھر آکر لڑنا برگی گری کھلاتا تھا- وہ لوگ مرزا خاں کے مورچہ پر آئے ادھر سے بھی ....

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मालूजी दखनी फ़ौज लेकर मदद को गया लड़ाई में दोनों तरफ़ के आदमी मारे गये और १ हाथी बादशाही लश्कर में पकड़ा आया।	مالوجی دکھنی فوج لیکر مدد کے واسطے گیا لڑائی میں دونو طرف کے آدمی مارے گئے اور ایک ہاتھی بادشاہی لشکر میں پکڑا آیا-
शाहज़ादे ने मीरजुमला के लाने को आदमी भेजे जो करनाटक में था इतने में ७।८ हज़ार सवार और २०००० बरकंदाज करनाटकी लड़ने को आये औरंगज़ेब उनके मुकाबिले को खुद गया- दखनी १ बड़ी भारी लड़ाई लड़ कर पीछे को हटे दूसरे दिन चांदा का ज़मींदार मदद के वास्ते हाज़िर हुआ-	شاہزادے نے میر جملہ کے لانے کو آدمی بھیجے جو کرناٹک میں تھا اس عرصہ میں سات آٹھ ہزار برقنداز کرناٹکی لڑنے کو آئے شاہزادہ اونکے مقابلہ پر خود گیا دکھنی بعد جنگ سخت کے پس پا ہوئے دوسرے دن زمیندار چاندہ مدد کیواسطے حاضر ہوا-
कुतबुल्मुल्क का जमाई मिरज़ा अहमद भी सुलतान मोहमद के पास कसूर माफ़ कराने के वास्ते हाज़िर होगया-	قطب الملک کا داماد مرزا احمد بھی سلطان محمد کے پاس واسطے معافی قصورات کے حاضر ہوا-
शायस्ताखां इफ़तखारखां और नसीरखां भी पहुंच कर शाहज़ादे के शामिल हुवे और अब नये सिरे से मोरचे लगाये गये-	شایستہ خاں افتخار خاں اور نصیر خاں بھی پہنچکر بادشاہی لشکر کے شامل ہوئے اب پھر مورچے از سرنو لگائے گئے.
फागण सुदि १० को बादशाह का फ़रमान खिलअत और जड़ाऊ	۹ جمادی الاول کو بادشاہ کا فرمان مع خلعت اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जमधर समेत शाहज़ादे के पास पहुंचा मोहम्मद सुलतान के वास्ते ७ हज़ारी ज़ात और २००० सवार का मनसब आया दूसरा फ़रमान कुतबुल्मुल्क की अरज़ी के जवाब में उसके क़सूरों की माफ़ी का था मगर शाहज़ादे ने वह फ़रमान कुतबुल्मुल्क को नहीं भेजा और अपने पास पोशीदा रखकर फिर कुतबुल्मुल्क को तंग किया तब उसने लाचार होकर मीर अहमद और मीर फ़सीह को बहुत सी पेशकश देकर भेजा और पिछले बरसों की बाकी पेशकश भेजने का इकरार करके क़सूरों की माफ़ी चाही और मोहम्मद सुलतान के वास्ते अपनी बेटी की सगाई कबूल करने की अरज़ कराई दूसरे दिन बाकी पेशकश, मोहम्मद अमीन का माल असबाब, १० हाथी, और सोने चांदी के बरतन मीरजुमले के, और मोहम्मद सुलतान के मनसब की मुबारक

جمدھر مرصع کے شاہزادہ کے پاس پوہنچا - اور محمد سلطان کے واسطے منصب سات ہزاری ذات اور دو ہزار سوار کا آیا دوسرا فرمان قطب الملک کی عرضی کے جواب میں معافی قصورات کا تھا مگر شاہزادہ نے وہ فرمان پوشیدہ رکھکر قطب الملک کے پاس نہ بھیجا اور صورتے بڑھا کر اوسکو پھر تنگ کیا جس سے اوسنے لاچار ہوکر میر احمد اور میر فصیح کو معہ بہت سے پیشکش کے بھیجا اور عفو جرایم کی التماس کی علاوہ اسکے بقایاے پیشکش سنوات سابق یعنی لغایت سنہ جلوسی بھیجنے کا اقرار کرکے اپنی لڑکی کی نسبت کا پیغام سلطان محمد کے ساتھ ڈالا - بلکہ دوسرے دن بقایاے پیشکش معہ مال و اسباب محمد امین اور دس ہاتھی و سونے چاندی کے برتن ازاں میر جملہ وغیرہ کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज़ादी की अरज़ी भेजी २ हाथी और
२४ घोड़े भी जो चांदी सोने के ग
हनों से सजे हुवे थे भेजे औरंगज़ेब के बे
टे मोहम्मद सुल्तान के वास्ते=
भेजे और दिलजमई का परवा
ना मंगवाया जो शाहज़ादे ने मो
हम्मद सुल्तान और शायस्ता
खां की तरफ़ से लिखा भेजा उ
सके पहुंचते ही क़ुतबुल्मुल्क ने
अपनी मां को क़सूरों की माफ़ी
के वास्ते भेजा शाहज़ादे की तरफ़
से मीर अबुलफ़ज़ल पेशवाई के
अके लाया और शायस्ते खां के डेरे
में ठहराई दूसरे दिन वह मोहम्मद
सुल्तान के डेरे में जाकर बेगमों
की मारफ़त सुल्तान से मिली
२ घोड़े २ हाथी जड़ाऊ साज सा
मान से नज़र किये फिर शाहज़ा
दे के हुज़ूर में पहुंच कर १००० मोह
रें ५ घोड़े जड़ाऊ ज़ीन के ५ हाथी
चांदी की सजाई के नज़र में दरब

مبارکباد منصب سلطان
محمد کے بجلد استمالت نامہ
طلب کیا جسکو شاہزادہ محمد
اورنگ زیب نے خود تو نہیں
لکھا محمد سلطان اور شایستہ
خاں کیطرفسے لکھا بھیجا۔
قطب الملک نے استمالت نامہ کے
پہونچتے ہی۔ اپنی ماں کو واسطے
معافی جرایم کے شاہزادہ کیخدمت
میں روانہ کیا جوں ہی اسکے آنے کی خبر
پہونچی شاہزادہ نے میر ابو الفضل کو
پیشوائی کیواسطے بھیجا اور شایستہ
خاں کے ڈیرہ میں ٹھہرنے کا حکم دیا
دوسرے دن قطب الملک کی ماں
محمد سلطان کے ڈیرہ میں جاکر
بیگموں کی معرفت محمد سلطان سے
ملی۔ دو گھوڑے دو ہاتھی معہ ساز
وسامان مرصع و مطلا کے نذر کئے
پھر شاہزادہ کی خدمت میں حاضر
ہوکر ایک ہزار مہر پانچ گھوڑے پانچ
ہاتھی معہ ساز طلا و نقرہ کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

लाये जो क़बूल हुवे और कुतबुल्मु
ल्क के [illegible] क़सूर १ किरोड़ की पेश
कशमय पिछले बाक़ी के २ खंदि
यों में दाख़िल करने के इक़रार पर
बख़्शे गये और शादी की तारीख़ भी
बहुत सी दलीलों के बाद मुक़र्रर हुई
१ लाख रुपये मीरजुमला की
पेशकश से भी क़बूल हुवे जो उस
ने करनाटक से भेजी थी-

कुतबुल्मुल्क की मां जब ये स-
ब बातें तय कर के वापस गई तो द
खनियों से और बादशाही आद
मियों से जो घास चारे के वास्ते जंग
ल में गये थे लड़ाई हो पड़ी बादशा
ही लशकर भी मदद को जा पहुंचा
२ दिन तक लड़ाई होती रही जिसमें
बहुत से आदमी दोनों तरफ़ के मा
रे गये-

चेतसुदि १४ को मीरजुमला
ने शाहज़ादे का डोढ़ीदार मीरअब्
दुल्लतीफ़ के साथ करनाटक से

پیش کئے اور اپنے بیٹے کے گناہ
بخشنے اور اوسکی لڑکی کو محمد سلطان
کے ازدواج میں قبول کرنے کے
واسطے عرض کی جسکو شاہزادہ اورنگزیب
نے بہت سی رد و بدل کے بعد
بشرط داخل کرنے ایک کڑوڑ روپیہ کے
منظور کرکے ایک لاکھ روپیہ میر جملہ کی
پیشکش سے بھی قبول فرمائے جو اوسنے
کرناٹک سے بھیجے تھے -

قطب الملک کی ماں جب یہ
سب باتیں طے کرکے واپس
گئی تو دکھنیوں سے اور بادشاہی
آدمیوں سے جو گھاس چارے کے
واسطے جنگل میں گئے تھے لڑائی
ہو پڑی بادشاہی لشکر بھی مدد
کو جا پہونچا دو دن تک لڑائی
ہوتی رہی جس میں بہت سے آدمی
دونو طرف کے مارے گئے -

۱۴ جمادی الثانی کو شاہزادہ
کا حاجب میر عبداللطیف کے
ساتھ میر جملہ نے کرناٹک سے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुसेन सागर तलाव पर शाहज़ादे की ख़िदमत में हाज़िर होकर ३००० सोने की इब्राहीमी (मोहर) और दूसरी चीज़ें नज़र कीं शाहज़ादे ने उसको ख़िलअत जड़ाऊ जीगा (सरपेच) जड़ाऊ जमधर २ घोड़े और २ हाथी जिनके साज चांदी सोने के थे इनायत करके बैठने का हुक्म फ़रमाया और इकंत में कुछ सलाह करके बिदा किया-

दूसरे दिन क़िले से मोरचे उठा लिये गये और शादी का महूर्त मुक़र्रर होकर काज़ी और मीर अदल निकाह के वास्ते क़िले में गये उनके साथ शाहज़ादे ने क़ुतबुलमुल्क के वास्ते ख़िलअत जड़ाऊ जीगा (सरपेच) मोतियों की माला और २ हाथी सोने चांदी के साज और ज़री की झूल के भेजे-

क़ुतबुलमुल्क क़िले के दरवाज़े तक ख़िलअत लेने को आया और

حاضر آکر تالاب حسین ساگر پر شاہزادہ سے سلام کیا اور تین ہزار ابراہیمی طلا (مہر) و دیگر تحائف نذر کیے شاہزادہ نے اوسکو خلعت جیغہ جمدہر مرصع دو گھوڑے دو ہاتھی معہ ساز طلا و نقرہ کے عنایت کرکے بیٹھنے کا حکم دیا- اور پھر خلوت میں کچھ مشورہ کرکے رخصت کیا اور بادشاہی عنایات کا امیدوار کرکے اوسکی جاگیر بحال کردی

دوسرے دن قلعہ سے مورچے اوٹھا لیے گئے اور شادی کی ساعت مقرر ہوکر قاضی- میر عدل شیخ نظام اور محمد طاہر نکاح کے واسطے قلعہ میں گئے شاہزادہ نے اونکے ہاتھ قطب الملک کے واسطے خلعت جیغہ مرصع موتیونکی مالا اور دو ہاتھی معہ ساز و سامان طلا و نقرہ و جھول زربفت کی بھیجی- قطب الملک قلعہ کے دروازہ تک خلعت لینے کو آیا- اور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और इन लोगों को वहीं १ हवेली में ठहरा गया—

बैसाख बदि ६ को सुबह के वक़्त महूर्त पर निकाह पढ़ा गया क़ुतबुल्मुल्क ने १४ लाख रुपये के जवाहरात वग़ैरा और रामगढ़ का इल्लाक़ा जो बराड़ और बिदुर की सरहद पर है अपनी लड़की को देहज़ में दिया—

बैसाख बदि १२ को मीर शमसुद्दीन और मीर ताहर वग़ैरा क़ुतबुल्मुल्क की बेटी का डोला बड़े मान सनमान से लाये १० लाख रुपये जो देहज़ में रोकड़ आये थे वह शाहज़ादे ने मोहम्मद सुलतान को इनायत कर दिये

बैसाख सुदि २ को शाहज़ादा औरंगज़ेब और जुमला के मकान पर गया उसने १ हीरा बिना तराशा हुआ २ लाख ९ पन्ने ६० मोती १ नीलम ५ हाथी ५ घोड़े जिनके साज सोने

ان لوگون کو وہیں ایک حویلی میں ٹھہرا گیا۔

۱۸ جمادی الثانی کو وقت صبح ساعت مختار پر عقد نکاح ہو گیا۔ قطب الملک نے ۱۴ لاکھہ روپیہ کے جواہرات وغیرہ معہ علاقہ رام گڈہ کے جو صوبہ بدر کی سرحد پر تھا جہیز میں اپنی لڑکی کو دیئے۔

۲۵ جمادی الثانی کو میر طاہر اور میر شمس الدین وغیرہ قطب الملک کی بیٹی کو بہت اعزاز اور اکرام کے ساتھہ لائے دس لاکھہ روپیہ جو بطور جہیز کے آیا تھا شاہزادہ نے محمد سلطان کو عطا کر دیا

سلخ جمادی الثانی کو شاہزادہ اورنگ زیب نے میر جملہ کے مکان پر تشریف فرما ہو کر اسکی نذر قبول فرمائی۔ جلس میں ایک الماس ناتراشیدہ ساٹھہ موتی نو زمرد ایک نیلم پانچ ہاتھی اور پانچ گھوڑے معہ ساز و سامان طلائی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चांदी के थे शाहज़ादे के नज़र कि-
ये और इसके सिवाय शाहज़ादे
के बेटे मोहम्मद मोअज़्ज़म और
मोहम्मद सुल्तान को भी बहु-
त कुछ दिया-

बैसाख सुदि १० को शाहज़ादे
ने गोलकुंडे से औरंगाबाद की
तरफ़ कूच करके शायस्ता खां व
ग़ैरा अमीरों को बाद इनायत क
रने ख़िलअत जवाहर और हाथी
घोड़ों के अपनी अपनी जगह जा
ने की रुख़सत दी-

मीरजुमला के वास्ते बादशा
ह का फ़रमान मअ ख़िलअत ख़ा
सा ज़ड़ाऊ जमधर फूल कटारा
नक्कारा निशान मोअज़्ज़म ख़ां-
का ख़िताब और हुज़ूर में बुला-
ने का हुक्म गुर्ज़बरदार के हाथ
पहुंचा वह शाहज़ादे के साथ था
शाहज़ादे ने उसको वे सब चीज़ें
देकर जेठ बदि ७ को क़ाज़ी आरफ़

و نقارہ کے تھے اسکے علاوہ شاہزادہ
کے بیٹے محمد سلطان - اور محمد معظم کو
بھی بہت کچھ نذرانہ دیا -

۷ - رجب کو شاہزادہ اورنگ زیب نے
گولکنڈہ سے اورنگ آباد کی طرف
کوچ کرکے شائستہ خان وغیرہ
امرا کو بعد عطائے خلاع فاخرہ و جواہرات
و اسپ و فیل کے اپنے اپنے
علاقہ میں جانے کی اجازت دی

میر جملہ کے واسطے
بادشاہ کا فرمان معہ
خلعت خاصہ جمدھر مرصع
پھول کٹارہ نقارہ نشان
و خطاب معظم خاں کے ہمدست
گرز بردار آگیا تھا اور اوسکی
حضور میں طلبی ہوئی تھی اسلئے
شاہزادہ نے وہ سب چیزیں اوسکو
دیکر ۱۹ ماہ رجب کو
قاضی عارف - . .

. . . .

. . . .

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

के साथ हुज़ूर में रवाने किया-

शाहज़ादा औरंगज़ेब कंधार और उदगिर के किलों को देखता हुआ जेठ सुद ५ को औरंगाबाद में पहुंचा-

जब यह खबर बादशाह को पहुंची तो बादशाह ने उसके और उसके साथ के अकसर अमीरों के वास्ते खिलअत और इनाम भेजा और बाज़ों के मनसब भी बढ़ाये जैसे शायस्तेखां का मनसब असल और इज़ाफ़े से ६ हज़ारी ५००० सवारों का होगया और उसको खान जहां बहादुर का खिताब भी मिला-

कुतबुल्मुल्क की अरज़ी बादशाह के हज़ूर में पहुंची जिसमें उसने अपनी गरीबी और परेशानी का हाल लिखा था बादशाह ने २० लाख रुपये बाबत तफ़ावत निरख वगैरा के माफ़ फ़रमाये-

کے ہمراہ بارگاہی بادشاہی میں روانہ کیا۔

شاہزادہ اورنگ زیب قندہار اور ادگیر کے قلعوں کو دیکھتا ہوا ۱۱ شعبان کو اورنگ آباد میں پونہچا۔

جب یہ خبر بادشاہ کو ملی تو اوسکے اور اکثر امرا کے واسطے خلعت اور انعام بہیجے گئے اور منصبوں میں اضافہ ہوا شایستہ خاں کا منصب اصل اور اضافہ سے ۶ ہزاری پانچہزار سوار کا ہوگیا اور اوسکو خان جہان بہادر کا خطاب بھی ملا۔

قطب الملک کی عرضی باظہار افلاس و غربت و پریشانی بادشاہ کے ملاحظہ میں پہونچی جس پر بیس ۲۰ لاکھ روپیہ کا مطالبہ بابت تفاوت نرخ وغیرہ کے اوسکو معاف فرمایا گیا۔

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बांधोंगढ का ज़मीदार अनोप सिंघ इलाहाबाद के सूबेदार के साथ बादशाह के हज़ूर में हाज़िर हूआ और बादशाह ने उसको ३ हज़ारी ज़ात और २००० सवार का मनसब इनायत फ़रमाया—

बادशाह का इनसाफ़

मोहम्मद अमीन जो सूरत बंदर का मुत्सद्दी था रैयत पर ज़ुल्म करता था जिसपर बादशाह ने उस को मनसब और जागीर से बरतरफ़ करके हज़ूर में बुलाया जब गुर्ज़बरदार उसको पकड़ कर लाया तो हुक्म हुआ कि दरबार के वक्त उसकी आस्तीनों में सांप छोड़ देवें उसके वकील बचाव के वास्ते बहुत दौड़े मगर कुछ फ़ायदा न हुआ तब बेगम साहिब के मुत्सद्दियों से मिलकर बेगम साहिब का रुक्का उसकी जान बख़्शी के वास्ते लाये क्योंकि सूरत बंदर बेगम

باندھوں گڑھ کا زمیندار انوپ سنگھ صلابت خان ناظم صوبہ آلہ آباد کے ہمراہ درگاہ میں حاضر ہوا بادشاہ نے اسکو منصب سہ ہزاری ذات اور دوہزار سوار سے سرفراز فرمایا

بادشاہ کا انصاف

محمد امین متصدی بندر سورت رعایا کے اوپر ظلم کرتا تھا بادشاہ نے اسکو منصب اور جاگیر سے برطرف کر کے حضور مین بلایا چنانچہ گرز بردار اسکو پکڑ لایا حکم ہوا کہ سر دیوان اس کی آستین مین سانپ چھوڑ دیں اسکے وکیل نجات کے واسطے بہت دوڑے مگر کچھ فائدہ نہوا تب وہ بیگم صاحبہ کے متصدیوں سے رجوع ہوکر بیگم صاحبہ کا رقعہ اسکی جان بخشی کے واسطے لائے کیونکہ بندر سورت بیگم صاحبہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

सां[illegible] की जागीर थी बादशाह ने रुक्का को पढ़कर कैद का हुक्म दिया और नाराज़ी के साथ महल में जाकर बेगम को बुलाया और फ़रमाया कि सूरत बंदर तुम्हारी जागीर में है मुल्क की आबादी रैयत से होती है और ख़ज़ाना भी उसकी मालगुजारी से भरता है और लशकर भी उसी से बढ़ता है फिर तुम किस तरह उस मुत्सद्दी के ज़ुल्म की बदनामी से राज़ी होती हो जिसने जमा बढ़ाने के नाम से इस क़दर सख़्ती की है कि रैयत ने अपने बाल बच्चे ईसाइयों को बेच कर हासिल भरा है सूरत का बंदर सातों वलायतों के आदमियों के चलने फिरने की जगह है जो यह ख़बर दूसरे बादशाहों को पहुंची तो इस में हमारे वास्ते कितनी बदनामी होगी और ख़ुदा की ख़फ़गी होगी वह तो अलग रही

کی جاگیر مین تھا بادشاہ نے رقعہ پڑھکر قید کا حکم دیا اور بے دماغ محل مین جاکر بیگم صاحبہ کو بلایا اور فرمایا کہ بندر سورت تمہاری جاگیر مین ہے اور رعیت کی مالگذاری سے ملک آباد ہوتا ہے اور خزانہ ولشکر بھی ترقی پاتا ہے پھر تم کس طرح اُس ظالم کے ظلموں کی بدنامی سے راضی ہوتی ہو جس نے جمع بڑھانے کے نام سے اس قدر سختی تشخیص مین کی ہے کہ رعایا نے بہ مجبوری اپنے بیٹے بیٹیون کو بیچ کر محصول ادا کیا بندر سورت ساتوں ولایتوں کے آدمیون کے پھرنیکی جگہ ہے اگر یہ خبر دوسرے بادشاہونکو پہنچی تو ہمارے واسطے بدنامی کے علاوہ خدا کی ناخوشنودی بھی ہوگی جب نواب قدسیہ نے اسکی پیدا وسے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बेगम को जब यह हाल मोहम्म
द अमीन के जुल्मों का मालूम
हुआ तो उसकी सिफ़ारिश छो
ड़दी दूसरे दिन बादशाह ने फिर
मोहम्मद अमीन और सांपवाले
को हाज़िर करने का हुक्म दिया-
अब मोहम्मद अमीन के वकील
बेगम साहिब की सिफ़ारिश से
नाउमेद होकर राजा रुघनाथ के
पास गये जो वज़ीरायत का काम
करता था और उस से बहुत अरज़
बिनती इस बला के टालने के वा
स्ते की राजा रुघनाथ ने मौक़ा
देखकर बादशाह से अरज़ किया
कि ऐसे बदबख्त ज़ालिम के
वास्ते जो कोई अरज़ करे वह इस
लायक़ है पहिले सज़ा उसको मिले ले
किन इसके ऊपर रैयत का बहुत
सा रुपया बाक़ी निकलता है जि
सकी नालिश हो रही है इसी तर
ह बहुत सा बादशाही लैना भी है

اطلاع پائی تو سفارش چھوڑ دی
دوسرے دن بادشاہ نے
محمد امین اور سانپ والے
کو حاضر کرنے کا حکم دیا اب
اُسکے وکیل بیگم صاحبہ کی
شفاعت سے ناامید ہوکر
راجہ رگھناتھ کے پاس
جو وزارت کا کام کرتا تھا
رجوع ہے گئے اور بہت سی
عجز و زاری اُس بلا کے
دفع کرنے کے واسطے کی راجہ
رگھناتھ نے موقع دیکھکر
عرض کیا کہ ایسے بدبخت کے
بارہ ہیں جو کوئی عرض
کرے وہ پہلے سزاوار عقوبت کا ہی
لیکن اُس کے اوپر مبالغ خطیر
حقوق رعایا کے باقی ہیں جسکی نالش
ہو رہی ہے اور اسی طرح بہت
سا بادشاہی مطالبہ ہی ہے سو
تا وصول ہونے زر رعایا اور
مطالبہ سرکاری کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो नौबत कु रैयत का और सरका रकारुपयावसूल होजावे उसके मारने में देर [illegible] वाजिब है अगर हुक्म होतो बाद वसूल हो जाने दोनों रकमों के उसको सजा दीजावे — बादशाह ने यह अरज़ मंज़ूर करके हुक्म दिया कि इसको कै द मरवत में रखकर राजा रुघना थ को सोंपदेवें सो रैयत का दावा बादतहकीकात के दिलादेवे — इसतरह बड़ी मुशकिलों से उ स ज़ालिम की जान बची और दूस रे ज़ालिम दिल में डरगये — मीरजुमला का वज़ीर होना• जब मोअज़्ज़मखां मिरजुमला दिल्ली के करीब पहुंचा तो बादशा के हुक्म से कासमखां और दानि शमदखां पेशवाई करके उसको शहर के बाहर से हज़ूर में लेगये बादशाह ने उसी वक्त उसको —	اُس کے مارنے مین تامل ہونا واجب ہے اگر حکم ہو بعد وصول کرنے حقوق مظلومون اور مطالبہ شاہی کے اُسکے اعمال کی سزا دیجاوے — بادشاہ نے یہ عرض منظور کرکے حکم فرمایا کہ اسکو بسزاے مصلان شدید کے راجہ رگھناتھ کے حوالہ کرین تاکہ حقوق رعایا بعد تحقیقات دلادے۔ اس طرح اُس بدکردار ستمگار کی جان بچی اور دوسروں کو عبرت ہوئی میر جملہ کا وزیر ہونا جب میر جملہ معظم خان دہلی کے قریب پہنچا تو بادشاہ کے حکم سے قاسم خان اور دانشمند خان پیشوائی کرکے اُسکو شہر کے باہر سے حضور مین لے گئے بادشاہ نے اُسکو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

द[ह]ज़ारी ज़ात ६००० सवार का मन
सब और जड़ाऊ क़लमदान वज़ी
रुख़्सत का दे कर २०० घोड़े ख़ासा और
२५ लाख रुपये नक़द इनायत फ़
रमाये-

शाहज़ादे मुराद बख़्श को
शाहनवाज़ खां की बेटी से औला
द न हुई इस लिये बादशाह ने मी
र खां की बेटी से शादी ठहरा कर १
लाख रुपये दहेज़ के सरकार से
दिलाये और उसको अहमदाबा
द में भेजा जहां शाहज़ादे से नि
काह हुआ और लाख रुपये इना
म के शाहज़ादे को भी सूरत बंदर
के ख़ज़ाने से दिलाये और उस
का मनसब भी असल और इज़ा
फ़े से १५ हज़ारी ज़ात और १२०००
सवार दुअस्पे और तिअस्पे का कर दिया

बरस ३१ वां

कातिक सुदि ३ संवत १७१३ से
आसोज सुदि २ संबत १७१४ तक

چهه ہزاری ذات ...
ہزار سوار کا منصب و مرصع
... ذات کا دیکر
دو سو گھوڑے خاصہ ہاتھی
اور پانچ لاکھہ روپیہ نقد مرحمت فرمائے

شاہزادہ مراد بخش
کے شاہ نواز خان کی بیٹی سے
اولاد ہوئی تھی اسلئے بادشاہ
نے میرخاں کی لڑکی سے
شادی مقرر کرکے ایک لاکھہ
روپیہ جہیز کے سرکار شاہی سے
دلائے اور اُسکو احمدآباد بھیجدیا
جہاں شاہزادہ سے شادی
ہوئی اور شاہزادہ کو بھی دو
لاکھہ روپیہ انعام کے سورت
بندر کے خزانہ سے دلائے
اور اُس کا منصب بھی اصل اور اضافہ
سے پندرہ ہزاری ذات اور
بارہ ہزار سوار دواسپہ سہ اسپہ کا کردیا

اکتیسواں برس

۱۰۶۷ ہجری
۱۹ اکتوبر ۱۶۵۶ع سے ۸ ستمبر ۱۶۵۷ع

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

मंगसरबदि ३ को शाहज़ादे दा
राशिकोह के बेटे सुलेमानशिको
हकी शादी जाफ़रखां के भाई बह
रामखां की बेटी से हुई मिहर २
लाख रुपये का ठहरा निकाह का
ज़ी खुशहाल ने पढाया—

मंगसरसुदि १५ को मोअज़्ज़
मखां मीरजुमला का बेटा मोह
म्मद अमीन भी हाज़िर होकर आ
दाब बजा लाया बादशाह ने उस
को खां का ख़िताब दिया—

पोसबदि ४ को मोअज़्ज़मखांने
कुछ कीमती जवाहर और ६० हाथी
बादशाह के नज़र किये जिनमें १ ही
रा ४ टांक यानी २१६ रती का था-
उसकी कीमत २१६०००) की हुई—

बीजापुर की मोहिम·

—पोस [illegible] औरंगज़ेब की अर
ज़ी पहुंची कि बीजापुर का शाह
आदिलखां मरगया और उस
के नोकरों ने जो अकसर गुलाम है

۱۷ محرم کو شاہزادہ
دارا شکوہ کے بیٹے سلیمان
شکوہ کی شادی جعفر خان
کے بھائی بہرام خان کی بیٹی
سے ہوئی مہر دو لاکھ روپیہ
کا ٹھہرا اور نکاح قاضی خوشحال نے پڑھایا

۱۴ صفر کو معظم خان
(میر جملہ) کا بیٹا محمد امین بھی حاضر
ہوکر آداب بجالایا بادشاہ
نے اسکو خان کا
خطاب دیا

۱۸ صفر کو معظم خان
نے کچھ قیمتی جواہرات مع ۶۰
ہاتھی کے نذر کئے جنمیں ایک ہیرا
[illegible] ٹانک یعنی (۲۱۶) رتی کا تھا اسکی
قیمت دو لاکھ سولہ ہزار روپیہ کی ہوئی

مہم بیجاپور

[illegible] شاہزادہ اورنگ زیب کی
عرضی پہنچی کہ عادل خان
والی بیجاپور مرگیا اور اسکے
نوکروں نے جو اکثر غلام ہین

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

अली नाम १ आदमी को उसका बेटा ठहरा कर गद्दी पर बैठा दिया है इस वास्ते माह बदि ४ को उसके नाम हुक्म लिखा गया कि जो लश्कर दखन में तईनात है उसको लेकर जावे और उस मुल्क और किले को फ़तह करे खांनजहां को हुक्म हुआ कि दौलताबाद पहुंच कर शाहज़ादे के बीजापुर से वापस आने तक औरंगाबाद में रहे—

मोअज़्ज़मखां निजाबतखां मिर्ज़ा सुलतान और एरचखां वगैरा को भी घोड़े खिलअत तलवारें और तुर्रे देकर बहुत सी फ़ौज से इस मुहिम पर रवाने किया—

मोअज़्ज़मखां को इस तारीख तक ५ लाख रुपये और २ लाख का जवाहर मिल चुका था और बिदा होते वक़्त बादशाह ने उससे फ़रमाया कि वज़ारत की

علی نام سے ایک شخص کو اس کا فرزند مقرر کرکے اسکی جگہہ بیٹھا دیا ہے اسواسطے ۴ ربیع الاول کو اُسکے نام حکم لکھا گیا کہ مع لشکر کے جو دکن مین تعینات ہے اُس طرف جاکر اُس ملک اور قلعہ کو فتح کرے اور خانجہان کو بھی حکم ہوا کہ دولت آباد جاکر اس مہم مین شامل ہو اور تا واپسی اورنگزیب کے بیجاپور سے اورنگ آباد مین رہے۔

معظم خان نجابت خان مرزا سلطان و ایرچ خان وغیرہ کو بھی بادشاہ نے انعام لائق و زر نقد عطا کرکے مع جمعیت کثیر کے اس مہم پر روانہ کیا

معظم خان کو اس تاریخ تک پانچ لاکھ روپیہ نقد اور دو لاکھ روپیہ کا جواہر وغیرہ مل چکا تھا بروقت رخصت بادشاہ نے اُس سے فرمایا کہ بعہدِ وزارت

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोहे[illegible]ने बेटे मो[illegible]म्मद अमीन
खां को दे जावे और उससे कह दे
कि [illegible] रायों की [illegible] मिलात में
मुल्क और माल का काम करे
और मनसब भी मोहम्मद अ
मीन खां का असल और इज़ा
फ़े से तीन हज़ारी ज़ात और ३०००
सवार का कर दिया -

महाबत खां, राजा राय सिंघ,
इफ़्तखार खां, इख़्लास खां, नुस्र
त खां, दलेर खां, और राजा सुजा
न सिंघ बुंदेला, वग़ैरा कई नाम
वर अमीरों को भी हुक्म लिखा ग
या कि अपनी २ जागीरों से जाक
र शाहज़ादे के पास हाज़िर हो जावें

३०००० सवार और बहुत से बर
क़ंदाज़ शाहज़ादे के साथ तईनात हुवे

२ क्रूर ग्रहों के १ रासि पर आजा
ने से दिल्ली में मरी का रोग फैला जि
ससे हर रोज़ बहुत से आदमी मरते
थे बादशाह ने मौलवियों से बादर

اپنے بیٹے کو دیجاوے تاکہ
وہ باتفاق راے رایان کے
مہمات ملک و مال کا سرانجام
کرے اور منصب بھی اس کے
بیٹے محمد امین کا اصل اور
اضافہ سے تین ہزاری ذات
اور تین ہزار سوار کا
کر دیا۔

مہابت خان راجہ رای
سنگہ افتخار خان اخلاص خان
نصرت خان وامیر خان وراجہ
سجان سنگہہ بندیلہ وغیرہ چند
نامدار خانون وامیرون کو بھی
حکم ہوا کہ اپنی اپنی جاگیرون سے جاکر شہزادہ
اورنگ زیب کے پاس حاضر ہو جاوین
کہ تیس ہزار سوار اور بہت سے
برقنداز شہزادہ کے ہمراہ تعینات ہوئے
چونکہ دو منحوس ستارون کے قران
سے بہت وبا اور طاعون کی دلی مین
پہیل گئی تہی اور ہر روز بہت سے آدمی اس
مرض مین مبتلا ہو کر مرتے تہے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानेके वास्ते पूछा तो उनकी राय मिली नहीं इसपर थोड़े दिनों के वास्ते शिकार के नामसे गंगा के किनारे पर जाने की सलाह ठहरी इसलिये पोससुदि ५ को बादशाह शाहजहानाबाद की क़िलेदारी सियादतख़ां को देकर गंगा की तरफ़ रवाने हुवे और ४ लगातार कूचों में गढ़मुक्तेश्वर पर पहुंचे पोससुदि १० को नूरपुर में लौट आये वहां यह ख़बर पहुंची कि आगहख़ां जो ताजबीबी के रौज़े का मुतवल्ली और आगरे की तअल्लुक़ों का फ़ौजदार था मरगया है इसलिये बादशाह ने गिरधर कंवर को २ हज़ारी ज़ात २००० सवार का मनसब, आगरे की क़िलेदारी, और फ़ौजदारी देकर बिदा किया और महरमख़ां को मुतवल्ली करके भेजा -

माहबदि ३ को बादशाह नूरपुर

اسلئے بادشاہ نے فاضلون سے باہر جانے کی بابت استفسار فرمایا تو انہون نے بروایت مختلف جواب عرض کیا آخر چند روز کیواسطے باہر جانیکی صلاح ٹھہری اور بادشاہ ۴ ربیع الاول کو قلعداری قلعہ شاہجہان آباد کی سیادتخان کے سپرد کرکے صید و شکار کیواسطے کنارہ گنگا کیطرف روانہ ہوئے اور چار کوچ متواتر مین گڈھ مکتیسر پہنچے ۹ کو نورپور مین لوٹ آئے وہان یہ خبر پہنچی کہ آگاہ خان جو روضہ تاج گنج کا متولی اور فوجدار نواحی اکبرآباد تھا قضاے الہی سے فوت ہو گیا ہے بادشاہ نے گردہر کنور کو منصب دو ہزاری ذات اور دو ہزار سوار و خدمت قلعداری و فوجداری اکبرآباد سے مشرف کرکے رخصت کیا اور محرم خان کو روضہ مذکور کی تولیت پر بھیجا۔

۱۷ کو بادشاہ نورپور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से कूचकरके ५ दिनमें जमनाके
किनारे पहुंचे और वहांसे नाव
में बिय[illegible] कोसबाद १२ को
किलेमें दाखिल हुवे-

माहसुदि ६ को कि ३ तारीख
दे महीनेकी थी बादशाहके ६६ वे
बरसशुरु होनेके तुलादानका दर
बारहुआ जिसमें ५ किरोड़ दाम
हवीलकोलसे शाहज़ादे दारा
शिकोह को इनायत हुवे अबकु
लतनख़्वाह उसकी ६० किरोड़ दा
मकी होगई थी जिसके डेढ़ कि
रोड़ रुपये होते थे-

सुलतान सिपहर शिकोह को म
नसब ८ हज़ारी ४००० सवारका और
मोहम्मद अमीन ख़ांका तीन हज़ा
री ३००० सवारका होगया और उस
को हुक्म हुआ कि अपने बापकी ना
यबी में दीवानगी का काम करे-

काबुलकी सूबेदारी बहादुरख़ां
से उतरकर रुस्तमख़ांको शाहज़ादे

سے کوچ کرکے جمنا کے کنارہ پر
پہونچے اور وہان سے کشتی پر
سوار ہوکر ۲۵ کو قلعہ شاہجہان آباد
مین داخل ہوئے۔

۴ ربیع الثانی کو تاریخ
بادوے کی تھی جشن وزن شمسی
آغاز سال ۶۶ عمر بادشاہ کا
آراستہ ہوا جس مین پانچ کروڑ دام
پرگنہ حویلی کول سے بطریق انعام شاہ
بلند اقبال دارا شکوہ کو عطا ہوئے
اب کل تنخواہ اُسکی ساٹھ کروڑ
دام کی ہوگئی جس کے ڈیڑھ کروڑ
روپئے ہوتے تھے

سلطان سپہر شکوہ کا منصب
آٹھ ہزاری چار ہزار سوار کا اور
محمد امین خان کا تین ہزاری تین ہزار
سوار کا ہوگیا اور اُسکو حکم ہوا کہ اپنے
باپ کی نیابت مین دیوانی کا کام
کرے

کابل کی صوبہ داری بہادر خان کی
انتقال سے رستم خان کو بموجب عرض شاہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दाराशिकोह की अरज़ से इनायत हुई और शाहज़ादे को काबुल की जागीरों के बदले लाहोर के परगने इनायत हुवे और बहादुरख़ां लाहोर का सूबेदार हुआ -

फागण बदि ६ को ६८ वां बरस चांद्रमास के हिसाब से शुरू हुआ जिस के तुलादान के दरबार में भी बहुत सी बख़शिशें हुईं इन दोनों तुलादानों के दरबारों में जो ९ दिन तक बराबर होते रहे ८ लाख रुपये की पेशकश जवाहरात और कपडे की क़िसम से क़बूल हुई अकसर अमीरों के मनसब बढ़े और बाज़ों को इनाम और ख़िताब मिले-

इस अरसे में मरी बहुत फैल गई थी इस लिये बादशाह फिर फागुन सुदि ३ को मुख़लिसपुर को रवाने हुवे और चेत बदि १३ को वहां पहुंचे यह गांव शाहजहानाबाद से ४७ कोस जमना के किनारे पर

بلند اقبال کے عنایت ہوئی۔ اور شاہ کو کابل کے اقطاع کے عوض لاہور کے پرگنے عنایت ہوئے بہادر خان معین خان کے تغیر سے لاہور کا صوبہ دار ہوا۔

۱۹ ربیع الثانی کو ۶۸ ہین سال گرہ قمری کے شروع ہونے کا تُلادان ہوا۔ ان دونوں جشنوں مین جو ۱۶ دن تک برابر ہوتے رہے تھے آٹھ لاکھ روپیہ کی پیشکش قسم جواہرات و اقمشہ نفیسہ سے قبول ہوئی۔ اکثر امرا کے منصب بڑھے اور بعض کو انعام اور خطابات بھی عنایت ہوئے

اس عرصہ مین وبار طاعون بالکل پھیل گیا تھا اسلئے بادشاہ پھر ۲ جمادی الاول کو نقل مکان کرکے مخلص پور کو روانہ ہوئے اور ۲۶ ماہ مذکور کو وہان پہنچے یہ گانو شاہ جہان آباد سے ۴۷ کوس جمنا کے کنارہ پر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

हिमालय पहाड़ के नीचे सरमोर के पास सहारनपुर के गांवों में से था आब व हवा यहां की अच्छी थी और दूसरा आराम यह था कि दिल्ली से वहां तक नावें १ हफ़्ते में आती जाती थीं बादशाह ने पिछले साल से इस जगह १ बड़ी इमारत बनाना शुरूअ की थी और वह अब तयार हो चुकी थी।

बादशाह ने इस जगह की आब हवा अपनी तबीअत के माफ़िक़ देखकर मुख़लिसपुर का नाम फ़ैज़ाबाद रखा और आसपास के परगनों से ३० लाख दाम की जमा के गांव अलग करके उसके नीचे डाल दिये जैसे दिल्ली और दूसरे बड़े बड़े शहरों में बादशाही दौलतख़ाने थे वैसा ही दौलतख़ाना यहां भी जमुना के किनारे बनवाया जिसमें ख़्वाबगाह, महल, ग़ुसलख़ाना, ख़ास आम वग़ैरा सब कुछ थे दौलतख़ाने के पच्छिम

کوہ شمالی کے دامن مین سرمور کے نزدیک مضافات سہارنپور سے تھا آب و ہوا یہانکی اچھی تھی اور دوسرا لطف یہ تھا کہ دار الخلافہ سے وہان تک کشتی سوار ایک ہفتہ مین آمد و رفت ہو جاتی تھی بادشاہ نے سال پیوستہ سے اس جگہ ایک عمارت عالی بنوانا شروع کی تھی اور وہ اب تیار ہو چکی تھی۔

بادشاہ نے اس سرزمین کی آب و ہوا اپنی طبیعت کے موافق دیکھکر مخلص پور کا فیض آباد نام رکھا اور اس پاس کے پرگنون سے ۳۰ لاکھہ دام کی جمع کے مواضعات جدا کرکے اس کے متعلق کئے جیسے دار الخلافہ اور دوسرے بڑے بڑے شہرون مین بادشاہی دولتخانے تھے ویسا ہی یہان بھی جمنا کے اوپر دولتخانہ بنوایا جسمین خوابگاہ محل غسلخانہ خاص و عام وغیرہ سب کچھہ تھا اسکے پچھم مین پہاڑ تھا جس مین سایہ دار

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में १ सुहावना पहाड़ रूखोंसे छाया हुआ था और १ नहर ६ गज़ चौड़ी जमनासे काट कर इस तमाम इमारत और उस के बग़ीचोंमें जारी की गई थी जो हर तरफ़ बनाये गये थे अबतक इनमें ५ लाख रुपये २ बरस और २ महीनोंके अंदर ख़र्च हो चुके थे और १ लाख रुपये का काम और बाक़ी था-

बादशाह ने यहां पहुंच कर २ लाख रुपये दारा शिकोह को और २५०००) सुलेमान शिकोह को दिये कि वेभी इस जगह अपने अपने मकान बनावें-

नई दिल्ली (शाहजहानाबाद) का कोट ८ बरस पहिले मिट्टी और पत्थर का १५००००) के ख़र्च से बनवाया गया था मगर वह बरसात में जगह २ से गिर पड़ता था इसलिये ४ बरस पहिले चूने और पत्थर का कोट बनवाना शुरूअ किया गया था

درخت کثرت سے تھے اور ایک نہر ۶ گز چوڑی جمنا سے کاٹ کر اس تمام عمارت اور اس کے باغیچوں مین جاری کی گئی تھی جو ہر طرف بنائے گئے تھے اس مین پانچ لاکھ روپے دو برس اور دو مہینون کے اندر صرف ہو چکا تھا اور ایک روپے کا اور کام باقی تھا-

بادشاہ نے یہان پہونچکر دو لاکھ روپیہ شاہ بلند اقبال کو اور پچاس ہزار سلیمان شکوہ کو دئے کہ وہ بھی اس جگہ اپنے اپنے مکان بنوا دین

شہر شاہ جہان آباد کے گرد ایک حصار پتھر اور مٹی کا ۱۴ سنہ جلوسی مین ڈیڑہ لاکھ روپے کے صرف سے بنایا گیا تہا مگر وہ برسات مین جگہہ جگہہ سے گر پڑتا تہا اسلئے ۱۶ سنہ جلوسی مین پتھر کا حصار شروع کرایا گیا تھا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो इस बरस में ४ लाख की लाग
त से तैयार होगया इसकी लंबाई
६६६४ गज़ की चौड़ाई ४ गज़ की और
ऊंचाई ९ गज़ की कंगूरों तक थी
बीच २ में छोटे बड़े ११ दरवाज़े और
२७ बुरज रखे गये थे-

चेत सुदि २ को १३वां जलूसी
बरस शुरू हुआ बेकसीवे सुब
हान कुली खां का ड्योढीदार २७
घोड़े ५ ऊंट और खत लेकर बलख
से हाज़िर आया बादशाह ने उसको
खिलअत तलवार और १०००) रुप
ये इनायत किये-

कुतबुल्मुल्क की पेशकश ५७
हाथियों से पेश हुई जिसकी की
मत ३८०००) की हुई-

बैसाख बदि १० को मेख संक्रांत
के दरबार में बादशाह ने बेकसीवे
को १५०००) १०० तोले का १ और इ
तनी ही तोल की १ मोहर इनायत क
र के बिदा किया और ४०००) रुपये

وہ اس سال مین چار لاکھ روپیہ
کے صرف سے تیار ہو گیا اس کا
طول ۲۲۲۴ گز عرض چار گز او
ارتفاع کنگوروں تک ۹ گز تھا
بیچ بیچ مین گیارہ چھوٹے بڑے
دروازہ رکھے گئے تھے

غرہ جمادی الثانی کو ۱۳
وان جلوسی برس شروع ہوا بیکسی بے
سبحان قلیخان کا دربان خط معہ
۲۷ اسپ و پانچ شتر کے جو بیرخان
نے بھیجے تھے حاضر آیا بادشاہ
نے اُس کو خلعت خنجر اور دس
ہزار روپے نقد عنایت کیے

قطب الملک کی پیشکش معہ
سوہ ہاتھی و دیگر تحایف کے بادشاہ
کی نظر سے گذری جسکی قیمت ۳ لاکھ ہزار روپیہ کی تھی

۲۳ جمادی الثانی کو شرف آفتاب
کے دن بادشاہ نے بیکسی بے کو پندرہ ہزار
روپیہ اور طلائی مہر سو تولہ کی اور ایک
روپیہ اُسی وزن کا عنایت کیا
اور چالیس ہزار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुबहा नक़ुली ख़ांके वास्ते उसके हाथ भेजे -

- बैसाख सुदि ५ को बादशाह फ़ैज़ाबादसे कूंच करके तीसरे दिन ख़िज़राबादमें पहुंचे और वहांसे नावमें सवार होकर जेठ बदि ३ को बाग़ ऐज़ाबादमें और जेठ बदि १० को शाहजहांनाबादके क़िलेमें दाख़िल हुवे -

लाहोरसे ख़बर आई कि अमीरुलउमरा अली मरदानख़ां कश्मीरसे बीमार होकर लाहोरमें आया और बैसाख सुदि १४ को मर गया बादशाहने उसके बेटे इब्राहीमख़ांको डेढ़ हज़ारी ज़ात और २ हज़ारके इज़ाफ़ेसे ४ हज़ारी ३००० सवार का मनसब देकर उसके भाई अबदुल्लाबेग को २ हज़ारी २००० सवार का मनसब बख़्शा अबदुल्लाबेगके भाई इसमाईल इसहाक़ और उसके बापके -

سبحان قلیخان کے واسطے اُسکے ہاتھ بھیجے -

۳ رجب کو بادشاہ فیض آباد سے کوچ کرکے تیسرے دن خضرآباد مین پہونچے اور وہان سے ناو مین سوار ہوکر ۱۵ باغ اعزآباد مین اور ۲۲ کو شاہجہان آباد کے قلعہ مین داخل ہوے -

لاہور سے خبر آئی کہ امیرالامرا علیمردان خان کشمیر سے بیمار ہوکر لاہور مین آیا اور ۱۲ رجب کو مرگیا بادشاہ نے اُسکے بیٹے ابراہیم خان کو ڈیڑہ ہزاری ذات اور دو ہزار سواروں کے اضافہ سے چارہزاری تین ہزار سوار کا منصب اور ابراہیم خان کے بڑے بیٹے عبداللہ بیگ کو دو ہزاری ہزار سوار کا منصب بخشا عبداللہ بیگ کے بھائی اسمعیل اسحاق اور علیمردان خان کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

दीवान मोहम्मद मुक़ीम, क़ुरबान
बेग, ख़्वाजा इसमायील, और रसू
ल बेग वग़ैरा को भी मुनासब मन
सब इनायत किये और फ़ाज़िल
ख़ां मीर सामान को हुक्म दिया
कि सबको दिलासा देकर लाहो
र से शाहजहानाबाद में ले आवे सो
वह सावण बदि ५ को लेकर हाज़ि
र हुआ तब बादशाह ने फिर इब्रा
हीम बेग के सवारों में १००० सवार
का इज़ाफ़ा करके उसको झंडा
और नक़्क़ारा भी बख़्शा और अ-
ली मर्दान ख़ां के माल असबा
ब में से जो १००००००० के क़रीब स
रकार में ज़ब्त हुआ था ३००००००
इब्राहीम ख़ां को और २०००००० उस
के तीन छोटे भाइयों और लड़-
कियों को मिला और बाक़ी सर
कारी लेने में जमा हुआ-

बीजापुर की मोहिम

मोअज़्ज़म ख़ां हुज़ूर से रुख़सत

دیوان محمد مقیم خان و قربان
بیگ و خواجہ اسمعیل و رسول
بیگ وغیرہ کو بھی منصب عنایت
کئے اور فاضل خان میر
سامان کو حکم دیا کہ سب کو
دلاسہ دیکر لاہور سے شاہجہان
آباد مین لے آوے چنانچہ
وہ ۱۶۵ رمضان کو لیکر حاضر
ہوا تب بادشاہ نے پھر ابراہیم
خان کے سوارون مین
ایکہزار سوار کا اضافہ کرکے
اُسکو علم و نقارہ بھی بخشا اور
علیمردان خان کے ترکہ سے جو
ایک کروڑ نقد و جنس کے قریب
سرکار مین ضبط ہوا تھا. ۳۰ لاکھہ
روپیہ ابراہیم خان کو. ۲۰ لاکھہ تین
چھوٹے لڑکون لڑکیون کو عنایت
فرمایا اور باقی روپیہ مطالبہ کے
عوض داخل خزانہ ہوا۔

بیجاپور کی مہم

معظم خان حضور سے رخصت

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

होकर फागुए बदि ४ को फौजसमेत शाहज़ादे औरंगज़ेब के पास पहुंचा और शाहज़ादा जो तमाम सामान तोपख़ाने का तैयार कर चुका था उसी दिन कूच कर के १४ दिन में चांदोर पहुंचा दूसरे दिन क़िले बिदुर के क़रीब उतरा वहां का क़िलेदार शीदी मिरजान ने जो बीजापुर के अगले शाह इब्राहीम आदिलख़ां का गुलाम था और ३० बरस से उस क़िले में रहता था क़िला सजकर लड़ने को तैयार हुआ उसके पास १००० सवार और १४००० बंदूकची थे

यह क़िला ४५०० गज़ के घेरे में था और १२ गज़ ऊंचा था इसके गिर्द २५ गज़ चौड़ी खाई थी जो १५ गज़ गहरी पत्थर में खोदी गई थी-

शाहज़ादे ने वहां पहुंचते ही क़िला फ़तह करने का हुक्म दिया और मोअज़्ज़म ख़ां ने बरसते हुवे गोलों में क़िले के गिर्द फिर कर तमाम

ہوکر ۵ ربیع الثانی کو معہ فوج شاہزادہ اورنگ زیب کی خدمت مین پہونچا شاہزادہ اُسی دن روانہ ہوکر ۱۴ دن مین چاندور پہونچا دوسرے دن قلعہ بدر کے قریب اُترا وہان کے قلعدار شیدی مرجان نے جو بیجاپور کے سابق شاہ ابراہیم عادل خان کا غلام تہا اور ۳۰ برس سے اُس قلعہ کی پاسبانی کرتا تھا سج وبارہ قلعہ کو مضبوط کرکے مستعد مقابلہ ہوا - اُس کے ایکہزار سوار اور چودہ ہزار بندوقچی قلعہ مین تہے

یہ قلعہ ساڑہے چار ہزار گز کے دور مین تہا اور بارہ گز اونچا تہا اسکے گرد ۲۵ گز چوڑی خندق تہی اور پندرہ گز گہری پتہر مین کہودی گئی تہی

شاہزادہ نے پہونچتے ہی قلعہ فتح کرنے کا حکم دیا اور معظم خان نے برستے ہوئے گولون مین قلعہ کے گرد پھر کر تمام

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जगह मोरचे क़ायम किये १० दिन-
में तोपें खाई तक पहुंची और खा
ई का पाटना शुरू हुआ-
क़िलेवालोंने कई दफ़े मोरचों
पर हमला किया जब क़िले के २
बुर्ज तोपोंके गोलोंसे उड़गये तो
मोहम्मद मुराद वग़ैरा कई अमीर
बैसाख बदि १० को अपने २ मोरचों
से आगे बढ़े और नसेनियां लगा
कर क़िले के ऊपर चढ़गये शीदी
मिरजान अपने २ बेटों और कुल
सिपाहियोंसे १ बुरज के पास खड़ा
होकर लड़ने लगा बाहर से जो बा
न आते थे उनमें से १ क़िले के बारू
तखाने में गिरा और बारूत में आ
ग लगजाने से शीदी मिरजान २
बेटों समेत जल गया बादशाही
फ़ौजने यह मालूम करके हर तर
फ़ से हमला किया और शीदी मि
रजान ने मरते २ अपने बाक़ी बेटे
कों क़िले की कुंजियां समेत बादशाह

جگہ مورچے قائم کئے دس روز
مین توپین خندق تک پہونچین اور
خندق کا بھرنا شروع ہوا-
قلعہ والون نے کئی مرتبہ
مورچون پر حملہ کیا جب قلعہ کے
دو برج توپون کے گولون سے
اڑگئے تو محمد مراد وغیرہ کئی امیر ۱۱
جمادی الثانی کو اپنے مورچون
سے آگے بڑہے اور نسینیان
لگاکر قلعہ کے اوپر چڑھ گئے شیدی
مرجان معہ اپنے اور تمام جمعیت
کے ایک برج کے پاس کھڑا ہوکر
لڑنے لگا باہر سے جو بان جاتے تھے
انکا ایک تیر قلعہ کے باروت خانہ
مین پڑا اور اُسکے اڑتے ہی شیدی
مرجان مع اپنے دونون بیٹون
کے جل گیا- یہ دیکھکر بادشاہی
لشکر نے ہر طرف سے حملہ کیا اور
شیدی مرجان نے مرتے مرتے
اپنے باقی بیٹون کو مع قلعہ کی
کنجیون کے بادشاہزادہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज़ादे के पास भेजा दूसरे दिन वह तो
मर गया और शाहज़ादे ने शहर और
क़िले बिदूर में क़बज़ा कर के माल
असबाब की ज़बती ली और २००००००
की रोकड़ और जिनस २३० तोपें स
मेत सरकार में आई —

बिदुर बहुत आबाद और सुंदर श
हर था उसके इलाक़े की सरहद ति
लंगाने से मिली थी हिंदी किताबों
में लिखा है कि बिदुर दखन के राजों
का पायतख़त था बिदुर के राजों की
बंदगी दूसरे राजा लोग करते थे मा
लवे के राजा नल की राणी दमयंती
इसी बिदुर के राजा भीमसेन की बेटी थी —

अब यह ख़बर पहुंची कि आदि
लखां का बहुत सा लशकर लड़ा
ई के इरादे से गुलबर्गे में पहुंचा है
महाबतखां को हुकम हुआ कि १५०००
सवारों से उनके मुक़ाबिले को जावे
वह बहुत सी मिहनत और कोशि
श से कल्यानी के ज़िले में लूटमार

کے پاس بہیجا دوسرے دن وہ تو
مر گیا اور بادشاہزادہ نے شہر
اور قلعہ مین قبضہ کر کے مال و
اسباب کی ضبطی لی تو بیس لاکھ
روپیہ کا نقد و جنس معہ دو سو
تیس توپون کے ضبط ہوا —

بدر بہت آباد اور خوشنما شہر
تہا اُسکے علاقہ کی سرحد تلنگانہ سی
ملی ہوئی ہتی ہندی کتابون مین لکہا
ہے کہ بدر راجایان دکہن کا حاکم
نشین تہا بدر کے راجون کی اطاعت
اکثر راجہ اور رئیس کرتے تھے مالوہ
کے راجہ نل کی رانی دمینتی اسی
بدر کے راجہ بہیم سین کی بیٹی تہی —

اب یہ خبر پہنچی کہ عادل
خان کا بہت سا لشکر لڑائی کے
ارادہ سے گلبرگہ مین پہنچا ہے مہابت
خان کو حکم ہوا کہ پندرہ ہزار سوار
سے اُسکے مقابلہ کو جاوے وہ
بڑی محنت اور کوشش سے کلیانی
کے ضلع کو تاخت و تاراج کرکے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

करके आगे बढ़ा ग़नीम हर रोज़ दिख
लाई देता था मगर बैसाख सुदि १०
को खान मोहम्मद अफ़ज़ल और
रणदोला का बेटा रुस्तम वगैरः
२०००० सवारों से चढ़कर आये महा
बतखां सुजानसिंघ बुंदेले को डेरों
की हिफ़ाज़त पर छोड़कर राव शत्रु
साल और दलेरखां वगैरा के साथ
उनसे लड़ने को गया दखनियों ने
हरतरफ़ से बाण और बंदूक़ की लड़ा
ई शुरू की इख़लासखां और दले
रखां को दबा लिया तब तो महाबत-
खां ने हमला करके उनको भगा दि
या और २ कोस तक पीछा करके ब
हुतसे आदमियों को मारा और लौ
टकर १ दिन तो वहां रहा और दूसरे-
दिन पीछा लौटा -

बीजापुर वालों ने सेवा और म
नजी भोंसले को अहमदनगर के
ज़िले में लूट मार करने को भेजा उ
न्हों ने रायसेन और चमार गोंदे मे-

روانہ ہوا غنیم ہر روز نمودار
ہوتا تھا مگر ۱۰ رجب کو خان محمد
افضل و رستم پسر رندولہ وغیرہ
بیس ہزار سواروں سے چڑھ کر
آئے مہابت خان سجان سنگھہ
بندیلہ کو ڈیرون پر چھوڑ کر مع راو
سترسال و دلیرخان وغیرہ کے
اُنسے لڑنے کو گیا دکھنیون نے
ہر طرف سے بان اور بندوقون
کی لڑائی کی اور اخلاص خان و
دلیرخان کا قافیہ تنگ کردیا تب
مہابت خان نے حملہ کرکے اُن کو
شکست دی اور دوکوس تک تعاقب
کرکے بہت سے آدمیون کو مار ڈالا
اور لوٹ کر ایک دن تو وہان ہا
اور دوسرے دن واپس
روانہ ہوا —

بیجاپور والون نے سیوا اور
منا جی بہوسلہ کو احمدنگر کے ضلع مین
لوٹ مار کرنے کیواسطے بہیجا اور اُنہون نے
رای سین و چمار گوندہ مین پہنچکر لوٹ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहुंचकर लूटमार शुरू की शाह
ज़ादेने नुसरतख़ां कारतलबख़ां
और रावकरन वग़ैरा को ३००० हज़ा
र सवारों से उनके ऊपर बिदा किया
और शाहज़ादे मोहम्मद मोअज़्ज़म
को इफ़्तख़ार ख़ां समेत बिदुर के
क़िले में छोड़ कर बैसाख बदि १० को
कल्याणी का क़िला फ़तह करने के वास्ते
कूच किया और जेठ सुदि १ को वहां पहुंच क
र क़िले के घेरा दिया क़िलेवालों ने तोप बंदू
क और बाण बरसा कर बहुत से बा
दशाही आदमियों को मार दिया तो
भी मोअज़्ज़मख़ां ने जेठ सुदि १० को
खाई तक मोरचे पहुंचा कर क़िलेवा
लों को तंग किया मगर दुश्मनों की
फ़ौज बहुत ज़ियादा थी. इस लिये म
हाबतख़ां और निजाबतख़ां दस २
हज़ार सवारों से बारी बारी जाकर
लश्कर में घास चारा लाते थे और
हर रोज़ बड़ी २ लड़ाइयां होती थीं जि
नमें उदयपूर राणाजी की फ़ौज का सरदार

بار شروع کی شہزادہ نے نصرتخان
کارطلب خان اور راوکرن وغیرہ
کو تین ہزار سوارون سے انکی
سزادہی کے واسطے بھیجا اور شہزادہ
اورنگ زیب محمد معظم کو مع افتخار خان
قلعہ بیدر مین چھوڑکر ۲۳ رجب کو
کلیانی کا قلعہ فتح کرنے کے لئے کوچ
کیا اور ۲۹ رجب کو وہان پہونچکر
قلعہ کو گھیرا قلعہ والون نے توپ
بندوق اور بان برساکر بہت
سے بادشاہی بندون کو ماردیا
تاہم معظم خان نے ۸ شعبان کو
قلعہ تک مورچہ بڑھاکر اہل قلعہ کو
تنگ کیا۔ مگر وہان غنیم کی جمعیت
بہت زیادہ تھی اسلئے مہابت خان
و نجابت خان دس دس ہزار سوارون
سے نوبت بنوبت جاکر لشکر مین
گھاس اور چارہ لاتے تھے ہر روز
جنگ عظیم ہوتی تھی جس مین رانای
اودے پور کی فوج کا سردار
شیورام مارا گیا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवराम मारागया राजा राय सिं
घ और सुजान सिंघ वगैरा भी ज़
ख़मी हुवे और उनके अक्सर आ
दमी काम आये शाहज़ादे को क़ि
ला फ़तह करने की धुन लगी हु
ई थी इसलिये ग़नीम बेफ़िकरी
से हर रोज़ क़दम बढ़ाये चला आ
ता था यहां तक कि ३०००० सवार
जमा होकर बादशाही लशकर
से २ कोस पर आ ठहरे तब तो शाह
ज़ादे ने असाढ बदि ११ को कुछ फ़ौ
ज मोरचों में छोड़कर ग़नीम के ऊ
पर चढ़ाई की वह भी ३०००० सवा
रों से सामने आया वहलोल के
बेटों ने जो हिरावल थे ख़ूब लड़ाई
की इसी तरह दूसरे दखनी सरदा
रों ने भी हरतरफ़ से उमंड कर घोड़े
डाले मगर बादशाही लशकर ने ब
ड़ी मज़बूती से उनके हमले को रोका
और फ़िर इकबारगी हमला करके
बहुत से दुशमनों को मारा और बाक़ी

اور راجہ راے سنگہ و سجان سنگہ
وغیرہ بھی زخمی ہوئے اور اُنکے
اکثر آدمی کام آئے چونکہ شاہزادہ
کو قلعہ فتح کرنے کی طرف زیادہ توجہ
تھی اسلیئے غنیم دلیر ہوکر ہر روز
قدم بڑہائے چلا آتا تھا یہان تک
کہ تیس ہزار سوار جمع ہوکر بادشاہی
لشکر سے دو کوس پر آکر ٹھہرے
تب تو شہزادہ نے ۲۴ شعبان کو
کچھہ جمعیت مورچون کی حفاظت
پر چھوڑکر مع باقی فوج کے غنیم
کے اوپر سواری کی وہ بھی تیس
ہزار سوار سے مقابل ہوا۔ اور
بہلول کے بیٹون نے جو ہراول
تھے خوب جنگ کی اسیطرح دوسرے
دکھنی سردارون نے بھی ہر طرف
سے ہجوم کرکے گھوڑے ڈالے
مگر بادشاہی لشکر نے کمال ثبات
اور استقلال سے اُنکے حملہ کو روکا
اور پھر یکبارگی حملہ کرکے بہت سے
دشمنون کو مارڈالا اور باقی کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

को भगा दिया इस लड़ाई में अकसर बादशाही आदमी काम आये और दिलेरखांजी ज़खमी हुआ शाहज़ादा कुछ दूर तक उनके पीछे गया और फिर उनके डेरे जलाकर शाम को अपने लशकर में वापस आया-

नुसरतखां वग़ैरा जो अहमदनगर की तरफ़ गये थे सो वहां पहुंचकर उन्होंने सेवाजी नों स लेके ऊपर हमला किया और लड़ाई में उसको भगाकर क़िले परेंडे के पास डेरा किया क्योंकि रैयत के बचाव के वास्ते इस फ़ौज को जुनेर और चमार गोंदे के ज़िले में ठहर रहने का हुक्म था

मलिक हुसैन और फ़तह रुहेला वग़ैरा जो शाहज़ादे के हुक्म से २००० सवार लेकर तिलंगाने पर गये थे उस क़िले को फ़तह करके क़िलेदार को बादशाहज़ादे के पास पकड़ लाये-

ऐसे ही शेख मीरने जाकर जंझोनी के क़िले में क़बजा किया जिसको

بھگا دیا اس لڑائی مین اکثر بادشاہی ملازم کام آئے اور دلیر خان بھی زخمی ہوا شاہزادہ بعد تعاقب خیمہ وخرگاہ اعدا کو جلا کر شام کے وقت ڈیرون مین واپس آئے -

نصرت خان وغیرہ جو احمدنگر کی طرف گئے تھے وہان پہونچکر سیواجی کے اوپر حملہ آور ہوئے اور بعد مجروح و مقتول کرنے اکثر دشمنون کے اسکو بھگا کر قلعہ پرینڈہ کے قریب جا ٹھہرے کیونکہ انکو رعایا کی حفاظت کے لئے جنیر اور چمارکونڈہ مین رہنے کا حکم تھا

ملک حسین اور فتح روہیلہ وغیرہ دو ہزار سوار لیکر شہزادہ کے حکم سے تلنگانہ فتح کرنے کو گئے اور بعد فتح اس قلعہ کے انہون نے قلعدار کو پکڑ کر شہزادہ کے پاس بھیج دیا -

ایسے ہی شیخ میر نے بھی جا قلعہ جھنجولی مین قبضہ کیا جس کو

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

किलेदार डरकर छोड़ गया था -

किले कल्याणी की खाई थोहर की लकड़ियों से पाटी गई थी उस पर किलेवालों ने घास और बारूद डालकर आग लगादी जिससे बादशाही आदमियों ने पत्थर और मिट्टी डालकर फिर उसको भरा और नसेनियां लगाकर किले की दीवार गिराने लगे किलेवालों ने ऊपर से आग जलाकर बहुत से बारूद के हुक्के और नुफ़त के तेल (घासलेट) में भीगे हुवे गूदड़े वगैरा फेंके मगर ये तो कुछ परवा न करके दूसरे सावन की बदि १४ को अंदर कूद पड़े तब दिलावर हबशी जो आदिलखां की तरफ़ से ढाई हज़ार फ़ौज के साथ किले में था दूसरे सावन की सुदि १ को शाहज़ादे से जान और माल की अमान लेकर दूसरे दिन सुदि २ को हाज़िर हो गया और किले की कुंजियां देकर बीजापुर को चलता बना

قلعہ دار ڈر کر چھوڑ بھاگا تھا

قلعہ کلیانی کی کھائی تھوہر کی لکڑیوں سے پاٹی گئی تھی لیکن قلعہ والوں نے اُس پر گھاس اور باروت ڈال کر آگ سے جلا دیا تب بادشاہی آدمیوں نے پتھر اور مٹی ڈال کر خندق کو بھرا اور زینہ کی مدد سے چڑھکر دیوار گرانا شروع کیا اگرچہ قلعہ کے اوپر سے آگ لگا لگا کر باروت کے حقے اور نفت میں بھیگے لحاف وغیرہ بہت کچھ پھینکے جاتے تھے مگر یہ لوگ تو کچھ پرواہ نہ کر کے تاریخ ۲۷ شوال کو اندر کود پڑے دلاور خان حبشی جو عادل خان کی طرف سے ڈھائی ہزار فوج سے قلعہ میں تھا ۲۹ کو شاہزادہ سے جان و مال کی امان لیکر دوسرے دن غرہ ذیقعدہ کو حاضر ہو گیا - اور قلعہ کی کنجیاں دیکر بیجاپور کو روانہ ہوا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और क़िले कलयानी में बादशाही
क़िलेदार जा बैठा —
जब इन क़िलों के फ़तह होने की
ख़बर बादशाह को पहुंची तो उन्हों
ने ज़ादींब दि ३ दूसरी को शाहज़ादे
औरंगज़ेब के वास्ते ख़िलअत मा
मूली बख़शिशों के साथ भेजा और
बिदुर का देस भी कल्याणी और रा
मगढ़ के क़िलों समेत इनाम के तौ
र पर उसको इनायत किया और अ
ब यह इनाम अगला पिछला मि
लकर १२ किरोड़ दाम का होगया —
बिदुर का नाम ज़फ़र आबाद रखा
गया और करनाटक देश जिसकी जमा
१४ किरोड़ दाम की थी मीर जुमला
को बख़शा गया जो उसने वहां के
ज़मींदार से लिया था और बीच में
बादशाही अमलदारी के शामिल
होगया था —
शाहनवाज़ ख़ां महाबत ख़ां औ
र निजाबत ख़ां वग़ैरा भी जो इस

اور قلعہ کلیانی مین بادشاہی
قلعدار جا بیٹھا۔
جب اِن قلعون کے فتح ہونے کی
خبر بادشاہ کو پہونچی تو اُنہون
نے ۱۶ ذیقعدہ کو شاہزادہ
اورنگ زیب کے واسطے خلعت
معہ معمولی بخششون کے بہیجا اور
ولایت بدر بہی مع قلعہ کلیانی
و قلعہ رام گڈہ کے بطریق انعام
اسکو عنایت کی اور یہ انعام اب
اگلا پچہلا ملکر بارہ کروڑ دام کا ہوگیا
بدر کا نام ظفرآباد رکہا
گیا اور ولایت کرناٹک جسکی جمع
چودہ کروڑ دام کی تہی۔ میر جملہ
عرف معظم خان کو بخشی گئی جو
اُس نے وہان کے زمیندار سے
لی تہی اور اس درمیان مین داخل
ممالک محروسہ ہوگئی تہی
شاہنواز خان مہابت خان
و نجابت خان وغیرہ بہی جو اس

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोहिम में अच्छी खिदमत बजा लाये थे अपने २ दरजे के माफ़िक़ इनाम और इज़ाफ़ों से सरफ़राज़ किये गये-

आदिलखां ने शाहज़ादे को अरज़ी लिखकर १ किरोड़ ५० लाख रुपये की पेशकश रोकड़ और जवाहर की क़िसम से मये क़िले परेंडे और मुल्क कोकन के देना कबूल की-

शाहज़ादे ने वह अरज़ी बादशाह के पास भेजी बादशाह ने ५० लाख रुपये माफ़ करके बाक़ी पेशकश लाने के वास्ते काज़ी निज़ाम को भेजा और शाहज़ादे को वापस आने का हुक्म जारी करके मोअज़्ज़मखां के वास्ते लिखा कि परेंडे और कोकन के क़िलों में क़िलेदार बैठाकर हुज़ूर में चला आवे-

भादवा बदि ४ को शुजाअतखां काबुल की क़िलेदारी पर भेजा गया-

बादशाह का बीमार होना।

भादों सुदि ९ को अचानक बादशाह

مہم مین مصدر ترددات ہوئے تھے علی قدر مراتب انعام واضافہ مناسب سے سرفراز وممتاز کئے گئے

عادل خان نے شاہزادہ کو عرضی لکھکر ڈیڑہ کروڑ روپیہ کی پیشکش از قسم نقد وجواہر معہ قلعہ پرینده اور ولایت کوکن کے دینا قبول کی شاہزادہ کو عرضی لکھی اور عادل خان کی عرضی بہی بہیجی بادشاہ نے پچاس لاکھ روپیہ منجملہ پیشکش کے معاف کرکے باقی پیشکش وصول کرنے کے واسطے قاضی نظاما کو بہیجا اور شاہزادہ کو واپسی کا حکم لکھکر معظم خان کے واسطے تحریر فرمایا کہ قلعہ پرینده اور کوکن مین قلعدار و تہانہ دار بٹہاکر حضور مین چلا آوے

۱۷ ذیقعدہ کو شجاعت خان کابل کی قلعداری پر بہیجا گیا-

بادشاہ کا بیمار ہونا

۷ ذی الحجہ کو دفعۃ بادشاہ کا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

का पेशाब बंद होकर बुखार आना शुरूअ हुआ ७ दिन तक बीमारी दिन दिन बढ़ती रही खाना कुछ नहीं खाया गया जिससे कमज़ोरी ज़ियादा होगई मगर फिर तक़रूबख़ां की तजबीज़ से "पोदीने" और "शीरख़िश्त" का "सोरबा" दिया गया उससे कुछ तबीअत ठहरी और आसोज बदि २ को बादशाह ने लोगों की तसल्ली के लिये ख़्वाबगाह के झरोके में बैठकर तमाम नौकरों का सलाम लिया और शाहबुलंद इक़बाल दारा शिकोह का मनसब १०००० दुअस्पा सवारों के इज़ाफ़े से ५० हज़ारी ४०००० सवारों का कर दिया जिसमें ३०००० सवार दुअस्पा थे और १ किरोड़ दाम और बढ़ाकर इनाम के कुल २० किरोड़ दाम कर दिये और ७५०००० रुपये ज़कात के शाहजहानाबाद की सायर से माफ़ करके यह हुक्म दिया कि जहां हम हों वहां

پیشاب بند ہوکر بخار آنا شروع ہوگیا۔ سات دن تک بیماری روز بروز بڑہتی گئی کہانا کچہہ نہ کہایا جس سے ضعف بڑہ گیا مگر پہر تقرب خان کی تجویز سے پودینہ اور شیر خشت کے شوربہ کا استعمال ہوا اُس سے کچہہ طبیعت ٹہری اور ۱۰ ذی الحجہ کو بادشاہ نے بغرض رفع پریشانی خلایق کے جہروکے خوابگاہ مین بیٹہکر تمام نوکرون کا سلام لیا اور شاہ بلند اقبال کا منصب دس ہزاری دس ہزار سوار دو اسپہ کے اضافہ سے پچاس ہزاری چالیس ہزار کا کردیا جس مین تیس ہزار سوار دو اسپہ تے اور ایک کڑور دام اور بڑہا کر انعام کے کل بیس کڑور دام کر دئے اور ساڑہے سات لاکہہ روپے زکات کا شاہ جہان آباد کے سایر سے معاف کرکے یہہ حکم دیا کہ جہان ہم ہون وہان

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज़कात माफ़ रहै-

इस अरसे में जादों सुदि १३ को शाहज़ादे औरंगज़ेब की अरज़ी बेटा पैदा होने की खुशी में पहुंची बादशाह ने उसका नाम सुलतान मोहम्मद अकबर रक्खा और मोअज़्ज़म खां को वज़ीरायत से दूर करके उसको और महाबत खां वगैरा अमीरों को जो बीजापुर की मोहिम में तईनात हुवे थे जलदी हाज़िर होने का हुक्म लिखा और दूसरा वज़ीर मुकर्रर होने तक रायरायां को दीवानी के काम करने का हुक्म दिया-

सूरत के अखबार से बादशाह के हजूर में अरज़ हुई कि कायमबेग जो वकील होकर अस्तंबोल को गया था वहां से लौटकर हलब में आया और हलब के हाकिम मुरतिज़ा पाशा से दोस्ती पैदा करके उसकी एगायन से फंस गया

زکات معاف رہے

اس اثنا مین ۱۱ ذی الحجہ کو شاہزادہ اورنگ زیب کی عرضی باطلاع تولد فرزند کے پہونچی بادشاہ نے اُس کا نام سلطان محمد اکبر رکھا اور معظم خان کو بسبب وقوع بعض امور کے عہدہ وزارت سے معزول کرکے لکھا کہ معہ مہابت خان وغیرہ امرا متعینہ مہم بیجاپور کے جلد حضور مین حاضر ہو اور راے رایان کو تا تقرر وزیر دیگر کے دیوانی کے کام کرنے کا حکم دیا۔

وقایع سورت سے بادشاہ کی حضور مین عرض ہوئی کہ قائم بیگ جو سفیر ہوکر استنبول کو گیا تھا بعد مراجعت حلب مین آیا اور وہان کے حاکم مرتضےٰ پاشا سے دوستی پیدا کرکے اُسکی ایک کنیز مغنیہ سے پھنس گیا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

मुरतिज़ा पाशा ने अपनी लौंडियों की मारफ़त क़ायनबेग के ख़िदमतगारों को मिला कर उसके खाने में ज़हर मिलवा दिया जिससे वह अपने जमाई मोहम्मद हुसेन समेत मर गया-

बरस ३१वां

आसोज सुदि २ सं. १७१४ से
आसोज सुदि २ सं. १७१५ तक:

कातिक बदि ३ और ५ को बादशाह ने दरशन के झरोके में बैठ कर लोगों को दरशन दिये और कातिक बदि ६ को हवा बदलने के वास्ते आगरे की तरफ़ कूच किया शाहजहानाबाद की सूबेदारी और क़िले की हिफ़ाज़त ख़लीलुल्ला ख़ां को सौंपी गई-

बीजापुर की मोहिम-

दखन के अख़बार से मालूम हुआ कि शाहज़ादा औरंगज़ेब बहादुर हुक्म पहुंचने पर कातिक बदि १२ को वापस रवाने होकर पांचवें दिन बिदुर में पहुंचा और ९ दिन वहां रह कर

مرتضیٰ پاشا نے اپنی دوسری کنیزون کے ذریعہ سے قائم بیگ کے خدمتگارون کو بلاکر اسکے کہانے مین زہر ملادیا جس سے وہ معہ اپنے داماد محمد حسن کے مرگیا

برس اکتیسوان

۲۸ ستمبر ۱۶۵۸ء سے
۱۷ ستمبر ۱۶۵۹ء تک

۱۷ و ۱۹ محرم کو بادشاہ نے جہروکہ درشن مین بیٹھکر لوگون کو درشن دئے اور ۲۰ محرم کو تبدیل آب وہوا کے لئے آگرہ کی طرف کوچ کیا شاہجہان آباد کی صوبہ داری اور قلعہ کی حفاظت خلیل اللہ خان کے سپرد ہوئی

مہم بیجاپور

دکن کے وقائع سے معلوم ہوا کہ شاہزادہ اورنگ زیب بہادر بموجب حکم کے ۲۶ محرم کو اورنگ آباد کیطرف مراجعت کرکے پانچوین دن ظفرآباد بیدر مین پہونچا اور ۹ روز وہان ٹھہر

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

۱۰ صفر کو روانہ اورنگ آباد ہوا جہان ۱۴ کو پہونچا مگر اُسی دن اُس کی بیگم جو شاہنواز خان کی دختر تھی مرگئی اس لئے پانچ روز باہر رہ کر ۱۹ صفر کو اورنگ آباد مین داخل ہوا۔

دربار کا حال

بادشاہ ۸ صفر کو گھاٹ سوامی پر جو آگرہ سے تین کوس ہے پہونچے اور دس روز ٹھہرے یہان ماء اللحم اور مقوی دواؤن کے کھانے سے طبیعت علیل ہوگئی اور صحت بڑھنے لگی ۱۹ صفر کو شاہ بلند اقبال کی حویلی مین داخل ہوئے نو دن وہان رہکر ۲۸ صفر کو قلعہ مین گئے۔

۱۴ ربیع الاول کو انسٹھوان قمری برس لگا اُسکی خوشی کے علاوہ صحت یابی کی

कातिक सुदि १२ को औरंगाबाद को रवाने हुआ कातिक सुदि १५ को वहां पहुंचा उसी दिन उसकी बेगम जो शाहनवाज़ खां की बेटी थी मरगई इस लिये ५ दिन बाहर रहकर मंगसर बदि ५ को औरंगाबाद में दाख़िल हुआ—

दरबार का हाल.

बादशाह कातिक सुदि १० को घाट स्वामी पर पहुंचकर १० दिन तक ठहरे रहे जो आगरे से ३ कोस है यहां माउल्लहम और ताक़त की दवाईयों के खाने से तबीअत बहाल होगई और दिन दिन तन्दुरुस्ती बढ़ने लगी मंगसर बदि ५ को शाह बुलंद इक़बाल की हवेली में दाख़िल हुवे ९ दिन वहां रहकर मंगसर बदि ३० को क़िले में गये—

मंगसर सुदि १५ को ५९ वां बरस चांद्रमास के हिसाब से लगा उस की ख़ुशी के सिवाय आराम होने की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खुशी थी इसलिये उस दिन बड़ी ही धूमधाम का दरबार हुआ जिसमें शाह बुलंद इकबाल दाराशिकोह को बीमारी के दिनों में बराबर हाज़िर ख़िदमत रहने और अच्छी बंदगी करने के पलटे में १ किरोड़ रुपया २० लाख की १ कंठी मोतियों की और १४ लाख रुपये का दूसरा जवाहर सरपेच कलंगी ख़ासा बाज़ूबंद और जड़ाऊ तलवार इनायत हुई और मनसब में १० हज़ारी ज़ात का इज़ाफ़ा होकर बाक़ी के १०००० सवार भी दुअस्पा होगये जिससे उसका मनसब ६० हज़ारी ज़ात और ४०००० दुअस्पा सवारों का होगया इस मनसब की तनख़्वाह इनाम समेत ८३ किरोड़ दाम की मुकर्रर हुई जिसके २ किरोड़ साढे सात लाख रुपये सालियाना होते थे इसके सिवाय बिहार का सूबा और १०० घोड़े भी उसको दिये गये—

بہی خوشی تھی اس لئے اُس دن بڑی بہی دہوم دہام کا جشن ہوا اور اُس میں شاہ بلند اقبال کو خدمات ایام بیماری کے صلہ میں جب کہ ایکدم بہی علٰحدگی خدمت سے گوارا نہ کی تہی ایک کروڑ روپے نقد بیس لاکہہ کی ایک کنٹھی موتیوں کی اور چودہ لاکہہ کا دوسرا جواہر معہ سرپیچ و جیغہ و خنجر و بازو بند مرصع خاصہ کے عنایت ہوا اور منصب میں دس ہزاری ذات کا اضافہ ہوکر باقی کے دس ہزار سوار بہی دو اسپہ ہوگئے جس سے اُس کا منصب ساٹھہ ہزاری ذات اور چالیس ہزار سوار دو اسپہ کا ہوگیا اور طلب اس منصب کی معہ انعام کے ۸۳ کروڑ دام کی ہوئی جس کے دو کروڑ ساڑہے سات لاکہہ روپے سالانہ ہوتے تہے بہار کا صوبہ اور یکسو گھوڑے بہی اُسکو دئے گئے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

सुलतानसुलेमानशिकोहका
मनसब २हज़ारी १००० सवारके इ
ज़ाफ़ेसे १२हज़ारी १०००० सवारका
होगया और इतनाही इज़ाफ़ा सु
लतान सिपहरशिकोहकोभी मि
ला जिससे उसका मनसब १० ह
ज़ारीज़ात और ५००० सवारकाहोगया–

वज़ारतकुलजाफ़रखांकोब
ख़्शीगई और रायरायां केवास्ते–
हुक्महुआ कि हिसाबोंकेऊपरअ
पनेदस्तख़त कियाकरे और परव
नोंपरउसकी मोहर भीजाफ़रखां
कीमोहरके नीचेहुआकरे–

महाबतखां और एरजखां वग़ै
रा दखनसेआकर हाज़िरहुवे–

पोससुदि १४ कोअरज़हुई कि
मुल्लाअबदुलहकीम स्यालको
टीजो बड़ामोलवी था पोससुदि १३
को मरगया–

माहसुदि १२ को महाबतखांका
बुलकी सूबेदारी पर भेजागया–

سلیمان شکوہ کا
منصب دوہزاری ہزار سوار
کے اضافہ سے دس ہزاری دس
ہزار سوار کا ہوگیا اور اسیقدر
اضافہ سپہر شکوہ کو بھی ملا جس
سے اُس کا منصب دس ہزاری
ذات اور پانچہزار سوار کا ہوگیا–

وزارت کل جعفر خان کو بخشی
گئی اور رائے رایان کیواسطے
حکم ہوا کہ حسابون کے اوپر اپنے
دستخط کیا کرے اور پروانون پر
جعفر خان کی مُہر کے نیچے اُس کی
بھی مُہر ہوا کرے–

مہابت خان او
ایرج خان وغیرہ دکھن سے
حسب الطلب آکر حاضر ہوگئے

۱۳ ربیع الثانی کو عرض ہوی
کہ ملا عبدالحکیم سیالکوٹی جو بڑا عالم
اور فاضل تھا ۱۲ ماہ مذکور کو مرگیا–

۱۱ جمادی الاول کو مہابت خان
کابل کی صوبہ داری پر بھیجا گیا

बादशाह का छत्रभंग होना।

बादशाह ने मोहजाल से अपने चारों बेटों को अलग२ सूबे देकर राज काज के अधिकार भी दे दिये थे और बड़े शाहज़ादे के सिवाय बाक़ी तीनों को पूरब पच्छम और दक्खन में हुकूमत करने को भेज दिया था दाराशिकोह बड़ा था और उसका प्यार भी ज़ियादा था इसलिये उसको जुदा नहीं किया और हर वक़्त अपने पास रखकर भाईयों से मेल मिलाप रखने और नेक बरताव करने की ताकीद किया करते थे मगर होनहार कुछ और रही थी इस लिये मेल तो दूर रहा लोगों के बहकाने से उलटी ईर्षा दिनों में बढ़ रही थी जो अब एक दम से उघड़ गई क्योंकि बादशाह की बीमारी के दिनों में शाहबुलंद इक़बाल ने काग़ज़ों का आना जाना बंद कर दिया था इससे बादशाह

در بیان زوال سلطنت

بادشاہ نے فرط محبت سے اپنے چارون بیٹون کو الگ الگ ملک دیکر حل وعقد کے اختیارات بھی دیدئے تھے اور شاہزادہ داراشکوہ کے سوائے باقی تینون کو پورب پچھم اور دکھن مین حکومت کرنے کو بھیجدیا تہا داراشکوہ بڑا تھا اور اُس سے محبت بھی زیادہ تھی اس سبب سے اُسکو جدا نہ کیا تہا بلکہ ہر وقت اپنے پاس رکہکر اُسکو بہائیون سے اتفاق رکھنے اور نیک سلوک کرنے کی تاکید کیا کرتے تھے مگر شدنی کچھ اور ہی تہا اسلئے بجائے اتفاق کے بہائیون مین منافق لوگون کے بہکانے سے نفاق بڑھ رہا تہا اور اُسیطرح یہ ہوا کہ شاہ بلند اقبال نے بادشاہ کی بیماری کے دنون مین خطوط کی آمد و رفت بند کردی تھی اس سے بادشاہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के मरने की खबर तमाम हिन्दुस्ता
न में उड़ गई और शाह बुलंद इक़
बाल के भाई जिनको ईर्षा उस
के उरूज के साथ दिन दिन बढ़
ती जाती थी ताज और तख़्त
के वास्ते लड़ने को तैयार हुवे जि
सकी शुरूआत शाहज़ादे मुरा
दबख़्श ने की यानी बादशाही
दीवान मीर अली तकी को जो उ
से समझाया करता था अपने हा
थ से मार कर गुजरात में अपनी आ
ण धुहाई फेरी उधर शाह शुजा आ
बंगाले से फ़ौज लेकर बनारस त
क चला आया और ख़ालसे के
अकसर परगनों को दबा बैठा–

बादशाह ने मुराद बख़्श की तर
फ़ ज़ियादा ध्यान न देकर बड़े शाह
ज़ादे के कहने से पहिले शाह शुजा
अ के ऊपर सुलतान सुलेमान शि
कोह को राजा जयसिंघ की अतालि
क़ी में मये राजा अनिरुद्ध शेख़–

کے مرنے کی خبر تمام ہندوستان
مین اُڑگئی اور شاہ بلند اقبال کے
بہائی جنکا حسد اُسکے عروج کے
ساتہہ ساتہہ بڑہتا جاتا تہا تاج
و تخت کے واسطے لڑنے کو تیار
ہوئے جسکی اول بسم اللہ شاہزادہ
مراد بخش نے کی یعنے بادشاہی
دیوان میر علی تقی کو جو اُسے
سمجہایا کرتا تہا اپنے ہاتہہ سے
مار کر سکہ اور خطبہ اپنے نام کا
جاری کیا اور شاہ شجاع بنگالہ
سے فوج لیکر بنارس تک
چلا آیا۔ اور خالصہ کے اکثر
محالات پر قابض ہوگیا

بادشاہ نے مراد بخش
کے مفسدہ کی پروا نہ کرکے بڑے
شاہزادہ کے کہنے سے سلطان
سلیمان شکوہ کو راجہ
جیسنگہہ کی اتالیقی مین معہ
راجہ انرودہ و شیخ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फ़रीद और दिलेरख़ां वग़ैरा के २०००० सवारों से बिदा किया इस मौक़े पर शाह बुलंद इक़बाल ने भी अपने नायब बहादुरख़ां को ४ हज़ारी ज़ात और ३००० सवारों का मनसब दिलाकर बिहार की सूबेदारी पर भेजा इसी तरह ग़लती से अपने तमाम काम के आदमियों को बेटे के साथ भेज दिया-

जब यह लशकर बनारस में पहुंचा और लड़ाई शुरू हुई तो शाह शुजाअ अपना डेरा डंडा और तोशाख़ाना छोड़ कर भाग गया और दरया के रस्ते से पटने में पहुंच कर बादशाह को अरज़ी क़सूर माफ़ कराने के वास्ते भेजी बादशाह ने भी क़सूर माफ़ करके बहुत सी नसीहतें लिखीं और बंगाले की हुकूमत ब दस्तूर उसके पास बहाल रखी और सुलतान सुलेमान शिकोह को वापसी का हुक्म लिखा-

فرید و دلیر خان وغیرہ کے بیس ہزار سواروں سے شاہ شجاع کے اوپر بھیجا شاہ بلند اقبال نے بھی اپنے نائب بہادر خان کو چار ہزاری ذات اور تین ہزار کا منصب دلاکر بہار کی صوبہ داری پر روانہ کیا۔ اور اسیطرح غلطی سے اپنے تمام کار آمدنی آدمیون کو بیٹے کی کمک پر بھیجدیا۔

جب یہ لشکر بنارس مین پہونچا اور لڑائی شروع ہوئی تو شاہ شجاع اپنا خیمہ خرگاہ اور توشک خانہ وغیرہ چھوڑکر بھاگ گیا اور براہ دریا پٹنہ پہونچکر بادشاہ کو عرضی واسطے معافی قصورات کے بھیجی بادشاہ نے بھی قصور معاف کرکے بہت سی نصیحتین لکھین اور بنگالہ کی حکومت بدستور اسکے قبضہ مین بحال رکھی اور سلیمان شکوہ کو واپسی کا حکم لکھا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

फागण बदि १३ को बादशाह ने शाह बुलंद इक़बाल की अरज़ से शाह शुजाअ के ऊपर फ़तह पाने के इनाम में सुलेमान शिकोह का मनसब असल और इज़ाफ़े से २० हज़ारी ज़ात और १५००० सवार का, और राजा जयसिंघ का ६ हज़ारी ज़ात और ६००० सवार का और दिलेरखां का ३ हज़ारी ३००० सवार का कर दिया—

अब बाद: ह ने बिलकुल आराम होजाने से दिल्ली को वापस जाना चाहा तो दाराशिकोह ने अपने मतलब के लिये उसमें टांग डालकर कहा कि मुराद बख़्श ने बंदगी करना छोड़ दिया है इसलिये उसको बराड़ में जागीर दें और अहमदाबाद का सूबा उससे लेलें और न माने तो उसको पकड़ मंगावें उधर औरंगज़ेब कुतबुलमुल्क की पेशकश का रुपया

۲۶ جمادی الاول کو بادشاہ نے شاہ بلند اقبال کی عرض سے شاہ شجاع کے اوپر فتح پانے کے صلہ میں سلیمان شکوہ کا منصب اصل و اضافہ سے بیس ہزاری پندرہ ہزار سوار کا راجہ جیسنگھ کا چھ ہزاری چھ ہزار سوار کا اور دلیر خان کا تین ہزاری تین ہزار سوار کا کر دیا

اب بادشاہ نے بالکل آرام ہو جانے سے شاہجہان آباد کو مراجعت کرنا چاہا تو دارا شکوہ نے اپنی صلاح دولت کے لئے اسمین ڈہیل ڈال کر کہا کہ مراد بخش نے اطاعت کرنا چھوڑ دیا ہی اسلئے اسکو برار مین بدل دین اور احمد آباد کا صوبہ اس سے لین جو نہ مانے تو اسکو پکڑ ا منگوا دین اودہر اورنگ زیب قطب الملک کی پیشکش کا روپے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जंगकी तयारी में ख़र्च कर रहा है और सुख पूछने के बहाने से लशकर समेत इधर आया चाहिता है उस के पास से कुल्ल लशकर को पीछा बुलवालें और ख़ज़ाना भी मंगवालें॥

बादशाह का दिल्ल तो ऐसा करने को नहीं चाहिता था और न ऐसा करना मुनासब था लेकिन दाराशिकोह ने ज़ोर डाल कर लशकर वापस फिरवाने के लिये सज़ावल भिजवाये जो ऐन उस वक्त पर पहुंचे कि औरंगज़ेब बीजापुर फ़तह करने के लिये रवाने होनेवाला था इनके पहुंचते ही लशकर में खलबली पड़ गई और महाबत खां वगैरा बगैर रुखसत के शाहज़ादे को छोड़ कर चले आये मोअज़्ज़म खां और शाह नवाज़ खां भी आते थे लेकिन शाहज़ादे ने उनको पकड़ कर दौलताबाद के किले में भेज दिया और उनका माल

تیاری جنگ مین صرف کر رہا ہے اور عیادت کے بہانہ سے بعزم فساد ادہر آنا چاہتا ہے اسکے پاس سے کل لشکر کو واپس بلوالین اور خزانہ بھی منگوالین۔

ہرچند بادشاہ کی مرضی ایسا کرنے کی نہ تھی اور نہ ایسا کرنا صلاح دولت تھا لیکن شاہ بلند اقبال نے زور ڈالکر لشکر کو واپس لانے کے لئے سزاول بھجوائے جو عین اسوقت پر پہونچے کہ شہزادہ اورنگ زیب بیجاپور فتح کرنے کے لئے روانہ ہونے والا تھا سزاولون کے پہونچتے ہی اسکے لشکر مین کھلبلی پڑ گئی اور مہابت خان وغیرہ بلا رخصت اسکو چھوڑکر چلے آئے معظم خان میر جملہ اور شاہ نواز خان بھی آتے تھے لیکن شاہزادہ نے انکو پکڑکر دولت آباد کے قلعہ مین بھیجدیا۔ اور اُن کا مال

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

असबाब ज़बत कर लिया और बी
जापुर वालों से सुलह करके औ
रंगाबाद को कूच किया।
बादशाह ने नाराज़ होकर आप
ने ख़ासदस्तख़तों से लिखा कि
उन बेगुनाह सैयदों को छोड़ दो
और अपनी हद से क़दम बाहर-
मत रखो और शाहज़ादे मुरादब
ख़्श को लिखा कि हम मोहब्बत
पदरी से तुम्हारे क़सूरों से आंख
छुपाकर तुमको बराड़ का परगना
देते हैं वहां चले जाओ नहीं जाओ
गे तो सज़ा पाओगे इन फ़रमानों
के जवाब में दोनों जगह से उज़र
माज़रत लिखी आई तो भी बड़े
शाहज़ादे ने कह सुनकर राजा ज
सवंत सिंघ को हज़ारी ज़ात औ
र हज़ार सवार के इज़ाफ़े से ७ ह
ज़ारी ७००० सवार का मनसब १००
घोड़े और १ लाख रुपये रोकड़ औ
र मालवे की सूबेदारी दिलाकर बहुत

اسباب سب ضبط کر لیا اور
بیجاپور والون سے صلح کرکے
اورنگ آباد کیطرف کوچ کیا
بادشاہ نے اس
بات سے ناراض ہوکر بدستخط
خاص لکھا کہ اُن بے گناہ سیدون
کو چھوڑ دو اور اپنی حد سے
آگے قدم مت رکھو اور شہزادہ
مراد بخش کو لکھا کہ ہم بمقتضای
مہر پدری تمھاری تقصیرات
سے چشم پوشی کرکے برار کے
پرگنے دیتے ہین وہان چلے
جاؤ اگر نہ جاوگے تو سزا
پاؤگے - جواب مین دونو
نے معذرت لکھی لیکن شاہ
بلند اقبال نے تا ہم کہہ
سنکر راجہ جسونت سنگھ
کو ہفت ہزاری منصب
ایکسو گھوڑے ایک لاکھ
روپے نقد اور مالوہ کی
صوبہ داری دلاکر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सी फ़ौज से फागुण बदि ८ को उस
तरफ़ रवाने किया और क़ासमखां
को अहमदाबाद की सूबेदारी औ
र १ लाख रुपया दिलाकर फागु
ण सुदि १ को गुजरात की तरफ़ भि
जवाया और कहा कि दोनों सरदा
र उज्जैन में जाकर मिलें मुरादबख़
श जो बराड़ को न जावे तो जाकर
अहमदाबाद उससे ख़ाली करा
वें जब ये दोनों नादान सरदार उ
ज्जैन में पहुंचे तो मुरादबख़्श ब
हुत सा लश्कर लेकर इनसे ल
ड़ने को आया और फिर अकेला
लड़ना सलाह न देखकर शाहज़ा
दे औरंगज़ेब से जा मिला जो त
माम मुल्क की जमा कर लिये हु
वे बादशाह का मिज़ाज पूछने के
नाम से चला आ रहा था औरंग
ज़ेबने उज्जैन के पास गांव बलूच
पुरे में पहुंच कर डेरा करके बहुत
चाहा कि राजा रस्ता दे दे और सुलह

۲۲ جمادی الاول کو
روانہ فرمایا۔ اور سلخ جمادی
الاول کو قاسم خان کو
احمد آباد کی صوبہ داری اور
ایک لاکھ روپیہ نقد دلاکر
گجرات کی طرف رخصت کیا
اور فرمایا کہ دونون سردار
اُجین مین جاکر جمع ہون اگر
مرادبخش احمد آباد خالی نہ
کرے تو جاکر اُس سے خالی
کرادین جب یہہ دونون
ناتجربہ کار سردار اُجین مین
پہونچے تو مرادبخش بہت سا
لشکر لیکر اُن سے لڑنے کو آیا
اور پھر راستہ سے لوٹکر
اورنگ زیب سے جاملا جو
مع تمام ملکی فوج و لشکر
دکھن کے بادشاہ کی عیادت
کے نام سے چلا آتا تھا اُسے
اُجین کے پاس موضع بلوچپورہ مین
پہنچکر چاہا کہ راجہ جسونت سنگہ صلح

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करदेमगरजबउसनेनमानातो
३०००० सवारोंसेमैदानमेंआकर
लड़ाईशुरुअकीबादशाहीअमी
रोंनेबहुतबहादुरीकीयहांतककि
मुकन्दसिंघहाड़ाऔरअरजुनगौ
ड़शाहज़ादेकेलशकरकोचीरकर
उसकीसवारीकेहाथीतकजाप
हुंचेऔरबहादुरीवनमकख़्वारीक
हकअच्छीतरहसेबजालायेमग
रमददनःपहुंचनेसेदोनोंही५००र
जपूतोंसमेतनेकनामीकेसाथ
कामआयेउसवक़्तशाहज़ादेमुरा
दबख़्शनेहमलाकियाराजाऔ
रक़ासमखांदोतरफ़केदबावसेघ
बराकरभागनिकलेशाहज़ादेचार
पांचकोसतकपीछाकरकेउज्जैन
मेंदाख़िलहुवेऔर१दिनवहांठहर
करआगरेकीचलदिये-

बादशाहनेयहख़बरसुनकरअ
पनेलायकलड़कोंकोरोकनेकेलि
येजेठबदि१३कोआगरेसेख़ड़ालशकर

کرکے راستہ دیدے لیکن جب
راجہ نے نہین مانا تو تیس ہزار
سوارون سے حملہ کیا لڑائی
شروع ہوگئی۔ بادشاہی امیرون
نے بہت بہادری کی یہانتک
کہ مکند سنگہ ہاڈا ارجن گوڑ شہزادہ
کے لشکر کو چیر کر اُسکی سواری
کے ہاتھی تک جا پہونچے اور
شرط نمک وحق دلاوری کو اچھی
طرح سے بجالائے مگر مدد نہ پہنچنے
سے دونون ہی معہ پانسو آدمیون
کے نیکنامی کے ساتھہ کام آئے
اُسیوقت شہزادہ مراد بخش نے
بہی حملہ کیا راجہ اور قاسم خان
دو طرف کے دباو سے گہبرا کر
بہاگ نکلے شہزادہ اورنگ زیب اور
مرادبخش چار پانچ کوس تک تعاقب
کرکے اُجین مین داخل ہوئے اور ایکدن وہان
ٹہرکر اگرہ کو چلدئے۔ بادشاہ نے یہ خبر
سُنکر بچون کی مدافعت کیواسطے ۵ شعبان
کو ایک بڑا لشکر اگرہ سے شاہ بلند اقبال

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाहबुलंद इक़बालकी अफ़सरीमें
रवानेकिया और बिदाहोतेवक़्तहरे
कबादशाहीबंदों और बड़े शाहज़ादे
केनौकरोंकोइनामखिलअतऔ
रहाथीघोड़े वग़ैरेदिये और शाहबु
लंद इक़बालकोदेर तक छातीसे
लगाकरजानेकीरुख़सत और
फ़तहकीदुआदी और आंखोंमें आं
सूभरकरकहाकि चांदीके कटहरे
कीपोलसे रथपरसवारहोकरन
क़ारा बजाताहुआजावे और जब
तक कि शाहज़ादा दरवाज़ेसे बाह
र निकला बादशाह हैरतके दरि
यामेंडूबेहुवे लकड़ीके सहारे ख
ड़े खड़े उसकी तरफ़ देखतेरहे उ
सी वक़्त बेगमसाहिबने ख़त
लिखकर औरंगज़ेबके पास अप
ने बख़्शी मोहम्मदफ़र्रुख़के हा
थ भेजा जिसमें लिखाथा कि बड़े
भाई से जो वलीअहदभी है लड़
ना ज़ाहिर और बातिनमें बापसे

کی افسری میں روانہ کیا اور رخصت
کے وقت بادشاہی ملازموں اور
شاہ بلند اقبال کے نوکروں کو
انعام خلعت ہاتھی اور گھوڑے
وغیرہ بخشے اور سلطان داراشکوہ
کو دیر تک بغل گیر رہکر جانے
کی رخصت اور فتح کی دعا کرکے اور
آنسو بھر کر کہا کہ چاندی کے کٹہرے
سے رتھہ پر سوار نوبت بجاتا ہوا
جاوے اور جب تک کہ شاہزادہ
دروازہ سے باہر نکلا بادشاہ دریائے
حیرت میں ڈوبے ہوے لکڑی کے
سہارے کھڑے کھڑے اسکی طرف
دیکھتے رہے اور اسی وقت بیگم
صاحب نے ایک خط لکھکر اورنگ
زیب کے پاس اپنے بخشی محمد
فرخ کے ہاتھہ بھیجا جسکا مضمون
یہ تھا کہ بڑے بھائی سے
جو ولیعہد بھی ہے لڑنا ظاہر
اور باطن میں باپ سے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुश्ती करते है और यह बात सच्चे ध
र्म को मानने और खुदा को पहिचान
ने की नहीं है चाहिये कि अपने मा
लिक का हुक्म बिजा करने और इ
स रमज़ान के महीने में दोनो तरफ़
के मुसल्मानों के मरवाने से डर
कर जहां यह खत पहुंचे वहीं ठहर
जाओ और अपनी अरजें लिख
भेजो सो मंजूर करादी जावेंगी
जब यह खत औरंगज़ेब के पास
पहुंचा तो इसके साथ ही यह भी
खबर पहुंची कि शाहज़ादे दाराशि
कोह ने धौलपुर में पहुंचकर चंब-
ल के तमाम घाट रोक लिये हैं औ
रंगज़ेब उसी वक्त सवार होकर बा
ज़े ज़मीदारों के रस्ता बताने से नदी
को उतर गया और बख्शी को रुख
सत देकर बादशाह की खिदमत में
अरज़ी भेजी जिसमें लिखा था कि
बड़े शाहज़ादे ने आपको बेअख
तियार करके मेरी खराबी पर कमर

کشتی کرتا ہے اور یہ بات حق
پرستی اور خداشناسی سے بھی
بہت بعید ہے چاہیے کہ ولی نعمت
کے مقابلہ اور اس ماہ رمضان
مین طرفین کے مسلمانوں کے مارے
جانے سے احتراز واجب سمجھکر
جہان خط پہونچے وہین ٹھہر جاؤ
اور اپنی خواہشین لکھ بھیجو کہ
عرض کرکے منظور کرا دیجاوینگی
جب یہ خط اورنگ زیب کے
پاس پہنچا تو اُسکے ساتھ یہ بھی
خبر پہنچی کہ داراشکوہ نے دھولپور
مین پہونچ کر چمبل کے تمام گہاٹ
روک لئے ہین اورنگ زیب اُسی
وقت سوار ہوکر راتوں رات بعض
زمینداروں کی نشاندہی سے
ندی کو اُتر گیا اور بخشی مذکور کو
رخصت کرکے بادشاہ کو عرضی
لکھی کہ بڑے شاہزادہ نے
آپ کو بے اختیار کرکے میری
خرابی پر کمر باندہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बांधरक्खी है ऐन मौके पर जब कि बीजापुर की मोहिम मनःचाही खतम होनेवाली थी सख़्त ताकीद लश्कर को वापस बुलाने की लिखी और बग़ैर किसी तक़सीर के बराड़ का सूबा मुझ जैसे हुक्मबरदार बाले बेटे से उतार कर उस कपूत को दिलाया कि जो बहुतसी बेअदबी और अदूलहुक्मी कर चुका था इस पर भी सबर न करके जसवंतसिंह को मेरे मुक़ाबिले पर भेजा और यह चाहा कि रहथेली भर भी ज़मीन मेरे पास न रहै आप तो बेअख़्तियार हैं जो वह कहता है वही करते हैं और उसकी ख़ातिर से दूसरे बेटों को दुशमन समझ कर जैसा वह चाहता है हुक्म लिख देते हैं यह हाल देखकर मैंने यह बात ठानी है कि ख़ुद हाज़िर होकर जो असल हक़ीक़त है वह आपको समझाऊं मेरा इरादा आपकी

باندہ رکھی ہے عین موقع پر جب کہ بیجاپور کی مہم حسب دلخواہ ختم ہونے والی تھی تاکید شدید واپسی لشکر کی کی اور پھر بلا تقصیر کے براڑ کا صوبہ مجھ جیسے فرزند درست اعتقاد سے تغیر کر کے اُس ناخلف کو دلایا کہ جو بہت سی بےادبی اور عدول حکمی کر چکا تھا اور اس پر بھی صبر نہ کر کے جسونت سنگھ کو میرے مقابلہ پر بھیجا اور یہ قصد کیا کہ ہتھیلی بھر بھی زمین میرے پاس نہ رہے آپ بے اختیاری سے جو وہ کہتا ہے وہی کرتے ہیں اور اُسکی خاطر سے دوسرے بیٹوں کو دشمن سمجھکر جیسا وہ چاہتا ہے فرمان لکھ دیتے ہیں یہ حال دیکھکر میں نے یہ بات قرار دی ہے کہ خود حاضر ہوکر اصل حقیقت آپ کے ذہن نشین کروں سوائے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क़दमबोसी के सिवाय और किसी
तरह का नहीं है जो और तरह होता
तो राजा और उसके साथियों को प
कड़ लेना कितना बड़ा काम था अ
ब सुना जाता है कि शाह बुलंद इक़
बाल मुक़ाबिले के इरादे से धोलपु
र में पहुंचे हैं लेकिन मुझ सरीखे
स्याने दुशमन पर उनकी जीत हो
नेवाली नहीं है इसलिये बहत्तर य
ही है कि टाला देकर पंजाब को जो
उनकी जागीर में है चले जावें और
हज़ूरी कामों को मेरी राय पर छोड़
देवें कि फिर जैसे आपकी राय हो
गी किया जावेगा -

औरंगज़ेब ने यह अरज़ी रवा
ने करके लड़ने के वास्ते कूच कि
या उधर दाराशिकोह ने भी बादशा
ह के फ़रमाने के माफ़िक लशकर सज
कर लड़ाई में बहुत कुछ मज़बूती और
बहादुरी दिखाई मगर तक़दीर उ
ससे बदली हुई थी इसलिये सबके

قدمبوسی کے بیرا اور کوئی ارادہ نہیں ہے
جو ایسا ہوتا تو راجہ اور اُسکے
ہمراہیوں کو دستگیر کر لینا کتنا کام
تھا - اب سُنا جاتا ہے کہ شاہ
بلند اقبال دہولپور مین مقابلہ
کے ارادہ سے پہونچے ہین مگر
مجھہ جیسے دشمن پُرفن کے اوپر
اُنکا غلبہ ہونے والا نہین ہے
اس لئے بہتر یہ ہے کہ طرح دیکر
کچھہ عرصہ کے واسطے پنجاب کی
طرف جو اُنکی جاگیر مین ہے چلے
جاوین اور معاملات حضور میری
راے پر چھوڑ دین کہ پھر جیسے
آپکی راے ہوگی کیا جاویگا -

اورنگزیب نے عرضی
روانہ کرکے لڑائی کی تیاری کی ادہر
سے دارا شکوہ نے بھی بموجب
ارشاد بادشاہ کے صف بندی کرکے
بہادری اور جان بازی مین کسر
نہ رکھی مگر مشیت الٰہی اُس کے خلاف
تھی اس سبب سے سب کے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिल उससे फिरगये थे और दोस्त
दुशमन होगये थे तो भी रुस्तमखां
राव शत्रुसाल हाडा राजा रूपसिं
घ राठोड़ रामसिंह राजा सेवाराम
गौड़ और अरजुन वगैरा राजपूत-
सरदार भी बड़ी बहादुरी से लड़क
र काम आये औरंगज़ेब के हाथी
के पास थोड़े से ही आदमी रहग
ये थे तो भी वह अपनी जगह जमा
रहा और दाराशिकोह जल्दी कर
के अपने तोपख़ाने से आगे बढ़ा
तो बहुत लोग उसको छोड़कर
भाग गये तीस चालीस आदमि
यों से ज़ियादा उसके हाथी के आ
गे पीछे न रहे तब वह लाचारी से
भाग कर शाम के क़रीब आगरे में
पहुंचा और १ पहर से ज़ियादा न
ठहर कर लाहोर की तरफ़ चल दिया-
औरंगज़ेब फ़तह पाकर उस
दिन तो दाराशिकोह के लश्कर
की जगह ठहरा और दूसरे दिन =

دل پہر گئے اور دوست دشمن
ہوگئے تاہم رستم خان راو
سترو سال ہاڈا راجہ روپ سنگہ
راٹہور رام سنگہ راجہ سیوارام
گوڑ اور ارجن وغیرہ بڑی بہادری
کے ساتہہ لڑکر کام آئے اورنگ
زیب کے ہاتھی کے پاس تہوڑے
سے ہی آدمی باقی رہ گئے تھے
تاہم وہ اپنی جگہ پر جارہا اور
داراشکوہ جو جلدی کرکے اپنے
توپ خانہ سے آگے بڑہا تو بہت
لوگ اسکو چھوڑکر بہاگ
گئے تیس چالیس آدمی سے
زیادہ اُس کے ہاتھی کے آگے
نرہے تب وہ ناچار گردش
طالع سے فرار ہوکر شام کے قریب
آگرہ پہونچا اور ایک پہر سے
زیادہ نہ ٹھہر کر لاہور کی طرف چلدیا
اورنگ زیب فتح پاکر
اُسدن تو داراشکوہ کے لشکر کی
جگہہ ٹھہرا اور دوسرے دن

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

कूंचकरके तीसरे दिन आगरे के पा	کوچ کرکے تیسرے دن آگرہ کے
स बाग़ नूर महल में आ उतरा सब	پاس باغ نور محل مین اُترا سب
अमीर और वज़ीर बादशाह को छो	امیر اور وزیر بادشاہ کو چھوڑ
ड़कर इज़ाफ़ों के लालच से उसके	کر بطمع اضافہ مناسب اُس کے
पास हाज़िर होगये बादशाह ने इस	پاس حاضر ہوگئے بادشاہ نے
बात से दुख पाकर फ़ाज़िल खां के	اس بات سے ملول اور مکدر
हाथ औरंगज़ेब के पास फ़रमान	ہوکر فاضل خان کو معہ فرمان
भेजा और कुछ बातें ज़बानी भी	کے بھیجا اور کچھہ زبانی پیغام
कहलाईं जिनका खुलासा यह	بھی کہلائے خلاصہ یہ تھا کہ
था कि बहुत दिनों से हमारा दिल	ہمارا دل بہت دنون سے تمہارے
तुम्हारे देखने को चाहिता है मग	دیکھنے کو چاہتا ہے مگر تمہارا
र तुम्हारा यहांतक पहुंचकर भी	یہان تک پہونچکر بھی اپنے پدر
अपने बाप के देखने को न आना	پیر کے دیکھنے کو نہ آنا کہ جس
कि जिसने अभी एक सख़्त सद	نے ایک سخت صدمہ بیماری
मा बीमारी का उठाकर नयी ज़िंद	کا اُٹھاکر دوبارہ زندگی پائی
गानी पाई है सिवाय कठोरपने के	ہے سوائے سخت جانی اور
और क्या समझा जावे औरंगज़ेब	سُست مہری کے اور کیا سمجھا
ने बाद शुक्रये के लिखा कि मैं क़द	جاوے اورنگ زیب نے بعد
मबोसी के शौक़ में दरे दौलत तक	شکریہ کے لکھا کہ مین شوق قدمبوسی
तो पहुंच ही गया हूं हुज़ूर में भी किसी	مین در دولت تک تو پہنچ ہی گیا ہون
अच्छे महूर्त पर हाज़िर होजाऊंगा	حضور مین بھی کسی ساعت مسعود پر حاضر ہونگا

बादशाहने खुश होकर दूसरे दिन
फिर अफ़ज़लखां को बहुत सेज
वाहर देकर बादशाह के लाने को
भेजा मगर अब तो शाहज़ादा औ
र का और होगया था क्यों कि लोगों
ने उसको बादशाह की तरफ़ से ब
हका दिया था इस लिये फ़ाज़िल
खांने वापस जाकर जो देखा था
वह अरज़ कर दिया बादशाह ने तो
भी खलीलुल्लाखां को फ़ाज़िलखां
के साथ भेजकर फिर लिखा कि व
ह फ़रज़िंद तो हमेशा से अपने बा
प का तावेदार रहा है फिर अब इतने
कठोरपन का क्या सबब है फ़ाज़ि-
लखां तो बाहर खड़ा रहा और खली
लुल्लाखां ने खिलवत में जाकर
बादशाह को क़ैद करने और उनसे
क़िला व खज़ाना छीन लेने की-
सलाह दी औरंगज़ेबने मसलिह
त से खलीलुल्लाखां को तो क़ैद
कर दिया और फ़ाज़िलखां से कहा

بادشاہ نے خوش ہوکر دوسرے
دن پھر افضل خان کو بہت سے
جواہرات دیکر شاہزادہ کے لانے
کو بھیجا مگر ابتو شاہزادہ کچھ اور
اور ہی ہو گیا تھا کیونکہ لوگون
نے اسکو بادشاہ کی طرف سے
بہکا دیا تھا۔ اس لئے فاضل خان
نے واپس جاکر جو دیکھا تھا وہ
عرض کیا بادشاہ نے تاہم خلیل اللہ
خان کو فاضل خان کے ساتھ
بھیج کر پھر لکھا کہ وہ فرزند تو
ہمیشہ سے اپنے باپ کا رضا
جو اور فرمان بردار رہا ہے
پھر اب اسقدر بے مہری کا کیا
سبب ہے فاضل خان تو باہر
کھڑا رہا اور خلیل اللہ خان نے
خلوت مین جاکر بادشاہ کو قید کرنے
اور ان سے قلعہ اور خزانہ چھین
لینے کی صلاح دی اورنگ زیب
نے مصلحت دیکھکر خلیل اللہ خان
کو نظر بند کردیا اور فاضل خان سے کہا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि मुझको हज़रत की तरफ़ से तस्
ल्ली नहीं है मतकहीं हाज़िर होने प
र गुस्से से कुछ और सलूक करें
इस वास्ते मैं नहीं आसकता हूं —
फ़ाज़िलखां ने लौटकर सारा
हाल अरज़ किया तबतो बादशा
ह ने क़िले के दरवाज़े बंद कर लिये
और अपने ख़ैरख़्वाहों को जगह २
पहरे चौकी पर बैठाया औरंगज़ेब ने
रातको क़िला घेर लिया और तोपें
मारना शुरू अ किया अंदर वाले
एक रात दिन के घेरे से ही घबरा
उठे और नमकहरामी करके बहुत
से नीचे उतर गये और जो बाक़ी र
हे उन्होंने भी मिलावट करली बाद
शाह ने यह हाल देख कर फ़िर फ़ाज़ि
लखां को औरंगज़ेब के पास भेजा
और लिखा कि ख़ुदा जिसको चा
हता है मुल्क और फ़तह बख़्शता
है किसी ने अपने ज़ोर से कुछ
नहीं किया है हमारे ऊपर सख़्त सदमा

کہ مجکو حضرت کی طرف سے اطمینان
نہین ہے کہ مبادا بروقت ملاقات
براہ انتقام کچھ اور قصد نہ کرین
اسواسطے مین نہین آسکتا ہون
فاضل خان نے لوٹ کر
سب حال کہا تب تو بادشاہ نے
قلعہ کے دروازہ بند کر لئے اور
اپنے دولتخواہون کو جا بجا حفظ
وحراست پر مقرر کیا اورنگ
زیب نے رات کو محاصرہ کر لیا
اور توپین مارنا شروع کین اندر والے
ایک رات اور ایک دن مین ہی گھبرا
اُٹھے اور نمک حرامی کرکے
بہت سے تو نیچے اوتر گئے
اور جو باقی رہے اُنہون نے
سازش کر لی بادشاہ نے
یہ حال دیکھکر پھر فاضل خان کو
بھیجا اورنگ زیب کو لکھا کہ
خدا جسکو چاہتا ہے ملک اور
فتح بخشتا ہے کسی نے اپنی قوت سے
کچھ نہین کیا ہے ہمارے اوپر عجب ماجرا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुज़र रहा है ज़मानेने हमारे सत्ता
नेमें कोई कसर नहीं रक्खी है बाप
की मामता और बहन की मोहब्ब
त तेरे पत्थर जैसे कडे. दिलपर कुछ
असर नहीं करती है अब हमने बाद
शाही छोडी और १ कोने में बैठकर
खुदा को याद करते हैं यह राज जो
चाहे सो ले तू मतलबी लोगों के
बहकाने से क्यों खुद को बदनाम
और हमको हलका करता है यह दु
नया दारु लमकाफ़ात है (यानी
कोई जैसा करता है वैसा पाता है)
अगर तू इस संसार का भरोसा न
करके खुदा और रसूल के हुक्मों के
माफ़िक अपने बाप की बंदगी करे
गा तो खुदा और खुदा की मखलू
क़ के नज़दीक नेकनाम होगा-
इसके जवाब में औरंगज़ेबने अ
र्ज़ी लिखी कि आपकी नाराज़ी
के डर से मुझको वहमने घेर रक्खा
है हां जो आप महरबानी करके

گزر رہا ہے فلک نے کوئی
دقیقہ آزار کا نہیں اٹھا
رکھا ہے باپ کی کشش اور
بہن کی محبت تیرے سخت دلپر
کچھ اثر نہیں کرتی اب ہمنے
سلطنت چھوڑی اور ایک
کونے میں بیٹھ کر خدا کی یاد
کرتے ہیں اب یہ ملک جو چاہے
سوے تو کیوں خود غرضوں
کے کہنے سے خود کو بدنام اور
ہمکو خفیف کرتا ہے دنیا دار المکافات
ہے اگر تو اس کو بے اعتبار سمجھکر
احکام شرع کے بموجب اپنے
باپ کی بندگی کرے گا۔ تو
عند اللہ ماجور اور عند
الناس مشکور ہوگا۔ اس کے
جواب میں اورنگ نے عرضی
لکھی کہ آپ کی ناراضی کے
لحاظ سے مجکو وہم
نے گھیر رکھا ہے اگر
آپ مہربانی کرکے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

क़िलेके दरवाज़ेकी कुंजियां मेरे आदमियोंको सौंप देवें तो मैं पूरीतसह्लीसे हाज़िर होकर अपने क़सूरोंका पलटा करूं और आपको राज़ी रखकर कभी किसीतरह की तकलीफ़ न दूं -

बादशाह ने इस अरज़ीके पहुंचतेही लाचारीसे तमाम क़िला खाली कर दिया उसीदम औरंगज़ेबके आदमी जगह २ बैठगये खज़ानों और कारखानोंपर मोहरें लग गईं बादशाह के पास लोगों का आना जाना जारी न रहा और वह क़िला उनके वास्ते क़ैदखाना होगया और वे बड़ी तंगी से अपनी बाक़ी उमर तेर करने लगे -

कैसे खेदकी जगह है कि शाहजहां बादशाह जिनको ज़माने ने हरतरह से मदद देकर हरा भरा कर रखा था और जो बेटों के मोहजाल में फंसकर उसके नतीजेको

قلعہ کے دروازے میرے آدمیوں کے سپرد کریں تو میں باطمینان تمام حاضر ہوکر تلافی تقصیرات مافات کرونگا اور آپکی رضامندی کو مقدم سمجھکر کبھی کسی صورت سے آپکی ہتک اور تکلیف کا روادار نہونگا۔

بادشاہ نے اس عرضی کے پہونچتے ہی مجبوراً تمام قلعہ خالی کردیا اسی دم اورنگ زیب کے آدمی جابجا بیٹھ گئے خزانوں اور کارخانوں پر مہریں لگ گئیں بادشاہ کے پاس لوگوں کی آمدو رفت بند ہوگئی پس وہ قلعہ انکے واسطے قیدخانہ ہوگیا اور وہ بڑی تلخی سے اپنی بقیہ عمر بسر کرنے لگے

کیسی عبرت کا مقام ہے کہ شاہجہان بادشاہ جسکو زمانے نے طرح طرح سے کامیاب اور کامران کر رکھا تھا اور جو اپنے بیٹوں کی محبت میں مال کار کو

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चले हुवे थे एकदम तक़दीर के पल
ट जाने से किसी लायक़ नहीं रहे
जिनका हुक्म हज़ारों कोसों में च
लता था और जिनकी फ़ौज ४०००
से ज़ियादा थी वह ऐसे लाचार औ
र बेबस हुवे कि अपने घर की ह
िफ़ाज़त न कर सके जिस सल्त
नत के वास्ते उन्होंने अपने बे
गुनाह भाईयों की जान ली थी व
ह यों बेवफ़ाई करके उनको बुरे
हालों छोड़ गई इनके परदादा हु
मायूं बादशाह को जो फ़रज़न्दाईयों
के साथ हद से ज़ियादा महरबानी
करने का मिज़ाज था उससे ग़ाफ़ि
ल रह कर इन्होंने जो अंधाधुंध
मोहब्बत अपने बेटों के साथ की
थी उसका नतीजा उससे भी ब
दतर पाया जब उन्होंने अपने बेटे
(औरंगज़ेब) को लिखा था कि
यह दुनिया दारुल मुकाफ़ात है
तो उस वक़्त उनका दिल ज़रूर

بہولا ہوا تہا ایکدم مین تقدیر کے
پلٹ جانے سے کچھ لایق نرہا
جس کا حکم ہزارون کوس مین
چلتا تہا اور جسکی فوج چار
لاکہہ سے زیادہ تہی وہ ایسا
مجبور اور بے بس ہوا کہ اپنے
گہر کی بہی حفاظت نہ کر سکا جس
سلطنت کے واسطے اُس نے
اپنے بے گناہ بہائیون کی جان
لی تہی وہ یون بیوفائی کرکے
اسکو بحال تباہ چہوڑ گئی اُس کے
پردادا ہمایون بادشاہ کو جو
بہائیون کے ساتہہ حد سے زیادہ
مہربانی کرنے کا نتیجہ ملا تہا اُس سے
غافل رہ کر جو اُس نے اپنے
بیٹون کے ساتہہ اندہا دہند
محبت کی اُس کا پہل اُس سے
بہی بدتر پایا جب اُس نے اپنے
بیٹے کو لکہا تہا کہ یہہ دنیا
دار المکافات ہے تو
اُسوقت اُس کا دل

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनसे पुकार २ कर कहता होगा कि यह बदला उस बरताव का है कि जो तूने अपने बाप से बरताया बाप से बाग़ी होना इन बादशाहों के खानदान में कई पीढीयों का विरसा यानी दायभाग था पहिले जहांगीर ने अपने बाप अकबर से बग़ावत की मगर १ परदे के साथ—फिर शाहजहां ने इस धड़ल्ले से की कि बाप के ऊपर चढ़ कर गये हज़रत औरंगज़ेब सब में सपूत निकले कि तख़्त और ताज छीन कर बाप को क़ैद ही कर दिया—

बाक़ी हाल इस बादशाह का औरंगज़ेब की तवारीख़ में लिखा जावेगा—

پکار پکار کر اس سے کہتا ہوگا کہ یہ پاداش اس سلوک کا ہے جو تو نے اپنے باپ جہانگیر سے کیا تھا باپ سے بغاوت کرنا خاندان مغلیہ مین چند پشت کا ورثہ تھا پہلے جہانگیر نے کی مگر ایک حجاب کے ساتھہ پھر شاہجہان نے اس دھڑلے سے کی کہ باپ کے اوپر چڑھ کر گیا حضرت اورنگ زیب سب مین سپوت نکلے کہ سلطنت چھین کر باپ کو قید ہی کر دیا۔

باقی حال اس بادشاہ کا اورنگ زیب کی تواریخ مین لکھا جاویگا۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शेष संग्रह.

अब कुछ फुटकर हाल शाहजहां के राज्य के लिखे जाते हैं जो बहुत ज़रूरी हैं-

अमलदारी.

शाहजहां की अमलदारी अकबर और जहांगीर से बहुत बढ़ गई-थी उनकी सल्तनत की लंबाई लाहुरी बंदर से जो ठठ्ठे के पास है सिलहट तक २००० कोस के क़रीब थी और चौड़ाई क़िले बस्त की सहद से जो ईरान की अमलदारी से मिली हुई थी ओड़से के क़िले तक जो क़ुतुबुल्मुल्क की अमलदारी के पास था १५०० कोस के क़रीब थी शाहजहानी एक कोस ५००० गज का था और गज ४२ उंगल का पच्छम में ईरान और तूरान से उत्तर में काशग़र और तिब्बत से दक्खन में गोलकुंडे और बीजापुर से पूरब में मग और रखंग यानी ब्रम्हा और अराकान से

تتمہ

اب کچھہ متفرق حالات شاہجہان بادشاہ کے عہد کے لکھے جاتے ہین جو بہت ضروری ہین

عملداری

شاہ جہان کی عملداری اکبر اور جہانگیر سے بہت بڑھ گئی تھی چنانچہ اُنکی سلطنت کا طول لاہری بندر سے جو ٹھٹھہ کے پاس ہے سلہٹ تک دو ہزار کوس کے قریب تہا اور عرض قلعہ بست توابع صوبہ کابل سے جسکی سرحد ملحق بحدود ایران تھی قلعہ اڑیسہ تک جو عملداری قطب الملک سے ملا ہوا تہا قریب ڈیڑہ ہزار کوس کے تہا ایک کوس پانچ ہزار گز شاہجہانی کا تہا اور ایک گز ۴۲ انگل کا۔ پچھم مین ایران توران سے اُتر مین کاشغر اور تبت سے دکھن مین ملک گولکنڈہ اور بیجاپور سے پورب مین مگ اور رخنگ یعنی

बलख और बदख्शां इस लंबाई में शामिल नहीं है-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सरहद मिलती थी यानी नदी सूबे बंगाल और मुल्क मग को अलग करती थी कुतबुल्मुल्क की अमलदारी से आगे बीजापुर के शाह आदिलखां की सलतनत थी और दोनो हर साल खिराज दिया करते थे-

यह इतना लंबा चौड़ा राज २२ सूबों में बंटा हुआ था और एक २ सूबे में कई कई सरकारें थी और सरकारों के नीचे परगने थे कुल परगने २२ सूबों मे ४३५० थे इनमें बाज़े २ परगने दिल्ली और लाहोर के सूबों में दस दस लाख की पैदा के थे-

सूबेदार और अमला·

हर सूबे में एक सूबेदार रहता था जिसके पास दीवान बख्शी और वाक़ा नवीस बादशाह के हज़ूर से मुक़र्रर होकर जाते थे जो अपना २ काम बादशाही ज़ाबते से उस के हुक्म से करते थे-

برہما اور ارکان سے سرحد ملتی تھی یعنی ندی صوبہ بنگالہ و ملک مگ کی حد فاصل تھی اور [illegible] کے قبضہ میں تھا قطب الملک کے علاقہ سے آگے بیجاپور کے عادلخان کی سلطنت تھی اور دونو ہر سال خراج دیا کرتے تھے

یہ کل سلطنت ۲۲ صوبوں میں منقسم تھی اور ایک ایک صوبہ میں کئی کئی سرکاریں یعنی ضلع کمشنری اور ہر سرکار کے ماتحت محال یعنے پرگنہ تھے کل پرگنہ ۲۲ صوبوں میں ۴۳۵۰ تھے ان میں بعض بعض پرگنہ دہلی اور لاہور کے صوبوں میں دس دس لاکھ روپیہ کی جمع کے تھے

صوبہ دار و عملہ

ہر صوبہ میں ایک صوبہ دار رہتا تھا جس کے پاس بادشاہ کی طرف سے دیوان بخشی اور وقائع نویس متعین رہا کرتے تھے جو اپنا اپنا کام اسکے حکم سے بموجب بادشاہی ضابطہ کے کیا کرتے تھے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोतवाल और परगनों में करोड़ी	کوتوال اور پرگنون مین کروری
रहते थे फौजदार पुलिस का अमी	رہتے تہے کروری بجای تحصیلدار
न माल का और करोड़ी तहसील	کے ہتے فوجدار پولیس کا امین
का काम करता था—	مال کا اور کروری تحصیل کا کام کرتا تہا
जमांबंधी।	**جمعبندی**
तहसील जमां का बंदोबस्त अ	تحصیل جمع کا بندوبست
कसर पुख़्ता था। जमां पैमायश	اکثر پختہ تہا جمعبندی پیمایش
से ज़मीन की हैसियत पर मुकर्रर	سے زمین کی حیثیت پر مقرر
होती थी काल बरस और बरसात	ہوتی تہی قحط سالی اور بارش
कम होने के मौसमों में जमां भी	کم ہونے کے دنون مین جمع بہی
कम करदी जाती थी—	کم کردیجاتی تہی
आमदनी।	**آمدنی**
कुल सूबों की ज़मीन की जमां	کل صوبون کی جمع یعنی زمینی
९ अरब ८० किरोड़ दाम की थी जि	آمدنی ۸ ارب اور ۸۰ کرور دام کی تہی
सकी तफ़सील नीचे लिखी जाती है	جسکی صوبہ وار تفصیل درج ذیل ہے
१ सूबा देहली। १०० किरोड़ दाम	۱ صوبہ دار الخلافت شاہجہان آباد ۱۰۰ کرور دام
२ सूबा आगरा। ६० किरोड़ दाम	۲ صوبہ مستقر الخلافت اکبر آباد ۹۰ کرور دام
३ सूबा लाहोर ६० किरोड़ दाम	۳ صوبہ دار السلطنت لاہور ۹۰ کرور دام
४ सूबा अजमेर ६० किरोड़ दाम	۴ صوبہ اجمیر ۶۰ کرور
५ सूबा दौलताबाद ५० किरोड़ दाम	۵ صوبہ دولت آباد ۵۷ کرور دام
६ सूबा बराड़ ५३ किरोड़ दाम	۶ صوبہ برار ۵۳ کرور دام

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

७ सूबागुजरात ५३ किरोड़.दाम	۷ صوبہ احمد آباد ۵۳ کروڑ دام
८ सूबाबंगाला ५० किरोड़.दाम	۸ صوبہ بنگالہ ۵۰ کروڑ دام
९ सूबाइलाहाबाद ४० किरोड़.दाम	۹ صوبہ الہ آباد ۴۰ کروڑ دام
१० सूबामालवा ४० किरोड़.दाम	۱۰ صوبہ مالوہ ۴۰ کروڑ دام
११ सूबाखानदेस ३० किरोड़.दाम	۱۱ صوبہ خاندیس ۳۰ کروڑ دام
१२ सूबाअवध ३० किरोड़दाम	۱۲ صوبہ اودھ ۳۰ کروڑ دام
१३ सूबातिलंगाना ३० किरोड़.दाम	۱۳ صوبہ تلنگانہ ۳۰ کروڑ دام
१४ सूबामुलतान ३० किरोड़.दाम	۱۴ صوبہ ملتان ۳۰ کروڑ دام
१५ सूबाउड़ीसा २० किरोड़.दाम	۱۵ صوبہ اڑیسہ ۲۰ کروڑ دام
१६ सूबाकाबुल १६ किरोड़.दाम	۱۶ صوبہ کابل ۱۶ کروڑ دام
१७ सूबाकशमीर १५ किरोड़.दाम	۱۷ صوبہ کشمیر ۱۵ کروڑ دام
१८ सूबाठठ्ठा ८ किरोड़.दाम	۱۸ صوبہ ٹھٹھہ ۸ کروڑ دام
१९ सूबाबलख ८ किरोड़दाम	۱۹ صوبہ بلخ ۸ کروڑ دام
२० सूबाकंधार ६ किरोड़.दाम	۲۰ صوبہ قندھار ۶ کروڑ دام
२१ सूबाबदख़शां ४ किरोड़.दाम	۲۱ صوبہ بدخشان ۴ کرور دام
२२ विलायतबगलाना २ किरोड़.दाम	۲۲ صوبہ بگلانہ ۲ کروڑ دام
यहजमासाल २० जलूसीमेंथी ४० दामका १) गिनाजाताथा जिससे ८ अरब ८० किरोड़.दामके २२ किरोड़रुपयेहोतेथे—	یہ جمع ۲۰ سال جلوسی میں تھی ۴۰ دام کا روپیہ محسوب ہوتا تھا جس سے آٹھ ارب ۸۰ کروڑ دام کے ۲۲ کروڑ روپے ہوتے تھے
पहिलेयानीजबबादशाहतख़्त	پہلے یعنی جب بادشاہ تخت نشین

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परबैठे थे तो ७ किरोड़ का ही मुल्क या और ८० किरोड़ दाम की आमदनी के ६ सूबे बादशाह के अहद में फ़तह हुवे जिनके नाम येहैं -

१ सूबे दौलताबाद के ज़िले २९ किरोड़ दाम
२ सूबा तिलंगाना ३० किरोड़ दाम
३ सूबा बलख ८ किरोड़ दाम
४ सूबा कंधार ७ किरोड़ दाम
५ सूबा बदख़्शां ४ किरोड़ दाम
६ विलायत बगलाना २ किरोड़ दाम

और १ अरब दाम की जमा बादशाह के अदल और इन्तज़ाम से २० बरसों में बढ़ी इस तरह कुल राज की जमा ८ अरब ८० किरोड़ दाम की होगई थी जिसमें बादशाही ख़ालसा १ अरब २० किरोड़ दाम का था उसकी जमा १२ महीने में बैठती थी इतना ख़ालसा पहिले कभी नहीं था -

ख़ज़ाना

जो ख़ज़ाना अकबर बादशाह ने ५० बरस में जमा किया था उतना

ہوئے تھے تو سات ارب دام کا ہی ملک تھا اور ۸۰ کروڑ آمدنی کے صوبہ بادشاہ کے عہد مین فتح ہوئی جو درج ذیل ہین -

(۱) اضلاع صوبہ دولت آباد ۲۹ کروڑ دام
(۲) صوبہ تلنگانہ ۳۰ کروڑ
(۳) صوبہ بلخ ۸ کروڑ
(۴) صوبہ قندہار ۷ کروڑ
(۵) صوبہ بدخشان ۴ کروڑ
(۶) ولایت بگلانہ ۲ کروڑ

اور ایک ارب دام کا اضافہ ۳۰ سال مین علاوہ چارون صوبون دکن کے ہوا اس طرح کل ممالک محروسہ کی جمع ۸ ارب ۸۰ کروڑ دام کی ہوگئی تھی جس مین بادشاہی خالصہ ایک ارب ۲۰ کروڑ دام کا تھا جس کی جمع بارہ مہینے تین کروڑ روپے کی بیٹھتی تھی اتنا خالصہ پہلے کبھی نہین تھا -

خزانہ

جو خزانہ اکبر بادشاہ نے پچاس برس کی سلطنت مین جمع کیا تھا وہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किसीबादशाहनेनहींकियाथाजहां
गीरनेअपने २२ बरसकेराज़मेंब
हुतसा उसमेंसे खरचकियाशाहजहांके
ज़मांनेमें बेहिसाबरुपयाफौज़
बंदी इनाम और बड़ी २ इमारतों
केबनानेमें खरचहुआतेभीमुल्क
कीआबादी और रैयतकीआसू
दगीसेबहुतसारुपयाखज़ाने
मेंजमाथा और जवाहरतो इत्त
नाथा कि कुल दुनयाकेबादशा
हांकेपास नहीं होगा —

७ किरोड़ काजवाहरखासा
था जिसमेंसे २ किरोड़ कातोशाह
ज़ादोंकोइनायतहोगयाथा और
५ किरोड़ कामोजूदथा जिसमें २
किरोड़ कातो बादशाहके पहन्ने
केवास्ते खिदमतगारोंकेपासरह
ताथा और ३ किरोड़ काचेलोंकेह
वालेथा और यहसबजवाहर १००
बरसमेंइकट्ठाहुआथा —

کسی بادشاہ کو میسر نہین ہوا تھا
جہانگیر بادشاہ نے اپنی ۲۲ سالہ
سلطنت مین بہت خرچ کیا
شاہجہان کے عہد مین آبادی ملک
اور رفاہ رعایا کی وجہ سے باوجود
کثرت مصارف سپاہ و انعام و
تعمیر عمارات عالیہ اسقدر خزانہ جمع
تہا کہ جس کا کچھہ حساب نہین اور
جواہرات تو اسقدر تھے کہ بقول
مؤلف بادشاہنامہ کل فرمانروایان
عالم کے پاس موجود نہون گے
سات کروڑ کا جواہر خاصہ تھا
جس مین سے دو کروڑ تو بادشاہزادون
کو عطا ہوگیا تہا اور پانچ کروڑ کا
موجود تہا اس مین سے دو کروڑ
کا بادشاہ کے پہننے کے واسطے
خدمتگارون کے پاس رہتا تہا اور
تین کروڑ کا چیلون کی تحویل مین
تھا یہ اسقدر جواہر ایک سو برس
مین جمع ہوا تھا۔

बादशाहकेपास १ सरपेचलालों का — بادشاہ کے پاس ایک سرپیچ لعل کا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

का १२ लाख रुपयोंका और १ हार मो
तियोंका १६ लाख रुपयेका और
१ हार २० लाख रुपयेके ये ये चीजें
अकबर बादशाहकी बनवाई हुई
थीं जहांगीर और शाहजहांने भी
इनमें कुछ इज़ाफ़ा किया था -

सिक्के

बादशाही टकसालें राजधानी
के सिवाय अकसर सूबोंमें थीं जि
नमें सोने और चांदी के सिक्के पड़ा
करते थे और उनके नाम भी अ
लग अलग थे -

मोहर - असरफ़ी
आधी मोहर - थान
पाव मोहर - चरण
आधा रुपया - दरब
पाव रुपया - निसार

इनके सिवाय हज़ार २ और
पांच पांच सो तोलेके भी मोहर
और रुपये होते थे और वे इना
मोंमें दिये जाते थे -

قیمتی بارہ لاکھ روپیہ اور ایک
موتیون کی مالا قیمتی ۱۶ لاکھ روپیہ
اور مالا قیمتی ۲۰ لاکھ روپیہ کی
تھین اور یہ چیزین اکبر بادشاہ کی
بنوائی ہوئی تھین جہانگیر اور شاہجہان
نے بھی انمین کچھ اضافہ کیا تھا

سکہ

بادشاہی ٹکسالین دار السلطنت
کے سوائے اکثر صوبون مین بھی
تھین جنمین سونے چاندی اور تانبہ
کے سکہ تیار ہوا کرتے تھے اور اونکے
نام بھی خاص طور کے تھے - مثلاً

مہر — اشرفی
آدھی مہر — دہن
پاو مہر — چرن
آدھا روپیہ — درب
پاو روپیہ — نثار

انکے علاوہ ہزار ہزار اور پانچ
پانچسو تولہ کی بھی مہر اور روپیے
ہوتے تھے اور وہ بخششون
مین دئے جاتے تھے -

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खरच

खरच भी शाहजहां के वक्त में ब
हुत हुआ फ़ौज खरच के सिवाय इ
नाम और बख़्शिश २० बरस में
९ किरोड़ ५० लाख की हुई थी और
२ किरोड़ ५० लाख रुपया उन इमा
रतों में खरच हुआ था जो अपनी
जवाब आपही थीं उन में से ख़ास ख़ा
स नीचे लिखी जाती हैं—

१ आगरे की इमारतें १ किरोड़ १० लाख रुपे
२ आगरे के किले में संग मरमर की म
  सजिद और दौलतखाना ६० लाख
३ ताजबीबी का रोज़ा ५० लाख
४ दिल्ली की इमारतें मसजिद के
  सिवाय ५० लाख
५ लाहोर के बाग़ और इमारतें ५० लाख
६ काबुल की इमारतें १२ लाख
७ अजमेर और अहमदाबाद की १२ लाख
८ कशमीर की इमारतें ८ लाख
९ कंधार वस्त और ज़मीनदावर के
  कोट वग़ैरा ८ लाख रुपये

مصارف

خرچ بھی شاہجہان کے وقت مین
بہت ہوا فوج خرچ کے سواے
انعام اور بخشش ۲۰ برس مین ۹ کروڑ
پچاس لاکہہ روپیہ نقد وجنس کی
ہوئی تھی اور دو کروڑ پچاس لاکہہ
روپیہ اُن عمارتون مین خرچ ہوا
تھا جو لاثانی ہین خاص خاص
عمارتون کی تفصیل یہہ ہے

(۱) عمارات اگرہ ایک کروڑ دس لاکہہ روپے
(۲) مسجد سنگ مرمر قلعہ و دولت خانہ ۶۰ لاکہہ
(۳) روضہ تاج گنج ۵۰ لاکہہ
(۴) عمارات شاہجہان آباد ۵۰ لاکہہ
(۵) عمارات و باغات لاہور ۵۰ لاکہہ
(۶) عمارات کابل ۱۲ لاکہہ
(۷) عمارات اجمیر و احمدآباد ۱۲ لاکہہ
(۸) عمارات کشمیر ۸ لاکہہ
(۹) احصار قندہار و بست و زمینداور ۸ لاکہہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इनाम और खैरात

इनाम भी कसरत से दिये जाते थे पहिले जलूसी बरस में १ किरोड़ ८० लाख रुपया बख़्शा गया था और ११ वें बरस में १९ लाख इसी तरह हमेशा बख़्शा जाता था जो मौक़े २ पर लिखा जा चुका है नक़द के सिवाय ज़मीन भी बख़्शी जाती थी पहिले साल में ४ लाख बीघा ज़मीन और १२० गांव खैरात किये गये थे और यह तरीका खैरात का हिन्दुओं से बहुत मिलता था—

इनाम देने का १ अजीब ढंग यह भी था कि जिस से बादशाह खुश होते थे उसको रुपयों के बराबर तोल कर वह रुपया उसी को दिला देते थे कई इनाम पाने वालों का तोल नीचे लिखे माफ़िक था—

१ तालिबाय किलीम (शायर) ५०००)
२ मोहम्मद जान कुदसी (शायर) ५५००)
३ जगनाथराय महाकवि (त्रिस्थली) ४०००)

انعام اور خیرات

انعام بھی کثرت سے دئے جاتے تھے چنانچہ سال اول جلوس میں ایک لاکھ کروڑ اسی لاکھ روپیہ بخشا گیا تھا اور سال گیارہ جلوسی مین ۱۹ لاکھ علے ہذالقیاس زمین اس کے علاوہ دیجاتی تھی سال اول جلوس مین چار لاکھ بیگھہ زمین اور ایک سو بیس گانون خیرات کئے تھے اور یہ طریقہ خیرات کا ہندوون کے رواج سے بہت کچھ ملتا جلتا تھا۔

انعام دینے کا ایک عجیب ڈھنگ یہ بھی تھا کہ جس سے بادشاہ خوش ہوتے اسکو روپیون کے برابر تول کر وہ روپیہ اسی کو دلا دیتے تھے ان چند انعام پانے والون کا وزن حسب ذیل ہوا تھا۔

طالبائے کلیم صمـ
۲ محمد جان قدسی صمـ
۳ جگنا تھ مہا کب راے للعـ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४ जमालखां क़िरावली मीरशिकार ८०००
५ मुल्ला अबदुलहमीद बादशाहनामे का बनानेवाला ३०००
६ मुल्ला अबदुलहकीम स्यालकोटी ६०००
७ क़ाज़ी मोहम्मद अफ़ज़ल ६०००
८ आरिफ़ ख़िदमतगार ७०००

इनसब में जियादा भारी जमालखां और सबसे हलका मुल्ला अबदुलहमीद था —

रुपया लुटाने का भी रिवाज था जब बादशाह सफ़र करके आते थे या लाहौर काबुल और अजमेर वगैरा के दौलतखाने में दाखिल होते थे तबभी रुपया लुटाया जाता था और ईद की सवारियों में भी ऐसा होता था — खैरात भी बहुत होती थी उसमें और नौरोज़ वगैर के जश्नों में जो रुपया खर्च होता था उससे सब को फ़ायदा पहुंचता था मामूली खास २ खैरातों का खर्च जो साल भर में होता था नीचे लिखे माफ़िक था —

۴ جمال خان قراول میر سکار سمہ
۵ ملا عبدالحمید مولف بادشاہ نامہ سمہ
۶ ملا عبدالحکیم سیالکوٹی سمہ
۷ قاضی محمد افضل سمہ
۸ عارف خدمتگار سمہ

ان سب مین زیادہ بھاری جمال خان اور بہت ہلکا ملا عبدالحمید تھا —

روپیہ لٹانے کا بھی رواج تھا چنانچہ جب بادشاہ شہر سے دار الخلافت مین آتے تھے یا لاہور و کابل وغیرہ صوبون کے دولتخانون مین داخل ہوتے تھے تو روپیہ لٹایا جاتا تھا اور عید وغیرہ کی سواریون مین بھی خیرات بہت ہوتی تھی اسمین اور تقریبات سلطنت مین جو روپیہ صرف ہوتا تھا اُس سے سب کو فائدہ پہونچتا تھا خاص خاص خیراتون کا صرف جو سال بھر مین ہوتی تھیں حسب ذیل تھا —

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

१ बादशाहके शमसी वज़नयानी सालग्रहके तुलादान में जोसंक्रांतके हिसाबसे होता थी. ४००००
२ बादशाह कमरी वज़नयानी चांद्रमासके हिसाबकी सालग्रहमें ४००००
३ चारोंशाहज़ादों की सालग्रहोंके तुलादानोंमें १०००००
४ २७रजबकी रातको १००००
५ शबरातको १००००
६ रमज़ानके रोज़ोंकी बाबत ३००००
७ ताजबीबीके उर्स में यानी संवतसरी ५००००
८ मोहर्रममें १००००
९ तारीख १२ रबीउलअव्वलकी रातमें पैगम्बरसाहिबका जन्म हुआ था उसके वास्ते १००००
१० ता. १२ जमादिउलअव्वल की रातमें अकबर बादशाहका देहांत हुआ था उसके वास्ते १००००

बादशाही जश्न यानी उच्छव

सबसे बड़ा उच्छव नौरोज़का होता था जिस दिन मेखमें भानु होता था उस दिनसे मेखसंक्रांत तक १९ दिन

۱ وزن شمسی بادشاہ تاریخ ۲۴ ماہ بہمن کو
۲ وزن قمری جو ۳۰ ربیع الثانی کو ہوتا تہا
۳ وزنہاے سالگرہ شاہزادہ دارا شکوہ و شجاع و اورنگ زیب و مراد بخش جو سال بہر مین ایک مرتبہ ہوتے تھے ایک لاکہ
۴ ۲۷ رجب کی شب کو بتقریب معراج پیغمبر صاحب
۵ شب برات کو
۶ بابت روزہ ہاے رمضان یکم شوال کو
۷ بابت عرس ممتاز الزمانی بیگم تاریخ ۱۷ ماہ ذیقعدہ کو
۸ غرہ محرم کو
۹ بتقریب میلاد پیغمبر ۱۲ ربیع الثانی کی شب کو
۱۰ شب ۱۲ جمادی الاول کو بیادگار وفات اکبر بادشاہ

تقریبات سلطنت

سب سے بڑی تقریب نوروز کی ہوتی تھی جبدن کہ آفتاب برج حمل مین آتا تہا اُس دن سے لیکر شرف آفتاب تک ۱۹ دن

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बराबर खुशी के जल्से होते थे दौ
लतखाना तरह तरह से सजाया
जाता था शाहज़ादे और बड़े २ अ
मीर लाखों रुपये की अनोखी औ
र कीमती जड़ाऊ चीज़ें और जवा
हरात वग़ैरा बादशाह को नज़र क
रते थे और बादशाह भी भारी भारी
खिलअत जड़ाऊ ज़ेवर हथियार
और हाथी घोड़े इनायत फ़रमाते
थे और ऐसे ही जल्से ज़नाने में
भी होते थे और मीना बाज़ार भी लगता था

नौरोज़ के दिन पान और अतर
सोने के जड़ाऊ खानों में अमीरों
वज़ीरों और दरबारियों को इना
यत होते थे -

इससे उतर कर सालगिरहों का उ
त्सव था जिनमें बादशाह तो सा
ल भर में २ दफ़े सोने और चांदी औ
र दूसरी चीज़ों से तुलते थे और शाहज़ादे
१ दफ़े ये सब तुलादान मुहूरत से
होते थे और कुल चीज़ें तुलादानों की

برابر ہر روز خوشی کے جلسہ ہوتے
تھے دولتخانہ طرح طرح کے تکلفات
سے سجایا جاتا تھا شہزادے اور
بڑے بڑے امیر لاکھوں روپیہ کی
جڑاؤ اور دوسری عجیب وغریب
چیزیں پیشکش کے نام سے بادشاہ
کے نذر کرتے تھے اور بادشاہ
بھی انکو بھاری بھاری خلعت مع
زیور مرصع وقیمتی ہتھیاروں کے
اسپ وفیل خاصہ کے عنایت کرتے
تھے اور مینا بازار بھی لگتا تھا

نوروز کے دن پان اور عطر
سونے کے جڑاؤ خوانوں میں
امیروں وزیروں اور دوسرے
حاضرین دربار کو عطا ہوتے تھے

اس سے اتر کر تقریب شمسی وقمری
سالگرہ کی تھی جسمیں بادشاہ تو سال
بھر میں دو دفعہ سونے چاندی
اور دوسری چیزوں میں تلا کرتے
تھے اور شاہزادہ ایک دفعہ یہ کام
تقویم سے ساعت دیکھکر ہوتے تھے کل چیزیں

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गरीबों और मोहताजों को खैरात करदी जाती थी -	تلاوان کی غریبوں اور محتاجوں کو تقسیم ہو جاتی تھیں
लश्कर.	**لشکر**
कुल फौज ४ लाख ३०००० थी जिस मे ३ लाख ७५००० सवार ८००० मनसबदार ७००० अहदी बरकंदाज़ और ४०००० पैदल बंदूकची गोलंदाज़ और बाण चलाने वाले थे इन मे से १०००० तो हमेशा बादशाह की खिदमत में हाज़िर रहते थे और ३०००० किलों मे और सूबों मे तईनात थे -	کل فوج ۴ لاکھ ۳۰ ہزار تھی جس میں تین لاکھ ۷۵ ہزار سوار ۸۰۰۰ منصب دار ۷۰۰۰ احدی و برقنداز اور ۴۰۰۰۰ پیادہ تفنگچی گولہ انداز و باندار تھے جن میں سے دس ہزار تو ہمیشہ بادشاہ کی رکاب میں حاضر رہتے تھے اور ۳۰ ہزار قلعوں اور صوبوں میں تعینات تھے ۔
सवारों मे २००००० तो बादशाही नोकर थे और १७५००० शाहज़ादों अमीरों और मनसबदारों के नोकर थे जिन की तनख्वाह वे अपने मनसब की तनख्वाह में से देते थे -	سواروں میں دو لاکھ علوفہ خوار یعنی بادشاہی تنخواہ دار تھے اور ایک لاکھ ۷۵ ہزار امیروں اور منصبداروں کے ملازم تھے جنکی تنخواہ وہ دیتے تھے
मनसबदार.	**منصب دار**
८००० मनसबदारों में बड़े बड़े अमीर राजा महाराजा बल्कि शाहज़ादे भी शामिल थे क्यों कि मनसब के बगैर शाहज़ादों की भी तनख्वा मुकर्रर नहीं होती थी रोज़ीना पाया करते थे और मनसब नहीं मिलता था जब तक कि किसी खिदमत	۸۰۰۰ منصب داروں میں بڑے بڑے امیر راجہ مہاراجہ بلکہ شہزادے بھی شامل تھے کیونکہ بغیر منصب کے شہزادوں کی بھی تنخواہ مقرر نہیں ہوتی تھی روزینہ پایا کرتے تھے اور منصب نہیں ملتا تھا جب تک کہ کسی خدمت پر مقرر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर मुकर्रर नहीं होते थे मगर शाह-
ज़ादे दारा शिकोह को बग़ैर ख़िद
मत के ही मनसब मिल गया था
जिसका सबब यह हुआ था कि बा
दशाह को उससे बहुत मोहब्बत थी
और इसलिये अपने पास से जुदा
नहीं करते थे जब शाहज़ादे शुजा
अ की तईनाती पहिली दफ़े दख
न की मोहिम पर हुई और वह मन
सब पाकर सलाम करने को हा
ज़िर आया तो शाहज़ादे दारा शि
कोह जो सब में बड़ा था मारे ग़ैरत
के रोता हुआ दीवानख़ाने से उठ
गया तब बादशाह ने उसको भी
बग़ैर किसी ख़िदमत के मनसब दे दिया-

नहیں ہوتے تھے مگر شاہزادہ دارا شکوہ
کو بغیر خدمت کے ہی منصب ملگیا
تھا جس کا سبب یہ ہوا تھا کہ بادشاہ
کو اس سے بہت محبت تھی اور اسی
لئے اپنے پاس سے علحدہ نہیں
کرتے تھے مگر جب شاہزادہ شجاع
کی تعیناتی اول دفعہ دکن کی مہم
پر ہوئی اور اس نے منصب پاکر
سلام کیا تو دارا شکوہ جو سب
بھائیوں میں بڑا تھا رقت کرتا ہوا
دیوان خانہ سے اُٹھ گیا تب
بادشاہ نے اُسکو بھی بلا کسی
خدمت کے منصب دیدیا۔

सन २० जलूसी के अख़ीर तक
जो मनसबदार थे उनका गोश
वारा यह है-

سنہ ۲۰ جلوسی
کے اخیر تک جو منصبدار
تھے اُن کا گوشوارہ یہہ
ہے

१ बीस हज़ारी	१	یک	(۱) بیس ہزاری
२ पंद्रह हज़ारी	२	دو	(۲) پندرہ ہزاری
३ बारा हज़ारी	१	یک	(۳) بارہ ہزاری
४ नौ हज़ारी	१	یک	(۴) نو ہزاری
५ सात हज़ारी	६	ے	(۵) سات ہزاری
६ छः हज़ारी	५	ضہ	(۶) چھہ ہزاری
७ पांच हज़ारी	२०	ط	(۷) پانچ ہزاری

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

८ चार हज़ारी	३०	[illegible]	(۸) آٹھ ہزاری
९ तीन हज़ारी	४४	[illegible]	(۹) سہ ہزاری
१० ढाई हज़ारी	११	[illegible]	(۱۰) ڈھائی ہزاری
११ दो हज़ारी	५१	[illegible]	(۱۱) دو ہزاری
१२ डेढ़ हज़ारी	५२	[illegible]	(۱۲) ڈیڑھ ہزاری
१३ हज़ारी	८०	[illegible]	(۱۳) ہزاری
१४ नह सदी	३३	[illegible]	(۱۴) نہصدی
१५ आठ सदी	४०	[illegible]	(۱۵) آٹھ صدی
१६ सात सदी	६१	[illegible]	(۱۶) سات صدی
१७ छः सदी	२०	[illegible]	(۱۷) چھ صدی
१८ पांच सदी	१५	[illegible]	(۱۸) پانصدی

पांच सदी से नीचे की तफ़सील बादशाह नामे में नहीं है —

پانصدی سے نیچے کی تفصیل بادشاہ نامہ میں نہیں ہے

बड़े २ मनसबदारों के नाम.

بڑے بڑے منصبداروں کے نام

ऊपर लिखे मनसबदारों में से ५ हज़ारी तक के नाम यह हैं —

مندرجہ بالا منصبداروں میں سے پانجہزاری تک کے نام یہ ہیں -

नाम	मनसब	सवार	दोअस्पा सिहअस्पा
१ शाहज़ादा दाराशिकोह	२० हज़ारी	२००००	१००००
२ शाहज़ादा शुजाअ	१५ हज़ारी	१५०००	८०००
३ शाहज़ादा औरंगज़ेब	१५ हज़ारी	१५०००	८०००
४ शाहज़ादा मुरादबख़्श	१२ हज़ारी	६०००	...
५ आसिफ़ख़ां वज़ीरखानखाना	९ हज़ारी	९०००	९०००
६ खानदौरां नुसरतजंग	७ हज़ारी	७०००	५०००
७ अलीमरदानखां अमीरुलउमरा	७ हज़ारी	७०००	५०००

نام	منصب	سوار	دو اسپہ سہ اسپہ
۱ شہزادہ دارا شکوہ	۲۰ ہزاری	۲۰ ہزار	۱۰ ہزار
۲ شہزادہ شجاع	۱۵ ہزاری	۱۵۰۰۰	۸۰۰۰
۳ شہزادہ اورنگزیب	"	"	"
۴ شہزادہ مراد بخش	۱۲ ہزاری	۶۰۰۰	...
۵ آصف خان وزیر خانخانان	۹ ہزاری	۹۰۰۰	۹۰۰۰
۶ خاندوران نصرت جنگ	۷ ہزاری	۷۰۰۰	۵۰۰۰
۷ امیرالامرا علیمردان خان	۷ ہزاری	۷۰۰۰	۵۰۰۰

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

८ सईदखां ज़फ़रजंग	७ हज़ारी	७०००	५०००	۵۰۰۰	۷۰۰۰	۷ ہزاری	۸ سعید خان ظفر جنگ
९ इसलामखां	७ हज़ारी	७०००	५०००	۵۰۰۰	۷۰۰۰	۷ ہزاری	۹ اسلام خان
१० सादुल्लाखां वज़ीर	७ हज़ारी	७०००	...	...	//	//	۱۰ سعد اللہ خان وزیر
११ अफ़ज़लखां	७ हज़ारी	४०००	...	...	۴۰۰۰	//	۱۱ افضل خان
१२ सैयद खान जहां	६ हज़ारी	६०००	६०००	۶۰۰۰	۶۰۰۰	۶ ہزاری	۱۲ سید خان جہان
१३ आज़म खां	६ हज़ारी	६०००	...	...	//	//	۱۳ اعظم خان
१४ अब्दुल्लाह खां बहादुर फ़ीरोज़ जंग	६ हज़ारी	६०००	...	//	//	//	۱۴ عبد اللہ خان بہادر فیروز جنگ
१५ सैयद जलाल बुखारी	६ हज़ारी	६०००	...	//	//	//	۱۵ سید جلال بخاری
१६ नज़र मोहम्मद खां का बेटा खुसरो	६ हज़ारी	६०००	...	//	//	//	۱۶ خسرو ولد نذر محمد خان
१७ शायस्ताखां	५ हज़ारी	५०००	५०००	۵۰۰۰	۵۰۰۰	۵ ہزاری	۱۷ شایستہ خان
१८ बहादुरखां रुहेला	५ हज़ारी	५०००	५०००	//	//	//	۱۸ بہادر خان روہیلہ
१९ मिरज़ा ईसा तरखां	५ हज़ारी	५०००	...	...	//	//	۱۹ مرزا عیسی ترخان
२० राजा जसवंत सिंघजी	५ हज़ारी	५०००	२५००	۲۵۰۰	//	//	۲۰ راجہ جسونت سنگھ
२१ रुस्तमखां	५ हज़ारी	५०००	२०००	۲۰۰۰	//	//	۲۱ رستم خان
२२ राजा जयसिंघ	५ हज़ारी	५०००	२०००	//	//	//	۲۲ راجہ جیسنگھ
२३ कुलीचखां	५ हज़ारी	५०००	२०००	//	//	//	۲۳ قلیچ خان
२४ वज़ीरखां	५ हज़ारी	५०००	...	...	//	//	۲۴ وزیر خان
२५ राजा गजसिंघ	५ हज़ारी	५०००	...	//	//	//	۲۵ راجہ گجسنگھ
२६ शाहनवाज़खां सफ़वी	५ हज़ारी	५०००	...	//	//	//	۲۶ شاہنواز خان صفوی
२७ राजा जगत सिंघ	५ हज़ारी	५०००	...	//	//	//	راجہ جگت سنگھ
२८ ऐतक़ादखां	५ हज़ारी	५०००	...	//	//	//	۲۸ اعتقاد خان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२९ सफ़दरखां	५ हजारी	५०००	०००	۰۰۰	۵۰۰۰	۵ ہزاری	۲۹ صفدر خان
३० राजा विट्ठलदास	५ हजारी	५०००	०००	//	//	//	۳۰ راجہ بٹھلداس
३१ सिपहदार खां	५ हजारी	५०००	०००	//	//	//	۳۱ سپہ دار خان
३२ अलावरदी खां	५ हजारी	५०००	०००	//	//	//	۳۲ الہ وردی خان
३३ खवासखां	५ हजारी	५०००	०००	//	//	//	۳۳ خواص خان
३४ मालूजी दखनी	५ हजारी	५०००	०००	//	//	//	۳۴ مالوجی دکھنی
३५ जाफ़रखां	५ हजारी	५०००	०००	//	//	//	۳۵ جعفر خان
३६ असालतखां	५ हज़ारी	५०००	०००	//	۴۰۰۰	//	۳۶ اصالت خان

शाहज़ादे और बड़े २ अमीरों को जो मनसब की तनख़्वाह मिलती थी उसमें ७ आसामियों की तनख़्वाह बादशाहनामे में लिखी थी वह यहां दर्ज की जाती है यह तनख़्वाह दामों के हिसाब से मिलती थी १ के ४० दाम काटे जाते थे-

شاہزادون اور بڑے بڑے امیرون کو جو تنخواہ منصب کی ملتی تھی اسمین سے سات آسامیوں کی تنخواہ بادشاہ نامہ مین لکھی تھی وہ یہان درج کیجاتی ہے یہ تنخواہ دامون کے حساب سے ملتی تھی ایک روپے کے چالیس ۴۰ دام کاٹے جاتے تھے

नाम	दाम	रुपया	روپے	دام	نام
१ शाहज़ादा दारा शिकोह	४० किरोड़	१ किरोड़	ایک کرو	۴۰ کروڑ	۱ شاہزادہ دارا شکوہ
२ शुजाअ	२४ किरोड़	६० लाख	۶۰ لاکھ	۲۵ کروڑ	۲ شہزادہ شجاع
३ औरंगजेब	२४ किरोड़	६० लाख	//	//	۳ اورنگ زیب
४ मुराद बख़्श	१२ किरोड़	३० लाख	۳۰ لاکھ	۱۲ کرور	۴ مراد بخش
५ आसिफ़खां	२० किरोड़	५० लाख	۵۰ لاکھ	۲۰ کرور	۵ آصف خان

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६ सादुल्लाहखां	१२ किरोड़	३० लाख	۳۰ لاکھ	۱۲ کروڑ	۶ سعداللہ خان
७ अलीमरदान खां	१२ किरोड़	३० लाख	۳۰ لاکھ	۱۲ کروڑ	۷ علیمردان خان

मनसबदारों की अख़ीर लिस्ट

साल २० के पीछे साल ३० तक शाहज़ादों और अमीरों का बहुत कुछ इज़ाफ़ा होगया था-

मुल्लाज़ाहिद ने अपनी किताब मैं कि जिसका खुलासा हमने इस तीसरे हिस्से में लिखा है बादशाह के अख़ीर वक्त सल्तनत तक की फ़हरिस्त मनसबदारों की लिखी है उसका गोशवारा नीचे लिखे मुआफ़िक़ है-

शाहज़ादे

१	६० हजारी	१	३	१५ हजारी	२
२	२० हज़ारी	२	४	७ हजारी	३

उमराव

१	नोहज़ारी	१	९	दोहजारी	६८
२	सातहज़ारी	१०	१०	डेढहजारी	७५
३	शिशहज़ारी	६	११	हजारी	१३८
४	पांचहज़ारी	३२	१२	नोसदी	२९
५	चारहज़ारी	३४	१३	आठसदी	८१
६	साढेतीनहज़ारी	९	१४	सातसदी	७२
७	तीनहज़ारी	४७	१५	छःसदी	५९
८	ढाईहज़ारी	२४			

منصبداروں کے اخیر لسٹ

سال ۲۰ جلوسی کے بعد سے سال ۳۰ تک شہزادوں اور امیروں کا بہت کچھہ اضافہ ہو گیا تھا۔

مُلا زاہد نے اپنے بادشاہ نامہ مین جس کا خلاصہ ہم نے اس تیسرے حصہ مین لکھا ہے بادشاہ کے اخیر وقت سلطنت تک کے منصبداروں کی فہرست درج کی ہے اُس کا گوشوارہ حسب مندرجہ ذیل ہے۔

شاہزادے	امرا
۱- ۶۰ ہزاری یک	۶ ساڑھے تین ہزاری
۲- ۲۰ ہزاری دو	۷ تین ہزاری
۳- پندرہ ہزاری دو	۸ ڈھائی ہزاری
جملہ سات ہزاری	۹ دو ہزاری
امرا	۱۰ ڈیڑھ ہزاری
۱ نوہزاری یک	۱۱ ہزاری
۲ سات ہزاری	۱۲ نہصدی
۳ شش ہزاری	۱۳ آٹھصدی
۴ پنجہزاری	۱۴ ہفتصدی
۵ چارہزاری	۱۵ ششصدی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांचसदी अमीर नहीं लिखे हैं -

शाहज़ादों के आठ असामियों की तफ़सील.

१ शाहज़ादा दाराशिकोह ६० हज़ारी जात ४०००० सवार दोअस्पा तीअस्पा

२ शाहज़ादा शुजाअ २० हज़ारी जात १५००० सवार दुअस्पा

३ शाहज़ादा औरंगज़ेब २० हज़ारी जात १५००० सवार दुअस्पा

४ शाहज़ादा मुरादबख़्श १५ हज़ारी ज़ात १२००० सवार इसमें ८००० दुअस्पा

५ शाहज़ादा दाराशिकोह का बड़ा बेटा सुलेमानशिकोह १५ हज़ारी जात ८००० सवार

६ शाहज़ादा दाराशिकोह का दूसरा बेटा सिपहरशिकोह ७ हज़ारी ज़ात २००० सवार

७ शाहज़ादा शुजाअ का बेटा सुलतान ज़ैनुलआबदीन ७ हज़ारी जात २००० सवार

८ शाहज़ादा औरंगज़ेब का बड़ा बेटा सुलतान मोहम्मद ७ हज़ारी ज़ात २००० सवार -

१ शुजाअ के बेटे बलंद अख़्तर और
२ औरंगज़ेब के बेटे मोअज़्ज़म अकबर और कामबख़्श के मनसब नहीं हुवे थे -

پانچ صدی امیر نہین لکھے ہین

شاہزادون کی ۸ اسامیون کی تفصیل

۱ شاہزادہ دارا شکوہ ۶۰ ہزاری ذات ۴۰ ہزار سوار دواسپہ سہ اسپہ

۲ شہزادہ شجاع ۲۰ ہزاری ذات پندرہ ہزار سوار دواسپہ

۳ شہزادہ اورنگ زیب ۲۰ ہزاری ذات پندرہ ہزار سوار دواسپہ

۴ شہزادہ مرادبخش پندرہ ہزاری ذات ۱۲ ہزار سوار دواسپہ

۵ سلطان سلیمان شکوہ خلف کلان شاہزادہ دارا شکوہ پندرہ ہزاری ذات ۸۰۰۰ سوار

۶ سلطان سپہر شکوہ خلف دویم شاہزادہ دارا شکوہ سات ہزاری دو ہزار سوار

۷ سلطان زین العابدین خلف شہزادہ محمد شجاع سات ہزاری دو ہزار سوار

۸ سلطان محمد خلف کلان شاہزادہ اورنگ زیب ۷ ہزاری ۲۰۰۰ سوار

بلند اختر خلف خورد شجاع و اعظم و اکبر و مرادبخش پسران اورنگ زیب کے منصب نہین ہوے تھے -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुसलमान अमीर

मुसलमान अमीरों में जो ९ हज़ारी १ और ७ हज़ारी ६ अमीर पहिले लिख आये हैं सो ये सातों अमीर बादशाह की सलतनत बिगड़ने से पहिले २ मर चुके थे –

६ हज़ारियों में १ मो अज़्ज़म खां मीर ज़ुमला और बढ़ा था –

५ हज़ारियों में ५ और बढ़े थे

१ मक्रमत खां २ खलीलुल्ला खां
३ महाबत खां ४ निजाबत खां
५ बहराम खां बलख के अमीर नज़र मोहम्मद खां का बेटा –

हिन्दू अमीर

हिन्दू अमीरों के भी इज़ाफ़े हुवे थे और कुछ नये बढ़े थे कुल हिन्दू अमीरों और उनके मनसबों की तफ़सील जो बादशाह के आखीर वक़्त में थे यह हैं –

सात हज़ारी

१ महाराजा जसवंतसिंघ राठोड़ ७००० हज़ारी ६००० सवार –

२ राजा जयसिंघ कछवाहा ७ हज़ारी ६००० सवार

مسلمان امرا

مسلمان امرا مین جو نو ہزاری ایک اور سات ہزاری ۶ لکھہ آئے ہین یہہ ساتون امیر بادشاہ کی سلطنت برہم سے پہلے پہلے مر چکے تھے۔

۶ ہزاریون مین ایک معظم خان میر جملہ اور بڑہا تھا۔

پانچہزاریونمین پانچ اور بڑہے تھے

۱ مکرمت خان ۲ خلیل اللہ خان
۳ مہابت خان ۴ نجابت خان
۵ بہرام خان خلف نذر محمد خان والی بلخ

ہندو امیر

ہندو امیرون کے بہی اضافہ ہونے تھے اور کچھہ نئے بہی بڑہے تھے کل ہندو امیرون اور انکے منصبون کی تفصیل جو بادشاہ کے اخیر وقت مین تہی یہہ ہے

سات ہزاری

۱ مہاراجہ جسونت سنگہ راٹھوڑ ۷ ہزاری ۶۰۰۰ سوار

۲ راجہ جیسنگہ کچھواہا ۷ ہزاری ۶۰۰۰ سوار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांचहज़ारी	**پانچہزاری**
३ राजा विट्ठलदास गौड़. ५ हज़ारी ज़ात ५००० सवार	۳ راجہ بٹھلداس گوڑ پانچہزاری پانچہزار سوار
४ राजा गजसिंघ राठोड़. ५ हज़ारी ज़ात ५००० सवार	۴ راجہ گجسنگھہ راٹھور پانچہزاری پانچہزار سوار
५ रावरतन हाड़ा ५ हज़ारी ज़ात ५००० सवार	۵ راورتن ہاڈا پانچہزاری ذات پانچہزار سوار
६ जूझारसिंघ बुंदेला राजा वरसिंघदेव का बेटा ५ हज़ारी ५००० सवार	۶ جوجہار سنگھہ بندیلہ خلف راجہ برسنگدیو پانچہزاری پانچہزار سوار
७ ऊदाजीराम दखनी ५ हज़ारी ज़ात ५००० सवार	۷ اوداجی رام دکہنی پانچہزاری پانچہزار سوار
८ बहादुरजी दखनी जादूराय का बेटा ५ हज़ारी ५००० सवार	۸ بہادرجی دکہنی خلف جادورای پانچہزاری پانچہزار سوار
९ राणा जगतसिंघ ५ हज़ारी ज़ात ५००० सवार	۹ راناجگت سنگھہ پانچہزاری پانچہزار سوار
१० राणा राजसिंघ ५ हज़ारी ज़ात ५००० सवार	۱۰ راناراج سنگھہ پانچہزاری پنجہزار سوار
११ मालूजी भोसला ५ हज़ारी ज़ात ५००० सवार	۱۱ مالوجی بہوسلہ پانچہزاری پانچہزار سوار
१२ राजा रायसिंघ सीसोदिया ५ हज़ारी ज़ात २५०० सवार	۱۲ راجہ رای سنگھہ سیسودیہ پانچہزاری پانچہزار سوار
चारहज़ारी	**چارہزاری**
१३ रावशत्रुसाल हाड़ा ४ हज़ारी ज़ात ४००० सवार	۱۳- راوستروسال ہاڈا چارہزاری چارہزار سوار
१४ राजा भारत बुंदेला ४ हज़ारी ज़ात ३५०० सवार	۱۴- راجہ بہارت بندیلہ چارہزاری ۳۵۰۰ سوار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१५ राजापहाड़सिंघबुंदेला ४ हज़ारीज़ात ३५०० सवार	۱۵ راجہ پہاڑ سنگھہ بندیلہ چار ہزاری ۳۵۰۰ سوار
१६ रावअमरसिंघ राठोड़ ४ हज़ारीज़ात ३००० सवार	۱۶ راو امر سنگہ راٹھوڑ چار ہزاری ۳۰۰۰ سوار
१७ रावसूरचुरटिया ४ हज़ारीज़ात २५०० सवार	۱۷ راو سور بہورٹیہ چار ہزاری ۲۵۰۰ سوار
१८ राजारूपसिंघ राठोड़ ४ हज़ारीज़ात २५०० सवार	۱۸ راج روپ سنگہہ راٹھوڑ چار ہزاری ۲۵۰۰ سوار
१९ हमीररायदखनी ४ हज़ारी २५०० सवारि	۱۹ ہمیر رای دکہنی چار ہزاری ۔
तीनहज़ारी	**تین ہزاری**
२० राजाअनोपसिंघ अमरसिंघबाघेलाकाबेटा ३ हज़ारी ३००० सवार	۲۰ ۔ راجہ انوپ سنگہہ ولد راجہ امر سنگہ باگہیلہ تین ہزاری تین ہزار سوار
२१ राजाअनिरूद्धगोड़ ३ हज़ारीज़गत ३००० सवार	۲۱ ۔ راجہ انرودہ گوڑ تین ہزاری تین ہزار سوار ۔
२२ राजामाधोसिंघहाड़ा ३ हज़ारीज़ात २५०० सवार	۲۲ راجہ مادہو سنگہہ ہاڈا تین ہزاری ۲۵۰۰ سوار
२३ राजाराजरूप ३ हज़ारी २५०० सवार	۲۳ ۔ راجہ راجروپ تین ہزاری ۲۵۰۰ سوار
२४ कंवररामसिंघराजाजयसिंघकाबेटा ३ हज़ारीज़ात २००० सवार	۲۴ کنور رام سنگہہ خلف راجہ جیسنگہہ تین ہزاری ۲ ہزار سوار
२५ मुकंदसिंघहाड़ा ३ हज़ारी २००० सवार	۲۵ مکند سنگہہ ہاڈا تین ہزاری ۲۰۰۰ سوار
२६ रावकरनचुरटिया ३ हज़ारीज़ात २००० सवार	۲۶ راو کرن بہورٹیہ تین ہزاری دو ہزار
२७ ऊदाजीरामदखनी ३ हज़ारीज़ात २००० सवार	۲۷ اودا جی رام دکہنی تین ہزاری ۳۰۰۰ سوار
२८ परसूजीदखनी ३ हज़ारीज़ात २००० सवार	۲۸ برسوجی دکہنی تین ہزاری ۲۰۰۰ سوار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२९ जादोराय दखनी ३ हज़ारी १५०० सवार	۲۹ جادورای دکھنی تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار
३० रामसिंघ राठौड़ करमसी का बेटा ३ हज़ारी ज़ात १५०० सवार	۳۰ رام سنگھہ خلف کرمسی راٹھوڑ تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار
३१ मंगूजी दखनी ३ हज़ारी ज़ात १५०० सवार	۳۱ منگوجی دکھنی تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار
३२ राजा अनोपसिंघ ३ हज़ारी ज़ात १५०० सवार	۳۲ راجہ انوپ سنگھہ تین ہزاری ۱۵۰۰ سوار
३३ राजा मनरूप ३ हज़ारी १००० सवार	۳۳ راجہ منروپ تین ہزاری ہزار سوار
३४ बीरमदेव ३ हज़ारी १००० सवार	۳۴ بیرم دیو تین ہزاری ہزار سوار
३५ दत्ताजी दखनी ३ हज़ारी १००० सवार	۳۵ دتاجی دکھنی تین ہزاری ہزار سوار
ढाई हज़ारी	**ڈہائی ہزاری**
३६ सबलसिंघ सीसोदिया ढाई हज़ारी ज़ात १२५० सवार	۳۶ سبل سنگھہ سیسودیہ ڈہائی ہزاری ۱۲۵۰ سوار
दो हज़ारी	**ہزاری**
३७ राजा सुजानसिंघ बुंदेला २ हज़ारी ज़ात २००० सवार	۳۷ راجہ سجان سنگھہ بندیلہ دوہزاری ۲۰۰۰ سوار
३८ राजा देवीसिंघ बुंदेला २ हज़ारी ज़ात ५०० सवार दुअस्पा	۳۸ راجہ دیوی سنگھہ بندیلہ دوہزاری ۵۰۰ سوار
३९ राजा तोडरमल २ हज़ारी ज़ात ५०० सवार	۳۹ راجہ تودرمل دوہزاری ۵۰۰ سوار
४० गिरधरदास गौड़ २ हज़ारी ज़ात ५०० सवार	۴۰ گردھرداس گوڑ دوہزاری ۵۰۰ سوار
४१ पृथ्वीराज २ हज़ारी ५०० सवार	۴۱ پرتھی راج دوہزاری ۵۰۰ سوار
४२ जगराम बुंदेला २ हज़ारी ज़ात ५०० सवार	۴۲ جگرام بندیلہ دوہزاری ۵۰۰ سوار
४३ रावरतन महेसदासान राठौड़ का बेटा २ हज़ारी ज़ात ६०० सवार	۴۳ راو رتن ولد مہیس داس راٹھوڑ دوہزاری ۶۰۰ سوار
४४ रावदूदा रावचांदा का पोता २ हज़ारी ज़ात ५०० सवार	۴۴ راو دودا نبیرہ راو چاندا دوہزاری ۵۰۰ سوار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४५ अर्जुनगोड़ राजा बिठ्ठलदास का बेटा २ हज़ारी ५०० सवार	۴۵ ارجن گوڑ خلف راجہ بیٹھلداس گوڑ دوہزاری ۵۰۰ سوار
४६ राजा सेवाराम गोड़ २ हज़ारी ज़ात ५०० सवार	۴۶ راجہ سیوارام گوڑ دوہزاری ۵۰۰ سوار
४७ राजा जैराम गोड़ २ हज़ारी ५०० सवार	۴۷ راجہ جےرام گوڑ دوہزاری ۵۰۰ سوار
४८ बिहारीदास कछवाहा २ हज़ारी ज़ात २०० सवार	۴۸ بہاری داس کچھواہا دوہزاری ۲۰۰ سوار
४९ रावरूपसिंघ चंद्रावत २ हज़ारी ज़ात २०० सवार	۴۹ راو روپ سنگھہ چندراوت دوہزاری ۲۰۰ سوار
५० राव अमर सिंघ २ हज़ारी ज़ात ८०० सवार	۵۰ راو امر سنگھہ دوہزاری ۸۰۰ سوار
५१ नथ्थूजी २ हज़ारी ८०० सवार	۵۱ نتھوجی دوہزاری ۸۰۰ سوار
५२ सुजानसिंघ सीसोदिया २ हज़ारी ज़ात ८०० सवार	۵۲ سجان سنگھہ سیسودیہ دوہزاری ۸۰۰ سوار
५३ नामाजी दखनी २ हज़ारी ज़ात ८०० सवार	۵۳ ماماجی دکھنی دوہزاری ۸۰۰ سوار
डेढ़ हज़ारी	**ڈیڑہ ہزاری**
५४ चतरभुज चौहान डेढ़ हज़ारी १५०० सवार दुअस्पा तिअस्पा-	۵۴ چتربھوج چوہان ڈیڑہ ہزاری پندرہ سو سوار دو اسپہ سہ اسپہ
५५ रावल पूंजा डेढ़ हज़ारी ५०० सवार	۵۵ راول پونجا ڈیڑہ ہزاری پانسو سوار
५६ राजा बदनसिंघ भदोरिया डेढ़ हज़ारी १४०० सवार	۵۶ راجہ بدن سنگھہ بہدوریہ ڈیڑہ ہزاری ۱۴۰۰ سوار
५७ रायसिंघ राजा गजसिंघ राठोड़ का पोता डेढ़ हज़ारी १४०० सवार	۵۷ راے سنگھہ نبیرہ راجہ گجسنگھہ راٹھوڑ ڈیڑہ ہزاری ۱۴۰۰ سوار
५८ हिरदेराम बांका कछवाहे का बेटा डेढ़ हज़ारी १४०० सवार	۵۸ ہردے رام خلف بانکا کچھواہا ڈیڑہ ہزاری ۱۴۰۰ سوار
५९ राजा द्वारिकादास राजा गिरधर का बेटा डेढ़ हज़ारी १४०० सवार	۵۹ راجہ دوارکاداس ولد راجہ گردھرداس ڈیڑہ ہزاری ۱۴۰۰ سوار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६० शत्रुसाल कछवाहा डेढ़ हज़ारी ज़ात १४०० सवार	۶۰ ستروسال کچھواہا ڈیڑھ ہزاری ۱۴۰۰ سوار
६१ राजा प्रताप उज्जैनिया डेढ़ हज़ारी ज़ात १४०० सवार	۶۱ راجہ پرتاپ اوجینیہ ڈیڑہ ہزاری ۱۴۰۰ سوار
६२ राजा अमरसिंघ नरवरी डेढ़ हज़ारी ज़ात १४०० सवार	۶۲ راجہ امرسنگھہ نروری ڈیڑہ ہزاری ۱۴۰۰ سوار
६३ करमसी राठोड़ डेढ़ हज़ारी ज़ात ७०० सवार	۶۳ کرمسی راٹھوڑ ڈیڈہ ہزاری ۷۰۰ سوار
६४ चन्द्रमणि बुंदेला डेढ़ हज़ारी ज़ात ७०० सवार	۶۴ چندرمن بندیلہ ڈیدہ ہزاری ۷۰۰ سوار
६५ ग़रीबदास राणा करणसी सीसोदिया का बेटा डेढ़ हज़ारी ६०० सवार	۶۵ غریب داس خلف رانا کرن سیسودیہ ڈیڈہ ہزاری ۶۰۰ سوار
६६ जगमाल राठोड़ किसनसिंघ का बेटा डेढ़ हज़ारी ६०० सवार	۶۶ جگمال راٹھوڑ خلف راجہ کشن سنگھہ ڈیڈہ ہزاری ۶۰۰ سوار
६७ स्यामसिंघ करमसी राठोड़ का बेटा डेढ़ हज़ारी ६०० सवार	۶۷ سیام سنگہ ولد کرمسی راٹھوڑ ڈیڈہ ہزاری ۶۰۰ سوار
६८ गिरधर डेढ़ हज़ारी ९०० सवार	۶۸ گردھر ڈیڈہ ہزاری
हज़ारी	ہزاری
६९ गोपालसिंघ राजा मनरूप कछवाहे का बेटा हज़ारी १००० सवार	۶۹ گوپال سنگھہ خلف راجہ منروپ کچھواہا ہزاری ہزار سوار
७० रावल समरसी हज़ारी १००० सवार	۷۰ راول سمرسی ہزاری ہزار سوار
७१ परताप ज़मींदार पलामूं हज़ारी १००० सवार	۷۱ پرتاپ زمیندار پلاموں ہزاری ہزار سوار
७२ कीरतसिंघ राजा जैसिंघ का बेटा हज़ारी ज़ात ९०० सवार	۷۲ کیرت سنگھہ خلف راجہ جیسنگھہ ہزاری ۹۰۰ سوار
७३ जगराम कछवाहा हज़ारी ९०० सवार	۷۳ جگرام کچھواہا ہزاری ۹۰۰ سوار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

७४ राजा महासिंघ राजा बदनसिंघ का बेटा हज़ारी ८०० सवार	۷۴ راجہ مہا سنگہہ خلف راجہ بدن سنگہہ ہزاری ۸۰۰ سوار
७५ राय सिंह झाला हज़ारी ७०० सवार	۷۵ رائے سنگہہ جہالا ہزاری ۷۰۰ سوار
७६ रावल सबलसिंघ जैसलमेरी हज़ारी ७०० सवार	۷۶ راول سبل سنگہہ جیسلمیری ہزاری ۷ سو سوار
७७ बलभद्र सेखावत हज़ारी ६०० सवार	۷۷ بلبدر شیخاوت ہزاری ۶۰۰ سوار
७८ राजा हरनारायण बड़गूज़र हज़ारी ६०० सवार	۷۸ راجہ ہرنراین بڈگوجر ہزاری ۶۰۰ سوار
७९ रूपचंद गुलेरी हज़ारी ६०० सवार	۷۹ بہوجراج دکہنی ہزاری ۵۰۰ سوار
८० भोजराज दखनी हज़ारी ५०० सवार	۸۰ روپ چند گلیری ہزاری ۶۰۰ سوار
८१ भारमल किशनसिंघ राठोड़ का बेटा हज़ारी ५०० सवार	۸۱ بہارمل خلف راجہ کشن سنگہہ ہزاری ۵۰۰ سوار
८२ राजा गिरधर जैमल मेड़तिये का पोता हज़ारी ५०० सवार	۸۲ راجہ گردھر نبیرہ جیمل میڑتیہ ہزاری ۵۰۰ سوار
८३ जैतसिंघ राठोड़ हज़ारी ५०० सवार	۸۳ جیت سنگہہ راٹہوڑ ہزاری پانسو سوار
८४ मित्रसेन राजा स्यामसिंघ का भाई हज़ारी ५०० सवार	۸۴ متر سین برادر راجہ سیام سنگہ ہزاری ۵۰۰ سوار
८५ सुजानसिंघ मोहकमसिंघ का बेटा हज़ारी ५०० सवार	۸۵ سُجان سنگہہ ولد محکم سنگہہ ہزاری ۵۰۰ سوار
८६ उदयभान स्यामसिंघ राठोड़ का बेटा हज़ारी ५०० सवार	۸۶ اودے بہان خلف سیام سنگہہ راٹہوڑ ہزاری ۵۰۰ سوار
८७ राजा किशनसिंघ तंवर हज़ारी ५०० सवार	۸۷ راجہ کشن سنگہ تنور ہزاری پانسو سوار
८८ गोरधनदास राठोड़ हज़ारी ५०० सवार	۸۸ گوردہن داس راٹہوڑ ہزاری پانسو سوار
८९ भोजराज हज़ारी ५०० सवार	۸۹ بہوجراج ہزاری ۵۰۰ سوار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

९० भीमराजा विट्ठलदासकाबेटा हज़ारी ४०० सवार	۹۰ بہیم ولد راجہ بیٹھلداس ہزاری ۴۰۰ سوار
९१ रायरायां हज़ारी ४०० सवार	۹۱ رای رایان ہزاری ۴۰۰ سوار
९२ राजा कंवरसेन किस्तवारी हज़ारी ४०० सवार	۹۲ راجہ کنورسین کسٹواری ہزاری ۴۰۰ سوار
९३ राजा पृथ्वीचंद ज़मीदार चंबा हज़ारी ४०० सवार	۹۳ راجہ پرتھی چند زمیندار چمبہ ہزاری ۴۰۰ سوار
९४ रायकासीदास हज़ारी २५० सवार	۹۴ رای کالیداس ہزاری ۲۵۰ سوار
९५ राय माईदास हज़ारी २५० सवार	۹۵ رای مائیداس ہزاری ۲۵۰ سوار
९६ राय रायां दयानत राय हज़ारी २५० सवार	۹۶ رای رایان دیانت رای ہزاری ۲۵۰ سوار
९७ नारमल हज़ारी १५० सवार	۹۷ بہارمل ہزاری ۱۵۰ سوار
९८ राय बनमालीदास हज़ारी १५० सवार	۹۸ رای بن مالیداس ہزاری
९ सदी	**نوصدی**
९९ राजा मान रूपचंद गुलेरी का बेटा ९ सदी ८५० सवार	۹۹ راجہ مان خلف روپ چند گلیری ۹ صدی ۸۵۰ سوار
१०० राय दयालदास झाला ९ सदी ५०० सवार	۱۰۰ رای دیالداس جہالا ۹ صدی ۵۰۰ سوار
१०१ राव हरचंद कछवाहा ९ सदी ४०० सवार	۱۰۱ راو ہرچند کچھواہا ۹ صدی ۴۰۰ سوار
१०२ बारू राजसिंघका बेटा ९ सदी ४०० सवार	۱۰۲ بارو ولد راج سنگہہ ۹ صدی
८ सदी	**آٹھ صدی**
१०३ रायमकरंद ८ सदी ८०० सवार	۱۰۳ رای ۸ صدی ۸۰۰ سوار
१०४ नरसिंघदास ८ सदी ७७५ सवार	۱۰۴ نرسنگداس ۸ صدی ۷۷۵ سوار
१०५ हमीरसिंघ ८ सदी ८०० सवार	۱۰۵ ہمیر سنگہہ ۸ صدی ۸۰۰ سوار
१०६ किरपाराम गौड़ ८ सदी ७५० सवार	۱۰۶ کرپارام گوڑ ۸ صدی ۷۵۰ سوار
१०७ जगरसेन कछवाहा ८ सदी ७५० सवार	۱۰۷ اوگرسین کچھواہا ۸ صدی ۷۵۰ سوار

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१०८ राजाउदयभान ८सदी ५०० सवार	۱۰۸ راجہ اودی بہان ۸ صدی ۵۰۰ سوار
१०९ रायजगनाथराठोड़ ८सदी ४०० सवार	۱۰۹ رای جگناتھ راٹھوڑ ۸ صدی ۴۰۰ سوار
११० राजाउदयसिंघ राजा स्यामसिंघका बेटा ८०० सदी ४०० सवार	۱۱۰ راجہ اودے سنگہہ خلف راجہ سیام سنگہہ ۸ صدی ۴۰۰ سوار
१११ मनोहरदास राजा विठ्ठलदास का भतीजा ८सदी ४०० सवार	۱۱۱ منوہرداس برادرزادہ راجہ بیٹھلداس ۸ صدی ۴۰۰ سوار
११२ रायतिलोकचंद ८सदी ४०० सवार	۱۱۲ رای تلوک چند ۸ صدی ۴۰۰ سوار
११३ मोहनसिंघ माधोसिंघ हाडा का बेटा ८सदी ४०० सवार	۱۱۳ موہن سنگہہ خلف مادہو سنگہہ ہاڈا ۸ صدی ۴۰۰ سوار
११४ इंद्रसालहाडा ८सदी ४०० सवार	۱۱۴ اندرسال ہاڈا ۸ صدی ۴۰۰ سوار
११५ राजामान राजा कवरसेन का बेटा ८ सदी ४०० सवार	۱۱۵ راجہ مان ولد راجہ کنور سین ۸ صدی ۴۰۰ سوار
११६ अजबसिंघ ८सदी ४०० सवार	۱۱۶ عجب سنگہہ ۸ صدی ۴۰۰ سوار
११७ शेरसिंघ रामसिंघराठोड़का बेटा ८सदी ३०० सवार	۱۱۷ شیر سنگہہ خلف رام سنگہہ راٹھوڑ ۸ صدی ۳۰۰ سوار
११८ फ़तहसिंघ सीसोदिया ८सदी २०० सवार	۱۱۸ فتح سنگہہ سیسودیہ ۸ صدی ۲۰۰ سوار
११९ रायमुकनदास ८सदी २०० सवार	۱۱۹ رای مکن داس صدی ۲۰۰ سوار
७ सदी	سات صدی
१२० स्यामसिंघ राजा मानसिंघका पोता ७सदी ५०० सवार	۱۲۰ سیام سنگہہ نبیرہ راجہ مان سنگہہ ۷ صدی ۵۰۰ سوار
१२१ चंद्रभान नरूका ७सदी ५०० सवार	۱۲۱ چندربہان نروکہ ۷ صدی ۵۰۰ سوار
१२२ सारंगधर ७सदी ५०० सवार	۱۲۲ راجہ سنگرام ۷ صدی ۵۰۰ سوار
१२३ राजासंगराम ७सदी ५०० सवार	۱۲۳ سارنگدھر ۷ صدی ۵۰۰ سوار
१२४ पृथ्वीराजचोहान ७सदी ४०० सवार	۱۲۴ پرتہی راج چوہان ۷ صدی ۴۰۰

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

१२५ मथुरादास कछवाहा ८ सदी ४०० सवार	۱۲۵ متھرا داس کچھواہا ۸ صدی ۴۰۰
१२६ पृथ्वीराज भाटी ७ सदी ३०० सवार	۱۲۶ پرتھی راج بھاٹی ۷ صدی ۳۰۰
१२७ बहलू चौहान ७ सदी ३०० सवार	۱۲۷ بلو چوہان ۷ صدی ۳۰۰ سوار
१२८ सुंदरदास सीसोदिया ७ सदी ३०० सवार	۱۲۸ سندر داس سیسودیہ ۷ صدی ۳۰۰
१२९ जगतसिंघ पृथ्वीराज राठौड़ का बेटा ७ सदी ३०० सवार	۱۲۹ جگت سنگھ ولد پرتھی راج راٹھوڑ ۷ صدی ۳۰۰ سوار
१३० रावत नरायणदास सीसोदिया ७ सदी ३०० सवार	۱۳۰ راؤ نراین داس سیسودیہ ۷ صدی ۳۰۰ سوار
१३१ फ़तह सिंघ कछवाहा ७ सदी २५० सवार	۱۳۱ فتح سنگھ کچھواہا ۷ صدی ۲۵۰ سوار
१३२ बाला कछवाहा जगनाथ का बेटा ७ सदी २०० सवार	۱۳۲ بالا کچھواہا خلف جگناتھ سات صدی ۲۰۰ سوار
६ सदी	**چھ صدی**
१३३ चतरभुज सोनगरा ६ सदी ६०० सवार	۱۳۳ چتربھوج سونگرہ ۶ صدی ۶۰۰ سوار
१३४ गिरधरदास रावल पूंजा का बेटा ६ सदी ६०० सवार	۱۳۴ گردھر داس ولد راول پونجا ۶ صدی ۶۰۰ سوار
१३५ खेमचंद रायमनोहर का बेटा ६ सदी ४०० सवार	۱۳۵ کھیم چند خلف رائے منوہر ۶ صدی ۴۰۰ سوار
१३६ जीवाजी मालूजी दखनी का नतीजा ६ सदी ४०० सवार	۱۳۶ جیواجی برادرزادہ مالوجی دکھنی ۶ صدی ۴۰۰ سوار
१३७ प्रदुम्न राजा बिट्ठलदास का नतीजा ६ सदी ३०० सवार	۱۳۷ پردومن برادرزادہ راجہ بیٹھلداس ۶ صدی ۳۰۰ سوار
१३८ अकबर (रघुबर) सिंघ अमरसिंघ का बेटा ६ सदी २०० सवार	۱۳۸ ولد امر سنگھ ۶ صدی ۲۰۰ سوار
१३९ किसोरसिंघ माधोसिंघ का बेटा ६ सदी २०० सवार	۱۳۹ کشور سنگھ ولد مادھو سنگھ ۶ صدی ۲۰۰ سوار
१४० केसरी सिंघ पृथ्वीराज राठौड़ का बेटा ६ सदी २०० सवार	۱۴۰ کیسری سنگھ ولد پرتھی راج راٹھوڑ ۶ صدی ۲۰۰ سوار
१४१ मुकनदास राठौड़ ६ सदी १५० सवार	۱۴۱ مکند داس راٹھوڑ ۶ صدی ۱۵۰ سوار

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दक्कन की सलतनतें
अहमदनगर

दक्कन की ३ सलतनतों अहमदनगर, गोलकुंडा, और बीजापुर में से अहमदनगर तो अकबर बादशाह के अहद में फ़तह कर लिया गया था लेकिन मलिक अंबर ने जो अहमदनगर के निज़ामशाह का वज़ीर और मुख़तार था अहमदनगर का क़िला जहांगीर बादशाह के क़िलेदार ख़्वाजा बेग सफ़वी से वि॰ सं॰ १६६७ में कई महीने तक घेरा रख कर वापस ले लिया था फिर तोप मलिक मैदान को वहां से ले जाकर शोलापुर का क़िला आदिल खां से असाढ़ बदि ५ सं० १६६८ को फ़तह किया और उस बड़ी तोप को डंडे के क़िले में रक्खा। अंबर बहुत लायक़ और बहादुर सरदार था उसने कई बार दिल्ली की फ़ौजों पर फ़तह पाई और निज़ाम शाह की सलतनत दुबारा क़ायम की और ज़िंदा रहा जब तक निज़ाम की इज़्ज़त और हुरमत में कुछ फरक़ न पड़ने दिया मगर उसके मरे पीछे शाहजहां

دکھن کی سلطنتیں
احمد نگر

دکھن کی تین سلطنتوں احمد نگر گولکنڈہ اور بیجاپور میں سے احمد نگر تو اکبر بادشاہ کے عہد میں فتح کر لیا تہا لیکن ملک عنبر نے جو احمد نگر کے نظام شاہ کا وزیر اور مختار تہا احمد نگر کا قلعہ جہانگیر بادشاہ کے قلعہ دار خواجہ بیگ صفوی سے سنہ ۱۰۱۹ میں بعد محاصرہ چند ماہ کے واپس لیلیا تہا اور توپ ملک میدان کو وہاں سے لے جا کر شولاپور کا قلعہ عادل خاں سے ۱۹ رمضان سنہ [illegible] کو فتح کیا اور توپ کو نسر ڈنڈہ میں رکھا۔

عنبر نہایت لائق اور بہادر سردار تہا اوسنے کئی بار دہلی کی فوجوں پر فتح پائی اور نظام شاہ کی سلطنت کو دوبارہ قایم کیا اور زندہ رہا جب تک اوسکی شان اور اعزاز میں کچھ فرق نہ آنے دیا مگر اوسکے مرنے پر شاہ جہاں بادشاہ نے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बादशाह ने फिर अहमदनगर फ़तह करके निज़ाम शाहियों की सलतनत ख़तम करदी और तमाम इलाक़ा उसका अपनी अमलदारी में शामिल कर लिया अब बादशाही हदें सीधी गोलकुंडे और बीजापूर से जा मिली थीं और इन दोनों सलतनतों से भी फ़ौज भेज भेज कर बादशाह ने किरोड़ों रुपया वसूल किया जिससे उनका भी मुल्क उजड़ गया और ख़ज़ाना ख़ाली होगया अगर बलख़ और कंधार की मोहिमें शुरू न होजातीं तो ये दोनों सलतनतें भी बाक़ी न रहतीं गोलकुंडे से तो ख़ुद बादशाह को कुंवर पदे में पनाह मिली थी जब कि वे अपने बाप जहांगीर से लड़कर जलावतन होगये थे जुनेर जहां दो तीन बरस तक रहकर उन्होंने बिपतां काटा था गोलकुंडे के कुतुब शाह का ही इलाक़ा था-

दस्तकारी और कारीगरी.

शाहजहां के वक़्त में हिन्दुस्तान की कारीगरी बहुत चमक गई थी इमारत के नमूने तो अब भी आगरे

دوبارہ احمد نگر فتح کرکے نظام شاہیوں کی سلطنت ختم کردی اور تمام علاقہ اوس کا اپنے ممالک محروسہ میں شامل کردیا جس سے اب اوس کی حدیں براہ راست گول گنڈہ اور بیجاپور سے جا ملی تہیں اور ان دونو سلطنتوں سے بہی فوج بہیج بہیجکر لاکہوں کروڑوں روپیہ وصول کیا جس سے اون کا ملک بہی اوجڑ گیا اور خزانہ بہی خالی ہوگیا اگر بلخ اور قندہار کے مہمات شروع نہ ہو جاتی تو یہہ دونو سلطنتیں باقی نہ رہتیں

گول کنڈہ سے تو خود بادشاہ کو ایام شاہزادگی میں پناہ ملی تھی جب کہ بادشاہ سے بگاڑ ہوکر جلاوطنی کی نوبت پہونچی تھی قصبہ جنیر کہ جہاں دو تین سال رہکر بادشاہ نے اپنی مصیبت کے دن تیر کئے تھے قطب شاہ والی گولکنڈہ کا ہی علاقہ تہا

دستکاری و کاریگری

شاہجہاں کیوقتمیں ہندوستاں کی کاریگری بہت درج اور ترقی پر پہونچ گئی تھی فن عمارت کے نمونہ تو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेंताजबीबीकारोज़ा, दिह्लीकाकि
लाम़सजिदमहल, लाहोर काबु
ल, और कश्मीर वगैरामेंदोलत-
खानेमौजूदहैंजोखूबसूरतीऔ
रकारीगरीमेंअपनाजवाबनहीं
रखतेहैं खासकरकेताजबीबीका
रोज़ातोआपहीअपनाजवाबहै-

इसीतरह ज़ेवरके जड़ने और
मीनाकारीके कामोंमेंभी दिनदिन
कारीगरीबढ़तीजातीथी, खुद बाद
शाहकोजड़ाऊचीजोंकाबहुतशौ
क़ थाक्याज़ेवर क्याहथियार और
क्याहाथीघोड़ोंकेसाज अक्सरज
ड़ाऊऔरमीनाकारहोतेथे उस
ज़मानेमेंजड़ावके जोकामहुवेथे
उनमें सबसेउमदा तख्त ताऊस
था जिसमें निहायतक़ीमतीजवा
हरोंकाजड़ावजड़ागयाथा-

फिर कपड़े बुननेकी कारीगरी
थी बंगाले गुजरात और बुरहा
नपुरमें ऐसा अनोखा बारीक
और सफ़ेद कपड़ा सादा और
ज़रीकाबुनाजातायाथा कि जिस
के सैकड़ोंथान सोग़ातमें ईरान
तूरान और रूमके बादशाहोंके

اب بہی آگرہ میں روضہ تاج گنج مسجد
وقلعہ وعمارت شاہ جہاں آباد ولاہو
وکابل وکشمیر وغیرہ اب بہی موجود
ہیں جو طرز وضع اور صنعت کاری
میں لاثانی ہیں خصوص روضہ
تاج گنج جو اپنی خوبی میں اپنا
نظیر آپ ہی ہے۔

اسیطرح زیور ومرصع کاری
کی صنعت بہی روز بروز ترقی کرتی جاتی
تہی خود شاہ جہاں بادشاہ کو مرصع
چیزوں کا بہت شوق تہا کیا زیور
کیا ہتھیار اور کیا گہوڑوں کے زین
اور ساز اکثر مطلا اور مکلل ہوتے
تہے۔

اوس عہد کی مرصع کاری
میں سب سے عمدہ تخت طاؤس
تہا جو نہایت بیش قیمت جواہرات
سے تیار ہوا تہا۔

پہر پارچہ بافی کی صنعت تہی
بنگالہ گجرات اور برہان پور میں ایسا
نادر اور نفیس کپڑا سادہ وزری کار
بنا جاتا تہا کہ جس کے تہان
کے تہان تحفہ میں
ایران توران اور روم
کے تاجداروں کو بادشاہ کیطرف

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

नेजेजाया करते थे —

दुदामी के थान मालवे में पहिले भी बनते थे मगर शाहजहां बादशाह की क़दरदानी से बहुत बढ़िया बनने लगे थे १ सादा जामेवार की क़ीमत ४०) और रंगीन बूटेदार की ८०) तक पहुंच गई थी उसकी बारीकी और चिकनाहट को हिन्दुस्तान का कोई कपड़ा नहीं पहुंचता था गरमियों में बादशाह की पोशाक इसी की बनती थी —

इसके पीछे कालीनों की बुनावट थी बादशाहनामे में जहां सन १६ जिलूसी का हाल लिखा गया है वहां यह बात भी लिखी है कि इस मुबारक अहद (समय) में सरकार ख़ालिसे के क़ालीनों का काम जो कशमीर और लाहौर में शाल दुशालों की ऊन से बुने जाते हैं यहां तक बढ़ गया है कि १ गज़ क़ालीन १००) में तैयार होता है और उसकी उमदगी इस हद तक होती है कि "किरमान" के क़ालीन जो शाह ईरान के कारख़ाने में बुने जाते हैं उसके आगे खद्दर मालूम होते हैं

سے ہمیشہ بھیجے جایا کرتے تھے۔

دودامی کے تھان صوبہ مالوہ میں اگرچہ پہلے بھی اچھے بنتے تھے مگر شاہ جہاں کے عہد میں بوجہ روزافزوں قدردانی کے بہت اعلی و افضل بننے لگے تھے ایک جامہ وار سادہ کی قیمت چالیس روپیہ اور بوٹہ دار رنگین کی اسّی روپیہ تک پہونچ گئی تھی اوسکی نفاست اور نزاکت کو ہندوستان کا کوئی کپڑا نہیں پہونچتا تھا بادشاہ کا لباس گرمیوں میں اسی سے بنتا تھا

اسکے بعد قالین بافی کا درجہ تھا چنانچہ سنہ ۱۶ جلوسی مطابق سنہ ۱۰۴۲ کے حالات میں مصنف بادشاہ نے لکھا ہے کہ اس مبارک عہد میں سرکار خالصہ شریفہ کے قالینوں کا کام کشمیر اور لاہور میں پشم شال سے بنے جاتے ہیں یہاں تک بڑھ گیا ہے کہ ایک گز قالین ایک سو روپیہ میں تیار ہوتا ہے اور اوس نفاست اس حد تک ہوتی ہے کہ کرمان کے قالین جو شاہ ایران کے کارخانہ میں بنے جاتے ہیں اوسکے آگے کھدر معلوم ہوتے ہیں

...dation Trust, Delhi and eGangotri

बादशाहीदौलतखानों की तमाम बैठकों के वास्ते इसी ऊन के कालीन बनाये गये हैं–	دولت خانہ والا کے تمام نشیمنوں کے واسطے پشم شال کے قالین بنائے گئے ہیں۔
कागज़की कारीगरी भी कम नहीं रही थी दौलताबादी कागज़ मज़बूती और उमदगी में मशहूर था यह कागज़पुरे में बनता था जो एगांव दौलताबाद के इलाके में हौज़कतलू के पास था–	کاغذ کی کاری گری بھی کم نہیں رہی تھی دولت آبادی کاغذ نفاست میں شہرہ آفاق تھا کاغذ پورہ میں تیار ہوتا تھا ایک گاؤں دولت آباد کے علاقہ میں حوض قتلو کے پاس تھا
शाहजहां के गुण·	**شاہ جہاں بادشاہ کے اوصاف**
मुल्लाअबदुलहमीद ने बादशाहनामे में लिखा है कि बादशाह रातदिन "वज़ू" कियेहुवे पाक और पवित्र रहते हैं ज़रूरी नहाने में पल भरकी भी देर नहीं करते नमाज़ रोज़े का बरताव सुन्नी मुसलमानों के माफ़िक है पवित्र रातों (शबरातः वग़ैरा) को आधी से ज़ियादा नमाज़ों और दुआओं में गुज़ारते हैं–	ملا عبد الحمید نے بادشاہ نامہ میں لکھا ہے کہ بادشاہ رات دن وضو کئے ہوئے پاک صاف رہتے [illegible]
तबीअत में यहां तक स्वच्छता है कि दूसरों की छूई हुई चीज़ नहीं छूते जो ऐसे ज़वार रात के नीहायत लगजावे तो उसी वक़्त धो डालते हैं–	[illegible] تو اوسی وقت دھو ڈالتے ہیں۔
खुशबू का निहायत ही शौक़ है तमाम महफ़िल तरह तरह के	خوشبو کا بے حد شوق ہے تمام محفل طرح طرح کے عطروں

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क़ीमती अतरों और खुशबूदार धूनियों से महकी हुई रहती है ख़ासी पोशाक तो बिलकुल अतर में ही बसी हुई होती है—

गुलाब का जहांगीरी अतर ज़ियादा काम में आता है जो जहांगीर बादशाह के ज़माने में निकला है और जिसने तमाम अतरों को रद्द कर दिया है—

क्षमा करने का स्वभाव है जिन लोगों ने कि शाहज़ादगी के दिनों में बहुत से क़सूर किये थे और बहुतों ने उनमें से उनके ही [illegible] हुए थे और जो नातमामी [illegible] गये थे उन सबके क़सूरों [illegible] तख़्तनशीनी के पीछे माफ़ कर दिये—

[illegible] सजायें (दंड) शरीअ़त (मुसलमानी धर्मशास्त्र) के मुताबिक़ देते हैं इतनी बड़ी सल्तनत में कि जो ३ तरफ़ से समंदरों से मिली हुई है कोई बलवान किसी निरबल को नहीं सता सकता है अगर कोई किसी को मार दे या अंगहीन कर डाले तो उसकी

اور خوشبودار دہونیوں سے
مہکی رہتی ہے لباس خاصہ
تو بالکل عطر میں بسا ہوا ہی
رہتا ہے

عطر گلاب جہانگیری کا زیادہ
استعمال ہوتا ہے جو جہانگیر بادشاہ
کے عہد میں ایجاد ہوا ہے
اور جس نے تمام عطروں کو
رد کر دیا ہے۔

خطا بخشی کی عادت ہے
جن لوگوں نے کہ ایام شاہزادگی
میں بہت سے قصور کئے تھے
اور اونمیں بہت سے انکے ہی تربیت
ہوئے تھے جو کوتاہ بینی سے منحرف
ہو گئے تھے اون سب کی خطائیں
بعد تخت نشینی کے معاف
کر دیں۔

تمام سزائیں شریعت کے
موافق دیجاتی ہیں اتنی بڑی
سلطنت میں کہ جو تین طرف دریا ہی
شور سے ملی ہوئی ہے کوئی
زبردست زیر دست کو
نہیں ستا سکتا ہے اگر کوئی کسی
کو قتل کرے یا کوئی عضو بلا وجہ
شرعی کاٹ دے تو اوس کی

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सज़ा बादशाह के रोबरू शारीअ़तके हुक्मसे दीजाती है और जो किसी सूबेमें कोई आदमी सज़ापाने के लायक़ होता है तो वहां का नाज़िम हुज़ूर में अरज़ किये बग़ैर उसको कुछ सज़ा नहीं देसक्ता—

इनसाफ़में अमीर ग़रीब बराबर रखे जाते हैं अगर कभी किसी प्रसंग से रूम ईरान और तूरान के तुर्क, क़ज़लबाश, और उज़बक, बादशाहों की सख़्ती का जो वे तरह २ की सज़ायें देनेमें करते हैं दरबार में ज़िक्र आ जाता है तो उसी वक़्त बादशाह की तबीअ़त घबराउठती है बहुत दफ़े फ़रमाचुके हैं कि ख़ुदा ने बादशाहों को हाकिम किया है उनको चाहिये कि हमेशा इनसाफ़ का ध्यान रखें और दंड उतना ही दें कि जिसमें सताने वाले का हाथ सताये हुवे पर न पड़सके और ग़रीबों के साथ नरमी और हंसमुखपना बरतें— ज़ुल्मों को मिटावें थोड़े २ अपराधों में आदमियों के प्राण न लेवें—

سزا بادشاہ کے روبرو عدالت میں بموجب حکم شریعت کے دیجاتی ہے اگر کسی صوبہ میں کوئی آدمی مستحق عقوبت ہو تو وہاں کا ناظم حضور میں عرض کئے بغیر سیاست نہیں کرسکتا ہے۔

[illegible] سیاست میں ارکان دولت کو ایک عام آدمی سے بہی آگے نہیں رکہتے اگر کبہی مجلس میں کسی اتفاق سے سلاطین روم و قزلباش اور اوزبک کی سفاکی و بیباکی کا ذکر آجاتا ہے جو وہ طرح طرح کی سیاستوں میں دکہاتے ہیں تو اوسیوقت طبع اقدس مکدر ہوجاتی ہے بارہا فرما چکے ہیں کہ خدا تعالے نے بادشاہوں کو حاکم کیا ہے اونکو چاہیئے کہ ہمیشہ [illegible] معروف عدالت رکہیں اور سیاست [illegible] اوتنی ہی کریں کہ جس میں ظالم کا ہاتہہ مظلوم کے اوپر نہ اوٹہہ سکے اور غریبوں کے ساتہہ نرمی و شگفتہ روئی مرعی رکہیں ظلمونکا قلع قمع کریں تہوڑی تہوڑی تقصیر و نمیں انسان کی جان نہ لیں

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रजाको ज़रा२सेशक और शुबहे
पर पीड़ा न देवें अपने पासवालों
के कामोंको देखते रहैं और दूर वा
लोंके करतूतोंकी खबर रखें ताकि
जो कुछ अच्छे बुरे काम दरगा
हमें हाज़िर रहने वालों और सूबो
के हाकिमों और उनके पेशकारों
से हों उनकी शाबाशी और सज़ा
उनको पहुंच जावे -

दान और दातारगी का कुछ
ठिकाना नहीं है दूसरे बादशाह
जो कुछ उमर भर में बखशा कर
ते हैं वो सब बखशिश यहां १ जशन
में हो जाती है -

लाज और लिहाज़ ये यहां तक है
कि कभी किसी के वास्ते बुरा ह-
र्फ ज़बान से नहीं निकालते और
न किसी के मुंहपर ऐसी बात क
हते हैं कि जिससे उसको शर
मिंदा होना पड़े हतक इज्ज़त क
रना तो कहां रहा -

جزوی بدگمانی پر رعایا کو نہ ستاویں
نزدیکیوں کے افعال ور دوردستوں
کے حال سے بکمال ہوشیاری خبردار
رہیں تاکہ جو کچھ اچھا برا کام
حاضرین درگاہ حکام صوبہ جات
اور اون کے پیشکاروں سے
سرزد ہوں اون کی جزا
اور سزا اون کو پہونچ
جاوے

بذل و سخا کی کچھ حد
نہیں ہے دوسرے بادشاہ
عمر بھر میں جو کچھ عطا و بخشش
کرتے ہیں وہ یہاں ایک جشن
میں ہوجاتی ہے

لحاظ اور شرم یہاں تک ہے
کہ کبھی کسیکی حق میں برا حرف
زبان سے نہیں نکلتا ہے
اور نہ کسیکے روبرو ایسی بات
کہتے ہیں کہ جس سے اوسکو
شرمندگی ہو ہتک عزت کرنا تو
کہاں رہا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोलने और लिखने की तो तारीफ़ नहीं होसकती जब किसी मुकद्दमे या क़िस्से का ज़िक्र करते हैं तो वह ऐसा साफ़ और सुंदर होता है कि बड़े २ पंडित उसको सुनकर कान पकड़ते हैं और जो बातें दरबारियों से फ़रमाया करते हैं वे तो ऐसी क़ीमती होती हैं कि जो सब लिखली जावें तो बादशाहों के वास्ते अच्छा कानून अदल इनसाफ़ सीखने का, और वज़ीरों के लिये मुल्कों के बंदोबस्त करने का बन जावे-	فصاحت بیان اور حسن تحریر کی تو کچھہ تعریف ہی نہیں ہو سکتی جب کسی قدمہ یا قصہ کا بیان کرتے ہیں تو وہ ایسا صاف اور سلیس ہوتا ہے کہ بڑے بڑے سخن طراز اوس کو آویزہ گوش بناتے ہیں کلمات قدسی جو حضار محفل سے ارشاد ہوتے ہیں اگر وہ جمع کئے جاویں تو بادشاہوں کو اداب سلطنت اور وزیروں کو تدابیر ممالک سیکھنے کے لئے ایک عمدہ دستورالعمل بن جاویں۔
हर्फ़ बहुत अच्छे लिखते हैं बहुत दफ़े शाहज़ादों और बड़े बड़े अमीरों को अपने हाथ से ही फ़रमान लिखा करते हैं और कभी कभी मुनशियों के लिखे हुवे हुक्मों पर अपनी क़लम से भी कुछ न कुछ लिख दिया करते हैं-	خط بہت پاکیزہ ہے اور اکثر اوقات بادشاہزادوں اور بڑے بڑے امیروں کو خط خاص سے فرمان لکھا کرتے ہیں اور کبھی کبھی منشیوں کے لکھے ہوئے منشوروں پر چند سطریں تحریر فرمادیتے ہیں۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसतरह कुछ वक्त खुदा की बंदगी में कुछ बादशाही ...में कुछ आराम में और कुछ सैर शिकार में गुज़रता है-	اسطرح کچھ وقت عبادت الہی میں کچھ مہمات بادشاہی میں کچھ آرام میں اور کچھ سیر وشکار میں گذرتا ہے
दिनचरिया	**اشغال شبانہ روزی**
...रात दिन का वक्त इस तौर से बांटा रखा है कि सुबह होने से २ घंटे पहिले जागकर नमाज़ और दुआ में मशगूल होते हैं सूरज निकलने से दो तीन घड़ी पीछे दरशन के झरोके से सिर निकाल कर लोगों को दरशन देते हैं इस में अकसर तो २ घड़ी और कभी कम ज़ियादा भी लगजाती है- यह दस्तूर अकबर बादशाह का चलाया हुआ है ता कि सब लोग रईयत मैदान में बिना रोक टोक बादशाह के दरशन करलें और फ़रयादी आप अपना हाल अरज़ करदें जिनकी असली हकीकत अदालत के ओहदेदार पूछकर	اوقات شبانہ روزی کی یہہ تقسیم ہے کہ صبح سے دو گھنٹہ پہلے بیدار ہوکر نماز اور روزہ میں مشغول رہتے ہیں سورج نکلنے کے دو تین گھڑی بعد جھروکہ درشن سے سر نکالکر لوگوں کو درشن دیتے ہیں اسمیں اکثر دو گھڑی اور کبھی کم وبیش لگجاتی ہے یہ حضرت عرش آشیانی یعنی اکبر بادشاہ کی ایجاد ہے کہ اکثر بندے وسیع میدان میں بغیر کسیکی ممانعت اور مزاحمت کے بادشاہ کا درشن کریں اور مظلوم لوگ بلاواسطہ اپنا حال عرض کردیں تاکہ متصدیان عدالت اصل حقیقت دریافت کرکے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोलने और लिखने की तो कुछ तारीफ़ नहीं हो सकती जब किसी मुकदमे या क़िस्से का ज़िक्र करते हैं तो वह ऐसा साफ़ और सुंदर होता है कि बड़े २ पंडित उसको सुनकर कान पकड़ते हैं और जो बातें दरबारियों से फ़रमाया करते हैं वे तो ऐसी क़ीमती होती हैं कि जो सब लिखली जावें तो बादशाहों के वास्ते १ अच्छा कानून अदल इनसाफ़ सीखने का, और वज़ीरों के लिये मुल्कों के बंदोबस्त करने का बन जावे-

हर्फ़ बहुत अच्छे लिखते हैं बहुत दफ़े शाहज़ादों और बड़े बड़े अमीरों को अपने हाथ से ही फ़रमान लिखा करते हैं और कभी कभी मुनशियों के लिखे हुवे हुक्मों पर अपनी क़लम से भी कुछ न कुछ लिख दिया करते हैं-

فصاحت بیان اور حُسن تحریر کی تو کچھ تعریف ہی نہیں ہو سکتی جب کسی مقدمہ یا قصہ کا بیان کرتے ہیں تو وہ ایسا صاف اور سلیس ہوتا ہے کہ بڑے بڑے سُخن طراز اوس کو آویزہ گوش بناتے ہیں کلمات قدسی جو حضار محفل سے ارشاد ہوتے ہیں اگر وہ جمع کئے جاویں تو بادشاہوں کو اداب سلطنت اور وزیروں کو تدابیر ممالک سیکھنے کے لئے ایک عمدہ دستور العمل بن جاویں۔

خط بہت پاکیزہ ہے اور اکثر اوقات بادشاہزادوں اور بڑے بڑے امیروں کو خط خاص سے فرمان لکھا کرتے ہیں اور کبھی کبھی منشیوں کے لکھے ہوئے منشوروں پر چند سطریں تحریر فرمادیتے ہیں۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

इसतरह कुछ वक्त ख़ुदा की बंदगी में कुछ बादशाही कामों में कुछ आराम में और कुछ सैर शिकार में गुज़रता है-

दिनचरिया

रात दिन का वक़्त इस तौर से बांटा रक्खा है कि सुबह होने से २ घंटे पहिले जागकर नमाज़ और दुआ में मशग़ूल होते हैं सूरज निकलने से दो तीन घड़ी पीछे दरशन के झरोके से सिर निकाल कर लोगों को दर्शन देते हैं इस में अकसर तो २ घड़ी और कभी कम ज़ियादा भी लग जाती है- यह दस्तूर अकबर बादशाह का चलाया हुआ है ता कि सब लोग चौड़े मैदान में बिना रोक टोक बादशाह के दरशन कर लें और फ़रयादी आप अपना हाल अर्ज़ कर दें जिनकी असली हक़ीक़त अदालत के ओहदेदार पूछकर

اسطرح کچھ وقت عبادت الہی میں کچھ مہمات بادشاہی میں کچھ آرام میں اور کچھ سیر و شکار میں گذرتا ہے

اشغال شبانہ روزی

اوقات شبانہ روزی کی یہہ تقسیم ہے کہ صبح سے دو گھنٹہ پہلے بیدار ہوکر نماز اور روزہ میں مشغول رہتے ہیں سورج نکلنے کے دو تین گھڑی بعد جھروکہ درشن سے سر نکالکر لوگوں کو درشن دیتے ہیں اسمیں اکثر دو گھڑی اور کبھی کم و بیش لگجاتی ہے یہ حضرت عرش آشیانی یعنی اکبر بادشاہ کی ایجاد ہے کہ اکثر بندے وسیع میدان میں بغیر کسیکی ممانعت اور مزاحمت کے بادشاہ کا درشن کرلیں اور مظلوم لوگ بلاواسطہ اپنا حال عرض کردیں تاکہ متصدیان عدالت اصل حقیقت دریافت کرکے

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

आमखासदौलतखानेमेंयाग़ुसलखानेमेंअरज़करेंऔरबादशाहखुद्तहक़ीक़ातकरकेउनकान्यावचुकावें-	دولتخانہ خاص وعام یا غسلخانہ میں عرض کریں اور بادشاہ بذات خاص بعد تحقیقات اون مقدمات کو فیصل فرماویں
हाथीभीइसीमैदानमेंलड़ायेजातेहैंकिसलियेकिख़ासवआमदौलतख़ानेमेंउनकालानामुशकिलहोतेहैंकभीहाथियोंकोघोड़ोंपरदौड़ातेहैंकिजिससेवेलड़ाईमेंसवारोंकोदबासकें-	ہاتھی بھی اسی میدان میں لڑائے جاتے ہیں کیونکہ دولتخانہ خاص وعام میں اونکا لانا مشکل ہوتا ہے کبھی ہاتھیوں کو گھوڑوں پر دوڑاتے ہیں کہ لڑائی میں سواروں پر غالب آویں
बादशाहीफ़ौजऔरअमीरोंकेघोड़ेभीइसीलंबेचौड़ेमैदानमेंदेखेजातेहैं-	بادشاہی فوج کے اور امیروں کے گھوڑے بھی اسی وسیع میدان میں دیکھے جاتے ہیں
फिरयहांसेदौलतखानेखासवआममेंपधारजातेहैंजिसकेऊपरधूपऔरमेहकेबचावकीग़रज़सेकपड़ेकासायबानखड़ाहोजाताहैऔरनीचेकालीनबिछजातेहैंइसके३तरफ़लकड़ीकाकठहरा५०गज़लंबा	پھر بادشاہ یہاں سے دولتخانہ خاص وعام میں تشریف لے جاتے ہیں جسپر دھوپ اور مینہ کے بچاؤ کے لیے کپڑے کا سائبان کھڑا ہوجاتا ہے اور اوسکے نیچے قالین بچھ جاتی ہیں اوسکے تین طرف لکڑی کا کٹہرہ پچاس گز لمبا

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और १५ गज़ चौड़ा लगा हुआ है और हर तरफ़ १ दरवाज़ा है यहां बादशाही बंदों का सलाम होता है- बादशाहज़ादे दायें बायें खड़े हो जाते हैं और जब बैठने का हुक्म होता है तो बैठते हैं बाक़ी लोग कठहरे की तरफ़ पीठ करके सायबान के नीचे खड़े हो जाते हैं और जिन को अंदर आने की इज़्ज़त मिली हुई है वे झरोके के दायें बायें अपने अपने दरजे से खड़े रहते हैं-

ओहदेदार अपनी २ जगह खड़े हो कर मुल्क और माल के कामों की अरज़ करते हैं और मनसबदारों की अरज़ मारूज़ बख्शियों की मारफ़त होती है जिन में से बहुतों को काम और इज़ाफ़े मिलते हैं जो लोग सूबों और दूसरी तरफ़ों से आते हैं वे सलाम और मुजरा करते हैं

اور پندرہ گز چوڑا لگا ہے اور ہر طرف ایک دروازہ ہے - یہاں لوگون کا سلام ہوتا ہے . بادشاہزادہ دائین بائین کھڑے ہوتے ہین اور جب حکم ہوتا ہے تو بیٹھ جاتے ہین مگر بادشاہی ملازم کٹھرہ کیطرف پشت کرکے سائبان کے نیچے کھڑے ہو جاتے ہین اور جن کو اندر آنے کی عزت ملی ہوئی ہے وہ جھروکہ کے چپ و راست اپنے اپنے درجہ پر قیام کرتے ہین -

ارکان دولت اپنے اپنے رتبہ سے جھروکہ کے برابر کھڑے ہوکر مہمات ملک و مال کی عرض کرتے ہین . منصبدارون کی عرض و معروض بخشیون کے وسیلہ سے ہوتی ہے . جنمین سے اکثر کو اضافہ اور عہدہ ملتے ہین جو لوگ صوبون اور اطراف ممالک سے آتے ہین وہ شرف ملازمت حاصل کرتے ہین

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

ओरजोसूबों और खिदमतोंपर मुकर्ररहोतेहैं उनकोजानेकीरुखसत मिलती है—	اور جو صوبون اور خدمتون پر مقرر ہوتے ہین وہ وہان جانے کی رخصت پاتے ہین
बर्कंदाज़ोंकी मीरआतिश और अहदियोंको उनके बख्शीहज़ूरमेंलातेहैं और जिसको कुछहकसमझतेहैं उसकेवास्तेपरवरिशकीअरज़करतेहैं—	برقندازون اور احدیون کو بر آتش توپخانہ کے مشرف اور احدیون کے بخشی حضور مین لاتے ہین اور جس کو مستحق پرورش سمجھتے ہیں اُس کیواسطے عرض کرتے ہین۔
फिरमीरसामानऔरदीवानबूतातवगैरा तरह२कीअरज़ियांपढ़तेहैं बादशाहउनकेऊपर ऐसेमुनासबऔर ठीकहुक्मचदातेहैं कि जिसकोदेखकर बडे २ वज़ीरभीचकराजातेहैं—	متصدیان سرکار خالصہ مثل میرسامان و دیوان بیوتات وغیرہ طرح طرح کے کامون کی عرضیان پیش کرتے ہین بادشاہ فوراً اُنکے اوپر ایسے ایسے معقول اور مناسب احکام صادر فرماتے ہین جنکو سنکر بڑی بڑی وزیر حیرت مین جاتے ہین
शाहज़ादों, सूबेदारों, फ़ौजदारों, और सूबेकेदीवानबख्शियोंकी अरज़ियांहज़ूरियोंकेहाथोंसे गुजरतीहैं जिनमेंसे शाहज़ादों और बडे २ अमीरोंकी अरज़ियोंकोतो बादशाहपढ़तेहैं और दूसरोंकी अरज़ियें	شاہزادون صوبہ دارون فوجداران اور صوبون کے دیوان بخشیون کی عرضیان بمقربین درگاہ کے ذریعے سے گزرتی ہین جنمیں سے شاہزادون اور عمدہ عمدے دولت کی عرضیان تو خود بادشاہ پڑھتے ہین اور دوسری عرضیون کا۔

का हाल अनाद शाही नोकर अरज़ करनेवालों की मारफ़त अरज़ कराते हैं -	حال ملازمان شاہی بذریعہ ارباب نقود عرض کراتے ہین
सदर लोगों की अरज़ियों में जितना कुछ हिस्सा अरज़ करने के लायक होता है वह सदर कुल अरज़ करता है और उसी के अरज़ करने पर सैयदों शेखों आलिमों पीरों और फ़क़ीरों की मुरादें भी पूरी होती हैं हरेक को हुज़ूर में नक़द रुपया उसकी लयाक़त के माफ़िक़ इनायत होता है -	صدور کی عرضیون مین سے جو حصہ کہ قابل عرض کرنے کے ہوتا ہے وہ صدر کل عرض کرتا ہے اور اہل استحقاق یعنی سادات ومشائخ و علما و فضلا و صلحا کا حال بھی وہی معرض عرض مین لاتا ہے اوران سب کی مرادین پوری ہوتی ہین. حضور مین سے ہرایک کو اُس کی استعداد کے موافق زرنقد عطا ہوتا ہے -
अरज़ मुकर्रर का मुत्सद्दी जागीर मन्सब नक़दी और हरतरह के मुआमलों की याददाश्तों को और तमाम हुक्मों को दुबारा अरज़ करता है	عرض مکرر کا متصدی جاگیر منصب نقدی اور اقسام معاملا کی یادداشتون اور تمام حکمون کو دوبارہ عرض کرتا ہے
तवेले और फ़ीलखाने के अहलकार घोड़ों हाथियों को र उनकी रसम मोताद यानी	طویلہ اور فیل خانہ کے اہلکار گھوڑون اور ہاتھیون کو مع رسم معتاد کے نظراقدس سے گزارتے ہین

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खुराक वग़ैरा को बाद साहबीन ज़र से गुज़रते हैं यह ज़ाबता मोताद गुज़राने और वापस लेने उस रुपये का जो सरकार से इन जानवरों की खुराक के वास्ते मुकर्रर है जब कि बेदुबले और ख़राब हों अकबर बादशाह का बांधा हुआ है-

फिर उन अमीरों को कि जिनके घोड़ों के ताज़ा दाग़ लगे हों दाग और फ़ौज की हाज़िरी के मुत्सद्दी मये घोड़ों के पेश करते हैं ताकि जो कोई आदमी और घोड़ा ठीक न हो तो ताबीनबाशी (यानी उस ओहदेदार) पर (कि जो अमीरों के सवारों पर तईनात होता था) एतराज़ होवे और फिर वह अपने काम में ग़फ़लत न करे-

यहां से कभी ४ और कभी ५ घड़ी के बाद जैसा मौका कामों के

ضابطہ گذرنے معتاد اور باز خواست اُس روپے کا جو سرکار سے دواب کے واسطے مقرر ہوتا ہے بصورت زبونی اور لاغری ان جانوروں کے اکبر بادشاہ کا مقرر کیا ہوا ہے۔

پھر داغ اور تصحیح تابینان نے متصدی اُن امرا کو کہ جن کے گھوڑوں کا تازہ داغ اور تصحیح ہوا ہو مع گھوڑوں کے پیش کرتے ہین تاکہ اگر کوی آدمی یا گھوڑا زبون ہو تو تابین باشی (نگاہ دارندہ تابینان) معاتب ہو۔ اور پہر غفلت نکری نکرے یہان سے کبھی چار اور کبھی پانچ گھڑی بعد جیسا موقع بنظر قلت و کثرت کامون کے ہو۔ اٹھکر دولت خانہ خاص مین جاتے ہین۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कम और ज़ियादा होने से होता है
उठकर दौलतख़ाने ख़ास में जा
ते हैं और तख़्त पर बैठते हैं
अकबर बादशाह के वक्त में दी
वानख़ाने और महल के दरमि
यान १ जगह थी जहां वे नहाया
करते थे वहां बाज़े मुसाहिब औ
र दीवान बख़्शी भी हाज़िर हो
कर ज़रूरी कामों की अरज़ क
र लिया करते थे यह जगह ह
म्माम के क़रीब होने से कुछ दि
नों पीछे ग़ुसलख़ाना कहला
ने लगी थी अब इसका नाम
दौलतख़ाना ख़ास है—

यहां बादशाह बाज़ी ज़रूरी
अरज़ियों का जवाब अपनी क़
लम से लिखते हैं और सूबेदा
रों की अरज़ियों का मतलब जो
वकीलों या वज़ीरों या अरज़ क
े की ख़िदमत के मुत्सद्दियों
की मारफ़त अरज़ होता है सुन
कर उसके जवाब में जो कुछ फ़
रमाते हैं उसके माफ़िक़ मुनशी
लोग फ़रमान लिखते हैं लिख
ने के बाद बादशाह को दिखाते हैं

جاتے ہین اور تخت پر بیٹھتے
ہین۔ اکبر بادشاہ کے عہد مین
دیوان خانہ اور مشکوے دولت
کے درمیان ایک جگہ تھی۔ جہان
وہ غسل کیا کرتے تھے۔ اور بعض
مقرب اور دیوان بخشی بھی باریاب
ہوکر ضروری کامون کی عرض
کریا کرتے تھے یہ خلوت کدہ کچھ
دن گزرنے پر حمام کے قریب
ہونے سے غسل خانہ کے نام
سے مشہور و معروف ہوگیا تھا
اب اس کا نام دولت خانہ خاص
ہے۔

بادشاہ یہان بعض
ضروری عرضیون کا جواب
اپنے قلم سے لکھتے ہین۔ اور
صوبہ دارون کی عرضیون کا
مطلب جو وکیل یا وزیر یا متصدیان
خدمت عرض کے ذریعہ سے
عرض ہوتا ہے سنکر اس کے
جواب مین جیسا کچھ فرماتے ہین
اس کے موافق منشی لوگ فرمان
لکھتے ہین۔ اور لکھنے کے
بعد بادشاہ کو

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

उनमें अगर कहीं गलती रह गई
हो या मतलब टूट गया हो तो बाद
शाह उसको दुरुस्त कर देते हैं
बादशाहज़ादों में से जो कोई सा
हिबे रिसाला होता है यानी जिस
के हुक्म पहुंचाने से वे फ़रमान
लिखे जाते हैं वह अपना नाम उ
न फ़रमानों की पीठ पर लिख क
र मोहर करता है उसके नीचे दी
वान अपनी मारफ़त (पहिचान)
लिखता है फिर ये फ़रमान मह
ल में चले जाते हैं वहां मोहर उज़
के (बड़ी मोहर) जो मुमताज़ज़मा
नी बेगम के पास रहती है उनके
ऊपर लगाई जाती है—

इसी जगह दीवान लोग ख़ा
लसे के कामों और मनसबदा
रों की तनख़्वाह की अरज़ कर
के मंज़ूरी लेते हैं और सदर कु
लह क़दारों (पुन्यार्थ पाने वालों)
की हाजतें अरज़ करता है बादशा
ह किसी को ज़मीन किसी को
नक़दी और किसी को रोज़ी
ना जैसी २ जिसकी लयाक़त हो
ती है इनायत फ़रमाते हैं बहुत

ملاحظہ کراتے ہیں۔ اُس وقت
اگر کسی میں کچھ غلطی رہ گئی ہو
یا مطلب فوت ہو گیا ہو تو بادشاہ
اُس کی اصلاح فرما دیتے ہیں۔
بادشاہزادوں میں سے جو
کوئی صاحب رسالہ ہوتا ہے
وہ اپنا رسالہ فرمانوں کی پشت
پر لکھ کر مُہر کرتا ہے اور رسالہ
کے نیچے دیوان اپنی معرفت
لکھتا ہے۔ پھر وہ فرمان محل میں
چلے جاتے ہیں اور مُہر اوزک
سے جو مہد علیا ممتاز زمانی بیگم
کے پاس رہتی ہے۔ مزین
ہوتے ہیں ✤

اپنی خلوت کدہ میں
دیوان خالصہ کے کاموں اور
منصب داروں کی تنخواہ عرض
کر کے اُنکا انصرام کرتا ہے اور
دیوان کل ارباب استحقاق کی
حاجتیں عرض کرتا ہے بادشاہ
کسی کو زمین کسی کو نقدی اور
کسی کو روزینہ بقدر استعداد
عنایت کرتے ہیں۔
اکثروں کو

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोंकेतुलादानऔर खैरातके खज़ानोंसे रुपयादिलातेहैं -

बहुतसेवक्तोंमें जड़ाऊऔर मीनाके काम कीचीजेंदेखाकरतेहैं खासा इमारतोंके दरोगे और सिलावट इमारतोंके नकशेमुलाहज़ेकरातेहै बादशाह को अपना नाम क़ायमरखने के वास्ते बड़ी२ इमारतों के बनाने का शौक़ बहुतही है इसवास्ते अकसर मकानों के नकशे आपही बनातेहैं और जो गजधर लोग खैंच कर लाते हैं उनको नासुधारतेहैं -

जबकोईनकशा मंजूर होजाताहै तो उसपर आसिफखां वज़ीर बादशाह के हुक्मों को खोलकर लिखदेताहै कि जिसमें बनाने और बनवानेवाले नूलकेनफ़रसके --

इसज़मानेमें इमारतकी कारीगरी इतनी कुछबढ़ गईहै कि जिसेदेखकर मुसाफिरों को हैरतहोती है - फिरयहांकभीतो भांतिभांतिके शिकारीजानवरहज़ूर

خزانہ وزن اور تصدق سے روپیہ دلاتے ہیں۔

اکثر اوقات مرصع کاری اور میناکاری کی چیزون کا ملاحظہ فرمایا کرتے ہین - خاصہ عمارتون کے داروغہ اور معمار عمارتون کے نقشے ملاحظہ کراتے ہین اور چونکہ بادشاہ کو بقائے نام کے لئے عمارات عالیہ کے بنوانے کا بہت شوق ہے اسواسطے اکثر عمارتون کے نقشے خود بناتے ہین اور معمار لوگ جو نقشے کھینچکر لاتے ہین اُنہین خوب خوب ترمیم اور تصرف کرتے ہین ÷

جب نقشہ مقرر ہوجاتا ہے آصف الدولہ آصف خان بادشاہی احکام کی بخوبی تشریح کردیتا ہے تاکہ معمارون اور مستریون کے لئے بخوبی ہدایت رہے۔

اس عہد مین کار عمارت نے ایسی ترقی کی ہے کہ جس سے سیاحون کو حیرت ہوتی ہے پھر یہان کبھی تو طرح طرح کے شکاری جانور اور پرند وچرند حضور مین

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में लाये जाते हैं और कभी चाबुक सवार दौलतखाने के चौक में घोड़ों को फिराते हैं—

४ या ५ घड़ी दिन इन कामों में जाता है—

बादशाह ने दाना और ईश्वर से डरनेवाले लोगों को क़ाज़ी और मीर अदल बना रखा है तो भी फ़रयादियों की पुकार सुनने के लिये बुध के दिन झरोके दरशन से उठ कर दौलतखाने खास में इनसाफ़ करने को बैठते हैं उस दिन सिवाय क़ाज़ियों मुफ़्तियों और अदालत के ओहदेदारों बाज़े दीनदार लोगों और हमेशा हाज़िर रहनेवाले अमीरों के और आदमी नहीं आने पाते हैं अदालत के ओहदेदार एक एक फ़रियादी को हुज़ूर में लाकर उसका मुक़दमा अरज़ करते हैं बादशाह नरमी और हंसमुखपने से हरेक मुक़दमे को समझ कर आलिमों के फ़तवे (धर्म व्यवस्था) के अनुसार हुकम देते हैं जो किसी को दंड देना होता है

لائے جاتے ہیں - اور کبھی چابک سوار دولتخانہ کے صحن میں گھوڑوں کو پھراتے ہیں -

چار پانچ گھڑی دن ان شغلوں میں گزرتا ہے -

بادشاہ نے اگرچہ دانا اور خدا ترس آدمیوں کو قضا اور عدالت کے عہدوں پر مقرر کر رکھا ہے تو بھی مظلوموں کی بازپرس کے واسطے بدھ کے دن جھروکہ درشن سے اٹھکر دولتخانہ خاص میں انصاف کرنے کو بیٹھتے ہیں - اُس دن مفتیوں عدالت کے متصدیوں بعض دیندار فاضلوں اور ہمیشہ حاضر رہنے والے امیروں کے سوا اور لوگ نہیں آنے پاتے ہیں عدالت کے عہدہ دار ایک ایک داد خواہ کو حضور میں لاکر اس کا مقدمہ عرض کرتے ہیں بادشاہ نرمی اور شگفتہ روئی سے ہر ایک واقعہ کا حال دریافت کرکے عالموں کے فتوے کے موافق حکم دیتے ہیں - اور جو کسیکو سزا دینی ہوتی ہے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

तोवह भी शरीअत के माफ़िक
दियाजाताहै बाहर के इन साफ़ चा
हिनेवालों के वास्ते कि जिनके
मुक़द्दमों का फ़ैसला सिवाय मौ
क़े की तहक़ीक़ात के नहीं होस
कता है वहां के हाकिमों को हुक्म
लिखदेते हैं कि हक़ देखकर फ़ै
सला करदें नहीं तो मुक़द्दमे वालों
को राजधानी आगरे में रवाने करें-

जब दौलतखाने के कामों से
निबड़ते हैं तो शाहबुर्ज में तश
रीफ़ लेजाते हैं वहां सिवाय शाह
ज़ादों और कई ख़ास मुसाहिबों
के और कोई बग़ैर हुक्म के नहीं
जासकता है यहां तक कि ख़िद
मतगार भी बिना बुलाये नहीं
आसकते-

यहां राज के बाज़े ऐसे कामों
भी कि जिनका ज़ाहिर करना मु
नासिब नहीं होता है और उन फ़
रमानों के मसौदों की कि जो दू
र के सूबों के हाकिमों को लिखे
जाते हैं वज़ीर से सलाह होती
है और वज़ीर ख़ालसे और म
नसबदारों की तलब तनख़्वाह के

تو وہ بھی بموجب حکم شریعت
کے دیجاتی ہے باہر کے دادخواہون
کے واسطے کہ جن کے مقدمات کا
تصفیہ سواے اُسی سرزمین کے
ممکن نہین ہوتا ہے وہان کے
ناظمون کو حکم لکھہ دیتے ہین
کہ حق گزینی سے دادرسی کردین
ورنہ متخاصمین کو دار الخلافہ اکبرآباد
مین روانہ کرین -

جب وہ دولتخانہ خاص
کے کامون سے فارغ ہوتے ہین
تو شاہ برج مین تشریف لیجاتے
ہین وہان سواے شاہزادون
یا چند خاص مقربون کے اور
کوئی بلا حکم نہین جا سکتا ہے یہان
تک کہ خدمتگار بھی بغیر بلاے
نہین آسکتے ہین - یہان بعض امور
سلطنت کے کہ جن کا ظاہر کرنا
صلاح دولت نہین ہوتا ہے اور
اُن خفیہ فرمانون کے مضمونون
کی کہ امراے دوردست کو لکھے
ہوتے ہین - وزیر سے صلاح
ہوتی ہے - اور وزیر اُن
ضروری معاملات خالصہ طلب
تنخواہ

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

... Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनकामोंको जोदोलतखाने
खासमें पेशकरनेसेरहगयेहों
अरज़करके पूराकरतेहैंफिर
दोपहरके करीबमहलमें प
धारकर ज़ुहरकी नमाज़ पढ
तेहैं और खाना खाकर घंटेभ
र आराम करतेहैं महलमें भी
दूसरे गाफ़िलपुरुषोंकी तरह
भोगविलास मेंनपड़कर गरी
बोंके काम निकालतेरहतेहैं
जिनकी अरज़ सतीखानम बे
गमसाहिबके औरबेगमसाहिबबा
दशाहसेकरतीहैं ग़रीबऔरतोंको
ज़मीनरोज़ीना औरनक़दरुपयाइ
नायतहोताहै कंगाल और लावा
रिसकुंवारीलड़कियोंके वा
स्तेजहेज़ शादीकामिलताहै इसतरह
महलमें भी हररोज़बहुतसा
रुपया और गहनाखरच हुआ
करताहै—

फिर असिरकी नमाज़ पढ
कर फिर दौलतखाने खा
स और आमके झरोके में आ
बैठतेहैं लोगोंका सलाम होक
र कुछ काम भी होजाताहै और

منصبدارون کو جو دولت خانہ مین
پیش ہونے سے رہ گئے ہون
عرض کرکے انجام دیتا ہے
دوپہر کے قریب محل مین جاتے
ہین - اور ظہر کی نماز پڑھ کر
طعام خاصہ تناول فرماتے ہین
پھر دو گھنٹہ آرام کرتے ہین محل
مین ہی برخلاف دوسرے
غافل دولتمندون کے جسمانی
اور نفسانی لذتون مین نہ پڑکر
محتاجون کی حاجت روائی
فرماتے ہین - جن کی عرض ستی
خانم بیگم صاحبہ سے اور بیگم
صاحبہ بادشاہ سے کرتی ہین
غربا عورتون کو زمین روزینہ
اور زر نقد عنایت ہوتا ہے اور
مفلس و بیکس لڑکیون کے واسطے
جہیز شادی ملتا ہے اس طرح
محل مین ہر روز زر و زیور اور
بہت سا روپیہ خرچ ہوتا ہے
بعد نماز عصر کے پھر
دولتخانہ خاص و عام مین آ بیٹھتے
ہین وہان لوگون کا سلام ہوتا
ہے اور کچھ کام بھی بقدر اندازہ
وقت سے ہو جاتا ہے -

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौकीदार अपने हथियारों से सलामी देते हैं-

शाम की नमाज़ जमाअत (बहुत आदमियों) के साथ पढ़ते हैं नमाज़ के पीछे ४।५ घड़ी तक दौलतख़ाने ख़ास में जो बहुत से झाड़ और शमादानों की रोशनी से जगमगाने लगता है बिराजकर सलतनत के काम करते हैं और कभी गाना सुनते हैं गाने के इल्म और ख़ासकर के हिन्दुस्तानी रागों में बादशाह को बड़ा अभ्यास है हिन्दुस्तानी गाने में जो मज़ा और रंगीनी है वह दूसरी ज़बान के गाने में नहीं है बहुत से सूफ़ी बादशाही मजलिस में आवेश आकर मर चुके हैं जिनका किस्सा मशहूर है लिखने की ज़रूरत नहीं-

इन कामों से निबड़ने के पीछे इशा की नमाज़ पढ़कर शाहबुर्ज में जाते हैं कोई काम जो दौलतख़ाने में न हुआ हो तो वज़ीर कुल और बख़शियों को बुलाकर उसको पूरा करते हैं-

اور چوکیدار تسلیم فور یعنی ہتھیاروں کی سلامی دیتے ہیں۔

شام کی نماز ہمیشہ جماعت سے پڑھتے ہین نماز کے بعد چار پانچ گھڑی تک دولتخانہ خاص مین جو بہت سے شمعدانوں کی روشنی سے جگمگانے لگتا ہے امور سلطنت کو انجام دیتے ہیں۔ اور کبھی گانا سنتے ہین بادشاہ کو اس فن اور خصوص ہندوستانی راگون مین بہت زیادہ مہارت ہے ہندوستانی راگ مین جو نزاکت لطافت اور رنگینی ہے وہ دوسرے راگون مین نہین ہے بہت سے صوفی بادشاہی مجلس مین بحالت وجد وسماع مر چکے ہیں۔ جن کا قصہ غایت شہرت سے محتاج نگارش نہین ہے۔

ان کامون سے فارغ ہونے کے بعد عشا کی نماز پڑھ کر دولتخانہ خاص سے شاہ برج مین قدم رنجہ فرماتے ہین۔ اگر کوی کام دولتخانہ مین نہوا ہو تو وزیر کل اور بخشیون کو بلا کر اسکو پورا کرتے ہین۔

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

...Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आजकाकाम कलपर नहीं डालते बल्कि कलकाकाम आज ही करके महलमें पधार जाते हैं और वहां दो तीन घड़ीतक गाना सुनकर आराम करते हैं जबतक नींद न आवे मजलिसी लोग परदे के पीछे से नबियों वलियों बादशाहों की तवारीख सुनाते हैं ज़फ़र नामा जिसमें अमीर तैमूर का हाल है और वाक़ेआत बाबरी जो खुद बाबर बादशाह की बनाई हुई है ये दो किताबें ज़ियादा पढ़ी जाती हैं—

सोने का वक़्त सब मिलाकर २ पहर के लगभग है फ़रमाया करते हैं कि जो वक़्त मुल्क के इन्तज़ाम, रैयत के इनसाफ़, ग़रीबों के काम, निकालने और खुदा की बंदगी में लगाना चाहिये अफ़सोस है कि वह खाने पीने सोने और बदन को आराम देने में गुज़रे—

बादशाह की सूरत शकल

बादशाहनामे में लिखा है कि बादशाह का क़द न तो बहुत बड़ा है

آج کا کام کل پر نہین ڈالتے بلکہ کل کا کام آج کر کے مشکوے محلے مین تشریف لیجاتے ہین اور وہان دو تین گھڑی تک گانا سنکر بستر راحت پر استراحت فرماتے ہین - اور جب تک کہ نیند نہ آوے اہل مجلس پردہ کے پیچھے سے نبیون و لیون اور بادشاہون کی تواریخ سناتے ہین - ظفرنامہ جس مین امیر تیمور کی فتوحات کا حال ہے - اور واقعات بابری یہہ دو کتابین زیادہ پڑھی جاتی ہین -

سونے کا وقت کل دوپہر کے قریب ہے اکثر فرماتے ہین کہ جو وقت انتظام ملک رعایا کے انصاف محتاجون کی حاجت روائی اور عبادت الہی مین صرف ہونا چاہیے حیف ہے کہ تن [illegible]ری اور خواب غفلت مین صرف کیا جاوے ۔

بادشاہ کے حال و خط

بادشاہ نامہ مین لکھا ہے کہ بادشاہ کا قد نہ بہت لمبا ہے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और न छोटा - रंग गेहूंआ है दहनी
कनपटी पर बालों के पास १ तिल
है और १ तिल दांयें पलक पर है
बांई आंख के नीचे नाक के ऊपर
मस्सा है दोनों हथेलियों में दीर्घा
यु की रेखायें हैं -

बादशाह होने से कई बरस पहि
ले १ दिन अजमेर की तलहटी में
शिकार को गये थे, जब दो पहर हु
वे तो १ मठ में जाकर ठहरे वहां १
तपस्वी था उसने हाथों और पा
ओं की रेखाएं देखकर कहा था -
कि आप बादशाह होंगे और बड़ी
उमर पाओगे आप की दांई पग
थली में तिल है इससे कुल
हिन्दुस्तान की बादशाही बेखट
के आप के नीचे रहेगी -

बादशाह की भाषा

मुल्ला अब्दुलहमीद लिख-
ता है कि बादशाह ज़ियादा तो फ़ा
रसी बोलते हैं और बहुत अच्छी
तरह से बोलते हैं और जो लोग
फ़ारसी नहीं जानते उनसे हिन्दु
स्तानी बोली में बातें करते हैं और
तुरकी बोली भी समझते हैं मगर
बोलते कम हैं बोलने का ज़ियादा

اور نہ بہت چھوٹا۔ رنگ گندمی
ہے داہنی پیشانی پر بالون کے
پاس ایک تل ہے اور ایک تل داہین
پلک پر ہے بایین آنکھہ کے نیچے ناک
کے اوپر مسہ ہے دونون ہاتہون کی
ہتھیلیون مین خطوط طول عمر کے ہین

بادشاہ ہونے سے چند
سال پیشتر ایک دن اجمیر کی نواحی
مین شکار کو گئے تہے جب دوپہر
ہوگئی تو ایک مٹھہ مین جاکر ٹھہرے
وہان ایک گوشہ نشین تہا اُس نے
بادشاہ کے ہاتھہ اور پانون کے
خطوط دیکھکر کہا کہ آپ بادشاہ
ہونگے آپ کی عمر بڑی ہوگی۔ آپکے
پانے چپ مین جو خال ہے اس سے
کل ہندوستان بلا خلش آپکے
قبضہ مین رہیگا۔

بادشاہ کی زبان دانی

ملا عبد الحمید لکھتا ہے
کہ بادشاہ زیادہ تو فارسی بولتے
ہین۔ اور جو لوگ فارسی نہین جانتے
اُن سے ہندوستانی زبان
مین باتین کرتے ہین کچھہ ترکی
بہی سمجھتے ہین۔ مگر بولتے کم
ہین۔ بولنے کا زیادہ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अभ्यास नहीं है क्योंकि बचपन में इस भाषा की तरफ़ ज़ियादा रुचि नहीं थी मिर्ज़ा हिन्दाल की बेटी और बाबर बादशाह की पोती रुके या सुलतान ने जो बादशाह की बाल्यअवस्था में लालन पालन करती थी उसकी बोली तुरकी थी वह महल में भी तुरकी ही बोला करती थी और बादशाह को भी यही बोली सिखाती थी मगर बादशाह दिल से इसको नहीं सीखना चाहिते थे इस सबब से बहुत से शब्द समझ में तो आगये पर अच्छी तरह बोलना नहीं आया—

१ दिन जहांगीर बादशाह ने प्यार से कहा कि जो कोई मुझ से पूछे कि वह क्या अच्छा गुण है कि जो बाबा खुर्रम में नहीं तो मैं कहूंगा कि तुरकी बोलना

बादशाह ने बड़े अदब से अपने बाप को जवाब दिया कि हज़रत की बरकत से यह भी आजावेगा लेकिन वे अपने को बिलकुल बे ऐब नहीं बनाया चाहिते थे इस वास्ते नज़र नहीं लगने के लिये

محاورہ نہین ہے۔ خوردسالی مین اس زبان کی طرف چندان رغبت نہ تھی۔ مرزا ہندال کی بیٹی اور بابر بادشاہ کی پوتی رقیہ سلطان جو بادشاہ کے بچپین مین اُنکی پرورش پر مقرر تھی اُس کی زبان ترکی تھی۔ اور وہ محل مین ترکی ہی بولا کرتی تھی اور خواہ مخواہ بادشاہ کو ترکی بولنا سکھاتی تھی۔ مگر بادشاہ کو یہ زبان مرغوب نہ تھی۔ اس سبب سے اکثر الفاظ تو سمجھہ مین آگئے۔ مگر اچھی طرح سے بولنا نہین آیا۔

ایک دن جہانگیر بادشاہ نے مہربانی سے کہا کہ اگر کوئی مجھہ سے پوچھے کہ وہ کیا عمدہ صفت ہے جو بابا خورم مین نہین ہے تو مین کہونگا کہ زبان ترکی—

اور بادشاہ نے بڑے ادب سے اپنے باپ کے جواب مین عرض کیا کہ انشاء اللہ تعالے حضرت کی توجہ سے یہ صفت بھی حاصل ہو جاویگی مگر چونکہ وہ اپنے کو بالکل بے عیب نہین بنایا چاہتے اسواسطے نظر نہین لگنے کے لئے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

उन्होंनेइसकमीकोपूरानहीं किया-

क़िलाआगरा.

बादशाहनामेमेंलिखाहैकि
अकबरबादशाहनेसंबत१६२२
मेंपुरानेक़िलेकीजगहजोईंट
औरचूनेकाबनाहुआथानया
क़िलालालपत्थरका३०००गज़
केगिरदावमेंबनायाउसकी
नीवकीचौड़ाई३० गज़दीवार
की१५गज़औरऊंचाईकंगरेत
क६० गज़कीथीउसमेंअपने
रहनेकेवास्तेमकानऔरमहल
लालऔरसफ़ेदपत्थरकेबना
येजिनमें३५०००००खरचहुआ
थाऔरजमनाकेकिनारेशहर
आगराभीबसायाजिसकाना
मशाहजहांबादशाहनेबदलके
अकबराबादरक्खा-

ज्योतिषियोंनेइसकोदूसरी
[illegible]यतकेअखीरमेंसमझाहै
[illegible]लंबाई११५अंशचौड़ाई
२६अंशऔर३कलाहै-

सूबेआगरेकेपूरबमेंबिहार
औरबंगाला-पच्छममेंअजमे
रऔरठट्ठा-उत्तरमेंदिल्लीपंजाब

اس کمی کو پورا نہیں کیا-

بیان قلعہ و شہر و صوبہ آگرہ

بادشاہ نامہ مین لکھا
ہے کہ اکبر بادشاہ نے بجاے پرانے
قلعہ آگرہ کے جو چونہ اور خشت
سے بنا تھا نیا قلعہ سنگ سرخ سے
بنایا جس کا دور تین ہزار گز عرض
نیو کا ۳۰ دیوار کا پندرہ اور
ارتفاع کنگورہ تک ساٹھہ گز
تھا اور اس کے اندر اپنے رہنے
کے واسطے سنگ سرخ اور سنگ
سفید کے محل اور مکان بنائے
۳۵ لاکھہ روپیہ ان کاموں مین
صرف ہوا تھا- اور شہر آگرہ بھی
جمنا کے کنارے آباد کیا-
شاہ جہان بادشاہ نے اس کا
قدیمی نام بدل کر اکبر آباد
رکھا-

نجومیون نے اس کو
اقلیم دویم کے اخیر مین سمجھا ہے
اور اس کا طول ۱۱۵ درجہ اور
عرض ۲۶ درجہ و ۳ دقیقہ ہے

صوبہ آگرہ کے مشرق
مین بہار و بنگالہ غرب مین اجمیر و
ٹھٹھہ شمال مین دہلی پنجاب

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काबुल दक्खन में मालबा और दक्खन है —

जमना आगरे के बीच में हो कर बहती है दोनों तरफ़ से आदमियों और माल असबाब का आना जाना नावों में होता है

शहर बगदाद का गिरदाव जिसमें सैकड़ों बरस तक खलीफ़ों की बादशाही रही थी ज़फ़रनामे में ६ कोस का लिखा है और आगरे का गिरदाव १५ कोस का है शाहज़ादों और अमीरों की बड़ी २ इमारतें क़िले समेत जमना से पच्छम में है इस बस्ती का गिरदाव ८ कोस लंबाव २॥ कोस और चौड़ाव १ कोस है बहुत सी इमारतें तो १ लाख से लेकर ५ लाख रुपये तक की लागत की हैं और इससे कम क़ीमत की इमारतों का कुछ हिसाब नहीं —

पूरब की तरफ़ बाग़ ज़ियादा हैं जिनमें बड़े २ महल और मकान हैं इस बस्ती का गिरदाव २ कोस लंबाव १ कोस और चौड़ाव आध कोस है —

کابل اور جنوب میں مالوہ ودکہن ہے

جمنا جو ایک صاف و شفاف دریا ہی آگرہ کے بیچ میں ہوکر بہتا ہی دونوں طرف سے آدمیوں اور مال اسباب کی آمد رفت کشتیوں کے ذریعہ سے ہوتی ہے

شہر بغداد کا دور جس میں صدہا برس خلافت رہی تھی حسب بیان مولف ظفرنامہ کے دو کروہ یعنے ۶ کوس ہی تھا اور اکبرآباد کا دور پانچ فرسخ یا پندرہ کوس ہی ہے شاہزادوں اور امیروں کی بلند عمارتیں مع قلعہ کے جمنا سے پچہم میں ہیں اس آبادی کا دور آٹھہ کوس طول ڈہائی کوس اور عرض ایک کوس ہے بہت سی عمارتیں تو ایک سے پانچ لاکہہ روپے تک کی حیثیت کی ہیں اس سے کم قیمت کی عمارتوں کا تو کچھہ حساب ہی نہیں ہے

پورب کی طرف باغات زیادہ ہیں جن میں بڑی بڑی عمارتیں ہیں اس حصہ کا دور دو کوس طول ایک کوس اور عرض آدہ کوس ہے

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिन्दी किताबोंमें जमनाके बहुत सेनाम हैं उनमें १ कालंदरी ची है कालंद १ पहाड है जहां से यह निकलती है -	ہندی کتابوں میں جمنا کے بہت سے نام لکھے ہیں ازانجملہ ایک کالندری ہے کالند ایک پہاڑ کا نام ہے جہان سے یہہ نکلتی ہے
शाहजहां बादशाहके राजका मांप.	**عرض و طول سلطنت شاہ جہان**
यह मापशाहजहांनी कोसोंसे हुआ था शाहजहांनी १ कोस ५००० शाहजहांनी गज़ोंका होता था और ऐसे १ कोसके मामूली - ५।। कोस होते थे -	یہہ پیمایش شاہ جہانی کوسوں سے ہوئی تھی شاہ جہانی ایک کوس پانچہزار گز شاہجہانی کا تھا اور ایسے ایک کوس کے معمولی پانچ کوس ہونے تھے
इसराजकी लंबाई पूरबमें बंदरअमलसे जो बंगालेकी आखरी सरहदपरथा पच्छममें किराबाग़तक जो काबुलके सूबेमें ईरानी अमलदारीसे मिलाहुआ था ११६६ कोसकी थी -	اس سلطنت کا طول پورب میں بندر امل سے جو بنگالہ کی اقصای سرحد پر تھا پچھم میں قراباغ تک جو کابل کے صوبہ میں ایران کی سرحد سے ملحق تہا ۱۱۶۶ کوس تھا
चौडाई उत्तरमें छोटी तिब्बतकी सरहद से जो सूबे कशमीरकी हदपरथी दक्खनमें शोलापुरके क़िलेतक जिसके आगे बीजापुर	عرض اوتر میں چھوٹی تبت سے لیکر جو صوبہ کشمیر کے سرحد پر تھی دکھن میں قلعہ شولاپور تک جس کے آگے بیجاپور

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औरगोलकुंडेकीअमलदारीथी
६५२ कोसथी—
अखीरमें इस विशाल राज्य
कीराजधानीशाहजहांबादबसा
ईहुई नईदिल्लीथीजिसकोशाह
जहांनाबादकहतेहैं वहांसेबंदर
अमलकाथाना ८९३ किराबा
ग़ ३०६ छोटीतिब्बत ३३० औरशो
लापुरकाकिला ३२२ कोसथा—
इसमहतराज्यमें जोबडेबडे
शहर जितनी २ दूरीपर दिल्लीसेथे
विनचेलिखेजातेहैं—
। दिल्लीसेलाहोर १०५ कोस—
। दिल्लीसे सरहिंद ५२ सरहिंदसे
लाहोर ५३ कोस
सरहिंदसेकांगडा ४९ बीजवाड़ा २५
। दिल्लीसे खिज़राबाद ५२
। दिल्लीसे नूरनगर ४३ नूरनगर
सेमुखलिसपुर २१ मुखलिसपुर
पुरसे कांगडा ६०
। दिल्लीसेकुमानी २६ कुमानीसे
अंबाला १० अंबालेसेसरहिंद
२० सरहिंदसेलुधाना (सुलतान
जकाघाट) १९ लुधानेसेगोंड
वाल १९ गोंडवालसेलाहोर ३७

اور گولکنڈہ کی عملداری تھی ۶۵۲
کوس تھا۔
اخیر میں اس سلطنت عُلیا
کا دارالخلافہ شہر شاہجہان آباد
ہوگیا تھا جس کو شاہجہان بادشاہ
نے پُرانی دلی کے پاس آباد کیا تھا
وہاں سے بندر اِل کا تھانہ ۸۹۳
قراباغ ۳۰۶ چھوٹی تبت ۳۳۰ اور
شولاپور کا قلعہ ۳۲۲ کوس تھا
اس وسیع مملکت میں جو بڑے
بڑے شہر جتنی جتنی مسافت پر
تھی وہ ذیل میں لکھی جاتی ہیں
۱ دلی سے لاہور ۱۰۵ کوس
۲ دلی سے سرہند ۵۲ سرہند سے
لاہور ۵۳ سرہند سے کانگڑہ ۴۹
بیجواڑہ ۲۵
۳ دلی سے خضرآباد ۵۲
۴ دلی سے نورنگر ۴۳ نورنگر سے
مخلص پور ۲۱ مخلص پور سے کانگڑہ ۶۰
۵ دلی سے کومانی ۲۶ کومانی سے
[illegible] انبالہ سے سرہند ۲۰ سرہند
سے لدھیانہ (سلطان [illegible] ستلج) ۱۹
لدھیانہ سے گونڈوال ۱۹
گونڈوال سے لاہور
۲۷

।दिल्लीसेहसनअबदाल १७६ हसनअबदालसेकोहाट ३७	۶ دلی سے حسن ابدال ۱۷۶ حسن ابدال سے کوہاٹ ۳۷ کوس
।दिल्लीसेछोटीरोहतास २२० खैराबाद ११६	۷ دلی سے رہتاس خورد ۲۲۰ خیرآباد ۱۱۶
।दिल्लीसेतारागढसेहिंदहोकर १०२	۸ دلی سے تاراگڈھ سرہند ہوکر ۱۰۲
।दिल्लीसेलाहोर १०५ लाहोरसेअटक ६२ अटकसेपिशोर १५ पिशोरसेकाबुल ७८ झेलमसेअटकहोकरकाबुल ११६	۹ دلی سے ۱۰۵ لاہور سے اٹک ۶۲ اٹک سے پیشورہ ۱۵ پیشور سے کابل ۷۸ جہلم سے براہ اٹک کابل ۱۱۶
।दिल्लीसेलाहोर १०५ लाहोरसेमुलतान ७० मुलतानसेनक्कर १०६ नक्करसेकंधार १७७	۱۰ دلی سے لاہورہ ۱۰۵ لاہور سے ملتان ۷۰ ملتان سے بہکر ۱۰۶ بہکر سے قندہار ۱۷۷
।दिल्लीसेकाबुल २६० काबुलसेबलख ९७ बलखसेबुखारा ८१	۱۱ دلی سے کابل ۲۶۰ کابل سے بلخ ۹۷ بلخ سے بخارا ۸۱
।दिल्लीसेबलख ३५७ बुखारा ४३७	
।दिल्लीसेकाबुल २६० काबुलसेगजनी ३० गजनीसेकिराबाग ११ कंधार ३० काबुलसेकंधार १०६	۱۲ دلی سے کابل ۲۶۰ کابل سے غزنی ۳۰ غزنین سے قراباغ ۱۱ قندہار کابل سے قندہار ۱۰۶
।दिल्लीसेकंधार ३६८ कंधारसेबस्त ३१ बस्तसेहिरात १०९ हिरातसेमशहद ७५ मशहदसेअसफहां २४९ [illegible]रसेअसफहां ४६३	۱۳ دلی سے قندہار ۳۶۸ قندہار سے بست ۳۱ بست سے ہرات ۱۰۹ ہرات سے مشہد ۷۵ مشہد سے اصفہان ۲۴۹ قندہار سے اصفہان ۴۶۳
।दि[illegible]असफहां (ईरानकीराजधानी) ८३१	۱۴ دلی سے اصفہان دارالخلافہ ایران ۸۳۱
।दिल्लीसेलाहोर १०६ लाहोरसेकशमीरपीरपंचालहोकर १७३=१८५ लाहोरसेशमसाबाद १६५	۱۵ دلی سے لاہور ۱۰۶ لاہور سے کشمیر براہ پیر پنجال ۱۷۳=۲۸۲ لاہور سے شمس آباد ۱۶۵

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिल्लीसे कश्मीर पुंछ होकर २०० कश्मीरसे छोटी तिब्बत ६०	۱۶ دِلّی سے کشمیر براہ پونچھ ۲۰۰ کشمیر سے تبت خورد ۶۰
दिल्लीसे आगरा ४४ बुरहानपुर २७० बुरहानपुरसे सूरत ९० दौलताबा द २६४ दौलताबादसे चोलबंदर ८१	۱۷ دِلّی سے آگرہ ۴۴ برہان پور ۲۷۰ برہان پور سے سورت ۹۰ دولت آباد ۲۶۴ دولت آباد سے بندر چیول ۸۱
दिल्लीसे अजमेर ८१ अहमदाबा द २५३ सूरत ३०४	۱۸ دِلّی سے اجمیر ۸۱ احمد آباد ۲۵۳ سورت ۳۰۴
दिल्लीसे सूरत बुरहानपुर होकर ३११	۱۹ دِلّی سے سورت برہانپور ہوکر ۳۱۱
दिल्लीसे अहमदाबाद २४४ अह मदाबादसे सूरत १२५	۲۰ دِلّی سے احمد آباد ۲۴۴ احمد آباد سے سورت ۱۲۵
दिल्लीसे इलाहाबाद गढ़मुक्तेश्वर होकर १३६ इलाहाबादसे बनारस २९ बनारससे सहसराम २६ सहसराम से पटना ४१ पटनेसे मुंगेर ३७ मुंगे रसे गढ़ी ३१ गढ़ीसे अकबरनगर (राजमहल) २२ अकबरनगरसे ढाका ११६ और उड़ीसा १३०	۲۱ دِلّی سے الہ آباد گڈھ مکتیشور ہوکر ۱۳۶ الہ آباد سے بنارس ۲۹ بنارس سے سہسرام ۲۶ سہسرام سے پٹنہ ۴۱ پٹنہ سے منگیر ۳۷ منگیر سے گڈھی ۳۱ گڈھی سے اکبرنگر (راج محل) ۲۲ اکبرنگر سے ڈھاکہ ۱۱۶ اور اوڑیسہ ۱۳۰
दिल्लीसे मथुरा ३१ धामूणी १२८	۲۲ دِلّی سے متھرا ۳۱ دھاموتی ۱۲۸
दिल्लीसे सहारनपुर ३४ हरिद्वार ४४ मुरादाबाद ४०	۲۳ دِلّی سے سہارنپور ۳۴ ہردوار ۴۴ مرادآباد ۴۰
दिल्लीसे रणथंभोर ९४	۲۴ دِلّی سے رنتھنبور ۹۴
दिल्लीसे हिसार ४४	۲۵ دِلّی سے حصار ۴۴
दिल्लीसे इलाहाबाद आगरा होकर १५५ इलाहाबादसे जौनपुर २१	۲۶ دِلّی سے الہ آباد آگرہ ہوکر ۱۵۵ الہ آباد سے جونپور ۲۱
दिल्लीसे आगरा ४४ आगरेसे ल खनऊ ६८ लखनऊसे अवध	۲۷ دِلّی سے آگرہ ۴۴ آگرہ سے لکھنؤ ۶۸ لکھنؤ سے اودھ (اجودھیا) ۲۷

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(अजोधया) २७ अवधसे गोरख पुर २१	اوده سے گورکھپور ۲۱
दिल्लीसे कन्नोज ८६ लखनऊ ११२ अजोधया १३९ अजोधयासे काबुल ३५०	۲۸ دلی سے قنوج ۸۶ لکھنؤ ۱۱۲ اجودھیا ۱۳۹ اجودھیا سے کابل ۳۵۰
दिल्लीसे आसेरका किला २१७	۲۹ دلی اسیر کا قلعہ ۲۱۷
दिल्लीसे औरंगाबाद २६५ औरंगाबादसे हैदराबाद १०६ बीजापुर ९२ शोलापुर ७२ बिदुर १०५ ऊदगर ६२ कल्याणी १२० गुलशनाबाद ६४ -	۳۰ دلی سے اورنگ آباد ۲۶۵ اورنگ آباد سے حیدرآباد ۱۰۶ بیجاپور ۹۲ شولاپور ۷۲ بدر ۱۰۵ اودگدہ ۶۲ کلیانی ۱۲۰ گلشن آباد ۶۴
दिल्लीसे हैदराबाद ३७१ हैदराबादसे गोलकुंडा ३ कोस	۳۱ دلی سے حیدرآباد ۳۷۱ حیدرآباد سے گولکنڈہ ۳
दिल्लीसे बीजापुर ३५७	۳۲ دلی سے بیجاپور ۳۵۷
दिल्लीसे बिदुर ३७०	۳۳ دلی سے بدر ۳۷۰
आगरेसे	**آگرہ سے**
आगरेसे गवालियर २८ गवालियरसे सिरोंज ५८ सिरोंजसे नर्बदा ५१ नर्बदासे बुरहानपुर ४० बुरहानपुरसे औरंगाबाद ४४	۱ آگرہ سے گوالیار ۲۸ گوالیار سے سرونج ۵۸ سرونج سے نربدا ۵۱ نربدا سے برہانپور ۴۰ برہانپور سے اورنگ آباد ۴۴
आगरेसे अजमेर ८४	۲ آگرہ سے اجمیر ۸۴
आगरेसे हिंडोन [illegible] हिंडोनसे टोंक ३२	۳ آگرہ سے ہنڈون ۲۷ ہنڈون سے ٹونک ۳۲
आगरेसे बाड़ी २० बाड़ीसे रूपवास ११	۴ آگرہ سے باڑی ۲۰ باڑی سے روپ باس ۱۱
आगरेसे फतहपुर ८	۵ آگرہ سے فتحپور ۸
आगरेसे सोकर १३ सोरों २४ - इटावा २८	۶ آگرہ سے سوک ۱۳ سورون ۲۴ اٹاوہ ۲۸
आगरेसे उज्जैन १२६ आसेर १७३	۷ آگرہ سے اوجین ۱۲۶ آسیر ۱۷۳

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

...Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समकालीनबादशाह
तूरान

शाहजहांकेवक्तमेंइमामकु
लीखांसमरकंदऔरबुखाराका
औरनज़रमोहम्मदखांबलखऔ
रबदख़शांकामालिकथाअकब
रबादशाहकेज़मानेमेंजोअब्दु
ल्लाहखांउज़बकतूरानकाबाद
शाहथावहअसलमेंशाहीखा
नदानसेनहींथायारमोहम्मद
खांकादामादथाउसकेपीछेतू
रानकाहाकिमहुआउसकाबेटाअब
दुलमोमिनखांथाजोबापकेम
रनेपरतखतपरबैठाऔरसरदा
रोंकेहाथसेमारागयातबयार
मोहम्मदखांकापोताऔरजानी
मोहम्मदखांकाबेटाबाकीमोह
म्मदखांअपनेबापोतीकेराज
कामालिकहोगयाउसकेपीछे
उसकाभाईवलीमोहम्मदखां
तूरानकाहाकिमहुआमगर

سلاطین ہم عہد
توران

شاہ جہان کے وقت میں امام قلیخان
والی سمرقند و بخارا تھا اور
نذر محمد خان بلخ بدخشان کا مالک
تھا اکبر بادشاہ کے عہد میں جو
عبداللہ خان اوزبک توران کا
بادشاہ تھا وہ دراصل شاہی خاندان
سے نہ تھا یار محمد خان کا داماد تھا
اوسکے بعد والی توران ہوا
اوسکا بیٹا عبدالمومن خان
تھا وہ اپنے باپ کے بعد توران
کے تخت پر بیٹھا اور سرداروں کے
کے ہاتھ سے مارا گیا تب
یار محمد خان کا پوتہ اور
جانی محمد خان کا بیٹا باقی
محمد خان اپنی موروثی
ریاست کا مالک ہوگیا
اوس کے بعد اوس کا
بھائی ولی محمد خان والی توران
ہوا مگر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

अमीरोंनेउससेनाराज़होकरइ
मामकुलीखांऔरनज़रमोह
म्मदखांकोबलखमेंबुलवाया
जोवलीमोहम्मदखांकोनिका
लकरउसकेमुल्कोंकेमालिक
होगयेइमामकुलीखांनेबुखा
राऔरसमरकंदमेंअपनाराज
जमायाऔरनज़रमोहम्मदखां
नेबलखऔरबदखशांमे-

सं. १६९८ मेंइमामकुली खां
अंधाहोगया नज़रमोहम्मदखां
नेबलखसेसमरकंदपरचढ़ाई
कीतबइमामकुलीखांलाचारी
सेअपनातमाममुल्ककातिकसुदि१०
कोनज़रमोहम्मदखांकेहवालेकर
केआपईरानकेरस्तेसेमक्केऔर
मदीनेकोचलागया-

उसवक्तकिलमाकऔरकर
गज़जातिकेलोग तुरकिस्तानमें
लूटमारकरतेथेइसलियेनज़र
मोहम्मदखांनेअबदुलरहमान

امیروں نے اوس سے
ناراض ہوکر امام قلیخان اور
نذر محمد خان کو بلخ میں بلایا یہ
ولی محمد خان کو بہگا کر اوس
کے ملک پر قابض ہوگئے
امام قلیخان نے بخارا
اور سمرقند میں اپنا تخت قایم
کیا اور نذر محمد خان نے
بلخ و بدخشان میں

سنہ ۱۰۵۱ میں امام قلیخان والی
بخارا اندہا ہوگیا اور نذر محمد خان
نے بلخ سے سمرقند پر لشکر کشی
کی امام قلیخان مجبوراً اپنا
تمام ملک ۸ شعبان کو نذر محمد خان
کے حوالہ کرکے براہ عراق
مکہ و مدینہ کو روانہ
ہوگیا۔

اوسوقت اقوام قلماق
و قرغز ترکستان مین لوٹ مار
کیا کرتے تہے اسلیئے نذر محمد خا
نے عبدالرحمن

दीवानबेगीकोसमरकंदमेंभेजअ
करजहांगीर कुज़्ज़ाकसेमेलकर
लियालेकिनअबदुलरहमान
नेकरगेज़ोंकेसरदारकुतलक
सैयदकोफरेबसेमारडाला—
सं॰ १७०० में लशकरकज़्ज़ाक़ नेज
हांगीर कुज़्ज़ाक परहमलाकिया
मगर नज़र मोहम्मदखांके अमी
रोंनेजाकर उसको भगादिया—
संवत १७०१ मेंतुरकिस्तानके
लोग नज़रमोहम्मदखांकीबदस
लूकियोंसेबाग़ीहोगयेऔरखु
जंदकेकिलेपरकबज़ाकरलिया
नज़रमोहम्मदखांकाबेटाअबदु
लअज़ीज़खांउनपरचढ़करग
यालेकिनबग़ैर फ़तह कियेवा
पसआगया—
सं॰ १७०२मेंयक्केजवानोंकीज़ि
द्दसेमावरउलनहर(तुर्किस्तान)
मेंअबदुलअज़ीज़खांकी आ
नधुहाईफिरीऔरबाक़ीयूज़बाशी

دیوان بیگی کو سمرقند میں بھیجکر
جہانگیر قزاق سے موافقت
کرلی مگر عبدالرحمن نے قرغزون
کے سردار قتلق سید کو فریب سے
مارڈالا
سنہ ۱۰۵۳ میں لشکر قزاق
نے جہانگیر قزاق کے اوپر حملہ کیا
لیکن نذر محمد خان کے امیرون نے
جاکر اوسکو بھگا دیا
سنہ ۱۰۵۴ میں اہل ترکستان
نے نذر محمد خان کے سلوک ناملایم
سے ناراض ہوکر فساد کیا اور
قلعہ خجند میں قبضہ کرلیا
نذر محمد خان کا بیٹا عبدالعزیز
خان اون کے اوپر لشکر
لیکر گیا لیکن ناکام واپس
آیا
سنہ ۱۰۵۵ میں یکہ جوانون کی ضد سے
ماوراءالنہر یعنی ترکستان جو نہر
جیحون کے اوسطرف ہی کا ۶ ربیع الاول کو
عبدالعزیز خان کے نام پڑہا گیا اور باقی یوزباشی

अपनेबेटोंसमेतनज़रमोहम्मद
ख़ांकेपासहाज़िरहोगयामगर
फ़सादजगह २ होतारहाऔरहिं
दुस्तानकीफ़ौजनेधावाकरकेक
हमर्दकेक़िलेमेंअमलकरलि
याराजाजगतसिंघनेसुराब
औरइंद्राबतकबढ़करमोरचे
बनालिये—

सं. १७०२ में "अलमानोंने आ
मोयानदीसेउतरकर अंदखूद को
औरआसोजसुर में अक्चे केज़ि
लेकोलूटामगरनिमिज़केहाकि
मनेपीछाकरकेउनकोजेहूंनदी
सेउतरतेहुवे जामाराये अ
लमानलोगमुसल्मानथेतो
भीबल्ख़औरबदख़्शांमेंमु
सल्मानोंकोबहुतहीसताया
करतेथे कुरानों, मसजिदों, और
मुल्लाओंकोभीजलादेतेथेजब
येलोगजोरजानकेऊपरजोब
ल्ख़से १ मंजलहै आयेथे तो

مع اپنے بیٹون کے خان کے
پاس حاضر ہوگیا تاہم فساد جا بجا
جاری رہا اور ہندوستان کی
فوج نے حملہ کرکے قلعہ کہمرد
مین دخل کرلیا راجہ جگت سنگھ
نے سراب اور اندراب
تک بڑھ کر مورچے بنا
لیئے

جمادی الثانی ۱۰۵۶ھ مین
گروہ المان نے آب آمویہ سے
عبور کرکے اندخود کو اور ماہ
شعبان مین ملک اقچہ کو لوٹا مگر قبا
سبر اقوز حاکم ترمذ نے تعاقب
کرکے اونکو جیحون سے اوترتے
ہوے جا مارا یہہ المان مسلمان تھے تو
بھی بلخ اور بدخشان وغیرہ کے مسلمانون
کو از حد ستایا کرتے تھے قرانون
مسجدون اور ملاؤن کو بھی جلا دیتے
تھے چنانچہ جب یہہ لوگ جورجان
کے اوپر جو بلخ سے ایک منزل
ہے آئے تھے تو

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोसैयदइब्राहीमवहांका १मशहूर मोलवी ४०० लड़कोंकोकि जिनकेगलेमेंकुरानलटकेहुवेथे साथलेकरउनकीपेशवाईको गयाथामगरउन्होंनेउसकोमयतमामलड़कोंके १मसजिदमें लेजाकरआगसेजलादिया—

फिरअबदुलअज़ीज़खांऔर नज़रमोहम्मदखांमें बिगाड़होकर लड़ाईकीनोबतपहुंचीऔरअबदुलअज़ीज़खांसमरकंदसे त्रिमिज़तकचढ़आयातबनज़र मोहम्मदखांनेसुलहकरकेयहबात ठहराईकि मावरउलनहरकामालिकअबदुलअज़ीज़खांइमामकुलीखांकेमाफ़क़होवेऔर बलखबदख़शांनज़रमोहम्मदखां केपासरहे—

जबनज़रमोहम्मदखांहिन्दुस्तानीफ़ौजकेआगेसेभागकर मर्दहोताहुआअसफ़हानमेंपहुंचा

سید ابراہیم وہان کا ایک مشہور عالم چار سو لڑکون کو جنکے گلون مین قرآن لٹکے ہوئے تھے بطور شفاعت کے لیکر اونکی پیشوائی کو گیا مگر اونہون نے سید کو معہ اون سب لڑکون کے ایک مسجد میں لیجاکر آگ سے جلادیا

پہر عبدالعزیز خان اور نذر محمد خان کے باہم قضیہ و قضایہ قایم ہوکر نوبت جنگ و جدل کی پہونچی اور عبدالعزیز خان سمرقند سے ترمذ تک چڑھ آیا تب نذر محمد خان نے صلح کرکے یہہ بات ٹھہرائی کہ ماوراء النہر کا مالک عبدالعزیز خان بدستور امام قلیخان کے موافق ہو اور بلخ بدخشان نذر محمد خان کے قبضہ میں رہیں

جب نذر محمد خان ہندوستان کی فوج سے بہاگ کر مرد ہوتا ہوا اصفہان پہونچا

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तो वहां ईरान के बादशाह ने पेशवा
ई करके बड़ी महरबानी से मुलाक़ा
त की रस्ते में १ कोस तक रंगीन औ
र रेशमी कपड़े बिछा दिये गये थे
मुलाक़ात के पीछे मकान पर आ
कर दोनों १ गद्दी पर बैठे खान १५ दि
न पीछे वहां से कुछ फ़ौज क़ज़लबा
शों की लेकर जो शाह ने उसके सा
थ की मशहद में आया शाह ने इस
अरसे में ४०००००) नक़द और जि
न्स करके उसको दिया था और
अपनी फ़ौज को हिरात से आगे
न बढ़ने को कह दिया था खान ने
यह बात फ़ौज की चाल ढ़ाल से मा
लूम करके उसको वहीं छोड़ा और
कहा कि मैं आगे जाता हूं तुम हिरा
त में ठहरो बुलाऊं जब आजाना
और खुद मर्व होकर चेचकतू में
आया और मेमने पर चढ़ाई की
मगर हिन्दुस्तानी क़िलेदार शा
द खां के मुक़ाबिला करने से वापस

تو وہان شاہ ایران نے استقبال
کر کے بڑے تپاک سے اوسکی
ساتھہ ملاقات کی ایک کوس
راستہ مین رنگین اور ریشمین
کپڑے بچھا دیے گئے تھے
اور بعد ملاقات مکان پر آکر دونو
ایک گدی پہ بیٹھے خان پندرہ
روز رہکر مع کسیقدر فوج قزلباش
کے جو شاہ نے اوس کی مدد
کے لیے ہمراہ کی تھی مشہد
مین آیا شاہ نے چار لاکھ روپیہ
کا نقد و جنس اس عرصہ
مین اوسکو دیا تھا مگر اپنی فوج
کو ہرات سے آگے بڑہنے کی ممانعت
کر دی تھی خان نے یہہ بات فوج کی حرکات
و سکنات سے دو قوم کر کے اوسکو وہان ہی
چھوڑا اور کہا کہ مین آگے جاتا ہون تم
ہرات مین ٹھہرو جب بلاؤن آجانا اور خود
مرو ہو کر چیچکتو مین آیا اور وہان سے میمنہ
پر لشکر کشی کی مگر بہ سبب مقابلہ کرنے کے
شادخان قلعدار ہندوستان ناکام

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

चलागया और फिर अपने बेटे-
क़तलक़ सुलतान को बलख़ फ़
तह करने के वास्ते भेजा मगर वह
अपने भाई अबदुल अज़ीज़ ख़ां
की फ़ौज से जा मिला जो बुखारा
से बलख़ के ऊपर आती थी इस
के आगे जो कुछ हुआ वह इस
किताब में पहिले लिखा जा चुका है-

ईरान

ईरान में पहिले तो शाह अब्बा
स सफ़वी बादशाह था यह कातक
सुदि ३ सं· १६२७ को पैदा हुआ था
और सं· १६४५ में ईरान के तख़्त
पर बैठा माह बदि ३ सं· १६८५ को
माज़िंद्रां में मरगया तूरान के-
मालिक अबदुल मोमिन ख़ां ने
मशहद में अमल करके अगले
बादशाह "तुहमास्प" की क़बर की
बहुत ख़राबी की थी इसलिये
ईरान के वज़ीरों ने ३ संदूक बना
कर मशहद, नजफ़, और करबला,

واپس گیا اور پھر اپنے بیٹے
قتلق سلطان کو بلخ فتح کرنے کیلئے
بھیجا مگر وہ اپنے بھائی عبد العزیز
خان والی بخارا کی فوج سے
جا ملا جو بلخ کے اوپر آتی تھی اس
کے آگے جو کچھ ہوا وہ
اس کتاب میں لکھا جا چکا
ہے

ایران

ایران میں پہلے تو شاہ عباس
صفوی بادشاہ تھا یہ غرہ رمضان
۹۷۸ھ کو پیدا ہوا تھا اور ۹۹۶ھ
میں تخت سلطنت پر بیٹھا ۲۴ جمادی
الاول ۱۰۳۸ھ کو مازندران میں
مرگیا چونکہ عبد المومن خان
والی توران نے مشہد میں
دخل کرنے شاہ طہماسپ صفوی
کے مرقد کی بہت خرابی کی تھی
اسلئے وزرائے ایران نے تین
صندوق بیت کے تیار کرکے
مشہد نجف اور

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को भेजे और तीनों जगह ही क़बरें बनाईं लेकिन शाहअब्बास की लाश एक ही संदूक़ में थी जिस का हाल कम किसी को मालूम था—

शाहअब्बास का बड़ा बेटा तो सफ़ी मिरज़ा था जिसको शाहने चेत सुदि १ सं० १६७१ को अपने गुलाम के हाथ से मरवडाला था और बाकी २ बेटों को अंधा कर दिया था सफ़ी मिरज़ा का बेटा साम मिरज़ा शाह के ख़ौफ़ से ज़नाने में रहा करता था वज़ीरों ने शाह के पीछे उसी को सं० १६८५ के माह सुदि में असफ़हां के तख़्त पर बैठाकर ईरान का बादशाह बनाया और शाह सफ़ी नाम रक्खा—

शाहसफ़ी ने सं० १६९० में वान के हाकिम की मरज़ी से रुस्तम ख़ां गुरजी को गुर्जिस्तान के लशकर समेत वान के ऊपर क़बज़ा करने को भेजा लेकिन रूम के सुलतान

کربلا کو بھیجے اور تینوں جگہہ قبریں بنائیں لیکن شاہ عباس کی لاش صرف ایک صندوق میں تھی جس کا حال کم کسی کو معلوم تھا

شاہ عباس کا بڑا بیٹا تو شاہ صفی تھا جسکو شاہ نے سلخ محرم سنہ ۱۰۲۳ کو اپنے غلام کے ہاتھ سے مروا ڈالا تہا اور باقی دو بیٹوں کو اندھا کر دیا تھا صفی مرزا کا بیٹا سام مرزا شاہ کے خوف سے زنانہ میں رہا کرتا تھا وزیروں نے بعد شاہ عباس کے اوسی کو ماہ جمادی الثانی سنہ ۱۰۳۸ مین اصفہان کے تخت پر بیٹھا کر شاہ صفی نام رکھا

شاہ صفی نے سنہ ۱۰۴۲ مین حاکم وان کی تحریک سے رستم خان گرجی کو معہ لشکر گرجستان کے وان کے اوپر قبضہ کرنے کے واسطے بھیجا لیکن

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुरादखांने ४०००० सवारोंसे वहां
पहुंचकर ईरानके लशकरको भ
गादिया फिर ऐरवां तबरेज़ और
बग़दाद के फ़तह करनेको रूम
से रवाने होकर ऐरवां फ़तह कर
लिया ये वे मुल्क थे कि जिनके
शाह अब्बासने रूमियोंसे फ़तह
कर लिया था मगर इसी अरसे
में फ़िरंगियोंके अस्तंबोल पर ह
मला करनेकी ख़बर मशहूर हु
ई इस लिये मुरादखां तो रूमको
लौट गया और शाह सफ़ी तब
रेज़ में पहुंचकर ३ महीनेकी लड़ा
ई और घेरे के पीछे जिसमें २०००
क़ज़लबाश मारे गये थे ऐरवां-
रूमियों से छीन लिया फिर गुर्द
स्थानके ईरानी हाकिम खान
अहमदने सुल्तान मुरादखां
से मिलावट कर ली जिसके हुक्म
से मौसिल का हाकिम कोचक
अहमद गुर्दस्थान पर आया लेकिन

سلطان مراد خاں رومی نے معہ
چالیس ہزار سواروں کے پہونچکر
لشکر ایران کو بھگا دیا بعدہ ایروان
تبریز و بغداد فتح کرنے کو روم سے
روانہ ہوکر ایروان فتح کر لیا
یہہ وہ ممالک تھے کہ جن کو شاہ
عباس نے رومیون سے فتح
کر لیا تھا لیکن اوسی عرصہ میں
استنبول پر فرنگیوں کے حملہ
کرنے کی خبر مشہور ہوئی اسلیئے
مراد خان تو واپس روم کو چلا گیا اور
شاہ صفی نے تبریز میں
پہونچکر بعد محاصرہ و جنگ
تین ماہ کے جس میں ۲۰ ہزار
قزلباش مارے گئے تھے
ایروان کو رومیوں سے واپس
لے لیا کردستان ایران کی
طرف سے خان احمد حاکم تھا اوسنے
سلطان مراد خان سے سازش
کی جسکے حکم سے موصل کا حاکم کوچک
احمد کردستان پر چڑھ آیا لیکن

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाहअब्बासके गुलाम सियावश
ने शाहसफ़ीके हुक्मसे वहां पहुंच
कर कोचक अहमद और उसके सा
थके दूसरे रूमी सरदारोंको मारडा
ला और खान अहमदको निका
लकर गुर्दस्थानमें दूसरा हाकिम
मुकर्रर किया —

कातक सुदि ४ सं· १६९५ को मुरा
दखांने हमला करके बगदादको
फ़तह किया और शाहसफ़ीने वर
तंगका इलाका उसको देकर सुलह करली —

इस सुलहके पीछे शाहसफ़ीने
कंधार वापस लेनेका इरादा किया
और इस मोहिमका सारा सामान
२ बरसमें तैयार करके सं· १६९९ में
रवाने हुआ लेकिन काशानमें प
हुंचकर वैसाख सुदि १४ को मरगया
उसके अमीरोंने कज़वीनमें जा
कर उसके बेटे मोहम्मद मिरज़ाको
शाह अब्बास नाम रखकर तख़्तस
ल्तनत पर बैठाया इसने चढ़ाई कर
के कंधारका किला शाहजहांके
अमीरोंसे लेलिया —

खातिमा

ईश्वरकी कृपासे आज यह तीसरा हिस्सा शा
हजहांनामेका पूरा हुआ हमने अगले र

شاہ عباس متوفی کے غلام سیاوش
نے شاہ صفی کے حکم سے وہاں پہونچکر
کوچک احمد و دیگر سرداران روم کو
مار ڈالا اور خان احمد کو نکال
کر کردستان میں دوسرا
حاکم مقرر کیا

۲۰ رجب سنہ ۱۰۴۸ کو سلطان
مراد خان والی روم نے حملہ
کر کے بغداد کو فتح کیا شاہ ایران نے
علاقہ ورتنک اوسکو دیکر صلح کر لی

بعد اس صلح کے شاہ صفی نے
قندہار واپس لینے کا ارادہ کیا اور
اوسکا سارا سامان دو برس میں
تیار کر کے سنہ ۱۰۵۲ میں کوچ کیا
مگر کاشان میں آکر ۱۲ صفر کو فوت
ہوگیا اور اوس کے امیرون
نے قزوین میں جاکر اوس کے
بیٹے محمد مرزا کو بخطاب شاہ عباس
ثانی تخت سلطانی پر بیٹھایا اوس
نے فوج کشی کر کے قندہار کا قلعہ
شاہ جہان کے امیرون سے
لے لیا۔

خاتمہ

الحمد للہ کہ آج یہہ تیسرا حصہ شاہ
جہان نامہ کا ختم ہوا ہم نے اگلے

In Public Domain, Chambal Archives

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किताबों में तो मुल्ला अबदुलहमीद के बनाये हुवे बादशाहनामों की दोनों जिल्दों का सारांश लिया है और इस पिछले हिस्से में मुल्ला ज़ाहिद के लिखे हुवे पिछले १० बरसों के हाल का खुलासा दर्ज किया है और कहीं २ खाफ़ीखां की किताब मुन्तख़िबउल्लुबाब से कुछ हाल लेलिया है जो इस ज़माने में बहुत मोतबर समझी जाती है—

मुल्ला अबदुलहमीद के बादशाहनामों का बिस्तार ज़ियादा है और यह बादशाह के हुक्म से इस काम पर मुकर्रर भी था बादशाह इस के लेख को पसंद भी करते थे क्योंकि अकबरनामे के करता सुविख्यात शेख़ अबुलफ़ज़ल का शागिर्द था और मुल्ला ज़ाहिद के बादशाहनामे में इतना बिस्तार नहीं है और नः हिन्दू राजाओं और हिन्दू मनसबदारों के कामों का पूरा ब्योरा है जो मुख्य उद्देश हमारे इस परिश्रम का है तो भी जो हाल मुल्ला अबदुलहमीद के लिखने से रह गया था उसके जानने के लिये यह बहुत काम की चीज़ है १ बादशाहनामा मुल्ला सालह का भी लिखा हुआ है मगर वह भी मुल्ला अबदुलहमीद की लिखावट के बराबर नहीं है—

गरज़ अब यह तवारीख शाहजहां बादशाह की पूरी होगई है इसमें जो कुछ भूल चूक रह गई हो उसको सज्जन जन माफ़ फ़रमावें— फ़कत:

देवीप्रसाद — चैत सुदि १ सं. १९५५

دو حصوں میں ملا عبدالحمید کے بادشاہ نامہ کی دو جلدوں کا خلاصہ لکھا ہے اور اس پچھلے حصہ میں ملا زاہد کے بادشاہ نامہ سے پچھلے دس برسوں کے حال کا خلاصہ درج کیا ہے اور کہیں کہیں خافی خان کی تاریخ منتخب اللباب سے بھی کچھ انتخاب لے لیا ہے جو اس زمانہ میں بہت معتبر سمجھی جاتی ہے

ملا عبدالحمید کے بادشاہ ناموں میں تفصیل زیادہ ہے اور یہ بادشاہ کے حکم سے تواریخ نویسی پر مقرر بھی تھا اور بادشاہ اس کی طرز تحریر کو پسند کرتے تھے کیونکہ شیخ ابوالفضل مصنف اکبرنامہ کا شاگرد تھا ملا زاہد کے بادشاہ نامہ میں اتنی تفصیل و تشریح نہیں ہے نہ ہندو راجوں اور ہندو منصبداروں کی ترقیات اور تردداث کا زیادہ ذکر ہے جو اصلی غرض ہماری اس محنت و کوشش کی ہے تاہم ملا عبدالحمید کے بادشاہ ناموں کے بعد یہ ایک اچھا تکملہ شاہجہان بادشاہ کی تواریخ کا ہے ایک بادشاہ نامہ ملا صالح کا لکھا ہوا بھی ہے مگر وہ ملا عبدالحمید کے بادشاہ نامہ سے بہت مختصر ہے۔

غرض اب یہ تواریخ شاہجہان بادشاہ کی تمام ہو گئی ہے سہو و خطا کے واسطے بزرگوں سے امید عفو و عطا ہے فقط

دیبی پرشاد یکم ذیقعدہ سنہ ۱۳۱۵ مطابق ۲۴ مارچ سنہ ۱۸۹۸ء

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विज्ञापन

नवीन पुस्तकें

नीचे लिखी पुस्तकें सर्व साधारण के उपयोगी हैं जिन साहिबों को लेनी हों हमको लिखें कीमत में डाक का खरच शामिल नहीं है॥

- अकबर बादशाह का जीवनचरित्र सचित्र ।)
- शाहजहां बादशाह का जीवन चरित्र सचित्र २ भाग ॥)
- बाबर बादशाह का जीवनचरित्र सचित्र =)
- हुमायु बादशाह का जी० स० =)
- ईरान के बादशाह तुहमास्प का जीवनचरित्र सचित्र =)
- शेरशाह बादशाह का जी० =)
- उदयपुर के महाराणा सांगाजी का जीवनच० स० ।)
- राणा रतनसिंह, बिक्रमाजीत, और बनबीर का, जीवन० =)
- महाराणा उदयसिंह का जी० ।)
- महाराणा प्रतापसिंह का जी० ।)
- आमेर के राजा पृथ्वीराज, पूरणमल, रतनसिंह, आसकरण, राजसिंह, भारमल, और भगवंतदास, का जीवनचरित्र =)
- महाराजा मानसिंह का जी० =)
- [illegible]नेर के राव बीका जी, और [illegible]राज़ी का जीवन० ।)
- राव लूणकरण का जीवन० =)
- राव जैत[illegible] का जी० स० =)
- [illegible] कल्याणमल का जी० =)

देवी प्रसाद
(जोधपुर)

- मारवाड़ के राव मालदेव का जीवनच० स० =)
- राजा बीरबल का जीवनचरित्र पहिला भाग ।)
- और दूसरा भाग =)
- विद्यार्थी विनोद =)
- स्वप्न राजस्थान =)
- मारवाड़ का भूगोल ।)
- खण्डांतर पर्य्यटन निर्णय ।)
- द्वीपान्तर गमन विचार ।)
- इनसाफ संग्रह ॥)
- नारी नवरतन =)
- मारवाड़ के प्राचीन सिला लेखों का संग्रह ॥)
- जन्तरी सन १८८८ व ८९ ।)
- जन्तरी सन १८९० ।)
- जन्तरी सन १८९१ ।)
- जन्तरी सन १८९२ ।)
- जन्तरी सन १८९३ ।)
- जन्तरी सन १८९४ ।)
- जन्तरी सन १८९५ ।)
- जन्तरी सन १८९६ ।)
- जन्तरी सन १८९७ ।)
- जन्तरी सन १८९८ ।)
- जन्तरी सन १८९९ ।)

इन जन्त्रियों में बहुत सी उपयोगी बातों के सिवाय मारवाड़ के राजों का हाल राज रतलाम की मरदुमशुमारी और सब रजवाड़ों की रपोटों का खुलासा भी है॥

In Public Domain. Chambal Ar[illegible]

...Foundation Trust, Delhi and eGangotri

نوٹ

(۱) جو عرض و طول شاہجہاں بادشاہ کی سلطنت کا صفحہ ۱۸۹ میں درج ہے وہ تخمینہ سے لکھا گیا ہے اور صحیح شمار اوسکا صفحہ ۲۴۵ میں ہے مگر اوس میں بلخ و بدخشاں کے صوبوں کا عرض و طول شامل نہیں ہے کیونکہ وہ تین برس تک زیر فرمان رہے تھے

(۲) خاتمہ میں یہہ بات لکھنے سے رہگئی ہے کہ ملا زاہد کا بادشاہ نامہ بہی کسی شاہجہان نامہ کا خلاصہ ہے جو اوس کے بعد فرمانروا ہونے اورنگزیب کے شاہ میں لکہا تہا

فہرست کتب مولفہ مولف کتاب ہذا

۱	رسالہ چہل جواب تاریخی	۵ر
۲	تواریخ میواڑ	۵ر
۳	نگارنامہ نوائین یعنی تقویم موید المورخین	۵ر
۴	تاریخ تزک ہند	۴ر
۵	نفائیس التواریخ یعنی تاریخ الحکما	۴ر
۶	جغرافیہ و تواریخ راج مارواڑ	۵
۷	فضلائے ہند	ار
۸	تواریخ ریاست سروہی	عه
۹	اکبرنامہ اردو یعنی تواریخ پنجاہ سالہ اکبر بادشاہ	عه
۱۰	شاہجہان نامہ اردو مکمل ہر سہ حصہ	۷
۱۱	بیربل نامہ یعنی سوانح عمری راجہ بیربل	۲ر
۱۲	مصور ... یعنی سوانح عمری راجہ کرن	۴ر
۱۳	خزانہ ... کون نامہ	۴ر
۱۴	نوشیروان نامہ	۴ر
۱۵	سوانح عمری راو مالدیو رئیس اعظم مارواڑ	ار
۱۶	سوانح عمری مہاراجہ مانسنگہ والی آمیر	۲ر
۱۷	بہگت مال منظوم مصنفہ والد مولف	عه
۱۸	سوانح عمری بابر بادشاہ	ار
۱۹	سوانح عمری ہمایون بادشاہ	۲ر
۲۰	سوانح عمری شیر شاہ بادشاہ	۲ر
۲۱	سوانح عمری شاہ طہماسپ ایرانی	ار
۲۲	سوانح عمری مہارانا سانگاجی اودیپور	۴ر
۲۳	سوانح عمری مہارانا رتن سنگہ و بکرماجیت	۳
۲۴	سوانح عمری مہارانا اودیسنگہ اودیپور	۴ر
۲۵	سوانح عمری مہارانا پرتاب سنگہ اودیپور	۴ر
۲۶	سوانح عمری راجہ پرتہی راج وغیرہ راجگان جے پور	۶ر
۲۷	سوانح عمری راو بیکاجی بانی بیکانیر	۴ر
۲۸	سوانح عمری راو لونکرن بیکانیر	۲ر
۲۹	سوانح عمری راو جیت سی بیکانیر	۲ر
۳۰	سوانح عمری راو کلیان مل بیکانیر	۲ر
۳۱	افسانہ خرد افروز یعنی قصہ بہرام بہروز	۳ر
۳۲	تفریح الطلبا	۲ر
۳۳	گلدستہ ادب علم اخلاق میں	۸ر
۳۴	تعلیم النسا	۱۰ر
۳۵	لطائف ہندی	۳ر
۳۶	جواہر التعبیر علم خواب میں	۲ر
۳۷	مجموعہ مضامین دلنشین	۴ر
۳۸	آثار الشعرائے ہنود - ہندو شاعروں کا تذکرہ ۰۰ کے قریب شعرا کا کلام -	عه
۳۹	میزان عدالت - اگلی راجوں بادشاہوں کے حقیقی انصاف -	۶ر
۴۰	نقشہ ملک مارواڑ	۲ر
۴۱	مسدس اختر مثنوی منظوم ...	۶ر

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

فہرست کتب مصنفہ منشی دیبی پرشاد صاحب

افسانہ خرد افروز یعنی قصہ بہرام و بہروز	۲/
تعلیم النساء عورتون کے پڑھنے کی کتاب	۸/
تاریخ سیواڑ قدیم زمانہ سے	۲/
کارنامہ نو آئین یعنی تقویم مویدالمورخین	۵/
لطایف ہندی - اسم بامسمی -	۳/
سوانح عمری نوشیروان بادشاہ	۴/
سوانح عمری شاہ جہان بادشاہ	عہ/
سوانح عمری ہمایون بادشاہ	۲/
سوانح عمری طہماسپ ایرانی	۱/
سوانح عمری رانا سانگا	۴/
سوانح عمری رانا اودے سنگہ	۴/
سوانح عمری راو بیکاجی بانی بیکانیر	۴/
سوانح عمری راو جیت سی جی -	۳/
سوانح عمری راجہ پرتھی راج و پورنمل و بہارمل و بہگونت داس راجگان جے پور	۶/
سوانح عمری نواب خانخانان	۴/
میزان عدالت حکایات انصاف	۶/
نفائس التواریخ حالات حکمای سلف	۴/
جغرافیہ و تواریخ مارواڑ	۵/
ریلوے راج مارواڑ	۵/

نصیحت نامہ	۵/
گلدستۂ ادب علم اخلاق و معاشین	۵/
رسالہ چہل جواب تاریخی	۵/
تاریخ سروہی مکمل	عہ/
سوانح عمری راجہ کرن معاصر علاؤالدین خلجی	۸/
لطائف الظرفا	۳/
سوانح عمری اکبر بادشاہ	عہ/
سوانح عمری بابر بادشاہ	۱/
سوانح عمری شیر شاہ بادشاہ	۲/
سوانح عمری بیربل مصاحب اکبر بادشاہ	۲/
سوانح عمری راو نارتن سی و بکرماجیت	۳/
سوانح عمری رانا پرتاب سنگہ	۴/
سوانح عمری راو لون کرن	۲/
سوانح عمری راو کلیان مل جی	۲/
سوانح عمری راجہ بان سنگہ امیر جالہ	۲/
سوانح عمری راو ناالدیو جی والی مارواڑ	۲/
تاریخ ہند	۲/
تذکرہ شعرائے ہنود	عہ/
تفریح الطلباء	۲/
جواہر التعبیر علم خواب ترجمہ سنسکرت	۲/

دیگر کتب

یہ کتابین مطبع رضوی اخبار خیر خواہ عالم دہلی سے ملتی ہین

ناول طلسم فطرت - مشہور فسانہ نگار دہلی کی بیساختہ زبان مین منشی نثار علی صاحب شہرت نے لکھا ہے اسمین علاوہ دلچسپ قصہ و لطف انگیز مضامین کے مرزا سخنور بغلول ظریف کا مکالمہ عجیب ہے ہنسی کے مارے پیٹون مین بل پڑتا ہے قیمت عہ/

ناول نورجہان و جہانگیر - یہ تاریخی ناول شہنشاہ جہانگیر و نورجہان کے حالات مین لکھا گیا ہے اول جلد تمام ہو چکی ہے اور دوسری جلد دہلی کے ظریف اخبار چلتا پرزا کے ساتھ جنوری ۹۷ سے چھپتی ہے فی جلد عہ/

طلسم ہوش افزا - یہ عجیب و غریب داستان قصہ امیر حمزہ کے متعلق لکھی گئی ہے جس کی خوبی دیکھنے سے تعلق رکھتی ہے قیمت ۱۲/

مجمع الصنایع جدید - انگریزی دیو صنعت و فن کے (۱۰۰) نسخے قیمت ہر دو حصہ ۸/

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Arya Samaj Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नं-९।१०।११।१२ जिल्द ४
सितमबर सन ९३ से दिसंबर तक

نمبر ۹ - ۱۰ - ۱۱ - ۱۲ جلد ۴
ماہ ستمبر سنہ ۹۳ سے دسمبر سنہ ۹۳ تک

مجموعۃ التصاویر
یعنے
مرقعۃ المشاہیر

جسمین مشہور اور معروف شخصون کی تصویرین مع سوانح عمری کے مشتہر
کیجاتی ہین اور جو ماہوار دار السرور شہر جودھپور سے شایع ہوتا ہے

प्रसिद्ध चित्रावली

जिसमें
जगद्विख्यात महत्पुरुषों के चित्र और जीवन चरित्र
प्रकाशित किये जाते हैं और जो महीने के महीने राजस्था
न जोधपुर से प्रगट होता है॥

شرح قیمت سالانہ مع محصول ڈاک — वार्षिक मोल डांक व्यय सहित

(۱) گورنمنٹ انگریزی و والیان ملک ۔۔۔۔۔۔۔۔ — १ अंग्रेज़ी सरकार वा राजों महाराजों से .... ४।)

(۲) حکام رئیسون اور امیرون ۔۔۔۔۔۔ — २ हाकिमों और रईसों और अमीरों से ...... ३।)

(۳) عام شائقین سے — ३ सर्वसाधारण ग्राहकजनों से

(۴) طالب علمون سے — ४ विद्यार्थियों से ...

فہرست اندراج نمبر ہذا — इस नम्बर की सूची
بقیہ سوانح عمری و تصویر شاہان ... — बाकी सवानेउमरी व तसवीरें

دیبی پرشاد مقام جودھپور — देवी प्रसाद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain. Chambal A

ust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain. Chand

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Y-3

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786 Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript.Also included are antique painitings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/ VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernelia

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and uploading by eGangotri Digital Preservation Trust and Sarayu Trust Foundation.